अंगुत्तर-निकाय

[द्वितीय-भाग]

[चतुक्क-निपात तथा पञ्चक-निपात]

अनुवादक

भदन्त आनन्द कौसल्यायन

प्रकाशक

महाबोधि सभा, कलकत्ता

प्रकाशक

देवप्रिय वलीसिंह

मंत्री

महाबोधि सभा, कलकत्ता

● ● ●

मूल्य

दस रुपये

● ● ●

मुद्रक

मोहनलाल भट्ट

राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

● ● ●

विद्यालंकारपरिवेणाधिपति
किरिवत्तुडुवे पञ्ञासार नायकमहास्थविर पादयन्वहंसे
वेतटयि

प्रकाशकीय

पवित्र पाली-त्रिपिटकके सुत्तपिटकके पाँच निकायोंमें अंगुत्तर-निकायका विशिष्ट-स्थान है। शेष चार निकायोंका अधिकांश भाग अनूदित हो चुकने पर भी अंगुत्तर-निकाय अभी तक हिन्दीमें अनूदित नहीं ही हुआ था। हम भदन्त आनन्द कौसल्यायनके चिर-कृतज्ञ हैं कि उन्होंने 'जातक' जैसे महान अनुवाद कार्यको समाप्त कर अब अंगुत्तर-निकायके अनुवाद-कार्यको हाथमें लिया और हमें यह सूचना देते हुए हर्ष होता है कि उन्होंने अंगुत्तर-निकायके प्रथम भागके अनन्तर हमें यह अवसर दिया है कि हम अंगुत्तर-निकायके द्वितीय-भागका हिन्दी अनुवाद भी अपने प्रेमी पाठकोंकी भेंट कर सकें।

हम केन्द्रीय सरकारके भी कृतज्ञ हैं जिसकी कृपासे हमें शास्त्रीय ग्रन्थोंके मूल तथा अनुवाद छापनेके लिये चार हजार रुपये वार्षिकका अनुदान प्राप्त है।

यदि हमें यह सरकारी अनुदान प्राप्त न हो तो हमें इसमें बड़ा सन्देह है कि हम इस पवित्र-कार्य को करनेमें समर्थ सिद्ध होंगे।

४ ए, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट,
कलकत्ता—१२

मंत्री
महाबोधि सभा

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स ।

प्रस्तावना

सूत्र-पिटक, विनय-पिटक तथा अभिधर्म-पिटक ही बौद्धधर्मके प्रामाणिक त्रिपिटक हैं। इनकी भाषा, इनका रचना-काल, इनका सम्पादन, इनमें विद्यमान् भगवान् बुद्धके उपदेश विद्वानोंकी ऊहापोहके विषय हैं ही।

सूत्र-पिटक दीर्घ-निकाय, मज्झिम-निकाय, संयुक्त-निकाय, अंगुत्तर-निकाय तथा खुद्दक निकाय नामक पाँच निकायोंमें विभक्त माना जाता है। अंगुत्तर-निकाय की रचना-शैली सभी दूसरे निकायोंसे विशिष्ट है। इसके 'एकक' निपातमें एक ही एक धर्म (= विषम) का वर्णन है, 'दुक निपात' में दो-दो धर्मों (= विषयों) का; इसी प्रकार 'तिक-निपात' में तीन-तीन विषयोंका। यही क्रम पूरे ग्यारह निपातों तक चला जाता है। प्रत्येक निपातमें अंकोत्तर-वृद्धि होती चली गई है, इसीसे 'अंगुत्तर-निकाय' नाम सार्थक है।

दीर्घ-निकाय, मज्झिम-निकाय, संयुक्त-निकाय तथा खुद्दक-निकायके भी कुछ ग्रन्थोंका हिन्दी रूपान्तर हो चुकनेके बाद अंगुत्तर-निकाय ही सूत्र-पिटकका वह महत्वपूर्ण-निकाय शेष रहा था, जिसका अनुवाद सचमुच बहुत पहले समाप्त हो जाना चाहिये था। खेद है कि वर्तमान अनुवादक भी अभी तक इस कार्यको पूरा न कर सका।

जिस कालामा-सूक्तकी बौद्ध-वाङ्मयमें ही नहीं, विश्वभरके वाङ्मयमें इतनी धाक है; जो एक प्रकारसे मानव-समाजके स्वतन्त्र-चिन्तन तथा स्वतन्त्र-आचरण का घोषणा-पत्र माना जाता है, वह कालामा-सूक्त इसी अंगुत्तर-निकायके तिक-निपातके अन्तर्गत है। भगवान्ने उस सूक्तमें कालामोंको आश्वासन दिया है—

"हे कालामो आओ। तुम किसी बातको केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात परम्परागत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात इसी प्रकार कही गई है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे धर्म-ग्रन्थ (पिटक) के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (-शास्त्र) सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार

करो कि आकार-प्रकार सुन्दर है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मतके अनुकुल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वालेका व्यक्तित्व आकर्षक है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा 'पूज्य' है। हे कालामो, जब तुम आत्मानुभवसे अपने आप ही यह जानो कि ये बातें अकुशल हैं, ये बातें सदोष हैं, ये बातें विज्ञ पुरूषों द्वारा निन्दित हैं, इन बातोंके अनुसार चलनेसे अहित होता है, दुःख होता है—तो हे कालमो! तुम-उन बातोंको छोड़ दो।" (प्रथम भाग—पृ. १९२)

इन पंक्तियोंका लेखक तो इस सूत्रका विशेष ऋणी है, क्योंकि आजसे पूरे ३५ वर्ष पूर्व भगवान्का जो उपदेश विशेष रूपसे उसके त्रिशरणागमनका निमित्त-कारण हुआ था, वह यही कालामा-सूक्त ही था।

इसके तीन वर्ष बाद लंदनमें रहते समय उसे एक वयोबृद्ध अंग्रेज द्वारा लिखित एक ग्रंथ पढ़नेको मिला। नाम था "संसारका भावी धर्म"। देखा, उसके मुखपृष्ठ पर भी यही कालामा-सूक्त ही उद्घृत हैं।

जहाँ तक अंगुत्तर-निकायके मूल-पाठकी बात हैं, अनुवादकने प्रथम-भागका अनुवाद-कार्य मुख्य रूपसे रैवरैण्ड रिचर्ड मारिस एम. ए., एल. एल डी. द्वारा सम्पादित तथा सन १८८५ में पाली टैक्सट सोसाइटी, लंदन द्वारा प्रकाशित पालि-संस्करणसे ही किया हैं। यूँ बीच-बीचमें वह सिंहल-संस्करण तथा स्यामी-संस्करणको भी देख लेता ही रहा है। किन्तु दूसरे भागका अनुवाद एक प्रकारसे सिंहल-संस्करणसे ही किया है। सौभाग्यसे इधर भाई भिक्षु जगदीश काश्यपजीके प्रधान-सम्पादकत्वमें प्रकाशित पालि-त्रिपिटकका देवनागरी संस्करण भी प्राप्त हो गया है। अब मूल पालि-पाठके लिये किसी भारतीय अनुवादकको पराङ्मुखी होनेकी अपेक्षा नहीं। अंगुत्तर निकायका यह द्वितीय भाग तो पाठकोंके हाथमें है। तीसरे भागका अनुवाद अंगुत्तर निकायके देवनागरी संस्करणसे ही किया जा रहा है।

निस्सन्देह विनम्र अनुवादककी प्रवृत्ति अर्थकथाओंको मूलके प्रकाशमें ही समझनेकी है, तो भी आचार्य्य बुद्धघोषकृत अंगुत्तर निकायकी मनोरथ-पूर्णी अट्ठ-कथाका भी उस पर अनल्प उपकार है।

अंगुत्तर निकायके पहले भागमें प्रथम तीन निपातोंका ही समावेश हो सका था। इस दूसरे भागके अन्तर्गत चतुक्कनिपात तथा पञ्चक-निपात हैं। शेष छः निपात अनुमानतः तीन भागोंमें समाप्त हो जायेंगे। इस प्रकार आशा है, किसी-न-किसी दिन अंगुत्तर-निकायके पाँचों भाग हिन्दी पाठकोंके हाथों तक पहुँच सकेंगे।

किसी भी 'प्रस्तावना' में अंगुत्तर-निकायका विस्तृत अध्ययन तो कदाचित् उसका अनुवाद-कार्य पूरा होनेपर ही हो सकेगा। कुछ समय तक अनुवादककी धारणा थी कि संभवतः अन्य निकायोंमें प्राप्य बुद्ध-वचनका ही अंकोत्तर वृद्धिक्रमसे जो संकलन हैं, उसीका नाम अंगुत्तर-निकाय हैं। किन्तु यह बात यथार्थ नहीं है। अंगुत्तर-निकायमें अपनी निजी ऐसी मौलिक सम्पत्ति पर्याप्त है, जिसका अन्य निकायोंमें अभाव हैं। अंगुत्तर-निकायके अध्ययनके बिना 'बुद्ध-वचन' का अध्ययन सम्पूर्ण नहीं ही माना जा सकता।

महाबोधि सभाके मन्त्री श्री देवप्रिय वलीसिंहका मैं चिर-कृतज्ञ रहूँगा जिन्होंने अंगुत्तर निकायके प्रकाशनका भार ग्रहण कर मुझे इस ओरसे निश्चिन्त किया।

अंगुत्तर निकायके द्वितीय-भागका अनुवाद काफी समय पहले समाप्त हो चुका रहनेपर भी 'श्रेष्ठ कार्योंमें विघ्न भी आते ही हैं' के न्यायके अनुसार मुद्रण कार्य शीघ्र आरम्भ न हो सका। पिछले कुछ वर्षोंसे मेरा भारतके बाहर श्री० लंकाके प्रसिद्ध विद्यालंकार विश्वविद्यालयमें रहना भी एक बाधक-कारण सिद्ध हुआ। फिर भी मैं राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मन्त्री भाई मोहनलालजी भट्ट तथा प्रेसके सभी कर्मचारियोंका विशेष ऋणी हूँ, जिनके 'अप्रमाद' से ही यह कार्य एक वार आरम्भ होकर इतनी जल्दी समाप्त हो सका।

इस बार श्री० लंकासे भारत आते समय पानीके जहाजसे उतरनेसे पूर्व अपनी ही असावधानीसे मैं इस बुरी तरह गिरा कि पाँवोंकी हड्डियोंमें चोट आ गई। बिस्तरपर पड़े ही पड़े प्रूफ आदि संशोधनका सारा कार्य कर सका हूँ। समितिके जिन-जिन कार्यकर्ताओंने तथा राष्ट्रभाषा महाविद्यालयके जिन-जिन विद्यार्थियोंने इस बीच रोगी-शूश्रुषाके कठिन धर्मको निभाया, उन सबका भी मैं विशेष रूपसे ऋणी हूँ, क्योंकि उनकी सहायताके बिना मैं सर्वथा पङ्गु ही रहता। उन्हें 'धन्यवाद' क्या दूँ! हार्दिक आशीर्वचन।

राजेन्द्रभवन, वर्धा
१७–२–६३

आनन्द कौसल्यायन

अंगुत्तर निकाय

दूसरा भाग

चौथा निपात

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

प्रथम पण्णासक

भण्डग्राम वर्ग प्रथम

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान वज्जी जनपदमें भण्डग्राममें विहार करते थे। वहां भगवानने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—

"भिक्षुओ!"

"भदन्त!" कहकर उन भिक्षुओंने भगवानको प्रतिवचन दिया। भगवानने यह कहा—

"भिक्षुओ! चार बातों (=धर्मों) का बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होने ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घ कालतक दौड़ना, संसारमें बार-बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। कौनसे चार धर्मोंका? भिक्षुओ, आर्य-शीलका बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होनेसे ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घकाल तक दौड़ना, संसारमें बार-बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। भिक्षुओ, आर्य-समाधिका बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होनेसे ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घकालतक दौड़ना, संसारमें बार बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। भिक्षुओ, आर्य-प्रज्ञाका बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होनेसे ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घ-काल तक दौड़ना, संसारमें बार-बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। भिक्षुओ, आर्य-विमुक्तिका बोध न होनेसे ही, ज्ञान न होनेसे ही, मेरा और तुम्हारा दीर्घ कालतक दौड़ना, संसारमें बार-बार जन्म ग्रहण करते रहना हुआ है। भिक्षुओ,

उस आर्य-शीलका बोध हो गया, ज्ञान हो गया, आर्य-समाधिका बोध हो गया, ज्ञान हो गया; आर्य-प्रज्ञाका बोध हो गया, ज्ञान हो गया; आर्य-विमुक्तिका बोध हो गया, ज्ञान हो गया—इसलिये भवतृष्णाका उच्छेद हो गया, भव-हेतुका क्षय हो गया, अब पुनर्भव नहीं है। भगवानने यह कहा। सुगतने यह कहकर, शास्ताने यह कहा—

सील समाधी पञ्ञा च विमुत्ति च अनुत्तरा
अनुबुद्धा इमे धम्मा गोतमेन यसस्सिना
इति बुद्धो अभिञ्ञाञ्ञ धम्ममक्खासि भिक्खुनं
दुक्खस्सन्तकरो सत्था चक्खुमा परिनिब्बुतो

[यशस्वी गौतमने शील, समाधि, प्रज्ञा तथा सर्वश्रेष्ठ विमुक्तिका बोध प्राप्त किया। इस प्रकार बुद्धने इनका ज्ञान प्राप्तकर भिक्षुओंको धर्मोपदेश दिया। (फिर) दुःखका अन्त करनेवाले, शास्ता, चक्षुमान, परिनिर्वाणको प्राप्त हो गये।]

२. भिक्षुओ, जो इन चार बातों (=धर्मों) से युक्त नहीं होता, वह इस बुद्ध-शासन (=धर्म-विनय) से पतित हुआ माना जाता है। कौनसी चार बातोंसे ? भिक्षुओ, जो आर्य-शीलसे युक्त नहीं होता, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो आर्य-समाधिसे युक्त नहीं होता, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो आर्य-प्रज्ञासे युक्त नहीं होता, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो आर्य-विमुक्तिसे युक्त नहीं होता, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो इन चार बातों (=धर्मों) से युक्त नहीं होता, वह इस बुद्ध-शासन (=धर्मविनय) से पतित हुआ माना जाता है। भिक्षुओ, जो इन चार बातों (=धर्मों) से युक्त होता है, वह बुद्ध-शासन (=धर्म-विनय) से पतित हुआ नहीं माना जाता। कौन सी चार बातोंसे ? भिक्षुओ, जो आर्यशीलसे युक्त होता है, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नहीं माना जाता। भिक्षुओ, जो आर्य-समाधिसे युक्त होता है, वह बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नहीं माना जाता। भिक्षुओ, जो आर्य-प्रज्ञासे युक्त होता है, वह बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नहीं माना जाता। भिक्षुओ, जो आर्य विमुक्तिसे युक्त होता है, वह बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नहीं माना जाता। भिक्षुओ, जो इन चार बातों (धर्मों) से युक्त होता है, वह इस बुद्ध-शासनसे पतित हुआ नहीं माना जाता।

चुता पतन्ति पतिता गिद्धा च पुनरागता
कतकिच्चं रतं रम्मं सुखेनान्वातकं सुखं।

[जो च्युत, जो पतित हैं, वे गिरते हैं। जो तृष्णा-युक्त हैं, वे पुनः संसारमें आते हैं। जो कृत्य-कृत्य हैं, वे रमणीयमें अनुरक्त रहते हैं और सुखसे सुखको प्रतिष्ठित करते हैं।]

३. भिक्षुओ, चार बातों (=धर्मों) से युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी हानि करता है, विज्ञ पुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे बड़े दोषोंका करने वाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। कौनसे चार धर्मोंसे ? बिना सोचे, बिना परीक्षा किये गुण-रहितका गुण कहता है; बिना सोचे, बिना परीक्षा किये गुणीका अवगुण कहता है; बिना सोचे, बिना परीक्षा किये अप्रसन्न होनेके स्थानपर प्रसन्नता व्यक्त करता है; बिना सोचे, बिना परीक्षा किये प्रसन्न होनेके स्थानपर अप्रसन्नता व्यक्त करता है। भिक्षुओ, इन चार धर्मोंसे युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी हानि करता है, विज्ञ पुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे बड़े दोषोंका करनेवाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, चार बातों (=धर्मों) से युक्त ज्ञानी पण्डित, सत्पुरुष अपनी हानि नहीं करता, विज्ञ पुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोंका करनेवाला नहीं होता, बहुत पुण्यार्जन करता है। कौनसे चार धर्मोंसे? सोचकर, परीक्षा करके दोषीका दोष कहता है; सोचकर, परीक्षा करके गुणीका गुण कहता है; सोचकर, परीक्षा करके अप्रसन्न होनेके स्थानपर अप्रसन्नता व्यक्त करता है; सोचकर विचारकर प्रसन्न होनेके स्थानपर प्रसन्नता व्यक्त करता है। भिक्षुओ, इन चार बातों (=धर्मों) से युक्त ज्ञानी, पण्डित, सत्पुरुष अपनी हानि नहीं करता, विज्ञ पुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोंका करनेवाला नहीं होता, बहुत पुण्यार्जन करता है।

यो निन्दियं पसंसति तं वा निन्दति यो पसंसियो
विचिनाति मुखेन सो कलिं कलिना तेन सुखं न विन्दति
अप्पमत्तो अयं कलि यो अक्खेसु धनपराजयो
सब्बस्सामि सहापि अत्तना अयमेव महत्तरो कलि
यो सुगतेसु मनं पदोसये सतं सहस्सानं निरब्बुदानं
छत्तिंसति पञ्च च अब्बुदानि यमरियं गरहिय निरयं
उपेति, वाचं मनञ्च पणिधाय पापकं।

[जो निंदनीयकी प्रशंसा करता है, वा प्रशंसनीयकी निन्दा करता है, वह अपने मुखसे 'पाप' का ही चयन करता है, 'पाप' का चयन करनेके कारण वह सुख नहीं भोगता है। जुयेमें जो अपने साथ सर्वस्व धनकी भी 'हानि' होती है,

वह बड़ी 'हानि' नहीं होती। यह जो 'सुगत' के प्रति मनको मैला कर लेना है, यही बड़ी 'हानि' है। जो पापयुक्त मनसे सदोष वाणी बोलता है, वह लाखों निरब्बुद (नरक) तथा ३६ और ५ अब्बुद नरकोंमें जाता है, जो किसी श्रेष्ठ-पुरुषकी निन्दा करता है।]

भिक्षुओ, इन चारके प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी हानि करता है, विज्ञपुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोंका करनेवाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। किन चारके प्रति? भिक्षुओ, माताके प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी हानि करता है, विज्ञ पुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोंका करनेवाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, पिताके प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला......... करता है। भिक्षुओ, तथागतके प्रति....करता है। भिक्षुओ, तथागत श्रावकके प्रति ....करता है। भिक्षुओ, इन चारके प्रति अनुचित व्यवहार करनेवाला मूर्ख अपण्डित, असत्पुरुष अपनी हानि करता है, विज्ञ पुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोंका करनेवाला होता है और बहुत अपुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, इन चारके प्रति उचित व्यवहार करनेवाला पण्डित, ज्ञानी, सत्पुरुष अपनी हानि नहीं करता है, विज्ञ पुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोंका करनेवाला नहीं होता और बहुत पुण्यार्जन करता है। किन चारके प्रति? भिक्षुओ, माताके प्रति अुचित व्यवहार करनेवाला पण्डित, ज्ञानी, सत्पुरुष अपनी हानि नहीं करता है, विज्ञपुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोषोंका करनेवाला नहीं होता और बहुत पुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, पिताके प्रति........पुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, तथागतके प्रति..... पुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, तथागत श्रावकके प्रति.....पुण्यार्जन करता है। भिक्षुओ, इन चारके प्रति उचित व्यवहार करनेवाला पण्डित, ज्ञानी, सत्पुरुष अपनी हानि नहीं करता है, विज्ञ पुरुषोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े, दोषोंका करनेवाला नहीं होता और बहुत पुण्यार्जन करता है।

मातरि पितरि चापि यो मिच्छा पटिपज्जति
तथागते च सम्बुद्धे अथवा तस्स सावके
बहुञ्च सो पसवति अपुञ्ञं तादिसो नरो
ताय अधम्मचरियाय मातापितुसु पण्डिता
इधेव नं गरहन्ति पेच्चापायञ्च गच्छति
मातरि पितरि चापि यो सम्मापटिपज्जति

तथागते च सम्बुद्धे अथवा तस्स सावके
बहुञ्च सो पसवति पुञ्ञंपि तादिसो नरो
ताय धम्मचरियाय मातापितुसु पण्डिता
इधेव नं पसंसंति पेच्च सग्गे पमोदति

[जो माता, पिता, सम्बुद्ध तथागत अथवा उनके श्रावकोंके प्रति अनुचित व्यवहार करता है, वैसा आदमी बहुत अपुण्यार्जन करता है। माता-पिताके प्रति उस अधार्मिक चर्य्याके कारण पण्डित जन यहाँ इस लोकमें उसकी निन्दा करते हैं तथा मरकर नरकगामी होता। जो माता, पिता, सम्बद्ध तथागत अथवा उनके श्रावकोंके प्रति अुचित व्यवहार करता है, वैसा आदमी बहुत पुण्यार्जन करता है। माता-पिताके प्रति उस धार्मिक चर्य्याके कारण पण्डित-जन यहाँ इस लोकमें उसकी प्रशंसा करते हैं तथा मरकर वह स्वर्गमें आनंदित होता है।]

भिक्षुओ, इस संसारमें चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके? अनुस्रोत गामी-पुद्गल। प्रति स्रोतगामी-पुद्गल, स्थित पुद्गल तथा पार होकर स्थल पर स्थित हो गया ब्राह्मण। भिक्षुओ, अनुस्रोत गामी-पुद्गल किस आदमीको कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी काम-भोगोंका सेवन करता है, पापकर्म करता है। भिक्षुओ उस आदमीको अनुस्रोतगामी-पुद्गल कहते हैं। भिक्षुओ, प्रतिस्रोत गामी पुद्गल किस आदमीको कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी काम-भोगोंका सेवन नहीं करता, पाप-कर्म भी नहीं करता, दुःख सहन करता हुआ भी,दौर्मनस्य सहन करता हुआ भी, अश्रु-मुख, रोता हुआ भी परिपूर्ण, परिशुद्ध ब्रह्मचर्यका आचरण करता है। भिक्षुओ ऐसे आदमीको प्रति-स्रोत गामी पुद्गल कहते हैं। भिक्षुओ, स्थित-पुद्गल किस आदमीको कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी पतनकी ओर ले जानेवाले पांच बंधनोंका क्षय कर 'ओपपातिक' हो जाता है, वहींसे परिनिर्वृत हो जानेवाला, उस लोकसे न लौटनेवाला। भिक्षुओ, ऐसे आदमीको स्थित-पुद्गल कहते हैं। भिक्षुओ, पार होकर स्थलपर स्थित हो गया ब्राह्मण किस आदमीको कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी आस्रवोंका क्षय कर, इसी शरीरमें अनास्रव चित्तविमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको स्वयं जानकर, साक्षात कर, प्राप्तकर विहार करता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीको पार होकर स्थलपर स्थित हो गया ब्राह्मण कहते हैं। भिक्षुओ, इस संसारमें ये चार प्रकारके लोग हैं।

ये केचि कामेसु असञ्ञाता जना
अवीतरागा इध कामभोगिनो

पुनप्पुनं जातिजरूपगा हि ते
तण्हाधिपन्ना अनुसोतगामिनो ॥
तस्मा हि धीरो इधुपट्ठितासति
कामे च पापे च असेवमानो
सहापि दुक्खेन जहेय्य कामे
पटिसोतगामीति तमाहु पुग्गलं ॥
यो वे किलेसानि पहाय पञ्च
परिपुण्णसेखो अपरिहानधम्मो
चेतोवसिप्पत्तो समाहितिन्द्रियो
स वे ठितत्तोति नरो पवुच्चति ॥
परोपरा यस्स समेच्च धम्मा
विधूपिता अत्थगता न सन्ति
स वेदगू वुसितब्रह्मचरियो
लोकन्तगू पारगतोति वुच्चति ॥

[जो काम-भोगोंके विषयमें असंयत हैं, जो अवीतराग हैं, जो काम भोगी हैं, वे तृष्णाभिभूत नर बार बार जाति तथा जराको प्राप्त होते हैं और 'अनु-स्रोत-गामी' कहलाते हैं। इसलिये जो धैर्यवान व्यक्ति अपनी स्मृतिको उपस्थित रख, काम-भोगों तथा पापोंसे विरत रहता हुआ, दुःख सहकर भी काम भोगोंका त्याग करता है, अुसे प्रति-स्रोत-गामी व्यक्ति कहते हैं। जो पाँच संयोजनोंका त्यागकर देता है, जो परिपूर्ण शैक्ष होता है, जो पतनोन्मुख नहीं रहता, जो चित्तको काबूमें रखता, जिसकी इन्द्रियां उसके वशमें हैं, वही 'स्थित' कहलाता है। जिसके सभी (अकुशल-) धर्म शान्त हो गये हों, जो वेदज्ञ हो, जो श्रेष्ठजीवी हो उसे ही लोकके अन्ततक पहुँचा हुआ, लोकके पार पहुँचा हुआ कहते हैं।]

भिक्षुओ संसारमें चार प्रकारके आदमी हैं। कौनसे चार प्रकारके? (१) अल्प-श्रुत श्रुतसे अनुपपन्न, (२) अल्प-श्रुत श्रुतसे उपपन्न, (३) बहुश्रुत श्रुतसे अनुपन्न, (४) बहुश्रुत श्रुतसे उपपन्न। भिक्षुओ, आदमी अल्प-श्रुत श्रुतसे अनुपपन्न कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीने थोड़ा ही (धर्म) सुना होता है—सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म तथा वेदल्ल। वह उस अल्प-श्रुतके अर्थ और धर्मको न जानकर, उसके अनुसार आचरण करनेवाला नहीं होता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अल्प-श्रुत श्रुतसे अनुपपन्न होता है। भिक्षुओ, आदमी अल्प-श्रुत श्रुतसे उपपन्न कैसे होता है, भिक्षुओ, एक आदमीने थोडा ही (धर्म) सुना होता है—

सुत्त, गेय्य, ...वेदल्ल। वह उस अल्प-श्रुतके अर्थ और धर्मको जानकर उसके अनुसार चलनेवाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अल्पश्रुत श्रुतसे उपपन्न होता है। भिक्षुओ, आदमी बहुश्रुत श्रुतसे अनुपपन्न कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीने बहुत सुना होता है—सुत्त, गेय्य, ...वेदल्ल। वह उस बहुश्रुतके अर्थ और धर्मको न जानकर उसके अनुसार आचरण करनेवाला नहीं होता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी बहु-श्रुत श्रुतसे अनुपपन्न होता है। भिक्षुओ, आदमी बहुश्रुत श्रुतसे उपपन्न कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीने बहुत सुना होता है—सुत्त, गेय्य. . . . . वेदल्ल। वह उस बहुश्रुतके अर्थ और धर्मको जानकर उसके अनुसार आचरण करनेवाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी बहुश्रुत श्रुतसे उपपन्न होता है। भिक्षुओ, संसारमें ये चार प्रकारके आदमी हैं।

अप्पस्सुतोपि चे होति सीलेसु असमाहितो।
उभयेन नं गरहन्ति सीलेन च सुतेन च॥
अप्पस्सुतोपि चे होति सीलेसु सुसमाहितो।
सीलेन नं पसंसन्ति नास्स सम्पज्जते सुतं॥
बहुस्सुतोपि चे होति सीलेसु असमाहितो,
सीलेन नं गरहन्ति तस्स सम्पज्जते सुतं॥
बहुस्सुतोपि चे होति सीलेसु सुसमाहितो,
उभयेन नं पसंसन्ति सीलतो च सुतेन च॥
बहुस्सुतं धम्मधरं सप्पञ्ञं बुद्धसावकं,
नेक्खं जम्बोनदस्सेव को तं निन्दितुमरहति,
देवापि नं पसंसन्ति ब्रह्मुना पि पसंसितो॥

[अल्प-श्रुत हो और सदाचारी न हो तो उसकी दोनों तरहसे निन्दा होती है, श्रुत (=ज्ञान) की दृष्टिसे भी और आचरणकी दृष्टिसे भी। अल्प-श्रुत हो किन्तु सदाचारी हो तो उसके शीलकी प्रशंसा होती है, ज्ञानका तो उसमें अभाव ही रहता है। बहुश्रुत हो और सदाचारी न हो तो उसकी शीलकी दृष्टिसे निन्दा होती है, ज्ञानी तो वह होता ही है। बहु-श्रुत हो और सदाचारी भी हो, तो उसकी दोनों दृष्टियोंसे प्रशंसा होती है, शीलकी दृष्टिसे भी और श्रुत (=ज्ञान) की दृष्टिसे भी। जो बहु-श्रुत है, जो धर्म-धर है, जो प्रज्ञावान् बुद्ध-श्रावक है, जम्बोनद स्वर्णके समान उसकी कौन निन्दा कर सकता है! देवता भी उसकी प्रशंसा करते हैं, ब्रह्मा द्वारा भी वह प्रशंसित है।]

भिक्षुओ, ये चार पण्डित, विनीत, विशारद, बहुश्रुत, धर्मधर, धर्मानुसार आचरण करनेवाले संघकी शोभा बढ़ाते हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, जो भिक्षु पंडित, विनीत, विशारद, व बहुश्रुत, धर्मधर, धर्मानुसार आचरण करनेवाला होता है वह संघकी शोभा बढ़ाता है। भिक्षुओ, जो भिक्षुणी पंडिता, विनीता, विशारदा बहुश्रुता, धर्मधरा, धर्मानुसार आचरण करनेवाली होती है वह संघकी शोभा बढ़ाती है। भिक्षुओ, जो उपासक पंडित......धर्मानुसार आचरण करनेवाला होता है वह संघकी शोभा बढ़ानेवाला होता है। भिक्षुओ, जो उपासिका पंडिता.........धर्मानुसार आचरण करनेवाली होती है वह संघकी शोभा बढ़ानेवाली होती है।

यो होति व्यत्तो च विसारदो च
बहुस्सुतो धम्मधरो च होति
धम्मस्स होति अनुधम्मचारी
स तादिसो वुच्चति संघसोभनो

[जो पंडित होता है, विशारद होता है, बहुश्रुत होता है, धर्मधर होता है तथा धर्मानुसार आचरण करनेवाला होता है, वैसा आदमी संघकी शोभा बढ़ानेवाला कहलाता है।]

भिक्खु च सीलसम्पन्नो भिक्खुनी च बहुस्सुता
उपासको च यो सद्धो या च सद्धा उपासिका
एते खो संघं सोभेन्ति एते हि संघसोभना

[जो भिक्षु शीलवान होता है, जो भिक्षुणी बहुश्रुता होती है, जो उपासक श्रद्धावान होता है तथा जो उपासिका श्रद्धावान् होती है—ये संघकी शोभा बढ़ाते हैं, ये संघ-शोभन हैं।]

भिक्षुओ, ये चार तथागतके वैशारद्य हैं, जिन वैशारद्योंसे युक्त होकर तथागत वृषभ-स्थानको प्राप्त होते हैं, परिषदोंमें सिंह-नाद करते हैं, ब्रह्मचक्र, प्रवर्तित करते हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, मैं इसका कोई लक्षण नहीं देखता कि सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा इस बातकी घोषणा किये जानेपर कि अमुक धर्म जान लिये गये हैं, कोई श्रमण या ब्राह्मण या देव या मार या ब्रह्मा अथवा विश्वमें कोई और यथार्थ रूपसे यह दोषारोपण कर सके कि इन धर्मोंका ज्ञान प्राप्त नहीं किया गया है। भिक्षुओ, इस प्रकारका कोई लक्षण दिखाई न देनेके कारण ही मैं कल्याण-युक्त, निर्भय, वैशारद्य-युक्त होकर विचरता हूँ। मैं इसका कोई लक्षण नहीं देखता कि सम्यक्

सम्बुद्ध द्वारा इस बातकी घोषणा किये जानेपर कि अमुक आस्रव क्षीण हो गये हैं, कोई श्रमण या ब्राह्मण या देव या मार या ब्रह्मा अथवा विश्वमें कोई और यथार्थ-रूपसे यह दोषारोपण कर सके कि इन आस्रवोंका क्षय नहीं किया गया है। भिक्षुओ, इस प्रकारका कोई लक्षण दिखाई न देनेके कारण ही, मैं कल्याण-युक्त, निर्भय, वैशारद्य-युक्त होकर विचरता हूँ। मैं इसका कोई लक्षण नहीं देखता कि सम्यक्-सम्बुद्ध द्वारा इस बातकी घोषणा किये जानेपर कि अमुक धर्म (निर्वारण-मार्गके) बाधक धर्म हैं, कोई श्रमण या ब्राह्मण या देव या मार या ब्रह्मा अथवा विश्वमें कोई और यथार्थ रूपसे यह दोषारोपण कर सके कि उन उन धर्मोंका सेवन अर्थात् उन बातोंके अनुसार आचरण (निर्वाण-मार्ग) में बाधक नहीं होता। भिक्षुओ, इस प्रकारका कोई लक्षण दिखाई न देनेके कारण ही, मैं कल्याण-युक्त, निर्भय, वैशारद्य-युक्त होकर विचरता हूँ। मैं इसका कोई लक्षण नहीं देखता कि सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा इस बातकी घोषणा किये जानेपर कि अमुक अमुक धर्मोंका पालन दुःख-क्षयका कारण होता है, कोई श्रमण या ब्राह्मण या देव या मार या ब्रह्मा अथवा विश्वमें कोई और यथार्थ रूपसे यह दोषारोपणकर सके कि अमुक अमुक धर्मोंका पालन दुःख-क्षयका कारण नहीं होता। भिक्षुओ, इस प्रकारका कोई लक्षण दिखाई न देनेके कारण ही मैं कल्याणयुक्त, निर्भय, वैशारद्य-युक्त होकर विचरता हूँ। भिक्षुओ, ये चार तथागतके वैशारद्य हैं, जिन वैशारद्योंसे युक्त होकर तथागत वृषभ-स्थानको प्राप्त होते हैं, परिषदोंमें सिंहनाद करते हैं और ब्रह्मचक्र प्रवर्तित करते हैं।

ये केचि ये वादपथा पुथुस्सिता
यन्निस्सिता समणब्राह्मणाच
तथागतं पत्वान ते भवन्ति
विसारदं वादपथातिवत्तं
यो धम्मचक्कं अभिभूय्य केवलं
पवत्तयि सब्बभूतानुकम्पि
तं तादिसं देवमनुस्ससेट्ठं
सत्ता नमस्सन्ति भवस्स पारगुं

[जितने भी बहुतसे ऐसे वाद हैं, जिनमें श्रमण-ब्राह्मण उलझे हुए हैं, वे वादोंसे मुक्त, विशारद, तथागतके पास पहुँचनेपर 'शान्त' हो जाते हैं। सभी प्राणियोंपर अनुकम्पाकर जिन्होंने धर्म चक्र प्रवर्तित किया, देव-मनुष्य-श्रेष्ठ भव-पारंगत बुद्धको प्राणी नमस्कार करते हैं।]

भिक्षुओ, ये चार तृष्णाकी उत्पत्तियाँ हैं, जो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णाकी उत्पत्तिका रूप धारण करती हैं। कौन सी चार? भिक्षुओ, या तो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णा चीवरके विषयमें उत्पन्न होती है, या पिण्डपात (= भोजन) के लिये उत्पन्न होती है, या शयनासन (= निवासस्थान) के लिये उत्पन्न होती है, अथवा यह-यह कुछ बननेके लिये तृष्णा उत्पन्न होती है। भिक्षुओ, ये चार तृष्णाकी उत्पत्तियाँ, जो भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णाकी उत्पत्तिका रूप धारण करती हैं।

तण्हादुतियो पुरिसो दीघमद्धान संसरं
इत्थभावञ्ञथाभावं संसारं नातिवत्तति
एतमादिनवं ञत्वा तण्हं दुक्खस्स सम्भवं
वीततण्हो अनादानो सतो भिक्खु परिब्बजे

[तृष्णाका साथी पुरुष संसारमें दीर्घकालतक भटकता हुआ, इस जन्म और उस जन्मको धारण करता हुआ संसार-सागरसे पार नहीं होता। इस प्रकार इस दुष्परिणामको जानकर कि तृष्णा दुःखका कारण है, भिक्षुको चाहिये कि वह तृष्णारहित तथा आसक्ति-रहित होकर प्रव्रजित हो।]

भिक्षुओ, चार प्रकारके योग हैं। कौनसे चार प्रकारके? काम-योग, भव-योग, दृष्टि-योग तथा अविद्या-योग। भिक्षुओ, काम-योग किसे कहते हैं? भिक्षुओ यहाँ एक आदमी काम-भोगोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोंसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जानता है। उस काम-भोगोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोंसे मुक्ति न जाननेवालेका काम-भोगोंके प्रति जो काम-राग है, कामनंदी है, काम-स्नेह है, काम-मूर्छा है, काम-पिपासा है, काम-परिदाह है, कामा-सक्ति है तथा काम-तृष्णा है उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह काम-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ। भव-योग किसे कहते हैं? भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी भवकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवसे मुक्ति यथार्थ-रूपसे नहीं जानता। उस भवकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवसे मुक्ति न जाननेवालेका भवके प्रति जो भव-राग है, भव-नंदी है, भव-स्नेह है, भव-मूर्छा है, भव-पिपासा है, भव-परिदाह है, भवासक्ति है, भव-तृष्णा है उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह भव-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ, यह भव-योग हुआ। दृष्टि-योग किसे कहते हैं? भिक्षुओ, यहाँ एक आदमी

दृष्टि (मत) की उत्पत्ति, निरोध, मज़ा, दुष्परिणाम और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जानता उस दृष्टि (मत) की उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जाननेवालेका दृष्टिके प्रति जो दृष्टि-राग है, दृष्टि-स्नेह है, दृष्टि-मूर्छा है, दृष्टि-पिपासा है, दृष्टि-परिदाह है, दृष्टि-आसक्ति है, दृष्टि-तृष्णा है उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह दृष्टि-योग कहलाता है। यह काम-योग हुआ, यह भव-योग हुआ, यह दृष्टि-योग हुआ। अविद्या-योग किसे कहते हैं? भिक्षुओ यहाँ एक आदमी छः स्पर्श-आयतनोंकी उत्पत्ति, निरोध, मज़ा, दुष्परिणाम छः स्पर्श-आयतनोंसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जानता। उन छह स्पर्शायतनोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और छह स्पर्शायतनोंसे मुक्ति यथार्थ रूपसे नहीं जाननेवालेको छह आयतनोंके विषयमें जो अविद्या है, अज्ञान है, उससे वह भर जाता है। भिक्षुओ, यह अविद्या-योग कहलाता है। यह जो काम-योग है, भव-योग है, दृष्टि-योग है, अविद्या-योग है, यह पापसे युक्त है, अकुशल-धर्मोंसे युक्त है, जो संक्लेश हैं, जो पुनर्भवका कारण हैं, जो कष्टकर हैं, जो दुक्खदायी हैं, जो भविष्यमें जाति-जरा मरनका कारण बननेवाले हैं। इसलिये इनसे युक्त आदमी अयोग-क्षेमी कहलाता है। भिक्षुओ, ये चार योग हैं।

भिक्षुओ, ये चार विसंयोग हैं। कौनसे चार? काम-योग-विसंयोग; भव-योग-विसंयोग, दृष्टि-योग-विसंयोग, अविद्या-योग-विसंयोग। भिक्षुओ, काम-योग-विसंयोग कौनसा है? भिक्षुओ, यहाँ एक (भिक्षु) काम-भोगोंकी उत्पत्ति, निरोध, मज़ा, दुष्परिणाम, और काम-भोगोंसे मुक्ति यथार्थ रूपसे जानता है। काम-भोगोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और काम-भोगोंसे मुक्ति जाननेवाला काम-भोगोंके प्रति जो काम-राग है, काम-नन्दी है, काम-स्नेह है, काम-मूर्छा है, काम-पिपासा है, काम-परिदाह है, कामासक्ति है तथा कामतृष्णा है उससे वह नहीं भरता है। भिक्षुओ, यह काम-योग-विसंयोग कहलाता है। यह काम-योग-विसंयोग हुआ।

भव-योग-विसंयोग किसे कहते हैं? भिक्षुओ, यहाँ एक (भिक्षु) भवोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और भवोंसे मुक्ति यथार्थ रूपसे जानता है, उसका भवोंके प्रति जो भव-राग है, भव-नन्दी है, भव-स्नेह है, भव-मूर्छा है, भव-पिपासा है, भव-परिदाह है, भवासक्ति है तथा भव-तृष्णा है, उससे वह नहीं भरता है। भिक्षुओ, यह भव-योग-विसंयोग कहलाता है। यह हुआ काम-योग विसंयोग तथा भव-योग विसंयोग। दृष्टि-संयोग-विसंयोग किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक (भिक्षु) दृष्टिकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम, और दृष्टिसे मुक्ति यथार्थ-रूपसे जानता है,

उसका दृष्टिके प्रति जो दृष्टि-राग है, दृष्टि-नन्दी है, दृष्टि-स्नेह है, दृष्टि-मूर्छा है, दृष्टि-पिपासा है, दृष्टि-परिदाह है, दृष्टि-आसक्ति है तथा दृष्टि-तृष्णा है उससे वह नहीं भरता है। भिक्षुओ, यह दृष्टि-योग-विसंयोग कहलाता है। यह हुआ काम-योग-विसंयोग, भवयोग विसंयोग, तथा दृष्टियोग विसंयोग। अविद्या-संयोग-विसंयोग किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, एक (भिक्षु) छह स्पर्श-आयतनोंकी उत्पत्ति, निरोध, मजा, दुष्परिणाम और मुक्ति यथार्थ-रूपसे जानता है। उसकी छः स्तर्शायतनोंके प्रति जो अविद्या है, अज्ञान है, उससे वह नहीं भरता है। भिक्षुओ, यह अविद्या-योग-विसंयोग हुआ। यह हुआ काम-योग-विसंयोग, भवयोग-विसंयोग, दृष्टि-योग-विसंयोग तथा अविद्या-संयोग-विसंयोग। ये पापोंसे, अकुशल-धर्मोंसे, संक्लेशोंसे, पुनः पुनः होनेवालोंसे, कष्ट देनेवालोंसे, दुःख परिणामवालोंसे तथा भावी जाति-जरा-मरणके कारणोंसे असम्बद्ध हैं। इसलिये योग-क्षेमी कहलाते हैं। भिक्षुओ, ये चार विसंयोग हैं।

कामयोगेन संयुत्ता भवयोगेन चुभयं।
दिट्ठियोगेन संयुत्ता अविज्जाय पुरक्खता॥
सत्ता गच्छन्ति संसारं जातिमरणगामिनो।
ये च कामे परिञ्ञाय भवयोगञ्च सब्बसो॥
दिट्ठियोगं समुहच्च अविज्जंच विराजयं।
सब्बयोगविसंयुत्तो ते वे योगातिगा मुनी॥

[जाति-मरणको प्राप्त होनेवाले प्राणी काम-योग, भवयोग तथा दृष्टियोग और अविज्जा योगसे भी संयुक्त होकर आवागमनके चक्करमें पड़ते हैं। जो काम-योग, भव-योग, दृष्टि-योग तथा अविद्या-योगको सब प्रकारसे नष्ट कर देते हैं, वे सभी बन्धनों (= योगों) से मुक्त होते हैं और वे ही योगी तथा मुनि होते हैं।]

भिक्षुओ, यदि चलते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष (व्यापाद) वितर्क, अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे बना रहने दे, उसका त्याग न करे, उसे दूर न करे, उसे हटाये नहीं, उसका अन्त न करे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु चलता हुआ भी, लगातार प्रयत्न न करनेवाला, कोशिश न करनेवाला, आलसी तथा हीन-वीर्य्य कहलाता है। भिक्षुओ, यदि (एक जगह) स्थित रहते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष (व्यापाद)-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे बना रहने दे, उसका त्याग न करे, उसे दूर न करे, उसे हटाये नहीं, उसका अन्त न करे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु (एक जगह) स्थित रहता भी लगातार प्रयत्न न करनेवाला, कोशिश न करनेवाला, आलसी तथा हीन-वीर्य्य कहलाता है।

भिक्षुओ, यदि बैठे रहनेकी अवस्थामें भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे बना रहने दे, उसका त्याग न करे, उसे दूर न करे, उसे हटाये नहीं, उसका अन्त न करे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु बैठे रहनेकी अवस्थामें भी, लगातार प्रयत्न न करनेवाला, कोशिश न करनेवाला, आलसी तथा हीन-वीर्य कहलाता है। भिक्षुओ, यदि लेटे रहनेपर, जागते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो, और वह उसे बना रहने दे, उसका त्याग न करे, उसे दूर न करे, उसे हटाये नहीं, उसका अन्त न करे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु लेटे रहनेपर भी जागते समय, लगातार प्रयत्न न करने-वाला, कोशिश न करनेवाला, आलसी तथा हीन-वीर्य्य कहलाता है। भिक्षुओ, यदि चलते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे न बना रहने दे, उसका त्याग कर दे, उसे दूर कर दे, उसे हटा दे, उसका अन्त कर दे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु चलता हुआ भी लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्य-वान्, प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि (एक जगह) स्थित रहते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे न बना रहने दे, उसका त्याग कर दे, उसे दूर कर दे, उसे हटा दे, उसका अन्त कर दे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु (एक जगह) स्थित रहता हुआ भी लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान, प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ यदि बैठे रहनेकी अवस्थामें भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे न बना रहने दे, उसका त्याग कर दे, उसे दूर कर दे, उसे हटा दे, उसका अन्त कर दे, तो भिक्षुओ ऐसा भिक्षु, बैठे रहनेकी अवस्थामें भी लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान् प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि लेटे रहनेपर, जागते समय भी भिक्षुके मनमें काम-वितर्क, द्वेष-वितर्क अथवा विहिंसा-वितर्क उत्पन्न हो और वह उसे न बना रहने दे, उसका त्याग कर दे, उसे दूर कर दे, उसे हटा दे, उसका अन्त कर दे, तो भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु लेटे रहनेपर भी जागते समय, लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान् प्रयत्न-शील कहलाता है।

चरं वा यदि वा तिट्ठं निसिन्नो उदवा सयं,
यो वितक्कं वितक्केति पापकं गेहनिस्सितं ॥
कुम्मग्गं पटिपन्नो सो मोहनेय्येसु मुच्छितो।
अभब्बो तादिसो भिक्खु फुटठं सम्बोधिमुत्तमं ॥

यो चरं वा तिट्ठं वा निसिन्नो उदवा सयं।
वितक्कं समसित्वान वितक्कूपसमे रतो।
भब्बो सो तादिसो भिक्खु फुट्ठं सम्बोधिउत्तमं।

[चलते हुए, ठहरे हुए, बैठे हुए वा लेटे हुए जो कोई भिक्षु पापी, आसक्ति-युक्त संकल्प-विकल्पोंको अपने मनमें स्थान देता है, वह कुमार्ग-गामी है, वह मूढ़-विषयोंमें मूर्छित है, और ऐसा भिक्षु उत्तम सम्बोधिका स्पर्श करनेके अयोग्य हैं। चलते हुए, ठहरे हुए, बैठे हुए वा लेटे हुए जो कोअी भिक्षु पापी, आसक्ति-युक्त संकल्प-विकल्पोंको छिन्न-भिन्न कर उनके उपशमनमें रत रहता है, वैसा भिक्षु उत्तम सम्बोधिका स्पर्श करनेके योग्य है।]

भिक्षुओ, शीलवान होकर विहार करो, प्राति-मोक्षके नियमोंका पालन करते हुए विहार करो, प्रातिमोक्षके संयमसे संयत होकर विहार करो, सदाचरणमें विचरो, छोटेसे छोटे दोषों (के करने) में भी भय माननेवाले, शिक्षा पदोंको ग्रहणकर उनका अभ्यास करो। भिक्षुओ, शीलवान होकर विहार करनेवालोंको, प्राति-मोक्षके नियमोंका पालन करते हुए विहार करनेवालोंको, प्राति-मोक्षके संयमसे संयत होकर विहार करनेवालोंको, सदाचरणमें विचरने वालोंको, छोटेसे छोटे दोषों (के करने) में भी भय मानने वालोंको, शिक्षापदोंको ग्रहण कर उनका अभ्यास करनेवालोंको आगे और क्या करना योग्य है? भिक्षुओ, यदि चलते समय भी भिक्षुके मनके लोभ तथा द्वेष विनष्ट हो जाते हैं, आलस्य (थीनमिद्ध) उद्धतपन—कौकृत्य तथा विचिकित्सा प्रहीण हो जाती हैं, (योगाभ्यासका) प्रयत्न आरम्भ हुआ रहता है, उपस्थित स्मृति लीनता-रहित, मूढ़ता-रहित होती है, शरीर शान्त-अनुत्तेजित होता है तथा चित्त समहित एकाग्र होता है। भिक्षुओ, चलते हुए भी, इस प्रकार रहनेवाला भिक्षु लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्यवान्, प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि (एक जगह) स्थित रहनेकी अवस्थामें भी भिक्षुके मनके लोभ तथा द्वेष विनष्ट हो जाते हैं, आलस्य (थीन-मिद्ध) उद्धतपन-कौकृत्य तथा विचिकित्सा प्रहीण हो जाती है, (योगाभ्यासका) प्रयत्न आरम्भ रहता है, उपस्थित-स्मृति लीनता-रहित, मूढ़ता-रहित होती है, शरीर शान्त अनुत्तेजित होता है तथा चित्त समाहित एकाग्र होता है। भिक्षुओ (एक जगह) स्थित अवस्थामें भी इस प्रकार रहनेवाला भिक्षु लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान्, प्रयत्न-शील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि बैठे रहनेकी अवस्थामें भी भिक्षुके मनके लोभ तथा द्वेष विनष्ट हो जाते हैं, आलस्य (थीनमिद्ध),

उद्धतपन-कौकृत्य तथा विचिकत्सा प्रहीण हो जाती है, (योगाभ्यास) का प्रयत्न आरम्भ हुआ रहता है, उपस्थित स्मृति लीनता-रहित, मूढ़ता-रहित होती है, शरीर शान्त अनुत्तेजित हो जाता है तथा चित्त समाहित एकाग्र होता है। भिक्षुओ, बैठे रहनेकी अवस्थामें भी इस प्रकार रहनेवाला भिक्षु लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्य-वान् प्रयत्नशील कहलाता है। भिक्षुओ, यदि लेटे रहनेपर जागते समय भी भिक्षुके मनके लोभ तथा द्वेष विनष्ट हो जाते हैं, आलस्य (थीन मिद्ध), उद्धतपन-कौकृत्य तथा विचिकित्सा प्रहीण हो जाती है, (योगाभ्यास) का प्रयत्न आरम्भ हुआ रहता है, उपस्थित स्मृति लीनता रहित, मूढ़ता-रहित होती है, शरीर शान्त अनुत्तेजित होता है तथा चित्त समाहित एकाग्र होता है। भिक्षुओ, लेटे रहनेपर, जागते समय भी इस प्रकार रहनेवाला भिक्षु लगातार प्रयत्न करनेवाला, कोशिश करनेवाला, वीर्य्यवान, प्रयत्नशील कहलाता है।

यतं चरे यतं तिट्ठे यतं अच्छे यतं सये।
यतं सम्मिञ्जये भिक्खु यतमेव नं पसारये ॥
उद्धं तिरियं अपाचीनं यावता जगतो गति।
समवेक्खिता च धम्मानं खन्धानं उदयव्ययं ॥
चेतोसमथसामीचिं सिक्खमानं सदा सतिं।
सततं पहितत्तोति आहु भिक्खु तथाविधं ॥

[चलते समय भी यत्नवान रहे, खड़े रहते हुए भी यत्नवान् रहे, बैठे रहते भी यत्नवान् रहे, लेटे रहते भी यत्नवान रहे, (हाथ-पैर) सिकोड़ते समय और पसारते समय भी भिक्षु यत्नवान रहे। ऊपर बीचमें तथा नीचे जितनी भी जगतकी गति है, उसमें स्कन्धोंका, धर्मोंका उदय-व्यय सोचकर जो भिक्षु सदा चित्तके शमन अथवा स्मृतिकी समीचीनताका अभ्यास करता है, वैसे भिक्षुको सतत प्रयत्न करनेवाला कहते हैं।]

भिक्षुओ, ये चार सम्यक् प्रधान हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु अनुत्पन्न पापी अकुशल-धर्मोके उत्पन्न होने देनेके लिये संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, प्रयास करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है; उत्पन्न पापी अकुशल-धर्मोके प्रहाणके लिये संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, प्रयास करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है; अनुत्पन्न कुशल धर्मोको उत्पन्न करनेके लिये संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, प्रयास करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है, उत्पन्न कुशल-धर्मोकी

स्थितिके लिये, बनाये रखनेके लिये, वृद्धि करनेके लिये, विपुलताके लिये, पूर्ति करनेके लिये संकल्प करता है, प्रयत्न करता है, प्रयास करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है। भिक्षुओ, ये चार सम्यक् प्रधान हैं।

सम्मप्पधाना मारधेय्याभिभूता
ते असिता जातिमरणभयस्स पारगू
ते तुसिता जेत्वान मारं सवाहनं
ते अनेजा (सब्बं) नमुचिबलं उपातिवत्ता (ते सुखिता)

[जो सम्यक् प्रधानमें रत हैं, (उन्होंने) मार-ध्येयको अभिभूतकर लिया, वे आसक्ति-रहित हैं, वे जाति-मरण-भयकी सीमाके उसपार पहुँच गये, वे सेना सहित मारको जीतकर संतुष्ट हैं, वे स्थिर हैं, उन्होंने सारी नमुची (मार) सेनाको हरा दिया; वे सुखी हैं।]

भिक्षुओ, ये चार प्रयत्न हैं। कौनसे चार? संवर-प्रयत्न, प्रहाण-प्रयत्न भावना-प्रयत्न, तथा अनुरक्षण-प्रयत्न। भिक्षुओ, संवर-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ एक भिक्षु चक्षुसे रूपको देखकर न उसके निमित्तको ग्रहण करता है और न उसके अनुव्यंजनको ग्रहण करता है, जिसके कारण यदि भिक्षु चक्षु इन्द्रियको असंयत रखता है तो लोभ-दौर्मनस्य आदि पाप-धर्म घरकर लेते हैं, उस चक्षुको संयत रखनेके लिये प्रयत्नशील होता है, चक्षु-इन्द्रियकी रक्षा करता है, चक्षु-इंद्रियको काबूमें रखता है, (इसी प्रकार) श्रोत्र-इन्द्रियसे शब्द सुनकर, घ्राण-इंद्रियसे गंध सूँघकर, जिव्हासे रस चखकर, काय (स्पर्श-इन्द्रिय) का विचारकर, न उसके निमित्तको ग्रहण करता और न उसके अनुव्यंजनको ग्रहण करता है, जिसके कारण यदि भिक्षु मन इन्द्रियको असंयत रखता है, तो लोभ-दौर्मनस्य-धर्म घरकर लेते हैं, उस मनको संयत रखनेके लिये प्रयत्न-शील होता है, मन-इन्द्रियकी रक्षा करता है, मन-इन्द्रियको काबूमें रखता है। भिक्षुओ, यह संवर-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ, प्रहाण-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु उत्पन्न काम-वितर्कको बना नहीं रहने देता है, त्यागकर देता है, दूरकर देता है, हटा देता है, अन्तकर देता है; उत्पन्न व्यापाद-वितर्कको बना नहीं रहने देता है, त्यागकर देता है, दूरकर देता है, हटा देता है, अन्तकर देता है. . . .उत्पन्न विहिंसा-वितर्कको. . . . अन्तकर देता है, जो जो पाप-धर्म, अकुशल-धर्म उत्पन्न होते हैं, उन्हें बना नहीं रहने देता है, त्यागकर देता है, दूरकर देता है, हटा देता है, अन्तकर देता है। भिक्षुओ यह प्रहाण-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ, भावना-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु, स्मृति-सम्बोधि-अंगकी भावना करता है, जो विवेकाश्रित है, विरागाश्रित है, निरोधाश्रित है तथा जो परित्याग-परिणामी है, धर्म-विचय-सम्बोधि-अंगकी भावना करता है, जो. . . . . वीर्य-सम्बोधि-अंगकी भावना करता है, जो. . . . . प्रीति-सम्बोधि-अंगकी भावना करता है, जो. . . प्रश्रब्धि-सम्बोधि-अंगकी भावना करता है, जो . . . . . . समाधि-सम्बोधि-अंगकी भावना करता है, जो. . . . . उपेक्षा-सम्बोधि-अंगकी भावना करता है, जो विवेकाश्रित है, विरागाश्रित है, निरोधाश्रित है तथा जो परित्याग-परिणामी है। भिक्षुओ, यह भावना-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ, अनुरक्षण-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु उत्पन्न श्रेष्ठ समाधि-निमित्तकी रक्षा करता है, चाहे वह अस्थि-संज्ञा हो, सूजे-शरीरकी संज्ञा हो, नीले पड़ गये शरीरकी संज्ञा हो, पीप पड़ गये शरीरकी संज्ञा हो, छेद पड़ गये शरीरकी संज्ञा हो, बहुत फूल गये शरीरकी संज्ञा हो—भिक्षुओ, यह अनुरक्षण प्रयत्न कहलाता है। भिक्षुओ, ये चार प्रयत्न हैं।

संवरो च पहाणञ्च भावना अनुरक्खणा,
एते पधाना चत्तारो देसितादिच्चबन्धुना;
ये हि भिक्खु इधातापि खयं दुक्खस्सपापुणे॥

[आदित्य-बन्धु (तथागत) ने संवर-प्रयत्न, प्रहाण-प्रयत्न, भावना-प्रयत्न तथा अनुरक्षण-प्रयत्न इन चार प्रयत्नोंका उपदेश दिया है। जो कोई भी इनमें प्रयत्नशील होगा, वह दुःखके क्षयको प्राप्त करेगा।]

भिक्षुओ, ये चार अग्र-प्रज्ञप्तियाँ हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, शरीर धारियोंमें यह अग्र है जो कि यह राहु असुरेन्द्र; भिक्षुओ, काम भोगियोंमें यह अग्र है जो कि यह राजा मान्धाता; भिक्षुओ, (दूसरोंपर अपना) आधिपत्य रखनेवालोंमें यह अग्र है जो कि यह पापी मार; भिक्षुओ, सदेव, समार, सब्रह्म लोकमें; सदेव मनुष्य, सश्रमण-ब्राह्मण जनता (प्रजा) में अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध तथागत ही श्रेष्ठ कहलाते हैं। भिक्षुओ, ये चार अग्र-प्रज्ञप्तियाँ हैं।

राहग्गं अत्तभावीनं मन्धाता कामभोगिनं,
मारो आधिपतेय्यानं इद्धिया यससा जलं।
उद्धं तिरियं अपाचीनं यावता जगतो गति,
सदेवकस्स लोकस्स बुद्धो अग्गं पवुच्चति॥

[जितने शरीरधारी हैं उनमें राहु अग्र है, जितने कामभोगी हैं उनमें मन्धाता अग्र है; ऋद्धि तथा ऐश्वर्यसे प्रज्वलित मार (दूसरोंपर) आधिपत्य करनवालोंमें अग्र है। ऊपर बीचमें तथा नीचे जितनी भी जगतकी गति हैं, उसमें सदेवलोकमें बुद्ध ही अग्र कहलाते हैं।]

भिक्षुओ, ये चार सूक्ष्मतायें हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु परं रूप सूक्ष्मतासे युक्त होता है, वह अपनी उस रूप-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा श्रेष्ठतर कोई दूसरी रूप-सूक्ष्मता नहीं देखता, वह अपनी उस रूप-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा बढ़ कर अन्य किसी रूप-सूक्ष्मताकी कामना नहीं करता; परं वेदना सूक्ष्मतासे युक्त होता है, वह अपनी उस वेदना-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा श्रेष्ठतर कोई दूसरी वेदना-सूक्ष्मता नहीं देखता; वह अपनी उस वेदना-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा बढ़कर अन्य किसी वेदना-सूक्ष्मता की कामना नहीं करता; परं-संज्ञा-सूक्ष्मतासे युक्त होता है, वह अपनी उस संज्ञा-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा श्रेष्ठतर कोई दूसरी संज्ञा-सूक्ष्मता नहीं देखता, वह अपनी उस संज्ञा-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा बढ़कर अन्य किसी संज्ञा-सूक्ष्मताकी कामना नहीं करता; परं संस्कार-सूक्ष्मतासे युक्त होता है, वह अपनी उस संस्कार-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा श्रेष्ठतर कोई दूसरी संस्कार-सूक्ष्मता नहीं देखता, वह अपनी उस संस्कार-सूक्ष्मतासे प्रणीततर वा बढ़कर अन्य किसी संस्कार-सूक्ष्मताकी कामना नहीं करता। भिक्षुओ, ये चार सूक्ष्मतायें हैं।

रूपसोखुम्मतं ञत्वा वेदनानञ्च सम्भवं,
सञ्ञा यतो समुदेति अत्थं गच्छति यत्थ च॥
सङ्खारो परतो ञत्वा दुक्खतो नो च अत्ततो,
सचे सम्मद्दसो भिक्खु सन्तो सन्तिपदे रतो;
धारेति अन्तिमं देहं जेत्वा मारं सवाहनं॥

[रूप-सूक्ष्मताको जानकर, वेदनाओंकी उत्पत्तिको जानकर तथा उसी प्रकार संज्ञाकी उत्पत्ति तथा निरोधको जानकर, सभी संस्कारोंको पराया समझ, दुःख-स्वरूप समझ, अनात्म समझ जो शान्त सम्यक्-दर्शी भिक्षु शान्ति-पदमें रत होता है, वह ससेना मार जीतकर अन्तिम देहधारी होता है।]

भिक्षुओ, ये चार अगति गमन हैं। कौनसे चार? छन्दागतिको प्राप्त होता है, द्वेषागतिको प्राप्त होता है, मोहागतिको प्राप्त होता है तथा भयागतिको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन हैं।

छन्दा दोसा भया मोहा यो धम्मं अतिवत्तति,
निहीयति तस्स यसो कालपक्खेव चन्दिमा॥

[जो कोई छन्द (=कामना), द्वेष, भय या मोहके वशीभूत हो धर्मका उल्लंघन करता है, उसका यश कृष्णपक्षके चन्द्रमाकी तरह हीनावस्थाको प्राप्त होता जाता है।]

भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन नहीं हैं। कौनसे चार? छन्दागतिको प्राप्त नहीं होता, द्वेषागतिको प्राप्त नहीं होता, मोहागतिको प्राप्त नहीं होता तथा भयागतिको प्राप्त नहीं होता। भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन नहीं हैं।

छन्दा दोसा भया मोहा यो धम्मं नातिवत्तति,
आपूरति तस्स यसो सुक्कपक्खेव चन्दिमा॥

[जो कोई छन्द (=कामना), द्वेष, भय या मोहके वशीभूत हो धर्मका उल्लंघन नहीं करता है, उसका यश शुक्ल-पक्षके चन्द्रमाकी तरह अभिवृद्धिको प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन हैं। कौनसे चार? छन्दागतिको प्राप्त होता है, द्वेषागतिको प्राप्त होता है, मोहागतिको प्राप्त होता है तथा भयागतिको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन हैं।

भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन नहीं हैं। कौनसे चार? छन्दागतिको प्राप्त नहीं होता, द्वेषागतिको प्राप्त नहीं होता, मोहागतिको प्राप्त नहीं होता, भयागतिको प्राप्त नहीं होता। भिक्षुओ, ये चार अगति-गमन नहीं हैं।

छन्दा दोसा भया मोहा यो धम्मं अतिवत्तति,
निहीयति तस्स यसो कालपक्खेव चन्दिमा॥
छन्दा दोसा भया मोहा यो धम्मं नातिवत्तति,
आपूरति तस्स यसो सुक्कपक्खेव चन्दिमा॥

[जो कोई छन्द (=कामना), द्वेष, भय या मोहके वशीभूत हो धर्मका उल्लंघन करता है, उसका यश कृष्णपक्षके चन्द्रमाकी तरह हीनावस्थाको प्राप्त होता जाता है।

जो कोई छन्द, द्वेष, भय या मोहके वशीभूत हो धर्मका उल्लंघन नहीं करता उसका यश शुक्ल-पक्षके चन्द्रमाकी तरह अभिवृद्धिको प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, जिस भोजन-व्यवस्थापक (भिक्षु) में ये चार बातें हो उसे ऐसा, ऐसा ही मानना चाहिये जैसे लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार

बातें ? वह छन्दागतिको प्राप्त होता है, वह द्वेषागतिको प्राप्त होता है, वह मोहागतिको प्राप्त होता है, वह भयागतिको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जिस भोजन-व्यवस्थापक (भिक्षु) में ये चार बातें हों उसे ऐसा ही मानना चाहिये जैसे लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भोजन-व्यवस्थापक (भिक्षु) में ये चार बातें न हों उसे ऐसा ऐसा ही मानना चाहिये जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बातें ? वह छन्दागतिको प्राप्त नहीं होता, वह द्वेषागतिको प्राप्त नहीं होता, वह मोहागतिको प्राप्त नहीं होता, वह भयागतिको प्राप्त नहीं होता। भिक्षुओ, जिस भोजन- व्यवस्थापक (भिक्षु) में ये चार बातें हों उसे ऐसा ही मानना चाहिये जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

ये केचि कामेसु असञ्ञता जना,
अधम्मिका होन्ति अधम्मगारवा ॥
छन्दा च दोसा च भया च गामिनो,
परिसक्कसावो च पनेसवुच्चति ॥
एवं हि वुत्तं समणेन जानता,
तस्मा हि ते सप्पुरिसा पसंसिया ॥
धम्मे ठिता ये न करोन्ति पापकं,
न छन्द दोसा न भया च गामिनो ॥
परिसाय मण्डो च पनेस वुच्चति,
एवं हि वुत्तं समणेन जानता ॥

[जो जन काम-भोगके प्रति असंयत रहते हैं; अधार्मिक होते हैं; धर्म-गौरव न करनेवाले होते हैं, छन्द, द्वेष तथा भयके वशीभूत होनेवाले होते हैं, वे परिषदके कलंक कहलाते हैं। जानकार श्रमण (=बुद्ध) ने ऐसा कहा है। इसलिये अगतियोंमें न जाने वाले सत्पुरुष प्रशंसनीय हैं। जो धर्ममें स्थित रहते हैं, जो पाप-कर्म नहीं करते हैं ; जो छन्द, द्वेष और भयके वशमें नहीं जाते, वे परिषदके अलंकार कहलाते हैं—यह जानकार श्रमण (=बुद्ध) ने कहा है।]

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डकके जेतवनाराममें विहार करते थे। वहाँ भगवानने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ!" उन भिक्षुओंने भगवान्को प्रत्युतर दिया—"भदन्त।" भगवानने यह कहा—

भिक्षुओ, अभिसम्बुद्ध होनेके तुरन्त बाद एक समय मैं नेरञ्जरा नदीके तटपर अजपाल न्यग्राध वृक्षके नीचे, उरूवेलामें विहार करता था। उस समय भिक्षुओ, एकान्तमें चिन्तन करते हुए मेरे मनमें यह संकल्प उठा—किसीके भी प्रति गौरव-रहित होकर, आदर-रहित होकर रहना दुःखकर है। क्यों न मैं किसी श्रमण वा ब्राह्मणके प्रति गौरव-युक्त होकर, आदरयुक्त होकर उसके आश्रयमें रहूँ? तब मेरे मनमें यह हुआ कि मैं अपूर्व शीलस्कन्धकी पूर्तिके लिये किसी श्रमण वा ब्राह्मणके प्रति गौरव-युक्त, आदर-युक्त होकर उसके आश्रयमें रहूँ, किन्तु मैं सदेव समार, सब्रह्म लोकमें; सश्रमण सब्राह्मण सदेव मनुष्य जनता (= प्रजा) में किसी दूसरे ऐसे श्रमण वा ब्राह्मणको नहीं देखता जो मेरी अपेक्षा अधिक शीलवान् हो, जिसके प्रति गौरव-युक्त होकर आदर-युक्त होकर मैं उसके आश्रयमें रहूँ। (इसी प्रकार) समाधि-स्कन्धकी पूर्तिके लिये, प्रज्ञास्कन्धकी पूर्तिके लिये किसी श्रमण वा ब्राह्मणके प्रति गौरव-युक्त, आदर-युक्त होकर उसके आश्रयमें रहूँ, किन्तु मैं सदेव, समार, सब्रह्म लोकमें; सश्रमण, सब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता (= प्रजा) में किसी दूसरे ऐसे श्रमण वा ब्राह्मणको नहीं देखता जो मेरी अपेक्षा अधिक शीलवान् हो, जिसके प्रति गौरव-युक्त होकर आदर-युक्त होकर मैं उसके आश्रयमें रहूँ। (इसी प्रकार) विमुक्ति-स्कन्धकी पूर्तिके लिये किसी श्रमण वा ब्राह्मणके प्रति गौरव-युक्त आदर-युक्त होकर उसके आश्रयमें रहूँ, किन्तु मैं सदेव, समार, सब्रह्म लोकमें सश्रमण सब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता (= प्रजा) में किसी दूसरे ऐसे श्रमण वा ब्राह्मणको नहीं देखता जो मेरी अपेक्षा अधिक विमुक्ति-वान् हो, जिसके प्रति गौरव-युक्त होकर आदर-युक्त होकर मैं उसके आश्रयमें रहूँ। तब भिक्षुओ, मेरे मनमें यह हुआ कि जिस धर्मका मैंने ज्ञान प्राप्त किया है, उसी धर्मके प्रति गौरव-युक्त होकर, आदर-युक्त होकर उसके आश्रयमें रहूँ।

तब हे भिक्षुओ, सहम्पति ब्रह्माने अपने चित्तसे मेरे चित्तकी बात जान, जैसे कोई बलवान् पुरुष सिकुड़ी हुई बाँहको फैलाये या फैली हुई बाँहको सिकोड़े, इसी प्रकार ब्रह्मलोकसे अन्तर्धान होकर मेरे सामने प्रकट हुआ। तब भिक्षुओ, सहम्पति ब्रह्मा उत्तरीयको एक कंधेपर कर दाहिने घुटनेको पृथ्वीपर टेक, जहाँ मैं था वहां मुझे हाथ जोड़कर इस प्रकार बोला—ऐसा ही है भगवान्! ऐसा ही है सुगत! भन्ते! जो भी भूत कालमें अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध हुए हैं, वे भी भगवान्के धर्मके ही प्रति गौरव-युक्त होकर, आदर-युक्त होकर, उसीके आश्रयसे विहार करते थे; भन्ते! जो भविष्यत्में भी अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध होंगे वे भी भगवानके धर्मके

ही प्रति गौरव युक्त होकर, आदर-युक्त होकर, उसीके आश्रयसे विहार करेंगे; भन्ते! भगवान भी इस समय अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध हैं, भगवान् भी धर्मके प्रति ही गौरव-युक्त होकर, आदर-युक्त होकर उसीके आश्रयसे विहार करें। सहम्पति ब्रह्माने यह कहा और इसके आगे यह कहा—

ये च ब्भतीता सम्बुद्धा ये च बुद्धा अनागता,
यो चेतरहि सम्बुद्धो बहुन्नं सोकनासनो ॥
सब्बे सद्धम्मगरुनो विहंसु विहरन्ति च,
अथोपि विहरिस्सन्ति एसा बुद्धान धम्मता ॥
तस्माहि अत्थकामेन महन्तमभिसंखता,
सद्धम्मो गरुकातब्बो सरं बुद्धान सासनं ॥

[जो भूतकालके सम्बुद्ध हुए हैं, जो भविष्यत् कालके बुद्ध होंगे तथा अनेक जनोंके शोक-नाशक जो वर्तमान कालके सम्बुद्ध हैं, वे सभी सद्धर्मका गौरव करनेवाले रहे हैं, रहेंगे तथा हैं—यही बुद्धोंका स्वभाव है। इसलिये जो अर्थ-कामी हो, जिसकी महान् आकांक्षा हो, उसे बुद्धोंके शासनका स्मरणकर सद्धर्मके प्रति गौरवका भाव रखना चाहिये।]

भिक्षुओ, सहम्पति ब्रह्माने यह कहा और इसके अनन्तर मुझे अभिवादन कर प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तर्धान हो गया। तबसे भिक्षुओ, ब्रह्माका भी विचार जानकर और अपने भी अनुकूल जिस धर्मका मैंने साक्षात् किया उसी धर्मके प्रति गौरव रख, आदर रख, उसीके आश्रय रहने लगा। क्योंकि भिक्षुओ, संघका भी महत्व है, इसलिये संघके प्रति भी मेरे मनमें महान गौरव है।

भिक्षुओ, अभिसम्बुद्ध होनेके तुरन्त बाद एक समयमें मैं नेरञ्जरा नदी तटपर अजपाल न्यग्रोध (वृक्ष) के नीचे, उरूवेलामें विहार करता था। तब भिक्षुओ, बहुतसे पुरनिया, वृद्ध, बूढ़े, बुजुर्ग, आयु-प्राप्त ब्राह्मण जहाँ मैं था वहाँ आये। आकर मेरे साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर एक ओर बैठ गये। भिक्षुओ, एक ओर बैठे हुए उन ब्राह्मणोंने मुझे यह कहा "हे गौतम! हमने सुना है कि श्रमण गौतम न पुरनियों, वृद्धों, बूढ़ों, बुजुर्ग, आयु-प्राप्त ब्राह्मणोंको अभिवादन करता है, न प्रत्युपस्थान करता है, न उन्हें आसन देता है। हे गौतम! यदि यह ऐसा ही है कि श्रमण गौतम न पुरनियों, बृद्धों, बूढ़ों, बजुर्ग, आयुप्राप्त ब्राह्मणोंको अभिवादन करता है, न प्रत्युपस्थान करता है, न उन्हें आसन देता है तो हे गौतम! यह उचित नहीं है। तब भिक्षुओ, मेरे मनमें यह हुआ कि ये आयुष्यमान न तो यह जानते हैं

कि स्थविर (ज्येष्ठ) कौन होता है और न यह जानते हैं कि स्थविर (= ज्येष्ठ) बनानेवाले धर्म कौनसे होते हैं? भिक्षुओ, चाहे कोई आयुसे अस्सी वर्षका, नौवे वर्षका वा सौ वर्षका बूढ़ा हो, लेकिन वह हो अकाल-वादी, अभूत (= अयथार्थ)–वादी अनर्थ-वादी, अधर्म-वादी, अविनय-वादी, कौड़ी कीमतकी ऐसी वाणी बोलनेवाला, जिसका समय नहीं, जो तर्क-संगत नहीं, जिसका कोई उद्देश्य नहीं, जो अनर्थकारी हो, तो ऐसी वाणी बोलनेवाला मूर्ख स्थविर (= ज्येष्ठ) ही कहलाता है। और भिक्षुओ, यदि तरुण हो, युवा हो, लड़का हो, काले केशोंवाला, भद्र यौवनसे युक्त हो, आरम्भिक आयु हो और वह हो काल-वादी, भूत (= यथार्थ)-वादी, अर्थ-वादी, धर्म-वादी, विनय-वादी, मूल्यवान् वाणी बोलनेवाला, जिसका समय हो, जो तर्क संगत हो, जिसका कोई उद्देश्य हो तथा जो अर्थ-कारी हो तो ऐसी वाणी बोलनेवाला पण्डित स्थविर (ज्येष्ठ) ही कहलाता है। भिक्षुओ, ये चार स्थविर बनानेवाली बातें हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमोंके अनुसार चलनेवाला, आचार-गोचर-युक्त, छोटे दोषमें भी मय माननेवाला, शिक्षा-पदोंको ग्रहणकर सीखनेवाला; (२) बहुश्रुत होता है, श्रुत-धर, श्रुतको संचित रखनेवाला, जो धर्म आदिमें कल्याणकारक ह, मध्यमें कल्याणकारक हैं, अन्तमें कल्याणकारक हैं, सार्थक हैं, सव्यञ्जन हैं, केवल परिपूर्ण परिशुद्ध ब्रह्मचर्यके प्रकाशक हैं, वैसे धर्म बहुश्रुत होते हैं, धारण किये होते हैं, वाणी द्वारा परिचित होते है, मन द्वारा अनुपेक्षित होते हैं, (सम्यक्) दृष्टि द्वारा भली प्रकार ज्ञात होते हैं, (३) चैतसिक, इसी जन्ममें सुखका अनुभव देनेवाले चारों ध्यानोंको सरलतासे, सुविधासे, आसानीसे प्राप्तकर लेनेवाला होता है (४) आस्रवोंका क्षय होकर अनास्रव चित्त-विमुक्ति तथा प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं जानकर, साक्षात्कर, प्राप्तकर विहार करता है। भिक्षुओ ये चार स्थविर बनानेवाली बातें हैं।

यो उद्धतेन चित्तेन सम्फञ्च बहु भासति,
असमाहितसङ्कप्पो असद्धम्मरतो मगो;
आरा सो थावरेय्यम्हा पापदिट्ठी अनादरो ॥
यो च सीलेन सम्पन्नो सुतवा पटिभानवा,
सञ्ञातो धीरधम्मेसु पञ्ञायत्थं विपस्सति,
पारगु सब्ब धम्मानं अखिलो पटिभाणवा ॥
पहीणजातिमरणो ब्रह्मचर्य्यस्स केवली,

तमहं वदामि थेरोति यस्स नो सन्ति आसवा;
आसवानं खया भिक्खु सो थेरोति पवुच्चति ॥

[जो व्यक्ति उद्धत चित्तसे व्यर्थ बहुत बोलता है, जो असमाहित (=चंचल) संकल्पोंवाला है, जो असद्धर्ममें रत है, जो मूर्ख है, वह पाप-दृष्टि अनादृत मनुष्य ज्येष्ठपनसे दूर है। जो सदाचारी है, जो बहुश्रुत है, जो ज्ञानी है, जो धीर-धर्मोंमें संयत है, जो अपनी प्रज्ञासे अर्थको देखता है, जो सभी धर्मोंमें पारंगत है, जो दोष-रहित है, जो मेघावी है, जो जाति-मरणके बन्धनसे मुक्त है, जो सम्पूर्ण ब्रह्मचारी है, जिसके आस्रव नहीं हैं—मैं उसे स्थविर कहता हूँ। जो भिक्षु आस्रवोंसे मुक्त है, वह स्थविर कहलाता है।]

भिक्षुओ, तथागतके द्वारा संसार (=लोक) जान लिया गया है, तथागत लोकसे मुक्त (=विसंयुक्त) हैं; भिक्षुओ, तथागतके द्वारा लोक-समुदय जान लिया गया है, तथागतका लोक-समुदाय प्रहीण हो गया हैं; भिक्षुओ, तथागतके द्वारा लोक-निरोध जान लिया गया है, तथागतको लोक-निरोधका साक्षात्कार हो गया है ; भिक्षुओ, तथागतके द्वारा लोक-निरोध-गामिनी प्रतिपदा जान ली गई है, तथागत द्वारा लोक-निरोध-गामिनी-प्रतिपदा (=मार्ग) अभ्यस्त है। भिक्षुओ तथागतको 'तथागत' इसलिये कहते हैं कि सदेव, समार, सब्रह्म लोकमें, सश्रमण-ब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता (=प्रजा) में जो कुछ भी इष्ट है, श्रुत है, मुत (=शेष इंद्रियों द्वारा अनुभूत) है, ज्ञात है, प्राप्त है, परियेषित है, मनसे विचार किया गया है, वह सब तथागत द्वारा जान लिया गया है। भिक्षुओ, जिस रात तथागत 'बुद्धत्व' लाभ करते हैं और जिस रात तथागत 'परिनिर्वाण' प्राप्त करते हैं, इस बीच तथागत जो कुछ भाषण करते हैं, जो कुछ बोलते हैं, जो कुछ निर्देश करते हैं, वह सब वैसा ही होता है, अन्यथा नहीं, इसलिये तथागत 'तथागत' कहलाते हैं। भिक्षुओ, तथागत जैसा बोलते हैं, वैसा करते हैं, जैसा करते हैं वैसा बोलते हैं। क्योंकि तथागत यथावादी तथाकारी हैं और यथाकारी तथावादी हैं, इसलिये तथागत 'तथागत' कहलाते हैं। भिक्षुओ, समार, सब्रह्म लोकमें, सश्रमण सब्राह्मण, सदेव मनुष्य जनता (=प्रजा) में तथागत दूसरोंको आधीन बनानेवाले हैं, वे किसी दूसरेके आधीन नहीं हैं, दस (बल)-धारी हैं, वशवर्ती हैं—इसलिये तथागत कहलाते हैं।

सब्बलोकं अभिञ्ञाय सब्बलोके यथातथं,
सब्बलोकविसंयुत्तो सब्बलोके अनूपयो ॥

सवे सब्बाभिभू धीरो सब्बगन्थप्पमोचनो,
फुट्ठस्स परमा सन्ति निब्बाणं अकुतोभयं ॥
एस खीणासवो बुद्धो अनीघोच्छिन्नसंसयो,
सब्ब कम्मक्खयं पत्तो विमुत्तो उपधीसङ्खये ॥
एस सो भगवा बुद्धो एस सीहो अनुत्तरो,
सदेवकस्स लोकस्स ब्रह्मचक्कं पवत्तयी ॥
इति देव मनुस्सा च ये बुद्धं सरणं गता,
सङ्गम्म नं नमस्सन्ति महन्तं वीतसारदं ॥
दन्तो दमयतं सेट्ठो सन्तो समयतं इसि,
मुत्तो मोचयतं अग्गो तिण्णो तारयतं वरो ॥
इति हेतं नमस्सन्ति महन्तं वीतसारदं,
सदेवकस्मि लोकस्मि नत्थि ते पटिपुग्गलो ॥

[सब संसार (=लोक) को जानकर, सब लोकके प्रति यथार्थ, सब लोकसे मुक्त, सब लोकसे अलिप्त। वही सबको अभिभूत करनेवाला धीर पुरुष है, वही सब ग्रन्थियोंसे मुक्त है, उसने भय रहित, परं शान्ति स्वरूप निर्वाणका साक्षात कर लिया है। यह क्षीणास्रव बुद्ध हैं, यह कम्पन-रहित हैं, यह संशय-रहित हैं। यह सब कर्मोंका क्षय कर चुके हैं, विमुक्त हैं, उपधि-क्षय हैं। यह वह भगवान् बुद्ध हैं, यह सिंह हैं, यह सर्वश्रेष्ठ हैं, इन्होंने सदेव-लोकके लिये ब्रह्म-चक्रका प्रवर्तन किया है। जो देव-मनुष्य बुद्धकी शरण गये हैं, वे इकट्ठे होकर उस महान् बुद्धिमान्को नमस्कार करते हैं। वह स्वयं दान्त हैं, दमन करनेवालोंमें श्रेष्ठ हैं, शान्त हैं, शमन करनेवाले हैं, ऋषी हैं, मुक्त हैं, मुक्त करनेवालोंमें अग्र हैं, उत्तीर्ण हैं, पार उतारनेवालोंमें अग्र हैं। इसलिये आप महान बुद्धिमानको नमस्कार करते हैं। सदेव लोकमें आपकी बराबरी कर सकनेवाला कोई नहीं।]

एक समय भगवान् साकेतमें कालकाराममें विहार करते थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओंको आमन्त्रित किया—"भिक्षुओ!" उन भिक्षुओंने भगवानको प्रतिवचन दिया—"भदन्त!" तब भगवानने यह कहा—

"भिक्षुओ! सदेव, समार, सब्रह्म लोकमें, सश्रमण-ब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनतामें (=प्रजा) में जो कुछ भी दृष्ट है, श्रुत है, मुत (=शेष इन्द्रियों द्वारा अनुभूत) है, ज्ञात है, प्राप्त है, परियेषित है, मनसे विचार किया गया है, वह मैं जानता हूँ। भिक्षुओ, सदेव, समार, सब्रह्म लोकमें, सश्रमण-ब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता

(= प्रजा) में जो कुछ भी दृष्ट है, श्रुत है, मुत (= शेष इन्द्रियों द्वारा अनुभूत) है, ज्ञात है, प्राप्त है, परियेषित है, मनसे विचार किया गया है, वह मैंने जान लिया है। यह सब तथागतको विदित है, किन्तु तथागत उसे (मैं मेरा करके) अपनाते नहीं हैं। भिक्षुओ, यदि मैं यह कहूँ कि जो कुछ भी सदेव, समार, सब्रह्म लोकमें, सश्रमण-ब्राह्मण सदेव-मनुष्य जनता (= प्रजा) में जो कुछ भी दृष्ट है, श्रुत है, मुत (= शेष इन्द्रियों द्वारा अनुभूत) है, ज्ञात है, प्राप्त है, परियेषित है, मनसे विचार किया गया है, वह सब मैं जानता हूँ तो मेरा ऐसा कहना मृषावाद होगा। भिक्षुओ, यदि मैं यह कहूँ कि मैं जानता हूँ और नहीं जानता हूँ तो यह भी मृषावाद होगा और यदि यह कहूँ कि न तो जानता हूँ और न नहीं जानता हूँ तो यह दोष होगा। इसलिये भिक्षुओ, तथागत आंखसे द्रष्टव्य, दृष्टको (मैं मेरा करके) नहीं मानते अदृष्टको नहीं मानते, द्रष्टव्यको नहीं मानते, द्रष्टाको नहीं मानते; कानसे श्रोतव्य, श्रुतको (मैं मेरा करके) नहीं मानते, अश्रुतको नहीं मानते, श्रोतव्यको नहीं मानते, श्रोताको नहीं मानते; मुत (= शेष तीन इंद्रियों) से मोतव्य, मुतको (मैं मेरा करके) नहीं मानते, अमुतको नहीं मानते, मोतव्यको नहीं मानते, मोताको नहीं मानते, विज्ञान (= मन) से विज्ञातव्य, विज्ञातको (मैं मेरा करके) नहीं मानते, अविज्ञातको नहीं मानते, विज्ञातव्यको नहीं मानते, विज्ञाताको नहीं मानते। इस प्रकार भिक्षुओ, द्रष्ट, श्रुत, मुत धर्मोके प्रति तथागत का स्थिर (= तादी) भाव ही है। मैं कहता हूँ कि स्थिर-चित्त मनमें उनसे श्रेष्ठतर वा प्रणीतर कोई नहीं है।

यंकिञ्चि दिट्ठंच सुतं मुतं वा अज्झोसितं सच्चमुतं परेसं,
न तेसु तादी सयसंवुतेसुं सच्चं मुसा वापि परं दहेय्यं॥
एतं च सल्लं पटिगच्च दिस्वा अज्झोसिता यत्थ पजा विसत्ता,
जानाभि पस्सामि तथेव एतं अज्झोसितं नत्थि तथागतानं॥

[जो कुछ दृष्ट है, श्रुत है, मुत (= शेष तीन इंद्रियों द्वारा अनुभूत है,) अथवा दूसरों द्वारा आसक्तिपूर्वक ग्रहण किया गया है, उन स्वयं संवृत–धर्मोमें वह स्थिर नहीं होता। उस 'पर' को 'सत्य' वा मृषा करके धारण करे। इसी शल्य (= बुराई) को पहले ही देखकर, जिन विषयोंमें जनता आसक्ति पूर्वक बंधी हुई है; उन्हें मैं वैसे ही जानता हूँ, देखता हूँ। तथागतकी किसी विषयमें आसक्ति नहीं है।]

भिक्षुओ यह जो श्रेष्ठ जीवन (= ब्रह्मचर्य) है; यह जनताके सम्मुख ढोंग करनेके लिये नहीं है; यह जनताके सम्मुख बात बनानेके लिये नहीं है, यह लाभ सत्कार, और प्रशंसा प्राप्त करनेके लिये नहीं है, यह वाद करनेके लिये नहीं है,

यह इसलिये भी नहीं कि लोग मुझे जान लें; भिक्षुओ, यह ब्रह्मचर्य-वास संयमके लिये है, प्रहाणके लिये है, विरागके लिये है, निरोधके लिये है।

संवरत्थं पहाणत्थं ब्रह्मचरियं अनीतिहं,
अदेसयी सो भगवा निब्बाणोगधगामिनं ॥
एस मग्गो महन्तेहि अनुयातो महेसिहि,
ये च तं पटिपज्जन्ति यथा बुद्धेन देसितं,
दुक्खस्सन्तं करिस्सन्ति सत्थु सासनकारिनो ॥

[उन भगवान् (बुद्ध) ने संवरके लिये, प्रहाणके लिये, यथार्थ ब्रह्मचर्य-वासकी देशना उन लोगोंके लियेकी है जो निर्वाणमें डुबकी लगाना चाहते हैं। यह वह मार्ग है जिसका महान् महर्षियोंने अनुकरण किया है, जो बुद्धकी देशनानुसार इस मार्गपर चलते हैं, शास्ताके अनुशासनमें रहनेवाले लोग दुःखका अन्त कर डालते हैं।]

भिक्षुओ, जो भिक्षु ढोंगी होते हैं, जड़ होते है, बातूनी होते हैं, झूठे होते हैं, अभिमानी होते हैं, चंचल होते हैं हे भिक्षुओ! वे भिक्षु मेरे भिक्षु नहीं होते, भिक्षुओ, वे भिक्षु इस धर्म-विनयसे दूर चले गये होते हैं, वे इस धर्म-विनयकी अभिवृद्धि विपुलता के कारण नहीं होते। भिक्षुओ, जो भिक्षु ढोंगी नहीं होते, जड़ नहीं होते, बातूनी नहीं होते, झूठे नहीं होते, अभिमानी नहीं होते, चञ्चल नहीं होते, भिक्षुओ! वे भिक्षु मेरे भिक्षु होते हैं, भिक्षुओ, वे भिक्षु इस धर्म-विनयसे दूर चले गये नहीं होते, वे इस धर्म-विनयकी उन्नति, अभिबृद्धि तथा विपुलताके कारण होते हैं।

कुहा थद्धा लपा सिङ्गी उन्नला असमाहिता,
न ते धम्मे विरूहन्ति सम्मासम्बुद्धदेसिते ॥
निक्कुहा निल्लपा धीरा अत्थद्धा सुसमाहिता,
ते वे धम्मे विरूहन्ति सम्मासम्बुद्धदेसते ॥

[जो ढोंगी, बातूनी, झूठे, अभिमानी तथा चंचल होते हैं वे सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धर्ममें उन्नति नहीं करते। जो ढोंगी नहीं होते, बातूनी नहीं होते, झूठे नहीं होते, अभिमानी नहीं होते तथा चंचल नहीं होते, वे सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धर्ममें उन्नति करते हैं।]

भिक्षुओ चार चीजें ऐसी हैं जो (प्रमाणमें) अल्प हैं, सुलभ हैं तथा निर्दोष हैं। वे चार चीजें, कौनसी हैं? भिक्षुओ, चीवरोंमें गुदड़ी (पांशुकूल) चीवर अल्प होता है, सुलभ होता है तथा निर्दोष होता है। भिक्षुओ भोजनोंमें, भिक्षाटनसे प्राप्त भोजन अल्प होता है, सुलभ होता है तथा निर्दोष होता है। भिक्षुओ, शयनासनोंमें

वृक्षके नीचे रहना अल्प है, सुलभ है तथा निर्दोष है। भिक्षुओ, भैषज्योंमें गो-मूत्र अल्प है, सुलभ है तथा निर्दोष है। भिक्षुओ, ये चार चीजें प्रमाणमें अल्प हैं, सुलभ हैं तथा निर्दोष हैं। भिक्षुओ, जो भिक्षु अल्पसे तथा सुलभसे सन्तुष्ट होता है, यह भी मैं उसके श्रमण-भावका एक अंग कहता हूँ।

अनवज्जेन तुट्ठस्स अप्पेन सुलभेन च
न सेनासनमारब्भ चीवरम्पानभोजनं ॥
विघातो होति चित्तस्स दिसा न पटिहञ्ञति,
ये चस्स धम्मा अक्खाता सामञ्जस्सानुलोमिका,
अधिग्गहीता तुट्ठस्स अप्पमत्तस्स भिक्खुनो ॥

[जो चीवर, भोजन तथा शयनासनके सम्बन्धमें अल्प तथा सुलभसे संतुष्ट होता है, उसके चित्तको विघात नहीं होता, उसे दिशाओंकी बाधा नहीं होती। उसके लिये श्रामण्यके अनुकूल जो धर्म कहे गये हैं; उन्हें उस सन्तोषी अप्रमादी भिक्षुने धारण किया होता है।]

भिक्षुओ, ये चार आर्यवंश हैं जो अग्र हैं, जो (सुदीर्घ) कालसे हैं, जो वंश-गत हैं, जो पुराने हैं, जो असंकीर्ण हैं, जो असंकीर्ण-पूर्व हैं, जो न संकीर्ण होते हैं और न संकीर्ण होंगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित हैं। कौनसे चार आर्यवंश हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु जैसे तैसे चीवरसे संतुष्ट होता है, जैसे-तैसे चीवरसे संतुष्ट रहनका प्रशंसक, वह चीवरके लिये अनुचित खोज नहीं करता, अनुचित प्रयास नहीं करता, चीवरके न मिलनेपर उत्तेजित नहीं होता, चीवर मिलनेपर उसे अना-सक्त होकर, अमूर्छित रहकर, तृष्णा-रहित होकर, उसके दुष्परिणामोंको देखता हुआ उसमेंसे निकलनेकी दृष्टि रखता हुआ उसका परिभोग करता है; वह उस जैसे-तैसे चीवरसे संतुष्ट रहनेके कारण न अपनेको ऊंचा करके दिखाता है, न दूसरोंको नीचा करके दिखाता है, वह दक्ष होता है, आलस्य-रहित होता है, जानकार होता है तथा स्मृतिमान होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भिक्षु पुराने, अग्र, आर्य-वंशमें स्थित कहा जाता है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे-तैसे पिण्ड-पात (= भिक्षा) से संतुष्ट होता है, जैसे-तैसे पिण्ड-पातसे संतुष्ट रहनेका प्रशंसक, वह पिण्ड-पातके लिये अनुचित खोज नहीं करता, अनुचित प्रयास नहीं करता, पिण्डपातके न मिलनेपर उत्तेजित नहीं होता, पिण्डपात मिलनेपर उसे अनासक्त होकर, अमूर्छित रहकर, तृष्णा-रहित होकर उसके दुष्परिणामोंको देखता हुआ, उसमेंसे निलकनेकी दृष्टि रखता हुआ, उसका परिभोग

करता है, वह उस जैसे-तैसे पिण्ड-पातसे संतुष्ट रहनेके कारण, न अपनेको ऊंचा करके दिखाता है, न दूसरोंको नीचा करके दिखाता है, वह दक्ष होता है, आलस्य-रहित होता है, जानकार होता है तथा स्मृतिमान होता हैं। भिक्षुओ, इस प्रकारका भिक्षु पुराने, अग्र, आर्य-वंशमें स्थित कहा जाता है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे-तैसे शयनासन (निवास स्थानादि) से संतुष्ट होता है, जैसे-तैसे शयनासनसे संतुष्ट रहनेका प्रशंसक वह शयनासनके लिये अनुचित खोज नहीं करता, अनुचित प्रयास नहीं करता, शयनासनके न मिलनेपर उत्तेजित नहीं होता, शयनासन मिलनेपर उसे अनासक्त होकर, अमूछित रहकर, तृष्णा रहित होकर उसके दुष्परिणामोंको देखता हुआ, उसमेंसे निलकनेकी दृष्टि रखता हुआ परिभोग करता है, वह उस जैसे-तैसे शयनासनसे संतुष्ट रहनेके कारण, न अपनेको ऊँचा करके दिखाता है, न दूसरोंको नीचा करके दिखाता है, वह दक्ष होता है, आलस्य-रहित होता है, जानकार होता है तथा स्मृतिमान होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भिक्षु पुराने, अग्र, आर्य-वंशमें स्थित कहा जाता है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु भावना-अभ्यासी होता है, भावनामें रत; प्रहाण अभ्यासी होता है, प्रहाणमें रत; उस भावना अभ्यासके कारण, भावनामें रत होनेके कारण; प्रहाण—अभ्यासी होनेके कारण, प्रहाणमें रत रहनेके कारण, वह न अपनेको ऊंचा करके दिखाता है, न दूसरेको नीचा करके दिखाता है; वह दक्ष होता है, आलस्य-रहित होता है, जानकार होता है तथा स्मृतिमान होता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भिक्षु पुराने, अग्र, वंशमें स्थित कहा जाता है।

भिक्षुओ, ये चार आर्य-वंश हैं जो अग्र हैं, जो (सुदीर्घ) कालसे हैं, जो वंश-गत हैं, जो पुराने हैं, जो असंकीर्ण (अमिश्रित) हैं, जो असंकीर्ण-पूर्व हैं, जो न संकीर्ण होते हैं और न संकीर्ण होंगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित हैं। भिक्षुओ, इन चारों आर्य-वंशोंसे युक्त भिक्षु यदि पूर्व दिशामें विहार करता है तो वह ही 'अरति' को सहन करता है, उसे 'अरति' सहन नहीं करती; यदि पश्चिम दिशामें भी विहार करता है तो वह ही 'अरति' को सहन करता है, उसे 'अरति' सहन नहीं करती; उत्तर दिशामें भी विहार करता है तो वह ही 'अरति' को सहन करता है, उसे 'अरति' सहन नहीं करती; यदि दक्षिण दिशामें भी विहार करता है तो वह ही 'अरति' को सहन करता है, उसे 'अरति' सहन नहीं करती। भिक्षुओ, यह किसलिये ? 'अरति' 'रति' को सहन करनेवाला ही 'धीर' होता है।

नारति सहति धीरं नारति धीरं संहति,
धीरो च अरतिं सहति धीरो हि अरति सहो ॥
सब्ब कामविहायिनं पनुन्नं को निवारये,
नेक्खं जम्बोनदस्सेव को तं निन्दितुमरहति,
देवापि नं पसंसन्ति ब्रह्मुनापि पसंसितो ॥

['अरति' धीरको सहन नहीं करती, 'अरति' धीरको नहीं पहुँचती; धीर पुरुष ही अरतिको सहन करता है, धीर ही 'अरति-सह' होता है। जिसने सब कामोंको छोड़ दिया, जिसने सबको त्याग दिया, उसे कौन रोक सकता है? जम्बुनद स्वर्णके समान उसकी कौन निन्दा कर सकता है, देवता भी उसकी प्रशंसा करते हैं, ब्रह्मा द्वारा भी वह प्रशंसित होता है।]

भिक्षुओ ये चार धर्मपद हैं, जो अग्र हैं, जो (दीर्घ) कालसे हैं, जो वंश-गत हैं, जो पुराने हैं, जो असंकीर्ण (= अमिश्रित) हैं, जो असंकीर्ण-पूर्व हैं, जो न संकीर्ण होते हैं और न संकीर्ण होंगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित हैं। कौनसे चार?

भिक्षुओ, अलोभ एक धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वंश-गत है, जो पुराना है, जो संकीर्ण (अमिश्रित) है, जो असंकीर्ण—पूर्व है, जो न संकीर्ण होता है, और न संकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित है।

भिक्षुओ, अक्रोध (अव्यापाद) एक धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वंश-गत है, जो पुराना है, जो असंकीर्ण (अमिश्रित) है, जो असंकीर्ण-पूर्व है, जो न संकीर्ण होता है और न संकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित है।

भिक्षुओ, सम्यक् स्मृति एक धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वंश-गत है, जो पुराना है, जो असंकीर्ण (अमिश्रित) है, जो असंकीर्ण-पूर्व है, जो न संकीर्ण होता है और न संकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित है।

भिक्षुओ, सम्यक् समाधि एक धर्मपद है जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वंश गत है, जो पुराना है, जो असंकीर्ण (= अमिश्रित) है, जो असंकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित है।

भिक्षुओ, ये चार धर्मपद हैं, जो अग्र हैं, जो (सुदीर्घ) काल से हैं, जो वंश-गत हैं, जो पुराने हैं, जो असंकीर्ण (= अमिश्रित) हैं, जो असंकीर्ण-पूर्व है, जो न संकीर्ण होते हैं और न संकीर्ण होंगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित हैं।

अनभिज्झालु विहरेय्य अव्यापन्नेन चेतसा,
सतो एकग्गचित्तस्त अज्झत्तं सुसमाहितो ।।

[लोभ-रहित, क्रोध-रहित चित्तसे, स्मृतिमान् सुसमाहित, एकाग्र-चित्त होकर विहार करे।]

एक समय भगवान् राजगृहमें विहार करते थे, गृध्र-कूट पर्वतपर। उस समय बहुतसे प्रसिद्ध प्रसिद्ध परिव्राजक जैसे अन्नभार, वरधर, सकुलदायि——तथा अन्य भी प्रसिद्ध परिव्राजक सर्पिणी (नदी) के तटपर परिब्राजकाराममें रहते थे। योगाभ्यास कर चुकनेके अनन्तर शामको भगवान् जहाँ सर्पिणीके किनारे परिब्राजकाराम था, वहाँ गए। जाकर बिछे आसनपर बैठे। बैंठकर भगवान्ने उन परिब्राजकोंको यह कहा "हे परिब्राजको ! ये चार धर्मपद हैं, जो अग्र हैं, जो (सुदीर्घ) कालसे हैं, जो वंश-गत हैं, जो पुराने हैं, जो असंकीर्ण (= अमिश्रित) हैं, जो असंकीर्ण पूर्व हैं, जो न संकीर्ण होते हैं और न संकीर्ण होंगे और जो विज्ञ श्रमण-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित हैं। कौनसे चार ?

"हे परिब्राजको ! अलोभ एक धर्मपद है, जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वंश-गत है, जो पुराना है, जो असंकीर्ण (= अमिश्रित) है, जो असंकीर्ण-पूर्व है, जो न संकीर्ण होता है और न संकीर्ण होगा और जो विज्ञ श्रमणों-ब्राह्मणों द्वारा समर्थित है। हे परिब्राजको ! अक्रोध एक धर्मपद है. . . . . . हे परिब्राजको ! सम्यक् स्मृति एक धर्मपद है. . . . . . . हे परिब्राजको ! सम्यक् समाधि एक धर्मपद है जो अग्र है, जो (सुदीर्घ) कालसे है, जो वंश-गत है, जो पुरानी है, जो असंकीर्ण (= अमिश्रित) है, जो असंकीर्ण-पूर्व है, जो न संकीर्ण होती है और न संकीर्ण होगी और जो विज्ञ श्रमणों ब्राह्मणों द्वारा समर्थित है। हे पारिब्राजको ! ये चार धर्मपद हैं, जो अग्र हैं, जो (सुदीर्घ) कालसे हैं, जो वंश-गत हैं, जो पुराने हैं, जो असंकीर्ण (= अमिश्रित) हैं, जो असंकीर्ण-पूर्व है, जो न संकीर्ण होते हैं और न संकीर्ण होंगे और जो विज्ञ श्रमणों ब्राह्मणों द्वारा समर्थित हैं।

"हे परिब्राजको ! जो ऐसा कहेगा कि मैं इस अलोभ धर्म-पदका निषेध करके ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध करुंगा जो लोभी हो, जो कामभोगोंके प्रति तीव्र रागी हो, तो मैं उसे कहुँगा——वह आये, बोले, व्यवहार करे, उसका प्रताप देखता हूँ। हे पारिब्राजको ! इसकी सम्भावना नहीं है कि वह अलोभ धर्म-पदका निषेध करके, ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध कर सकेगा, जो लोभी हो, जो कामभोगों के प्रति तीव्र रागी हो।

"हे परिव्राजको ! जो ऐसा कहेगा कि मैं इस अक्रोध धर्मपदका निषेध करके ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध करूँगा जो क्रोधी हो, जो द्वेष-युक्त संकल्पोंवाला हो, तो मैं उसे कहूँगा—वह आये, बोले, व्यवहारकरे, मैं उसका प्रताप देखता हूँ। हे पारिव्राजको ! इसकी सम्भावना नहीं है कि वह अक्रोध धर्म-पदका निषेध करके, ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध कर सकेगा, जो क्रोधी हो, जो द्वेष-युक्त-संकल्पों वाला हो।

"हे परिव्राजको ! जो ऐसा कहेगा कि मैं इस सम्यक् स्मृति धर्मपदका निषेध करके, ऐसे श्रमण या ब्राह्मण को प्रसिद्ध करूंगा जो मूढ़-स्मृति हो, जो अजानकार हो, तो मैं उसे कहूँगा—वह आये, बोले, व्यवहार करे, मैं उसका प्रताप देखता हूँ। हे परिव्राजको ! इसकी सम्भावना नहीं है कि वह सम्यक्-स्मृति धर्म-पदका निषेधकर, ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्धकर सकेगा, जो मूढ़ स्मृति हो, जो अजानकार हो।

"हे परिव्राजको ! जो ऐसा कहेगा कि मैं इस सम्यक्-समाधि धर्म-पदका निषेध करके ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध करुंगा जो एकाग्र-चित्तन हो, जो भ्रान्त चित्त हो, तो मैं उसे कहूँगा—वह आये, बोले, व्यवहार करे, मैं उसके प्रतापको देखता हूँ। हे परिव्राजको ! इसकी सम्भावना नहीं है कि वह सम्यक्-समाधि धर्म-पदका निषेध करके ऐसे श्रमण या ब्राह्मणको प्रसिद्ध कर सकेगा, जो एकाग्र-चित्त न हो, जो भ्रान्त-चित्त हो।

"हे परिव्राजको ! जो इन चारों धर्म पदोंको गर्हित, निषेध करने योग्य मानता है, वह इसी शरीरमें चार अधार्मिक, आलोच्य, निन्दनीय मतोंका माननेवाला हो जाता है। कौनसे चार मतोंका ! यदि जनाब अलोम धर्मपदकी गर्हा करते हैं निषेध करते हैं तो जो श्रमण-ब्राह्मण लोभी हैं, काम-भोगोंके प्रति तीव्र रागी हैं, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाबके पूजनीय बन जाते हैं, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाब द्वारा प्रशंसित हो जाते हैं।

"यदि जनाब अक्रोध धर्मपद की गर्हा करते हैं, निषेध करते हैं तो जो श्रमण-ब्राह्मण क्रोधी हैं, द्वेषयुक्त संकल्पोंवाले हैं, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाबके पूजनीय बन जाते हैं, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाब द्वारा प्रशंसित हो जाते हैं।

"यदि जनाब सम्यक् स्मृतिकी गर्हा करते हैं, निषेध करते हैं तो जो श्रमण-ब्राह्मण मूढ़-स्मृति हैं, अजानकार हैं, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाबके पूजनीय बन जाते हैं, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाब द्वारा प्रशंसित होते जाते हैं।

"यदि जनाब सम्यक् समाधिकी गर्हा करते हैं, निषेध करते हैं, तो जो श्रमण-ब्राह्मण एकाग्र-चित्त न हों, भ्रान्त चित्त हों, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाबके पूजनीय बन जाते हैं, वे श्रमण-ब्राह्मण ही जनाब द्वारा प्रशंसित हो जाते हैं।

"हे परिव्राजको! जो इन चारों धर्मपदोंको गर्हित, निषेध करने योग्य मानता है, वह इसी शरीरमें चार अधार्मिक, आलोच्य, निन्दनीय मतोंका माननेवाला हो जाता है।

"हे परिव्राजको! जो उत्कल बोली बोलनेवाले (?) हुए, अहेतुवादी हुए, अक्रिया-वादी हुए, नास्तिक (नास्ति-वादी) हुए, उन्होंने भी इन चारों धर्म-पदोंकी निन्दा नहीं की, निषेध नहीं किया। यह किस लिये? निन्दा, क्रोध तथा उपालम्भके भयसे।

अब्यापन्नो सदा सतो अज्झत्तं सुसमाहितो,
अभिज्झा विनये सिक्खं अप्पमत्तोत्ति वुच्चति ॥

[अक्रोधी, सदास्मृति, अपनेमें एकाग्रचित्त, लोभके वशीभूत न होनेवाला, शिक्षाकामी ही 'अप्रमादी' कहलाता है।]

भिक्षुओ, ये चार चक्के हैं जिनसे युक्त देवमनुष्योंका जीवन (= चतु-चक्र) चलता है, जिनसे युक्त देव मनुष्य थोड़े ही समयमें भोग्य-पदार्थोंके विषयमें महानताको, विपुलताको प्राप्त होते हैं। कौनसे चार? अनुकूल (प्रतिरूप) देशवास, सत्पुरुष-आश्रय, चित्तकी स्थिरता, पूर्व (-जन्ममें) कृत पुण्य-कर्म। भिक्षुओ, ये चार चक्के हैं जिनसे युक्त देवमनुष्योंका जीवन (= चतुचक्क) चलता है, जिनसे युक्त देवमनुष्य थोडे ही समयमें योग्य-पदार्थोंके विषयमें महानताको, विपुलताको प्राप्त होते हैं।

पतिरूपे वसे देसे अरियचित्त करोसिया,
सम्मा पणिधि सम्पन्नो पुब्बे पुञ्ञकतो नरो,
धञ्ञं धनं यसो कित्ति सुखं चेतं धिवत्तति ॥

[जो आदमी अनुकूल देशमें रहता है, जो आर्य-चित्त रखता है, जो स्थिर-चित्त रखता है, जिसने पूर्व (-जन्ममें) पुण्य-कर्म किये हैं, ऐसे आदमीका धान्य, धन, यश, कीर्ति तथा सुख बढ़ता है।]

भिक्षुओ, ये चार (लोक-) संग्रह वस्तुयें हैं। कौनसी चार? दान, प्रिय-वचन, उपकार तथा समानताका व्यवहार। भिक्षुओ, ये चार संग्रह-वस्तुयें हैं।

दानं च पेय्यवज्जञ्च अत्थचरियाय च या इध,
समानतता च धम्मेसु तत्थ तत्थ यथा रहं,
एते खो सङ्गहा लोके रथस्सानीव यायतो ॥

[दान प्रियवचन, उपकार तथा जहाँ तहाँ यथायोग्य समताका बर्ताव—ये लोकमें चार संग्रह-वस्तुयें हैं, वैसी ही जैसी चलते हुए रथकी आणी।]

एते च सङ्गहा नास्सु न माता पुत्तकारणा,
लभेथ मानं पूजं वा पिता वा पुत्तकारणा ॥
यस्मा च संगहा एते समवेक्खन्ति पण्डिता,
तस्मा महत्तं पप्पोन्ति पासंसा च भवन्ति ते ॥

[यदि ये संग्रह-वस्तुयें न हों, तो न पुत्रसे माताको ही अथवा पिताको ही मान या पूजा मिले। क्योंकि पण्डित-जन इन संग्रह-वस्तुओंका ध्यान रखते हैं, इसीलिये वे महत्वको प्राप्त होते हैं तथा प्रशंसनीय बनते हैं।]

भिक्षुओ, शामके समय मृगराज सिंह अपनी गुफामेंसे निकलता है। वह गुफामेंसे निकलकर जम्हाई लेता है। जम्हाई लेकर चारों ओर देखता है। चारों ओर देखकर तीन बार सिंह-नाद करता है। तीन बार सिंह-नाद करके शिकारके लिये निकलता है। भिक्षुओ, जो भी पशु-प्राणी मृगराज सिंहको दहाड़ते हुए सुनते हैं वे प्रायः भयभीत हो जाते हैं, संत्रसित हो जाते हैं। बिलमें रहनेवाले बिलमें घुस जाते हैं, पानीमें रहनेवाले पानीमें घुस जाते हैं, वनमें रहनेवाले वनमें घुस जाते हैं, आकाशमें उड़नेवाले पक्षी आकाशमें उड़ जाते हैं। भिक्षुओ, ग्राम-निगम-राजधानिओं में राजाके जो हाथी बड़े मजबूत रस्सोंसे बंधे रहते हैं, वे भी उन बन्धनोंको तोड़कर, डरके मारे पेशाब-पाखाना करते हुए जहाँ-तहाँ भाग जाते हैं। भिक्षुओ, पशु-प्राणियोंके लिये मृग-राजसिंह ऐसा ऋद्धिमान् होता है, ऐसा महा शक्तिशाली होता है, ऐसा महा प्रतापवान् होता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जब लोकमें अर्हत्, सम्यक् सम्बुद्ध, विद्याचरण सम्पन्न, सुगत, लोकके जानकार, अनुत्तर, पुरुषोंका दमन करनेके लिये सारथी-समान, देव-मनुष्योंके शास्ता भगवान् बुद्ध तथागत जन्म ग्रहण करते हैं, तो वे धर्मोपदेश देते हैं कि यह 'सत्काय' है, यह 'सत्काय' का समुदय है, यह 'सत्काय' का निरोध है, यह 'सत्काय' के निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है। भिक्षुओ, जो दीर्घायु, वर्णवान् सुख-बहुल, चिरकालसे ऊँचे-ऊँचे विमानोंपर रहनेवाले देवता हैं वे भी तथागतकी, धर्म-देशना सुनकर प्रायः भयभीत हो जाते हैं, संत्रासको प्राप्त होते हैं। वे सोचते

है—हमने 'अनित्य' होकर अपने आपको 'नित्य' माना, 'अध्रुव' होकर अपने अपने आपको 'ध्रुव' माना, 'अशाश्वत' होकर अपने आपको 'शाश्वत' माना। हम भी 'अनित्य' हैं, 'अध्रुव' हैं, 'अशाश्वत' हैं, 'सत्काय' के अन्तर्गत हैं। भिक्षुओ, सदेव लोकमें तथागत इतने ऋद्धिमान् हैं, इतने महाशक्ति शाली हैं, इतने महान् प्रतापवान् हैं।

यदा बुद्धो अभिञ्ञाय धम्मचक्कं पवत्तयि,
सदेवकस्स लोकस्स सत्था अप्पटिपुग्गलो ॥
सक्कायञ्च निरोधञ्च सक्कायस्स च सम्भवं,
अरियंचटठङ्गिकं मग्गं दुक्खुपसमगामिनं ॥
येपि दीघायुका देवा वण्णवन्ता यसस्सिनो,
भीता सन्तासमापादुं सीहस्सेवितरे मिगा,
अवीतिवत्ता सक्कायं अनिच्चा किर यो मयं;
सुत्वा अरहतो वाक्यं विप्पमुत्तस्स तादिनो ॥

[सदेव लोकके शास्ता, अतुलनीय बुद्धने जब 'बुद्धत्व' लाभ करनेके अनन्तर धर्मचक्र प्रवर्तित किया (अर्थात्) 'सत्काय', 'सत्काय' का समुदय, 'सत्काय' का निरोध और 'सत्काय' के निरोधका आर्य अष्टांगिक मार्ग प्रकाशित किया, तो जितने भी दीर्घायु, वर्णवान्, यशस्वी देव थे वे भयभीत हो गये, संत्रस्त हो गये जैसे सिंहसे इतर पशु। स्थिर-चित्त, विप्रमुक्त, अर्हतके वाक्य सुनकर उन्होंने सोचा कि हम 'सत्काय' की सीमाके भीतर हैं, हम 'अनित्य' हैं।]

भिक्षुओ, ये चार अग्र प्रसन्नतायें (= प्रसाद) हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ जितने भी प्राणी हैं, अपद हों, द्विपद हों, चतुष्पद हों, बहुपद हों, रूपी हों, अरूपी हों, संज्ञी हों, असंज्ञी हों अथवा नेवसंज्ञीनासंज्ञी हों, तथागत ही उनमें अग्र कहलाते हैं, अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध। भिक्षुओ, जो बुद्धके प्रति श्रद्धावान् हैं, वे 'अग्र' के प्रति श्रद्धावान् हैं। जो 'अग्र' में श्रद्धावान् हैं, उन्हें 'अग्र' फलका ही लाभ मिलता है। भिक्षुओ, जितने भी संस्कृत धर्म हैं, आर्य अष्टांगिक मार्ग उनमें अग्र कहलाता है। भिक्षुओ, जो आर्य अष्टांगिक-मार्ग में श्रद्धावान् हैं, वे 'अग्र' में श्रद्धावान् हैं। जो 'अग्र' में श्रद्धावान् हैं, उन्हें 'अग्र' फलाका ही लाभ मिलता है। भिक्षुओ, जितने भी संस्कृत वा असंस्कृत धर्म हैं, 'विराग' उन सबमें 'अग्र' कहलाता है, जो कि मदका मर्दन करनेवाला है, पिपासाको शान्तकरने वाला है, आसक्तिका नाश करनेवाला है, (संसार) मार्गका उच्छेद करनेवाला है, तृष्णाका क्षय करनेवाला है, वैराग्य-स्वरूप है, निरोध-

स्वरूप है, निर्वाण है। भिक्षुओ, जो धर्ममें 'श्रद्धावान् हैं, वे 'अग्र' में श्रद्धावान् हैं। जो 'अग्र' में श्रद्धावान् हैं, उन्हें 'अग्र' फलका ही लाभ मिलता है। भिक्षुओ, जितने भी 'संघ' वा 'गण' हैं, तथागतका श्रावक-संघ उनमें 'अग्र' कहलाता है, जो कि ये चार पुरुष-युगल अर्थात् आठ प्रकारके पुद्गल हैं, यही भगवान्का श्रावक संघ है, आदर करने योग्य, पहुनाई करने योग्य, दक्षिणा देने योग्य, हाथ जोड़ने योग्य तथा लोक का श्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र। भिक्षुओ, जो संघके प्रति 'श्रद्धावान्' हैं, वे 'अग्र' में श्रद्धावान् हैं। जो 'अग्र' में श्रद्धावान् हैं, उन्हें 'अग्र' का ही लाभ मिलता है। भिक्षुओ, ये चार अग्र प्रसन्नतायें (= प्रसाद) हैं।

अग्गतो वे पसन्नानं अग्गं धम्मं विजानतं,
अग्गे बुद्धे पसन्नानं दक्खिणेय्ये अनुत्तरे ॥
अग्गे धम्मे पसन्नानं विरागुपसमे सुखे,
अग्गे सङ्घे पसन्नानं पुञ्ञक्खेत्ते अनुत्तरे ॥
अग्गस्मिं दानं ददतं अग्गं पुञ्ञं पवड्ढति,
अग्गं आयुं च वण्णो च यसो कित्ति सुखं बलं ॥
अग्गस्स दाता मेधावी अग्गधम्मसमाहितो,
देवभूतो मनुस्सो वा अग्गप्पत्तो पमोदति ॥

[जो अग्र (श्रेष्ठ) में प्रसन्न हैं, जो अग्र (श्रेष्ठ) धर्मके जानकार हैं, जो अग्र (श्रेष्ठ) बुद्धके प्रति श्रद्धावान् हैं, जो अनुत्तर (सर्वश्रेष्ठ) दक्षिणार्ह संघके प्रति श्रद्धावान् हैं, जो विराग-स्वरूप, उपशमनकारक, सुखदायक अग्र (श्रेष्ठ) धर्मके प्रति श्रद्धावान् हैं, इसी प्रकार अनुत्तर (श्रेष्ठ) पुण्य-क्षेत्र संघके प्रति जो श्रद्धावान् हैं, वे जब अग्र (श्रेष्ठ) संघको दान देते हैं तो उनके अग्र (श्रेष्ठ) पुण्यमें बृद्धि होती है और उसकी आयु, वर्ण, यश, कीर्ति, सुख तथा बल सब अग्र (बढ़िया) होता है। जो अग्र (श्रेष्ठ) को देनेवाला मेधावी पुरुष है, जो अग्र (श्रेष्ठ) धर्ममें समाहित है, वह देव-योनि या मनुष्य योनिमें पैदा हो, अग्र (श्रेष्ठ फल) को प्राप्तकर आनन्दित होता है।]

एक समय भगवान् राजगृहमें, वेळुवनके कलन्दकनिवापमें विहार करते थे। तब मगध महामात्य वस्सकार ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे वहाँ आया। पास आकर भगवान्के साथ कुशल क्षेमकी बातचीत की। कुशल क्षेमकी बातचीत हो चुकनेपर वह अेक ओर बैठ गया। अेक ओर बैठे हुए उस मगध महामात्य वस्सकार ब्राह्मणने भगवान्से यह कहा—

"हे गौतम! जो कोई इन चार गुणोंसे युक्त होता है, उसे महाप्रज्ञावान् महापुरुष कहते हैं। कौनसे चारगुणोंसे? हे गौतम! अुसे उस उस श्रुतिका ज्ञान होता है, वह बहुश्रुत होता है, वह उस उस कथनका अर्थ जानता है, इस कथनका यह अर्थ है और इस कथनका यह अर्थ है; वह स्मृतिमान होता है चिर-कृत, चिर-भाषित की भी स्मृति बनी रहती है; जो गृहस्थोंके गृहस्थकार्य हैं, उन के विषयमें दक्ष होता है, आलस्य-रहित, उनके विषयमें उपाय-कुशल होता है, करनेमें समर्थ, व्यवस्था करनेमें समर्थ। हे गौतम! जो इन चार गुणोंसे युक्त होता है, उसे हम महाप्रज्ञावान महा-पुरुष कहते हैं? हे गौतम! यदि मेरा कथन अनुमोदन करने योग्य है तो आप गौतम इसका अनुमोदन करें, यदि निषेध करने योग्य हो तो आप गौतम इसका निषेध करें।"

"हे ब्राह्मण! मैं तेरे कथनका न समर्थन करता हूँ और न निषेध करता हूँ। किन्तु हे ब्राह्मण! मैं चार गुणोंसे युक्तको महाप्रज्ञावान् महापुरुष कहता हूँ। कौनसे चार गुणोंसे युक्त को? हे ब्राह्मण! वह बहुत जनोंके हितमें लगा होता है, बहुत जनोंके सुखमें, उसके द्वारा बहुत सी जनता कल्याणपथपर, कुशल-पथपर प्रति-ष्ठित होती है; वह जो विकल्प मनमें उठाना चाहता है, वह विकल्प मनमें उठाता है, जो विकल्प मनमें उठाना नहीं चाहता, वह विकल्प मनमें नहीं उठाता है, जो संकल्प मनमें उठाना चाहता है, वह संकल्प मनमें उठाता है, जो संकल्प मनमें उठाना नहीं चाहता, वह संकल्प मनमें नहीं उठाता है। इस प्रकार वह संकल्प-विकल्पोंके वषयमें चित्तका स्वामी होता है, उसे चारों चैतसिक ध्यान, जो सुखविहार हैं, सुविधा से प्राप्त रहते हैं, अनायास प्राप्त रहते हैं, आसानी से प्राप्त रहते हैं; वह आसवोंका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। हे ब्राह्मण! मैं तेरे कथनका न समर्थन करता हूँ और न निषेध करता हूँ। किन्तु हे ब्राह्मण! मैं चार गुणोंसे युक्तको महाप्रज्ञावान् महापुरुष कहता हूँ।"

"आश्चर्य है हे गौतम! अद्भुत है हे गौतम! आप गौतमने क्या सुभाषित किया है! हम आप गौतमको ही इन चार गुणोंसे युक्त जानते हैं। आप गौतमही बहुत जनोंके हितमें लगे हैं, बहुत जनोंके सुखमें; आपके ही द्वारा बहुत सी जनता कल्याण-पथपर कुशल-पथपर प्रतिष्ठित हुई है, आप ही जो विकल्प मनमें उठाना चाहते हैं, वे विकल्प मनमें उठाते हैं, जो विकल्प मनमें उठाना नहीं चाहते, वह विकल्प मनमें नहीं उठाते हैं; जो संकल्प मनमें उठाना चाहते हैं, वह संकल्प मनमें उठाते हैं,

जो संकल्प मनमें उठाना नहीं चाहते, वह संकल्प मनमें नहीं उठाते हैं। इस प्रकार संकल्प-विकल्पोंके विषयमें चित्तके स्वामी हैं; आपको चारों चैतसिक ध्यान, जो सुखविहार हैं, सुविधासे प्राप्त हैं, अनायास प्राप्त हैं, आसानीसे प्राप्त हैं, आप आस्रवोंका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करते हैं।"

"निश्चयसे ब्राह्मण! तू ने ठीक बात कही है। लेकिन तो भी मैं तुझे यह समझा-कर कहता हूँ। ब्राह्मण! मैं ही बहुत जनोंके हितमें लगा हूँ, बहुत जनोंके सुखमें; मेरे ही द्वारा बहुत सी जनता कल्याणपथपर, कुशल-पथपर प्रतिष्ठित हुई है। मैं ही जो विकल्प मनमें उठाना चाहता हूँ वह विकल्प मनमें उठाता हूँ, जो विकल्प मनमें उठाना नहीं चाहता वह विकल्प मनमें नहीं उठाता हूँ, जो संकल्प मनमें उठाना चाहता हूँ वह संकल्प मनमें उठाता हूँ, जो संकल्प मनमें उठाना नहीं चाहता वह संकल्प मनमें नहीं उठाता हूँ। इस प्रकार संकल्प-विकल्पोंके विषयमें चित्तका स्वामी हूँ मुझे चारों चैतसिक ध्यान, जो सुखविहार हैं, सुविधासे प्राप्त हैं, अनायास प्राप्त हैं, आसानीसे प्राप्त हैं, मैं आस्रवोंका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं साक्षात कर, प्राप्त कर, विहार करता हूँ।

यो वेदी सब्बसत्तानं मच्चुपासा पमोचनं,
हितं देवमनुस्सानं ञायं धम्मं पकासयी;
यं वे दिस्वा च सुत्वा च पसीदति बहुज्जनो ॥
मग्गामग्गस्स कुसलो कतकिच्चो अनासवो,
बुद्धो अन्तिमसारीरो महापुञ्ञो महापुरिसोति वुच्चति ॥

[जो जानकार हैं, जिन्होंने सब प्राणियोंको मृत्यु-पाशसे मुक्त करनेवाले, देव-मनुष्योंके हितकर, ज्ञेय धर्मको प्रकाशित किया है, जिन्हें देखकर तथा जिनका उपदेश सुनकर बहुत जन प्रसन्न होते हैं, जो मार्ग-मार्गके विषयमें कुशल हैं, जो कृतकृत्य हैं, जो अनास्रव हैं, जो अन्तिम शरीरधारी बुद्ध हैं, ये महाप्रज्ञ, महापुरुष कहलाते हैं।]

एक समय भगवान् उक्कटठ तथा सेतव्यके बीच रास्तेसे जा रहे थे। द्रोण ब्राह्मण भी उक्कटठ तथा सेतव्यके बीच रास्तेसे जा रहा था। द्रोण ब्राह्मणने देखा कि भगवानके पाँवमें चक्र हैं, हजारों हैं, नेमी सहित हैं, नाभी सहित हैं, सभी आकार-प्रकार परिपूर्ण हैं। उसे देखकर यह हुआ—'अरे! यह आश्चर्य है, अरे! यह अद्भुत है। यह मनुष्यके पाँव नहीं होंगे।

तब भगवान् मार्गसे हटकर एक वृक्षके नीचे बैठे, पाल्थी मारकर, शरीरको सीधाकर तथा स्मृतिको सामने रख।

तब द्रोण ब्राह्मण भगवानके चरण-चिन्होंका अनुकरण करते हुए चला। उसने भगवानको एक वृक्षके नीचे बैठा हुआ देखा। प्रसन्न, प्रसन्न-मुद्रामें शान्तेन्द्रिय, शान्त-मन, उत्तम-दमन-शमन-युक्त, संयत, इन्द्रिय-जित। उन्हें देखकर वह जहाँ भगवान् थे वहाँ गया। पास जाकर उसने भगवान्से यह कहा—"आप देवता होंगे ?"

"ब्राह्मण ! मैं देवता नहीं हूँ।"

"आप गन्धर्व होंगें ?"

"ब्राह्मण ! मैं गन्धर्व नहीं हूँ।"

"आप यक्ष होंगे।"

"ब्राह्मण ! मैं यक्ष नहीं हूँ।"

"आप मनुष्य होंगे।"

"ब्राह्मण ! मैं मनुष्य नहीं हूँ।"

"आप देवता होंगे ?' पूछनेपर आप कहते हैं 'हे ब्राह्मण ! मैं देवता नहीं नहीं हूँ'; 'आप गन्धर्व होंगे, पूछनेपर आप कहते हैं, 'ब्राह्मण ! मैं गन्धर्व नहीं हूँ'; 'आप यक्ष होंगे, 'पूछनेपर आप कहते हैं, 'ब्राह्मण ! मैं यक्ष नहीं हूँ', आप मनुष्य होंगे' पूछनेपर आप कहते है, 'ब्राह्मण ! मैं मनुष्य नहीं हूँ' तो आप कौन है ?"

"हे ब्राह्मण ! जिन आस्रवोंके होनेसे मुझे 'देवता' कहा जा सकता था, मेरे वे आस्रव 'प्रहीण' हो गये हैं, जड़से जाते रहे हैं, कटे ताड़की तरह हो गये हैं, अभाव-प्राप्त हो गये हैं, भावी उत्पत्तिकी सम्भावना नहीं रही है। हे ब्राह्मण ! जिन आस्रवोंके होनेसे मुझे 'गन्धर्व' कहा जा सकता था, 'यक्ष' कहा जा सकता था, 'मनुष्य' कहा जा सकता था, मेरे आस्रव 'प्रहीण' हो गये हैं, जड़से जाते रहे हैं, कटे ताड़की तरह हो गये हैं, अभाव-प्राप्त हो गये हैं, भावी-उत्पत्तिकी सम्भावना नहीं रही है। ब्राह्मण ! जैसे उत्पल हो, पद्म हो वा पुण्डरीक हो, वह पानीमें पैदा हो, पानीमें बढ़े किन्तु वह पानीसे अलिप्त रहकर उससे ऊपर रहे। इसी प्रकार ब्राह्मण ! मैं लोकमें पैदा हुआ हूँ, लोकमें बढ़ा हूँ, किन्तु लोकको जीतकर (ऊपर उठकर) उससे अलिप्त रहकर विहार करता हूँ। ब्राह्मण ! मुझे 'बुद्ध' समझ।

येन देवूपपत्यस्स गन्धब्बो वा विहङ्गमो,
यक्खत्तं येन गच्छेय्यं मनुस्सत्तञ्च अण्डजे,
ते मय्हं आसवा खीणा विधस्ता विनलीकता ॥

पुण्डरीकं यथा वग्गु तोयेन नुपलिप्पति,
नवुपलित्तामि लोकेन तस्मा बुद्धोस्मि ब्राह्मण ।।

[जिन आस्रवोंके कारण मैं देव, गन्धर्व, या यक्ष होकर पैदा होता, अथवा मेरी 'मनुष्य' संज्ञा होती, मेरे वे सब 'आस्रव' क्षीण, विध्वस्त हो गये, नष्ट हो गये। जैसे सुन्दर कमल जलसे लिप्त नहीं होता, उसी तरह मैं भी लोकसे लिप्त नहीं होता। इसीलिये हे ब्राह्मण! मैं बुद्ध हूँ।]

भिक्षुओ, चार बातोंसे युक्त भिक्षु पतनके अयोग्य हो जाता है, उसे निर्वाणके समीप ही समझना चाहिअे। कौन-सी चार बातोंसे? भिक्षुओ, भिक्षु, शील-सम्पन्न होता है, इन्द्रियोंको वशमें किये होता है, भोजनकी मात्रा जाननेवाला होता है, जागनेवाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु शील सम्पन्न कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमोंके अनुसार चलनेवाला, आचार-गोचरयुक्त, अणु-मात्र दोष करनेमें भी भय-भीत, शिक्षापदोंका सम्यक् प्रकार ग्रहण कर अभ्यास करने वाला। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु शीलसम्पन्न होता है। भिक्षुओ, भिक्षु इन्द्रियोंको कैसे वशमें किये रहता है? भिक्षुओ, भिक्षु चक्षुसे रूपको देखकर न उसके निमित्तको ग्रहण करता है, न उसके अनुव्यंजनको ग्रहण करता है, जिस चक्षु इन्द्रियके असंयत विहारसे लोभ, द्वेष रूपी पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न हो सकते हैं, उस चक्षु इन्द्रियको संयत रखनेके लिये प्रयत्नशील होता है, वह चक्षु इन्द्रियकी रक्षा करता है, चक्षु इन्द्रियको संयत रखता है, श्रोतसे शब्द सुनकर.... घ्राणसे गन्ध सूंघकर... जिव्हासे रस चखकर.... स्पर्श इन्द्रियसे स्पर्श करके तथा मनसे मनके विषयोंका मननकर न उसके निमित्तको ग्रहण करता है, न उसके अनुव्यंजनको ग्रहण करता है, जिस मन इन्द्रियके असंयत विहारसे लोभ, द्वेष रूपी पापी अकुशल धर्म उत्पन्न हो सकते हैं, उस मन इन्द्रियको संयत रखनेके लिये प्रयत्नशील होता है, वह मन इंद्रियकी रक्षा करता है, मन इन्द्रियको संयत रखता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु इन्द्रियोंको वशमें किये रहता है।

भिक्षुओ, भिक्षु भोजनकी मात्रा जानने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु सोच विचार कर आहार ग्रहण करता है, न हंसी-खेलके लिये, न मदके लिये, न मण्डनके लिये, न अपने आपको सजानेके लिअे, जब तक इस शरीरकी स्थिति है तब तक शरीर-यापनके लिये, विहिंसासे विरतिके लिये, ब्रह्मचर्य्य (श्रेष्ठ जीवन) पर अनुग्रह करनेके लिये, पुरानी वेदनाओंका शमन करूँगा, नई वेदना उत्पन्न न होने दूंगा, मेरी जीवन-यात्रा निर्दोष होगी तथा जीवन सुविधापूर्वक बीतेगा। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु भोजनकी मात्रा जानने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु जागने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु दिनमें चलते-फिरते रहकर वा बैठकर चित्तके आवरण-मलोंसे चित्तको शुद्ध करता है, रात्रिके प्रथम याममें चलते-फिरते रहकर वा बैठकर चित्तके आवरण-मलोंसे चित्तको शुद्ध करता है, रात्रिके मध्यम-याममें पाँवपर पाँव रखकर दाईं करवट सिंह शैय्यासे लेटता है, स्मृति-मान, उठनेके संकल्पको मनमें जगह देकर, रात्रिके अन्तिम-याममें उठकर चलते-फिरते रहकर वा बैठकर चित्तके आवरण-मलोंसे चित्तको शुद्ध करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु जागनेवाला होता है।

भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त भिक्षु पतनके अयोग्य हो जाता है, उसे निर्वाणके समीप ही समझना चाहिये।

सीले पतिट्ठितो भिक्खु इन्द्रियेसु च संवुतो,
भोजनम्हि च मत्तञ्ञू जागरियं अनुयुञ्जति,
एवं विहरमानो पि अहोरत्तमतन्दितो,
भावयं कुसलं धम्मं योगक्खेमस्स पत्तिया,
अप्पमादरतो भिक्खु पमादे भयदस्सिवा,
अभब्बो परिहाणाय निब्बाणस्सेव सन्तिके ॥

[जो भिक्षु शीलमें प्रतिष्ठित होता है, जिसकी इंद्रियां संयत होती हैं, जो भोजनके विषयमें मात्रज्ञ होता है तथा जाग्रत रहता है, वह इस प्रकार विहार करता हुआ रात-दिन आलस्य-रहित होता है, योग-क्षेमकी प्राप्तिके लिये कुशलधर्मकी भावना करता है। (इस प्रकारका) प्रमादमें भय माननेवाला अप्रमादी भिक्षु पतनके अयोग्य होता है, वह निर्वाणके समीप ही होता है।]

भिक्षुओ, जिस भिक्षुने सब मिथ्या-धारणाओंको त्याग दिया रहता है, वह सब ऐषणाओंका त्यागी होता है, उसके काय-संस्कार शान्त होते हैं, वह प्रति लीन (समाधि-प्राप्त) होता है। भिक्षुओ, भिक्षु चारों मिथ्या धारणाओंका त्यागी कैसे होता है? भिक्षुओ, अनेक श्रमण-ब्राह्मणोंकी जो अनेक प्रकारकी मिथ्या धारणायें हैं, जैसे यह लोक शाश्वत है, यह लोक अशाश्वत है; यह लोक सान्त है, यह लोक अनन्त है, जो शरीर है वही जीव है, शरीर अन्य है जीव अन्य है; तथागत मरणानन्तर रहते हैं, तथागत मरणानन्तर नहीं रहते हैं, तथागत मरणान्तर रहते हैं और नहीं भी रहते हैं; तथागत मरणान्तर न रहते हैं और न नहीं रहते हैं—उसकी ये सब धारणायें नष्ट हो गई रहती हैं, त्यक्त होती हैं, निकल गई रहती हैं, परित्यक्त होती

हैं, प्रहीण हो गई रहती हैं, विनाशको प्राप्त हो गई रहती हैं; भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु मिथ्या धारणाओंका त्यागी होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे सब एषणाओंका त्यागी होता है? भिक्षुओ, भिक्षुकी कामेषणा प्रहीण होती है, भवेषणा प्रहीण होती है, ब्रह्मचर्येषणा शान्त होती है; इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु सभी एषणाओंका त्यागी होती है।

भिक्षुओ, भिक्षुके काय-संस्कार कैसे शान्त होते हैं?

भिक्षुओ, भिक्षुके सुख और दुःखका प्रहाण हो जाने पर, सौमनस्य तथा दौर्मनस्य भावोंका पहले ही अस्त हुए रहनेपर वह अदुःखरूप, असुखरूप, उपेक्षा-स्मृति-युक्त परिशुद्ध चतुर्थ ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षुका काय-संस्कार शान्त होता है?

भिक्षुओ, भिक्षु प्रति-लीन (समाधि-प्राप्त) कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षुका अहंकार प्रहीण होता है, जड़से जाता रहता है, कटे ताड़सा हो गया रहता है, अभाव-प्राप्त हो गया रहता है, भविष्यमें पुनरुत्पत्तिकी सम्भावना नहीं रहती। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु प्रति-लीन होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुने सब मिथ्या-धारणाओंको त्याग दिया रहता है, वह सब एषणाओंका त्यागी कहलाती है, शान्त-काय-संस्कार कहलाता है तथा प्रतिलीन कहलाता है।

कामेसना भवेसना ब्रह्मचरियेसना सह,
इति सच्चपरामासो दिट्ठट्ठाना समुस्सया ॥
सब्बरागविरत्तस्स तण्हक्खयविमुत्तिनो,
एसना पटिनिस्सट्ठा दिट्ठट्ठाना समूहता,
सचे सन्तो सतो भिक्खु पस्सद्धो अपराजितो,
मानाभिसमया बुद्धो पतिलीनोति वुच्चति ॥

[कामेषणा, भवेषणा और ब्रह्मचर्य्येषणा—ये जो (मिथ्या-) सत्योंके सम्पर्क (=परामर्श) हैं; इन (मिथ्या) दृष्टि-स्थानोंका नाश होनेसे जिसके सब रागका क्षय हो गया, जिसकी तृष्णाका क्षय हो गया, उसकी एषणा शान्त हो गई तथा उसके (मिथ्या) दृष्टि-स्थान जड़मूलसे जाते रहे। वही भिक्षु शान्त है, वही स्मृतिमान है, वही प्रश्रब्ध है, वही अपराजित है, उसीने अपने मानका नाश किया है, वही जाग्रत है, (प्र-) बुद्ध है तथा वही प्रतिलीन कहलाता है।]

उस समय उज्जाय नामक ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास पहुँचकर कुशल-क्षेम पूछा। कुशल-क्षेमकी बातचीत कर चुकनेपर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए ब्राह्मणने भगवानसे यह कहा —

"हे गौतम! आप भी यज्ञकी प्रशंसा करते हैं?"

"ब्राह्मण! न मैं सभी यज्ञोंकी प्रशंसा करता हूँ और न मैं सभी यज्ञोंकी निन्दा करता हूँ। ब्राह्मण! जिन यज्ञोंमें गौओंकी हत्या होती है, बकरी-भेड़ोंकी हत्या होती हैं, मुर्गे-सूअरोंकी हत्या होती है तथा (अन्य) नाना प्रकारके प्राणियोंकी हत्या होती है, हे ब्राह्मण! मैं इस प्रकारके हिंसक यज्ञकी प्रशंसा नहीं करता। यह किसलिये? ब्राह्मण! इस प्रकारके यज्ञमें न अर्हत ही आते हैं और न अर्हत मार्गारूढ़। ब्राह्मण! जिस यज्ञमें न गौओंकी हत्या होती है, न बकरी-भेड़ोंकी हत्या होती है, न मुर्गे-सूअरोंकी हत्या होती है और न (अन्य) नाना प्रकारके प्राणियोंकी हत्या होती है, हे ब्राह्मण! मैं इस प्रकारके अहिंसक यज्ञकी कल्पना करता हूँ जो कि यह नित्य दान देना है, यह अनुकूल यज्ञ है। यह किसलिये? ब्राह्मण! इस प्रकारके अहिंसक यज्ञमें अर्हत वा अर्हत-मार्गारूढ़ आते हैं।

अस्समेधं पुरिसमेधं सम्मापासं वाजपेय्यं निरग्गलं,
महायञ्ञा महारम्भा न ते होन्ति महप्फला ॥
अजेळका च गावो च विविधा यत्थ हञ्ञरे,
न तं सम्मग्गता यञ्ञं उदयन्ति महेसिनो ॥
यं य यञ्ञं निरारम्भं यजन्ति अनुकूलं सदा,
अजेळका च गावो च विविधा नेत्थ हञ्ञरे ॥
तं च सम्मग्गता यञ्ञं उपयन्ति महेसिनो,
एतं यजेथ मेधावी एसो यञ्ञो महप्फलो ॥
एतं हि यजमानस्स सेय्यो होति न पापियो,
यञ्ञो च विपलो होति पसीदन्ति च देवता ॥

[अश्वमेध, पुरिसमेध, सम्मापाश, वाजपेय्य तथा निरर्गल—ये महारम्भवाले महायज्ञ महाफलदायी नहीं होते। जहाँ बकरी-भेड़ोंकी, गौओंकी तथा अन्य प्राणियोंकी हत्या होती है, वहाँ सम्यकमार्गगामी महर्षि जन नहीं जाते हैं। जिस अनुकूल अहिंसक यज्ञका सदा यज्ञ किया जाता है, जहाँ बकरी-भेड़ों, गौओं तथा अन्य नाना प्रकारके प्राणियोंकी हत्या नहीं होती, जहाँ सम्यकमार्गगामी महर्षि-जन जाते हैं, मेधावी-जनको चाहिये कि इस प्रकारका यज्ञ करे, क्योंकि इसी प्रकारका यज्ञ महान्

फलदायी होता है। इस प्रकारका यज्ञ करनेवालाका भला ही होता है, बुरा नहीं होता। यज्ञ भी बड़ा होता है तथा देवता प्रसन्न होते हैं।]

उस समय उदायी ब्राह्मण जहां भगवान् थे, वहाँ गया। पास पहुँचकर कुशल-क्षेम पूछा। कुशल-क्षेमकी बात-चीत कर चुकनेपर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए ब्राह्मणने भगवान्से कहा—

"हे गौतम! आप भी यज्ञकी प्रशंसा करते हैं?"

"ब्राह्मण! न मैं सभी यज्ञोंकी प्रशंसा करता हूँ और न मैं सभी यज्ञोंकी निन्दा करता हूँ। ब्राह्मण! जिन यज्ञोंमें गौओंकी हत्या होती है, बकरी-भेडोंकी हत्या होती है, मुर्गे-सूअरोंकी हत्या होती है तथा (अन्य) नाना प्रकारके प्राणियोंकी हत्या होती है; हे ब्राह्मण! मैं इस प्रकारके हिंसक यज्ञकी प्रशंसा नहीं करता। यह किसलिये? ब्राह्मण! इस प्रकारके यज्ञमें न अर्हत् ही आते हैं और न अर्हत् मार्गारूढ़। ब्राह्मण! जिस यज्ञमें न गौओंकी हत्या होती है, न बकरी-भेडोंकी हत्या होती है, न मुर्गे-सूअरोंकी हत्या होती है और न (अन्य) नाना प्रकारके प्राणियोंकी हत्या होती है, हे ब्राह्मण! मैं इस प्रकारके अहिंसक-यज्ञकी कल्पना करता हूँ, जो कि यह नित्य दान देना है, यह अनुकूल यज्ञ है। यह किसलिये? ब्राह्मण! इस प्रकारके अहिंसक यज्ञमें अर्हत् वा अर्हत मार्गारूढ़ आते हैं।

अभिसङ्खतं निरारम्भं यञ्ञं कालेन कप्पियं,
तादिसं उपसंयन्ति संयता ब्रह्मचारयो ॥
विवत्तच्छद्दा ये लोके वीतिवत्ता कुलं गतिं,
यञ्ञमेतं पसंसन्ति बुद्धा पुञ्ञस्स कोविदा ॥
यञ्ञे वा यदि वा सद्धे हव्यं कत्वा यथारहं,
पसन्नचित्तो यजति सुखेत्ते ब्रह्मचारिसु ॥
सुहुतं सुयिट्ठं सुप्पत्तं दक्खिणेय्येसु यं कतं,
यञ्ञो च विपुलो होति पसीदन्ति च देवता ॥
एवं यजित्वा मेधावी सद्धो मुत्तेन चेतसा,
अब्यापज्झं सुखं लोकं पण्डितो उपनज्जति ॥

[जिस यज्ञमें पशुओंकी हत्या न होती हो, ऐसा अभिसंस्कृत यज्ञ उचित समयपर करना चाहिये। जो संयत हैं, जो ब्रह्मचारी हैं वे वैसे 'यज्ञ' में जाते हैं। जिनके कपाट खुले हैं, जो कुल-गतिकी सीमाओंके उसपार हैं, जो पुण्यके जानकर 'बुद्ध' हैं वे ऐसे ही यज्ञकी प्रशंसा करते हैं। यज्ञमें अथवा श्रद्धासे किये जाने

वाले कर्ममें यथायोग्य 'आहुति' डालने वाला सुक्षेत्र ब्रह्मचारियोंमें प्रसन्नचित्त हो 'यज्ञ' करता है। दक्षिणा देने योग्यों को जो दान दिया जाता है, वह अच्छी आहुति देना है, वह अच्छा यज्ञ करना है, वह अच्छी प्राप्ति है और ऐसा 'यज्ञ' महान् यज्ञ होता है। देवता-गण प्रसन्न होते हैं। जो मेधावी होता है, जो श्रद्धावान् होता है, वह मुक्त चित्तसे इस प्रकार यज्ञ करके व्यापाद-रहित सुख-लोकको प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, समाधि-भावना चार प्रकारकी होती है। भिक्षुओ, एक समाधि-भावना ऐसी होती है जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे यहीं 'सुख' की अनुभूति होती है। भिक्षुओ, एक समाधि-भावना ऐसी होती है, जिसकी भावना करनेसे जिसका अभ्यास बढ़ानेसे, ज्ञान-दर्शनका लाभ होता है। भिक्षुओ, एक समाधि-भावना ऐसी होती है जिसकी भावना करनेसे जिसका अभ्यास बढ़ानेसे स्मृति-संप्रजन्यकी प्राप्ति होती है। भिक्षुओ, एक समाधि-भावना ऐसी होती है, जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे आस्रवोंका क्षय होता है। भिक्षुओ, वह समाधि-भावना कौन-सी है जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे यहीं 'सुख' की प्राप्ति होती है? भिक्षुओ, यहाँ एक भिक्षु काम भोगोंसे पृथक हो..... चतुर्थ ध्यान प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, यह है वह समाधि-भावना जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे यहीं 'सुख' की प्राप्ति होती है। भिक्षुओ, वह समाधि-भावना कौन-सी है जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे ज्ञान-दर्शनका लाभ होता है? भिक्षुओ, यहाँ एक भिक्षु आलोक-संज्ञाको मनमें धारण करता है, दिवस-संज्ञाको मनमें धारण करता है, उसके लिये जैसा दिन वैसी रात होती है, जैसी रात वैसा दिन होता है। वह खुले चित्तसे, बाधा-रहित चित्तसे प्रभायुक्त चित्तकी भावना करता है। भिक्षुओ, यह है वह समाधि भावना जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे ज्ञान-दर्शनका लाभ होता है। भिक्षुओ, वह समाधि-भावना कौन-सी है जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे स्मृति-संप्रजन्यकी प्राप्ति होती है? भिक्षुओ, यहाँ एक भिक्षुकी जानकारीमें वेदनाओंकी उत्पत्ति होती है, वेदनाओंकी स्थिति रहती है, तथा वेदनायें अन्तर्धान होती हैं; जानकारीमें संज्ञाओं तथा वितर्कोंकी उत्पत्ति होती है, स्थिति होती है तथा जानकारीमें ही ये अन्तर्धान होते हैं। भिक्षुओ, यह है वह समाधि-भावना जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे स्मृति-संप्रजन्यकी प्राप्ति होती है। भिक्षुओ, वह समाधि-भावना कौन-सी है, जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे आस्रवोंका क्षय होता है? भिक्षुओ,

यहाँ एक भिक्षु, पाँच उपादान स्कन्धोंकी उत्पत्ति तथा व्ययका विचार करता विहरता है, यह 'रूप' की उत्पत्ति है, यह 'रूप' का विनाश है; यह 'वेदना' की उत्पत्ति है, यह 'वेदना' का विनाश है; यह 'संज्ञा' की उत्पत्ति है, वह संज्ञाका विनाश है; यह संस्कारोंकी उत्पत्ति है, यह संस्कारोंका विनाश है; तथा यह 'विज्ञान' की उत्पत्ति है, यह 'विज्ञान' का विनाश है। भिक्षुओ, यह है वह समाधि-भावना जिसकी भावना करनेसे, जिसका अभ्यास बढ़ानेसे आस्रवोंका क्षय होता है। भिक्षुओ, समाधि-भावनाके ये चार प्रकार हैं। भिक्षुओ, मैंने इसी सम्बन्धमें 'पारायण पूर्ण प्रश्न' में कहा है।

संखाय लोकस्मिं परोवरानि,
यस्सिञ्जितं नत्थि कुहिञ्चि लोके
सन्तो विधूमो अनिघो निरासो,
अतारि सो जातिजरंति ब्रूमि॥

[लोकमें पर तथा अवरको जान लेनेके बाद संसारमें जिसका मन किसी भी विषयमें चंचल नहीं है, मैं कहता हूँ कि वह शान्त है, वह धूम्र-रहित है, वह दुःख-रहित है, वह आशाके बन्धनोंसे मक्त है तथा उसने जन्म-जराके सागरको पार कर लिया है।]

भिक्षुओ, प्रश्नोंको निबटानेके ये चार ढंग (= व्याकरण) हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, ऐसा भी प्रश्न होता है जिसका 'हाँ' या 'नहीं' में एकांश उत्तर दिया जाना चाहिए, भिक्षुओ, ऐसा भी प्रश्न होता है जिसका विभाग करके उत्तर दिया जाना चाहिए, भिक्षुओ ऐसा भी प्रश्न होता है कि जिसका प्रति-प्रश्न पूछकर उत्तर दिया जाना चाहिये तथा भिक्षुओ, ऐसा भी प्रश्न होता है कि जिसका उत्तर नहीं देना चाहिये। भिक्षुओ, प्रश्नोंको निबटानेके ये चार ढंग हैं।

एकंस वचनं एकं विभज्जवचनापरं,
ततियं पटिपुच्छेय्य चतुत्थं पन थापये॥
यो च नेसं तत्थ तत्थ जानाति अनुधम्मतं।
चतुपञ्हस्स कुसलो आहु भिक्खुं तथा विधं॥
दुरसदो दुप्पसहो गम्भीरो दुप्पधंसयो,
अत्थो अत्थे अवत्थे च उभयस्स होति कोविदो
अनत्थं परिवज्जेति अत्थं गण्हाति पण्डितो,
अत्थाभिसमया धीरो पण्डितोति पवुच्चति॥

[कोई वचन एकांश उत्तर देने योग्य होता है, कोई दूसरा विभाग करके उत्तर देने योग्य होता है, कोई तीसरा प्रति प्रश्न पूछने योग्य होता है तथा कोई चौथा बिना उत्तर दिये ही रख देने योग्य (=ठपनीय) होता है। जो भिक्षु उन प्रश्नोंको, उस उस प्रकार जानता है, वैसे भिक्षुको चारों (प्रकारके) प्रश्नोंको उत्तर देनेमें कुशल भिक्षु कहते हैं। वह दुर्विजय होता है, कठिनाईसे जीता जा सकता है, गम्भीर होता है (उसपर) कठिनाईसे आक्रमण किया जा सकता है, वह अर्थ तथा अनर्थ दोनों विषयोंमें पण्डित होता है। जो बुद्धिमान आदमी अनर्थको छोड़कर, अर्थको ग्रहण करता है, वह अर्थका जानकार धीर पुरुष पण्डित कहलाता है।]

भिक्षुओ, लोकमें चार प्रकारके आदमी हैं। कौनसे चार प्रकारके? क्रोधको महत्व देनेवाला किन्तु सद्धर्मको महत्व न देनेवाला; म्रक्ष (=ढोंग) को महत्व देनेवाला किन्तु सद्धर्मको महत्व न देनेवाला; लाभको महत्व देनेवाला किन्तु सद्धर्मको महत्व न देनेवाला; सत्कारको महत्व देनेवाला किन्तु सद्धर्मको महत्व न देनेवाला। भिक्षुओ, लोकमें ये चार प्रकारके आदमी हैं।

भिक्षुओ, लोकमें चार प्रकारके आदमी हैं। कौनसे चार प्रकारके? सद्धर्मको महत्व देनेवाला, किन्तु क्रोधको महत्व न देनेवाला; सद्धर्मको महत्व देनेवाला, किन्तु म्रक्ष (=ठोंग) को महत्व न देनेवाला; सद्धर्मको महत्व देनेवाला, किन्तु लाभको महत्व न देनेवाला; सद्धर्मको महत्व देनेवाला किन्तु सत्कारको महत्व न देनेवाला। भिक्षुओ, लोकमें चार प्रकार के आदमी हैं।

कोध मक्खगरुभिक्खु, लाभसक्कार गारवा,
न ते धम्मे विरुहन्ति सम्मासम्बुद्धदेसिते।
ये च सद्धम्म गरुनो विहंसु विहरन्ति च
ते वे धम्मे विरूहन्ति सम्मासम्बुद्धदेसिते ॥

जो भिक्षु क्रोध, ढोंग, लाभ तथा सत्कारको महत्व देनेवाले हैं, वे सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदेश किये गये धर्ममें वृद्धिको प्राप्त नहीं होते।

जो सद्धर्मको महत्व देते रहे हैं और देते हैं, वे ही सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदेश किये गये धर्ममें वृद्धिको प्राप्त होते हैं।

भिक्षुओ, ये चार असद्धर्म हैं। कौनसे चार? क्रोधको महत्व देना, सद्धर्मको महत्व न देना; म्रक्षको महत्व देना, सद्धर्मको महत्व न देना; लाभको महत्व देना, सद्धर्मको महत्व न देना; तथा सत्कारको महत्व देना, सद्धर्मको महत्व

न देना। भिक्षुओ, ये चार सद्धर्म हैं। कौनसे चार ? सद्धर्मको महत्व देना, क्रोधको महत्व न देना; सद्धर्मको महत्व देना, म्रक्षको महत्व न देना, सद्धर्मको महत्व देना, लाभको महत्व न देना तथा सद्धर्मको महत्व देना, सत्कारको महत्व न देना। भिक्षुओ, ये चार सद्धर्म हैं।

कोधमक्खगरु भिक्खु, लाभसक्कारगारवो,
सुखेत्ते पूतिबीजंव सद्धम्मे न विरुहन्ति ॥
ये च सद्धम्मगरुनो विहंसु विहरन्ति च,
ते च धम्मे विरुहन्ति स्नेहमन्वायामिवोसध ॥

[जो भिक्षु क्रोध, ढोंग, लाभ तथा सत्कारको महत्व देता है, वह उसी प्रकार वृद्धिको नहीं प्राप्त होता जैसे अच्छे खेतमें डाला हुआ सड़ा हुआ बीज। जो सद्धर्मको महत्व देते रहे हैं तथा रहते हैं उनकी सद्धर्ममें उसी प्रकार वृद्धि होती है जैसे नमी मिलनेसे वनस्पति की।]

एक समय भगवान श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार कर रहे थे। तब रोहितस्स नामका प्रकाशमान् देवपुत्र चांदनी रातमें सारेके सारे जेतवनको प्रकाशित करता हुआ जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर खड़ा हुआ। एक ओर खडे हुए रोहितस्स देवपुत्रने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, तो भन्ते! क्या गमनसे लोकके उस अन्ततक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है ?

"आयुष्यमान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नहीं कहता कि गमनसे लोकके उस अन्ततक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है।"

"भन्ते! यह आश्चर्य है। भन्ते! यह अद्भुत है। भन्ते! आपका यह कहना सुभाषित है कि आयुष्यमान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नहीं कहता कि गमनसे लोकके उस अन्ततक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है।

"भन्ते! मैं पहले रोहितस्स नामका ऋषि था, ग्रामणी-पुत्र, ऋद्धिमान, आकाशगामी। उस समय भन्ते! मेरी ऐसी चाल थी जैसे कि दृढ़ धनुष-धारी

जिसे धनुषकी अच्छी शिक्षा प्राप्त हो, जिसका हाथ धनुष पर बैठा हो, जिसे धनुषका अच्छा अभ्यास हो, वह हलकेसे तीरसे बिना कठिनाईके सीधी ताळ-छायाको लाँघ जाये (उसी प्रकार उतनी देरमें मैं चक्रवालका चक्कर काट कर लौट आता था अट्ठकथा०।)

"भन्ते! उस समय मेरा कदम इतना बड़ा था कि जैसे पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्रके बीचकी दूरी।

"भन्ते! ऐसी चाल और इतने बडे कदमों वालेके मेरे मनमें इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं चलकर लोकके अन्त तक पहुँच जाऊँ। भन्ते! मैंने खाना-पीना छोड़ा, पेशाव-पाखाने जाना छोड़ा तथा निद्रा और आलस्य छोड़ा और सौ वर्षका मैं, सौ वर्ष तक जीता रह कर, सौ वर्ष तक घूमते रह कर, लोकके अन्त तक बिना पहुँचे, रास्तेमें ही मर गया। भन्ते! यह आश्चर्य है। भन्ते! यह अद्भुत है। भन्ते! आपका यह कहना सुभाषित है कि आयुष्मान! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नहीं कहता कि गमनसे लोकके उस अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है। आयुष्मान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नहीं कहता कि गमनसे लोकके उस अन्त तक पहुँचा जा सकता है। और आयुष्मान्! मैं यह भी नहीं कहता कि बिना लोकके अन्त तक पहुँचे, दुःख का नाश हो सकता है। आयुष्मान्! इसी व्याम-भरके लम्बे संज्ञा-युक्त शरीरमें ही मैं लोककी प्रज्ञप्ति करता हूँ, लोक-समुदयकी, लोक-निरोधकी तथा लोक-निरोधकी ओर ले जाने वाले मार्ग की।

गमनेन न पत्तब्बो लोकस्सन्तो कुदाचनं,
न च अप्पत्त्वा लोकंतं दुक्खा अत्थि पमोचनं।।
तस्मा हवे लोकविदु सुमेधो
लोकन्तगु वुसितब्रह्मचरियो,
लोकस्स अन्तं समितावी ञत्वा
नासिसति लोकमिमं परञ्च।।

[चलकर लोकके अन्ततक कभी नहीं पहुँचा जा सकता और बिना लोकके अन्ततक पहुँचे, दुःखसे मुक्ति भी नहीं प्राप्त होती।

इसलिये जो बुद्धिमान् है, उसे लोकका जानकार होना चाहिये, लोकके अन्त तक पहुँचा हुआ होना चाहिये, श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत किया हुआ होना चाहिये। ऐसा शान्त पुरुष लोकके अन्तको जानकर इस लोक व परलोकमें कहीं आसक्त नहीं होता।]

तब भगवान्ने उस रातके बीतने पर भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ ! आज रात रोहितस्स नामका प्रकाशमान् देवपुत्र चाँदनी रातमें सारे के सारे जेतवनको प्रकाशित करता हुआ जहाँ मैं था, वहाँ पहुँचा। पास आकर मुझे अभिवादन कर एक ओर खड़ा हुआ। अेक ओर खड़े हुए रोहितस्स देवपुत्र ने मुझसे यह कहा—भन्ते ! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, तो भन्ते क्या गमनसे लोकके अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है? भिक्षुओ, ऐसा कहने पर मैंने रोहितस्स देवपुत्रको ऐसा कहा—'आयुष्मान् ! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नहीं कहता कि गमनसे उस लोकके अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है, अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है? ऐसा कहनेपर भिक्षुओ, रोहितस्स देवपुत्रने मुझे ऐसा कहा—भन्ते ! आश्चर्य्य है। भन्ते ! अद्भुत है। आप भगवान् का जो यह सुभाषित है कि आयुष्मान् ! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युत्ति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नहीं कहता कि गमनसे उस लोकके अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है ? भन्ते ! मैं पहले रोहितस्स नामका ऋषि था, भोजपुत्र, ऋद्धिमान्, आकाशगामी। भन्ते ! उस समय मेरी इतनी तेज चाल थी, जैसे कोई शक्तिशाली, अभ्यस्त, सधे हाथवाला, होशियार धनुर्धारी एक हलकेसे तीरसे, आसानीसे, ताड़की छायाको सीधे लाँघ जाये (?) तथा इस प्रकारकी छलांग थी जैसे पूर्व-समुद्रसे पश्चिम समुद्र। भन्ते ! उस समय इस प्रकारकी चाल और इस प्रकारकी छलांगसे युक्त मेरे मनमें यह इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं गमनसे लोक (= विश्व) के अन्त तक पहुँचूंगा। भन्ते ! मैं बिना खाये-पिये, बिना मलमूत्र त्याग किये, बिना सोये वा विश्राम किये सौ वर्ष की आयु प्राप्त कर सौ वर्ष तक चलते रहकर भी बिना लोकका अन्त प्राप्त किये बीचमें ही मर गया। भन्ते ! आश्चर्य है। भन्ते ! अद्भुत है। आप भगवान्का जो यह सुभाषित है कि आयुष्यमान् ! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता

है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नहीं कहता कि गमनसे उस लोकके अन्त तक पहुँचा जा सकता है, उसे देखा जा सकता है अथवा उसे प्राप्त किया जा सकता है।

"ऐसा कहने पर भिक्षुओ, मैंने रोहितस्स देवपुत्रको यह कहा कि आयुष्मान्! जहाँ न जन्म होता है, न जीना होता है, न मरना होता है, न च्युति होती है तथा न उत्पत्ति होती है, मैं यह नहीं कहता कि गमन से उस लोकका अन्त होता है, लेकिन साथ ही आयुष्मान्! मैं यह भी नहीं कहता कि बिना लोकका अन्त किये दुःखका अन्त किया जा सकता है। आयुष्मान्! मैं इसी छः फुटके शरीरमें जीते जी 'लोक' की बात कहता हूँ, लोक-समुदयकी बात कहता हूँ, लोक-निरोधकी बात कहता हूँ तथा लोक-निरोधकी ओर ले जाने वाले मार्गकी बात कहता हूँ।

गमनेन न पत्तब्बो लोकस्सन्तो कुदाचनं,
न च अप्पत्वा लोकन्तं दुक्खा अत्थि पमोचनं॥
तस्मा हवे लोकविदु सुमेधो,
लोकन्तगु वुसितब्रह्मचरियो।
लोकस्स अन्तं समितावी ञत्वा
नासिसति लोकमिमं परञ्च॥

[अर्थ ऊपर आ ही गया है—देखो पृ० ४९–५०........]

भिक्षुओ, ये चार एक दूसरेसे परस्पर अत्यन्त दूर हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक तो आकाश और पृथ्वी एक दूसरेसे परस्पर अत्यन्त दूर हैं; भिक्षुओ, दूसरे समुद्र का एक किनारा दूसरे किनारे से परस्पर अत्यन्त दूर है; भिक्षुओ, तीसरे जहाँसे सूर्य (=वैरोचन) उदय होता है और जहाँ अस्त होता है ये दोनों परस्पर एक दूसरेसे अत्यन्त दूर हैं; भिक्षुओ, चौथे सत् पुरुषोंका धर्म और असत् पुरुषों का धर्म परस्पर एक दूसरेसे अत्यन्त दूर हैं। भिक्षुओं, ये चार एक दूसरेसे परस्पर अत्यन्त दूर हैं।

नभं च दूरे पठवी च दूरे पारं समुदस्स तदाहु दूरे,
यतो च वेरोचनो अब्भुदेति पभङ्करो यत्थ च अत्थमेति॥
ततो हवे दूरतरं वदन्ति सतञ्च धम्मं असतञ्च धम्मं,
अब्यायिको होति सतं समागमो यावम्पि तिट्ठेय्य तथेव होति,
खिप्पं हि वेति असतं समागमो तस्मा सतं धम्मो असब्भि आरका

[आकाश भी दूर है, पृथ्वी भी दूर है तथा समुद्रका उस पार भी (इस पारसे) बहुत दूर है। इसी प्रकार जहाँ सूर्य उदय होता है और जहाँ अस्त होता है—ये दोनों भी परस्पर बहुत दूर हैं। इन सब से अधिक एक दूसरे-से-दूर सत्पुरुषोंके धर्म तथा असत्पुरुषोंके धर्मको कहा गया है। सत्पुरुषोंका सम्बन्ध स्थिर होता है, जब तक भी बना रहता है एक रस ही रहता है। असत्पुरुषोंका सम्बन्ध शीघ्र ही बिगड़ जाता है। इसलिये सत्पुरुषोंका धर्म असत्पुरुषोंके धर्मसे बहुत दूर है।]

एक समय भगवान श्रावस्तीमें जेतवनमें अनाथपिण्डिकके आराममें विहार करते थे। उस समय पंचाली-पुत्र आयुष्मान् विशाख उपस्थान-शालामें भिक्षुओंको धार्मिक, विनम्र, स्पष्ट, निर्दोष, अर्थका बोध करानेमें समर्थ, गम्भीर, ऊँचे भावोंवाली वाणीसे शिक्षित करता है, प्रेरित करता है, उत्साहित करता है तथा हर्षित करता है। तब भगवान् सायंकालको योगाभ्याससे उठ, जहाँ उपस्थान-शाला थी वहाँ पहुँचे। जाकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवानने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ, उपस्थान-शालामें कौन भिक्षु भिक्षुओंको धार्मिक, विनम्र, स्पष्ट, निर्दोष, अर्थका बोध करानेमें समर्थ, गम्भीर ऊँचे भावोंवाली वाणीसे शिक्षित करता है, प्रेरित करता है, उत्साहित करता है तथा हर्षित करता है ? "भन्ते! आयुष्मान विशाख उपस्थान-शालामें भिक्षुओंको धार्मिक, विनम्र, स्पष्ट, निर्दोष, अर्थका बोध करानेमें समर्थ, गम्भीर, ऊँचे भावोंवाली वाणीसे शिक्षित करता है, प्रेरित करता है, उत्साहित करता है तथा हर्षित करता है।" तब भगवान्ने पंचाली-पुत्र आयुष्मान् विशाखको यह कहा—"विशाख! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा विशाख बहुत अच्छा, तू भिक्षुओंको धार्मिक विनम्र, स्पष्ट, निर्दोष, अर्थका बोध करानेमें समर्थ, गम्भीर, ऊँचे भावोंवाली वाणीसे शिक्षित करता है, प्रेरित करता है, उत्साहित करता है तथा हर्षित करता है।

नामासमानं जानन्ति मिस्सं बालेहि पण्डितं
भासमानञ्च जानन्ति देसेन्तं अमतं पदं ॥
भासये जोतये धम्मं पग्गन्हे इसिनं धजं
सुभासितधजा इसयो धम्मो हि इसिनं धजो ॥

[जब तक आदमी बोलता नहीं, तब तक मूर्खोंमें मिले पण्डितकी पृथक पहचान नहीं होती। जब कोई बोलता है, अमृत वाणीका उपदेश करता है, तभी वह पहचाना जाता है। धर्मका भाषण करे। धर्मको प्रकाशित करे। ऋषियोंकी

ध्वजाको धारण करे। सुभाषित ही ऋषियोंकी ध्वजा है, धर्म ही ऋषियोंकी ध्वजा है।]

भिक्षुओ, ये चार संज्ञा-विपर्यास हैं, चित्त-विपर्यास हैं, दृष्टि-विपर्यास हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, अनित्यको नित्य मानना संज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास है दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, दुःख को सुख मानना संज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास है, दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, अनात्म को आत्म मानना संज्ञा-विपर्यास, है, चित्त-विपर्यास है, दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, अशुभ (=असुन्दर) को शुभ (=सुन्दर) मानना संज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास है, दृष्टि विपर्यास है। भिक्षुओ ये चार संज्ञा-विपर्यास है, चित्त-विपर्यास हैं, दृष्टि-विपर्यास हैं।

भिक्षुओ, ये चार न संज्ञा-विपर्यास हैं, न चित्त-विपर्यास हैं, न दृष्टि-विपर्यास हैं। कौन से चार? भिक्षुओ, अनित्य को अनित्य मानना न संज्ञा-विपर्यास है, न चित्त-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, दुःखको दुःख मानना न संज्ञा-विपर्यास है, न चित्त-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, अनात्मको अनात्म मानना न संज्ञा-विपर्यास है, न चित्ता-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, अशुभ (=असुन्दर) को अशुभ मानना न संज्ञा-विपर्यास है, न चित्त-विपर्यास है, न दृष्टि-विपर्यास है। भिक्षुओ, ये चार न संज्ञा-विपर्यास है, न चित्त विपर्यास हैं और न दृष्टि-विपर्यास हैं।

अनिच्चे निच्चसञ्ञिनो दुक्खे च सुख सञ्ञिनो,
अनत्तनि च अत्ताति असुभे सुभसञ्ञिनो
मिच्छादि ट्ठि गता सत्ता खित्तचित्ता विसञ्ञिनो,
ते योगयुत्ता मारस्स अयोगक्खेमिनो जना।
सत्ता गच्छन्ति संसारं जातिमरणगामिनो
यदा च बुद्धा लोकस्मि उप्पज्जन्ति पभङ्करा।
तेसं धम्मं पकासेन्ति दुक्खूपसमगामिनं,
तेसं सुत्वान सप्पञ्ञा स चित्तं पच्चलत्थु ते।
अनिच्चं अनिच्चतो दुक्खं दुक्खमद्दक्खु दुक्खतो,
अनत्तनि अनत्ताति असुभं असुभनद्दसुं;
सम्मादिट्ठिसमादाना सब्बं दुक्खं उपच्चगुंति॥

[अनित्यको नित्य मानने वाले, दुःखको सुख समझने वाले, अनात्मको आत्म समझने वाले, अशुभ (=असुन्दर) को शुभ समझने वाले, जो मिथ्या-दृष्टिवाले

विक्षिप्त-चित्त संज्ञा-विहीन जन होते हैं, वे मारके वशी भूत होते हैं और निर्वाणसे विमुख होते हैं। ऐसे प्राणी जन्म-मरणको प्राप्त हो, संसारमें भटकते रहते हैं। लेकिन जब प्रभंकर बुद्ध लोकमें उत्पन्न होते हैं और दुःखका उपसमन करने वाले अपने धर्मको प्रकाशित करते हैं तो प्रज्ञावान् उस धर्मको सुनकर अपने चित्त (के वशीभाव) को प्राप्त होते हैं। वे अनित्यको अनित्य मानते हैं, दुःखको दुःख करके देखते हैं, अनात्मको अनात्म करके देखते हैं तथा अशुभ (= असुन्दर)को असुन्दर करके देखते हैं। ऐसे सम्यक् दृष्टि जन समस्त दुःखको लाँघ जाते हैं।]

भिक्षुओ, ये चार चन्द्रमा तथा सूर्यके मैल हैं, जिनसे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, बादल चन्द्रमा तथा सूर्यका मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, धुंध चन्द्रमा तथा सूर्यका मैल है जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, धूम्रराज चन्द्रमा तथा सूर्यका मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं, और न चमकते हैं। भिक्षुओ असुरेन्द्र राहु चन्द्रमा तथा सूर्य का मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, ये चार चन्द्रमा तथा सूर्य के मैल हैं जिससे मलिन होनेके कारण चन्द्रमा तथा सूर्य न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं।

इसी प्रकार भिक्षुओ, श्रमण-ब्राह्मणोंके भी चार मैल हैं जिनसे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। कौन से चार? भिक्षुओ, कुछ श्रमण-ब्राह्मण ऐसे हैं जो सुरा पान करते हैं, मेरयका सेवन करते हैं, सुरा-मेरयके पानसे विरत नहीं रहते हैं। भिक्षुओ, यह श्रमण-ब्राह्मणोंका प्रथम मैल है जिससे मलिन होने के कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, कुछ श्रमण-ब्राह्मण मैथुन-धर्मका सेवन करते हैं, मैथुन-धर्मसे विरत नहीं होते हैं। भिक्षुओ, यह श्रमण-ब्राह्मणोंका दूसरा मैल है जिससे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, कुछ श्रमण-ब्राह्मण चाँदी-सोना स्वीकार करते हैं, चान्दी-सोना ग्रहण करने से विरत नहीं होते हैं। भिक्षुओ, यह श्रमण-ब्राह्मणोंका तीसरा मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, कुछ श्रमण-

ब्राह्मण मिथ्या जीविका से जीवन यापन करते हैं, मिथ्या-जीविका से विरत नहीं होते हैं। भिक्षुओ, यह श्रमण-ब्राह्मणोंका चौथा मैल है, जिससे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं और न चमकते हैं। भिक्षुओ, श्रमण-ब्राह्मणोंके ये चार मैल हैं, जिनसे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं, और न चमकते हैं :

राग दोस परिक्किट्ठा एके समणब्राह्मणा
अविज्जानिवुता पोसा पियरूपाभिनन्दिनो।
सुरं पिवन्ति मेरयं पटिसेवन्ति मेथुनं,
रजतं जातरूपञ्च सादियन्ति अविद्दसु।
मिच्छाजीवेन जीवन्ति एके समण ब्राह्मणा,
एते उपक्किलेसा वुत्ता बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
येहि उपक्किलिट्ठा एके समणब्राह्मणा
न तपन्ति न भासन्ति अद्धुवा सरजापगा
अन्धकारेन आनेद्धा तण्हा दासाय नेत्तिका
वड्ढेन्ति कटसिं घोरं आदियन्ति पुनब्भवंति ॥

[कुछ श्रमण-ब्राह्मण राग-द्वेषसे मलिन होनेके कारण, अविद्यासे अभिभूत होनेके कारण, प्रिय रूप वस्तुओंका अभिनन्दन करने वाले होनेके कारण सुरा-मेरयका पान करते हैं, मैथुन-धर्मका सेवन करते हैं, मूर्ख जन चाँदी-सोना ग्रहण करते हैं तथा मिथ्या-जीविकासे जीवन यापन करते हैं। आदित्य-बन्धु बुद्धने ये चारों श्रमण-ब्राह्मणोंके मैल कहे हैं। इन्हीं मैलोंसे मलिन होनेके कारण कुछ श्रमण-ब्राह्मण न तपते हैं, न प्रकाशित होते हैं, वे अस्थिर होते हैं, धूमिल होते हैं। वे अन्धकारसे घिरे होते हैं, तृष्णाके जुएमें जुते रहते हैं, वे घोर जन्म (= मरण) के बढ़ाने वाले होते हैं, बार बार पैदा होने वाले मरने वाले। ”

भिक्षुओ, ये चार पुण्य-प्राप्तियाँ हैं, कुशल प्राप्तियाँ हैं, सुख दिलाने वाली हैं, स्वर्गीय हैं, सुख-विपाक-दायिका हैं, स्वर्गमें जन्मका कारण, हैं इष्ट हैं, सुन्दर हैं, मनोनुकूल हैं, हितके लिये और सुखके लिये हैं। कौन-सी चार बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु जिस (दायक) के चीवरका परिभोग करते हुए असीम चित्त-समाधिको प्राप्त हो विहार करता है उस (दायक) के लिये यह असीम पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है।

भिक्षुओ, भिक्षु जिस (दायक) के दिये हुए भोजन (पिण्डापात) का परिभोग करते हुए असीम चित्त समाधिको प्राप्त हो विहार करता है, उस (दायक) के लिये यह असीम पुण्य प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है मनोनुकूल है, हितके लिये और सुख के लिये है। भिक्षुओ, भिक्षु जिस (दायक) के दिये हुए शयनासनका परिभोग करते हुए असीम चित्त-समाधि को प्राप्त हो विहार करता है, उस दायकके लिये यह असीम पुण्य-प्राप्ति है, कुशल प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हित-के लिये और सुखके लिये है। भिक्षुओ, भिक्षु जिस (दायक) के दिये हुए रोगी-के आहार दवाई आदि (= ग्लान-प्रत्यय भैषज्य परिष्कार) का परिभोग करते हुए असीम चित्त-समाधिको प्राप्त हो विहार करता है, उस दायकके लिये यह असीम पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुख-के लिये है। भिक्षुओ, ये चार पुण्य प्राप्तियाँ हैं, कुशल-प्राप्तियाँ हैं, सुख दिलाने वाली हैं, स्वर्गीय हैं, सुख-विपाक-दायिका हैं, स्वर्गमें जन्मका कारण हैं, इष्ट हैं, सुन्दर हैं, मनोनुकूल हैं, हितके लिअे और सुखके लिये हैं।

भिक्षुओ, जो आर्य-श्रावक इन चार कुशल-प्राप्तियोंसे युक्त है उसके पुण्यका इन चार पुण्य प्राप्तियोंसे मापना आसान नहीं है कि इतनी पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। यही कहा जायेगा कि यह गणनातीत है, सीमातीत है, महा पुण्य स्कन्ध है। भिक्षुओ, जैसे महासमुद्रके पानीका मापना आसान नहीं कि इतने आळहक हैं, इतने सौ आळहक हैं, इतने हजार आळहक हैं अथवा इतने लाख आळहक हैं। यही कहा जायगा कि जल मापसे परे है, सीमासे परे हैं, महा जल-स्कन्ध है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जो आर्य-श्रावक इन चार पुण्य-प्राप्तियोंसे, इन चार कुशल-प्राप्तियों-से युक्त हैं, उसके पुण्यका मापना आसान नहीं है कि इतनी पुण्य प्राप्ति है, कुशल प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्म-का कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। यही कहा जायेगा कि यह गणनातीत है, सीमातीत है, महापुण्य स्कन्ध है।

महोदधिं अपरिमितं महासरं
बहुभेरवं रतनगणानमालयं,
नज्जो यथा नरगणसंघसेविता
पुथु सवन्ति उपयन्ति सागरं ।।
एवं नरं अन्नदपानवत्थदं
सेय्यानि सज्जत्थरणस्स दायकं,
पुञ्ञस्स धारा उपयन्ति पण्डितं
नज्जो यथा वारिवहाव सागरं ।।

[जिस प्रकार आदमियोंके समूह द्वारा सेवित सभी नदियाँ असीम जल-राशि वाले, नाना भय-भैरव युक्त, रत्नों के आगार सागर को प्राप्त होती हैं, इसी प्रकार जो दाता अन्नपान, वस्त्र (=चीवर) तथा शयनासनका दायक है उस पण्डित को पुण्य रूपी नदियाँ उसी प्रकार प्राप्त होती हैं, जैसे जल की नदियाँ समुद्र को ।]

भिक्षुओ, ये चार पुण्य-प्राप्तियाँ हैं, कुशल-प्राप्तियाँ हैं, सुख दिलाने वाली हैं, स्वर्गीय हैं, इष्ट हैं, सुन्दर हैं, मनोनुकूल हैं, हितके लिये और सुखके लिये हैं। सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण हैं। कौन-सी चार बातें ? भिक्षुओ एक आर्य-श्रावक बुद्धके प्रति स्थिर श्रद्धासे युक्त होता है—वे भगवान् अरहत हैं, सम्यक् सम्बुद्ध हैं, विद्या तथा आचरणसे युक्त हैं, सुगत हैं, लोकके जानकार हैं, अनुपम हैं, देवताओं तथा मनुष्योंके शास्ता हैं, बुद्ध भगवान हैं। भिक्षुओ, यह पहली पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्म का कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। फिर भिक्षुओ, आर्य श्रावक धर्मके प्रति अचल श्रद्धावान होता है—भगवान् द्वारा धर्म सु-आख्यात है, सांदृष्टिक है, अकालिक है, उसके बारेमें कहा जा सकता है कि आओ और स्वयं परीक्षा कर लो, (निर्वाण की ओर) ले जाने वाला है तथा प्रत्येक विज्ञ आदमी द्वारा स्वयं साक्षातकार किया जा सकता है। भिक्षुओ, यह दूसरी पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। फिर भिक्षुओ, आर्य-श्रावक संघके प्रति अचल श्रद्धावान् होता है, भगवानका श्रावक संघ सुप्रतिपन्न है, भगवानका श्रावक-संघ ऋजु-प्रतिपन्न है, भगवानका श्रावक-संघ ज्ञान-मार्गपर प्रतिपन्न है, भगवान्का श्रावक-संघ समीचीन मार्ग पर प्रतिपन्न है, ये जो चार पुरुषोंके जोड़े हैं, ये जो आठ आर्य पुद्गल हैं—यही भगवान्का

श्रावक संघ है, आदर करने योग्य है, आतिथ्य करने योग्य है, दक्षिणाके योग्य है, हाथ जोड़ने योग्य है, लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र है। भिक्षुओ, यह तीसरी पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलानेवाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है। फिर भिक्षुओ, आर्य-श्रावक मनोरम आर्यशीलसे युक्त होता है, अखण्डित शीलसे, छिद्रविरहित शीलसे, बे-दाग़ शीलसे, अकलंकित शीलसे, परिशुद्ध शीलसे, विज्ञजनों द्वारा प्रशंसित शीलसे, निर्मल शीलसे तथा समाधि-सहायक शीलसे। भिक्षुओ, यह चौथी पुण्य-प्राप्ति है, कुशल-प्राप्ति है, सुख दिलाने वाली है, स्वर्गीय है, सुख-विपाक-दायिका है, स्वर्गमें जन्मका कारण है, इष्ट है, सुन्दर है, मनोनुकूल है, हितके लिये और सुखके लिये है।

यस्स सद्धा तथागते अचला सुप्पतिट्ठिता
सीलञ्च यस्स कल्याणं अरियकन्तं पसंसितं।
संघे पसादो यस्सत्थि उजुभूतञ्च दस्सनं,
अदळिद्दो ति तं आहु अमोघं तस्स जीवितं॥
तस्मा सद्धञ्च सीलञ्च पसादं धम्मदस्सनं,
अनुयुञ्जेथ मेधावि सरं बुद्धानसासनं॥

[जिसकी तथागतके प्रति अचल श्रद्धा सुप्रतिष्ठित है, जिसका मनोरम आर्यशील प्रशंसनीय है, जो संघके प्रति श्रद्धावान् है, जिसे सम्यक्-दृष्टि प्राप्त है, वह दरिद्र नहीं है, उसका जीवन सुफल है। इसलिये मेधावी पुरुषको चाहिये कि बुद्धानु-शासनका ध्यान कर श्रद्धावान् बने, शीलवान् बने, प्रसाद (प्रसन्नता) युक्त बने तथा धर्म-दर्शी बने।]

एक समय भगवान् मधुरा और वेरंजाके बीच चले जा रहे थे। बहुतसे गृहपति तथा बहुत-सी गृहपतिनियाँ भी मधुरा और वेरंजाके बीच चली जा रही थीं। तब भगवान् मार्गसे हटकर एक वृक्षके नीचे बैठ गये। उन गृहपतियों तथा गृह-पतिनियोंने भगवान्को एक ओर बैठे देखा। देखकर वे जिधर भगवान् थे उधर पहुँच एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे उन गृहपतियों तथा गृहपतनियोंको भगवान्ने इस प्रकार कहा—'हे गृहपतियो! चार प्रकारके सहवास होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? लाश लाशके साथ रहती है। लाश देवीके साथ रहती है। देवता लाशके साथ रहता है। देवता देवीके साथ रहता है। हे गृहपतियो! लाश लाशके साथ कैसे रहती है? गृहपतियो! एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा करने वाला, चोरी

करने वाला, व्यभिचार करने वाला, झूठ बोलने वाला, प्रमादके कारण सुरा-मेरय आदिका पान करने वाला, दुःशील, पापी, मात्सर्य्य-मैल युक्त चित्तसे घरमें रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा भला कहने वाला; उसकी भार्य्या भी होती है प्राणी-हिंसा करने वाली, चोरी करने वाली, व्यभिचार करने वाली, झूठ बोलने वाली, प्रमादके कारण सुरा-मेरय आदिका पान करने वाली, दुःशील, पापिन, मात्सर्य्य-मैल-युक्त चित्तसे घरमें रहती है, श्रमण-ब्राह्मणोंको भला-बुरा कहने वाली। गृहपतियो! इस प्रकार लाश लाशके साथ रहती है। भिक्षुओ, लाश देवीके साथ कैसे रहती है? हे गृहपतियो! एक स्वामी प्राणी हिंसा करने वाला होता है.....प्रमादके कारण सुरा मेरय आदिका पान करने वाला, दुश्शील, पापी, मात्सर्य-मैल-युक्त चित्तसे घरमें रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला कहने वाला; उसकी भार्य्या होती है प्राणीहिंसा न करने वाली, चोरी न करने वाली, व्यभिचार न करने वाली, झूठ न बोलने वाली, प्रमादके कारण सुरा-मेरय आदिका पान न करने वाली, शीलवान्, सदाचारिणी, मात्सर्य-मैलसे रहित चित्तसे घर पर रहने वाली तथा श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला न कहने वाली। इस प्रकार गृहपतियो! लाश देवीके साथ रहती है। गृहपतियो! देवता लाशके साथ कैसे रहता है? गृहपतियो! एक स्वामी प्राणीहिंसा न करने वाला होता है, चोरी न करने वाला, व्यभिचार न करने वाला, झूठ न बोलने वाला, प्रमादके कारण सुरामेरय आदिका पान न करने वाला, शीलवान्, सदाचारी, मात्सर्य्य-मैलसे रहित चित्तसे घरपर रहने वाला तथा श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला न कहने वाला; और उसकी भार्य्या भी होती है प्राणीहिंसा करने वाली, व्यभिचार करने वाली, झूठ बोलने वाली, प्रमादके कारण सुरामेरय आदिका पान करने वाली, दुश्शील, पापिन, मात्सर्य्य-मैल-युक्त चित्तसे घरपर रहती है, श्रमण-ब्राह्मणोंको भला-बुरा कहने वाली। इस प्रकार गृहपतियो! देवता लाशके साथ रहता है। भिक्षुओ, देवता देवीके साथ कैसे रहता है? गृहपतियो, एक स्वामी प्राणीहिंसा न करने वाला होता है......प्रमादके कारण, सुरामेरय आदिका पान न करने वाली, शीलवती, सदाचारिणी, मात्सर्य्य-मैलसे रहित चित्तसे घरपर रहने वाली तथा श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा भला न कहने वाली। इस प्रकार गृहपतियो! देवता देवीके साथ वास करता है। हे गृहपतियो! ये चार सहवास हैं।

उभो च होन्ति दुस्सीला कदरिया परिभासका,
ते होन्ति जानिपतयो छवासंवासमागता॥

सामिको होति दुस्सीलो कदरियो परिभासको
भरिया सीलवती होति वदञ्ञु वीतमच्छरा;
सापि देवी संवसति छवेन पतिना सह॥

[(जब) दोनों दुश्शील होते हैं, कंजूस होते हैं तथा श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला कहनेवाले होते हैं, तो वे दोनों पति-पत्नी लाश लाशके साथ रहने वाले होते हैं। (जब) स्वामी दुश्शील होता है, कंजूस होता है, (श्रमण-ब्राह्मणोंको) बुरा-भला कहने वाला होता है और उसकी भार्य्या सदाचारिणी, उदार तथा दानशीला होती है, तो वह देवी पति रूपी लाशके साथ रहती है।]

सामिको सीलवा होति वदञ्ञु वीतमच्छरो,
भरिया होति दुस्सीला कदरिया परिभासिका;
सापि छवा संवसति देवेन पतिना सह॥

[(जब) स्वामी शीलवान् होता है, उदार होता है तथा दानी होता है और उसकी भार्या होती है दुराचारिणी, कंजूस तथा श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला कहने वाली तो वह स्वयं लाश रूप होकर देवता पतिके साथ रहती है।]

उभो सद्धा वदञ्ञू च सञ्ञता धम्मजीविनो,
ते होन्ति जानिपतयो अञ्ञमञ्ञं पियंवदा
अत्था सम्पचुरा होन्ति फासत्थं उपजायति,
अमित्ता दुम्मना होन्ति उभिन्नं समसीलिनं
इध धम्मं चरित्वान समशीलब्बता उभो,
नन्दिनो देवलोकस्मि मोदन्ति कामकामिनो॥

[(जब) दोनों श्रद्धावान् होते हैं, उदार होते हैं, संयत होते हैं, धर्मानुसार जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं, तो वे पति-पत्नी परस्पर प्रिय बोलने वाले होते हैं, उन्हें प्रचुर अर्थ की प्राप्ति होती है, उन्हें आसानीसे अर्थकी प्राप्ति होती है। उन दोनों सदाचारियोके शत्रु दुःखी होते हैं। इस लोकमें धर्मका पालन करके वे दोनों समान-शीली तथा समानव्रती देव लोकमें आनन्दित रहते हैं। उनकी सभी कामनाओं-की पूर्ति होती है।]

भिक्षुओ, चार प्रकारके सहवास होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? लाश लाशके साथ रहती है। लाश देवीके साथ रहती है। देवता लाशके साथ रहता है। देवता देवीके साथ रहता है। भिक्षुओ, लाश लाशके साथ कैसे रहती है? भिक्षुओ, एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा करने वाला चोरी करने वाला, व्यभिचारी,

झूठ बोलने वाला, चुगली करने वाला, कठोर बोलने वाला, बेकार बोलने वाला, लोभी द्वेषी, मिथ्या-दृष्टि, दुश्शील, पापी, मात्सर्य-मैलसे युक्त होकर घरपर रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला कहने वाला; उसकी भार्या भी होती है प्राणीहिंसा करने वाली, चोरी करने वाली, व्यभिचारिणी, झूठ बोलने वाली, चुगली करने वाली, कठोर बोलने वाली, बेकार बोलने वाली, लोभी, द्वेषी, मिथ्या-दृष्टि, दुश्शीला, पापिन, मात्सर्य-मैलसे युक्त होकर सदा घरपर रहती है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला कहने वाली। भिक्षुओ, इस प्रकार लाश लाशके साथ रहती है।

भिक्षुओ, लाश देवीके साथ कैसे रहती है ? भिक्षुओ, एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा करने वाला......मिथ्या-दृष्टि, दुश्शील, पापी, मात्सर्य-मैलसे युक्त होकर घरपर रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला कहने वाला। किन्तु उसकी भार्या होती है प्राणीहिंसा न करने वाली, चोरी न करने वाली, अव्यभिचारिणी, झूठ न बोलने वाली, चुगली न करने वाली, कठोर न बोलने वाली, बेकार न बोलने वाली, निर्लोभी, अद्वेषी, सम्यक्-दृष्टि वाली, शीलवान, सदाचारिणी, मात्सर्य-मैलसे रहित होकर सदा घरपर रहने वाली, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला न कहने वाली। भिक्षुओ, इस प्रकार लाश देवीके साथ रहती है।

भिक्षुओ, देवता लाशके साथ कैसे रहता है ? भिक्षुओ, एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा न करने वाला, चोरी न करने वाला, अव्यभिचारी, झूठ न बोलने वाला, चुगली न करने वाला, कठोर न बोलने वाला, बेकार न बोलने वाला, निर्लोभी, अद्वेषी, सम्यक् दृष्टि वाला, शीलवान्, सदाचारी, मात्सर्य-मैलसे रहित होकर घरपर रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला न कहने वाला। किन्तु उसकी भार्या होती है प्राणीहिंसा करने वाली.......मिथ्या-दृष्टि, दुश्शीला, पापिन मात्सर्य-मैलसे युक्त होकर सदा घरपर रहती है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला कहने वाली। भिक्षुओ, इस प्रकार देवता लाशके साथ रहता है।

भिक्षुओ, देवता देवीके साथ कैसे रहता है ? भिक्षुओ, एक स्वामी होता है प्राणीहिंसा न करने वाला.....सम्यक् दृष्टि वाला, शीलवान्, सदाचारी, मात्सर्य-मैलसे रहित होकर घरपर रहता है, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा-भला न कहने वाला, उसकी भार्या भी होती है प्राणीहिंसा न करने वाली......सम्यक्-दृष्टिवाली, शीलवान्, सदाचारिणी, मात्सर्य-मैलसे रहित होकर सदा घरपर रहने वाली, श्रमण-ब्राह्मणोंको बुरा भला न कहने वाली। भिक्षुओ, इस प्रकार देवता देवीके साथ रहता है। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके सहवास होते हैं।

उभो च होन्ति दुस्सीला कदरिया परिभासका,
ते होन्ति जानिपतयो छवा संवासमागता ॥

सामिको होति दुस्सीलो कदरियो परिभासको,
भरिया सीलवती होति वदञ्ञू वीतमच्छरा;
सापि देवी संवसति छवेन पतिना सह ॥

सामिको सीलवा होति वदञ्ञू वीतमच्छरो,
भरिया होति दुस्सीला कदरिया परिभासका;
सापि छवा संवसति देवेन पतिना सह ॥

उभो सद्धा वदञ्ञू च सञ्ञता धम्मजीविनो,
ते होन्ति जानिपतयो अञ्ञमञ्ञं पियंवदा।

अत्था सम्पचुरा होन्ति, फासत्थं उपजायति,
अमित्ता दुम्मना होन्ति उभिन्नं समसीलिनं।

इध धम्मं चरित्वान समसीलब्बता उभो,
नन्दिनो देवलोकस्मिं मोदन्ति कामकामिनो ॥

[अर्थ ऊपर आ ही गया है।]

एक समय भगवान् भग्ग (जनपद) के सुंसुमार गिरिके भेसकलावन नामक मृगदायमें विहार करते थे। तब भगवान् पूर्वान्हके समय (चीवर) पहन पात्र-चीवर ले जहाँ नकुलपिता गृहस्थका घर था वहाँ पधारे। पधारकर बिछे आसनपर बैठे। तब नकुलपिता गृहपति और नकुलमाता गृह-पत्निने जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँच, भगवान्का अभिवादन किया और एक ओर बैठे।

एक ओर बैठे हुए नकुलपिता गृहपतिने भगवान्को यह कहा—" भन्ते ! जब मैं छोटा था, जब यह नकुलमाता गृहपत्नि भी छोटी थी उसी समय, यह मेरे लिये लाई गई। तबसे मैं नहीं जानता कि शरीरका तो क्या ही कहना नकुल-माताने मनसे भी कभी विरुद्ध आचरण किया हो। भन्ते ! हम चाहते हैं कि इस लोकमें जीते

रहते समय भी हम परस्पर एक दूसरेको देखते रहें, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते रहें। नकुल-माता गृहपत्निने भी भगवान्को यही कहा—" भन्ते ! जब मैं छोटी थी, जब यह नकुल-पिता छोटा था उसी समय मैं इसके लिये लाई गई। तबसे मैं नहीं जानती कि शरीरका तो क्या ही कहना नकुल-पिताने मनसे भी कभी विरुद्धाचरण किया हो। भन्ते ! हम चाहते हैं कि इस लोकमें जीते रहते समय भी हम परस्पर एक दूसरेको देखते रहें, मरनेपर भी एक दूसरेको देखते रहें। "

" हे गृहपति जनो ! यदि आप पति-पत्निकी यह कामना है कि जीते रहते भी परस्पर एक दूसरेको देखते रहें, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते रहें, तो दोनोंको चाहिये कि समान-श्रद्धावाले हों, समान-शीलवाले हों, समान रूपसे त्यागी हों, समान-प्रज्ञावाले हों। जो ऐसे होते हैं वे इस लोकमें जीते रहते समय भी परस्पर एक दूसरेको देखते हैं, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते हैं।

उभो सद्धा वदञ्ञू च सञ्ञता धम्मजीविनो,
ते होन्ति जानिपतयो अञ्ञमञ्ञं पियंवदा॥
अत्था सम्पचुरा होन्ति फासत्थं उपजायति
अमित्ता दुम्मना होन्ति उभिन्नं समसीलिनं॥
इध धम्मं चरित्वान समसीलब्बता उभो,
नन्दिनो देवलोकस्मिं मोदन्ति कामकामिनी॥

[अर्थ ऊपर आ ही गया है।]

भिक्षुओ, यदि दोनों पति-पत्नी यह आकांक्षा करें कि वे जीते रहते भी परस्पर एक दूसरेको देखते रहें, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते रहें तो दोनोंको चाहिये कि समान-श्रद्धावाले हों, समान शीलवाले हों, समान रूपसे त्यागी हों, समानप्रज्ञा वाले हों। जो ऐसे होते हैं वे इस लोकमें जीते रहते समय भी परस्पर एक दूसरेको देखते हैं, मरनेपर भी परस्पर एक दूसरेको देखते हैं।'

उभो सद्धा वदञ्ञू च सञ्ञता धम्मजीविनो,
ते होन्ति जानिपतयो अञ्ञमञ्ञं पियंवदा॥
अत्था सम्पचुरा होन्ति फासत्थं उपजायति,
अमित्ता दुम्मना होन्ति उभिन्नं समसीलिनं॥
इध धम्मं चरित्वान समसीलब्बता उभो,
नन्दिनो देवलोकस्मिं मोदन्ति कामकामिनो॥

[अर्थ ऊपर आ ही आ गया है।]

एक समय भगवान् कोलिय (जनपद) में सज्जनेल नामके कोलिय-निगममें ठहरे हुए थे। तब भगवान पूर्वान्ह् समय (चीवर) धारण कर, पात्र-चीवर ले, जहाँ सुप्प-वासा कोलिय-कन्याका घर था, वहाँ पहुँचे। पधारकर बिछे आसनपर विराजमान हुये।

तब सुप्पवासा कोलिय-कन्याने भगवानको प्रणीत आहार अपने हाथसे परोसा। भोजन कर चुकनेपर जव भगवान्ने पात्रसे हाथ खींच लिया, तो सुप्पवासा एक ओर बैठ गई। एक ओर बैठी हुई सुप्पवासा कोलिय-कन्याको भगवान्ने इस प्रकार सम्बोधित किया—"सुप्पवासा! जो आर्य-श्राविका भोजनको दान करती है वह भोजन ग्रहण करनेवालोंको चार चीजोंका दान करती है। कौन-सी चार चीजें? आयुका दान करती है। वर्णका दान करती है। सुखका दान करती है। बलका दान करती है। वह आयुका दान करनेके कारण दिव्य अथवा मानुषी आयुकी अधिकारिणी होती है। वर्णका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी वर्णकी अधिकारिणी होती है। सुखका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी सुखकी अधिकारिणी होती है। बलका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी बलकी अधिकारिणी होती है। सुप्पवासा! जो आर्य श्राविका भोजनका दान करती है, वह भोजन ग्रहण करने वालोंको चार चीजोंका दान करती है।

सुसंखतं भोजनं या ददाति
सुचिं पणीतं रससा उपेतं,
सा दक्खिणा उज्जुगतेसु दिन्ना
चरणोपपन्नेसु महग्गतेसु।
पुञ्ञेन पुञ्ञं संसन्दमाना
महत्फला लोकविदूनवण्णिता,
एतादिसं सञ्ञमनुस्सरन्ता
ये वेदजाता विचरन्ति लोके;
विनेय्य मच्छेरमलं समूलं
अनिन्दिता सग्गमुपेन्ति ठानं।

[जो भली प्रकार तैयार किये गये, शुद्ध, प्रणीत, सरस भोजनका दान करती है, और यदि वह दान ऋजुचर्या वाले, आचार-परायण महान् व्यक्तियोंको दिया जाता है, तो लोक विदू (तथागत) ने पुण्यका पुण्यसे मेल बिठाकर, इस प्रकारके दानको महान् फलवाला कहा है। इस बातका अनुकरण कर जो प्रसन्न चित्त हो, लोकमें विचरते हैं वे मात्सर्यरूपी मलका समूल उच्छेद कर अनिन्दित रह स्वर्ग लोकको प्राप्त होते हैं।]

तब अनाथपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे वहाँ गया, पास जाकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे अनाथ पिण्डिक गृहपतिको भगवान्ने यह कहा—"आर्य-श्रावक जब भोजनका दान करता है तो ग्रहण करने वालोंको चार चीजें देता है। कौनसी चार चीजें? आयुका दान करता है, वर्णका दान करता है, सुखका दान करता है, तथा बलका दान करता है। आयुका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी आयुका भागी होता है, वर्णका दान करनेसे. . . .सुखका दान करनेसे. . . .बलका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी बलका भागी होता है। हे गृहपति! भोजनका दान करने वाला आर्य श्रावक भोजन ग्रहण करने वालेको इन चार चीजोंका दान करता है।

यो सञ्ञतानं परदत्तभोजिनं
काले सक्कच्च ददाति भोजनं,
चत्तारि ठानानि अनुप्पवेच्छति
आयुञ्च वण्णञ्च सुखं बलञ्च
सो आयुदायि बलदायि सुखं वण्णं ददो नरो,
दीघायु यसवा होति यत्थयत्थुपपज्जति॥

[जो दूसरोंका दिया खाने वाले सज्जन जनोंको योग्य विधिसे भोजनका दान करता है, वह उन्हें चार चीजोंका दान करता है—आयुका दान करता है, वर्णका दान करता है, सुखका दान करता है तथा बलका दान करता है। वह आयु, वर्ण, सुख तथा बलका दान करने वाला जहाँ कहीं भी जन्म ग्रहण करता है वह दीर्घायु होता है तथा यशस्वी होता है।]

भिक्षुओ, भोजनका देने वाला दायक ग्रहण करने वालेको चार चीजोंका दान करता है। किन चार चीजोंका? आयुका दान करता है, वर्णका दान करता है, सुखका दान करता है तथा बलका दान करता है। आयुका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी आयुका भागी होता है. . . . .वर्णका दान करनेसे. . . . सुखका दान करनेसे . . . बलका दान करनेसे दिव्य अथवा मानुषी बलका भागी होता है। भिक्षुओ, भोजनका दान देने वाला दायक ग्रहण करने वालोंको यह चार चीजें देता है।

यो सञ्ञतानं परदत्तभोजिनं
कालेन सक्कच्च ददाति भोजनं,
चत्तारि अनुपवेच्छति
आयुञ्च वण्णञ्च सुखं बलं च

सो आयुदायी बलदायी सुखं वण्णं ददो नरो,
दीघायु यसवा होति यत्थ यत्थुपपज्जति ।।

[अर्थ ऊपर आ ही गया है ।]

तब अनाथपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे वहाँ गया। पास जाकर अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथपिण्डिक गृहपतिको भगवान्ने यह कहा—" गृहपति ! जिस गृहस्थ में ये चार बातें होती हैं वह गृहस्थर्गा सन्मार्गगामी होता है, यश का भागी होता है, स्वर्गाभिमुख होता है। कौनसी चार बातें ? गृहपति ! वह आर्य-श्रावक चीवर (दान) से भिक्षु संघकी सेवा करता है, पिण्डपातसे भिक्षु-संघकी सेवा करता है, शयनासनसे भिक्षु-संघकी सेवा करता है, रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु-संघकी सेवा करता है। इन चारों बातोंसे युक्त गृहस्थ सन्मार्ग-गामी होता है, यशका भागी होता है, स्वर्गाभिमुख होता है।

गिहीसामीचि पटिपदं पटिपज्जन्ति पण्डिता,
सम्मग्गते सीलवन्ते चीवरेन उपट्ठिता ।।
पिण्डपातस्सयनेन गितानपच्चयेन च,
तेसं दिवा च रत्तो च सदा पुञ्ञं पवडढति
सग्गञ्च कमति ट्ठानं कम्मं कत्वान भद्दकं ।।

[पण्डित (–जन) सन्मार्गगामी, सदाचारी भिक्षुओंकी चीवर, पिण्डपात, शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे सेवा करता है। ऐसा करने वालोंका पुण्य रात दिन बढ़ता रहता है। शुभ करके वे स्वर्ग-लोकको प्राप्त होते हैं।]

तब अनाथपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवानको नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। हे गृहपति ! ये चार बातें ऐसी हैं जो इष्ट हैं, मनोरम हैं, अच्छी लगने वाली हैं (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ हैं। कौन सी चार बातें ? धर्मानुसार मुझे योग्य-वस्तुओंकी प्राप्ति हो, यह पहली बात है जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है। भोग्य-वस्तुओंकी प्राप्ति होनेपर धर्मानुसार अपने सम्बन्धियों तथा उपाध्यायों सहित मैं यशस्वी होऊं, यह दूसरी बात है जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है। भोग्य-वस्तुओंकी प्राप्ति होनेपर धर्मानुसार अपने सम्बन्धियों तथा उपाध्यायों सहित यशस्वी होनेपर चिर काल तक जीता रहूँ, लम्बी आयु हो, यह तीसरी बात है जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है। भोग्यवस्तुओंकी प्राप्ति होनेपर धर्मानुसार यशस्वी होनेपर, अपने सम्बन्धियों

तथा उपाध्यायों सहित चिर काल तक जीवित रहनेपर, लम्बी आयु प्राप्त होनेपर, शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होऊं, स्वर्गलोकमें उत्पन्न होऊं; यह चौथी बात है जो इष्ट है, मनोरम है, अच्छी लगने वाली है (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ है।

"गृहपति! ये जो चारों बातें इष्ट हैं, मनोरम हैं, अच्छी लगने वाली हैं (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ हैं, इन चारोंकी प्राप्तिके चार साधन हैं। कौनसे चार? श्रद्धा-सम्पत्ति, शील-सम्पत्ति त्याग-सम्पत्ति तथा प्रज्ञा सम्पत्ति। गृहपति! श्रद्धा-सम्पत्ति किसे कहते हैं! हे गृहपति! आर्य-श्रावक श्रद्धावान् होता है, तथागतकी बोधि (प्राप्ति) में श्रद्धा रखता है—वह भगवान् अर्हत् हैं, सम्यक् सम्बुद्ध हैं, विद्या तथा आचरणसे युक्त हैं, सुगत हैं, लोकके ज्ञाता हैं, अनुपम हैं, (अकुशल-मार्गी) पुरुषोंका दमन करने वाले सारथी हैं, देवताओं तथा मनुष्योंके शास्ता हैं, बुद्ध भगवान् हैं। गृहपति! यह श्रद्धा-सम्पत्ति कहलाती हैं।

"गृहपति! शील-सम्पत्ति किसे कहते हैं? गृहपति! आर्य-श्रावक प्राणी हिंसासे विरत होता है.... सुरा-मेरय-मद्य आदि जो प्रमाद-स्थल हैं उनसे विरत होता है। गृहपति! यह शील-सम्पत्ति कहलाती है।

"गृहपति! त्याग सम्पत्ति किसे कहते हैं? गृहपति! आर्य-श्रावक मात्सर्य रहित चित्तसे युक्त हो गृहवास करता है, त्यागी, मुक्त-हस्त, खैरात करने वाला, दान शील तथा दानी। गृहपति! यह त्याग-सम्पत्ति कहलाती है।

"गृहपति! प्रज्ञा-सम्पत्ति किसे कहते हैं? गृहपति! अभिध्या अर्थात् विषय-लोभसे युक्त चित्त वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नहीं करता है। अकरणीयके करने तथा करणीय के न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है।

"गृहपति! व्यापाद-युक्त चित्तसे विचरने वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नहीं करता है। अकरणीयके करने तथा करणीयके न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है।

"गृहपति! आलस्य-युक्त चित्तसे विचरने वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नहीं करता है। अकरणीयके करने तथा करणीयके न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है।

"गृहपति! उद्धतपन तथा कौकृत्य-युक्त चित्तसे विचरने वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नहीं करता है। अकरणीयके करने तथा

करणीयके न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है। गृहपति! विचिकित्सा-युक्त चित्तसे विचरने वाला जो अकरणीय है उसे करता है तथा जो करणीय है उसे नहीं करता है। अकरणीयके करने तथा करणीयके न करनेसे उसके ऐश्वर्य तथा सुखकी हानि होती है।

"गृहपति! वह आर्य-श्रावक यह जानकर कि अभिध्या विषय-लोभ चित्तका उप-क्लेश (=मैल) है, अभिध्या विषय-लोभ रूपी चित्तके उप-क्लेशका त्याग करता है; यह जानकर कि व्यापाद चित्तका उप-क्लेश है, व्यापाद रूपी चित्त-क्लेशका त्याग करता है; यह जानकर कि थीन-मिद्ध (=आलस्य) चित्तका उप-क्लेश है, थीन-मिद्ध रूपी चित्त-क्लेशका त्याग करता है; यह जानकर कि उद्धतपन तथा कौकृत्य चित्तका उप-क्लेश है, उद्धतपन तथा कौकृत्य रूपी चित्तके उप-क्लेशका त्याग करता है; यह जानकर कि विचिकित्सा चित्तका उप-क्लेश है, विचिकित्सा रूपी उप-क्लेशका त्याग करता है।

"और क्योंकि गृहपति! यह जानकर कि अभिध्या रूपी विषय-लोभ चित्तका उपक्लेश है आर्य श्रावक अभिध्यारूपी विषय-लोभका प्रहाण कर देता है, यह जानकर कि व्यापाद चित्तका उपक्लेश है, व्यापादका प्रहाण कर देता है, यह जानकर कि आलस्य चित्तका उपक्लेश है, आलस्यका प्रहाण कर देता है, यह जानकर कि उद्धतपन कौकृत्य चित्तका उपक्लेश है, उद्धतपन कौकृत्यका प्रहाण कर देता है, यह जानकर कि विचिकित्सा चित्तका उपक्लेश है, विचिकित्साका प्रहाण कर देता है—ऐसा होनेपर आर्य-श्रावक कहलाता है, महाप्रज्ञावान् बहुल-प्रज्ञ, सूक्ष्म-दर्शी, प्रज्ञानिधि। गृहपति! यह प्रज्ञा-सम्पत्ति कहलाती है।

"गृहपति! जो चारों बातें इष्ट हैं, मनोरम हैं, अच्छी लगने वाली हैं (किन्तु) दुनियामें दुर्लभ हैं, इन चारोंकी प्राप्तिके चार साधन हैं।

"गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए, भोग्य पदार्थोंको प्राप्तकर चार बातें करता है। कौनसी चार? गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य पदार्थोंको प्राप्तकर अपने आपको सुखी करता है, सशक्त करता है, सम्यक् प्रकार सुखी रखता है; माता-पिताको सुखी करता है, सशक्त करता है, सम्यक् प्रकार सुखी रखता है; पुत्र-स्त्री-दास-कर्मियोंको सुखी करता है, सशक्त करता है, सम्यक् प्रकार सुखी रखता है; यार दोस्तोंको सुखी करता है, सशक्त करता

हैं, सम्यक् प्रकार सुखी करता है, यह उसका पहला कर्तृत्व होता है, पहला प्रयास, सम्यक् परिभोग।

"और गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य-पदार्थोंसे जो आगसे, पानीसे, राजासे, चोरसे, अप्रिय उत्तराधिकारीसे अथवा अन्य कोई वैसी ही आपदाओंसे आत्म-रक्षा करता है, आत्म कल्याण करता है। यह उसका दूसरा कर्तृत्व होता है, दूसरा प्रयास, सम्यक् परिभोग।

"और गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य-पदार्थोंसे पाँच बलि-कर्म [1] करता है, ज्ञाति-बलि, अतिथि-बलि, पूर्व-प्रेत-बलि, राज-बलि तथा देवता-बलि। यह उसका तीसरा कर्तृत्व होता है, प्रयास सम्यक् परिभोग।

"और हे गृहपति! वह आर्य श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य पदार्थोंसे जो श्रमण-ब्राह्मण मद-प्रमादसे विरत रहते हैं, क्षमाशील तथा सदाचारी होते हैं, अपने आपका अपने ही दमन करते हैं, अपने आपका अपने ही शमन करते हैं तथा अपने आपको अपने ही परिनिर्वृत करते हैं, ऐसे श्रमण-ब्राह्मणोंको अर्ध्व-अग्र दक्षिणामें प्रतिष्ठित करते हैं, जो (प्रतिष्ठा) स्वर्ग-गमन का कारण होती है, जो सुख-विपाक देनेवाली होती है तथा जो स्वर्गकी सीढ़ी है। यह उसका चौथा कर्तृत्व होता है, प्रयास, सम्यक्-परिभोग।

"गृहपति! वह आर्य-श्रावक उत्साह और प्रयत्नसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीनेसे कमाये हुए, धर्मानुसार अर्जित किये हुए भोग्य पदार्थोंसे इन चार प्राप्त-कर्मोंका करने वाला होता है। गृहपति! इन चार प्राप्त-कर्मोंके अतिरिक्त किसी भी दूसरी प्रकारसे जिस किसीके भी भोग्य-पदार्थ क्षयको प्राप्त होते हैं, तो कहा जाता है कि उसके भोग्य-पदार्थ अनुचित-स्थान पर क्षयको प्राप्त हुए, अपात्रताको प्राप्त हुए, अयोग्य विधिसे क्षय हुए। गृहपति! इन चार प्राप्त-कर्मोंके अतिरिक्त किसी भी दूसरी प्रकारसे जिस किसीके भोग्य-पदार्थ क्षयको प्राप्त नहीं होते, तो कहा

---

१. मनुस्मृतिके तीसरे अध्यायमें भी पाँच बलि-कर्म अथवा पाँच यज्ञोंका विधान पाया जाता है। वे हैं (१) ब्रह्मयज्ञ, (२) पितृयज्ञ, (३) देवयज्ञ (४) भूतयज्ञ तथा (५) नृयज्ञ।

जाता है कि उसके भोग्य-पदार्थ उचित-ढंगसे क्षयको प्राप्त हुए, पात्रताको प्राप्त हुए, योग्य-विधिसे क्षय हुए।

भुत्ता भोगा भता भच्चा वितिण्णा आपदासु मे,
उद्धग्गा दक्खिणा दिन्ना अथो पञ्च बलीकता॥
उपट्ठिता सीलवन्तो सञ्ञता ब्रह्मचारयो,
यदत्थं भोगं इच्छेय्य पण्डितो घरमावसं॥

सो मे अत्थो अनुप्पत्तो कतं अननुतापियं,
एतं अनुस्सरं मच्चो अरियधम्मे ठितो नरो

इधं चेव नं पसंसन्ति पेच्च सग्गे च मोदति॥

[भोग्य-पदार्थोंको स्वयं खाया-पिया, नौकर-चाकरोंका पालन-पोषण किया, आपत्ति पड़नेपर आत्मरक्षाकी, ऊर्ध्व-अग्र दक्षिणा दी, पाँच बलि-कर्म किये, शीलवानों संयतजनों तथा ब्रह्मचारियोंकी सेवा की—इन्हीं सब अर्थोंकी पूर्ति करनेके लिये गृहस्थ भोग्य-पदार्थोंकी इच्छा करता है। तब वह सोचता है कि मैंने अपने उद्देश्यको प्राप्त कर लिया, मैंने ऐसा कार्य किया कि मुझे किसी भी प्रकारका अनुताप न हो। जो अपने इन सुकृतोंका स्मरण करता है, वह आर्य-धर्ममें स्थित है। यहाँ इस लोकमें भी उसकी प्रशंसा होती है और वह स्वर्गमें भी आनन्दित होता है।]

तब अनाथ पिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे वहाँ गया; पास जाकर भगवान् को प्रणामकर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथ पिण्डिक गृहपतिको भगवानने यह कहा—"गृहपति! ये चार सुख हैं जो गृहस्थ कामभोगीको समय समय पर प्राप्त होते हैं। कौनसे चार? (भोग्य-पदार्थोंके) होनेका सुख (भोग्य-पदार्थोंको) भोगनेका सुख, ऋणी न होनेका सुख तथा निर्दोष होनेका सुख। गृहपति! (भोग्य-पदार्थोंके) होनेका सुख कौनसा होता है? गृहपति! किसी कुल-पुत्रके घरमें ऐसे भोग्य-पदार्थ होते हैं जो उसके उत्साह और प्रयत्नसे कमाया होता है, बाहुबलसे कमाया होता है, पसीनेसे कमाया होता है, तथा धर्मानुसार कमाया होता है। उसे इस बातका सुख होता है, आनन्द होता है कि उसके पास भोग्य-पदार्थ हैं जिन्हें उसने उत्साह और प्रयत्नसे कमाया है, बाहुबलसे कमाया है, पसीनेसे कमाया है, तथा धर्मानुसार कमाया है। गृहपति! यही (भोग्य-पदार्थोंके) होनेका सुख कहलाता है।

"गृहपति! (भोग्य-पदार्थोंके) भोगनेका सुख कौनसा होता है? गृहपति! एक कुल-पुत्र ऐसे भोग्य-पदार्थोंको भोगता है जिन्हें उसने उत्साह और प्रयत्नसे कमाया होता है, बाहुबलसे कमाया होता है, पसीनेसे कमाया होता है तथा धर्मानुसार कमाया होता है और वह उनसे पुण्य-कर्म करता है। वह जब ऐसे भोग्य-पदार्थोंको भोगनेसे जो उसके उत्साह और प्रयत्नसे कमाया होता है, बाहुबलसे कमाया होता है, पसीनेसे कमाया होता है तथा धर्मानुसार कमाया होता है, भोगता है और उनसे पुण्य करता है तो उसे इससे सुख प्राप्त होता है, उसे इससे आनन्द प्राप्त होता है। गृहपति! यही (भोग्य-पदार्थों) के भोगनेका सुख है।

"गृहपति! ऋणी न होनेका सुख कौनसा होता है? गृहपति! एक कुल-पुत्र को किसीका कुछ नहीं देना होता, न थोड़ा और न अधिक। उसे यह सोच कि मुझे किसीका कुछ नहीं देना है, थोड़ा या अधिक सुख प्राप्त करता है, आनन्द प्राप्त करता है। गृहपति! यही ऋणी न होनेका सुख है।

"गृहपति! निर्दोष होनेका सुख कौनसा होता है? गृहपति! एक कुल-पुत्र निर्दोष कार्य कर्मसे युक्त होता है, निर्दोष वाणीके कर्मसे युक्त होता है, निर्दोष मनके कर्मसे युक्त होता है। उसे यह सोचकर कि मैं निर्दोष काम-कर्मसे युक्त हूँ, निर्दोष वाणी कर्मसे युक्त हूँ, निर्दोष मनके कर्मसे मुक्त हूँ, सुख प्राप्त होता है, आनन्द प्राप्त होता है। गृहपति! यही निर्दोष होनेका सुख है। गृहपति! ये चार सुख हैं, जो किसी भी काम-भोगी गृहस्थको समय-समय पर, वक्त-वक्त पर प्राप्य होने चाहिये।

अनवज्जसुखं ञत्वा अथो अत्थि सुखं सरे,
भुञ्जं भोगं सुखं मच्चो ततो पञ्ञा विपस्सति।
विपस्समानो जानाति उभो भोगे सुमेधसो,
अनवज्जसुखस्सेतं कलं नाग्घति सोळसिंति॥

[निर्दोष होनेके सुखको जान ले और भोग्य-पदार्थोंके होने तथा उनके भोगने के सुखका स्मरण करे। आदमी भोगोंके भोगनेके सुखका अनुभव करता हुआ प्रज्ञासे विचार करता है। जो बुद्धिमान् है वह पूर्वोक्त तीनों सुखों और निर्दोषताके सुखको जानता है। ये पूर्वोक्त सुख निर्दोषताके सुखके तीसरे हिस्सेके भी बराबर नहीं हैं।]

भिक्षुओ, जिन घरोंमें माता-पिताकी पूजा होती है; वे घर ब्रह्ममय हैं। भिक्षुओ, जिन घरोंमें माता-पिताकी पूजा होती है वे घर पूर्वाचार्यमय होते हैं, भिक्षुओ, जिन जिन घरोंमें माता-पिताकी पूजा होती है वे घर देवता-मय होते हैं, भिक्षुओ, जिन घरोंमें

माता-पिता की पूजा होती है, वे घर आतिथ्य-मय होते हैं। भिक्षुओ, ब्रह्मा कहते हैं माता-पिताको, भिक्षुओ, पूर्वाचार्य कहते हैं माता-पिताको, भिक्षुओ, देवता कहते हैं माता-पिताको; भिक्षुओ, अतिथि कहते हैं माता-पिताको। यह किसलिये? भिक्षुओ, माता-पिता अपनी सन्तानके जनक होते हैं, पोषण करने वाले हैं तथा यह लोक दिखाने वाले होते हैं।

ब्रह्माति मातापितरो पुब्बाचीरयाति वुच्चरे,
आहुनेय्या च पुत्तनि पजाय अनुकम्पका
तस्माहि ने नमस्सेय्य सक्करेय्याथ पण्डितो॥

[माता पिता ही 'ब्रह्मा' कहलाते हैं, माता-पिता ही 'पूर्वाचार्य' कहलाते हैं। माता-पिता अपनी सन्तानसे आतिथ्यके अधिकारी होते हैं। वे अपनी सन्तान पर दया करने वाले होते हैं। इसलिये जो बुद्धिमान् है, उसे चाहिये कि उन्हें नमस्कार करे, उनका सत्कार करे।]

अन्नेन अथ पानेन वत्थेन सयनेन च,
उच्छादने (न) नहापणेन पादानं धोवनेन च
ताय नं परिचरियाय मातापितुसु पण्डिता,
इध चेव नं पसंसन्ति पेच्च सग्गे च मोदति॥

[जो पण्डित जन अन्न (=भोजन), पेय-पदार्थों, वस्त्रों, तथा शयनासन, ओढ़ने, नहलाने तथा पावोंके धोने द्वारा माता-पिताकी सेवा करते हैं, उनकी इस लोकमें प्रशंसा होती है, और परलोक जानेपर स्वर्गमें आनन्दित होते हैं।]

भिक्षुओ, जो इन चार बातोंसे युक्त हो, उसे ऐसा ही समझो जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बातोंसे? प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, काम भोगों सम्बन्धी मिथ्याचार करने वाला होता है, तथा झूठ बोलने वाला होता है। भिक्षुओ, जो इन चार बातोंसे युक्त हो, उसे ऐसा ही समझो जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग हैं। कौनसे चार तरहके? रूपको प्रमाण मानने वाले या रूपपर प्रसन्न; शब्द (=घोष) को प्रमाण मानने वाले या घोष पर प्रसन्न; (चीवर आदि की) रुक्षताको प्रमाण मानने वाले या रुक्षतापर प्रसन्न, धर्मको प्रमाण मानने वाले या धर्मपर प्रसन्न—भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग होते हैं।

ये चरूपेन पामिंसु ये च घोसेन अन्वगु
छन्दरागवसूपेता न ते जानन्ति तं जनं ॥
अज्झत्तञ्च न जानाति बहिद्धा च न पस्सति,
समत्तावरणो बालो सचे घोसेन वुय्हति ॥
अज्झत्तञ्च न जानाति बहिद्धा च न पस्सति,
बहिद्धा फलदस्सावी सो पि घोसेन वुय्हति ॥
अज्झत्तञ्च पजानाति बहिद्धा च विपस्सति,
(एवं) विनीवरणदस्सावी न सो घोसेन वुय्हति ॥

[जो 'रूप' के पीछे भटकने वाले होते हैं तथा जो 'शब्द' के द्वारा बहाये ले जाते हैं ऐसे छन्द तथा रागके वशीभूत हुए जन उस 'जन' (के यथार्थ स्वरूप) को नहीं जानते। वह न अपने को ही जानता है, न बाह्य जगतको पहचानता है जो चारों ओरसे घिरा हुआ मूर्ख 'शब्द' के द्वारा बहाया ले जाया जाता है। वह भी न अपने आपको जानता है, न बाह्य जगतको पहचानता है जो बहिर्मुख होता है और जो शब्दके द्वारा ही बहाया ले जाया जाता है। वह अपने आपको जानता है और बाह्य जगतको भी पहचानता है, जो यथार्थ-दर्शी है और जो शब्दके द्वारा नहीं बहाया ले जाया जाता।]

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग हैं। कौनसे चार तरहके? राग-युक्त, द्वेष-युक्त, मोह-युक्त तथा मान-युक्त। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

सारत्ता रजनीयेसु पियरूपाभिनन्दिनो,
मोहेन अधमा सत्ता बद्धा वड्ढेन्ति बन्धनं ॥
रागजञ्च दोसजञ्च मोहजञ्चापविद्दसु,
करोन्ति अकुसलं कम्मं सविघातं दुखुद्रयं ॥
अविज्जा निवुता पोसा अन्धभूता अचक्खुका,
यथा धम्मा यथा सत्ता न सेवन्ति न मञ्ञरे ॥

[जो रंजनीय विषयोंमें अनुरक्त रहते हैं, जो प्रिय रूपोंका ही अभिनन्दन करने वाले हैं, वे मोहसे मूढ़ अधम जन अपना बंधन बढ़ाते हैं। अपण्डित-जन राग, द्वेष तथा मोहसे उत्पन्न, वर्तमान काल तथा भविष्य कालमें भी दुःख देनेवाले अकुशल कर्म करते हैं। जो अविद्यासे ग्रस्त होते हैं, जो अन्धे होते हैं तथा जो चक्षु-हीन होते हैं ऐसे राग-द्वेषके वशीभूत हुए प्राणी, हम ऐसे हैं—यह स्वीकार नहीं करते।]

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। उस समय साँप द्वारा डस लिये जानेके कारण एक भिक्षु मर गया था। तब बहुतसे भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ गये, पास जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे हुए उन भिक्षुओंको भगवान्ने यह कहा 'भन्ते! यहाँ श्रावस्तीमें साँप द्वारा डसा जानेके कारण एक भिक्षु मर गया है। (भगवान् बोले) "वह भिक्षु निश्चय से चार सर्प-कुलोंके प्रति मैत्री भावना नहीं करता था। यदि वह इन चार सर्प-कुलोंके प्रति मैत्री-भावना करता होता तो वह सर्प द्वारा डसा जा कर न मरता। वे सर्पराजकुल कौनसे हैं? विरुपाक्ष सर्पराजकुल, एरापथ सर्पराजकुल, छब्ब्यापुत्त सर्पराजकुल तथा कह्णगौतम सर्पराजकुल। भिक्षुओ, वह भिक्षु निश्चयसे इन चार सर्पराजकुलोंके प्रति मैत्री-भावना करने वाला नहीं था। यदि वह इन चार चार सर्पराज कुलोंके प्रति मैत्री-भावना करता तो वह सर्प द्वारा डसा जाकर न मरता। भिक्षुओ मैं अनुज्ञा देता हूँ कि अपने आपके संरक्षणके लिये, अपनी हिफ़ाजतके लिये इन चार सर्पराजकुलोंके प्रति मैत्री-भावनाकी जाय।

विरूपक्खेहि मे मेत्तं मेत्तं एरापथेहि मे,
छब्ब्यापुत्तेहि मे मेत्तं मेत्तं कण्हागोतमकेहि च॥
अपादकेहि मे मेत्तं मेत्तं दिपादकेहि मे,
चतुप्पदेहि मे मेत्तं मेत्तं वहुप्पदेहि मे॥
मा मं अपादको हिंसि मा मं हिंसि दिपादको,
मा मं चतुप्पदो हिंसि मा मं हिंसि बहुप्पदो॥
सब्बे सत्ता सब्बे पाणा सब्बे भूता च केवला,
सब्बे भद्रानि पस्सन्तु मा कंचि पापमागमा॥
अप्पमाणो बुद्धो अप्पमाणो धम्मो अप्पमाणो सङ्घो
पमाणवन्तानि सिरिंसिपानि अहिविच्छका
सतपदी उण्णानामि
सरबू मूसिका कता मे रक्खा कता मे
परित्ता पटिक्कमन्तु भूतानि
सोहं नमो भगवतो नमो सत्तानं सम्मासम्बुद्धानं॥

[विरुपक्षोंसे मेरी मत्री है, ऐरापथोंमेंसे मेरी मत्री है, छब्यापुत्रोंसे मेरी मैत्री है तथा कण्हागोतमोंमकोंसे भी मेरी मैत्री है। जिनके पाँव नहीं है, ऐसे प्राणियोंमेंसे भी मेरी मेंत्री है, दो पाँव वालोंसे भी मैत्री है, चतुष्पदोंसे मैत्री है तथा

बहुत पाँव वालोंसे भी मैत्री है। बिना पाँवका कोई प्राणी मुझे कष्ट न दे, दो पाँववाला प्राणी मुझे कष्ट न दे, कोई चौपाया मुझे कष्ट न दे तथा कोई बहुत पाँववाला मुझे कष्ट न दे। जितने सत्व हैं, जितने प्राणी है, जितने जानदार हैं सभीका कल्याण हो, कोई भी अकल्याणको प्राप्त न हो। बुद्ध (के गुण) असीम हैं, धर्म (के गुण) असीम हैं, संघ (के गुण) असीम हैं। ये जो रेंगनेवाले जानवर हैं, साँप हैं, बिच्छु हैं, कनखजूरे हैं, मकड़ी है, छिपकली है, चूहे हैं—ये सभी सीमित हैं। मैंने आरक्षा की है, मैंने परित्राण (धर्म-देशना) का पाठ किया है। इसलिये इस प्रकारके सभी प्राणी लौट जायें अर्थात् मुझे कष्ट न दें। मैं भगवान्को तथा सात सम्यक् सम्बुद्धोंको [1] प्रणाम करता हूँ।]

एक समय भगवान राजगृहमें गृध्र-कूट पर्वतपर विहार करते थे। उस समय देवदत्तको गये चिरकाल नहीं हुआ था। तब भगवानने देवदत्तके सम्बन्धमें भिक्षुओंको आमन्त्रित किया—"भिक्षुओ ! देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है वह उसके आत्म-बधके लिये ही है, वह उसके पराभवके लिये ही है। जैसे भिक्षुओ ! केलेका पेड़ अपने ही बधके लिये फल देता है, अपने ही पराभवके लिये फल देता है, उसी प्रकार भिक्षुओ ! देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है, वह उसके आत्म-बधके लिये ही है। जैसे भिक्षुओ, बाँस अपने बधके लिये फल देता है, अपने पराभवके लिये फल देता है, उसी प्रकार भिक्षुओ ! देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है वह उसके आत्म-बधके लिये ही है, वह उसके पराभवके लिये ही है। जैसे भिक्षुओ, सरकण्डा अपने बधके लिये फल देता है, अपने पराभवके लिये फल देता है, उसी प्रकार भिक्षुओ, देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है वह उसके आत्म-बधके लिये ही है, वह उसके पराभवके लिये ही है। जैसे भिक्षुओ, खच्चरी अपने बधके लिये ही गर्भ-धारण करती है, उसी प्रकार भिक्षुओ, देवदत्तका जो लाभ-सत्कार तथा प्रशंसा है वह उसके आत्म-बधके लिये ही है, वह उसके पराभवके लिये ही।

फलं चे कदलिं हन्ति फलं वेळुँ फलं नलं
सक्कारो कापुरिसं हन्ति गब्भो अस्सतरिं यथा ।।

[केलेका फल उसके पेड़की हत्या करता है, वैसे ही बाँस और सरकण्डा भी ; वैसे ही सत्कार दुष्ट आदमीको नष्ट कर डालता है जैसे खच्चरका गर्भ खच्चरको।]

---

१ विपश्यी सम्यक् सम्बुद्धसे लेकर सिद्धार्थ गौतम सम्यक् सम्बुद्ध तक भद्र-कल्प के सात सम्यक् सम्बुद्धोंसे अभिप्राय है।

भिक्षुओ, प्रयत्न चार प्रकारके हैं। कौनसे चार प्रकारके? संवर-प्रयत्न, प्रहाण-प्रयत्न, भावना-प्रयत्न तथा अनुरक्षण-प्रयत्न। भिक्षुओ, संवर-प्रयत्न क्या है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मनको काबूमें रखता है कि कोई अकुशल, पापमय ख्याल जो अभी तक उसके मनमें अनुत्पन्न रहे उत्पन्न न हों। भिक्षुओ, यह संवर-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ! प्रहाण-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ एक भिक्षु प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मनको काबूमें रखता है कि जो अकुशल, पापमय ख्याल उसके मनमें उत्पन्न हो गये हों, वे नष्ट हो जायँ। भिक्षुओ, यह प्रहाण-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ! भावना-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रयत्न करता हैं, जोर लगाता है, मनको काबूमें रखता है कि जो अनुत्पन्न कुशल धर्म (=अच्छी बातें) हों वे उत्पन्न हो जायँ। भिक्षुओ, यह भावना-प्रयत्न कहलाता है।

भिक्षुओ, अनुरक्षण-प्रयत्न किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रयत्न करता है, जोर लगाता है, मनको काबूमें रखता है कि जो कुशल धर्म मनमें उत्पन्न हो गये हैं वे बने रहें, उनका लोप न हो, वे विपुलताको प्राप्त हों तथा वे पूर्तिको प्राप्त हों। भिक्षुओ, यह अनुरक्षण-प्रयत्न कहलाता है।

संवरो च पहाणं च भावना अनुरक्खणं,
एते पधाना चत्तारो देसितादिच्चबन्धुना,
येहि भिक्खु इधातापि खयं दुक्खस्स पापुणे।

[आदित्य-बन्धु (तथागत) ने संवर प्रयत्न, प्रहाण-प्रयत्न, भावना-प्रयत्न तथा अनुरक्षण-प्रयत्न इन चार प्रयत्नोंको उपदेश दिया है। इन चारों प्रयत्नोंको करने वाला भिक्षु दुःखके क्षयको प्राप्त कर सकता है।]

भिक्षुओ, जब राजा अधार्मिक होते हैं, तो राज्याधिकारी भी अधार्मिक हो जाते हैं। राज्यधिकारियोंके अधार्मिक हो जानेपर ब्राह्मणगृहपति भी अधार्मिक हो जाते हैं। ब्राह्मण गृहपतियोंके अधार्मिक होनेपर निगमों तथा जनपदोंके लोग भी अधार्मिक हो जाते हैं। निगमों तथा जनपदोंके लोगोंके अधार्मिक हो जानेपर चाँद-सूर्यकी गति विषम हो जाती है। चाँद-सूर्यकी गति विषम हो जानेपर नक्षत्रोंकी, ताराओंकी गति विषम हो जाती है। नक्षत्रोंकी, ताराओंकी गति विषम हो जानेपर रात-दिनकी गति विषम हो जाती है। रात-दिनकी गति वषम हो जानेपर महीने आधे-महीनेकी गति विषम हो जाती है। महीने आधे महीनेकी गति विषम हो जानेपर ऋतुओंकी, वर्षोंकी गति विषम हो जाती है। ऋतुओंकी,

वर्षोंकी गति विषम हो जानेपर विषम हवायें चलने लगती हैं, टेढ़ी मेढ़ी। हवाओंकी गति विषम हो जानेपर, उनके टेढ़ा-मेढ़ा चलने लगने पर देवता क्रोधित हो जाते हैं। देवताओंके कुपित हो जानेपर देवता सम्यक् वर्षा नहीं बरसाते। देवताओंके सम्यक् वर्षा न बरसानेपर खेती ठीकसे नहीं पकती। ठीक से न पके धान्योंके खानेसे मनुष्य अल्पायु हो जाते हैं, दुर्बल हो जाते हैं तथा अनेक रोगोंसे ग्रसित हो जाते हैं।

भिक्षुओ, जब राजागण धार्मिक होते हैं तो राजाधिकारी भी धार्मिक हो जाते हैं। राज्याधिकारियोंके धार्मिक हो जानेपर ब्राह्मण-गृहपति भी धार्मिक हो जाते हैं। ब्राह्मण-गृहपतियोंके धार्मिक हो जानेपर निगमों तथा जनपदोंके लोग भी धार्मिक हो जाते हैं। निगमों तथा जनपदोंके लोगोंके धार्मिक हो जानेपर चाँद-सूर्यकी गति भी विषम नहीं होती। चाँद सूर्यकी गति विषम न रहनेपर नक्षत्रों ताराओंकी गति भी विषम नहीं रहती। नक्षत्रों ताराओंकी गति विषम न रहनेपर रात दिनकी गति विषम नहीं रहती। रात-दिनकी गति विषम न रहनेपर महीने-आध महीनेकी गति विषम नहीं रहती। महीने आध-महीनेकी गति विषम न रहनेपर ऋतुओंकी, वर्षोंकी गति विषम नहीं रहती। ऋतुओंकी, वर्षोंकी गति विषम न रहनेपर विषम हवायें नहीं चलतीं टेढ़ी-मेढ़ी। हवाओंकी गति विषम न होनेपर, उनके टेढ़ा-मेढ़ा न चलनेपर देवता क्रोधित नहीं होते। देवताओंके क्रोधित न होनेपर देवता सम्यक् वर्षा बरसाते हैं। देवताओंके सम्यक् वर्षा बरसानेपर खेती ठीकसे पकती है। ठीकसे पके धान्योंके खानेसे मनुष्य दीर्घायु होते हैं, सुवर्ण होते हैं, बलवान् होते हैं तथा निरोग होते हैं।

गुन्नं चे तरमानानं जिम्हं गच्छति पुगंवो,
सब्बाते जिम्हं गच्छन्ति नेत्ते जिम्हं गते सति ।।
एवमेव मनुस्सेसु यो होति सेट्ठ सम्मतो,
सो चे अधम्मं चरति पगेव इतरा पजा ।।
सब्बे रठ्टं दुखं सेति राजा चे होति धम्मिको,
गुन्नं ये तरमानानं उजु गच्छति पुँगवो ।।
सब्बा ते उजु गच्छन्ति नेत्ते उजुगते सती,
एवमेव मनुस्सेसु यो होति सेट्ठसम्मतो ।।
सो चेव धम्मं चरति पगेव इतरा पजा,
सब्बं रठ्टं सुखं सेति राजा चे होति धम्मिको

[यदि तैरती हुई गौवोंके आगे आगे जाने वाला वृषभ टेढ़ा जाता है तो नेताके टेढ़ा जाने के कारण से सब टेढ़ी जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्योंमें भी जो श्रेष्ठ

माना जाता है यदि वह अधर्मके रास्ते जाता है तो प्रजा उसका अनुकरण करती है। यदि राजा अधार्मिक होता है तो सारा राष्ट्र दुखी होता है।

यदि तैरती हुई गौवोंके आगे आगे जाने वाला वृषभ सीधा जाता है तो नेताके सीधा जानेके कारण वे सब सीधे जाते हैं। इसी प्रकार मनुष्योंमें भी जो श्रेष्ठ माना जाता है यदि वह धर्मके रास्ते जाता है तो प्रजा उसका अनुकरण करती है। यदि राजा धार्मिक होता है तो सारा राष्ट्र सुखी होता है।]

(३) अपण्णक, वर्ग

भिक्षुओ, चार बातोंसे युक्त भिक्षु कल्याण-मार्गका पथिक होता है और उसका जन्म आश्रवोंके क्षयमें लगा होता है। कौन सी चार बातोंसे? भिक्षुओ, भिक्षु, शीलवान् होता है, बहुश्रुत होता है, प्रयत्न-शील होता है तथा प्रज्ञावान् होता हैं। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त भिक्षु कल्याण-मार्गका पथिक होता है और उसका जन्म आश्रवोंके क्षयमें लगा होता है।

भिक्षुओ, चार बातोंसे युक्त भिक्षु कल्याण-मार्गका पथिक होता है और उसका जन्म आस्रवोंके क्षयमें लगा रहता है। कौनसी चार बातोंसे? वह निष्क्रमण-वितर्कसे युक्त होता है, अव्यापक-वितर्कसे युक्त होता है, अविहिंसा-वितर्कसे युक्त होता है तथा सम्यक्-दृष्टिसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त भिक्षु कल्याण-मार्गका पथिक होता है और उसका जन्म आस्रवोंके क्षयमें लगा रहता है।

भिक्षुओ, जिस किसीमें चार बातें हो उसे असत्पुरुष जानना चाहिये। कौन-चार बातें? भिक्षुओ, जो असत्पुरुष होता है वह तब भी दूसरोंके अवगुण कहता है जब उससे कोई नहीं पूछता, पूछनेपर, प्रश्न किये जानेपर तो बिना छोड़े बिना कमी किये, पूरी तरहसे विस्तार पूर्वक दूसरोंके दुर्गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके बारेमें यह जानना चाहिये कि यह असत्पुरुष है। फिर भिक्षुओ, जो असत्पुरुष होता है, वह तब भी दूसरोंके गुण नहीं कहता जब उससे कोई पूछता है; पूछनेपर प्रश्न किये जानेपर तो छोड़कर, कमी करके, बिना पूरी तरहसे, बिना विस्तारके दूसरोंके गुण कहता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके बारेमें यह जानना चाहिये कि यह असत्पुरुष है। भिक्षुओ, जो असत्पुरुष होता है वह तब अपने दुर्गुण नहीं कहता है जब उससे कोई नहीं पूछता; पूछनेपर, प्रश्न किये जानेपर, छोड़कर, कभी बिना पूरी तरहसे, बिना विस्तारपूर्वक अपने दुर्गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके बारेमें जानना चाहिये कि यह असत्पुरुष है। भिक्षुओ, जो असत्पुरुष है, वह तब भी अपने गुण कहता है जब उससे कोई नहीं पूछता; पूछने पर प्रश्न किये जानेपर तो

विना छोड़े, बिना कमी किये, पूरी तरहसे, विस्तार पूर्वक अपने गुण कहता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके बारेमें यह जानना चाहिये कि यह असत्पुरुष है। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्तको असत्पुरुष जानना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस किसीमें ये चार बातें हो उसे सत्पुरुष जानना चाहिये। कौनसी चार बातें? भिक्षुओ, जो सत्पुरुष होता है वह तब भी दूसरोंके अवगुण नहीं कहता जब उससे कोई नहीं पूछता; पूछनेपर, प्रश्न किये जाने पर तो छोड़कर, कमी करके, बिना पूरी तरहसे, बिना विस्तारपूर्वक दूसरोंके दुर्गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके बारेमें जानना चाहिये कि यह सत्पुरुष है। फिर भिक्षुओ, जो सत्पुरुष होता है वह तब भी दूसरोंके गुण कहता है जब उससे कोई नहीं पूछता; पूछे जानेपर, प्रश्न किये जानेपर तो बिना छोड़े, विना कमी किये, पूरी तरहसे विस्तार-पूर्वक दूसरोंके गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके बारेमें जानना चाहिये कि यह सत्पुरुष है। फिर भिक्षुओ, जो सत्पुरुष होता है वह तब भी अपने दुर्गुण कहता है जब उससे कोई नहीं पूछता; पूछे जानेपर पर, प्रश्न किये जानेपर तो बिना छोड़े, बिना कमी किये, पूरी तरहसे, विस्तारपूर्वक अपने दुर्गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके बारेमें यह जानना चाहिये कि यह सत्पुरुष है। फिर भिक्षुओ, जो सत्पुरुष होता है वह तब भी अपने गुण नहीं कहता जब उससे कोई नहीं पूछता, पूछे जानेपर, प्रश्न किये जानेपर तो छोड़कर कमी करके बिना पूरी तरहसे, बिना विस्तार पूर्वक अपने गुण कहने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसे आदमीके बारेमें जानना चाहिये कि यह सत्पुरुष है। भिक्षुओ, जिस किसीमें ये चार बातें हों उसे सत्पुरुष जानना चाहिये।

भिक्षुओ, जैसे नई बहु जिस रातको या जिस दिन घरमें लाई जाती है, उस समय उसके मनमें सासके प्रति, ससुरके प्रति, स्वामीके प्रति और तो और जो दास-कर्मकर लोग होते हैं, उनके प्रति भी बड़ा संकोच होता है, बड़ा लज्जा-भय बना रहता है। किन्तु बादमें परिचय बढ़ जानेपर, विश्वास बढ़ जानेपर वह सासको भी, ससुरको भी तथा स्वामीको भी कहती है कि हटो, तुम क्या जानते हो? इसी प्रकार भिक्षुओ, कोई भिक्षु जिस रात या जिस दिन घरसे बेघर हो प्रव्रजित हुआ होता है उस समय उसके मनमें भिक्षुओंके प्रति, भिक्षुणियोंके प्रति, उपासकोंके प्रति, उपासिकाओंके प्रति, और तो और विहारोंमें रहने वाले भावी-श्रमणोंके प्रति भी बड़ा संकोच रहता है, बड़ा लज्जाभय बना रहता है। किन्तु बादमें परिचय बढ़ जाने पर, विश्वास बढ़ जानेपर वह आचार्यको भी, उपाध्यायको भी कहता है कि हटो, तुम क्या जानते हो? इसलिये भिक्षुओ, यही सीखना चाहिये कि हम नवागत बहुके समान चित्तसे विहार करेंगे; भिक्षुओ यही सीखना चाहिये।

भिक्षुओ, ये चार अग्र ह। कौन से चार? शील-अग्र, समाधि-अग्र, प्रज्ञा अग्र तथा विमुक्ति-अग्र। भिक्षुओ, ये चार अग्र हैं।

भिक्षुओ, ये चार अग्र ह। कौनसे चार? रूप-अग्र वेदना-अग्र, संज्ञा-अग्र तथा भवाग्र। भिक्षुओ ये, चार अग्र हैं।

एक समय भगवान् कुसीनाराके पास मल्लोंके शाल वनमें दो शाल-वृक्षोंके बीच लेटे थे; परिनिर्वाणके समय। वहाँ भगवान् ने भिक्षुओंको सम्बोधित किया——"भिक्षुओ"; भिक्षुओंने भगवानको प्रत्युत्तर दिया—"भदन्त।" तब भगवान्ने यह कहा—भिक्षुओ, यदि किसी एक भिक्षुके मनमें भी बुद्धके बारेमें, धर्मके बारेमें, संघके बारेमें, मार्गके बारेमें अथवा प्रतिपत्तिके बारेमें शंका हो वा संदेह हो तो भिक्षुओ, पूछ लो। बादमें मत पछताना कि हम अपने शास्ताके आमने-सामने रहे, तब भी भगवान्से पूछ न सके।" ऐसा कहनेपर वे भिक्षु चुप रहे। दूसरी बार भी भगवान्ने भिक्षुओंको सम्बोधित किया–"भिक्षुओ, यदि किसी एक भिक्षुके मनमें भी बुद्धके बारेमें, धर्मके बारेमें, संघके बारेमें, मार्गके बारेमें अथवा प्रतिपत्तिके बारेमें शंका हो वा संदेह हो तो भिक्षुओ, पूछ लो। बादमें मत पछताना कि हम अपने शास्ताके आमने-सामने रहे तब भी भगवान्से न पूछ सके।" ऐसा कहने पर दूसरी बार वे भिक्षु चुप रहे। तीसरी बार भी भगवान्ने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ, यदि किसी एक भिक्षुके मनमें भी बुद्धके बारेमें, धर्मके बारेमें, संघके बारेमें, मार्गके बारेमें अथवा प्रतिपत्तिके बारेमें शंका हो वा संदेह हो तो भिक्षुओ, पूछ लो। बादमें मत पछताना कि हम अपने शास्ताके आमने-सामने रहे। तब भी भगवान्से न पूछ सके।" ऐसा कहने पर तीसरी बार भी वे भिक्षु चुप रहे।

तब भगवानने फिर भिक्षुओंको आमंत्रित किया—"सम्भव है भिक्षुओ, तुम शास्ताके प्रति तुम्हारा जो गौरव-भाव है उसके कारण भी न पूछो। इसलिये एक मित्र भी अपने दूसरे मित्रको कहकर पूछ सकता है।" ऐसा कहनेपर भी वे भिक्षु चुप रहे। तब आयुष्मान् आनन्दने भगवान्से कहा—"भन्ते! आश्चर्य है। भन्ते! अद्भुत है। मैं इस भिक्षुसंघके प्रति बड़ा प्रसन्न हूँ। इस भिक्षु संघमें एक भिक्षुके मनमें भी बुद्धके प्रति, धर्मके प्रति, संघके प्रति, मार्गके प्रति वा प्रतिपत्तिके प्रति शंका या सन्देह नहीं है।" "आनन्द! तू ऐसा प्रसन्नताके कारण कह रहा है। किन्तु आनन्द यह तथागतको ज्ञात ही है कि इस भिक्षुसंघमें एक भिक्षुके मनमें भी बुद्धके प्रति, धर्मके प्रति, संघके प्रति, मार्गके प्रति वा प्रतिपत्तिके प्रति शंका या सन्देह नहीं है। आनन्द! इन पाँच सौ भिक्षुओंमें जो अन्तिम भिक्ष है वह भी स्रोतापन्न है। उसके भी पतन की सम्भावना नहीं, उसकी बोधि-प्राप्ति सुनिश्चित है।"

भिक्षुओ, ये चार बातें अविचार्य हैं, इनका चिन्तन नहीं करना चाहिये। इनका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। कौनसी चार बातें? भिक्षुओ, जो बुद्धोंका-बुद्ध-विषय है, यह अविचार्य है, इसका चिन्तन नहीं करना चाहिये। इसका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। भिक्षुओ, ध्यानी-का ध्यान-विषय अविचार्य है, इसका चिन्तन नहीं करना चाहिये। इसका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। भिक्षुओ, कर्म-विपाक अवि चार्य है, इसका चिन्तन नहीं करना चाहिये। इसका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। भिक्षुओ, लोककी उत्पत्तिकी चिन्ता अविचार्य है, इसका चिन्तन नहीं करना चाहिये। इसका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है। भिक्षुओ, ये चार बतें अविचार्य हैं, इनका चिन्तन नहीं करना चाहिये। इनका विचार करनेसे उन्माद या चित्तका विघात हो सकता है।

भिक्षुओ, ये चार दक्षिणा-विशुद्धियाँ हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, प्रति-ग्राहक से नहीं; किन्तु दायकसे विशुद्ध होनेवाली दक्षिणा (= दान); दायकसे नहीं, किन्तु प्रतिग्राहकसे विशुद्ध होनेवाली दक्षिणा, न प्रतिग्राहकसे और न दायकसे विशुद्ध होनेवाली दक्षिणा; दायकसे भी और प्रतिग्राहकसे भी विशुद्ध होनेवाली दक्षिणा। भिक्षुओ, प्रतिग्राहकसे नहीं किन्तु दायकसे दक्षिणा कैसे विशुद्ध होती है? भिक्षुओ, यदि दायक शीलवान् होता है, कल्याणामार्गी होता है, और प्रतिग्राहक दुश्शील होते हैं, पापी होते हैं तो दक्षिणा प्रतिग्राहकसे विशुद्ध नहीं होती, किन्तु दायकसे। भिक्षुओ दायकसे नहीं, किन्तु प्रतिग्राहकसे दक्षिणा कैसे विशुद्ध होती है? भिक्षुओ, यदि प्रतिग्राहक शीलवान् होते हैं, कल्याणमार्गी होते हैं और दायक दुश्शील होता है, पापी होता है, तो दक्षिणा प्रतिग्राहकसे विशुद्ध होती है, दायक से नहीं। भिक्षुओ, कैसे दक्षिणा न दायकसे परिशुद्ध होती है और न प्रतिग्राहकसे? भिक्षुओ, यदि दायक भी दुश्शील होते हैं, पापी होते हैं, तथा प्रतिग्राहक भी दुश्शील होते हैं, पापी होते हैं तो दक्षिणा न दायकसे विशुद्ध होती है और न प्रति-ग्राहकसे। भिक्षुओ, कैसे दक्षिणा दायकसे भी परिशुद्ध होती है और प्रति-ग्राहकसे भी? भिक्षुओ, यदि दायक शीलवान् होते हैं तथा कल्याणमार्गी होते हैं तो दक्षिणा दायकसे भी विशुद्ध होती है और प्रति-ग्राहकसे भी। भिक्षुओ, ये चार दक्षिणा-विशुद्धियाँ हैं।

तब आयुष्मान् सारिपुत्र जहाँ भगवान थे वहाँ पहुँचे। पहुँचकर, भग-वानको अभिवादन कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान् सारिपुत्रने भगवानको

यह कहा—"भन्ते! इसका क्या कारण है, इसका क्या हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसे हानि उठानी पड़ती है? भन्ते! इसका क्या कारण है, इसका क्या हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसकी अभिलाषा पूरी नहीं होती। भन्ते! इसका क्या कारण है, इसका क्या हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसकी अभिलाषा पूरी होती है। भन्ते! इसका क्या कारण है, इसका क्या हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उससे दूसरोंकी अभिलाषा पूरी होती है?

"सारिपुत्र! कोई कोई किसी ब्राह्मण या श्रमणके पास जाकर प्रार्थना करता है कि भन्ते! जिस चीजकी आवश्यकता हो कहें। वह जो चीज देनेके लिये कहता है, वह नहीं देता। वह उस योनिसे च्युत होकर यहाँ जन्म ग्रहण करता है। वह जिस जिस व्यापारको करता है, उसीमें हानि उठाता है।

"सारिपुत्र! कोई कोई किसी ब्राह्मण या श्रमणके पास जाकर प्रार्थना करता है कि भन्ते! जिस चीजकी आवश्यकता हो कहें। वह जो चीज देनेके लिये कहता है, उसी आशयके अनुसार नहीं देता। वह उस योनिसे च्युत होकर यहाँ जन्म ग्रहण करता है। वह जिस जिस व्यापारको करता है, उसकी अभिलाषा पूरी नहीं होती।

"सारिपुत्र! कोई कोई किसी ब्राह्मण या श्रमणके पास जाकर प्रार्थना करता है कि भन्ते! जिस चीज की आवश्यकता हो कहें। वह जो चीज देनेके लिये कहता है, उसी आशयके अनुसार देता है। वह उस योनिसे च्युत होकर यहाँ जन्म ग्रहण करता है। वह जिस जिस व्यापारको करता है, उसकी अभिलाषा पूरी होती है।

"सारिपुत्र! कोई कोई किसी ब्राह्मण या श्रमणके पास जाकर प्रार्थना करता है कि भन्ते! जिस चीजकी आवश्यकता हो कहें। वह जो चीज देनेके लिये कहता है, वह दूसरेकी अभिलाषाके अनुसार देता है। वह उस योनिसे च्युत होकर यहाँ जन्म ग्रहण करता है। वह जिस जिस व्यापारको करता है उससे दूसरोंकी अभिलाषाकी पूर्ति होती है।

"सारिपुत्र! इसका यह कारण है, इसका यह हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसे हानि उठानी पड़ती है। सारिपुत्र! इसका यह कारण है, इसका यह हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसकी अभिलाषा पूरी नहीं होती। सारिपुत्र। इसका यह कारण है, इसका यह हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उसकी अभिलाषाकी पूर्ति होती है।

सारिपुत्र इसका यह कारण है, इसका यह हेतु है कि एक व्यापारी वैसा ही व्यापार करता है, किन्तु उससे दूसरोंकी अभिलाषा पूरी होती है।

एक समय भगवान् कौसाम्बीमें विहार कर रहे थे घोसितारामेंमें। तब आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ गये। समीप पहुँचकर भगवानको अभिवादन कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्ममान आनन्दने भगवानको कहा "भन्ते! इसका क्या हेतु है, इसका क्या कारण है कि स्त्रियाँ न सभामें बैठती हैं, न खेती आदि कोई काम करती हैं और न (व्यापार आदिके लिये) काम्बोज जाती हैं?" "आनन्द स्त्रियाँ क्रोधी स्वभावकी होती हैं। आनन्द! स्त्रियाँ ईर्षालु होती हैं। आनन्द! स्त्रियाँ मात्सर्य-युक्त होती हैं। आनन्द! स्त्रियां मूर्ख होती हैं। आनन्द! यह हेतु है, यह कारण है जिससे स्त्रियाँ न सभामें बैठती हैं, न (खेती आदि) कोई काम करती हैं और न (व्यापार आदिके लिये) काम्बोज जाती हैं।"

(४) श्रमणमचल वर्ग

भिक्षुओ, जिसमें ये चारों बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार बातें? वह हिंसा करने वाला होता है, वह चोरी करने वाला होता है, वह काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचार करने वाला होता है तथा वह झूठ बोलने वाला होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चारों बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार बातें? वह हिंसा करनेसे विरत होता है, वह चोरी करनेसे विरत होता है, वह कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत होता है तथा वह झूठ बोलनेसे विरत होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चारों बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार बातें? वह झूठ बोलनेवाला होता है, वह चुगली खाने वाला होता है वह कठोर बोलने वाला होता है, वह बेकार बकवास करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्ग में डाल दिया गया जैसा होता है। कौन सी चार बातें? वह झूठ बोलने वाला नहीं होता, वह चुगली खाने वाला नहीं होता, वह कठोर बोलने वाला नहीं होता, वह बेकार बकवास

करनेवाला नहीं होता। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार बातें? बिना विचार किये, बिना परीक्षा किये, निन्दनीयकी प्रशंसा करता है। बिना विचार किये, बिना परीक्षा किये, प्रशंसनीयकी निन्दा करता है। बिना विचार किये, बिना परीक्षा किये, अश्रद्धेय स्थलपर श्रद्धायुक्त होता है। बिना विचार किये, बिना परीक्षा किये, श्रद्धेय स्थलपर अश्रद्धायुक्त होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौन-सी चार बातें? विचार करके, परीक्षा करके निन्दनीयकी निन्दा करता है। विचार करके, परीक्षा करके प्रशंसनीयकी प्रशंसा करता है। विचार करके, परीक्षा करके अश्रद्धेय स्थलपर अश्रद्धायुक्त होता है। विचार करके परीक्षा करके श्रद्धेय स्थलपर श्रद्धायुक्त होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौनसी चार बातें? वह क्रोधको महत्व देनेवाला होता है, सद्धर्मको नहीं। वह म्रक्षको महत्व देनवाला होता है, सद्धर्मको नहीं। वह लाभको महत्व देन वाला होता है, सद्धर्मको नहीं। वह सत्कारको महत्व देनेवाला होता है, सद्धर्मको नहीं। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है। कौन सी चार बातें? वह सद्धर्मको महत्व देनेवाला होता है, क्रोधको नहीं। वह सद्धर्मको महत्व देनेवाला होता है म्रक्षको नहीं। वह सद्धर्मको महत्व देने वाला होता है, लाभको नहीं। वह सद्धर्मको महत्व देनवाला होता है सत्कारको नहीं। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया जैसा होता है।

भिक्षुओ दुनियामें चार तरहके आदमी हैं। कौनसे चार तरहके? अन्धकारसे अन्धकारमें जानेवाला, अन्धकारसे प्रकाशमें जानेवाला, प्रकाशसे अन्धकारमें जानेवाला, प्रकाशसे प्रकाशमें जानेवाला। भिक्षुओ, अन्धकारसे अन्धकारमें जानेवाला

कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी नीच कुलमें पैदा हुआ होता है, चण्डाल कुलमें, या बंसफोड़ कुलमें, शिकारियोंके कुलमें, या रथ बनानेवाले (चर्मकार?) कुलमें, या सफाई करनेवाले कुलमें; ऐसे कुलमें जो दरिद्र होता है, जहाँ खाने पीनेकी कठिनाई होती है, मुश्किल होती है, जहाँ भोजन वस्त्र तकलीफसे मिलता है। वह होता है दुर्वर्ण, दुर्दर्शनीय, बौना, रोग-बहुल, काना, लूला, लंगडा, पक्ष-घात वाला। उसे खाना-पीना नहीं मिलता, वस्त्र नहीं मिलता, वाहन नहीं मिलता, माला-गन्ध-विलेपन नहीं मिलता, सोने-रहनेका स्थान तथा दीपकके लिये तेलबत्ती आदिकी प्राप्ति नहीं होती। वह शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणीसे बुरा काम करता है, मनसे अकुशल कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे दुष्कर्म कर, शरीरका त्याग करनेपर, मरनेपर, नरकमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी अन्धकारसे अन्धकारमें जानेवाला होता है। भिक्षुओ, अन्धकारसे प्रकाशमें जानेवाला कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी नीच कुलमें पैदा हुआ होता है, चण्डाल कुलमें, या बंस-फोड़ कुलमें, या शिकारियोंके कुलमें, या रथ बनानेवाले (चर्मकार?) कुलमें, या सफाई करनेवाले कुलमें, ऐसे कुलमें जो दरिद्र होता है, जहाँ खानेपीनेकी कठिनाई होती है, मुश्किल होती है, जहाँ भोजन-वस्त्र तकलीफसे मिलता है। वह होता है दुर्वर्ण, दुर्दर्शनीय, बौना, रोग-बहुल, काना, लूला, लंगड़ा, पक्ष-घातवाला। उसे खाना-पीना नहीं मिलता, वस्त्र नहीं मिलता, वाहन नहीं मिलता, माला-गन्ध-विलेपन नहीं मिलता, सोने-रहनेका स्थान तथा दीपकके लिये तेल-बत्ती आदिकी प्राप्ति नहीं होती। वह शरीरसे शुभ कर्म करता है, वाणीसे शुभ कर्म करता है, मनसे शुभ कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे कुशल कर्म कर, शरीर छूटनेपर, मरनेपर स्वर्गमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अन्धकारसे प्रकाशमें जानेवाला होता है।

भिक्षुओ, प्रकाशसे अन्धकारमें जानेवाला कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी ऊँच कुलमें जन्म ग्रहण करता है क्षत्रिय महासारवान् कुलमें, ब्राह्मण महासारवान् कुलमें अथवा गृहपति (= वैश्य) महासारवान् कुलमें, ऐसे कुलमें जो धनी होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, जहाँ सोना चान्दी बहुत होता है, सम्पत्ति बहुत होती है, तथा धन-धान्य बहुत होता है। वह होता है सुन्दर, दर्शनीय, आकर्षक, पहले दर्जेके सौन्दर्यसे युक्त। उसे मिलते हैं अन्न-पान, वस्त्र, वाहन, माला-गन्ध-विलेपन, सोने-रहनेका स्थान तथा दीपकके लिये तेल-बत्ती आदि। वह शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणीसे बुरा काम करता है, मनसे अकुशल कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे दुष्कर्म

कर, शरीर छूटनेपर, मरनेपर नरकमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी प्रकाशसे अन्धकारमें जानेवाला होता है।

भिक्षुओ, प्रकाशसे प्रकाशमें जानेवाला कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी ऊँचे कुलमें जन्म ग्रहण करता है, क्षत्रिय महासारवान् कुलमें, ब्राह्मण महासारवान् कुलमें अथवा गृहपति (=वैश्य) महासारवान् कुलमें, ऐसे कुलमें जो धनी होता है, ऐश्वर्य-शाली होता है, जहाँ सोना-चाँदी बहुत होता है, सम्पत्ति बहुत होती है तथा धन-धान्य बहुत होता है। वह होता है सुन्दर, दर्शनीय, आकर्षक, पहले दर्जेके सौन्दर्यसे युक्त। उसे मिलते हैं अन्न-पान, वस्त्र-वाहन, माला-गन्ध-विलेपन, सोने-रहनेका स्थान तथा दीपकके लिये तेल बत्ती आदि। वह शरीरसे शुभ कर्म करता है, वाणीसे शुभ-कर्म करता है, मनसे शुभ-कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे शुभ कर्मकर, शरीर छूटने पर, मरनेपर स्वर्गमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी प्रकाशसे प्रकाशमें जानेवाला होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके आदमी होते हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग हैं। कौनसे चार तरहके? नीचेसे नीचेकी ओर जाने वाले, नीचेसे ऊपरकी ओर जाने वाले, ऊपरसे नीचेकी ओर जाने वाले तथा ऊपरसे ऊपरकी ओर जाने वाले। भिक्षुओ, आदमी नीचेसे नीचेकी ओर कैसे जाता है? भिक्षुओ एक आदमी नीच कुलमें उत्पन्न होता है, चण्डाल कुलमें... वह शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणीसे बुरा काम करता है, मनसे अकुशल कर्म करता है। वह शरीर वाणी तथा मनसे दुष्कर्म कर, शरीरका त्याग करनेपर, मरनेपर, नरकमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी नीचेसे नीचेकी ओर जानेवाला होता है।

भिक्षुओ आदमी नीचेसे ऊपरकी ओर कैसे जाता है? भिक्षुओ, एक आदमी नीचकुलमें उत्पन्न होता है, चण्डाल कुलमें... वह शरीरसे शुभ कर्म करता है, वाणीसे शुभ कर्म करता है, मनसे शुभ कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मनसे शुभ कर्म कर, शरीर छूटनेपर, मरनेपर स्वर्गमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी नीचेसे ऊपरकी ओर जानेवाला होता है।

भिक्षुओ, आदमी ऊपरसे नीचेकी ओर कैसे जाता है? भिक्षुओ, एक आदमी ऊँचे कुलमें जन्म ग्रहण करता है, क्षत्रिय महासारवान्में... वह शरीरसे दुष्कर्म करता है, वाणीसे बुरा काम करता है, मनसे अकुशल कर्म करता है। वह शरीर वाणी तथा मनसे दुष्कर्म कर, शरीर छूटनेपर मरनेपर, नरकमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी ऊपरसे नीचेकी ओर जाता है।

भिक्षुओ, आदमी ऊपरसे ऊपरकी ओर कैसे जाता है? भिक्षुओ, एक आदमी ऊँचे कुलमें जन्म ग्रहण करता है, क्षत्रिय महासारवान् कुलमें.... वह शरीर

वाणी तथा मनसे शुभ-कर्मकर, शरीर छूटनेपर मरनेपर, स्वर्गमें उत्पन्न होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी ऊपरसे ऊपरकी ओर जाता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग होते हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार तरहके? अचल-श्रमण, पुण्डरीक-श्रमण, पद्म-श्रमण तथा श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण। भिक्षुओ, आदमी अचल-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु शैक्ष होता है, मार्गानुगामी होता है, अनुपम योग-क्षेमकी इच्छा करता हुआ विहरता है। भिक्षुओ, जैसे किसी मुकुट-धारी राजाका ज्येष्ठ पुत्र हो, जो अभिषेकके योग्य हो, किन्तु जिसका अभिषेक न हुआ हो और जो निश्चित रूपसे अभिषिक्त होनेवाला हो। इसी प्रकार भिक्षुओ, शैक्ष होता है, मार्गानुगामी होता है, अनुपम योग-क्षेमकी इच्छा करता हुआ घूमता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी अचल-श्रमण होता है।

भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु आस्रवोंका क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्तिको प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं जानकर, साक्षात्कर, प्राप्तकर विहार करता है, किन्तु वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके विमोक्षोंका अनुभव करता हुआ नहीं विचरता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पुण्डरीक-श्रमण होता है।

भिक्षुओ, आदमी पद्म-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ एक भिक्षु आस्रवोंका क्षय कर. . . . . प्राप्तकर विहार करता है और वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके विमोक्षोंका अनुभव करता हुआ विचरता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पद्म श्रमण होता है।

भिक्षुओ, आदमी श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रायः (दायकों द्वारा स्वीकार करनेकी) प्रार्थना किये गये चीवरोंका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये चीवरोंका अल्प मात्रामें; प्रायः प्रार्थना किये गये पिण्डपातका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये पिण्डपातका अल्प-मात्रामें, प्रायः प्रार्थना किये गये शयनासनका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये शयनासनका अल्प मात्रामें, प्रायः प्रार्थना किये गये रोगी-प्रत्यय-भैषज्य परिष्कारका ही उपभोयोग करता है, प्रार्थना न किये गये रोगी-प्रत्यय भैषज्य परिष्कारका अल्प मात्रामें। जिन साथी भिक्षुओंके साथ विचरता है वह प्रायः उसके साथ अनुकूल ही शारीरिक व्यवहार करते हैं; प्रतिकूल कभी नहीं; अनुकूल ही वाणीका व्यवहार करते हैं, प्रतिकूल कभी ही; अनुकूल ही मानसिक व्यवहार करते हैं, प्रतिकूल कभी ही। वे अनुकूल ही शारीरिक-चैतसिक व्यवहार करते हैं।

जो पित्तसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, श्लेषमसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, वायुसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, त्रिदोषसे उत्पन्न होने वाले रोग होते हैं, ऋतु परिवर्तनसे उत्पन्न होनवाले रोग होते हैं, विषम-परिहारसे उत्पन्न होनवाले रोग होते हैं, (वध-बंधनादि) उपक्रमसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं अथवा कर्मफलके स्वरूप उत्पन्न वाले रोग होते हैं, उसे वे रोग प्रायः नहीं होते। वह अल्प-रोगी होता है। जो चार चैतसिक ध्यान हैं, जिनकी प्राप्तिसे इसी शरीरमें सुख-विहरण होता है, वे उसे यूँ ही बिना कठिनाईके, सरलतासे प्राप्त हो जाते हैं। वह आस्रवोंका क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्तिको प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर, विहार करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण होता है। भिक्षुओ, यदि किसीके बारेमें ठीक-ठीक यह कहा जा सकता है कि वह श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण है तो यह मेरे ही बारेमें ठीक-ठीक कहा जा सकता है कि मैं श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण हूँ। भिक्षुओ, मैं ही प्रायः (दायकों द्वारा स्वीकार करनेकी) प्रार्थना किये गये चीवरोंका ही उपयोग करता हूँ, प्रार्थना न किये गये चीवरोंका अल्प मात्रामें, प्रायः प्रार्थना किये गये पिण्डपातका ही उपयोग करता हूँ, प्रार्थना न किये गये पिण्ड-पातका अल्प मात्रामें; प्रायः प्रार्थना किये गये शयनासनका ही उपभोग करता हूँ, प्रार्थना न किये गये शयनासनाका अल्पमात्रामें, प्रायः प्रार्थना किये गये रोगी-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कारका ही उपभोग करता हूँ, प्रार्थना न कियेगयेरोगी-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कारका अल्प मात्रामें। जिन भिक्षुओंके साथ विचरता हूँ वे प्रायः मेरे साथ अनुकूल ही शारीरिक व्यवहार करते हैं, प्रतिकूल कभी ही ; अनुकूल ही वाणीका व्यवहार करते हैं, प्रतिकूल कभी ही, अनुकूल ही मानसिक व्यवहार करते हैं, प्रतिकूल कभी ही। वे अनुकूल ही शारीरिक-चैतसिक व्यवहार करते हैं। जो पित्तसे उत्पन्न होने वाले रोग होते हैं, श्लेषमसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, वायुसे उत्पन्न होने वाले रोग होते हैं, त्रिदोषसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, ऋतु-परिवर्तनसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, विषम-परिहारसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, (वध बंधनादि) उपक्रमसे उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं अथवा कर्म फलके स्वरूप उत्पन्न होनेवाले रोग होते हैं, वे रोग प्रायः मुझे नहीं होते। मैं अल्प रोगी हूँ। जो चार चैतस्निक ध्यान हैं, जिन की प्राप्तिसे इसी शरीरमें सुख-विहरण होता है, वे मुझे यूँ ही बिना कठिनाई सरलतासे प्राप्त हैं। मैं आस्रवोंका क्षय करके अनास्रव चित्त-विमुक्तिको प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी शरीरमें जानकर, स्वयं साक्षात् कर, प्राप्तकर, विहार करता हूँ। भिक्षुओ, यदि किसीके बारेमें ठीक-ठीक यह कहा जा सकता है कि वह श्रमणोंमें सुकुमार श्रमण

है तो यह मेरे ही बारेमें ठीक-ठीक कहा जाता सकता है कि मैं श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण हूँ। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार-तरहके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार तरहके? अचल-श्रमण, पुण्डरीक-श्रमण, पद्म-श्रमण तथा श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण। भिक्षुओ, आदमी अचल-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु तीनों संयोजनोंका क्षय करके स्रोतापन्न होता है, पतनकी सम्भावनासे परे, उसकी बोधि-प्राप्ति सुनिश्चित रहती है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी अचल-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु तीनों संयोजनोंका क्षय करके राग, द्वेष तथा मोहको दुर्बल बना सकृदागामी होता है, वह एक ही बार इस लोकमें आकर दु:खका अन्त करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पुण्डरीक-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पद्म-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु पतनकी ओर ले जाने वाले पांचों संयोजनोंका क्षय कर अनागामी वा ओपपातिक होता है, उसका वहीं (ब्रह्म लोकमें उत्पत्तिके अनन्तर) निर्वान हो जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पद्म-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु आस्रवोंका क्षय कर . . . . .साक्षात कर, प्राप्त कर, विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार होता है। भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार तरहके? अचल-श्रमण, पुण्डरीक-श्रमण, पद्म-श्रमण तथा श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार। भिक्षुओ, आदमी अचल-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु सम्यक्-दृष्टि होता है, सम्यक्-संकल्पी होता है, सम्यक्-वाणी वाला होता है, सम्यक् कर्मान्त करनेवाला होता है, सम्यक् आजीविका वाला होता है, सम्यक्-व्यायाम करनेवाला होता है, सम्यक् स्मृतिवाला होता है तथा सम्यक् समाधिवाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी अचल-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु सम्यक्-दृष्टि होता है, सम्यक् संकल्पी होता है, सम्यक्-वाणीवाला होता है, सम्यक्-कर्मान्त करने वाला होता है, सम्यक् आजीविका वाला होता है, सम्यक् -व्यायाम करने वाला होता है, सम्यक् स्मृति वाला होता है तथा सम्यक् समाधि वाला होता है। वह सम्यक्-ज्ञानी होता है। वह सम्यक्-विमुक्ति प्राप्त होता है, किन्तु वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके मोक्षका स्पर्श करता हुआ नहीं विचरता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पुण्डरीक-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पद्म-श्रमण कैसे होता है?

भिक्षुओ, भिक्षु सम्यक्-दृष्टि होता है, सम्यक् संकल्पी होता है, सम्यक् वाणी वाला होता है, सम्यक्-कर्मान्त करनेवाला होता है सम्यक् आजीविका वाला होता है, सम्यक् व्यायाम करनेवाला होता है, सम्यक् स्मृति वाला होता है तथा सम्यक् समाधिवाला होता है। वह सम्यक् ज्ञानी होता है। वह सम्यक् विमुक्ति प्राप्त होता है। वह (चित्त) कायसे आठ प्रकारके मोक्षका स्पर्श करता हुआ विचरता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पद्म-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रायः (दायकों द्वारा स्वीकार करने की) प्रार्थना किये गये चीवरोंका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये चीवरोंका अल्प मात्रामें ...... भिक्षुओ यदि किसीके बारेमें ठीक-ठीक यह कहा जा सकता है कि वह श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण है तो यह मेरे ही बारेमें ठीक-ठीक कहा जा सकता है कि मैं श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण हूँ। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार तरहके? अचल-श्रमण, पुण्डरीक-श्रमण, पद्म-श्रमण तथा श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण। भिक्षुओ, अचल-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु शैक्ष होता है, अप्राप्त-अर्हत्व, वह अनुपम योग-क्षेमकी प्राप्तिकी कामना करता हुआ विहार करता है। इस प्रकार भिक्षुओ! आदमी अचल-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु पाँच उपादान स्कन्धोंके उदय और व्ययको देखता विहार करता है—यह रूप है, यह रूपकी उत्पत्ति है, यह रूपका अस्त होना है; यह वेदना है ... यह संज्ञा है ... ये संस्कार हैं ... यह विज्ञान है, यह विज्ञानकी उत्पत्ति है, यह विज्ञान-का अस्त होना है, किन्तु वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके मोक्षोंको स्पर्श करता हुआ विहार नहीं करता। इस प्रकार, भिक्षुओ, आदमी पुण्डरीक-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी पद्म-श्रमण कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु पाँच उपादान स्कन्धोंके उदय और व्ययको देखता विहार करता है—यह रूप है, यह रूपकी उत्पत्ति है, यह रूपका अस्त होना है; यह वेदना है ... यह संज्ञा है ... ये संस्कार हैं ... ये विज्ञान है, यह विज्ञानकी उत्पत्ति है, यह विज्ञानका अस्त होना है। वह (चित्त-) कायसे आठ प्रकारके विमोक्षको स्पर्श करता हुआ विहार करता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी पद्म-श्रमण होता है। भिक्षुओ, आदमी श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रायः (दायकों द्वारा स्वीकार करनेकी) प्रार्थना किये गये चीवरोंका ही उपभोग करता है, प्रार्थना न किये गये चीवरोंका अल्प मात्रामें ... भिक्षुओ यदि किसीके बारेमें

ठीक-ठीक यह कहा जा सकता है कि वह श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण है तो यह मेरे ही बारेमें ठीक-ठीक कहा जा सकता है कि मैं श्रमणोंमें सुकुमार-श्रमण हूँ। भिक्षुओ दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

(५) असुर-वर्ग

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? असुर-परिषद सहित असुर, देव-परिषद सहित असुर, असुर-परिषद सहित देव, देव-परिषद सहित देव। भिक्षुओ, असुरपरिषद सहित असुर कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी दुश्शील होता है, पापी होता है। उसकी परिषद भी दुश्शील होती है, पापी। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी असुर परिषद सहित असुर होता है। भिक्षुओ देवपरिषद् सहित असुर कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी दुश्शील होता है, पापी होता है। किन्तु उसकी परिषद शीलवान होती है, सदाचारपरायण। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी देव परिषद सहित असुर होता है। भिक्षुओ, आदमी असुर परिषद सहित देव कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी शीलवान् होता है, सदाचारी। किन्तु उसकी परिषद् होती है दुश्शील, पापी। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी असुर परिषद् सहित देव होता है। भिक्षुओ, आदमी देव परिषद् सहित देव कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी शीलवान् होता है सदाचार परायण। उसकी परिषद् भी शीलवान् होती है, सदाचार परायण। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी देव-परिषद सहित देव होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकार के लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, इस दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध नहीं रहती। एक आदमीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध नहीं रहती। एक आदमीको न चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, न प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना। एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध रहती है और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी। भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, इस दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध नहीं रहती। एक आदमीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध नहीं रहती। एक आदमीको न चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, न प्रज्ञा की विदर्शना-भावना। एक आदमी

को चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध रहती है और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी। भिक्षुओ, जिस किसीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध हो और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध न हो उस आदमीको चाहिये कि वह चित्तकी शमथ-भावनामें प्रतिष्ठित होकर प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना की सिद्धिके लिये प्रयास करे। समय बीतनेपर उसे चित्तकी शमथ-भावनाकी सिद्धि भी प्राप्त रहती है, और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावनाकी सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है। भिक्षुओ, जिस किसीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो और चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध न हो उस आदमीको चाहिये वह प्रज्ञाकी विदर्शना-भावनामें प्रतिष्ठित होकर चित्तकी शमथ-भावनाकी सिद्धिके लिये प्रयास करे। समय बीतनेपर उसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावनाकी सिद्धि भी प्राप्त रहती है और चित्तकी शमथ-भावनाकी सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है। और भिक्षुओ, जिस किसीको न चित्तकी शमथ-भावनाकी सिद्धि हो और न प्रज्ञाकी विदर्शना भावनाकी सिद्धि हो, उस आदमीको चाहिये कि उन्हीं कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके लिये विशेष कोशिश करे, प्रयास करे, उत्साहसे काम ले, बिना रुके स्मृति तथा सम्प्रजन्यसे युक्त हो। भिक्षुओ, जैसे किसीके कपड़ोंमें आग लग जाय, सिरके बाल ही जल उठें, तो वह उन कपड़ोंकी या अपने सिरके बालोंकी आग बुझानेके लिये ही कोशिश करता है, प्रयास करता है, उत्साहसे काम लेता है, बिना पीछे हटे स्मृति तथा सम्प्रयजन्यसे युक्त होता है, इसी प्रकार भिक्षुओ, उस आदमीको चाहिये कि उन्हीं कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके लिये विशेष कोशिश करे, प्रयास करे, उत्साहसे काम ले, बिना रुके स्मृति तथा सम्प्रजन्यसे युक्त हो। समय बीतनेपर उसे चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध हो जाती है, प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी सिद्ध हो जाती है। भिक्षुओ, जिस किसीको चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध हो और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी सिद्ध हो तो भिक्षुओ, उस आदमीको चाहिये कि उन्हीं कुशल धर्मोंमें प्रतिष्ठित होकर आगे आस्रवोंके क्षय के लिये प्रयास करे। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, इस दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध नहीं रहती। भिक्षुओ, एक आदमीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध रहती है, किन्तु उसे चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध नहीं रहती। भिक्षुओ, एक आदमीको न चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध रहती है, न प्रज्ञाकी विदर्शना भावना। भिक्षुओ, एक आदमीको चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध रहती है, प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी। भिक्षुओ, जिस किसीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध हो, किन्तु

प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध न हो, उस आदमीको चाहिये कि वह जिसे प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो उसके पास जाय और उससे पूछे—आयुष्मान् ! संस्कारोंके प्रति क्या दृष्टि रखनी चाहिये ? संस्कारोंका कैसे विचार करना चाहिये ? संस्कारों का कैसे चिन्तन करना चाहिये ? वह उसे अपनी दृष्टिके अनुसार अपनी जानकारीके अनुसार बतायेगा—आयुष्मान् ! संस्कारोंके प्रति अैसी दृष्टि रखनी चाहिये, संस्कारोंका इस प्रकार विचार करना चाहिये, संस्कारोंका इस प्रकार चिन्तन करना चाहिये। समय बीतनेपर उसे चित्तकी शमथ-भावना और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना दोनों प्राप्त रहेंगी। भिक्षुओ, जिस किसीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो किन्तु चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध न हो, उस आदमी को चाहिये कि वह जिसे चित्तकी शमथ भावना सिद्ध हो उस आदमीके पास जाय और उससे पूछे—आयुष्मान् ! चित्तको कैसे संभालना चाहिये ? चित्तको कैसे शान्त करना चाहिये ? चित्तको कैसे एकाग्र करना चाहिये ? चित्तको कैसे स्थिर करना चाहिये ? वह उसे अपनी (सम्यक्) दृष्टि तथा जानकारीके अनुसार कहेगा कि चित्तको कैसे संभालना चाहिये, चित्तको कैसे शान्त करना चाहिये ? चित्तको कैसे एकाग्र करना चाहिये, चित्तको कैसे स्थिर करना चाहिये ? समय बीतने पर उसे प्रज्ञा की विदर्शना-भावना और चित्तकी शमथ-भावना दोनों प्राप्त रहेंगी।

भिक्षुओ, जिस किसीको न चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध हो और न प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो, उस आदमीको चाहिये कि जिस आदमीको चित्तकी शमथ-भावना सिद्ध हो, जिस आदमीको प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना सिद्ध हो वह उसके पास जाये और पूछे—आयुष्मान् ! आयुष्मान् चित्तको कैसे संभालना चाहिये ? चित्तको कैसे शान्त करना चाहिये ! चित्तको कैसे एकाग्र करना चाहिये ? चित्तको कैसे स्थिर करना चाहिये ? संस्कारोंके प्रति क्या दृष्टि रखनी चाहिये ? संस्कारोंका कैसे विचार करना चाहिये ? संस्कारोंका कैसे चिन्तन करना चाहिये ? वह उसे अपनी (सम्यक्) दृष्टिके अनुसार, अपनी जानकारीके अनुसार कहेगा कि चित्तको अैसे संभालना चाहिये, चित्तको अैसे शान्त करना चाहिये, चित्तको अैसे एकाग्र करना चाहिये, चित्तको अैसे स्थिर करना चाहिये ? संस्कारोंके प्रति अैसी दृष्टि रखनी चाहिये ? संस्कारोंका इस प्रकार विचार करना चाहिये ? संस्कारोंका इस प्रकार चिन्तन करना चाहिये। समय बीतनेपर उसे चित्तकी शमथ-भावना और प्रज्ञाकी विदर्शना भावना दोनों प्राप्त रहेंगी।

भिक्षुओ, जिस आदमीको चित्तकी शमथ-भावना भी सिद्ध हो और प्रज्ञाकी विदर्शना-भावना भी सिद्ध हो तो भिक्षुओ, उस आदमीको चाहिये कि उन्हीं कुशल-

धर्मोमें प्रतिष्ठित होकर आगे आस्रवोंके क्षयके लिये प्रयास करे। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके ? न आत्म-हितमें लगा हुआ और न पर-हितमें लगा हुआ; पर-हितमें लगा हुआ किन्तु आत्म-हितमें नहीं; आत्म-हितमें लगा हुआ किन्तु परहितमें नहीं; आत्म-हित तथा परहित दोनोंमें लगा हुआ। भिक्षुओ, जैसे श्मशानकी लकड़ी हो जो दोनों सिरोंसे जल रही हो और जिसके बीच में गूँह लगा हुआ हो, वह न गाँवमें ही लकड़ीके काम आती है और न जंगलमें। भिक्षुओ, वैसा ही मैं उस आदमीको कहता हूँ कि जो न आत्म-हितमें लगा रहता है और न परहितमें। भिक्षुओ, जो आदमी परहितमें लगा रहता है और आत्म-हितमें नहीं, वह पहले दोनों प्रकारके लोगोंमें बढ़िया है, श्रेष्ठतर है। भिक्षुओ, जो आदमी आत्म-हितमें लगा रहता है किन्तु पर-हितमें नहीं वह पहले तीनों प्रकारके लोगोंमें बढ़िया है, श्रेष्ठतर है। भिक्षुओ, जो आदमी आत्म-हित तथा पर-हित दोनोंमें लगा रहता है, वह इन चारों प्रकारके लोगोंमें अग्र है, श्रेष्ठ है, प्रमुख है, उत्तम है, प्रवर है। भिक्षुओ, जैसे गौ से दूध होता है, दूधसे दही, दहीसे मक्खन, मक्खनसे घी, घीसे शुद्ध घी---शुद्ध घी ही सबसे श्रेष्ठ कहलाता है। इस प्रकार भिक्षुओ, जो आदमी आत्म-हित तथा पर-हित दोनोंमें लगा रहता है, वह इन चारों प्रकारके लोगोंमें अग्र है, श्रेष्ठ है, प्रमुख है, उत्तम है, प्रवर है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके ? आत्म-हितमें लगा हुआ किन्तु पर-हितमें नहीं; परहितमें लगा हुआ किन्तु आत्म-हितमें नहीं; न आत्म-हितमें लगा हुआ न परहितमें; आत्म-हित तथा परहित दोनोंमें लगा हुआ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हितमें लगा होता है किन्तु, पर-हितमें नहीं। भिक्षुओ, एक आदमी अपने रागको जीतनेमें लगा होता है, किन्तु दूसरोंको रागको जीतनेकी प्रेरणा नहीं देता; अपने द्वेषको जीतनमें लगा होता है, किन्तु दूसरोंको द्वेषको जीतनेकी प्रेरणा नहीं देता; अपने मोह (= मूढ़ता) को जीतनेमें लगा होता है, किन्तु दूसरोंको मोहको जीतनेकी प्रेरणा नहीं देता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी आत्म-हितमें लगा होता है किन्तु पर-हितमें नहीं।

भिक्षुओ, आदमी कैसे पर-हितमें लगा होता है किन्तु आत्म-हितमें नहीं ? भिक्षुओ, एक आदमी अपने रागको जीतनेमें लगा नहीं होता, किन्तु दूसरोंको रागके जीतनेकी प्रेरणा देता है; अपने द्वेषको जीतनेमें लगा नहीं होता, किन्तु दूसरोंको

द्वेषके जीतनेकी प्रेरणा देता है; अपने मोहको जीतनेमें नहीं लगा होता, किन्तु दूसरोंको मोहके जीतनेकी प्रेरणा देता है—इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी पर-हित करनेमें लगा होता है, किन्तु आत्म-हितमें नहीं।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न आत्म-हितमें लगा होता है, न परहितमें? भिक्षुओ, एक आदमी न अपने रागको जीतनेमें लगा होता है, न दूसरोंको रागके जीतनेकी प्रेरणा देता है, न अपने द्वेषको जीतनेमें लगा होता है, न दूसरोंको द्वेषके जीतनेकी प्रेरणा देता है, न अपने मोहको जीतनेमें लगा होता है, न दूसरोंको मोहके जीतनेकी प्रेरणा देता है—इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी न आत्म-हितमें लगा होता है, न पर-हितमें।

भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हित तथा परहित दोनोंमें लगा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अपने रागको जीतनेमें लगा होता है, दूसरोंको रागके जीतनेकी प्रेरणा देता है; अपने द्वेषको जीतनेमें लगा होता है, दूसरोंको द्वेषके जीतनेकी प्रेरणा देता है; अपने मोहको जीतनेमें लगा होता है, दूसरोंको मोहके जीतनेकी प्रेरणा देता है—इस तरह प्रकार भिक्षुओ, आदमी आत्म-हित तथा पर-हित दोनों में लगा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरह के लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग हैं। कौनसे चार तरहके? आत्म-हितमें लगा हुआ, किन्तु परहितमें नहीं; परहितमें लगा हुआ, किन्तु आत्म-हितमें नहीं; न आत्म-हितमें लगा हुआ न परहितमें; आत्म-हित तथा परहित दोनोंमें लगा हुआ। भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हितमें लगा होता है, किन्तु परहितमें नहीं। भिक्षुओ, एक आदमी कुशल-धर्मोंको शीघ्र ग्रहणकर लेनेवाला होता है, सुने हुए धर्मोंको धारण कर सकने वाला होता है, धारण किये हुए धर्मोंके अर्थका विचार करनेवाला होता है, वह अर्थ तथा धर्मको सम्यक् प्रकार जानकर तद्नुसार आचरण करनेवाला होता है; किन्तु वह सुन्दर भाषण कर सकने वाला नहीं होता, आकर्षक भाषण देने वाला नहीं होता, वह विनम्र, स्वच्छ, निर्दोष, स्पष्ट अर्थको व्यक्त करनेवाली वाणीसे युक्त नहीं होता, वह अपने साथियोंको (मार्ग) दिखाने वाला नहीं होता, उत्साहित करनेवाला नहीं होता, बढ़ावा देनेवाला नहीं होता, प्रसन्न करनेवाला नहीं होता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी आत्म-हितमें लगा होता है किन्तु परहितमें नहीं।

भिक्षुओ, आदमी कैसे परहितमें लगा होता है किन्तु आत्म-हितमें नहीं? भिक्षुओ, एक आदमी कुशल धर्मोंको शीघ्र ग्रहण कर सकनेवाला नहीं होता, सुने हुए धर्मोंको धारण कर सकनेवाला नहीं होता, धारण किये हुए धर्मोंके अर्थका विचार कर सकनेवाला नहीं होता, वह अर्थ तथा धर्मको सम्यक् प्रकार जानकर तद्नुसार

आचरण करनेवाला नहीं होता, किन्तु वह सुन्दर भाषण कर सकने वाला होता है, आकर्षक भाषण दे सकनेवाला होता है, वह विनम्र, स्वच्छ, निर्दोष, स्पष्ट, अर्थको व्यक्त करनेवाली वाणीसे युक्त होता है, वह अपने साथियोंको (मार्ग) दिखानेवाला होता है, उत्साहित करनेवाला होता है, बढ़ावा देनेवाला होता है, प्रसन्न करनेवाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी परहितमें लगा होता है, किन्तु आत्म-हितमें नहीं।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न आत्म-हितमें लगा होता है, न परहितमें। भिक्षुओ, एक आदमी कुशल धर्मोंको शीघ्र ग्रहण कर सकने वाला नहीं होता, सुने हुए धर्मोंको धारणकर सकनेवाला नहीं होता, धारण किये हुए धर्मोंके अर्थका विचार कर सकनेवाला नहीं होता, वह अर्थ तथा धर्मको सम्यक् प्रकार जानकर तद्नुसार आचरण करनेवाला नहीं होता। वह सुन्दर भाषण कर सकनेवाला नहीं होता। आकर्षक भाषण देने वाला नहीं होता। वह विनम्र, स्वच्छ, निर्दोष, स्पष्ट, अर्थको व्यक्त करनेवाली वाणीसे युक्त नहीं होता, वह अपने साथियोंको (मार्ग) दिखाने वाला नहीं होता, उत्साहित करनेवाला नहीं होता, बढ़ावा देनेवाला नहीं होता, प्रसन्न करने वाला नहीं होता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी न आत्म-हित करनेवाला होता है, न परहित करनेवाला।

भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हित तथा परहित दोनोंमें लगा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी कुशल धर्मोंको शीघ्र ग्रहण कर लेनेवाला होता है, सुने हुए धर्मोंको धारण कर सकने वाला होता है, धारण किये हुए धर्मोंके अर्थका विचार कर सकने वाला होता है, वह अर्थ तथा धर्मको सम्यक् प्रकार जानकर तद्नुसार आचरण करनेवाला होता है। वह सुन्दर भाषण कर सकने वाला होता है, आकर्षक भाषण दे सकने वाला होता है। वह विनम्र स्वच्छ, निर्दोष, स्पष्ट, अर्थको व्यक्त करने वाली वाणीसे युक्त होता है। वह अपने साथियोंको (मार्ग) दिखाने वाला होता है, उत्साहित करनेवाला होता है, बढ़ावा देने वाला होता है, प्रसन्न करने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी आत्म-हित तथा परहित दोनोंमें लगा रहता है, । भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं। कौनसे चार तरहके? आत्म-हितमें लगा हुआ, किन्तु परहितमें नहीं; परहितमें लगा हुआ, किन्तु आत्म-हितमें नहीं; न आत्म-हितमें लगा हुआ, न परहितमें; आत्म-हित तथा परहित दोनोंमें लगा हुआ भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार तरहके? आत्म-हितमें लगा हुआ, किन्तु परहितमें नहीं; परहितमें लगा हुआ, किन्तु आत्म-हितमें नहीं; न आत्म-हितमें लगा हुआ, न परहितमें; आत्म-हित तथा परहित दोनोंमें लगा हुआ। भिक्षुओ, आदमी कैसे आत्म-हितमें लगा हुआ होता है, किन्तु पर-हितमें नहीं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसासे विरत होता है, किन्तु दूसरोंको प्राणातिपातसे विरत रहनेकी प्रेरणा नहीं करता; स्वयं चोरी करनेसे विरत रहता है किन्तु दूसरोंको चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा नहीं करता; स्वयं काम मिथ्याचारसे विरत होता है किन्तु दूसरोंको कामभोग सम्वन्धी मिथ्याचारसे विरत रहनेकी प्रेरणा नहीं करता; स्वयं झूठ बोलनेसे विरत होता है, किन्तु दूसरोंको झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा नहीं करता; स्वयं सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंका सेवन करनेसे विरत रहता है, दूसरोंको सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंसे विरत रहनेकी प्रेरणा नहीं करता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी आत्म-हित करनमें लगा होता है, किन्तु पर-हित करनेमें नहीं।

भिक्षुओ, आदमी कैसे परहित करनेमें लगा होता है, किन्तु आत्म-हितमें नहीं। भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं तो प्राणी-हिंसासे विरत नहीं होता, किन्तु दूसरोंको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं चोरीसे विरत नहीं होता, किन्तु दूसरोंको चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत नहीं होता, किन्तु दूसरोंको कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं झूठ बोलनेसे विरत नहीं होता, किन्तु दूसरोंको झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत नहीं होता, किन्तु दूसरोंको सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी परहित करनेमें लगा होता है, किन्तु आत्म-हितमें नहीं।

भिक्षुओ, किस प्रकार आदमी न आत्म-हितमें लगा होता है और न परहितमें लगा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी न तो स्वयं प्राणी-हिंसासे विरत होता है, न दूसरोंको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; न तो स्वयं चोरीसे विरत होता है, न दूसरोंको चोरीसे बिरत रहनेकी प्रेरणा करता है; न स्वयं कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत होता है, न दूसरोंको काम भोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; न स्वयं झूठ बोलनेसे विरत होता है, न दूसरोंको

झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; न स्वयं सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहता है, न दूसरोंको सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी न आत्म-हित करनेमें लगा होता है, न परहित में लगा होता है।

भिक्षुओ, आदमी किस प्रकार आत्म-हित तथा परहित दोनों करनेमें लगा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं भी प्राणी-हिंसासे विरत होता है, दूसरोंको भी प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं भी चोरीसे विरत होता है, दूसरोंको भी चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं भी कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत होता है, दूसरोंको भी काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है,; स्वयं भी झूठ बोलनेसे विरत होता है, दूसरोंको भी झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं भी सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहता है, दूसरोंको भी सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी आत्म-हित तथा परहित दोनों करनेमें लगा रहता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग विद्यमान हैं।

उस समय पोतलिय परिव्राजक जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवानका कुशल-क्षेम पूछ एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए पोतलिय परिव्राजक को भगवानने कहा "पोतलिय! संसारमें चार तरहके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार तरहके? पोतलिय! एक आदमी समय समयपर जो निन्दनीय है उसकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, किन्तु जो प्रशंसनीय है उसकी यथार्थ प्रशंसा करने वाला नहीं होता। पोतलिय! एक आदमी समय समय पर जो प्रशंसनीय है उसकी यथार्थ प्रशंसा करने वाला होता है, किन्तु जो निन्दनीय है उसकी यथार्थ निन्दा करने वाला नहीं होता। पोतलिय। एक आदमी समय समय पर न निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, न प्रशंसनीयकी यथार्थ प्रशंसा करने वाला होता है। पोतलिय! एक आदमी समय समयपर निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, प्रशंसनीय की यथार्थ प्रशंसा करने वाला होता है। पोतलिय! संसारमें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। पोतलिय! इन चार प्रकारके लोगोंमें से तुम्हें कौनसी प्रकारके लोग अधिक अच्छे, श्रेष्ठतर प्रतीत होते हैं? गौतम! इस संसारमें चार प्रकारके लोग हैं कौनसे चार प्रकारके? हे गौतम! एक आदमी समय समयपर जो निन्दानीय है उसकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, किन्तु जो प्रशंसनीय है उसकी यथार्थ प्रशंसा

करने वाला नहीं होता। हे गौतम! एक आदमी समय समयपर जो प्रशंसनीय है उसकी यथार्थ प्रशंसा करने वाला होता है, किन्तु जो निन्दनीय है उसकी यथार्थ निन्दा करने वाला नहीं होता। हे गौतम! एक आदमी समय समयपर न निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, न प्रशंसनीयकी यथार्थ प्रशंसा करने वाला होता है। हे गौतम एक आदमी समय समयपर निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, प्रशंसनीय की यथार्थ प्रशंसा करने वाला होता है। हे गौतम! संसारमें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। इन चार प्रकारके लोगोंमेंसे जो समय समयपर न निन्दनीयकी यथार्थ निन्दा करने वाला होता है, न प्रशंसनीयकी यथार्थ प्रशंसा करने वाला होता है, मुझे हे गौतम! अधिक अच्छा, श्रेष्ठतर प्रतीत होता है। यह किस लिये? क्योंकि हे गौतम! उपेक्षा करना बड़ी अच्छी बात है।"

"पोतलिय! इस संसारमें चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके? ..... पोतलिय! इस संसारमें ये चार प्रकारके लोग हैं। हे पोपलिय! इन चार प्रकारके लोगोंमें जो समयपर निन्दनीयकी निन्दा करता है, जो समय समयपर प्रशंसनीय की प्रशंसा करता है वह इन चार प्रकारके लोगोंमें अधिक अच्छा है, श्रेष्ठतर है। ऐसा क्यों? पोतलिय! यत्र तत्र कालज्ञ होना अधिक अच्छा है, श्रेष्ठतर है।

"गौतम! इस संसारमें चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके? .... हे गौतम! इस संसारमें ये चार प्रकारके लोग हैं। हे गौतम! इन चार प्रकारके लोगोंमें जो समयपर निन्दनीयकी निन्दा करता है, जो समयपर प्रशंसनीयकी प्रशंसा करता है वह इन चार प्रकारके लोगोंमें अधिक अच्छा है, श्रेष्ठतर है। ऐसा क्यों? हे गौतम! यत्र तत्र कालज्ञ होना अधिक अच्छा है, श्रेष्ठतर है।

"बहुत अच्छा है हे गौतम! बहुत अच्छा है हे गौतम! जैसे कोई उल्टेको सीधाकर दे, अथवा ढकेको उघाड़ दे, अथवा मार्ग-भ्रष्टको मार्ग दिखा दे अथवा अन्धेरेमें प्रदीप जला दे ताकि आँख वाले चीजोंको देख सकें। इस प्रकार गौतमने अनेक प्रकारसे धर्मको प्रकाशित कर दिया। यह मैं आप गौतमकी शरण ग्रहण करता हूँ, धर्मकी तथा भिक्षुसंघकी शरण ग्रहण करता हूँ। आप गौतम आजसे मेरे शरीरमें प्राण रहने तक मुझे उपासकरूपसे स्वीकार करें।

(१) वलाहक वर्ग

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथ पिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओंको निमंत्रित किया—"भिक्षुओ!" भिक्षुओंने प्रति उत्तर दिया—"भदन्त।" तब भगवान्ने यह कहा—

"भिक्षुओ, बादल चार तरहके होते हैं। कौनसे चार तरहके? गरजने वाले किन्तु बरसने वाले नहीं; बरसने वाले किन्तु गरजने वाले नहीं; न गरजने वाले, न बरसने वाले; गरजने वाले तथा बरसने वाले। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके बादल होते हैं। भिक्षुओ, इसी प्रकार संसारमें, बादलोंसे समानता रखने वाले ये चार प्रकारके लोग होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? गरजने वाले, किन्तु बरसने वाले नहीं; बरसने वाले, किन्तु गरजने वाले नहीं, न गरजने वाले, न बरसने वाले। गरजने वाले भी और बरसने वाले भी। भिक्षुओ, एक आदमी कैसे गरजने वाला होता है, किन्तु बरसने वाला नहीं? भिक्षुओ एक आदमी बोलने वाला होता है, किन्तु करने वाला नहीं। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी गरजने वाला होता है, किन्तु बरसने वाला नहीं। जैसे भिक्षुओ वह बादल गरजता है, बरसता नहीं, भिक्षुओ वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, एक आदमी कैसे बरसने वाला होता है, किन्तु गरजने वाला नहीं? भिक्षुओ, एक आदमी करने वाला होता है, किन्तु बोलने वाला नहीं। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी बरसने वाला होता है, गरजने वाला नहीं। भिक्षुओ, जैसे वह बादल बरसता है, गरजता नहीं, भिक्षुओ, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, एक आदमी कैसे न गरजने वाला होता है, न बरसने वाला। भिक्षुओ, एक, आदमी न बोलने वाला होता है, न करने वाला। इस प्रकार भिक्षओ, आदमी न गरजने वाला होता है न बरसने वाला। भिक्षुओ, जैसे वह बादल न गरजता है, न बरसता है, भिक्षुओ, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, कैसे एक आदमी गरजने वाला भी होता है, बरसने वाला भी होता है? भिक्षुओ, एक आदमी बोलने वाला भी होता है, करने वाला भी होता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी गरजने वाला भी होता है, बरसने वाला भी होता है। भिक्षुओ, जैसे वह बादल गरजने वाला भी होता है, बरसने वाला भी होता है, भिक्षुओ, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, संसारमें बादलोंसे समानता रखने वाले ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, बादल चार तरहके होते हैं। कौनसे चार तरहके? गरजने वाले किन्तु बरसने वाले नहीं, बरसने वाले किन्तु गरजने वाले नहीं; न गरजने वाले, न बरसने वाले; गरजने वाले तथा बरसने वाले। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके बादल होते हैं। भिक्षुओ, इसी प्रकार संसारमें बादलोंसे समानता रखने वाले ये चार प्रकारके लोग होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? गरजने वाले किन्तु बरसने वाले नहीं; बरसने वाले किन्तु गरजने वाले नहीं; न गरजने वाले, न बरसने वाले; गरजने वाले और बरसने वाले भी। भिक्षुओ, आदमी कैसे गरजने वाला होता है, किन्तु बरसने वाला

नहीं ? भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, जातकका, अद्भुतधर्मका, वेदल्लका। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता। यह दुःखका समुदाय है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता। यह दुःखका निरोध है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता। यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी गरजने वाला होता है, बरसने वाला नहीं। जैसे भिक्षुओ, वह बादल गरजने वाला होता है, बरसने वाला नहीं, मैं भिक्षुओ, उसीके समान इस आदमीको कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे बरसने वाला होता है, गरजने वाला नहीं ? भिक्षुओ एक आदमी धर्मका पाठ नहीं करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका, तथा वेदल्लका। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है.....यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ आदमी बरसने वाला होता है, गरजने वाला नहीं। जैसे भिक्षुओ, वह बादल बरसने वाला होता है, गरजने वाला नहीं, भिक्षुओ, मैं उसीके समान इस आदमीको कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न गरजने वाला होता है, न बरसने वाला। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ नहीं करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है.......यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी न गरजने वाला होता है, न बरसने वाला। जैसे भिक्षुओ, वह बादल न गरजने वाला होता है, न बरसने वाला, भिक्षुओ, मैं उसीके समान इस आदमीको कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे गरजने वाला और बरसने वाला होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ करता है, सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है.......यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी गरजने वाला और बरसने वाला होता है। जैसे भिक्षुओ, वह बादल गरजने वाला और बरसने वाला होता है, मैं उसीके समान इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, संसारमें ये चार आदमी बादलोंसे समानता रखते हैं।

भिक्षुओ, ये चार तरहके घड़े होते हैं। कौनसे चार तरहके? खाली किन्तु ढका हुआ; ढका हुआ, किन्तु मुँह खुला हुआ; खाली और मुँह खुला हुआ; भरा हुआ तथा ढका हुआ। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके घड़े होते हैं।

इसी प्रकार भिक्षुओ, इस संसारमें इन घड़ोंसे ही समानता रखने वाले चार तरहके आदमी हैं। कौनसे चार तरहके? खाली किन्तु ढका हुआ; भरा हुआ, किन्तु मुँह खुला; खाली और मुँह खुला हुआ, भरा हुआ और ढका हुआ। भिक्षुओ, आदमी कैसे खाली किन्तु ढका हुआ होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, (अंगोंका) सिकोड़ना फैलाना प्रियकर होता है। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता...... यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता, भिक्षुओ, ढका हुआ होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे भरा हुआ किन्तु मुँह खुला हुआ होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना फिरना प्रियकर नहीं होता है, देखना-भालना प्रियकर नहीं होता है, (अंगोंका) सिकोड़ना फैलाना प्रियकर नहीं होता है तथा संघाटी-पात्र-चीवरका धारण करना प्रियकर नहीं होता है। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है...... यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी भरा हुआ, किन्तु मुँह खुला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह घड़ा भरा हुआ, किन्तु मुँह खुला होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे खाली और मुँह खुला हुआ होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नहीं होता है, देखना-भालना प्रियकर नहीं होता है, (अंगोंका) सिकोड़ना-फैलाना प्रियकर नहीं होता है तथा संघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नहीं होता है। वह यह दुःख है यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता.... यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी खाली और मुँह खुला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह घड़ा खाली और मुँह खुला होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे भरा हुआ और ढका हुआ होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, (अंगोंका) सिकोड़ना,फैलाना प्रियकर होता है तथा संघाटी-पात्र-चीवरका धारण करना प्रियकर होता है। वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है.... यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ,

स प्रकार आदमी भरा हुआ और ढका हुआ होता है। भिक्षुओ, जैसे वह घड़ा भरा हुआ और ढका हुआ होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, इस संसारमें, इन घड़ोंसे ही समानता रखने वाले चार तरहके आदमी हैं।

भिक्षुओ, चार तरहके तालाब होते हैं। कौनसे चार तरहके? उथला किन्तु गहरा प्रतीत होने वाला; गहरा किन्तु उथला प्रतीत होने वाला; उथला और उथला प्रतीत होने वाला; गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला, भिक्षुओ, ये चार तरहके तालाब होते हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ इन तालाबोंके ही समान संसारमें चार तरहके लोग हैं। कौनसे चार तरहके? उथले किन्तु गहरे प्रतीत होने वाले; गहरे किन्तु उथले प्रतीत होने वाले; उथले और उथले प्रतीत होने वाले; गहरे और गहरे प्रतीत होने वाले। भिक्षुओ आदमी उथला किन्तु गहरा प्रतीत होने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, (अँगोंका) सिकोड़ना-फैलाना प्रियकर होता है, तथा संघाटी-पात्र-चीवरका धारण करना प्रियकर होता है। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता .... यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी उथला किन्तु गहरा प्रतीत होने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे, वह तालाब होता है उथला किन्तु गहरा प्रतीत होने वाला, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

"भिक्षुओ, आदमी गहरा किन्तु उथला प्रतीत होने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नहीं होता, देखना-भालना प्रियकर नहीं होता, अंगोंका सिकोड़ना-फैलाना प्रियकर नहीं होता तथा संघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नहीं होता। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है........यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी गहरा किन्तु उथला प्रतीत होने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे ही वह तालाब होता है गहरा, किन्तु उथला प्रतीत होने वाला—वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी उथला और उथला प्रतीत होने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नहीं होता, देखना-भालना प्रियकर नहीं होता, अंगोंका सिकोड़ना-फैलाना प्रियकर नहीं होता तथा संघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नहीं होता। वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता है.......यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता

है। इस प्रकार आदमी उथला और उथला प्रतीत होने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे ही वह तालाब होता है उथला और उथला प्रतीत होने वाला, वैसा ही मैं उस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, तथा संघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर होता है। वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है...... यह दुःख-निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार आदमी गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे ही वह तालाब है गहरा और गहरा प्रतीत होने वाला—वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, इन तालाबोंके ही समान संसारमें चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, आम चार प्रकारके होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? कच्चे किन्तु पके लगने वाले, पके किन्तु कच्चे लगने वाले, कच्चे और कच्चे लगने वाले, पके और पके लगने वाले। इसी प्रकार भिक्षुओ, संसारमें आमोंसे ही समानता रखने वाले ये चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके? कच्चे किन्तु पके लगने वाले, पके किन्तु कच्चे लगने वाले, कच्चे और कच्चे लगने वाले, पके और पके लगने वाले।

भिक्षुओ, आदमी कैसे कच्चा किन्तु पका लगने वाला होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, (अँगोंका) सिकोड़ना-फैलाना प्रियकर होता है तथा संघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर होता है। किन्तु वह यह दुःख है यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता.... यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी कच्चा किन्तु पका लगने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह आम होता है कच्चा किन्तु पका लगने वाला वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे पका किन्तु कच्चा लगने वाला होता है? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नहीं होता, देखना-भालना प्रियकर नहीं होता, (अंगोंका) सिकोड़ना-फैलाना प्रियकर नहीं होता, तथा संघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नहीं होता, किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है..... यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ-रूपसे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी पका किन्तु कच्चा लगने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह आम होता है पका किन्तु कच्चा लगने वाला, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे कच्चा और कच्चा लगनेवाला होता है ? भिक्षुओ, भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर नहीं होता, देखना-भालना प्रियकर नहीं होता, अंगोंका सुकेड़ना-फैलाना प्रियकर नहीं होता तथा संघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर नहीं होता। वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता है। .....यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता है। इस प्रकार आदमी कच्चा और कच्चा लगने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे वह आम होता है कच्चा और कच्चा लगने वाला, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे पका और पका लगने वाला होता है ? भिक्षुओ, एक आदमीका चलना-फिरना प्रियकर होता है, देखना-भालना प्रियकर होता है, अंगोंका सिकोड़ना-फैलाना प्रियकर होता है तथा संघाटी-पात्र-चीवर धारण करना प्रियकर होता है। वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है .... यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार आदमी पका और पका लगने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे ही वह आम होता है पका और पका लगने वाला, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, संसारमें आमोंसे ही समानता रखने वाले ये चार प्रकारके लोग हैं।

भिक्षुओ, चार प्रकारके चूहे होते हैं। कौनसे चार प्रकारके ? बिल खोदने वाला, किन्तु उसमें रहने वाला नहीं, रहने वाला किन्तु बिल खोदने वाला नहीं, न बिल खोदने वाला, न रहने वाला; खोदने वाला और रहने वाला। भिक्षुओ, ये चार तरहके चूहे होते हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ, संसारमें इन चूहोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके ? (बिल) खोदने वाले, किन्तु रहने वाले नहीं; रहने वाले (बिल) खोदने वाले नहीं; न खोदने वाले और न रहने वाले; खोदने वाले तथा रहने वाले।

भिक्षुओ, आदमी कैसे बिल खोदने वाला होता है, किन्तु रहने वाला नहीं। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत धर्मका तथा वेदल्लका। किन्तु वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता .... यह दुःख निरोध गामिनी प्रतपदा है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी '(ब्रिल) खोदने वाला होता है, किन्तु रहने वाला नहीं। भिक्षुओ, जैसा वह चूहा होता है बिल खोदने वाला, किन्तु उसमें रहने वाला नहीं, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

आदमी कैसे रहने वाला होता है, किन्तु बिल खोदने वाला नहीं। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ नहीं करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका, तथा वेदल्लका। किन्तु वह यह दु:ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है ..... यह दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूप,से जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी रहने वाला होता है, किन्तु (बिल) खोदने वाला नहीं। भिक्षुओ, जैसा वह चूहा होता है, रहने वाला किन्तु (बिल) खोदने वाला नहीं, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न (बिल) खोदने वाला होता है, न रहने वाला। भिक्षुओ, एक आदमी धर्मका पाठ नहीं करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह यह दु:ख है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता है ......यह दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे नहीं जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी न (बिल) खोदने वाला होता है, न रहने वाला। भिक्षुओ, जैसा वह चूहा होता है, न खोदने वाला और न रहनेवाला, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे (बिल) खोदने वाला और रहने वाला होता है। भिक्षओ, एक आदमी धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका, तथा वेदल्लका। वह यह दु:ख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है ...... यह दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी बिल खोदने वाला और रहने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसा वह, चूहा होता है (बिल) खोदने वाला और रहने वाला, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, संसारमें इन चूहोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, चार प्रकारके वृषभ होते हैं। कौनसे चार प्रकारके ? अपनी गौओंके प्रति चण्ड, किन्तु पराई गौओंके प्रति नहीं; पराई गौओंके प्रति चण्ड, किन्तु अपनी गौओंके प्रति नहीं; अपनी और पराई गौओंके प्रति चण्ड; न अपनी गौओंके प्रति चण्ड और न पराई गौओंके प्रति चण्ड। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके वृषभ होते हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ, इस संसारमें इन वृषभोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके ? अपनी गौओंके प्रति चण्ड, किन्तु पराई गौओंके प्रति नहीं; पराई गौओंके प्रति चण्ड, किन्तु अपनी गौओंके प्रति नहीं; अपनी और पराई गौओंके प्रति चण्ड; न अपनी गौओंके प्रति चण्ड और न

पराई गौओंके प्रति चण्ड। भिक्षुओ, आदमी कैसे अपनी गौओंके प्रति चण्ड होता है, किन्तु पराई गौओंके प्रति नहीं? भिक्षुओ, एक आदमी अपनी परिषद्को ही भयभीत करने वाला होता है, पराई परिषद्को नहीं। इस प्रकार भिक्षुओं, आदमी अपनी गौओंके प्रति चण्ड होता है, किन्तु पराई गौओंके प्रति नहीं? जैसे भिक्षुओ वह वृषभ होता है अपनी ही गौओंके प्रति चण्ड, किन्तु पराई गौओंके प्रति नहीं, वैसा ही भिक्षुओं, मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे पराई गौओंके प्रति चण्ड होता है, किन्तु अपनी गौओंके प्रति नहीं? भिक्षुओ, एक आदमी पराई परिषद्को भयभीत करने वाला होता है, किन्तु अपनी परिषद्को नहीं। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी पराई गौओंके प्रति चण्ड होता है, किन्तु अपनी गौओंके प्रति नहीं। जैसे भिक्षुओ वह वृषभ होता है पराई गौओंके प्रति चण्ड, किन्तु अपनी गौओंके प्रति नहीं, वैसा ही भिक्षुओं, मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे अपनी गौओंके प्रति तथा पराई गौओंके प्रति चण्ड होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अपनी परिषद्को भयभीत करने वाला होता है, पराई परिषद्को भयभीत करने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अपनी गौओंके प्रति चण्ड होता है, पराई गौओंके प्रति चण्ड होता है। जैसे भिक्षुओ, वह वृषभ होता है, अपनी गौओंके प्रति चण्ड होता है, पराई गौओंके प्रति चण्ड होता है, वैसा ही भिक्षुओ, मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न अपनी गौओंके प्रति तथा न पराई गौओंके प्रति चण्ड होता है? भिक्षुओ, एक आदमी न अपनी परिषद्को भयभीत करता है, न पराई परिषदको भयभीत करता है। इस प्रकार भिक्षओ, आदमी न अपनी गौओंके प्रति चण्ड होता है, न पराई गौओंके प्रति चण्ड होता है। जैसे भिक्षुओ, वह वृषभ होता है न अपनी गौओंके प्रति चण्ड होता है न पराई गौओंके प्रति चण्ड होता है, वैसा ही भिक्षुओ, मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, इस संसारमें इन वृषभोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, चार प्रकारके वृक्ष हैं। कौनसे चार प्रकारके? निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष, सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष, निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष; सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष। इसी प्रकार भिक्षुओ, इस संसारमें वृक्षोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके? निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष, सारवान् वृक्षोंसे

घिरा हुआ निस्सार वृक्ष, निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष, सारवान वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष। भिक्षुओ आदमी कैसे निसार वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं दुराचारी होता है, पापी होता है, उसकी परिषद् भी वैसी ही होती है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है। भिक्षुओ, जैसे वह निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं दुराचारी होता है, पापी होता है, किन्तु उसकी परिषद उससे उलटी होती है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है। भिक्षुओ, जैसे वह सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ निस्सार वृक्ष होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है। भिक्षुओ एक आदमी स्वयं सदाचारी होता है, कल्याणमार्गी किन्तु उसकी परिषद् उससे उलटी होती है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है। भिक्षुओ, जैसे वह निस्सार वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है। भिक्षुओ एक आदमी स्वयं सदाचारी होता है, कल्याणमार्गी; उसकी परिषद भी वैसी ही होती है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है। भिक्षुओ, जैसे वह सारवान् वृक्षोंसे घिरा हुआ सारवान् वृक्ष होता है, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, इस संसारमें इन वृक्षोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग हैं।

भिक्षुओ, चार प्रकारके सर्प हैं, विषैला किन्तु घोर विषैला नहीं, घोर विषैला, विषैला नहीं; विषैला और घोर विषैला; न विषैला और न घोर विषैला। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके सर्प हैं। इस प्रकार भिक्षुओ इस संसारमें इस चार प्रकारके सर्पोंसे ही समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके? विषैला, किन्तु घोर विषैला नहीं; घोर विषैला, विषैला नहीं; विषैला और घोर विषैला; न विषैला और न घोर विषैला।

भिक्षुओ, आदमी कैसे विषैला, किन्तु घोर विषैला नहीं होता? भिक्षुओ, एक आदमी प्रायः क्रोधित होता रहता है किन्तु उसका क्रोध अधिक देर तक नहीं

ठहरता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी विषैला किन्तु घोर विषैला नहीं होता। जैसे भिक्षुओ, वह सर्प होता है विषैला, किन्तु घोर विषैला नहीं, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे घोर विषैला किन्तु विषैला नहीं होता? भिक्षुओ, एक आदमी प्राय: क्रोधित नहीं होता, किन्तु उसका क्रोध देर तक रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी घोर विषैला, किन्तु विषैला नहीं होता। जैसे भिक्षुओ, वह सर्प होता है घोर विषैला, किन्तु विषैला नहीं, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे विषला और घोर विषला दोनों होता है। भिक्षुओ, एक आदमी प्राय: क्रोधित होता है, साथ ही उसका क्रोध देर तक रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी विषैला और घोर विषैला होता है। जैसे भिक्षुओ, वह सर्प होता है विषैला और घोर-विषैला, वैसा ही मैं इस आदमीके बारेमें कहता हूँ।

भिक्षुओ, आदमी कैसे न विषैला और न घोर विषैला होता है? भिक्षुओ, एक आदमी न प्राय: क्रोधित होता है और न उसका क्रोध देर तक रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी न विषैला होता है और न घोर विषैला होता है। जैसे भिक्षुओ वह सर्प होता है न विषैला और न घोर-विषैला; वैसा ही मैं उस आदमीके बारेमें, कहता हूँ। भिक्षुओ, इस संसारमें सांपोंसे समानता रखने वाले चार प्रकारके लोग हैं।

(२) केसी वर्ग

उस समय अश्वोंका दमन करनेवाले केसी नामका सारथि जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुचा। पहुँचकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठा। एक ओर हुए अश्वोंका दमन करने वाले केसी नामके सारथीको भगवानने यह कहा "हे केसी! तू प्रसिद्ध अश्व-दमन-सारथि है। हे केसी तू अश्वोंको कैसे साधता है?" "भन्ते! मैं अश्वोंको कोमलतासे भी साधता हूँ कठोरतासे भी साधता हूँ, कोमलता-कठोरतासे भी साधता हूँ।"

"हे केसी! यदि कोई घोड़ा कोमलतासे भी काबूमें नहीं आता, कठोरतासे भी काबूमें नहीं आता, कोमलता-कठोरतासे भी काबूमें नहीं आता, तो तुम उस घोड़ेका क्या करते हो?"

"भन्ते! यदि कोई घोड़ा कोमलतासे भी काबूमें नहीं आता, कठोरतासे भी काबूमें नहीं आता, कोमलता-कठोरतासे भी काबूमें नहीं आता, तो मैं उस घोड़ेको मारता हूँ। यह किस लिये? यह इसी लिये कि मेरी आचार्य-परम्पराकी

बदनामी न हो। लेकिन भन्ते भगवान् आप तो पुरुषोंका दमन करने वाले सारथी हैं। आप पुरुषोंका दमन कैसे करते हैं!"

"केसी! मैं कोमलतासे भी पुरुषोंका दमन करता हूँ, कठोरतासे भी पुरुषोंका दमन करता हूँ, कोमलता-कठोरतासे भी पुरुषोंका दमन करता हूँ। केसी! कोमलतासे दमन करने का मतलब है कि मैं उन्हें बताता हूँ कि यह शरीर सम्बन्धी सच्चरित्रता है, यह शारीरिक सच्चरित्रता का शुभ परिणाम है, यह वाणीकी सच्चरित्रता है, यह वाणीकी सच्चरित्रता का शुभ परिणाम है, यह मनकी सच्चरित्रता है, यह मनकी सच्चरित्रताका शुभ परिणाम है, ये देव (योनि) है, यह मनुष्य (-योनि) है; और हे केसी! कठोरतासे दमन करनेका मतलब है कि मैं उन्हें बताता हूँ कि यह शारीरिक दुश्चरित्रता है, यह शारीरिक दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह वाणीकी दुश्चरित्रता है, यह वाणीकी दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह मनकी दुश्चरित्रता है, यह मनकी दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह नरक है, यह तिरश्चीन (योनि) है, यह प्रेत योनि है। और हे केसी! कोमलता-कठोरतासे दमन करनेका मतलब है कि मैं उन्हें बताता हूँ कि यह शारीरिक सच्चरित्रता है, यह शारीरिक सच्चरित्रताका शुभपरिणाम है; यह शारीरिक दुश्चरित्रता है, यह शारीरिक दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह वाणी की सच्चिरत्रता है, यह वाणीकी सच्चरित्रताका शुभपरिणाम है, यह वाणीकी दुश्चरित्रता है, यह वाणीकी दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह मनकी सच्चरित्रता है, यह मनकी सच्चरित्रताका शुभ परिणाम है, यह मनकी दुश्चरित्रता है, यह मनकी दुश्चरित्रताका दुष्परिणाम है, यह देव (योनि) है, यह मनुष्य (योनि) है, यह नरक (योनि) है, यह तिरश्चीन (योनि) है, यह प्रेत (योनि) है।"

"भन्ते! यदि कोई आदमी न कोमलतासे सुधरता है, न कठोरतासे सुधरता है, न कोमलता-कठोरतासे सुधरता है तो भगवान उस आदमीका क्या करते हैं?"

"केसी! यदि कोई आदमी कोमलतासे भी नहीं सुधरता, कठोरतासे भी नहीं सुधरता, कोमलता कठोरतासे भी नहीं सुधरता तो हे केसी! मैं उस आदमीको मारता हूँ।"

"भगवान्! आपके लिये प्राणी -हिंसा करना योग्य नहीं हैं और आप कहते हैं कि मैं ऐसे आदमीको मारता हूँ?"

"केसी! यह सच है कि प्राणी-हिंसा करना तथागत के अयोग्य है, किन्तु हे केसी! जो आदमी न कोमलतासे सुधरता है, न कठोरतासे सुधरता है, न कोमलता-कठोरतासे सुधरता है, उसे तथागत इस योग्य नहीं उ समझते कि उसको उपदेश दिया

जाय, उसका अनुशासन किया जाय और जो उसके विज्ञ साथी हैं वे भी उसे इस योग्य नहीं समझते कि उसको उपदेश दिया जाय, उसका अनुसाशान किया जाय! केसी! आर्य-विनय (=बुद्धधर्म) के हिसाबसे यह आदमीका बध करना ही है कि न तो तथागत उस इस योग्य समझें कि उसे उपदेश दिया जाय और उसका अनुशासन किया जाय और न उसके विज्ञ साथी ही उसे इस योग्य समझें कि उसको उपदेश दिया जाय और उसका अनुशासन किया जाय।"

"भन्ते! यह उसका सु-बध ही है कि न तथागत ही उसे इस योग्य समझते है कि उसे उपदेश दिया जाय और उसका अनुशासन किया जाय और न उसके विज्ञ साथी ही उसे इस योग्य समझते हैं कि उसे उपदेश दिया जाय और उसका अनुशासन किया जाय बहुत सुन्दर है भन्ते! यह बहुत सुन्दर है. . . भन्ते भगवान् मुझे आजसे प्राण रहने तक अपना शरणागत उपासक समझें।"

"भिक्षुओ, राजाके जिस अच्छे घोड़ेमें ये चार बातें होती हैं वह राजाके योग्य होता है, राजा का योग्य होता है, वह राजाका एक अंग ही गिना जाता है। कौनसी चार बातें? ऋजु होना, वेग, क्षमा, शुचिता। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त अच्छा घोड़ा राजाके योग्य होता है, राजाका योग्य होता है, वह राजाका एक अंग ही गिना जाता है।

इसी प्रकार चार बातोंसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है . . . लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौन सी चार बातोंसे युक्त? ऋजुता, गति, क्षमा तथा शुचिता। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है. . . . लोगोंका अनुपम पुण्य क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके अच्छे घोड़े विद्यमान् हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक अच्छा घोड़ा चाबुककी छाया देखकर ही संभल जाता है, भागने लगता है, सोचता है कि क्या सारथी आज मुझे मारेगा, मैं इस से बचनेके लिये कुछ करूँ? भिक्षुओ, ऐसा भी एक अच्छा घोड़ा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह प्रथम अच्छा घोड़ा होता है।

भिक्षुओ, एक दूसरा अच्छा घोड़ा चाबुककी छाया ही देखकर नहीं संभलता है, किन्तु बालोंकी जड़ोंमें बींधे जानेसे संभल जाता है, भागने लगता है, सोचता है कि क्या सारथी आज मुझे मारेगा, मैं इससे बचनेके लिये कुछ करूँ? भिक्षुओ, ऐसा भी एक अच्छा घोड़ा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह दूसरा अच्छा घोड़ा होता है।

भिक्षुओ, एक तीसरा अच्छा घोड़ा चाबुककी छाया ही देखकर नहीं संभलता है, न बालोंकी जड़ोंमें बींधे जानेसे ही संभलता है, वह चमड़ीके बींधे जानेसे संभलता है, भागने लगता है, सोचता है कि क्या सारथी आज मुझे मारेगा, मैं इससे बचनेके लिये कुछ करूँ? भिक्षुओ, ऐसा भी एक अच्छा घोड़ा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह तीसरा अच्छा घोड़ा होता है।

भिक्षुओ, एक चौथा अच्छा घोड़ा, चाबुककी छाया ही देखकर संभलता है, न बालोंकी जड़ोंमें बींधे जानेसे ही संभलता है, न चमड़ीके बींधे जानेसे ही संभलता है, वह हड्डीके बींधे जानेसे संभलता है, भागने लगता है, सोचता है कि क्या सारथी आज मुझे मारेगा, मैं इससे बचनेके लिये कुछ करूँ? भिक्षुओ, ऐसा भी एक अच्छा घोड़ा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह चौथा अच्छा घोड़ा होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके अच्छे घोड़े विद्यमान हैं।

इसी प्रकार भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके अच्छे लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक भला आदमी सुनता है कि अमुक गाँवमें का नियम में एक स्त्री या पुरुष दुखित है या मर गया है। उससे उसे संवेग प्राप्त होता है, वैराग्य प्राप्त होता है, वैराग्य-युक्त चित्त वाला हो वह अच्छी प्रकार प्रयास करता है, प्रयत्न करनेसे वह (चित्त-) कायसे परम् सत्यका साक्षात्कार करता है, प्रज्ञासे बींध कर देखता है। जैसे भिक्षुओ, वह अच्छा घोड़ा चाबुककी छाया देखकर संभल जाता है, वैसा ही भिक्षुओ, मैं इस भद्र आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह पहला भला आदमी होता है।

फिर भिक्षुओ, एक भला आदमी ऐसा होता है वह यह सुनता नहीं कि अमुक गाँव या निगममें अमुक स्त्री या पुरुष दुखी है अथवा मर गया है; बल्कि वह स्वयं देखता है कि किसी स्त्री या पुरुषको दुखी या मरा हुआ। उससे उसे संवेग प्राप्त होता है, वैराग्य प्राप्त होता है, वैराग्य-युक्त चित्तवाला हो वह अच्छी प्रकार प्रयास करता है, प्रयत्न करनेसे वह (चित्त-) कायसे परम सत्यका साक्षात्कार करता है, प्रज्ञासे बींधकर देखता है। जैसे भिक्षुओ वह अच्छा घोड़ा जो चाबुककी छाया देखकर तो नहीं संभलता है, किन्तु बालोंकी जड़ोंमें बींधे जानेसे संभल जाता है। वैसा ही भिक्षुओ, मैं इस भद्र आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह दूसरा भला आदमी होता है।

फिर भिक्षुओ, एक भला आदमी ऐसा होता है, वह न यह सुनता है कि अमुक-गाँव या निगममें अमुक स्त्री या पुरुष दुखी है अथवा मर गया है, न वह यह देखता है किसी स्त्री या पुरुषको दुखी अथवा मरा हुआ। उसका रिश्तेदार वा रक्तसम्बन्धी दुखी होता है वा मर गया होता है। वह उससे संवेगको प्राप्त होता है, वैराग्यको प्राप्त होता है, वैराग्य-युक्त चित्त वाला हो वह अच्छी प्रकार प्रयास करता हो, प्रयत्न करनेसे वह (चित्त–) कायसे परम सत्य का साक्षात्कार करता है, प्रज्ञासे बींधकर देखता है। जैसे भिक्षुओ, वह अच्छा घोड़ा जो न तो चाबुककी छाया देखकर संभलता है, न बालोंकी जड़ोंमें बींधे जानेसे संभलता है, किन्तु चमड़ी बींधे जानेसे संभल जाता है। वैसा ही भिक्षुओ, मैं इस भद्र आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह तीसरा भला आदमी होता है।

फिर भिक्षुओ एक भला आदमी ऐसा होता है वह न यह सुनता है कि अमुक गाँव या निगममें अमुक स्त्री या पुरुष दुखी है अथवा मर गया है, न वह यह स्वयं देखता है किसी स्त्री या पुरुषको स्वयं मरा हुआ। न उसका कोई रिश्तेदार वा रक्त-सम्बन्धी मरा होता है, बल्कि वह स्वयं दुःखद तीव्र, चमकने वाली, कटु, अरुचिकर, प्रतिकूल प्राण ले लेने वाली जैसी शारीरिक वेदनाओंका अनुभव करता है। वह उससे संवेगको प्राप्त होता है, वैराग्य-युक्त चित्त वाला हो वह अच्छी प्रकार प्रयास करता है, प्रयत्न करनेसे वह (चित्त) काय से परम सत्यका साक्षात्कार करता है, प्रज्ञासे बींधकर देखता है। जैसे भिक्षुओ, वह अच्छा घोड़ा, जो न तो चाबुककी छाया देखकर संभलता है, न बालोंकी जड़ोंमें बींधे जानेसे संभलता है, न चमड़ी बींधे जानेसे संभलता है, बल्कि हड्डी बींधें जानेसे संभलता है। वैसा ही भिक्षुओ, मैं इस भद्र आदमीके बारेमें कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामें यह चौथा भला आदमी होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके भले आदमी विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये चार बातें होती हैं वह राजाके योग्य होता है, राजाका योग्य होता है, वह राजाका एक अंग ही गिना जाता है। कौनसी चार बातें? भिक्षुओ, राजाका हाथी श्रोता होता है, मारने वाला होता है, सहन करने वाला होता है, तथा जाने वाला होता है।

भिक्षुओ, राजाका हाथी श्रोता कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाके हाथीको उसका हाथीवान जो कुछ भी करनेको कहता है, चाहे उसने वह बात पहले भी की हो और चाहे न की हो, वह उसे ध्यान देकर मनसे सारी बातको चित्तमें स्थान दे, कान देकर सुनता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका हाथी श्रोता होता है।

भिक्षुओ, राजाका हाथी मारने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, संग्राममें जमा हुआ राजाका हाथी, हाथीको भी मारता है, हाथीवानको भी मारता है, घोड़ेको भी मारता है, घुड़सवारको भी मारता है, रथको भी नष्ट करता है, सारथीको भी मारता है, तथा पैदल-सेनाको भी मारता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका हाथी मारने वाला होता है।

भिक्षुओ, राजाका हाथी सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, संग्राममें गया हुआ राजाका हाथी शक्तियोंके प्रहारको सहन करने वाला होता है, तीरोंके प्रहारको, तलवारोंके प्रहारको, कुल्हाड़ियोंके प्रहारको सहन करने वाला होता है। वह ढोल, मृदंग, शंख, डौण्डी आदिके शब्दोंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका हाथी सहन करने वाला होता है।

भिक्षुओ, राजाका हाथी जाने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ राजाके हाथीको हथवान् जिस किसी भी दिशामें भेजता है, चाहे वह उस दिशामें पहले गया हो और चाहे न गया हो, वह शीघ्र ही उधर जाने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका हाथी जाने वाला होता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, राजके जिस हाथीमें ये चार बातें होती हैं, राजाका वह हाथी राजाके योग्य होता है, राजाका योग्य होता है, वह राजाका एक अंग ही गिना जाता है।

उसी प्रकार भिक्षुओ, जो भिक्षु इन चार बातोंसे युक्त होता है, वह आतिथ्य करने योग्य होता है. . . . . . लोगोंके लिये पुण्यक्षेत्र होता है। कौनसी चार बातोंसे? भिक्षुओ, भिक्षु श्रोता होता है, मारने वाला होता है, सहने वाला होता है तथा जाने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु श्रोता कैसे होता है? भिक्षुओ, वह भिक्षु जब तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश किया जाता है उस समय वह उसे ध्यान देकर, मनसे सारी बातको चित्तमें स्थान दे, कान देकर सुनता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु श्रोता होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु मारनेवाला कैसे होता है? भिक्षुओ, वह भिक्षु उत्पन्न हुए काम-वितर्क को सहन नहीं करता है, त्याग देता है, हटा देता है, दूर कर देता है,

नष्ट कर देता है, उत्पन्न हुए व्यापाद (=द्वेष) वितर्कको. . . . उत्पन्न हुए विहिंसा वितर्कको. . . . उत्पन्न पापी अकुशल संकल्पोंको सहन नहीं करता है, त्याग देता है, हरा देता है, दूरकर देता है, नष्ट कर देता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु, मारने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु ठण्डका, गरमीका, भूखका, प्यासका सहन करने वाला होता है। वह डंक मारने वाले, मच्छर हवा, धूप तथा रेंगने वाले जानवरोंके सम्पर्कको सहन करने वाला होता है। वह दुरुक्त दुर्वचनोंको सहन करने वाला होता है। वह ऐसी शारीरिक वेदनाओंका—जो दुःख हों, जो तीव्र हों, जो तीक्ष्ण हों, जो कड़वी हों, जो प्रतिकूल हों, जो अच्छी न लगती हों, जो प्राण हर लेने वाली हों—सहन करने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु सहन करने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु जाने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, जिस दिशामें भिक्षु पहले नहीं गया है उस दीर्घ मार्गसे, जो यह सब संस्कारोंका शमन है, सब उपाधियोंका त्याग है, तृष्णाका क्षय है, वैराग्य है, निरोध है, निर्वाण है, उस तक शीघ्र ही जाने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु जाने वाला होता है। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे उक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है. . . .लोगोंके लिये पुण्य क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, ये चार अवस्थायें होती हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, एक ऐसी अवस्था होती है, जब किसी बातका करना अच्छा भी नहीं लगता और उसके करनेसे अनर्थ भी होता है; एक ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा नहीं लगता है किन्तु उसके करनेसे अर्थ (हित) होता है; एक ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा लगता है किन्तु उसके करनेसे अनर्थ (अहित) होता है; एक ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा लगता है और उसके करनेसे हित होता है।

भिक्षुओ, जब ऐसी अवस्था हो, जब किसी बातका करना अच्छा भी न लगता हो और उसके करनेसे अनर्थ भी होता हो तब ऐसी बात दोनों कारणोंसे न करने योग्य मानी जाती है, क्योंकि उसका करना अच्छा नहीं लगता है, इस कारणसे भी वह अकरणीय मानी जाती है और क्योंकि उसके करनेसे अनर्थ होता है इस कारणसे भी वह अकरणीय मानी जाती है। भिक्षुओ, ऐसी बात दोनों कारणोंसे न करने योग्य मानी जाती है।

भिक्षुओ, जब ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा नहीं लगता है, किन्तु उसके करनेसे अर्थ (= हित) होता है, तो ऐसी बातके करने न करनेमें ही मूर्ख तथा पण्डितकी परीक्षा होती है उसकी सामर्थ्यकी, उसके वीर्यकी, उसके पराक्रमकी। भिक्षुओ, जो मूर्ख होता है वह यह विचार नहीं करता कि यद्यपि इस बातका करना अच्छा नहीं लगता तो भी इसके करनेसे अर्थ (= हित) होता है। वह वह बात नहीं करता। उसका उस बातको न करना अनर्थ (= अहित) के लिये होता है किन्तु पण्डित सोचता है कि यद्यपि इस बातका करना अच्छा नहीं लगता तो भी इसके करनेसे अर्थ (= हित) होता है। वह वह बात करता है। उसका उस बातको करना अर्थ (= हित) के लिये होता है।

भिक्षुओ, जब ऐसी अवस्था होती है जब किसी बातका करना अच्छा लगता है किन्तु उसके करनेसे अनर्थ (= अहित) होता है, तो ऐसी बातके करने न करनेमें ही मूर्ख तथा पण्डितकी परीक्षा होती है, उसके सामर्थ्यकी, उसके वीर्यकी उसके पराक्रमोंकी। भिक्षुओ, जो मूर्ख होता है वह यह विचार नहीं करता कि यद्यपि इस बातका करना अच्छा लगता है तो भी इसके करनेसे अनर्थ (= अहित) होता है। वह वह बात करता है। उसका उस बातको करना अनर्थ (= अहित) के लिये होता है। किन्तु पण्डित सोचता है कि यद्यपि इस बातका करना अच्छा लगता है, तो भी इसके करनेसे अनर्थ (= अहित) होता है। वह वह बात नहीं करता है। उसका उस बातको न करना अर्थ (= हित) के लिये होता है।

भिक्षुओ, जब ऐसी अवस्था हो, जब किसी बातका करना अच्छा भी लगता हो और उसके करनेसे अर्थ (= हित) भी होता हो तब ऐसी बात दोनों कारणोंसे करने योग्य मानी जाती है, क्योंकि उसका करना अच्छा लगता है, इस कारणसे भी वह करणीय मानी जाती है और क्योंकि उसके करनेसे अर्थ (= हित) होता है, इस कारण से भी वह करणीय मानी जाती है। भिक्षुओ, ऐसी बात दोनों कारणोंसे करने योग्य मानी जाती है। भिक्षुओ, ये चार अवस्थायें हैं।

भिक्षुओ, चार विषयोंमें अप्रमाद करना चाहिये ? कौनसे चार विषयोंमें ? भिक्षुओ शारीरिक दुष्चरित्रताको छोड़ना चाहिये, शारीरिक सुचरित्रताका अभ्यास करना चाहिये, इस विषयमें प्रमाद नहीं करना चाहिये; भिक्षुओ वाणीकी दुश्चरित्रताको छोड़ना चाहिये, वाणीकी सुचरित्रताका अभ्यास करना चाहिये, इस विषयमें प्रमाद नहीं करना चाहिये; भिक्षुओ, मनकी दुश्चरित्रताको छोड़ना

चाहिये, मनकी सुचरित्रताका अभ्यास करना चाहिये, इस विषयमें प्रमाद नहीं करना चाहिये; भिक्षुओ, मिथ्या-दृष्टिको छोड़ना चाहिये, सम्यक्‌दृष्टिका अभ्यास करना चाहिये, इस विषयमें प्रमाद नहीं करना चाहिये।

भिक्षुओ, जब भिक्षुकी शारीरिक दुश्चरित्रता परित्यक्त रहती है, उसे शारीरिक सच्चरित्रताका अभ्यास रहता है, वाणीकी दुश्चरित्रता परित्यक्त रहती है, उसे वाणीकी सच्चरित्रताका अभ्यास रहता है; मनकी दुश्चरित्रता परित्यक्त रहती है, उसे मनकी सच्चरित्रताका अभ्यास रहता है; मिथ्या-दृष्टि परित्यक्त रहती है, सम्यक्-दृष्टिका अभ्यास रहता है, वह पारलौकिक (?) मरणसे नहीं घबराता।

भिक्षुओ, आत्म-हित चाहने वालेको चार विषयोंमें अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृतिकी रक्षा करनी चाहिये। किन चार विषयोंमें? रागके विषयमें मेरा चित्त अनुरक्त न हो—इस विषयमें आत्महित चाहने वालेको अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृति की रक्षा करनी चाहिये। द्वेषके विषयमें मेरा चित्त दुष्ट (=क्रोधित) न हो—इस विषयमें आत्म-हित चाहने वालेको अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृतिकी रक्षा करनी चाहिये। मोहके विषयोंमें मेरा चित्त मूढ़ न हो—इस विषयमें आत्महित चाहने वालेको अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृतिकी रक्षा करनी चाहिये। मदके विषयोंमें मेरा चित्त प्रमादी न हो—इस विषयमें आत्म-हित चाहने वालेको अप्रमादकी, चित्तकी, स्मृतिकी रक्षा करनी चाहिये।

भिक्षुओ, क्योंकि जब वीत-राग हो जानेके कारण, रागके विषयोंमें कोई भिक्षु अनुरक्त नहीं रहता, वीत-द्वेष हो जानेके कारण द्वेषके विषयोंमें कोई भिक्षु द्वेषी नहीं रहता, वीत-मोह हो जानेके कारण मोहके विषयमें कोई मूढ़ नहीं रहता, वीत-मद हो जानेके कारण मदके विषयमें कोई प्रमादी नहीं रहता तो वह न डरता है, न काँपता है, न अस्थिर होता है, न त्रासको प्राप्त होता है और न किसी भी अपने या पराये श्रमणको उसे कुछ कहनेकी जरूरत रहती है।

भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुल पुत्रके लिये ये चार स्थान ऐसे हैं जो दर्शनीय हैं और जिनके दर्शनसे संवेग उत्पन्न होता है। कौनसे चार? यहाँ तथागत उत्पन्न हुए—भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुल पुत्रके लिये यह दर्शनीय स्थान है और इसके दर्शनसे संवेग उत्पन्न होता है। यहाँ तथागतने अनुपम सम्यक् सम्बोधिको प्राप्त किया—भिक्षुओ श्रद्धावान् कुल पुत्रके लिये यह दर्शनीय स्थान है और इसके दर्शनसे संवेग उत्पन्न होता है। यहाँ तथागतने अनुपम धर्मचक्र प्रवर्तित किया—भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुल पुत्रके लिये यह दर्शनीय स्थान है और इसके दर्शनसे संवेग उत्पन्न होता है। यहाँ तथागतने

निरुपाधिशेष निर्वाण-धातुसे परिनिर्वाण प्राप्त किया—भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुलपुत्रके लिये यह दर्शनीय स्थान है और इसके दर्शनसे संवेग उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुलपुत्रके लिये ये चार स्थान ऐसे हैं जो दर्शनीय हैं और जिनके दर्शनसे संवेग उत्पन्न होता है।

भिक्षुओ, ये चार भय हैं। कौनसे चार? जन्म-भय, जरा-भय, रोग-भय तथा मृत्युका भय। भिक्षुओ, ये चार भय हैं।

भिक्षुओ, ये चार भय हैं। कौनसे चार? अग्निसे भय, जलसे भय, राज्यसे भय तथा चोरसे भय। भिक्षुओ, ये चार भय हैं।

(३) भय-वर्ग

भिक्षुओ, ये चार भय हैं। कौनसे चार भय? आत्म-निन्दाका भय, दूसरों द्वारा निन्दित होनेका भय, दण्ड मिलनेका भय, दुर्गतिका भय। भिक्षुओ, आत्म-निन्दाका भय कौनसा होता है? भिक्षुओ, कोई सोचता है यदि मैं शरीरसे दुश्चरित्रता करूँगा, वाणीसे दुश्चरित्रता करूँगा, मनसे दुश्चरित्रता करूँगा तो हो सकता है कि मेरा अपना-आप शील की दृष्टिसे मेरी गर्हा करे। वह आत्म-निन्दाके भयसे भयभीत होकर शारीरिक दुश्चरित्रता छोड़, शारीरिक सुचरित्रताका अभ्यास करता है, वाणीकी दुश्चरित्रता छोड़, वाणीकी सच्चरित्रताका अभ्यास करता है, मनकी दुश्चरित्रता छोड़, मनकी सच्चरित्रताका अभ्यास करता है, वह अपने आपको परिशुद्ध बनाये रखता है—भिक्षुओ, यह आत्म-निन्दाका भय कहलाता है।

भिक्षुओ, दूसरों द्वारा निन्दित होनेका भय कौनसा होता है? भिक्षुओ, कोई सोचता है यदि मैं शरीरसे दुश्चरित्रता करूँगा, वाणीसे दुश्चरित्रता करूँगा, मनसे दुश्चरित्रता करूँगा तो हो सकता है कि दूसरे शीलकी दृष्टिसे मेरी गर्हा करें। वह परनिन्दाके भयसे भयभीत होकर शारीरिक दुश्चरित्रता छोड़ शारीरिक सुचरित्रताका अभ्यास करता है, वाणीकी दुश्चरित्रता छोड़ वाणीकी सच्चरित्रताका अभ्यास करता है, मनकी दुश्चरित्रता छोड़, मनकी सच्चरित्रताका अभ्यास करता है, वह अपने भावको परिशुद्ध बनाये रखता है—भिक्षुओ, यह परनिन्दाका भय कहलाता है।

भिक्षुओ, दण्ड-भय कौनसा होता है? भिक्षुओ, कोई देखता है कि जो चोर होता है, जो अपराधी होता है उसे राजाके लोग नाना प्रकारके दण्डोंसे दण्डित करते हैं—चाबुकसे भी पीटते हैं, बेंतसे भी पीटते हैं, मुग्दरसे भी पीटते हैं, हाथ भी छेद देते हैं, पाँव भी छेद देते हैं, हाथ-पाँव भी छेद देते हैं, कान भी छेद देते हैं, नाक भी छेद देते हैं, कान-नाक भी छेद देते हैं, खोपड़ी निकालकर उसमें गर्म लोहा भी डाल

देते हैं, बालों सहित सिरकी चमड़ी उखाड़कर खोपड़ीसे कंकरोंको भी रगड़ते हैं, संडासीसे मुँह खोलकर उसमें दीपक भी जला देते हैं, सारे शरीरपर तेल-बत्ती लपेटकर उसमें आग भी लगा देते हैं, हाथपर तेल-बत्ती लपेटकर उसमें आग भी लगा देते हैं, गलेसे गिट्टे तककी चमड़ी भी उतार देते हैं, गलेसे कटि-प्रदेश तककी चमड़ी और कटि-प्रदेशसे गिट्टे तक की चमड़ी भी उतार देते हैं, दोनों कोहँनियों तथा दोनों घुटनोंमें मेखें ठोककर जमीनपर भी लिटा देते हैं, उभय-मुख काँटे गाड़-गाड़कर चमड़ी, माँस तथा नसें भी नचोट लेते हैं, सारे शरीरकी चमड़ीको कार्षापण कार्षापण भर काट डालते हैं, शरीरको जहाँ-तहाँ शस्त्रोंसे पीटकर उसपर कंघी भी फेरते हैं, एक करवट लिटाकर कानमेंसे मेख भी गाड़ देते हैं, चमड़ीको बिना हानि पहुँचाये अन्दर-अन्दर हड्डी भी पीस डालते हैं, उबलता-उबलता तेल भी डाल देते हैं, कुत्तोंसे भी कटवाते हैं, जीते जी सूलीपर भी लटकाते हैं तथा तलवारसे सिर भी काट डालते हैं।

उसके मनमें ऐसा होता है कि जिस तरहके पाप कर्मके करनेसे चोरको, अपराधीको, राजके लोग नाना प्रकारके दण्ड देते हैं, चाबुकसे भी पीटते हैं. . . .तलवार से भी सिर काट डालते हैं, यदि मैं ऐसा पाप कर्म करूँगा तो मुझे भी राजाके आदमी पकड़कर इसी प्रकारके नाना तरहके दण्ड देंगे, चाबुकसे भी पीटेंगे, बेंतसे भी पीटेंगे, मुग्दरसे भी पीटेंगे, हाथ भी छेद देंगे, पाँव भी छेद देंगे, हाथ-पाँव भी छेद देंगे, कान भी छेद देंगे, नाक भी छेद देंगे, कान-नाक भी छेद देंगे, खोपड़ी निकालकर उसमें गर्म लोहा भी डाल देंगे, बालों सहित सिरकी चमड़ी उखाड़कर खोपड़ीको कंकड़ोंसे भी रगड़ेंगे, सण्डासीसे मुँह खोलकर उसमें दीपक भी जला देंगे, सारे शरीरपर तेल-बत्ती लपेटकर उसमें आग भी लगा देंगे, हाथपर तेल-बत्ती लपेटकर उसमें आग भी लगा देंगे, गलेसे गिट्टे तककी चमड़ी भी उतार देंगे, दोनों कोहनियों तथा दोनों घुटनोंमें मेखें ठोककर जमीनपर भी लिटा देंगे, उभय-मुख कांटे गाड़-गाड़ कर चमड़ी, मांस तथा नसें भी नचोट लेंगे, सारे शरीरकी चमड़ीको कार्षापण कार्षापण भर काट डालेंगे, शरीरको जहाँ तहाँसे पीटकर उसपर कंघी भी करेंगे, एक करवट लिटाकर कानमें मेख भी गाड़ देंगे, चमड़ीको बिना हानि पहुँचाये अन्दर अन्दर हड्डी भी पीस डालेंगे, उबलता उबलता तेल भी डाल देंगे, कुत्तोंसे भी कटवा देंगे, जीते जी सूलीपर लटकाएँगे तथा तलवारसे सिर भी काट डालेंगे।

वह दण्ड-भयसे दूसरोंकी चीजें लूटता हुआ नहीं घूमता है। भिक्षुओ, इसे दण्ड-भय कहते हैं।

भिक्षुओ, दुर्गतिमय कौनसा होता है? भिक्षुओ, कोई सोचता है कि शारीरिक दुष्कर्मका परलोकमें बुरा दुष्परिणाम होता है, वाणीके दुष्कर्मका परलोकमें बड़ा दुष्परिणाम होता है, मनके दुष्कर्मका परलोकमें बड़ा दुष्परिणाम होता है। यदि मैं शरीर, वाणी तथा मनसे दष्कर्म करूँगा तो यह होगा कि मैं शरीर छुटनेपर, मरनेके अनन्तर नरकमें उत्पन्न होऊँ, दुर्गतिको प्राप्त होऊँ। वह दुर्गतिके भयसे शारीरिक दुश्चरित्रताको छोड़ शारीरिक सुचरित्रताका अभ्यास करता है, वाणीकी दुश्चरित्रताको छोड़ वाणीकी सुचरित्रताका अभ्यास करता है, मनकी दुश्चरित्रताको छोड़ मनकी सुचरित्रताका अभ्यास करता है, वह अपने आपको परिशुद्ध बनाये रखता है। भिक्षुओ, इसे दुर्गति-भय कहते हैं। भिक्षुओ, ये चार भय हैं।

भिक्षुओ, जो कोई भी पानीमें उतरे, उसके सामने ये चार भय होते हैं। कौनसे चार? लहरोंका भय, मगर-मच्छका भय, भँवरका भय और महामच्छका भय। भिक्षुओ, जो कोई पानीमें उतरता है उसे इन चारों भयोंका सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, श्रद्धा पूर्वक घरसे बेघर हुए प्रव्रजित भिक्षुको भी इन चार भयोंका सामना करना पड़ता है। कौनसे चार भयोंका? लहरोंके भयका, मगर-मच्छके भयका, भँवरके भयका, महामच्छके भयका।

भिक्षुओ, लहरोंका भय कौनसा होता है? भिक्षुओ, श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर प्रव्राजित हुआ एक भिक्षु सोचता है मैं जन्म, जरामरणसे घिरा हूँ, शोकसे रोने-पीटनेसे दुःखसे, दौर्मनस्यसे, पश्चातापसे घिरा हूँ, दुःखमें फँसा हूँ, दुःखमें लिपटा हूँ। क्या अच्छा हो कि इस समस्त दुःखका अन्त कर सकूँ। उसको इस प्रकार प्रव्रजित हुए को उसके साथी भिक्षु उपदेश देते हैं, अनुशासन करते हैं—इस प्रकार तुझे आना-जाना करना चाहिये इस प्रकार तुझे देखना-भालना करना चाहिये, इस प्रकार तुझे सिकुड़ना चाहिये, इस प्रकार तुझे फैलाना चाहिये तथा इस प्रकार तुझे संघाटी, पात्र, चीवरको धारण करना चाहिये। उसके मनमें होता है कि घरपर रहते समय हम ही दूसरोंको उपदेश देते थे, अनुशासन करते थे, अब ये हमको उपदेश देने योग्य अनुशासन करने योग्य समझते हैं। मानो हम इनके पुत्र हों, हम इनके नाती हों, वह क्रोधित हो, असंतुष्ठ हो, (बुद्ध) शिक्षाको छोड़, हीन-मार्गी हो जाता है। यह कहलाता है भिक्षुओ, भिक्षुका लहरोंसे भय-भीत हो शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी हो जाना। भिक्षुओं लहरोंका भय यह क्रोध-पश्चातापका ही पर्याय है। भिक्षुओ, यही लहरोंका भय कहलाता है।

भिक्षुओ, मगर-मच्छका भय कौनसा होता है? भिक्षुओ, श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर प्रप्रजित हुआ एक भिक्षु सोचता है मैं जन्म, जरामरणसे घिरा हूँ, शोकसे

रोने-पीटनेसे दु:खसे, दौर्मनस्यसे, पश्चातापसे घिरा हूँ, दु:खमें फंसा हूँ, दु:खमें लिपटा हूँ। क्या अच्छा हो कि इस समस्त दु:खका अन्तकर सकूँ? उसको इस प्रकार प्रव्रजित हुए को, उसके साथी भिक्षु उपदेश देते हैं, अनुशासन करते हैं—यह तुझे खाना चाहिये, यह तुझे न खाना चाहिये, यह तुझे भोजन करना चाहिये, यह तुझे भोजन न करना चाहिये, यह तुझे चखना चाहिये, ये तुझे न चखना चाहिये, यह तुझे पीना चाहिये, यह तुझे न पीना चाहिये, विहित ही तुझे खाना चाहिये, अविहित नहीं खाना चाहिये, विहित ही तुझे भोजन करना चाहिये, अविहित तुझे भोजन न करना चाहिये, विहित ही तुझे चाटना चाहिये, अविहित तुझे न चाटना चाहिये, विहित ही तुझे पीना चाहिये, अविहित तुझे न पीना चाहिये, समय पर तुझे पीना चाहिये, असमय तुझे न पीना चाहिये, समय पर तुझे खाना चाहिये, असमय तुझे न खाना चाहिये, समयपर तुझे भोजन करना चाहिये, असमयपर तुझे भोजन न करना चाहिये, समय पर तुझे चाटना चाहिये, असमय पर न चाटना चाहिये। उसके मनमें होता है, कि हम पहले घरपर रहते समय जो चाहते थे खाते थे, जो नहीं चाहते थे नहीं खाते थे; जो चाहते थे भोजन करते थे, जो नहीं चाहते थे नहीं करते थे; जो चाहते थे चखते थे, जो नहीं चाहते थे, नहीं चखते थे; जो चाहते थे पीते थे, जो नहीं चाहते थे, नहीं पीथे थे; विहित भी खाते थे, अविहित भी खाते थे; विहित भी भोजन करते थे, अविहित भी भोजन करते थे; विहित भी चखते थे, अविहित भी चखते थे, विहित भी पीते थे, अविहित भी पीते थे, समय पर भी खाते थे, असमयपर भी खाते थे, समयपर भी भोजन करते थे, असमयपर भी भोजन करते थे; समयपर भी चखते थे, असमयपर भी चखते थे; समयपर भी पीते थे, असमयपर भी पीते थे; श्रद्धावान गृहस्थ लोग हमें दिनमें असमयपर जो कुछ भी प्रणीत आहार देते हैं, ऐसे लगता है कि उसके विषयमें भी यह हमारे मुँहपर पट्टी बांधना चाहते हैं। यह सोच वह क्रोधित होता है, असन्तुष्ट होता है और शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी हो जाता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं मगरमच्छ भयसे भयभीत होकर शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी हो जाना। भिक्षुओ, मगर-मच्छ भय यह पेटुपनका ही पर्याय है। भिक्षुओ, यही मगर-मच्छ मय कहलाता है।

भिक्षुओ, भंवर-भय कौनसा होता है? भिक्षुओ, श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर प्रव्रजित हुआ एक भिक्षु सोचता है—मैं जन्म-जरामरणसे घिरा हूँ, शोकसे रोने-पीटनेसे, दु:खसे दौर्मनस्यसे, पश्चातापसे घिरा हूँ, दु:खमें फँसा हूँ, दु:खमें घिरा हूँ। क्या अच्छा हो कि उस दु:खका अन्त कर सकूँ। इस प्रकार प्रव्रजित हुआ हुआ वह पूर्वान्हि

समय पहन कर, पचि-चीवर ले, गाँव या निगममें भिक्षार्थ प्रवेश करता है—असंयत शरीरसे, असंयत वाणीसे तथा असंयत चित्तसे युक्त होकर उसकी स्मृति अनुपस्थित रहती है और इन्द्रियाँ असंयत। वह वहाँ किसी गृहस्थ या गृहस्थ-पुत्रको देखता है पांचों-इंद्रियोंके विषयोंसे युक्त, समर्पित, घिरा हुआ। उसके मनमें होता है कि पहले गृहस्थ रहते समय पांचों इंद्रियोंके विषयोंसे युक्त रहे, समर्पित रहे, घिरे रहे। मेरे घरपर काम-भोगोंको भोगनेके साधन हैं। मैं भोगोंको भोगते हुए तथा पुण्यकर्म करते हुए रह सकता हूँ। क्यों न मैं शिक्षाको छोड़ हीन मार्गी बन भोगोंको भोगूँ और पुण्य करूं? वह शिक्षा को छोड़ हीन मार्गी हो जाता है। भिक्षुओ, यह कहलाता है भिक्षुका भँवर-भयसे भयभीत होकर शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी हो जाना। भिक्षुओ, भँवर-भय पाँचों इन्द्रियोंके विषयोंका ही पर्याय है। भिक्षुओ, यह भंवर, भय कहलाता है।

भिक्षुओ, महा-मच्छ का भय कौनसा होता है? भिक्षुओ, श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर प्रव्रजित हुआ एक भिक्षु सोचता है—मैं जन्म जरामरणसे घिरा हूँ, शोकसे, रोने-पीटनेसे, दु:खसे, दौर्मनस्यसे, पश्चातापसे घिरा हूँ, दु:खमें फंसा हूँ दु:खमें घिरा हूँ। क्या अच्छा हो कि उस दु:खका अन्त कर सकूँ! इस प्रकार प्रव्रजित हुआ हुआ वह पूर्वाह्ण समय पहनकर पात्र चीवर ले, गाँव या निगममें भिक्षार्थ प्रवेश करता है—असंयत शरीरसे असंयत वाणी से तथा असंयत चित्तसे युक्त होकर। उसकी स्मृति अनुपस्थित रहती है और इन्द्रियाँ असंयत। वह वहाँ किसी स्त्रीको देखता है जो निर्वस्त्र सी है, ठीकसे ढके नहीं है। उस निर्वस्त्र सी, उस ठीकसे वस्त्र न पहने हुई स्त्रीको देखकर उस भिक्षुके मनमें राग घर कर लेता है। रागके वशीभूत चित्तसे युक्त होकर वह शिक्षा को छोड़ हीन-मार्गी हो जाता है। भिक्षुओ, यह है भिक्षुका महामच्छ-भयसे भयभीत होकर शिक्षाका त्याग कर हीन-मार्गी हो जाना। भिक्षुओ, महामच्छ-भय यह स्त्रीका ही पर्याय है। भिक्षुओ, यह कहलाता है महामच्छ भय। भिक्षुओ, ये चार भय हैं जिनका श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर हुए प्रव्रजित भिक्षुको सामना करना पड़ता है।

भिक्षुओ, इस लोकमें चार प्रकारके आदमी विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमी काम-भोगोंसे रहित, अकुशल धर्मोंसे रहित प्रथम ध्यान को प्राप्त हो विहार करता है जो वितर्क-विचार युक्त होता है, जो विवेकोत्पन्न होता है तथा जिसमें प्रीति-सुख विद्यमान रहता है। वह उसका मजा लेता है। वह उसम रमण करता है। वह उससे तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस ध्यानमें स्थित रहकर उसीमें निमग्न रहकर उसी का प्रायः अभ्यास करने वाला होकर उसी ध्यानसे युक्त

रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह ब्रह्मकायिक देवलोकमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, ब्रह्मकायिक देवताओंकी कल्प भरकी आयु होती है। जो पृथक-जन (=सामान्य जन) होता है वह आयुभर वहाँ रहकर जितनी उन देवताओंकी आयु होती है उतनी आयु नहीं बिताकर नरक लोकमें भी जाता है, तिरश्चीन-योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेतयोनिमें भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (बुद्ध) का श्रावक होता है वह आयुभर वहाँ रहकर, जितनी उन देवताओंकी आयु होती है, वह सब वहाँ बिता कर वहीं से परिनिर्वृत्त हो जाता है। भिक्षुओ अश्रुत पृथक्-जन तथा धर्म-श्रुत आर्य श्रावक का यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है जो कि गतिके सम्बन्धमें, उत्पत्तिके सम्बन्धमें।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी वितर्क और विचारोंके उपशमनसे उत्पन्न अन्दरकी प्रसन्नता और एकाग्रता रूपी द्वितीय-ध्यानको प्राप्त हो विहार करता है, जिसमें न वितर्क होते हैं, न विचार ; जो समाधि से उत्पन्न होता है और जिसमें प्रीति तथा सुख रहते हैं। वह उसका मजा लेता है। वह उसमें रमण करता है। वह उसमें तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस ध्यानमें स्थित रहकर, उसीमें निमग्न रहकर, उसीका प्राय: अभ्यास करने वाला होकर उसी ध्यानसे युक्त रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह आभस्वर देवलोकमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, आमस्वरमें देवताओंकी दो कल्पकी आयु होती है। जो पृथक जन (=सामान्य जन) होता है वह आयु भर वहाँ रहकर, जितनी उन देवताओंकी आयु होती है उतनी आयु वहीं बिताकर नरक लोकमें जाता है, तिरश्चीन-योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेत-योनि में भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (बुद्ध) का श्रावक होता है, वह आयु भर वहाँ रहकर, जितनी उन देवताओंकी आयु होती है, वह सब वहाँ बिताकर वहीं से परिनिवृत्त हो जाता है। भिक्षुओ अश्रुत पृथक जन तथा (धर्म-) श्रुत आर्य-श्रावक का यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है, जो कि यह गतिके सम्बन्धमें, उत्पत्तिके सम्बन्धमें।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी प्रीतिसे भी विरक्त हो उपेक्षावान् बन विचरता है। वह स्मृतिमान् ज्ञानवान् होता है और (चित्त-) कायसे सुखका अनुमव करता है। वह तृतीय-ध्यानको प्राप्त करता है, जिसे पंडित जन 'उपेक्षावान्' स्मृतिवान् सुखपूर्वक विहार करनेवाला कहते हैं। वह उसका मजा लेता है। वह उसमें रमण करता है। वह उसमें तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस ध्यानमें स्थित रहकर, उसीमें

निमग्न रहकर, उसीका प्राय: अभ्यास करने वाला होकर, उसी ध्यान से युक्त रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह शुभ-कृष्ण देवताओंमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, शुभ-कृष्ण देवताओंकी चार कल्पकी आयु होती है। जो पृथक जन (= सामान्य जन) होता है वह आयु भर वहाँ रहकर, जितनी भी उन देवताओंकी आयु होती है उतनी आयु वहीं बिताकर नरक लोकमें जाता है, तिरश्चीन-योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेत-योनिमें भी जन्म-ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (बुद्ध) का श्रावक होता है, वह आयुभर वहीं रहकर, जितनी उन देवताओंकी आयु होती है, वह सब वहाँ बिताकर वहींसे परिनिर्वृत्त हो जाता है। भिक्षुओ, अश्रुत पृथक जन तथा (धर्म-) श्रुत आर्य-श्रावकका यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है, जो कि यह गतिके सम्बन्धमें, उत्पत्तिके सम्वन्धमें। और फिर भिक्षुओ, एक आदमी सुख और दु:ख दोनोंके प्रहाणसे, सौमनस्य और दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हुए रहनेसे (उत्पन्न) चतुर्थ ध्यानको प्राप्त करता है, जिसमें न दु:ख होता है, न सुख, और होती है (केवल) उपेक्षा तथा स्मृतिकी परिशुद्धि। वह उसका मजा लेता है। वह उसमें रमण करता है। वह उसमें तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस ध्यानमें स्थित रहकर, उसीमें निमग्न रहकर, उसीका प्राय: अभ्यास करने वाला होकर, उसी ध्यानसे युक्त रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह वेहप्फल देवताओंमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, वेहप्फल देवताओंकी पाँच कल्पकी आयु होती है। जो पृथक जन (= सामान्य जन) होता है वह आयु भर वहाँ रहकर, जितनी भी उन देवताओंकी आयु होती है, उतनी आयु वहीं बिताकर नरक लोकमें जाता है, तिरश्चीन-योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेत योनिमें भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान् (बुद्ध) का श्रावक है, वह आयु भर वहीं रहकर, जितनी उन देवताओंकी आयु होती है, वह सब वहीं बिताकर वहींसे परिनिर्वृत्त हो जाता है। भिक्षुओ, अश्रुत पृथक-जन तथा (धर्म-) श्रुत आर्य श्रावकका यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है, जो कि यह गतिके सम्बन्धमें, उत्पत्तिके सप्म्बन्धमें। भिक्षुओ, लोकमें ये चार प्रकारके आदमी विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके ? भिक्षुओ, एक आदमी काम भोगोंसे पृथक .....प्रथम ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। यह जो कुछ भी रूप-मात्र है, वेदना-मात्र है, संज्ञा-मात्र है, संस्कार-मात्र है, विज्ञान-मात्र है, उन सभीको अनित्य-स्वरूप, दु:ख-स्वरूप, रोग-स्वरूप, फोड़े-स्वरूप, शल्य-स्वरूप, पीड़ा-स्वरूप, बीमारी-स्वरूप, पर-स्वरूप, ऱ्हास-स्वरूप, शून्य-स्वरूप तथा अनात्म-स्वरूप देखता है। वह शरीरके न रहनेपर, मरनेपर, सुद्धावास

देव लोकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, यह पृथक जनो (= सामान्य जनों) की अपेक्षा विशेष उत्पत्ति है।

भिक्षुओ, फिर एक आदमी वितर्क-विचारोंका उपशमन कर..... द्वितीय ध्यान..... तृतीय ध्यान.... चतुर्थ ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह जो कुछ भी रूप-मात्र है, वेदना-मात्र है, संज्ञा-मात्र है, संस्कार-मात्र हैं, विज्ञान-मात्र है, इन सभीको अनित्य-स्वरूप, दुःख-स्वरूप, रोग-स्वरूप-, फोड़े-स्वरूप, शल्य-स्वरूप, पीड़ा-स्वरूप, बीमारी-स्वरूप, पर-स्वरूप, न्हास, स्वरूप, शून्य-स्वरूप तथा अनात्म-स्वरूप देखता है। वह शरीरके न रहनेपर, मरनेपर, सुद्धावास देव लोकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, यह पृथक जनों (= सामान्य जनों) की अपेक्षा विशेष उत्पत्ति है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमी मैत्री युक्त चित्तसे एक दिशाको स्पर्श करता हुआ विहार करता है....... वैसे ही दूसरी.... वैसे ही तीसरी.... वैसे ही चौथी। वह ऊपर, नीचे तिर्यक दिशामें, सर्वत्र, सबके लिये, समस्त लोक को ऐसे चित्तसे स्पर्श करता हुआ विहार करता है, जो मैत्री युक्त होता है, विशाल होता है, महान होता है, अप्रमाण होता है, वैर-रहित होता, है, द्वेष-रहित होता है। वह उसका मजा लेता है। वह उसमें रमण करता है। वह उसमें तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस भावनामें स्थित रहकर, उसीमें निमग्न रहकर, उसीका प्रायः अभ्यास करनेवाला होकर, उसी भावनासे युक्त रहकर यदि मृत्युको प्राप्त होता है तो वह ब्रह्म-कायिक देवताओंमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, ब्रह्म कायिक देवताओंकी आयु कल्प भर की होती है। जो पृथक जन (= सामान्य जन) होता है वह आयुभर वहाँ रहकर, जितनी भी उन देवताओंकी आयु होती है, उतनी आयु वहीं बिताकर नरक लोकमें जाता है, तिरश्चीन-योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेत योनिमें भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (बुद्ध) का श्रावक है वह आयु भर वहीं रहकर, जितनी उन देवताओंकी आयु होती है, वह सब वहीं बिताकर वहींसे परिनिर्वृत्त हो जाता है। भिक्षुओ, अश्रुत पृथक जन तथा (धर्म—) श्रुत आर्य-श्रावकका यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है जो कि यह गतिके सम्बन्धमें, उत्पत्तिके सम्बन्धमें।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी करुणा युक्त चितसे..... मुदिता युक्त चित्तसे ...... उपेक्षायुक्त चित्तसे एक दिशाको स्पर्श करता हुआ विहार करता है.... वैसे ही दूसरी..... वैसे ही तीसरी... वैसे ही चौथी। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक् दिशामें

सर्वत्र सबके लिये, समस्त लोकको ऐसे चित्तसे स्पर्श करता हुआ विहार करता है जो मैत्री-युक्त होता है, विशाल होता, महान् होता है, अप्रमाण होता है, वैर-रहित होता है, द्वेष-रहित होता है। वह उसका मजा लेता है। वह उसमें रमण करता है। वह उसमें तृप्ति प्राप्त करता है। वह उस भावनामें स्थित रहकर, उसीमें निमग्न रहकर, उसीका प्रायः अभ्यास करने वाला होकर, उसी भावनासे युक्त रहकर यदि मृत्यु को प्राप्त होता है तो वह आभस्वर देवताओंमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, आभस्वर देवताओंकी आयु दो कल्प भरकी होती है..... शुभ कृष्ण देवताओंमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, शुभ कृष्ण देवताओंकी आयु चार कल्पकी होती है..... वेहप्फल देवताओंमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, वेहप्फल देवताओंकी आयु पाँच सौ कल्प होती है। जो पृथक जन (= सामान्य जन) होता है वह आयुभर वहाँ रहकर, जितनी भी उन देवताओंकी आयु होती है, उतनी आयु वहीं बिताकर नरक लोकमें जाता है, तिरश्चीन योनिमें भी उत्पन्न होता है, प्रेत योनिमें भी जन्म ग्रहण करता है। किन्तु जो भगवान (बुद्ध) का श्रावक है वह आयु भर वहीं रहकर जितनी उन देवताओंकी आयु होती है, वह सब वहीं बिताकर वहींसे निर्वृत्त हो जाता है, भिक्षुओ, अश्रुत पृथक-जन तथा (धर्म-) श्रुत आर्य श्रावकका यही अन्तर है, यही भेद है, यही विशेषता है जो कि यह गतिके सम्बन्धमें, उत्पत्तिके सम्बन्धमें। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोक विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके ? भिक्षुओ, एक आदमी मैत्री-युक्त चित्तसे एक दिशाको स्पर्श करता हुआ विहार करता है—वैसे ही दूसरी, वैसे ही तीसरी..... वैसे ही चौथी। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक् दिशामें, सर्वत्र, सबके लिये, समस्त लोकको ऐसे चित्तसे स्पर्श करता हुआ विहार करता है जो मैत्री-युक्त होता है, विशाल होता है, महान् होता है, असीम होता है, वैर-रहित होता है, द्वेष-रहित होता है। वह जो कुछ भी रूप-मात्र है, वेदना-मात्र है, संज्ञा-मात्र है, संस्कार-मात्र हैं, विज्ञान-मात्र है, इन सभीको अनित्य-स्वरूप, दुःख-स्वरूप, रोग-स्वरूप, फोड़े-स्वरूप, शल्य-स्वरूप, पीड़ा-स्वरूप, बीमारी-स्वरूप, पर-स्वरूप, न्हास-स्वरूप, शून्य-स्वरूप तथा अनात्म-स्वरूप देखता है। वह शरीरके, न रहनेपर, मरनेपर, सुद्धावास देव-लोकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, यह पृथक जनोंकी अपेक्षा विशेष उत्पत्ति है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी करुणा-युक्त चित्तसे.... मुदिता युक्त चित्तसे ..... उपेक्षा युक्त चित्तसे एक दिशाको स्पर्श करता हुआ विहार करता है... वैसे

ही दूसरी....वैसे ही तीसरी.....वैसे ही चौथी। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक् दिशामें, सर्वत्र, सबके लिये समस्त लोकको ऐसे चित्तसे स्पर्श करता हुआ विहार करता है जो मैत्री-युक्त होता है, विशाल होता है, महान होता है, असीम होता है, वैर-रहित होता है, द्वेष-रहित होता है। वह जो कुछ भी रूप-मात्र है, वेदना-मात्र है, संज्ञा-मात्र है, संस्कार-मात्र हैं, विज्ञान-मात्र है, इन सभीको अनित्य-स्वरूप, दुःख-स्वरूप, रोग-स्वरूप, फोड़े-स्वरूप, शल्य-स्वरूप, पीड़ा-स्वरूप, बीमारी-स्वरूप, ऱ्हास-स्वरूप, शून्य-स्वरूप तथा अनात्म-स्वरूप देखता है। वह शरीरके न रहनेपर, मरनेपर, सुद्धावास देवलोकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, यह पृथक-जनोंकी अपेक्षा विशेष उत्पत्ति है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, जब तथागत अर्हत् सम्यक्संम्बुद्धका प्रादुर्भाव होता है तो उस समय चार आश्चर्यकर अद्भुत घटनायें घटती हैं। कौन-सी चार? भिक्षुओ, जब बोधिसत्व तुषित-लोकसे च्युत होकर स्मृति-सम्प्रजन्य सहित माताकी कोखमें गर्भ धारण करते हैं, उस समय सदेव समार लोकमें, ब्रह्म-लोकमें, श्रमण-ब्राह्मणों सहित देव-मनुष्योंमें, असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओंके देवतानुभावसे भी विशिष्ट; जो वह (चक्रवाल) लोकोंके बीचकी अन्धेरी होती है, असंवृत, अन्धकारपूर्ण, घोर अन्धकार पूर्ण, जहाँ उतने ऋद्धिमान्, इतने तेजस्वी चाँद सूर्य तकका प्रकाश नहीं पहुँचता वहाँ भी असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओंके देवताअनुमावसे भी विशिष्ट। जो दूसरे भी प्राणी उस समय उत्पन्न होते हैं वे भी परस्पर एक दूसरेको जान लेते हैं कि और भी प्राणी उत्पन्न हुए हैं। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह पहली आश्चर्यकर अद्भुत-घटना है जो घटती है।

फिर भिक्षुओ, जब बोधिसत्व स्मृति-सम्प्रजन्य युक्त माताकी कोखसे बाहर आते हैं, उस समय सदेव समार लोकमें, ब्रह्म लोकमें, श्रमण-ब्राह्मणों सहित देव-मनुष्योंमें, असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओंके देवतानुभावसे भी विशिष्ट जो वह, (चक्रवाल—) लोकोंके बीचकी अन्धेरी होती है, असंस्कृत, अन्धकार-पूर्ण, घोर अन्धकार पूर्ण, जहाँ उतने ऋद्धिमान, उतने तेजस्वी चन्द्र सूर्य तकका प्रकाश नहीं पहुँचता, वहाँ भी असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओंके देवतानुभावसे भी विशिष्ट। जो दूसरे भी प्राणी उस समय उत्पन्न होते हैं वे भी परस्पर एक दूसरेको जान लेते हैं कि और भी प्राणी उत्पन्न हुये हैं। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक्सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह दूसरी आश्चर्यकर अद्भुत घटना है, जो घटती है।

फिर भिक्षुओ, जब तथागत अनुपम सम्यक् सम्बोधिको प्राप्त होते ह, उस समय सदेव समार लोकमें ब्रह्म-लोकमें श्रमण-ब्राह्मणों सहित देव-मनुष्योंमें, असीम विशाल प्रकाश होता है, देवताओंके देवतानुभावसे भी विशिष्ट, जो (चक्रवाल) लोकोंके बीचकी अन्धेरी होती है, असंस्कृत, अन्धकार पूर्ण, घोर अन्धकार पूर्ण, जहाँ उतने ऋद्धिमान्, उतने तेजस्वी चन्द्र सूर्य तकका प्रकाश नहीं पहुँचता, वहाँ भी असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओंके देवतानुभावसे भी विशिष्टा। जो दूसरे भी प्राणी उस समय उत्पन्न होते हैं वे भी परस्पर एक दूसरेको जान लेते हैं कि और भी प्राणी उत्पन्न हुए हैं। भिक्षुओ, तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्रका प्रादुर्भाव होनेपर यह तीसरी आश्चर्यकर अद्भुत घटना है, जो घटती है।

फिर भिक्षुओ, जब तथागत अनुपम धर्मचक्र प्रवर्तित करते हैं, उस समय सदेव समार लोकमें, ब्रह्म लोकमें, श्रमण-ब्राह्मणों सहित देव मनुष्योंमें असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओंके देवतानुभावसे भी विशिष्ट जो वह (चक्रवाल) लोकोंके बीचकी अन्धेरी होती है असंस्कृत, अन्धकार पूर्ण, घोर अन्धकार पूर्ण, जहाँ उतन ऋद्धिमान्, उतने तेजस्वी चन्द्र सूर्य तकका प्रकाश नहीं पहुँचता, वहाँ भी असीम विशाल प्रकाश प्रकट होता है, देवताओंके देवतानुभावसे भी विशिष्ट। जो दूसरे भी प्राणी उस समय उत्पन्न होते हैं वे भी परस्पर एक दूसरेको जान लेते हैं कि और भी प्राणी उत्पन्न हुये हैं। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह चौथी आश्चर्य-कर अद्भुत घटना है जो घटती है। भिक्षुओ, जब तथागत अर्हत, सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होता है तो उस समय ये चार आश्चर्यकर अद्भुत घटनायें घटती हैं।

भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर चार आश्चर्यकर अद्भुत घटनामें घटती हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, यह प्रजा आसक्तिमें रमण करने वाली है, आसक्तिमें रत रहने वाली है, आसक्तिसे उत्तेजित होने वाली है। ऐसी प्रजा तथागतके अनासक्तिका धर्म देशना करनेपर उस धर्मको सुनती है, ध्यान देती है, चित्तको ज्ञान प्राप्तिकी ओर झुकाती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह पहली आश्चर्यकर अद्भुत घटना घटती है।

भिक्षुओ, यह प्रजा अभिमानमें रमरण करने वाली है, अभिमानमें रमण रहने वाली है, अभिमानसे उत्तेजित होने वाली है। ऐसी प्रजा तथागतके द्वारा अभिमानको जीतनेके लिये धर्मोपदेश दिये जानेपर उस धर्मको सुनती है, ध्यान देती है, चित्तको ज्ञान प्राप्तिकी ओर झुकाती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह दूसरी आश्चर्यकर अद्भुत घटना घटती है।

भिक्षुओ, यह प्रजा अशान्तिमें रमण करने वाली है, अशान्तिमें रमण रहने वाली है, अशान्तिसे उत्तेजित होने वाली है, ऐसी प्रजा तथागतके द्वारा शान्तिका धर्म उपदिष्ट किये जानेपर उस धर्मको सुनती है, ध्यान देती है, चित्तको ज्ञान प्राप्तिकी ओर झुकाती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह तीसरी आश्चर्यकर अद्भुत घटना घटती है।

भिक्षुओ, यह प्रजा अविद्यासे ग्रसी हुई है, अविद्या रूपी अण्डेमें बंद है, अविद्यासे चारों ओरसे घिरी है। ऐसी प्रजा तथागतके द्वारा अविद्याको जीत लेनेका धर्म उपदिष्ट किये जानेपर उस धर्मको सुनती है, ध्यान देती है, चित्तको ज्ञान-प्राप्तिकी ओर झुकाती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर यह चौथी आश्चर्यकर अद्भुत घटना घटती है। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव होनेपर ये चार आश्चर्यकर अद्भुत घटनायें घटती हैं।

भिक्षुओ, आनन्दमें ये चार आश्चर्यकर अद्भुत बातें हैं। कौन-सी चार? भिक्षुओ, यदि भिक्षु-परिषद् आनन्दका दर्शन करनेके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मका उपदेश करता है तो वह आनन्दके उपदेशसे भी सन्तुष्ट होती है। भिक्षुओ, भिक्षु-परिषद् अर्तृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, यदि भिक्षुणी-परिषद आनन्दका दर्शन करनेके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मका उपदेश करता है तो वह आनन्दके उपदेशसे भी सन्तुष्ट होती है। भिक्षुओ, भिक्षुणी-परिषद अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है।

भिक्षुओ, यदि उपासक परिषद आनन्दका दर्शन करनेके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मका उपदेश करता है तो वह आनन्दके उपदेशसे भी सन्तुष्ट होती है। भिक्षुओ, उपासक-परिषद अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, यदि उपासिका-परिषद आनन्दका दर्शन करनेके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मका उपदेश करता है तो वह आनन्दके उपदेशसे भी सन्तुष्ट होती है। भिक्षुओ, उपासिका-परिषद् अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, आनन्दमें ये चार आश्चर्यकर अद्भुत बातें हैं।

भिक्षुओ, चक्रवर्ती राजामें ये चार आश्चर्यकर अद्भुत बातें होती हैं। कौनसी चार? भिक्षुओ, यदि क्षत्रिय-परिषद चक्रवर्ती राजाके दर्शनके लिये जाती

है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि चक्रवर्ती राजा बोलता है तो वह उसके भाषणसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, क्षत्रिय-परिषद् अतृप्त ही रह जाती है और चक्रवर्ती राजा चुप हो जाता है।

भिक्षुओ, यदि ब्राह्मण-परिषद् चक्रवर्ती राजाके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि चक्रवर्ती राजा बोलता है तो वह उसके भाषणसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, ब्राह्मण-परिषद अतृप्त ही रह जाता है और चक्रवर्ती राजा चुप हो जाती है।

भिक्षुओ, यदि गृहपति-परिषद् चक्रवर्ती राजाके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि चक्रवर्ती राजा बोलता है तो वह उसके भाषणसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, गृहपति-परिषद् अतृप्त ही रह जाती है और चक्रवर्ती राजा चुप हो जाता है।

भिक्षुओ, यदि श्रमण-परिषद् चक्रवर्ती राजाके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि चक्रवर्ती राजा बोलता है तो वह उस भाषणसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, श्रमण परिषद अतृप्त ही रह जाती है और चक्रवर्ती राजा चुप हो जाता है। भिक्षुओ, चक्रवर्ती राजामें ये चार आश्चर्यकर अद्भुत बातें हैं।

इसी प्रकार भिक्षुओ, आनन्दमें भी चार आश्चर्यकर अद्भुत बातें हैं। कौन-सी चार? भिक्षुओ, यदि भिक्षु परिषद आनन्दके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मोपदेश देता है तो वह उसके धर्मोपदेशसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, भिक्षु परिषद अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, यदि भिक्षुणी-परिषद.....भिक्षुओ, यदि उपासक-परिषद्......भिक्षुओ, यदि उपासिका-परिषद आनन्दके दर्शनके लिये जाती है तो वह दर्शनसे सन्तुष्ट हो जाती है, यदि आनन्द धर्मोपदेश देता है तो वह उसके धर्मोपदेशसे भी सन्तुष्ट हो जाती है। भिक्षुओ, उपासिका परिषद अतृप्त ही रह जाती है और आनन्द चुप हो जाता है। भिक्षुओ, आनन्द में ये चार आश्चर्यकर अद्भुत बातें हैं।

(४) पुद्गल-वर्ग

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार तरहके? भिक्षुओ, एक आदमीके न तो निम्न-स्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, न उत्पत्ति-जनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं और न भव-जनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं।

भिक्षुओ, एक आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, किन्तु न उत्पत्ति-जनक संयोजन प्रहीण हुये रहते हैं और न भव-जनक संयोजन प्रहीण हुये रहते हैं।

भिक्षुओ, एक आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, उत्पत्ति-जनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, किन्तु भव-जनक संयोजन प्रहीण हुए नहीं रहते।

भिक्षुओ, एक आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, उत्पत्ति-जनक संयोजन प्रहीण हुये रहते हैं तथा भव-जनक संयोजन भी प्रहीण हुए रहते हैं।

भिक्षुओ, किस आदमीके न तो निम्न-स्तरके कामलोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, न उत्पत्ति-जनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं और न भव-जनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं? सकृदागामीके। भिक्षुओ, इस आदमीके न तो निम्नस्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, न उत्पत्तिजनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं और न भवजनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं।

भिक्षुओ, किस आदमीके निम्न-स्तरके कामलोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, किन्तु न उत्पत्ति-जनक संयोजन प्रहीण हुये रहते हैं और न भव-जनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं? जो ऊर्ध्व-स्रोत वाला होता है, जो ज्येष्ठतम देवताओं-के पास पहुँचने वाला होता है। भिक्षुओ, इस आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, किन्तु न उत्पत्तिजनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं और न भवजनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं।

भिक्षुओ, किस आदमीके निम्न-स्तरके काम लोक-सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, उत्पत्ति-जनक संयोगन प्रहींण हुए रहते हैं, किन्तु भव-जनक संयोजन हुए नहीं रहते? बीचमें ही परिनिर्वाणको प्राप्त करनेवाले अनागामीके। भिक्षुओ, इस आदमीके निम्न-स्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, उत्पत्ति-जनक संयोजन प्रहीण हुए रहते हैं, किन्तु भव-जनक संयोजन प्रहीण हुए नहीं रहते।

भिक्षुओ, किस आदमीके निम्नस्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन भी प्रहीण हुए रहते हैं, उत्पत्ति-जनक संयोजन भी प्रहीण हुए रहते हैं, भव जनक संयोजन भी प्रहीण हुए रहते हैं? अर्हतके। भिक्षुओ, इस आदमीके निम्नस्तरके काम-लोक सम्बन्धी संयोजन भी प्रहीण हुए रहते हैं, उत्पत्ति-जनक संयोजन भी प्रहीण हुये रहते हैं, भव-जनक संयोजन भी प्रहीण हुये रहते हैं। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, इस दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? ठीक उत्तर दे सकने वाला, किन्तु शीघ्र उत्तर दे सकने वाला नहीं; शीघ्र उत्तर दे सकने वाला, किन्तु ठीक उत्तर दे सकने वाला नहीं; ठीक उत्तर दे सकने वाला और शीघ्र उत्तर दे सकने वाला; न ठीक उत्तर दे सकने वाला और न शीघ्र उत्तर दे सकने वाला। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग हैं। कौनसे चार प्रकारके? उपदेश देते ही अर्थको जान लेने वाला, विस्तारसे धर्मोपदेश देनेपर धर्मको जान सकने वाला, क्रमशः धर्मको जान सकने वाला, जन्मभर भी धर्मका उपदेश सुननेको मिले तब भी न जान सकने वाला। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार प्रकारके? प्रयासके फलपर निर्भर किन्तु कर्मके फलपर निर्भर नहीं, कर्मके फलपर निर्भर किन्तु प्रयासके फलपर निर्भर नहीं, प्रयास तथा कर्म दोनोंके फल पर निर्भर, न प्रयासके फलपर निर्भर और न कर्म के फलपर निर्भर। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान हैं। कौन-से चार तरहके? सदोष, दोष-बहुल, अल्प-दोषी, निर्दोष।

भिक्षुओ, सदोष व्यक्ति कौन-सा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी सदोष शारीरिक कर्मसे युक्त होता है, सदोष वाणीके कर्मसे युक्त होता है, सदोष मनके कर्मसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी सदोष होता है।

भिक्षुओ, दोष-बहुल व्यक्ति कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अधिकतर सदोष शारीरिक कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर निर्दोष शारीरिक कर्मसे; अधिकतर सदोष वाणीके कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर निर्दोष वाणीके कर्मसे; अधिकतर सदोष मनके कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर निर्दोष मनके कर्मसे; इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी दोष-बहुल होता है।

भिक्षुओ, आदमी अल्प-दोषी कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अधिकतर निर्दोष शारीरिक कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर सदोष शारीरिक कर्मसे; अधिकतर निर्दोष वाणीके कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर सदोष वाणीके कर्मसे; अधिकतर निर्दोष मनके कर्मसे युक्त होता है, अल्पतर सदोष मनके कर्मसे; इस प्रकार, भिक्षुओ, आदमी अल्प-दोषी होता है।

भिक्षुओ, आदमी किस प्रकार निर्दोष होता है? भिक्षुओ, एक आदमी निर्दोष शारीरिक-कर्मसे युक्त होता है, निर्दोष वाणीके कर्मसे युक्त होता है, निर्दोष मनके कर्मसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी निर्दोष होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग है।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं। कौनसे चार तरहके? भिक्षुओ एक आदमी का न शील सम्पूर्ण होता है, न समाधि सम्पूर्ण होती है, न प्रज्ञा सम्पूर्ण होती है। भिक्षुओ, एक आदमी का शील सम्पूर्ण होता है, किन्तु न समाधि सम्पूर्ण होती है, न प्रज्ञा सम्पूर्ण होती है। भिक्षुओ, एक आदमीका शील सम्पूर्ण होता है, समाधि सम्पूर्ण होती है, किन्तु प्रजा सम्पूर्ण नहीं होती। भिक्षुओ, एक आदमी का शील भी सम्पूर्ण होता है, समाधि भी सम्पूर्ण होती है, प्रज्ञा भी सम्पूर्ण होती हैं। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके आदमी विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं। कौनसे चार तरहके? भिक्षुओ, एक आदमी न शीलको महत्वपूर्ण स्थान देनेवाला होता है और न उसका शील पर आधिपत्य होता है; न समाधिको महत्व पूर्ण स्थान देनेवाला होता है, न समाधिपर अधिपत्य होता है; न प्रज्ञाको महत्व पूर्ण स्थान देनेवाला होता है, न प्रज्ञापर आधिपत्य होता है।

भिक्षुओ, एक आदमी शीलको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, उसका शील पर आधिपत्य होता हैं; किन्तु वह न समाधिको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, न समाधि पर उसका आधिपत्य होता है; न प्रज्ञाको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता हैं, न प्रज्ञा पर उसका आधिपत्य ही होता है।

भिक्षुओ, एक आदमी शीलको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, शीलपर भी उसका आधिपत्य होता है, समाधिको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, समाधिपर उसका आधिपत्य भी होता है; किन्तु न प्रज्ञाको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है और न प्रज्ञा पर उसका आधिपत्य भी होता है।

भिक्षुओ, एक आदमी शीलको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, शीलपर भी उसका आधिपत्य होता है, समाधिको महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, समाधि-पर उसका आधिपत्य होता हैं, प्रज्ञाको यह महत्वपूर्ण स्थान देने वाला होता है, प्रज्ञापर उसका आधिपत्य होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान है। कौनसे चार तरहके? नक्कृष्ठकाय अनिक्कृष्ठचित्त; अनिक्कृष्ठकाय, निक्कृष्ठचित्त; अनिक्कृष्ठकाय अनिक्कृष्ठ चित्त;

तथा निकृष्ठकाय निकृष्ठचित्त। भिक्षुओ, आदमी कैसे निकृष्ठकाय अनिकृष्ठ चित्त होता है? भिक्षुओ, एक आदमी जंगलमें एकान्त शयनासनका सेवन करता है। वह काम-भोग सम्बन्धी संकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, द्वेष-सम्बन्धी संकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, विहिंसा-सम्बन्धी संकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी निकृष्ठकाय होता है, किन्तु अनिकृष्ठ चित्त।

भिक्षुओ, आदमी कैसे अनिकृष्ठकाय निकृष्ठचित्त होता है? भिक्षुओ, एक आदमी जंगलमें एकान्त शयनासनका सेवन नहीं करता है, किन्तु वह नैष्क्रम्य-सम्बन्धी संकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, अद्वेष-सम्बन्धी संकल्प विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, अविहिंसा-सम्बन्धी संकल्प विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अनिकृष्ठकाय निकृष्ठचित्त होता है।

भिक्षुओ, आदमी कैसे अनिकृष्ठकाय अनिकृष्ठचित्त होता है? भिक्षुओ एक आदमी न जंगलमें एकान्त शयनासनका सेवन करता है, वह काम-भोग सम्बन्धी संकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, द्वेष-सम्बन्धी संकल्प विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, विहिंसा-सम्बन्धी संकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी अनिकृष्ठकाय अनिकृष्ठ चित्त होता है।

भिक्षुओ, आदमी कैसे निकृष्ठकाय निकृष्ठचित्त होता है? भिक्षुओ, एक आदमी जंगलमें एकान्त शयनासनका सेवन करता है, वह नैष्क्रम्य-सम्बन्धी संकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, अद्वेष-सम्बन्धी संपकल्प-विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है, अविहिंसा-सम्बन्धी संकल्प विकल्पोंको भी मनमें जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी निकृष्ठ-काय निकृष्ठ-चित्त होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, ये चार धर्म-कथिक होते हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, एक धर्म-कथिक थोड़ा उपदेश देता है, किन्तु अर्थ हीन। परिषद् सार्थक-निरर्थकका भेद समझनेमें कुशल नहीं होती। भिक्षुओ ऐसा धर्म-कथिक ऐसी परिषद् द्वारा धर्म-कथिक ही गिना जाता है।

भिक्षुओ, एक धर्म-कथिक थोड़ा उपदेश देता है, किन्तु सार्थक। परिषद सार्थक निरर्थकका भेद समझनेमें कुशल होती है। भिक्षुओ, ऐसा धर्म-कथिक ऐसी परिषद द्वारा धर्म-कथिक ही गिना जाता है।

भिक्षुओ, एक धर्म-कथिक बहुत उपदेश देता है, किन्तु निरर्थक। परिषद सार्थक निरर्थकका भेद समझनेमें कुशल नहीं होती। ऐसा धर्म-कथिक ऐसी परिषद् द्वारा धर्म-कथिक ही गिना जाता है।

भिक्षुओ, एक धर्म-कथिक बहुत उपदेश देता है, किन्तु सार्थक। परिषद् सार्थक-निरर्थकका भेद समझनेमें कुशल होती है। ऐसा धर्म-कथिक ऐसी परिषद् द्वारा धर्म-कथिक ही गिना जाता है। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके धर्म-कथिक होते हैं।

भिक्षुओ, वादी चार प्रकारके होते हैं। भिक्षुओ, एक वादी होता है जो अर्थोंपर समाप्त हो जाता है, शब्दोंपर नहीं; भिक्षुओ, एक वादी होता है जो शब्दोंपर समाप्त हो जाता है, अर्थोंपर नहीं; भिक्षुओ, एक वादी होता है जो अर्थ और शब्द दोनौंपर समाप्त हो जाता है; भिक्षुओ एक वादी होता है जो न अर्थपर समाप्त होता है, न शब्दपर। भिक्षुओ, इसके लिये कोई स्थान नहीं, इसकी कोई गुँजायश नहीं कि चार पटिसम्भिदा ज्ञानोंसे युक्त अर्थोंपर।वा शब्दोंपर समाप्त हो जाय।

(५) आभा वर्ग।

भिक्षुओ, चार प्रकारकी आभा होती है। कौन-सी चार प्रकारकी? चन्द्रमाकी आभा, सूर्यकी आभा, अग्निकी आभा तथा प्रज्ञाकी आभा।

भिक्षुओ, इन चारों प्रकारकी आभाओंमें यही श्रेष्ठ, यह जो प्रज्ञाकी आभा है।

भिक्षुओ, चार प्रकारकी प्रभा होती है। कौनसे चार प्रकारकी? चन्द्रमाकी आभा प्रभा, सूर्यकी प्रभा, अग्निकी प्रभा तथा प्रज्ञाकी प्रभा। भिक्षुओ, इन चारों प्रकारकी प्रभाओंमें यही श्रेष्ठ है, यह जो प्रज्ञाकी प्रभा है।

भिक्षुओ, चार प्रकारके आलोक हैं। कौनसे चार प्रकारके? चन्द्रमाका आलोक, सूर्यका आलोक, अग्निका आलोक तथा प्रज्ञाका आलोक। भिक्षुओ, इन चारों प्रकारके आलोकोंमें यही श्रेष्ठ है, यह जो प्रज्ञाका आलोक है।

भिक्षुओ, चार प्रकारके प्रकाश हैं। कौनसे चार प्रकारके? चन्द्रमाका प्रकाश, सूर्यका प्रकाश, अग्निका प्रकाश, तथा प्रज्ञाका प्रकाश। भिक्षुओ, इन चारों प्रकारके प्रकाशोंमें यही श्रेष्ठ है, यह जो प्रज्ञाका प्रकाश है।

भिक्षुओ, चार प्रकारकी ज्योतियाँ हैं। कौन-सी चार प्रकार की? चन्द्रमा की ज्योति, सूर्यकी ज्योति, अग्निकी ज्योति तथा प्रज्ञाकी ज्योति। भिक्षुओ, इन चारों प्रकारकी ज्योतियोंमें यही श्रेष्ठ है, यह जो प्रज्ञाकी ज्योति।

भिक्षुओ, ये चार समय होते हैं। कौनसे चार ? समयसे धर्म-श्रवण, समयसे धर्म-चर्चा, समयसे शमथ-भावना तथा समयसे विदर्शना-भावना। भिक्षुओ, ये चार समय होते हैं।

भिक्षुओ, इन चार समयोंपर यदि सम्यक् प्रकार अभ्यास किया जाय पुनः पुनः अभ्यास किया जाय तो क्रमशः आस्रवोंका क्षय हो जाता है। कौनसे चार समयोंपर ? समयपर धर्म-श्रवण, समयपर धर्म-चर्चा, समयपर शमथ-भावना, समयपर विदर्शना-भावना। भिक्षुओ, इन चार समयोंपर यदि सम्यक् प्रकार अभ्यास किया जाय, पुनः पुनः अभ्यास किया जाय तो क्रमशः आस्रवोंका क्षय हो जाता है।

भिक्षुओ, जैसे पर्वतके ऊपर जोरकी वर्षा होनेसे वर्षाकी समाप्तिपर नीचे वहता हुआ पानी पर्वतोंकी कन्दराओं दरारों आदिको भर देता है, कन्दरायें दरारें आदिके भर जानेपर छोटे-मोटे तालाब भर जाते हैं, छोटे-मोटे तालाब भर जानेपर बड़े-बड़े तालाब भर जाते हैं, बड़े बड़े तालाब भर जानेपर छोटी-छोटी नदियाँ भर जाती है, छोटी-छोटी नदियाँ भर जानेपर बड़ी-बड़ी नदियाँ भर जाती है, बड़ी-बड़ी नदियाँ भर जानेपर समुद्र सागर भर जाते हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ, इन चार समयोंपर यदि सम्यक् प्रकार अभ्यास किया जाय, पुनः-पुनः अभ्यास किया जाय तो क्रमशः आस्रवोंका क्षय हो जाता है।

भिक्षुओ, ये चार वाणीके दुश्चरित्र हैं। कौनसे चार ? झूठ बोलना, चुगली खाना, कठोर बोलना तथा बेकार बोलना। भिक्षुओ, ये चार वाणीके सुचरित्र हैं। कौनसे चार ? सत्य बोलना, चुगली न खाना, मीठा बोलना, व्यर्थ न बोलना। भिक्षुओ, ये चार वाणीके सुचरित्र हैं।

भिक्षुओ, ये चार सार-वस्तुयें हैं। कौन-सी चार ? शील सार-वस्तु है, समाधि सार वस्तु है, प्रज्ञा सार वस्तु है, विमुक्ति सार-वस्तु है। भिक्षुओ, ये चार सार-वस्तुयें हैं।

तृतीय पण्णासक।

(१) इन्द्रिय वर्ग

भिक्षुओ, ये चार इन्द्रियाँ हैं। कौन सी चार ? श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्यइन्द्रिय स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय। भिक्षुओ, ये चार इन्द्रियाँ हैं।

भिक्षुओ, ये चार बल हैं। कौनसे चार ? श्रद्धा-बल, वीर्य-बल, स्मृति-बल समाधि-बल। भिक्षुओ, ये चार बल हैं।

भिक्षुओ, ये चार बल हैं। कौनसे चार ? प्रज्ञा-बल, वीर्य-बल निर्दोषता-बल, संग्रह-बल। भिक्षुओ, ये चार बल हैं।

भिक्षुओ, ये चार बल हैं। कौनसे चार? स्मृति-बल, समाधि-बल, निर्दोषता-बल, संग्रह बल। भिक्षुओ ये चार बल हैं।

भिक्षुओ, ये चार बल हैं। कौनसे चार? ज्ञान-बल, भावना-बल, निर्दोषता-बल, संग्रह-बल। भिक्षुओ, ये चार बल हैं।

भिक्षुओ, कल्पोंके ये चार असंखेय हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, जब कल्प का विकास होता है तो यह कहना आसान नहीं कि इतने वर्षमें होता है, इतने सौ वर्षमें होता है, इतने हजार वर्षमें होता है अथवा इतने लाख वर्षमें होता है।

भिक्षुओ, जब कल्प विकसित हुआ हुआ स्थित रहता है तो यह कहना आसान नहीं कि इतने वर्ष, इतने सौ वर्ष, इतने हजार वर्ष अथवा इतने लाख वर्ष स्थित रहता है।

भिक्षुओ, जब कल्पका विनाश होता है तो यह कहना आसान नहीं कि इतने वर्षमें होता है, इतने सौ वर्षमें होता है, इतने हजार वर्षमें होता है, अथवा इतने लाख वर्षमें होता है।

भिक्षुओ, जब कल्प विनष्ट होता हुआ स्थित रहता है तो यह कहना आसान नहीं कि इतने वर्ष, इतने सौ वर्ष, इतने हजार वर्ष अथवा इतने लाख वर्ष स्थित रहता है। भिक्षुओ, कल्पोंके ये चार असंखेय हैं।

भिक्षुओ, दो प्रकारके रोग हैं। कौनसे दो? शारीरिक रोग तथा मानसिक रोग। भिक्षुओ ऐसे प्राणी दिखाई देते हैं जो कहते हैं कि हम वर्ष भर शारीरिक रोगसे निरोग रहे, दो वर्ष निरोग रहे, तीन वर्ष निरोग रहे, चार वर्ष निरोग रहे, पाँच वर्ष निरोग रहे, दस वर्ष निरोग रहे, बीस वर्ष निरोग रहे, तीस वर्ष निरोग रहे, चालीस बर्ष निरोग रहे, पचास वर्ष निरोग रहे, सौ वर्ष और उससे भी अधिक निरोग रहे। किन्तु भिक्षुओ, क्षीणास्रवोंके अतिरिक्त ऐसे प्राणी दुर्लभ हैं जो कह सकें कि हम मानसिक रोगसे एक क्षण भरके लिये भी निरोग रहे।

भिक्षुओ, प्रव्रजितके ये चार रोग हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु महेच्छ होता है, दुःखी रहने वाला होता है, असन्तुष्ट होता है जैसे—तैसे चीवर-पिण्डपात (= भिक्षा) शयनासन तथा रोगीकी दवाई आदिकी आवश्यकताओंके बारेमें। वह महेच्छ होनेके कारण, दुःखी रहनेके कारण, असन्तुष्ट रहनेके कारण जैसे-तैसे चीवर-पिण्डपात (= भिक्षा) शयनासन तथा रोगीकी दवाई आदिकी आवश्यकताके बारेमें, पाप-पूर्ण इच्छाकी पूर्तिके लिये प्रयास करता है। वह प्रयास करता है लाभ-सत्कार प्रशंसाको प्राप्त करनेके लिये। वह उत्साह दिखाता है, कोशिश करता

है, प्रयत्न करता है.....को प्राप्त करनेके लिये, लाभ-सत्कार प्रशंसाके प्राप्त करनेके लिये। वह आत्मज्ञापनके लिये (गृहस्थ) कुलोंके पास जाता है, उसीके लिये उनके पास बैठता है, उसीके लिये धर्मोपदेश देता है, उसीके लिये मल-मूत्र तकको रोके रखता है। भिक्षुओ, प्रव्रजितके ये चार रोग हैं।

इसलिये, भिक्षुओ, यह सीखना चाहिये कि हम महेच्छ नहीं बनेंगे, दुःखी रहने वाले नहीं होंगे, असन्तुष्ट नहीं रहेंगे जैसे-तैसे चीवर, पिण्ड-पात (= भिक्षा) शयनासन तथा रोगीकी दवाई आदिकी आवश्यकताओंके बारेमें। हम पापपूर्ण इच्छा की पूर्तिके लिये प्रयास नहीं करेंगे। हम प्रयास नहीं करेंगे....को प्राप्त करनेके लिये; लाभ-सत्कार-प्रशंसाको प्राप्त करनेके लिये। हम ठण्ड, गर्मी, भूख, प्यास, डांस, मच्छर, हवा-धूप तथा रेंगने वाले जानवरोंके स्पर्शको सहन करने वाले होंगे ; दुर्वचनोंके सहन करने वाले होंगे ; दुःखपूर्ण, तीव्र, प्रखर, कटु, प्रतिकूल, बुरी, प्राणहर शारीरिक वेदनाओंके सहन करने वाले होंगे। भिक्षुओ, इसी प्रकार सीखना चाहिये।

उस समय आयुष्मान सारिपुत्र ने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"आयुष्मान भिक्षुओ।" उन भिक्षुओंने आयुष्मान सारिपुत्र को प्रतिवचन दिया—"आयुष्मान।" आयुष्मान सारिपुत्रने यह कहा "भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी ये चार बातें अपनेमें देखे उसे यह निश्चित ही समझ लेना चाहिये कि कुशल-धर्मों (= शुभ कर्मों) से मेरा ह्रास होगा। भगवानने इसे (कुशल-धर्मोंसे) पतित होना ही कहा है। कौन सी चार बातोंसे? रागकी अधिकता होनेसे, द्वेषकी अधिकता होनेसे, मोहकी अधिकता होनेसे, और गम्भीर-विषयोंमें प्रज्ञा रूपी चक्षुकी गति न होनेसे। भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी ये चार बातें अपनेमें देखे, उसे यह निश्चित ही समझ लेना चाहिये कि कुशल-धर्मों (= शुभ-कर्मों) से मेरा ह्रास होगा। भगवान्ने इसे (कुशल–धर्मों) से पतित होना ही कहा है। भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी ये चार बातें अपनेमें देखे उसे यह निश्चित ही समझ लेना चाहिये कि कुशल धर्मों (= शुभ कर्मों) से मेरा ह्रास न होगा, भगवानने इसे कुशल-धर्मोंसे पतित न होना ही कहा है। कौन सी चार बातोंसे? रागकी क्षीणता होनेसे, द्वेषकी क्षीणता होनेसे, मोहकी क्षीणता होनेसे, गम्भीर विषयोंमें प्रज्ञा रूपी चक्षुकी गति होनेसे। भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी ये चार बातें अपनेमें देखे उसे यह निश्चित ही समझ लेना चाहिये कि कुशल धर्मोंसे मेरा ह्रास न होगा। भगवान्ने उसे कुशल-धर्मोंसे पतित न होना ही कहा है।"

एक समय आनन्द कौसाम्वीके घोषितारामर्मे विहार कर रहे थे। तब एक भिक्षुणीने एक आदमीको बुलाया और कहा—"हे आदमी! जहाँ आर्य आनन्द हैं, वहाँ जाकर मेरा नाम ले, आर्य आनन्दके चरणोंमें सिरसे प्रणाम कर और कह कि अमुक नामकी भिक्षुणी बहुत रोगिणी है। वह आर्य आनन्दके चरणोंमें सिरसे नमस्कार करती है और कहती है कि अच्छा होगा यदि आर्य आनन्द जहाँ भिक्षुणियों का विहार है, जहाँ वह भिक्षुणी रहती है, वहाँ कृपाकर पधारें।" उस आदमीने उस भिक्षुणीको "अच्छा आर्ये" कहा और जहाँ आयुष्मान् आनन्द थे वहाँ पहुँचा। पहुँचकर आयुष्मान् आनन्दको प्रणाम कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए उस आदमीने आयुष्मान आनन्दसे इस प्रकार निवेदन किया—"भन्ते! अमुक नामकी भिक्षुणी रोगिणी है, दुःखी, अत्यन्त पीड़ित है। वह आयुष्मान् आनन्दके चरणोंमें सिरसे नमस्कार करती है और कहती है कि अच्छा होगा यदि आयुष्मान् आनन्द जहाँ भिक्षुणियोंका विहार है, जहाँ वह भिक्षुणी रहती है वहाँ कृपा कर पधारें।" आयुष्मान् आनन्दने चुप रहकर स्वीकार किया।

तब आयुष्मान् आनन्द पहनकर पात्र चीवर ले, जहाँ भिक्षुणियोंका विहार (उपाश्रय) था, वहाँ गये। उस भिक्षुणीने आयुष्मान् आनन्दको दूरसे आते हुए देखा। सिर तक अपनेको ढककर चारपाई पर लेट रही। तब आनन्द जहाँ वह भिक्षुणी थी, वहाँ पहुँचे। पहुँचकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर आयुष्मान् आनन्दने उस भिक्षुणीको इस प्रकार कहा—"बहन! यह शरीर आहारसे उत्पन्न है। आहारके आश्रयसे है। आहार (की तृष्णा) का त्याग करना चाहिये। बहन! यह शरीर तृष्णासे उत्पन्न है। तृष्णाके आश्रयसे है। तृष्णाका त्याग करना चाहिये। बहन! यह शरीर अभिमानसे उत्पन्न है। अभिमानके आश्रयसे है। अभिमानका त्याग करना चाहिये। बहन! यह शरीर मैथुनसे उत्पन्न है। भगवानने कहा है कि मैथुन-कर्म सेतुके विनाशके समान है। बहन! यह जो कहा गया है कि यह शरीर आहारसे उत्पन्न है, आहारके आश्रयसे है, आहार (की तृष्णा) का त्याग करना चाहिये; यह किस आशयसे कहा गया? बहन! भिक्षु सोच विचार कर ठीक तरहसे आहार ग्रहण करता है, न विनोदके लिये, न मदके लिये, न सजावटके लिये, बल्कि जबतक इस शरीरकी स्थिति है तब तक इसे बनाये रखनेके लिये, विहिंसाको दूर करनेके लिये, ब्रह्मचर्य (=श्रेष्ठ जीवन) की सहायताके लिये। मैं पुरानी वेदनाका क्षय कर दूँगा और नई वेदना न उत्पन्न होने दूँगा। मेरी (जीवन) यात्रा निर्दोष होगी और मेरा जीवन) विहरण सुखपूर्वक चलेगा। वह आगे चलकर आहारके आश्रयसे

(उत्पन्न होनेवाली) आहार (की तृष्णा) का त्याग करता है। बहन! 'यह शरीर आहारसे सुमुत्पन्न है, आहाराश्रित है, आहार (की तृष्णा) का त्याग करना चाहिये'—यह जो कहा गया, यह इसी लिये कहा गया।

"बहन! यह जो कहा गया है कि यह शरीर तृष्णासे उत्पन्न है; तृष्णाके आश्रयसे है, तृष्णाका त्याग करना चाहिये; यह किस आशयसे कहा गया? बहन! एक भिक्षु सुनता है कि अमुक नामके भिक्षुने आस्रवोंका क्षय कर दिया है। वह अनास्रव चित्तकी विमुक्ति, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं जानकर, साक्षात्कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मनमें होता है कि कभी मैं भी आस्रवोंका क्षयकर . . . साक्षात् कर, प्राप्तकर विहार करूँगा। वह आगे चलकर, तृष्णासे उत्पन्न होने वाली तृष्णाका त्याग करता है। बहन! 'यह शरीर तृष्णासे उत्पन्न है। तृष्णाके आश्रयसे है। तृष्णाका त्याग करना चाहिये, यह जो कहा गया है, इसी आशयसे कहा गया है।

"बहन! यह जो कहा गया है कि यह शरीर अभिमानसे उत्पन्न है, अभिमानके आश्रयसे है, अभिमानका त्याग करना चाहिये; यह किस आशयसे कहा गया? बहन! एक भिक्षु सुनता है कि अमुक नामके भिक्षुने आस्रवोंका क्षयकर दिया है। वह अनास्रव चित्त की विमुक्ति, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं जानकर साक्षात्कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मनमें होता है उस आयुष्मान् ने आस्रवोंका क्षय कर दिया है। वह अनास्रव चित्तकी विमुक्ति, प्रज्ञाकी विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं जानकर साक्षात्कर प्राप्तकर विहार करता है। तो मैं भी क्यों न करूँ? वह आगे चलकर मानसे उत्पन्न होने वाले अभिमानका त्याग करता है। बहन! 'यह शरीर अभिमानसे उत्पन्न है, अभिमानके आश्रयसे है, अभिमानका त्याग करना चाहिये' यह जो कहा गया है, इसी आशयसे कहा गया है।

"बहन! यह शरीर मैथुनसे उत्पन्न है और मैथुनको भगवान्ने मर्यादा (= सेतु) का भंग करना कहा है।"

तब वह भिक्षुणी चारपाईसे उठी, उत्तरीय-चीवरको एक कंधे पर ओढ़ा, आयुष्मान आनन्दके चरणोंपर सिर रख आयुष्मान् आनन्दसे बोली—"भन्ते! मेरे अपराधको क्षमा करें, जैसे किसी अज्ञके, जैसे किसी मूर्खके, जैसे किसी अकुशल करने वालेके। मैंने ऐसा किया। भन्ते! आर्य आनन्द मेरे अपराधको अपराध करके स्वीकार करें, भविष्यमें संयत रहुँगी।" "बहन! तूने यह अपराध किया, जैसे किसी अज्ञने जैसे किसी मूर्खने, जैसे किसी अकुशल करने वालेने। तूने ऐसा किया। क्योंकि बहन

तू अपराधको अपराध मान धर्मानुसार स्वीकार करती है, हम तेरी इस स्वीकृतिको स्वीकार करते हैं। बहन! आर्य-विनय (बुद्धधर्म) में इसे उन्नतिका ही कारण माना जाता है, यह जो अपराधको अपराध मान लेना और भविष्यमें संयमसे काम लेना।"

भिक्षुओ, दुनियामें सुगत रहें अथवा सुगत-विनय (= बौद्धधर्म) रहे, वह बहुत जनोंके हित, बहुत जनोंके सुखके लिये, लोगोंपर अनुकम्पा करनेके लिये, देवता तथा मनुष्योंके अर्थ (= लाभ) के लिये, हितके लिये तथा सुखके लिये होगा। भिक्षओ! सुगत कौन हैं? भिक्षुओ, तथागत दुनियामें उत्पन्न होते हैं, अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध, विद्या तथा आचरणसे युक्त, सुगत, लोकके जानकार, अनुपम, पुरुषों को दमन करने वाले सारथी तथा देव-मनुष्योंके शास्ता बुद्ध भगवान् हैं।

भिक्षुओ, सुगत-विनय कौन सी है? वे भगवान् बुद्ध धर्मोपदेश करते हैं आदिमें कल्याणकारक, मध्यमें कल्याणकारक, अन्तमें कल्याणकारक, सार्थक सव्यञ्जन परिशुद्ध ब्रह्मचर्य (= श्रेष्ठ जीवन) का प्रकाश करते हैं। भिक्षुओ, इसे सुगत-विनय कहते हैं। इस प्रकार भिक्षुओ, दुनियामें सुगत रहें अथवा सुगत विनय रहे, वह बहुत जनोंके हित, बहुत जनोंके सुखके लिये, लोगोंपर अनुकम्पा करनेके लिये, देवता तथा मनुष्योंके अर्थ (= लाभ) के लिये, हितके लिये, तथा सुखके लिये होगा।

भिक्षुओ, ये चार बातें सद्धर्मके नष्ट होनेका, अन्तर्धान होनेका कारण होती हैं। कौन सी चार बातें? भिक्षुओ, भिक्षु अनुचित शब्दोंसे मिश्रित दुर्गृहीत सूक्तोंका पाठ करते हैं। भिक्षुओ, अनुचित शब्दों वाले सूक्तका अर्थ भी गलत होता है। भिक्षुओ, यह पहली बात है जो सद्धर्मके नष्ट होनेका, अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु दुर्वचनीय होते हैं, दुर्वचनीय स्वभावसे युक्त, असमर्थ अनुशासनको ठीकसे ग्रहण न कर सकने वाले। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो सद्धर्म के नष्ट होनेका, अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, जो भिक्षु बहुश्रुत होते हैं, आगमके जानकार होते हैं, धर्म-धर होते हैं, विनय-धर होते हैं, मातृका-धर होते हैं. वे दूसरोंको ठीकसे याद नहीं कराते हैं। उनके मरनेपर सूक्तोंका क्रम नष्ट हो जाता है, अशरण हो जाता है,। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो सद्धर्मके नष्ट होनेका, अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु बहुत जोड़ू-बटोरू हो जाते हैं, शिथिल हो जाते हैं, पतनकी ओर पूर्वगामी हो जाते हैं, धर्मके विषयमें ढीले-ढीले हो जाते हैं। वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये; जो हस्तगत नहीं है, उसे हस्तगत करनेके लिये; जो

साक्षात् नहीं है, उसे साक्षात करनेके लिये प्रयास नहीं करते। उनके पीछे आने वाले लोग उनका अनुकरण करते हैं। वे भी बहुत जोड़ू-बटोरू हो जाते हैं, शिथिल हो जाते हैं, पतनकी ओर पूर्वगामी हो जाते हैं, धर्मके विषयमें ढीले-ढाले हो जाते हैं। वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, जो हस्तगत नहीं है उसे हस्तगत करनेके लिये, जो साक्षात नहीं है, उसे साक्षात करनेके लिये प्रयास नहीं करते। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्मके नष्ट होनेका, अन्तंधान होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये चार बातें सद्धर्मके नष्ट न होनेका, अन्तर्धान न होनेका कारण होती हैं। कौनसी चार बातें? भिक्षुओ, भिक्षु उचित शब्दोंसे मिश्रित सुगृहीत सूक्तोंका पाठ करते हैं। भिक्षुओ, उचित शब्दों वाले सूक्तका अर्थ भी ठीक होता है। भिक्षुओ, यह पहली बात है जो सद्धर्मके नष्ट न होनेका, अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु सुवच होते हैं, सुवच-स्वभावसे युक्त, समर्थ, अनुशासनको ठीकसे ग्रहण कर सकने वाले। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो सद्धर्मके नष्ट न होनेका अन्तर्धान न होनेका, कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, जो भिक्षु बहुश्रुत होते हैं, आगमके जानकार होते हैं, धर्म-धर होते हैं, विनयधर होते हैं, मातृका-धर होते हैं, वे दूसरोंको ठीकसे याद कराते हैं। उनके मरनेपर सूक्तोंकी परम्परा चालू रहती है, प्रतिष्ठित रहती है। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो सद्धर्मके नष्ट न होनेका, अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

फिर भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु बहुत जोड़ू-बटोरू नहीं होते हैं, शिथिल नहीं होते हैं, पतन की ओर पूर्वगामी नहीं होते हैं, धर्मके विषयमें ढीले-ढाले नहीं होते हैं। वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये; जो हस्तगत नहीं है, उसे हस्तगत करनेके लिये; जो साक्षात नहीं है, उसे साक्षात् करनेके लिये प्रयास करते हैं। उनके पीछे जानेवाले लोग उनका अनुकरण करते हैं। वे भी बहुत जोड़ू-बटोरू नहीं होते हैं, शिथिल नहीं होते हैं, पतनकी ओर पूर्वगामी नहीं होते ह, धर्मके विषयमें ढीले-ढाले नहीं होते हैं। वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, जो हस्तगत नहीं है उसे हस्तगत करनेके लिये, जो साक्षात् नहीं है उसे साक्षात करनेके लिये प्रयास करते हैं। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्मके नष्ट न होनेका, अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

(२) प्रतिपदा वर्ग

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं। कौनसी चार? दुःख पूर्ण-साधना विलम्बित उद्देश्य-सिद्धि, दुःख-पूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि, सुखपूर्ण-साधना विलम्बित सिद्धि, सुखपूर्ण-साधना क्षिप्र-सिद्धि। भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा ह।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं। कौनसी चार? दुःखपूर्ण-साधना विलम्बित उद्देश्य-सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि, सुख पूर्ण साधना विलम्बित-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना-क्षिप्र सिद्धि। भिक्षुओ दुःखपूर्ण साधना विलम्बित-सिद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वभावसे ही तीव्र राग-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण रागसे उत्पन्न होने वाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। स्वभावसे ही तीव्र द्वेष-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण द्वेषसे उत्पन्न होने वाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। स्वभावसे ही तीव्र मोह-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण मोहसे उत्पन्न होने वाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। उसकी पाँचों इंद्रियाँभी दुर्बल होती हैं—श्रद्धा-इंद्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। इन इन्द्रियोंके दुर्बल होनेके कारण वह आस्रव-क्षयकी अवस्थाको विलम्बसे प्राप्त होता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं दुःख पूर्ण साधना विलम्बित उद्देश्य-सिद्धि।

भिक्षुओ, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र-सद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वभावसे ही तीव्र राग-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण रागसे उत्पन्न होने वाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। स्वभावसे ही तीव्र द्वेष-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण द्वेषसे उत्पन्न होने वाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। स्वभावसे ही मोह-सम्पन्न होता है। वह प्रतिक्षण मोहसे उत्पन्न होनेवाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव करता है। उसकी पांचों इन्द्रियाँ सबल होती हो हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। इन इन्द्रियोंके सबल होनेके कारण वह आस्रव क्षयकी अवस्था को शीघ्र प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं दुःख-पूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि।

भिक्षुओ, सुखपूर्ण-साधना विलम्बित-सिद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वभावसे ही तीव्र राग-सम्पन्न नहीं होता। वह प्रतिक्षण रागसे उत्पन्न होने वाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव नहीं करता। स्वभावसे ही तीव्र द्वेष-सम्पन्न नहीं होता। वह प्रतिक्षण द्वेषसे उत्पन्न होनेवाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव नहीं करता है। स्वभावसे ही तीव्र मोह-सम्पन्न नहीं होता है। वह प्रशिक्षण मोहसे उत्पन्न होने वाले दुःख दौर्मनस्यका अनुभव नहीं करता। उसकी पाँचों इन्द्रियाँ दुर्बल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। इन इन्द्रियोंके दुर्बल होनेके कारण वह आस्रव-क्षयकी अवस्थाको विलम्बसे प्राप्त होता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं, सुखपूर्ण साधना विलम्बित-सिद्धि।

भिक्षुओ, सुख पूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वभावसे ही तीव्र राग सम्पन्न नहीं होता वह प्रतिक्षण रागसे उत्पन्न होने दु:ख दौर्मनस्यका अनुभव नहीं करता। स्वभावसे ही तीव्र द्वेष सम्पन्न नहीं होता। वह प्रतिक्षण द्वेषसे उत्पन्न होनेवाले दु:ख दौर्मनस्यको अनुभव नहीं करता। स्वभावसे ही तीव्र मोह सम्पन्न नही होता। वह प्रतिक्षण मोहसे उत्पन्न होने वाले दु:ख दौर्मनस्य का अनुभव नहीं करता। उसकी पांचों इन्द्रियाँ सबल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। इन इन्द्रियोंके सबल होनेके कारण वह आस्रव-क्षय की अवस्थाको शीघ्र प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं सुखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं। कौन सी चार? दु:ख पूर्ण साधना विलम्बित उद्देश्य-सिद्धि, दु:खपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलिम्बित-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि। भिक्षुओ, दु:खपूर्ण साधना, विलम्बित-सिद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ-भावना (जिगुप्सा-भावना) करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल (जिगुप्सा) संज्ञा, सभी लोकोंके प्रति अनासक्त-भाव, सभी संस्कारोंको अनित्य मानने वाला, उसके मनमें मृत्यु-अनुस्मरण सुप्रतिष्ठित होता है। वह इन पांच शैक्ष-बलोंसे युक्त हो विहार करता हैं—श्रद्धा-बल, लज्जा-बल (पाप-) भीरुता बल, वीर्य-बल, तथा प्रज्ञा-बल। उसकी ये पांच इन्द्रियाँ दुर्बल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पांचों इन्द्रियोंके दुर्बल होनेके कारण आस्रव-क्षयकी अवस्थाको विलम्बसे प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं दु:खपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि।

भिक्षुओ, दु:खपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ भावना (=जिगुप्सा भावना) करता है और आहारके प्रति प्रतिकूल (=जिगुप्सा) संज्ञा। सभी लोगोंके प्रति अनासक्त भाव, सभी संस्कारोंको अनित्य मानने वाला। उसके मनमें मृत्यु-अनुस्मरण सुप्रतिष्ठित होता है। वह इन पाँच शैक्ष-बलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धाबल, लज्जा-बल (पाप-) भीरुता बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञाबल। उसकी ये पाँच इन्द्रियाँ सबल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाँचों इन्द्रियोंके सबल होनेके कारण आस्रव-क्षयकी अवस्थाको शीघ्र प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं दु:खपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि।

भिक्षुओ, सुखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, भिक्षु काम-वितर्कोंसे रहित हो, बुरे विचारोंसे रहित हो, प्रथम-ध्यानको प्राप्त कर, विचरता है, जिसमें वितर्क और विचार रहता है, जो एकान्त-वाससे उत्पन्न होता है, जिसमें प्रीति और सुख रहते हैं। वह वितर्क और विचारोंके उपशमनसे अन्दरकी प्रसन्नता और एकाग्रता रूपी द्वितीय-ध्यानको प्राप्त कर विचरता है, जिसमें न वितर्क होते हैं, न विचार, जो समाधिसे उत्पन्न होता है और जिसमें प्रीति तथा सुख रहते हैं। वह प्रीतिसे विरक्त हो, उपेक्षावान् बन विचरता है। वह स्मृतिमान् ज्ञानवान् होता है और (चित्त-) कायसे सुखका अनुभव करता है। वह तृतीय-ध्यानको प्राप्तकर विचरता है, जिसे पंडित जन 'उपेक्षावान्, स्मृतिवान्, सुखपूर्वक विहार करनेवाला' कहते हैं। वह सुख और दुःख—दोनोंके प्रहाणसे सौमनस्य और दौर्मनस्यके पहले ही अस्त हुए रहनेसे (उत्पन्न) चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त हो विचरता है, जिसमें न दुःख होता है, न सुख और होती है (केवल) उपेक्षा तथा स्मृतिकी परिशुद्धि। वह इन पाँच शैक्ष-बलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-बल, लज्जा-बल (पाप-) भीरुताबल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। उसकी ये पाँच इन्द्रियाँ दुर्बल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाँचों इन्द्रियोंके दुर्बल होनेके कारण, आस्रव-क्षयकी अवस्थाको विलम्बसे प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं सुखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि।

भिक्षुओ, सुख पूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि किसे कहते हैं? भिक्षुओ, भिक्षु काम-वितर्कोंसे रहित हो, बुरे विचारोंसे रहित हो प्रथम-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है, जिसमें वितर्क और विचार रहता है जो एकान्त-वाससे उत्पन्न होता है, जिसमें प्रीति और सुख रहते हैं. . . . . द्वितीय-ध्यानको. . . . . तृतीय-ध्यानको . . . . . चतुर्थ-ध्यानको. . . . । वह इन पाँच शैक्ष-बलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धाबल, लज्जा-बल, (पाप-) भीरुता-बल, वीर्य-बल, तथा प्रज्ञा-बल। उसकी ये पाँच इन्द्रियाँ सबल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पांचों इन्द्रियोंके सबल होनेके कारण आस्रव-क्षयकी अवस्थाको शीघ्र प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इसे कहते हैं सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि। भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा (=जीवन विधियाँ) हैं। कौन-सी चार? अक्षमा-प्रतिपदा, क्षमा-प्रतिपदा, दमन-प्रतिपदा तथा शमन प्रतपिदा। भिक्षुओ,

एक आदमी गाली देनेवालेको गाली देता है, क्रोध प्रकट करनेवालेके प्रति क्रोध प्रकट करता है, झगड़ने वालेके साथ झगड़ता है। भिक्षुओ, यह अक्षमा-प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, क्षमा-प्रतिपदा किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी गाली देनेवालेको गाली नहीं देता, क्रोध प्रकट करने वालेके प्रति क्रोध प्रकट नहीं करता, झगड़ने वालेके साथ झगड़ा नहीं करता। भिक्षुओ, यह क्षमा-प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, दमन-प्रतिपदा क्या है? भिक्षुओ, भिक्षु अपनी आँखसे किसी सुन्दर रूपको देखता है। वह उसमें न आँख गड़ाता है, न मजा लेता है, क्योंकि कहीं चक्षुके असंयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल पापमय ख्याल घर न कर लें। उन पापमय ख्यालोंको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपनी आँख को काबूमें रखता है, अपनी आँखपर संयम रखता है। वह अपने कानसे शब्द सुनता है. . . नासिकासे सुगन्धि सूँघता है. . . . .जिह्वासे रस चखता है. . . . . शरीरसे स्पर्श करता है. . . मनसे सोचता है (लेकिन) उसमें न मन गड़ाता है, न मजा लेता है; क्योंकि कहीं मनके असंयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल पापमय ख्याल घर न कर लें। उन पापमय ख्यालों-को दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपने मनको काबूमें रखता है, अपने मन पर संयम रखता है। भिक्षुओ, यह दमन-प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, शमन-प्रतिपदा क्या है? भिक्षुओ, भिक्षुके मनमें जो काम-वितर्क उत्पन्न हुआ है उसे वह जगह नहीं देता, छोड़ देता है, नष्ट कर देता है, मिटा देता है; जो क्रोध उत्पन्न हुआ है उसे वह जगह नहीं देता, छोड़ देता है, नष्ट कर देता है, मिटा देता है; जो हिंसक विचार उत्पन्न हुआ है उसे वह जगह नहीं देता है, छोड़ देता है, नष्ट कर देता है, मिटा देता है। भिक्षुओ, यह शमन-प्रतिपदा है। भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं। कौन-सी चार? अक्षमा-प्रतिपदा, क्षमा-प्रतिपदा,दमन-प्रतिपदा तथा शमन-प्रतिपदा। भिक्षुओ, अक्षमाप्रतिपदा किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी शीत, उष्ण, भूख, प्यास, डंक मारने वाले जीव, मच्छर, हवा, धूप, रेंगनेवाले जीवोंके आघात, दुरुक्त, दुरागत वचनों तथा दुख-दायी, तीव्र, कटु, प्रतिकूल, अरुचिकर, प्राण हर शारीरिक पीड़ाओंको सहन कर सकनेवाला नहीं होता। भिक्षुओ, इसे अक्षमा-प्रतिपदा कहते हैं।

भिक्षुओ, क्षमा-प्रतिपदा किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी शीत, उष्ण. . . . . सहन कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ, इसे क्षमा-प्रतिपदा कहते हैं।

भिक्षुओ, दमन-प्रतिपदा किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु अपनी आँखसे किसी रूपको देखकर. . . कानसे शब्दको सुनकर. . . नासिकासे सुगन्धि सूँघकर. . . जिह्वासे रस चखता है . . . . शरीरसे स्पर्श करता है. . . . मनसे सोचता है (लेकिन) उसमें न मन गड़ाता है, न मजा लेता है; क्योंकि कहीं मनके असंयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल पापमय खयाल घर न कर लें। उन पापमय, ख्यालोंको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपने मनको काबूमें रखता है, अपने मनपर संयम रखता है। भिक्षुओ, यह दमन-प्रतिपदा है।

भिक्षुओ, ये चार प्रतिपदा हैं। कौनसी चार ? दुःख-पूर्ण साधना विलम्बित उद्देश्य-सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बित-सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र-सिद्धि।

भिक्षुओ, इन प्रतिपदाओंमें जो यह दुःखपूर्ण साधना विलम्बित-सिद्धि है, यह दोनों दृष्टियोंसे हीन है; क्योंकि यह दुःख पूर्ण है, इसलिये भी यह हीन कहलाती है और क्योंकि सिद्धि विलम्बसे होती है इसलिये भी हीन कहलाती है। भिक्षुओं, यह प्रतिपदा दोनों दृष्टियोंसे हीन कहलाती है। भिक्षुओ, जो यह प्रतिपदा दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि है, भिक्षुओ यह प्रतिपदा दुःखपूर्ण होनेसे हीन कहलाती है। भिक्षुओ जो यह प्रतिपदा सुखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि, यह विलम्बसे सिद्धि प्राप्त होनेके कारण हीन कहलाती है। भिक्षुओ, जो यह प्रतिपदा सुखपूर्ण साधना क्षिप्रसिद्धि है, वह दोनों दृष्टियोंसे श्रेष्ठ कहलाती है। क्योंकि यह सुखपूर्ण है, इसलिये भी यह श्रेष्ठ कहलाती है और क्योंकि सिद्धि क्षिप्र होती है, इसलिये भी यह श्रेष्ठ कहलाती है। भिक्षुओ, यह प्रतिपदा दोनों दृष्टियोंसे प्रणीत कहलाती है। भिक्षुओ ये चार प्रतिपदा हैं।

उस समय आयुष्मान सारिपुत्र जहाँ आयुष्मान मौद्गल्यायन थे, वहाँ पहुँचे। पहुँचकर आयुष्मान महामौद्गल्यायनके साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम-पूछ चुकनेपर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान सारिपुत्रने आयुष्मान् महामौद्गल्यायनसे यह पूछा—"आयुष्मान! ये चार प्रतिपदा हैं। कौनसी चार? दुःखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बित सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि। आयुष्मान्! ये चार प्रतिपदा हैं। आयुष्मान्! इन चारों प्रतिपदाओंमें किस प्रतिपदाके अनुसार जीवन यापन करनेसे आपका चित्त आस्रवोंसे मुक्त हुआ?" "आयुष्मान् सारिपुत्र! ये चार प्रतिपदा हैं। कौनसी चार? दुःख पूर्ण साधना विलम्बसे सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बसे सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि।

आयुष्मान ये चार प्रतिपदा हैं। इन चारों प्रतिपदाओंमेंसे जो यह दुःखपूर्ण-साधना क्षिप्र-सिद्धि वाली प्रतिपदा है, इसीके अनुसार जीवन यापनसे मेरा चित्त आस्रवोंसे मुक्त हुआ।

उस समय आयुष्मान् महामौद्गल्यायन जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र थे, वहाँ गये। जाकर आयुष्मान् सारिपुत्रके साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेके अनन्तर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान महामौद्गल्यायनने आयुष्मान सारिपुत्रसे यह पूछा—"आयुष्मान सारिपुत्र! ये चार प्रतिपदायें हैं। कौनसी चार? दुःखपूर्ण साधना विलम्वसे सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बसे सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि। आयुष्मान्! सारिपुत्र ये चार प्रतिपदायें हैं। इन चारों प्रतिपदाओंमेंसे किस प्रतिपदाके अनुसार जीवन-यापन करनेसे आस्रवोंसे चित्त विमुक्त हुआ?" "आयुष्मान् मौद्गल्यायन! चार प्रतिपदायें हैं। कौनसी चार? दुःखपूर्ण साधना, विलम्बसे सिद्धि, दुःखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि, सुखपूर्ण साधना विलम्बसे सिद्धि, सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि। आयुष्मान् ये चार प्रतिमायें हैं। इनमें से जो यह सुखपूर्ण साधना क्षिप्र सिद्धि प्रतिपदा है उसके अनुसार जीवन यापन करनेसे चित्त आस्रवोंसे मुक्त हुआ।

भिक्षुओ, दुनियामें चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक आदमी इसी जन्ममें ससंस्कार परिनिर्वाण-प्राप्त होता है। भिक्षुओ, एक आदमी मरनेपर संस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, एक आदमी इसी जन्ममें असंस्कार परिनिर्वाण-प्राप्त होता है। भिक्षुओ, एक आदमी मरनेपर ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, आदमी शरीर रहते ही कैसे ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है? भिक्षुओ, भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ-भावना (=जिगुप्सा भावना) करता है, और आहारके प्रति प्रतिकूल। (=जिगुप्सा) संज्ञा। सभी लोकोंके प्रति अनासक्त मन। सभी संस्कारोंको अनित्य मानने वाला। उसके मनमें मृत्यु-अनुस्मरण सुप्रतिष्ठित होता है। वह इन पांच शैक्ष-बलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-बल, लज्जा-बल (पाप-) भीरुता बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। उसकी ये पांच इन्द्रियां सबल होती हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पांचों इन्द्रियोंके सबल होने के कारण इसी शरीरसे ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, आदमी मरनेपर कैसे ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है? भिक्षुओ, भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ-भावना (जिगुप्सा भावना) करता है और आहारके

प्रति प्रतिकूल (= जिगुप्सा) संज्ञा। सभी लोकोंके प्रति अनासक्त भाव। सभी संस्कारोंको अनित्य मानने वाला। उसके मनमें मृत्यु-अनुस्मरण सुप्रतिष्ठित होता है। वह इन पाँच शैक्षबलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धाबल, लज्जा बल, (पाप-), भीरुता बल, वीर्य-बल, तथा प्रज्ञा-बल। उसकी ये पांच इन्द्रियाँ दुर्बल होती हैं। वह इन इन्द्रियोंके मृदु (दुर्बल) होनेके कारण, शरीरके छुटनेपर ससंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, आदमी इसी शरीरमें कैसे असंस्कार-परिनिर्वाण-प्राप्त होता है? भिक्षुओ, भिक्षु कामवितर्कोंसे पृथक हो. . . . चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त हो विहार करता है। वह इन पाँच शैक्ष-बलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-बल, लज्जा-बल, (पाप-)भीरुता बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बलसे। उसकी ये पांच इन्द्रियाँ सबल होतीं हैं—श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाँचों इन्द्रियोंके सबल होनेके कारण इसी शरीरमें असंस्कार-परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी इसी शरीरमें असंस्कार-परिनिर्वाण-प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, आदमी कैसे शरीरके छूटनेपर असंस्कार परिनिर्वाण-प्राप्त होता है? भिक्षुओ, काम-वितर्कोंसे पृथक हो. . . . चतुर्थ ध्यान को प्राप्त हो विहार करता है। वह इन पाँच शैक्ष-बलोंसे युक्त हो विहार करता है—श्रद्धा-बल, लज्जा-बल, (पाप–) भीरुता-बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बलसे। उसकी ये पांच इन्द्रियाँ दुर्बल होती हैं। श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति,-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। वह इन पाँचों इन्द्रियोंके दुर्बल होनेके कारण शरीर छुटनेपर असंस्कार परिनिर्वाण प्राप्त होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी शरीर छुटनेपर असंस्कार परिनिर्वाण-प्राप्त होता है।

एक समय आयुष्मान् आनन्द कोसम्बीमें विहार करते थे घोषितारामसें। वहाँ आयुष्मान् आनन्दने भिक्षुओंको निमंत्रित किया—"आयुष्मानो!" भिक्षुओंने प्रत्युत्तर दिया–"आयुष्मान"। आयुष्मान् आनन्दने यह कहा—"आयुष्मानो! जो भी कोई भिक्षु वा भिक्षुणी मेरे पास आकर अर्हत्व-प्राप्तिकी बात करते हैं, वे सब चारों मार्गोंसे अथवा इन चारों मार्गोंमेंसे किसी एक मार्गसे ही अर्हत्व प्राप्त होते हैं। कौनसे चार मार्गोंसे? आयुष्मानो! एक भिक्षु पहले शमथ की भावना करके विदर्शना-भावनाका अभ्यास करता है। जब वह शमथपूर्वक विदर्शना भावनाका अभ्यास करता है तो उसे मार्ग प्रकट होता है, वह उस मार्गपर चलता है,

उसका बहुत बहुत अभ्यास करता है। जब वह उस मार्गका बहुत बहुत अभ्यास करता है। उसके 'संयोजन' 'प्रहीण होते हैं, अनुशय नष्ट होते हैं।

फिर आयुष्मानो! भिक्षु पहले विदर्शना-भावनाका अभ्यासकर शमथ-भावनाका अभ्यास करता है। जब वह विदर्शनापूर्वक शमथ भावनाका अभ्यास करता है तो उसे मार्ग प्रकट होता है, वह उस मार्ग पर चलता है, उसका बहुत बहुत अभ्यास करता है,। जब वह उस मार्गका बहुत बहुत अभ्यास करता है, तो उसके संयोजन प्रहीण होते हैं, अनुशय नष्ट होते हैं।

फिर आयुष्मानो, भिक्षु शमथ-भावना तथा विपश्यना भावनाका एक साथ अभ्यास करता है। जब वह शमथ-भावना तथा विपश्यना-भावनाका एक साथ अभ्यास करता है तो उसे मार्ग प्रकट होता है। वह उस मार्गपर चलता है, उसका बहुत बहुत अभ्यास करता है। जब वह उस मार्गका बहुत बहुत अभ्यास करता है तो उसके संयोजन प्रहीण होते हैं, अनुशय नष्ट होते हैं।

फिर आयुष्मानो, एक भिक्षुके मनमें शमथ और विदर्शना भावनासे उत्पन्न हुआ हुआ मान रह जाता है। वह समय आता है कि ऐसा चित्त स्वयं ही स्थिर हो जाता है, शान्त हो जाता है, एकाग्र हो जाता है, समाधिस्थ हो जाता है। उसे मार्ग प्रकट होता है। वह उस मार्गपर चलता है। उसका बहुत बहुत अभ्यास करता है। जब वह उस मार्गका बहुत बहुत अभ्यास करता है तो उसके संयोजन प्रहीण होते हैं, अनुशय नष्ट होते हैं। आयुष्मानो! जो भी कोई भिक्षु या भिक्षणी मेरे पास आकर अर्हत्व-प्राप्ति की बात करते हैं, वे सब चारों मार्गोंसे अथवा इन चारों मार्गोंमेंसे किसी एक मार्गसे ही अर्हत्वको प्राप्त होते हैं।

(३) सञ्चेतना-वर्ग

भिक्षुओ, शरीरके रहनेपर शारीरिक-चेतनाके कारण आदमी अन्दरूनी सुख-दुःखको प्राप्त होता है, वाणीके रहनेपर वाणी-सम्बन्धी संचेतनाके कारण आदमी अन्दरूनी सुख-दुःखको प्राप्त होता है, मनके रहनेपर मन-सम्बन्धी संचेतनाके कारण आदमी अन्दरूनी सुख-दुःखको प्राप्त होता है। ये सब अविद्याके मूलहेतु होनेके कारण भिक्षुओ, आदमी या तो स्वयं ही ऐसा शारीरिक-कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है, अथवा किसी दूसरेकी प्रेरणासे ऐसा शारीरिक कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है। जान बूझकर ऐसा शारीरिक-कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना होता है, बिना जाने बिना बूझे ऐसा शारीरिक कर्म करता है जिसके

परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है। भिक्षुओ, आदमी या तो स्वयं ही वाणीका कर्म करता है जिसके परिणाम स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है, अथवा किसी दूसरेकी प्रेरणासे ऐसा वाणीका कार्य करता है, जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है। जानबूझकर ऐसा वाणीका कार्य करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना होता है। बिना जाने–बिना बूझे ऐसा वाणी का कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है। भिक्षुओ आदमी या तो स्वयं ही मानसिक कर्म करता है जिसके परिणाम स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है, अथवा किसी दूसरेकी प्रेरणासे ऐसा मानसिक कर्म करता है, जिसके परिणाम स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है। जान बूझकर ऐसा मानसिक कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है। बिना जाने बूझे ऐसा मानसिक कर्म करता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसे सुख-दुःख भुगतना पड़ता है।

भिक्षुओं, इन सब कार्योंमें अविद्याका ही हाथ रहता है। अविद्याका मूलोच्छेद हो जानेसे वह शरीर नहीं रहता जिसके कारण सुख-दुःखकी अनुभूति होती है, वह वाणी नहीं रहती जिसके कारण सुख-दुःख की अनुभूति होती है, वह मन नहीं रहता जिसके कारण सुख-दुःखकी अनुभूति होती है। वह क्षेत्र नहीं होता, वह इन्द्रियाँ (=वस्तु) नहीं होतीं, वे (छः) आयतन नहीं होते, वे आधार (=अधिकरण) नहीं होते जिनके कारण सुख–दुःख की अनुभूति होती है।

भिक्षुओ, चार प्रकारकी योनियाँ (=आत्मभाव-प्रतिलाभ) हैं? कौनसे चार? भिक्षुओ, एक ऐसी योनि है, जिसमें आत्म-संचेतना व्यवहारमें आती है, परसंचेतना नहीं, एक ऐसी योनि है, जिसमें परसंचेतना व्यवहारमें आती है आत्म-संचेतना नहीं; एक ऐसी योनि है, जिसमें आत्म-संचेतना तथा परसंचेतना दोनों लागू होती हैं, एक ऐसी योनि है, जिसमें न आत्म-संचेना लागू होती हैं, न परसंचेतना। भिक्षुओ, ये चार योनियाँ (=आत्म-प्रतिलाभ) हैं।

ऐसा कहनेपर आयुष्मान सारिपुत्रने भगवान्को यह कहा—भन्ते! भगवान् द्वारा संक्षिप्त रूपसे दिये गये इस उपदेशका मैं इस प्रकार विस्तारसे अर्थ ग्रहण करता हूँ। भन्ते! जो यह वह योनि है जिसमें आत्म-संचेतना लागू होती है, पर संचेतना नहीं, आत्म-संचेतनाके ही हेतुसे उन प्राणियोंकी उन उन योनिमें से 'च्युति' होती है। भन्ते! जो यह वह योनि है जिसमें परसंचेतना लागू होती है, आत्म-संचेतना नहीं, पर-संचेतनाके ही हेतुसे उन उन प्राणियोंकी उस उस योनिमेंसे 'च्युति' होती है।

भन्ते ! जो यह वह योनि है जिसमें आत्म-संचेतना भी लागू होती है, परसंचेतना भी लागू होती है, आत्म-संचेतना तथा परसंचेतनाके ही हेतुसे उन उन प्राणियोंकी उस उस योनिमेंसे 'च्युति' होती है। भन्ते ! जो यह वह योनि है जिसमें न आत्म-संचेतना लागू होती है, न परसंचेतना, उस योनिमें हमें किन देवताओंको देखना चाहिये ?

"सारिपुत्र ! वहाँ हमें न सञ्ञानासञ्ञा-यतनके देवताओंको देखना चाहिये।"

"भन्ते ! इसका क्या हेतु है, इसका क्या कारण है, कि उस कायासे च्युत होनेपर कुछ प्राणी आगामी होते हैं, इस लोकमें उनका आगमन होता है, इसका क्या हेतु है, इसका क्या कारण है कि उस कायासे च्युत होनेपर कुछ प्राणी अनागामी होते हैं, इस लोकमें उनका आगमन नहीं होता ?" "सारिपुत्र ! एक आदमीके नीचेकी ओर खींचने वाले संयोजन प्रहीण नहीं हो गये रहते हैं। वह इसी शरीरमें न सञ्ञान सञ्ञायतनको प्राप्त कर विहार करता है। वह उसमें मजा लेता है, उसीमें आनन्द मनाता है, उसीमें संतुष्ठ रहता है। वह वहीं स्थित रहकर, उसीमें लगा रहकर, उसीका अभ्यासी बनकर, उसी अवस्थामें शरीर त्यागकर देनेसे न संञ्ञानासंञ्ञायतन के देवलोकमें जन्मग्रहण करता है। वहाँसे च्युत होनेपर वह आगामी होता है, फिर इस लोकमें जन्ग्रहण करने वाला। सारीपुत्र ! एक आदमीके नीचेकी ओर खींचने वाले संयोजन प्रहीण हो गये रहते हैं। वह इसी शरीरमें न सञ्ञानासञ्ञ-यतनको प्राप्त कर विहार करता है। वह उसमें मजा लेता है, उसीमें आनन्द मनाता है, उसीमें संतुष्ठ रहता है। वह वहीं स्थित रहकर, उसीमें लगा रहकर, उसीका अभ्यासी बनकर, उसी अवस्थामें शरीर त्याग कर देनेसे न सञ्ञानासञ्ञयतनके देवलोकमें जन्म ग्रहण करता है। वहाँसे च्युत होनेपर वह अनागामी होता है, फिर इस लोकमें जन्म नहीं ग्रहण करने वाला। सारीपुत्र ! यह हेतु है, यह कारण है, जिससे कुछ प्राणी उस कायासे च्युत होनेपर अनागामी हो जाते हैं, फिर इस लोकमें नहीं आने वाल।"

उस समय आयुष्मान सारिपुत्रने भिक्षुओंको निमंत्रित किया—"आयुष्मान भिक्षुओ।" उन भिक्षुओंने आयुष्मान सारिपुत्रको उत्तर दिया—"आयुष्मान्।" आयुष्मान् सारिपुत्रने यह कहा—"आयुष्मानो ! मुझे उपसम्पन्न हुए आधा महीना ही हुआ है। मैंने अर्थ (-ज्ञान) प्राप्त कर लिया है, साथ साथ शब्द-ज्ञान भी। उसे मैं नाना तरहसे कहता हूँ, देशना करता हूँ, प्रकट करता हूँ, प्रस्थापित करता हूँ, उघाड़ता हूँ, विश्लेषण करता हूँ, तथा स्पष्ट करता हूँ। जिसको इस विषयमें कोई शंका हो,

संदेह हो वह मुझसे प्रश्न पूछ ले। मैं उसका निराकरण करूँगा। हमारे सामने हमारे शास्ता हैं जो धर्मोंके विषयमें भली भाँति दक्ष हैं।

"आयुष्मानो! मुझे उपसम्पन्न हुए आधा महीना ही हुआ। मैंने धर्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया ही, साथ साथ शब्द ज्ञान भी। उसे मैं नाना तरहसे कहता हूँ, देशना करता हूँ, प्रकट करता हूँ, प्रस्थापित करता हूँ, उघाड़ता हूँ, विश्लेषण करता हूँ तथा स्पष्ट करता हूँ। जिसको इस विषयमें कोई शंका हो, संदेह हो वह मुझसे प्रश्न पूछ ले। मैं उसका निराकरण करूँगा। हमारे सामने हमारे शास्ता हैं जो धर्मोंके विषयमें भली-भाँति दक्ष हैं।

"आयुष्मानो! मुझे उपसम्पन्नता हुए आधा महीना ही हुआ है। मैंने निरुक्ति (—ज्ञान) प्राप्त कर लिया है, साथ साथ शब्द-ज्ञान भी। उसे मैं नाना तरहसे कहता हूँ, देशना करता हूँ, प्रकट करता हूँ, प्रस्थापति करता हूँ, उघाड़ता हूँ, विश्लेषण करता हूँ तथा स्पष्ट करता हूँ। जिसको इस विषयमें कोई शंका हो, संदेह हो वह मुझसे प्रश्न पूछ ले। मैं उसका निराकरण करूंगा। हमारे सामने हमारे शास्ता हैं जो धर्मोंके विषयमें भली-भाँति दक्ष हैं।

"आयुष्मानो! मुझे उपसम्पन्न हुए आधा महीना ही हुआ है। मैंने प्रतिभा (ज्ञान) प्राप्त कर लिया है, साथ साथ शब्द-ज्ञान भी। उसे मैं नाना तरहसे कहता हूँ, देशना करता हूँ, प्रकट करता हूँ, प्रस्थापित करता हूँ, उघाड़ता हूँ, विश्लेषण करता हूँ तथा स्पष्ट करता हूँ। जिसको इस विषयमें कोई शंका हो, संदेह हो वह मुझसे प्रश्न पूछ ले। मैं उसका निराकरण करूँगा। हमारे सामने हमारे शास्ता हैं जो धर्मोंके विषयमें भलि प्रकार दक्ष हैं।

"तब आयुष्मान महाकोटिठ्त जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र थे वहाँ गये। जाकर आयुश्ष्मान् सारिपुत्रके साथ कुशल क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर एक ओर बैठकर आयुष्मान कोटिठ्तने आयुष्मान सारिपुत्रसे कहा—आयुष्मान्! क्या छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता है!

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान! तो क्या छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध होने जानेपर कुछ शेष नहीं रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध होनेपर कुछ शेष रहता भी है और नहीं भी रहता है?"

"आयुष्मान् ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध होनेपर कुछ शेष रहता नहीं भी है और न नहीं भी रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर भी अन्य कुछ शेष रहता है' कहनेपर भी आप कहते हैं, 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो'; छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष नहीं रहता है, कहनेपर भी आप कहते हैं, 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो;' छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य-निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता भी है और नहीं भी रहता है कहने पर भी आप कहते हैं 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो; छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य-निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष नहीं रहता है और नहीं नहीं रहता है, कहनेपर भी आप कहते हैं,'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो,' तो आयुष्मान्! आपके इस कथनका क्या अर्थ समझा जाय?" "आयुष्मान्! छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता है, कहना भी जो अकथ्य है उसका कहना है; छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष नहीं रहता है, कहना भी जो अकथ्य है उसका कहना है; छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता भी है और नहीं भी रहता है, कहना भी जो अकथ्य है उसका कहना है; छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ न शेष रहता है और न नहीं रहता हैं, कहना भी जो अकथ्य है उसका कहना है। आयुष्मान् जहाँतक छह स्पर्शायतनों की सीमा है वहीं तक (वाणीके) प्रपंचकी सीमा है, जहाँ तक (वाणीके) प्रपंचकी सीमा है वहीं तक छह स्पर्शायतनोंकी सीमा है। आयुष्मान्! छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेसे (वाणी) के प्रपंचका निरोध हो जाता है। (वाणीके) प्रपंचका निरोध हो जानेसे प्रपंचका उपशमन हो जाता है।

तब आयुष्मान् आनन्द जहाँ आयुष्मान महाकोट्ठित थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर आयुष्मान् महा-कोट्ठितसे कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेमकी बातचीत समाप्त होनेपर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान् आनन्दने

आयुष्मान् महाकोट्ठितको यह कहा—"आयुष्मान्! क्या छह स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष नहीं रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ रहता भी है और नहीं भी रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! तो क्या छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य हो जानेपर अन्य कुछ न शेष रहता है और न नहीं रहता है?"

"आयुष्मान्! ऐसा मत कहो।"

"आयुष्मान्! छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता है, कहनेपर भी आप कहते हैं, 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो;' छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष नहीं रहता है, कहनेपर भी आप कहते हैं, 'आयुष्मान् ऐसा मत कहो;' छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता भी है और नहीं भी रहता है, कहनेपर भी आप कहते हैं 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो;' छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य निरोध हो जानेपर अन्य कुछ न शेष रहता है और न नहीं रहता है, कहनेपर भी आप कहते है, 'आयुष्मान्! ऐसा मत कहो,' तो आयुष्मान् आपके इस कथनका क्या अर्थ समझा जाय?"

"आयुष्मान्! छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य निरोध हो जाने पर अन्य कुछ शेष रहता है, कहना भी जो अकथ्य है, उसका कहना है; छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जाने पर अन्य कुछ शेष नहीं रहता है, कहना भी जो अकथ्य है, उसका कहना है; छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य निरोध हो जानेपर अन्य कुछ शेष रहता भी है और नहीं भी रहता है, कहना भी जो अकथ्य है, उसका कहना है; छः स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य-निरोध हो जानेपर अन्य कुछ न शेष रहता है और न नहीं रहता है, कहना भी जो अकथ्य है, उसका कहना है। आयुष्मान्! जहाँ तक छः स्पर्शायतनोंकी सीमा है, वहीं तक (वाणीके) प्रपंचकी सीमा है। जहाँ तक (वाणीके) प्रपंचकी सीमा है, वहीं तक छः स्पर्शायतनोंकी सीमा है। आयुष्मान्! छः

स्पर्शायतनोंका निःशेष वैराग्य, निरोध हो जानेसे (वाणीके) प्रपंचका निरोध हो जाता है। (वाणीके) प्रपंचका निरोध हो जानेसे प्रपंचका शमन हो जाता है।

उस समय आयुष्मान् उपवान जहाँ आयुष्मान सारिपुत्र थे, वहाँ गये। जाकर आयुष्मान् सारिपुत्रके साथ कुशल-क्षेमकी वार्ता की। कुशल-क्षेमकी बातचीत समाप्त होनेपर एक ओर बैठे, आयुष्मान् उपवानने आयुष्मान सारिपुत्रसे यह कहा—"आयुष्मान सारिपुत्र ! क्या 'विद्या' से दुःखका मूलोच्छेद सम्भव है ?'

"आयुष्मान् ! नहीं।"

"आयुष्मान सारिपुत्र ! तो क्या 'आचरण' से दुःख का मूलोच्छेद सम्भव है ?

"आयुष्मान् ! नहीं।"

"आयुष्मान सारिपुत्र ! तो क्या विद्या तथा आचरणसे दुःखका मूलोच्छेद सम्भव है ?"

"आयुष्मान् ! नहीं।"

"आयुष्मान् सारिपुत्र ! तो क्या बिना विद्या तथा आचरण से दुःखका मूलोच्छेद सम्भव है ?"

"आयुष्मान् ! नहीं।"

"आयुष्मान सारिपुत्र ! यह क्या है कि यह पूछने पर कि क्या विद्यासे दुःखका मूलोच्छेद होता है, आप कहते हैं, 'आयुष्मान् नहीं;' यह पूछनेपर भी कि क्या आचरणसे दुःखका मूलोच्छेद होता है, आप कहते हैं, 'आयुष्मान् ! नहीं', यह पूछनेपर भी कि क्या विद्या तथा आचरणसे दुःखका मूलोच्छेद होता है, आप कहते हैं, "आयुष्मान् नहीं;' यह पूछने पर भी कि क्या बिना विद्या और आचरणके दुःखका मूलोच्छेद होता है, आप कहते हैं, 'आयुष्मान् ! नहीं' तो फिर आयुष्मान् ! दुःखका मूलोच्छेद कैसे होता है ?

'आयुष्मान् ! यदि विद्यासे दुःखका मूलोच्छेद सम्भव माना जाय, तो उपादान-स्कन्धोंके रहते भी दुःखका मूलोच्छेद सम्भव होगा, यदि आचरणसे दुःखका मूलोच्छेद सम्भव माना जाय, तो उपादान-स्कधोंके रहते भी दुःखका मूलोच्छेद सम्भव होगा, यदि विद्या तथा आचरणसे दुःखका मूलोच्छेद सम्भव माना जाय, तो उपादान स्कन्धोंके रहते भी दुःखका मूलोच्छेद सम्भव होगा, यदि बिना विद्या और आचरणके दुःखका मूलोच्छेद सम्भव माना जाय, तो पृथक-जन द्वारा भी दुःखका अन्त सम्भव माना जायेगा। आयुष्मान् ! पृथक-जन विना विद्याचरणके आचरण-रहित होता

है। वह यथार्थ बातको न जानता है, न देखता है। जो आचरण-सम्पन्न होता है वही जानकर, बूझकर दुःखका अन्त करने वाला होता है।

भिक्षुओ, श्रद्धावान् भिक्षुको यदि आकांक्षा करनी हो तो यही आकांक्षा करनी चाहिये कि मैं ऐसा बनूँ जैसे सारिपुत्र-मौद्गल्यायन। भिक्षुओ, यही तुला है, यही माप है मेरे श्रावकोंके लिये ये जो सारिपुत्र-मौद्गल्यायन हैं। भिक्षुओ, श्रद्धावान भिक्षुणीको यदि आकांक्षा करनी हो तो यही आकांक्षा करनी चाहिये कि मैं ऐसी बनूँ जैसी खेमा (= क्षेमा) तथा उत्पल वर्णा। भिक्षुओ, यही तुला है, यही माप है, मेरी श्राविकाओंके लिये ये जो क्षेमा तथा उत्पल-वर्णा हैं। भिक्षुओ, श्रद्धावान् उपासक को यदि आकांक्षा करनी हो तो यही आकांक्षा करनी चाहिये कि मैं ऐसा बनूँ जैसा चित्र गृहपति अथवा हत्थक आलवक। भिक्षुओ, यही तुला है, यही माप है मेरे श्रावक उपासकोंके लिये ये जो चित्त गृहपति अथवा अत्थक आलवक। भिक्षुओ, श्रद्धालु उपासिका को यदि आकांक्षा करनी ही तो यही आकांक्षा करनी चाहिये कि मैं ऐसी बनूँ जैसी खज्जुतरा उपासिका अथवा वेलुकण्टकी नन्द माता। भिक्षुओ, मेरी श्राविका उपासिकाओंके लिये यह तुला है, यह भाव है, ये जो खज्जुत्तरा उपासिका अथवा वेलु-कण्टकी नन्दमाता।

उस समय आयुष्मान् राहुल जहाँ भगवान थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान् राहुलको भगवान्ने यह कहा—राहुल! जो यह अपने भीतरकी पृथ्वी-धातु है, यह पृथ्वी-धातु ही है। उसके बारेमें यथार्थ रूपसे जानकर यही समझना चाहिये कि न तो वह मेरी है, न मैं वह हूँ, न वह मेरी 'आत्मा' है। इस प्रकार उसे सम्यक् प्रकारसे समझ लेनेपर पृथ्वी-धातुसे निर्वेद प्राप्त होता है, पृथ्वी-धातुसे चित्त विरक्त होता है। राहुल! जो यह अपने भीतरकी अप्-धातु है और यह जो बाहर की अप्-धातु है, यह अप् धातु ही है। उसके बारेमें यथार्थ रूपसे जानकर यही समझना चाहिये कि न तो वह मेरी है, न मैं वह हूँ, न वह मेरी 'आत्मा' है। इस प्रकार उसे सम्यक्-प्रकारसे समझ लेनेपर अप्-धातुसे निर्वेद प्राप्त होता है, अप्-धातुसे चित्त विरक्त होता है। राहुल! जो यह अपने भीतरकी तेज-धातु है, और यह जो बाहरकी तेज-धातु है, यह तेज-धातु ही है। उसके बारेमें यथार्थ रूपसे जानकर यही समझना चाहिये कि न तो वह मेरी है, न मैं वह हूँ, न वह मेरी 'आत्मा' है। इस प्रकार इसे सम्यक् प्रकारसे समझ लेनेपर तेज़-धातुसे निर्वेद प्राप्त होता है, तेज-धातुसे चित्त-वैराग्य प्राप्त होता है। राहुल! जो यह अपने भीतरकी वायु-धातु है, और यह जो बाहरकी वायु-धातु है, यह वायु-धातु ही

है। उसके बारेमें यथार्थ रूपसे जानकर यही समझना चाहिये कि न तो वह मेरी है, न मैं वह हूँ और न वह मेरी 'आत्मा' है। इस प्रकार उसे सम्यक् प्रकार से समझ लेनेपर वायु-धातुसे निर्वेद प्राप्त होता है, वायु-धातुसे चित्त-वैराग्य प्राप्त होता है। राहुल! जब भिक्षु इन चारों धातुओंको न अपना करके और न अपनेमें करके देखता है तो राहुल यही कहलाता है भिक्षुकी तृष्णाको छेद डालना, संयोजनको पार कर जाना, अभिमानका सम्यक् प्रकार मर्दन कर, दुःखका अन्त कर डालना।

भिक्षुओ, दुनियामें चार तरहके आदमी विद्यमान हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह सत्काय-निरोध (= निर्वाण को मनमें स्थान देता है। सत्काय-निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देनेपर उसका चित्त उसमें रमण नहीं करता, प्रसन्न नहीं होता, स्थिर नहीं होता, आकर्षित नहीं होता। भिक्षुओ, इसकी आशा नहीं करनी चाहिये कि उस भिक्षुको निर्वाण लाभ होगा। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी चिपचिपे हाथोंसे पेड़की शाखाको ग्रहण करे। उसका वह हाथ चिपट भी जायगा, ग्रहण भी कर लिया जायगा, धर भी लिया जायगा। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह सत्काय निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देता है। सत्काय-निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देने पर उसका चित्त उसमें रमण नहीं करता, प्रसन्न नहीं होता, स्थिर नहीं होता, आकर्षित नहीं होता। भिक्षुओ, इसकी आशा नहीं करनी चाहिये कि उसभि क्षुको निर्वाण लाभ होगा।

भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्तकर विहार करता है। वह सत्काय निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देता है। सत्काय-निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देनेपर उसका चित्त उसमें रमण करता है, प्रसन्न होता है, स्थिर होता है, आकर्षित होता है। भिक्षुओ, इसकी आशा करनी चाहिये कि उस भिक्षुको निर्वाण लाभ होगा। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी स्वच्छ हाथोंसे पेड़ की शाखाको ग्रहण करे। उसका वह हाथ न चिपटेगा, न ग्रहण किया जायगा, न घर लिया जायगा। इसी प्रकार भिक्षुओ एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह सत्काय निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देता है। सत्काय निरोध (= निर्वाण) को मनमें स्थान देने पर उसका चित्त उसमें रमण करता है, प्रसन्न होता है, स्थिर होता है, आकर्षित होता है। भिक्षुओ, इसकी आशा करनी चाहियें कि उस भिक्षुको निर्वाण लाभ होगा।

भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह अविद्याके उच्छेद (= अर्हत्व) को मनमें स्थान देता है। अविद्याके उच्छेद (= अर्हत्व) को मनमें स्थान देने पर उसका चित्त उसमें रमण नहीं करता, प्रसन्न नहीं होता, स्थिर नहीं होता, आकर्षित नहीं होता। भिक्षुओ, इसकी आशा नहीं करनी चाहिये कि उस भिक्षुको अविद्याका उच्छेद (= अर्हत्व) प्राप्त होगा। भिक्षुओ, जैसे कोई अनेक वर्ष पुराना तालाब हो और एक आदमी उसमें पानी आनेके जो रास्ते हैं उन्हें तो बन्द कर दे, किन्तु जो पानी जानेके रास्ते हैं उन्हें खोल दे। देव भली प्रकार बरसे। तब भी भिक्षुओ, यह आशा नहीं करनी चाहिये कि उस तालाबका बाँध टूट जायगा। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्तकर विहार करता है। वह अविद्याके उच्छेद (= अर्हत्व) को मनमें स्थान देता है। अविद्याके उच्छेद (= अर्हत्व) को मनमें स्थान देने पर उसका चित्त उसमें रमण नहीं करता, प्रसन्न नहीं होता, स्थिर नहीं होता आकर्षित नहीं होता। भिक्षुओ, इसकी आशा नहीं करनी चाहिये कि उस भिक्षुको अविद्याका उच्छेद (= अर्हत्व) प्राप्त होगा।

भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह अविद्याके उच्छेद (= अर्हत्व) को मनमें स्थान देता है। अविद्याके उच्छेद (= अर्हत्व) को मनमें स्थान देनेपर उसका चित्त उसमें रमण करता है, प्रसन्न होता है, स्थिर होता है, आकर्षित होता है। भिक्षुओ, इसकी आशा करनी चाहिये कि उस भिक्षुको अविद्याका उच्छेद (= अर्हत्व) प्राप्त होगा। भिक्षुओ, जैसे कोई अनेक वर्ष पुराना तालाब हो और एक आदमी उसमें पानी आनेके जो रास्ते हैं उन्हें तो खोल दे, किन्तु जो पानी जानेके रास्ते हैं उन्हें बन्दकर दे। देव भली प्रकार बरसे। तब भिक्षुओ, यह आशा करनी चाहिये कि उस तालाबका बांध टूट जायगा। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक भिक्षु चित्तकी एक शान्त विमुक्तिको प्राप्त कर विहार करता है। वह अविद्याके उच्छेद (= अर्हत्व) को मनमें स्थान देता है। अविद्याके उच्छेद (= अर्हत्व) को मनमें स्थान देनेपर उसका चित्त उसमें रमण करता है, प्रसन्न होता है, स्थिर होता है, आकोर्षित होता है। भिक्षुओ इसकी आशा करनी चाहिये कि उस भिक्षुको अविद्याका उच्छेद (= अर्हत्व) प्राप्त होगा। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार प्रकारके लोग विद्यमान हैं।

तब आयुष्यमान् आनन्द जहाँ आयुष्यमान् सारिपुत्र थे, वहाँ गये। जाकर आयुष्यमान् सारिपुत्रके साथ कुशल-क्षेम वार्ता की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्यमान् आनन्दने आयुष्यमान् सारिपुत्रसे यह पूछा—

"आयुष्यमान् सारिपुत्र! इसका क्या हेतु है, क्या कारण है, जिससे कुछ प्राणी इसी शरीरके रहते परिनिर्वाणको नहीं प्राप्त होते हैं?" "आयुष्मान् आनन्द! प्राणी (अविद्या) की कमी करने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे नहीं जानते, (विद्याको) स्थिर करने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे नहीं जानते, विशेष (ज्ञान)की ओर ले जाने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे नहीं जानते, (विषयको) बींधने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे नहीं जानते। आनन्द! यही हेतु है, यही कारण है, जिससे कुछ प्राणी इसी शरीरके रहते परिनिर्वाणको नहीं प्राप्त होते हैं।"

"आयुष्मान् सारिपुत्र! इसका क्या हेतु है, क्या कारण है, जिससे कुछ प्राणी इसी शरीरके रहते परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं?"

"आयुष्मान् आनन्द! प्राणी (अविद्याकी) कमी करने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे जानते हैं, (विद्याको) स्थिर करने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे जानते हैं, विशेष ज्ञानकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे जानते, हैं (विषयको) बींधने वाली प्रज्ञाको यथार्थ रूपसे जानते हैं। आनन्द! यही हेतु है, यही कारण है, जिससे कुछ प्राणी इसी शरीरके रहते परिनिर्वाणको प्राप्त होते हैं।"

एक समय भगवान (बुद्ध) भोग नगरके आनन्द-चैत्यमें विहार कर रहे थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओंको आमन्त्रित किया। उन भिक्षुओंने भगवान्को "भदन्त" कहकर प्रति-वचन दिया। भगवान्ने यह कहा—"भिक्षुओ, चार महत्व-पूर्ण उपदेश दे रहा हूँ। उन्हें सुनो। अच्छी प्रकार मनमें धारण करो। कहता हूँ।" उन भिक्षुओंने उन्हें प्रतिवचन दिया—"भन्ते! बहुत अच्छा।" तब भगवान्ने ऐसा कहा—"भिक्षुओ! चार महत्वपूर्ण उपदेश कौनसे हैं? भिक्षुओ, यदि कोई मित्र ऐसा कहे कि आयुष्मानो मैंने स्वयं भगवानके मुँहसे ऐसा सुना, भगवानके मुँहसे ग्रहण किया कि यह धर्म है, यह विषय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभि-नन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोंको अच्छी तरह ग्रहण कर, सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर वे न सूत्रोंसे मेल खाते हों और न (उनका) विनयसे मेल बैठता हो, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन नहीं है। यह इस भिक्षुका ही दुर्ग्रहीत है। भिक्षुओ, ऐसे वचनको त्याग देना चाहिये। भिक्षुओ! यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि आयुष्मानो मैंने स्वयं भगवान्से ऐसा सुना, भगवान्से ग्रहण किया कि यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका

शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोंको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) सूत्रोंसे मेल खाते हैं और (उनका) विनयसे मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन है। इस भिक्षुने इसे अच्छी तरह ग्रहण किया है। भिक्षुओ, यह पहला महत्वपूर्ण उपदेश ग्रहण करो।

"भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमें स्थविरों सहित, प्रमुख भिक्षुओं सहित संघ निवास करता है। मैंने उस संघके मुँहसे ऐसा सुना, संघके मुँहसे ग्रहण किया, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोंको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) न सूत्रोंसे मेल खाते हों और न (उनका) विनयसे मेल बैठता हो, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन नहीं है। यह उस संघका ही दुर्गृहीत है। भिक्षुओ, ऐसे वचनको त्याग देना चाहिये। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमें स्थविरों सहित, प्रमुख भिक्षुओं सहित संघ निवास करता है। मैंने उस संघसे ऐसा सुना, संघसे ग्रहण किया, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोंको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) सूत्रोंसे मेल खाते हैं, (उनका) विनयसे मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन है। यह संघने अच्छी तरह ग्रहण किया है। भिक्षुओ, यह दूसरा महत्वपूर्ण उपदेश ग्रहण करो।

भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमें बहुतसे स्थविर भिक्षु विहार करते हैं। वे बहुश्रुत हैं, आगमके जानकार हैं, धर्म-धर हैं, विनय-धर हैं, मातृका-धर हैं। मैंने उन स्थविरोंके मुँहसे सुना है, मुँहसे ग्रहण किया है, यह धर्म

हैं, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोंको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये। विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) न सूत्रोंसे मेल खाते हैं और न (उनका) विनय से मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन नहीं है। यह उन स्थविरोंका ही दुर्गृहीत है। भिक्षुओ, ऐसे वचनको त्याग देना चाहिये। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमें बहुतसे स्थविर भिक्षु, विहार करते हैं। वे बहुश्रुत हैं, आगमके जानकार हैं, धर्म-धर हैं, विनय-धर हैं, मातृका-धर हैं। मैंने उन स्थविरोंके मुँहसे सुना है, मुँहसे ग्रहण किया है, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोंको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये। विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) सूत्रोंसे मेल खाते हैं और (उनका) विनयसे मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन है। उन स्थविरोंने यह अच्छी तरह ग्रहण किया है। भिक्षुओ, यह तीसरा महत्वपूर्ण उपदेश ग्रहण करो।

भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमें एक स्थविर भिक्षु रहते हैं। वे बहु-श्रुत हैं, आगमके जानकार हैं, धर्म-धर हैं, विनय-धर हैं, मातृका-धर हैं। मैंने उन स्थविरके मुँहसे सुना है, मुँहसे ग्रहण किया है, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोंको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) न सूत्रोंसे मेल खाते हैं और न (उनका) विनय से मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन नहीं है। यह उन स्थविरका ही दुर्गृहीत है। भिक्षुओ, ऐसे वचन को त्याग देना चाहिये। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु ऐसा कहे कि अमुक आवासमें एक स्थविर भिक्षु, रहते हैं। वे बहुश्रुत हैं, आगमके जानकार हैं, धर्म-धर हैं, विनय-धर हैं, मातृका-

धर हैं। मैंने उन स्थविरोंके मुँहसे सुना है, मुँहसे ग्रहण किया है, यह धर्म है, यह विनय है, यह शास्ताका शासन है। भिक्षुओ, उस भिक्षुके कथनका न अभिनन्दन करना चाहिये और न खण्डन करना चाहिये। बिना अभिनन्दन किये, बिना खण्डन किये (उसके) उन शब्दोंको अच्छी तरह ग्रहण कर सूत्रोंसे मिलाना चाहिये, विनयसे मिलाकर देखना चाहिये। यदि सूत्रोंसे मिलाये जानेपर, विनयसे मिलाकर देखे जानेपर (वे) सूत्रोंसे मेल खाते हैं और (उनका) विनय से मेल बैठता है, तो यह निश्चित रूपसे मान लेना चाहिये कि यह भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका वचन है। उन स्थविरने यह अच्छी तरह ग्रहण किया है। भिक्षुओ, यह चौथा महत्वपूर्ण उपदेश ग्रहण करो। भिक्षुओ, ये चार महत्वपूर्ण उपदेश हैं।

भिक्षुओ, चार अंगोंसे युक्त योद्धा राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है, राजाका अंग ही माना जाता है। कौनसे चार अंगोंसे? स्थान-कुशल होता है, दूर (तक तीर) गिरानेवाला होता है, तुरन्त (तीर) मारनेवाला होता है तथा बड़ी-बड़ी चीजोंको बींध देनेवाला होता है। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त योद्धा राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है, राजाका अंग ही माना जाता है।

(४) योद्धाजीव-वर्ग

इसी प्रकार भिक्षुओ, चार बातोंसे युक्त भिक्षु स्वागतार्ह होता है..... लोगोंके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है। कौन-सी चार बातोंसे? भिक्षुओ, भिक्षु स्थान-कुशल होता है, दूर तक गिराने वाला होता है, तुरन्त बींधने वाला होता है और बड़ी-बड़ी चीजोंको बींध देने वाला होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु स्थान-कुशल कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु सदाचारी होता है........ शिक्षाओंको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। भिक्षुओ, भिक्षु इस प्रकार स्थान-कुशल होता है। भिक्षुओ, भिक्षु दूर तक गिराने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु जितना भी रूप है—चाहे भूत कालका हो, चाहे वर्तमानका, चाहे भविष्यत्का, चाहे अपने अन्दरका हो, अथवा बाहरका, चाहे स्थूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप—उसके बारेमें सोचता है कि न वह मेरा है, न वह मैं हूँ और न वह मेरी आत्मा है। वह इसी प्रकार यथार्थ रूपसे अच्छी तरह जानकर विचार करता है। वह जितनी भी वेदना है.....संज्ञा है .....संस्कार हैं.....विज्ञान है—चाहे भूतकालका हो, चाहे वर्तमानका, चाहे भविष्यत्का, चाहे अपने अन्दरका हो, अथवा बाहरका, चाहे स्थूल हो अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप, उसके बारेमें सोचता है कि न

वह मेरा है , न वह मैं हूँ, और न वह मेरा 'आत्मा' है। वह इसी प्रकार यथार्थ रूपसे अच्छी तरह जानकर विचार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु दूर तक गिराने वाला होता है है। भिक्षुओ, भिक्षु तुरन्त बींधने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है......यह दुःख निरोधगामिनी-प्रतिपदा है, यह यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ, भिक्षु इस प्रकार तुरन्त बींधने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे बड़ी बड़ी चीजोंको बींधने वाला होता है ? भिक्षुओ भिक्षु महान् अविद्या-स्कन्धको बींधने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षुओ बड़ी-बड़ी चीजोंको बींधने वाला होता है। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त भिक्षु, स्वागतार्ह होता है.......लोगोंके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है।

भिक्षुओ चार बातोंके विषयोंमें कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनियामें अन्य कोई। किन चार बातोंके विषयमें ? जराको प्राप्त होनेवाले जराको प्राप्त न हों—इसके विषयमें कोई जिम्मेदारी नहीं हो ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण., न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा, और न दुनियामें अन्य कोई। व्याधिको प्राप्त होने वाले व्याधिको प्राप्त न हों—इसके विषयमें कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनियामें अन्य कोई। मृत्युको प्राप्त होने वाले मृत्युको प्राप्त न हों—इसके विषयमें कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनियामें अन्य कोई। जो पाप-कर्म हैं, जो क्लिष्ट-कर्म हैं, जो पुनर्भवके कारण होते हैं, जो दुःखद होते हैं, जिनका बुरा फल होता है, जो भविष्यमें भी जरा-मरणके कारण होते हैं, उनका फल न हो—इसके विषयमें कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता; न कोई श्रमण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनिया में अन्य कोई। भिक्षुओ, इन चार बातोंके विषयमें कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता, न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न कोई देव, न मार, न ब्रह्मा और न दुनियामें अन्य कोई।

एक समय भगवान् राजगृहमें विहार करते थे। वेळुवनके कलन्दक-निवापमें। उस समय मगधका महामात्य वर्षकार ब्राह्मण जहाँ भगवान थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्के साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर मगधके महामात्य वर्षकार ब्राह्मणने भगवानसे यह कहा—हे गौतम ! मेरा यह मत है, यह दृष्टि है कि जो कोई अपनी देखी हुई बात कहता है कि मैंने ऐसा देखा तो इसमें कोई दोष नहीं, जो कोई अपनी सुनी हुई बात कहता है कि मैंने ऐसा सुना तो उसमें कोई दोष नहीं, जो कोई अपनी चखी हुई, अपनी सूँघी हुई, अपनी स्पर्शकी हुई चीजके

बारेमें कहता है कि मैं ने उसे चखा, उसे सूँघा, उसे स्पर्श किया तो इसमें कोई दोष नहीं। जो कोई अपनी जानी हुई बातके विषयमें कहता है कि मैंने ऐसा जाना तो उसमें कोई दोष नहीं। (भगवान्ने कहा)— "ब्राह्मण! जो देखा जाय वह सब कहा ही जाय, मैं यह भी नहीं कहता, वह सब नहीं ही कहा जाय, मैं यह भी नहीं कहता। ब्राह्मण! जो सुना जाय वह सब कहा ही जाय, मैं यह भी नहीं कहता, वह सब नहीं ही कहा जाय, मैं यह भी नहीं कहता। ब्राह्मण! जो चखा जाय, जो सूँघा जाय, जो छुआ जाय वह सब कहा ही जाय, मैं यह भी नहीं कहता, वह सब नहीं ही कहा जाय, मैं यह भी नहीं कहता। ब्राह्मण! जो जाना जाय, वह सब कहा ही जाय, मैं यह भी न कहता, वह सब नहीं ही कहा जाय, मैं यह भी नहीं कहता। ब्राह्मण! जिस देखी हुई बातके कहनेसे अशुभ-बातोंमें वृद्धि हो, शुभ-बातोंकी हानि हो, ऐसी देखी हुई बात नहीं कही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। जिस देखी हुई बातके कहनेसे अशुभ-बातोंकी हानि हो, शुभ-बातोंकी वृद्धि हो, ऐसी देखी हुई बात कही ही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। ब्राह्मण! जिस सुनी हुई बातके कहनेसे अशुभ-बातोंमें वृद्धि हो, शुभ-बातोंकी हानि हो, ऐसी सुनी हुई बात नहीं कही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। जिस सुनी हुई बातके कहे जानेसे अशुभ-बातोंकी हानि हो, शुभ-बातोंकी वृद्धि हो, ऐसी सुनी हुई बात कही ही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। ब्राह्मण! जिस चखी, सूँघी छुई बातके कहनेसे अशुभ बातोंमें वृद्धि हो, शुभ-बातोंकी हानि हो, ऐसी चखी, सूँघी, छुई बात नहीं ही कहनी चाहिये—यह कहता हूँ। जिस चखी, सूँघी, छुई बातके कहनेसे अशुभ-बातोंकी हानि हो, शुभ-बातोंमें वृद्धि हो ऐसी चखी, सूँघी, छुई बात नहीं ही कहनी चाहिये—यह कहता हूँ। ब्राह्मण! जिस ज्ञात बातके कहनेसे अशुभ-बातोंमें वृद्धि हो, शुभ बातोंकी हानि हो—ऐसी जानी हुई बात नहीं ही कही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। जिस ज्ञात बातके कहनेसे, अशुभ-बातोंकी हानि हो, शुभ-बातोंकी वृद्धि हो—ऐसी ज्ञात बात कही ही जानी चाहिये—यह कहता हूँ। तब मगधका महामात्य वर्षकार ब्राह्मण भगवानके कथनका अभिनन्दनकर उठकर चला गया।

तब जानुश्रोणी ब्राह्मण जहाँ भगवान थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवानके साथ कुशल-क्षेम सम्बन्धी वार्ता की। कुशल-क्षेम पूछ चुकनेपर जानु-श्रोणी ब्राह्मणने भगवान्को यह कहा—"हे गौतम! मेरा यह मत है, मेरी यह दृष्टि है कि ऐसा कोई मरण-धर्मी नहीं है जो मरनेसे भयभीत न होता हो, मरनेसे संत्रस्त न होता हो।" "ब्राह्मण! ऐसा भी आदमी होता है जो मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है,

मरनेसे संत्रस्त होता है। ब्राह्मण! ऐसा भी आदमी होता है जो मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे नहीं डरता है, मरनेसे संत्रस्त नहीं होता है। ब्राह्मण! वह कौन-सा आदमी होता है, जो मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है, मरनेसे संत्रस्त होता है? ब्राह्मण! एक आदमी होता है जो काम-भोगोंके प्रति वीत-राग नहीं होता, वीत-छन्द नहीं होता, वीत-प्रेम नहीं होता, वीत-पिपासा नहीं होता, वीत-परिदाह नहीं होता, वीत-तृष्णा नहीं होता। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमें होता है—'मेरे प्रिय काम-भोग मुझे छोड़ देंगे। मुझे अपने प्रिय काम-भोगोंको छोड़ देना होगा।' वह चिन्ता करता है, क्लेशको प्राप्त होता है, रोता पीटता है, छाती पीटता है, बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है, मरनेसे संत्रस्त होता है।

"ब्राह्मण! एक आदमी होता है जो शरीरके प्रति वीत-राग नहीं होता, वीत-छन्द नहीं होता, वीत-प्रेम नहीं होता, वीत-पिपासा नहीं होता, वीत-परिदाह नहीं होता, वीत-तृष्णा नहीं होता। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमें होता है—'मेरा प्रिय शरीर मुझे छोड़ देगा। मुझे अपने प्रिय शरीरको छोड़ देना होगा।' वह चिन्ता करता है, क्लेशको प्राप्त होता है, रोता पीटता है, छाती पीटता है, बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है, मरनेसे संत्रस्त होता है।

फिर ब्राह्मण! एक आदमी होता है जिसने कल्याण-कर्म नहीं किया रहता, कुशल-कर्म नहीं किया रहता, भयभीतोंका त्राण (= शुभ-कर्म) नहीं किया रहता, पाप कर्म किया रहता है, रौद्र कर्म किया रहता है, अपराध किया रहता है। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमें होता है—मैंने कल्याण-कर्म नहीं किया, कुशल-कर्म नहीं किया, भय-भीतोंका त्राण (= शुभ-कर्म) नहीं किया, पाप-कर्म किया, रौद्र-कर्म किया, अपराध किया। कल्याण-कर्म नहीं करने वालोंकी, कुशल-कर्म नहीं करने वालोंकी, भयभीतोंका त्राण नहीं करने वालोंकी, पाप कर्म करने वालोंकी, रौद्र कर्म करने वालोंकी, अपराध करने वालोंकी जो दुर्गति होती है, मैं भी मरनेपर उस दुर्गतिको प्राप्त होऊँगा। वह चिन्ता करता है, क्लेशको प्राप्त होता है, रोता-पीटता है, छाती पीटता है, बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण धर्मी होता हुआ, मरनेसे डरता है, मरनेसे संत्रस्त होता है।

फिर ब्राह्मण! एक आदमी शंका-शील होता है, विचिकित्सा-युक्त होता है, सद्धर्मके बारेमें सन्देह-युक्त। उसको कोई भयानक रोग होता है। भयानक

बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमें होता है, मैं शंकाशील हूँ, विचिकित्सा-युक्त हूँ और सद्धर्मके बारेमें संदिग्ध हूँ। वह चिन्ता करता है, क्लेशको प्राप्त होता है, रोता-पीटता है, छाती पीटता है, बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे डरता है, मरनेसे संत्रस्त होता है। ब्राह्मण! ये चार प्रकारके प्राणी हैं जो मरण-धर्मी होते हुये, मरनेसे डरते हैं, मरनेसे संत्रस्त होते हैं।

ब्राह्मण! वह कौन-सा आदमी होता है, जो मरण-धर्मी होता हुआ मरनेसे नहीं डरता, मरनेसे संत्रस्त नहीं होता है? ब्राह्मण! एक आदमी होता है जो काम-भोगोंके प्रति वीत-राग होता है, वीत-छन्द होता है, वीत-प्रेम होता है, वीत-पिपासा होता है, वीत-परिदाह होता है, वीत-तृष्णा होता है। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमें यह नहीं होता है—'मेरे प्रिय काम-भोग मुझे छोड़ देंगे। मुझे अपने प्रिय काम-भोगोंको छोड़ देना होगा।' वह न चिन्ता करता है, न क्लेशको प्राप्त होता है, न रोता-पीटता है, न छाती पीटता है, न बेहोश होता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ भी, न मरनेसे डरता है, न मरनेसे संत्रस्त होता है।

ब्राह्मण! एक आदमी होता है जो शरीरके प्रति वीत-राग होता है, वीत-छन्द होता है, वीत-प्रेम होता है, वीत-पिपासा होता है, वीत-परिदाह होता है, वीत-तृष्णा होता है। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमें यह नहीं होता 'मेरा प्रिय शरीर मुझे छोड़ देगा। मुझे अपने प्रिय शरीरको छोड़ देना होगा।' वह न चिन्ता करता है, न क्लेशको प्राप्त होता है, न रोता-पीटता है, न छाती पीटता है, न बेहोश होता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ भी न मरनेसे डरता है, न मरनेसे संत्रस्त होता है।

फिर ब्राह्मण! एक आदमी होता है, जिसने कल्याण-धर्म किया रहता है, कुशल-धर्म किया रहता है, भय-भीतोंका त्राण (=शुभ कर्म) किया रहता है, पाप-कर्म नहीं किया रहता, रौद्र कर्म नहीं किया रहता, अपराध नहीं किया रहता। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमें होता है—'मैंने कल्याण कर्म किया, कुशल-कर्म किया, भयभीतोंका त्राण (=शुभ-कर्म) किया, पाप-कर्म नहीं किया, रौद्र-कर्म नहीं किया, अपराध नहीं किया।' कल्याण-कर्म करने वालोंकी कुशल-कर्म करने वालोंकी, भयभीतोंका त्राण (=शुभ-कर्म) करने वालोंकी, पाप कर्म न करने वालोंकी, रौद्र कर्म न करने वालोंकी, अपराध न करने वालोंकी जो सद्गलि होती है, मैं भी मरनेपर उस सद्गतिको प्राप्त होऊँगा।'

वह न चिन्ता करता है, न क्लेशको प्राप्त होता है, न रोता पीटता है, न छाती-पीटता है, न बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ न मरनेसे डरता है, न मरनेसे संत्रस्त होता है।

फिर ब्राह्मण! एक आदमी शंका-शील नहीं होता है, विचिकित्सा-युक्त नहीं होता है, सद्धर्मके बारेमें सन्दिग्ध नहीं होता है। उसको कोई भयानक रोग हो जाता है। भयानक बीमारीकी अवस्थामें उसके मनमें होता है—मैं शंका-शील नहीं हूँ, विचिकित्सा-रहित हूँ और सद्धर्मके बारेमें असंदिग्ध हूँ। वह न चिन्ता करता है, न क्लेशको प्राप्त होता है, न रोता-पीटता है, न छाती-पीटता है, न बेहोश हो जाता है। ब्राह्मण! ऐसा आदमी मरण-धर्मी होता हुआ न मरनेसे डरता है, न मरनेसे संत्रस्त होता है। ब्राह्मण! ये चार प्रकारके प्राणी हैं जो मरण-धर्मी होते हुए न मरनेसे डरते हैं, न मरनेसे संत्रस्त होते हैं।" "गौतम! बहुत सुन्दर है......आप गौतम प्राण रहने तक मुझे अपना शरणागत उपासक शिष्य समझें।"

एक समय भगवान राजगृहमें गृध्रकूट पर्वतपर विहार कर रहे थे। उस समय बहुतसे प्रसिद्ध प्रसिद्ध परिब्राजक सर्पिनिकाके तटपर स्थित परिब्राजकाराममें निवास करते थे, जैसे अन्नभार, वरधर तथा सकलुदायि परिब्राजक। और भी प्रसिद्ध प्रसिद्ध परिब्राजक।

तब भगवान् शामके समय ध्यान-मग्न रहनेके अनन्तर जहाँ सर्पिनिकाके तटपर परिब्राजकाराम था, वहाँ पहुँचे। उस समय वहाँ इकट्ठे हुए उन अन्यमताव-लम्बी परिब्राजकोंमें यह बातचीत चली—ये ब्राह्मण-सत्य हैं, ये ब्राह्मण-सत्य हैं। तब भगवान् जहाँ वे परिब्राजक थे, वहाँ पहुँचे। जाकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्ने उन परिब्राजकोंसे पूछा—"परिब्राजको। इस समय बैठे क्या बातचीत कर रहे थे? इस समय तुम्हारी क्या बातचीत चल रही थी?" "हे गौतम! हम जो यहाँ इकट्ठे हुए हैं, एकत्रित हुए हैं, हमारे बीच यह कथा उत्पन्न हुई है, यह बात-चीत चली है—'ये ब्राह्मण-सत्य हैं, ये ब्राह्मण-सत्य हैं।" "ब्राह्मण! ये चार ब्राह्मण-सत्य हैं जिनको मैंने स्वयं जानकर साक्षात्कर घोषित किया है। कौनसे चार? हे परिब्राजको! ब्राह्मणने कहा है—सभी प्राणी अवध्य हैं। ऐसा कहते हुए ब्राह्मणने सत्य कहा है। झूठ नहीं कहा है। ऐसा कहनेके कारण उसके मनमें न अपने 'श्रमण' होनेका मान है, न 'ब्राह्मण' होनेका मान है, न (किसीसे) श्रेष्ठ होनेका मान है, न (किसीके) सदृश होनेका मान है, न (किसीसे) हीन होनेका मान है। केवल जो यथार्थ है उसे जानकर वह प्राणियोंके प्रति दया, अनुकम्पा करता है।

फिर परिब्राजको! ब्राह्मणने ऐसा कहा है—सभी काम-भोग अनित्य हैं, दु:ख हैं, परिवर्तन-शील हैं। ऐसा कहते हुए ब्राह्मणने सत्य कहा है। झूठ नहीं कहा है। ऐसा कहनेके कारण उसके मनमें न अपने 'श्रमण' होनेका मान है, न 'ब्राह्मण' होनेका मान है, न (किसीसे) श्रेष्ठ होनेका मान है, न (किसीके) सदृश होनेका मान है, न (किसीसे) हीन होनेका मान है। केवल जो यथार्थ है, उसे जानकर वह काम-भोगोंके निर्वेद, वैराग्य तथा निरोधमें प्रतिपन्न होता है।

फिर परिब्राजको! ब्राह्मणने ऐसा कहा है—सभी भव अनित्य हैं, दु:ख हैं, परिवर्तन-शील हैं। ऐसा कहते हुए ब्राह्मणने सत्य कहा है। झूठ नहीं कहा है। ऐसा कहनेके कारण उसके मनमें न अपने 'श्रमण' होनेका मान है, न 'ब्राह्मण' होनेका मान है, न (किसीसे) श्रेष्ठ होनेका मान है, न (किसीके) सदृश होनेका मान है। केवल जो यथार्थ है उसे जानकर वह भवोंके निर्वेद, वैराग्य तथा निरोध में प्रतिपन्न होता है।

फिर परिब्राजको! ब्राह्मणने ऐसा कहा है—न तो मैं कहीं, किसीका, किसीमें हूँ और न मेरा कोई कहीं, कुछ है। ऐसा कहते हुए ब्राह्मणने सत्य कहा है, झूठ नहीं कहा है। ऐसा कहनेके कारण उसके मनमें न अपने 'श्रमण' होनेका मान है, न 'ब्राह्मण' होनेका मान है, न (किसीसे) श्रेष्ठ होनेका मान है, न (किसीके) सदृश होनेका मान है। केवल जो यथार्थ है उसे जानकर वह अकिंचनताके मार्गपर ही प्रतिपन्न होता है। हे परिब्राजको! ये चार ब्राह्मण सत्य हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर साक्षात्कार घोषित किया है।

तब एक भिक्षु जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए उस भिक्षुने भगवान्से पूछा—"भन्ते! यह संसार किसके द्वारा ले जाया जाता है? किसके द्वारा घसीटा जाता है? किसके उत्पन्न होनेपर (उसके) वशीभूत हो जाता है?" भिक्षु! यह संसार चित्तके द्वारा ले जाया जाता है। चित्तके द्वारा घसीटा जाता है, चित्तके उत्पन्न होनेपर उसके वशीभूत हो जाता है। 'भन्ते! ठीक है' कह उस भिक्षुने भगवान्के कथनका अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर आगे फिर पूछा—"भन्ते! बहु-श्रुत धर्म-धर, बहु-श्रुत धर्म-धर कहा जाता है। कौनसे गुण होनेसे कोई बहु-श्रुत धर्म-धर होता है?" "भिक्षु। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तेरी जिज्ञासा ठीक है। तेरी सूझ अच्छी है। तेरा प्रश्न कल्याणकर है। तू यही पूछता है न कि भन्ते! बहु-श्रुत धर्म-धर बहु-श्रुत धर्मधर कहा जाता है। कौन-से गुण होनेसे कोई बहु-श्रुत धर्म-धर होता

है ? भिक्षु ! मैंने बहुतसे धर्मोंका उपदेश दिया है—सूत्रोंका, गेय्योंका, वैयाकरणोंका, गाथाओंका, उदानोंका, इति-उक्तोंका, जातकोंका, अद्भुत-धर्मोंका तथा वेदल्लोंका। यदि भिक्षु चार पदवाली किसी गाथाके भी अर्थको जानकर, धर्मको समझकर, धर्मानुसार आचरण करने वाला होता है तो वह बहु-श्रुत धर्मधर कहलानेके योग्य है।"

'भन्ते ! ठीक है', कह उस भिक्षुने भगवान्के कथनका अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर, आगे फिर पूछा—'श्रुतवान् बींधनेवाली प्रज्ञा वाला, श्रुतवान् बींधनेवाली प्रज्ञा वाला कहा जाता है। कौनसे गुण होनेसे कोई श्रुतवान् बींधने वाली प्रज्ञा वाला कहा जाता है?" "भिक्षु ! बहुत अच्छा-बहुत अच्छा। तेरी जिज्ञासा ठीक है। तेरी सूझ अच्छी है। तेरा प्रश्न कल्याणकर है। तू यही पूछता है न कि भन्ते ! श्रुतवान् बींधनेवाली प्रज्ञा वाला, श्रुतवान् बींधनेवाली प्रज्ञावाला कहा जाता है। कौन से गुण होनेसे कोई श्रुतवान् बींधनेवाली प्रज्ञा वाला होता है ? भिक्षु ! एक भिक्षुने यह सुना होता है कि यह दुःख है, वह प्रज्ञासे इस कथनके अर्थको गहराईके साथ समझता है; यह सुना होता है कि यह दुःखका समुदय है, वह प्रज्ञासे उस कथनके अर्थको गहराईके साथ समझता है; यह सुना होता है कि यह दुःख निरोध है, वह प्रज्ञासे इस कथनके अर्थको गहराईके साथ समझता है; यह सुना होता है कि यह दुःख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है, वह प्रज्ञासे इस कथनके अर्थको गहराईके साथ समझता है। इस प्रकार भिक्षु श्रुतवान् बींधनेवाली प्रज्ञावाला होता है।"

'भन्ते ! ठीक है', कह उस भिक्षुने भगवान्के कथनका अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर आगे फिर पूछा—"भन्ते ! पण्डित महाप्रज्ञावान पण्डित महाप्रज्ञावान् कहा जाता है। कौनसे गुण होनेसे कोई पण्डित महा प्रज्ञावान कहलाता है ? " "भिक्षु ! बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा ! तेरी जिज्ञासा ठीक है। तेरी सूझ अच्छी है। तेरा प्रश्न कल्याणकर है। तू यही पूछता है न कि भन्ते ! पण्डित महाप्रज्ञावान् पण्डित महाप्रज्ञावान् कहा जाता है। कौनसे गुण होनेसे कोई पण्डित महाप्रज्ञावान होता है ? भिक्षु ! जो पण्डित महाप्रज्ञावान् होता है वह कोई ऐसी बात नहीं सोचता जो उसके लिये अहितकर हो, वह कोई ऐसी बात नहीं सोचता जो दूसरेके लिये अहितकर हो, वह कोई ऐसी बात नहीं सोचता जो दोनोंके लिये अहितकर हो। वह जब सोचता है तो आत्म-हित, परहित, दोनोंका हित, सभी लोगोंका हित ही सोचता है। भिक्षु ! इस प्रकार पण्डित महाप्रज्ञावान् होता है।

एक समय भगवान् राजगृहके वेळुवनमें कलन्दनिवापमें विहार करते थे। उस समय मगध महामात्य वर्षकार ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर

भगवान्‌का कुशल-क्षेम पूछा। कुशल-क्षेमकी बातचीत समाप्त हो चुकनेपर एक ओर बैठा। एक और बैठे हुए मगध महामात्य वर्षकार ब्राह्मणने भगवान्‌को यह कहा—"हे गौतम! क्या एक असत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान सकता है कि यह असत्पुरुष है?" "ब्राह्मण! इसकी सम्भावना नहीं है, इसके लिये कोई अवकाश नहीं है कि एक असत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है।" "हे गौतम! तो क्या एक असत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान सकता है कि यह सत्पुरुष है?" "ब्राह्मण! इसकी सम्भावना नहीं है, इसके लिये कोई अवकाश नहीं है कि एक असत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचाना ले कि यह सत्पुरुष है।" "हे गौतम! तो क्या एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान सकता है कि यह सत्पुरुष है?" "ब्राह्मण! इसकी सम्भावना है, इसके लिये अवकाश है कि एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान ले कि यह सत्पुरुष है।" "हे गौतम! तो क्या एक सत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान सकता है, कि यह असत्पुरुष है?" "ब्राह्मण! इसकी सम्भावना है, इसके लिये अवकाश है कि एक सत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है।" "भो गौतम! आश्चर्यकर है। भो गौतम! अद्‌भुत है आपका यह कहना कि ब्राह्मण! इसकी सम्भावना नहीं है, इसके लिये कोई अवकाश नहीं है कि एक असत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है; और हे ब्राह्मण इसकी भी सम्भावना नहीं है, इसके लिये भी अवकाश नहीं है कि एक असत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है; और हे ब्राह्मण! इसकी सम्भावना है कि एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान ले कि यह सत्पुरुष है; और हे ब्राह्मण! इसकी भी सम्भावना है कि एक सत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है।"

हे गौतम! एक बार तोदेय्य ब्राह्मणकी परिषद् परनिन्दामें लगी हुई थी—यह राजा मूर्ख है, यह राजा एळेय्य (भेड़) है, जो श्रमण रामपुत्रके प्रति श्रद्धावान है। यह श्रमण रामपुत्रके प्रति ऐसा विनम्रताका बर्ताव करता है—अभिवादन करता है, प्रत्युपस्थान करता है, हाथ जोड़ता है तथा समीचीन कर्म करता है। ये एळेय्य राजाके सेवक भी मूर्ख हैं, ये यमळ, मोग्गल्ल, उग्ग, नाविन्दकी, गन्धब्ब तथा अग्गिवेस। ये भी श्रमण रामपुत्रके प्रति श्रद्धावान हैं। ये श्रमण रामपुत्रके प्रति ऐसा विनम्रताका बर्ताव करते हैं—अभिवादन करते हैं, प्रत्युपस्थान करते हैं, हाथ जोड़ना करते हैं, समीचीन कर्म करते हैं। तब अपनी परिषदके लोगोंको तोदेय्य ब्राह्मणने इस प्रकार समझाया—"आप लोग क्या मानते हैं कि एळेय्य राजा, जो करनीय है, जो कथनीय है, उसका अर्थ जाननेमें पंडित है?" "हाँ, हम जानते हैं कि एळेय्य राजा, जो करणीय

है, जो कथनीय है उसका अर्थ जाननेमें पण्डित है। क्योंकि श्रमण रामपुत्र, जो करनीय है तथा जो कथनीय है, उसके विषयमें पण्डित एळेय्य राजाकी अपेक्षा अधिक पण्डित है, इसीलिये एळेय्य राजा श्रमण पुत्रके प्रति श्रद्धावान् है, इसीलिये वह श्रमण रामपुत्रके प्रति ऐसा विनम्रताका वर्ताव करता है—अभिवादन करता है, प्रत्युपस्थान करता है, हाथ जोड़ता है, तथा समीचीन कर्म करता है।" "आप लोग क्या मानते हैं कि एळेय्य राजाके जो सेवक हैं, जो करनीय है, जो कथनीय है उसका अर्थ जाननेमें पण्डित है ?" "हाँ, हम मानते हैं कि एळेय्य राजाके जो सेवक हैं यमक, मोग्गल्ल, उग्ग, नाविन्दकी, गन्धब्ब, अग्गिवेस्स जो करनीय है, जो कथनीय है उसका अर्थ जाननेमें पण्डित हैं। क्योंकि श्रमण रामपुत्र, जो करनीय है तथा जो कथनीय है उसके विषयमें पण्डित एळेय्य राजाके सेवकोंकी अपेक्षा अधिक पण्डित हैं, इसीलिये वे सेवक श्रमण रामपुत्रके प्रति ऐसा विनम्रताका बर्ताव करते हैं—अभिवादन करते हैं, प्रत्युपस्थान करते हैं, हाथ जोड़ते हैं तथा समीचीन कर्म करते हैं।" हे गौतम ! आश्चर्यकर है। हे गौतम। अद्भुत है आपका यह कहना कि ब्राह्मण !. इसकी सम्भावना नहीं है, इसके लिये कोई अवकाश नहीं है कि एक असत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है ; और हे ब्राह्मण ! इसकी भी सम्भावना नहीं है, इसके लिये भी अवकाश नहीं है कि एक असत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान ले कि यह सत्पुरुष है ; और हे ब्राह्मण ! इसकी सम्भावना है कि एक सत्पुरुष दूसरे सत्पुरुषको पहचान ले कि यह सत्पुरुष है ; और हे ब्राह्मण ! इसकी भी सम्भावना है कि एक सत्पुरुष दूसरे असत्पुरुषको पहचान ले कि यह असत्पुरुष है। अच्छा गौतम ! अब हमें अनुमति दे, हमें बहुतसे काम हैं, बहुतसे कृत्य हैं। "ब्राह्मण ! अब तू जिसका समय समझे।" तब मगधका महामात्य वर्षकार ब्राह्मण भगवान्के भाषणका अभिनन्दन कर, समर्थन कर, उठकर चला गया।

एक समय भगवान राजगृहमें गृध्रकूट पर्वतपर विहार कर रहे थे। तब मिण्डिका-पुत्र उपक जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए मिण्डिका-पुत्र उपकने भगवान्से यह कहा "भन्ते ! मेरा यह मत है, मेरी यह दृष्टि है कि जो दूसरोंको दोषी ठहराता है, वह दूसरोंको दोषी ठहराता हुआ स्वयं सर्वथा निर्दोष नहीं ठहरता, निर्दोष न होता हुआ निन्दनीय होता है, दोषका भाजन होता है।"

"उपक ! यदि यह तेरा मत है, यदि तेरी यह दृष्टि है कि जो दूसरोंको दोषी ठहराता है, वह दूसरोंको दोषी ठहराता हुआ स्वयं सर्वथा निर्दोष नहीं ठहरता,

निर्दोष न होता हुआ निन्दनीय होता है, दोषका भाजन होता है। उपक! यदि तू कहता है कि जो दूसरोंको दोषी ठहराता है, वह दूसरोंको दोषी ठहराता हुआ स्वयं सर्वथा निर्दोष नहीं ठहरता, निर्दोष न होता हुआ निन्दनीय होता है, दोषका भाजन होता ह; तो उपक! तू स्वयं दूसरोंको दोषी ठहराता है, इसलिये दूसरोंको दोषी ठहराता हुआ तू स्वयं सर्वथा निर्दोष नहीं ठहरता, निर्दोष न होता हुआ तू निन्दनीय होता है। दोषका भाजन होता है।"

"भन्ते! जैसे किसी डूबने वालेके सिर निकालते ही उसे बड़े बन्धनमें बाँध दिया जाय, भन्ते! ठीक इसी तरह आपने सिर निकालते ही मुझे बड़े वाद-बन्धनसे बाँध दिया।"

"उपक! मैंने यह अकुशल है, इसकी देशना की है, इसमें असीम पद हैं, असीम अक्षर हैं और असीम है तथागत की धर्म-देशना। मैंने इस अकुशलका त्याग करना चाहिये, इसकी देशना की है, इसमें असीम पद हैं, असीम अक्षर हैं और असीम है तथागतकी धर्म-देशना; मैंने यह कुशल है, इसकी देशना की है, इसमें असीम पदहैं असीम अक्षर हैं और असीम है, तथागत की धर्म-देशना; मैंने यह कुशल है, इसका अभ्यास करना चाहिये, इसकी देशना की है, इसमें असीम पद हैं, असीम अक्षर हैं और असीम है तथागतकी धर्म-देशना।

तब मिण्डिका-पुत्र उपक भगवान्केभाषण का अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर, आसनसे उठकर भगवान्को अभिवादन तथा प्रदक्षिणा कर जहाँ वेदेहिपुत्र मगध-नरेश अजातशत्रु था, वहाँ पहुँचा। जाकर भगवान्के साथ जितनी भी बातचीत हुई थी वह सब वेदेहिपुत्र मगध-नरेश, अजातशत्रुको सुना दी। ऐसा कहनेपर वेदेहिपुत्र मगध-नरेश अजातशत्रु क्रोधित हुआ, असन्तुष्ट हुआ—'यह लोणियोंके गाँवमें रहने वाला लड़का गुणोंका ध्वंस करने वाला है, यह मुखर है, यह प्रगल्भ है, यह उन अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध से वाद करना चाहता है। उपक! तू जा। मेरी आँखसे ओझल हो जा।'

भिक्षुओ, ये चार साक्षात् करणीय धर्म हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक तो 'धर्म' ऐसा है जिसका (चित्त-) शरीरसे साक्षात् किया जाता है, दूसरा धर्म-ऐसा है जिसका स्मृतिसे साक्षात् किया जाता है, तीसरा धर्म' ऐसा है जिसका (दिव्य-) चक्षुसे साक्षात् किया जाता है और चौथा 'धर्म' ऐसा है जिसका प्रज्ञासे साक्षात् किया जाता हैं। भिक्षुओ, कौनसे धर्म हैं जो (चित्त-) शरीरसे साक्षात् किये जाते हैं? भिक्षुओ, आठ प्रकारके विमोक्ष हैं जो (चित्त-) शरीरसे साक्षात् किये जाते हैं।

भिक्षुओ, कौनसे धर्म' हैं जो स्मृतिसे साक्षात् किये जाते हैं। भिक्षुओ, पूर्वजन्म-अनुस्मृति स्मृतिसे साक्षात् की जाती है। भिक्षुओ, कौनसे 'धर्म' हैं जो (दिव्य-) चक्षुसे साक्षात किये जाते हैं? भिक्षुओ,प्राणियोंकी उत्पत्ति-मरण(दिव्य-)चक्षुसे साक्षात् की जाती है। भिक्षुओ, कौनसे 'धर्म' हैं जो 'प्रज्ञा' से साक्षात् किये जाते ह? भिक्षुओ, आस्रवोंका क्षय प्रज्ञासे साक्षात् किया जाता है।

एक समय भगवान् श्रावस्तीके मिगारमाताप्रासाद पूर्वराममें विहार करते थे। उस समय उपोसथका दिन होनेसे भगवान् भिक्षु-संघसे घिरे हुए बैठे थे। तब भगवान्ने भिक्षु-संघको चुप-चाप बैठे देख भिक्षुओंको आमन्त्रित किया—भिक्षुओ, यह परिषद निःशब्द है, भिक्षुओ, यह परिषद शान्त है; यह शुद्ध है, यह (शील रूपी) वैसे सारमें प्रतिष्ठित है। भिक्षुओ, यह भिक्षुसंघ वैसी परिषद् है जैसी परिषद्का वैसी दुनियामें दिखाई देना दुर्लभ है। भिक्षुओ, यह भिक्षु-संघ वैसी परिषद् है जो कि पूज्य है, स्वागतार्ह है, दक्षिणा देने योग्य है, हाथ जोड़ने योग्य है, लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र है। भिक्षुओ, यह भिक्षु-संघ भी वैसा है और यह परिषद् भी वैसी है जैसी परिषद् को थोड़ा देनेसे भी बहुत (फल) होता है और अधिक देनेसे अधिकतर होता है। भिक्षुओ, यह भिक्षु-संघ भी वैसा है और यह परिषद् भी वैसी है जैसी परिषद्का दर्शन करनेके लिये पाथेय लेकर कई योजन तक चलकर जाना पड़े, तो भी योग्य है। भिक्षुओ, ऐसा है यह भिक्षु संघ! भिक्षुओ, इस भिक्षु संघमें देवत्व-प्राप्त भिक्षु हैं। भिक्षुओ, इस भिक्षु संघमें ब्रह्म-प्राप्त भिक्षु हैं। भिक्षुओ, इस भिक्षु संघमें स्थिरता-प्राप्त भिक्षु हैं। भिक्षुओ, इस भिक्षु-संघमें आर्यत्व-प्राप्त भिक्षु हैं। भिक्षुओ, भिक्षु देवत्व-प्राप्त कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु काम-वितर्कसे रहित हो..... प्रथम-ध्यान प्राप्त कर विहार करता है.....दूसरा ध्यान....तीसरा ध्यान......चौथा ध्यान प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, भिक्षु इस प्रकार देवत्व-प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु ब्रह्म-प्राप्त कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु मैत्री-युक्त चित्तसे एक दिशाको व्याप्त कर विहार करता है, दूसरी दिशा......वैसे ही तीसरी दिशा......वैसे ही चौथी दिशा। वह ऊपर, नीचे, तिर्छे, हर जगह, हर प्रकारसे सारेके सारे लोकिके प्रति, विपुल, महान सीमा-रहित, निर्वैर, निष्क्रोध मैत्री-चित्त वाला हो विहार करता है। वह करुणा-पूर्ण चित्त वाला-....मुदिता युक्त चित्त वाला, उपेक्षायुक्त चित्त वाला हो एक दिशाको व्याप्त कर विहार करता है, दूसरी दिशा.......वैसे ही तीसरी दिशा......वैसे ही चौथी दिशा। वह ऊपर, नीचे, तिर्छे, हर जगह, हर प्रकारसे, सारेके सारे लोकके प्रति, विपुल, महान्, सीमा-

रहित, निर्वैर, निष्क्रोध, उपेक्षायुक्त चित्तसे विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु ब्रह्म-प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु स्थिरता-प्राप्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, सब रूप-संज्ञाओंको पार कर प्रतिघ-संज्ञाओंको अस्त कर, नानात्व संज्ञाको मनसे निकाल 'आकाश अनन्त है' करके आकाशानन्त्यायतनको प्राप्त हो विचरता है। आकाशानन्त्यायतनको पार कर 'विज्ञान अनन्त है' करके विज्ञानन्त्यायतनको प्राप्त हो विहार करता है। 'विज्ञान-न्त्यायतनको पार कर 'कुछ नहीं है' करके आकिञ्चनन्यायतनको प्राप्त हो विहार करता है। आकिंचन्यायतनको पारकर 'न संज्ञा और न असंज्ञा आयतन' को प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार, भिक्षु स्थिरता-प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु किस प्रकार आर्यत्व-प्राप्त होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु यह दुःख है इसे भली प्रकार जानता है ...... यह दुःखनिरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है, इसे भली प्रकार जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु आर्यत्व-प्राप्त होता है।

(५) महावर्ग

भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीसे सुपरिचित किये जाते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते हैं उससे चार शुभ परिणामोंकी आशा की जा सकती है। कौनसे चार ? भिक्षुओ, एक भिक्षु धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेयाकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्‌भुत धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते ह, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते हैं। वह मूढ़-स्मृति हो शरीर त्याग करता है तो किसी देव-योगिनमें जन्म ग्रहण करता है,। वहाँ रहते हुए सुख-पूर्वक धर्म-वचन प्रकट होते हैं। बुद्धवचनानु-स्मृतिकी उत्पत्ति बहुत बड़ी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (=निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते है, वाणीसे सुपरिचित किये जाते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते हैं उससे इस प्रथम शुभ-परिणामकी आशा की जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, देय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्‌भुत धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते हैं। वह मूढ़-स्मृति हो शरीर त्याग करता है तो किसी-न-किसी देवयोनिमें जन्म ग्रहण करता है। वहाँ रहते हुए सुविधा-

पूर्वक धर्म-वचन प्रकट नहीं होते हैं। किन्तु वह भिक्षु ऋद्धिमान होनेके कारण, चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्में धर्मकी देशना करता है। उसको ध्यान आता है कि यह वही धर्म-विनय (बुद्ध देशना) है जिसके अनुसार मैंने पहले श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया। भिक्षुओ, बुद्ध वचनानुस्मृतिकी उत्पत्ति बड़ी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी भेरी-शब्दसे सुपरिचित हो। रास्ते चलता हुआ वह ढोलका शब्द सुने। उसके मनमें यह भेरी शब्द है अथवा नहीं है, इसके विषयमें कुछ भी शंका या सन्देह न हो। वह निश्चयपूर्वक यह समझ ले कि यह भेरी शब्द ही है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं, तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते हैं। वह मूढ़ स्मृति हो शरीर त्याग करता है तो किसी-न-किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करता है। वहाँ रहते हुए सुविधा-पूर्वक धर्म-वचन प्रकट नहीं होते हैं। किन्तु वह भिक्षु ऋद्धिमान् होनेके कारण, चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्में धर्मकी देशना करता है। उसको ध्यान आता है कि यह वही धर्म-विनय (बुद्ध-देशना) है जिसके अनुसार मैंने पहले श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया है। भिक्षुओ, बुद्धवचानुस्मृतिकी उत्पत्ति बड़ी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीसे सुपरिचित किये जाते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते हैं उससे इस दूसरे शुभ-परिणामकी आशा की जा सकती है।

फिर, भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है, सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते हैं। वह मूढ़-स्मृति हो, शरीर त्याग करता है तो किसी न किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करता है। उसके वहाँ सुविधापूर्वक रहते सयम न तो धर्म-वचन प्रकट होते हैं, न वह भिक्षु ऋद्धिमान वा चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्में धर्मकी देशना ही करता है, किन्तु देव-पुत्र देव परिषद्में धर्मकी देशना करता है। उसको ध्यान आता है कि यह वही धर्म-विनय (= बुद्ध देशना) है जिसके अनुसार मैंने पहले श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया है। भिक्षुओ, बुद्ध वचनानु-

स्मृतिकी उत्पत्ति बड़ी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी शंख-शब्दसे सुपरिचित हो। रास्ते चलता हुआ वह शंखका शब्द सुने। उसके मनमें यह शंख-शब्द है अथवा नहीं है, इसके विषयमें कुछ भी शंका या सन्देह न हो। वह निश्चय पूर्वक यह समझ ले कि यह शंख शब्द ही है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते हैं। वह मूढ़-स्मृति हो शरीर त्याग करता है, तो किसी-न-किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करता है। उसके वहाँ रहते समय न तो सुविधा पूर्वक धर्म-वचन प्रकट होते हैं, न वह भिक्षु ऋद्धिमान तथा चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्में धर्मकी देशना ही करता है, किन्तु देव-पुत्र देव-परिषद्में धर्मकी देशना करता है। उसको ध्यान आता है कि यह वही धर्म-विनय (= बुद्धदेशना) है जिसके अनुसार मैंने पहले श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया है। भिक्षुओ, बुद्धवचनानुस्मृतिकी उत्पत्ति बड़ी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) प्राप्त करनेवाला होता है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीसे सुपरिचित किये जाते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते हैं, उससे इस तीसरे शुभ-परिणामकी आशा की जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका, तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं, तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते हैं। वह मूढ़-स्मृति हो शरीर त्याग करता है तो किसी न किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करता है। उसके वहाँ सुविधा पूर्वक रहते समय न तो धर्म-वचन प्रकट होते हैं, न वह भिक्षु ऋद्धिमान वा चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्में धर्मकी देशना ही करता है, न देव-पुत्र देव-परिषद्में धर्मकी देशना करता हैं, किन्तु बिना माता-पिताके उत्पन्न ओपपातिक प्राणी दूसरे ओपपातिक प्राणीको याद दिलाता है—मित्र याद है कि हमने पहले किस जगहपर श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया था? उसने उत्तर दिया—मित्र! याद है, मित्र याद है। भिक्षुओ, बुद्ध वचनानुस्मृतिकी उत्पत्ति बड़ी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष-

(= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। जैसे भिक्षुओ, दो लंगोटिये यार कहीं एक दूसरेसे मिलें। तब एक मित्र दूसरेसे पूछे—मित्र! क्या यह भी याद है? मित्र! क्या यह भी याद है? वह उत्तर दे—मित्र! याद है। मित्र! याद है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका पाठ करता है—सूत्रका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्‌भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। उसके द्वारा वे धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये रहते हैं। वह मूढ़-स्मृति हो शरीर त्याग करता है, तो किसी न किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करता है। उसके वहाँ सुविधापूर्वक रहते समय न तो धर्म-वचन प्रकट होते हैं, न वह भिक्षु ऋद्धिमान वा चित्त-वशी होनेके कारण देव-परिषद्‌में धर्मकी देशना ही करता है, न देव-पुत्र देव-परिषदमें धर्मकी देशना करता है, किन्तु बिना माता-पिताके उत्पन्न ओपपातिक प्राणी दूसरे ओपपातिक प्राणीको याद दिलाता है—मित्र याद है कि हमने पहले किस जगह पर श्रेष्ठ जीवन व्यतीत किया था? उसने उत्तर दिया, मित्र! याद है। मित्र! याद है। भिक्षुओ, बुद्धवचनानुस्मृतिकी उत्पत्ति बड़ी बात है। भिक्षुओ, वह भिक्षु शीघ्र ही विशेष (= निर्वाण) को प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीसे सुपरिचित किये जाते हैं, मनसे सुविचारित रहते हैं तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते हैं, उससे इस चौथे शुभ-परिणामकी आशा की जा सकती है। भिक्षुओ, जो धर्म कानसे सुने जाते हैं, वाणीको सुपरिचित रहते हैं, तथा प्रज्ञासे भली प्रकार ग्रहण किये जाते हैं उससे चार शुभ-परिणामोंकी आशा की जा सकती है।

भिक्षुओ, ये चार बातें चार बातोंसे जानी जा सकती हैं। कौन-सी चार? भिक्षुओ, साथ रहनेसे ही किसीका शील जाना जा सकता है, वह भी अधिक समय तक साथ रहनेसे, थोड़े समय साथ रहनेसे नहीं; विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं। भिक्षुओ, व्यवहारसे ही किसी आदमीकी शुचिता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय व्यवहार करनेसे, थोड़े समय व्यवहार करनेसे नहीं; विचार करनेसे बिना विचार किये नहीं, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा अप्रज्ञावान द्वारा नहीं। भिक्षुओ, आपत्तियाँ आनेपर सहनशीलता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक आपत्तियाँ सहन कर सकनेसे, थोड़े समय सहन कर सकनेसे नहीं, विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं। भिक्षुओ, चर्चा करनेसे प्रज्ञा जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक चर्चा करनेसे, थोड़े समय तक चर्चा करनेसे नहीं, विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं।

भिक्षुओ, यह जो कहा गया कि साथ ही रहनेसे ही किसीका शील जाना जा सकता है, वह भी अधिक समय तक साथ रहनेसे, थोड़ा समय तक साथ रहनेसे नहीं; विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं—यह किस आशयसे कहा गया? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ रहता हुआ यह जानता है कि दीर्घ कालसे इस आदमीका शील सछिद्र है, धब्बेदार है, मलिन है, यह निरन्तर शीलका ध्यान रखने वाला नहीं है, यह दुःशील है, यह शीलवान् नहीं है। भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ रहता हुआ यह जानता है कि दीर्घकालसे इस आदमीका शील खण्डित नहीं है, सछिद्र नहीं है, धब्बेदार नहीं है, मलिन नहीं है, यह शीलवान् है, यह दुःशील नहीं है। भिक्षुओ, साथ ही रहनेसे किसीका शील जाना जा सकता है, वह भी अधिक समय तक साथ रहनेसे, थोड़े समय तक साथ रहनेसे नहीं; विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं—यह जो कहा गया, यह इसी आशयसे कहा गया।

भिक्षुओ, व्यवहारसे ही किसी आदमीकी शुचिता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय व्यवहार करनेसे, थोड़े समय व्यवहार करनेसे नहीं, विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं—यह किस आशयसे कहा गया? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ व्यवहार करके यह जानता है कि यह आयुष्मान् एक आदमीके साथ एक तरह व्यवहार करता है, दो के साथ और तरहसे, तीनके साथ और तरहसे, बहुतोंके साथ और तरहसे., इसके पहलेके व्यवहारसे पीछेका व्यवहार मेल नहीं खाता, यह आयुष्मान् अशुद्ध व्यवहार वाला है, यह आयुष्मान् शुद्ध व्यवहार वाला नहीं। भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ व्यवहार करके यह जानता है कि यह आयुष्मान् जैसे एक आदमीके साथ व्यवहार करता है, वैसा ही दो के साथ, वैसा ही तीन के साथ, वैसा ही बहुतोंके साथ। इसके पहलेके व्यवहारसे पीछेका व्यवहार मेल खाता है। यह आयुष्मान् शुद्ध-व्यवहार वाला है, यह आयुष्मान् अशुद्ध-व्यवहार वाला नहीं। भिक्षुओ, व्यवहार करनेसे ही किसी आदमीकी शुचिता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय व्यवहार करनेसे, थोड़े समय व्यवहार करनेसे नहीं, विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं—यह जो कहा गया, यह इसी आशयसे कहा गया।

भिक्षुओ, विपत्तियाँ आनेपर ही सहनशीलता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक आपत्तियाँ सहन कर सकनेसे, थोड़े समय सहन कर सकनेसे नहीं;

विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं—यह किस आशयसे कहा गया ? भिक्षुओ, एक आदमी ज्ञाति (के अभाव) के दुःखसे स्पृष्ट होनेपर, भोग-सामग्री (के नाश) के दुःखसे स्पृष्ट होनेपर, रोग-दुःख से स्पृष्ट होनेपर, यह विचार नहीं करता कि यह संसार ऐसा ही है; और यह जन्म ग्रहण करना भी ऐसा ही है; जैसे संसारमें जैसा जन्म ग्रहण करनेपर आठ लोक-धर्म लोकको घेर लेते हैं अथवा लोक आठ लोक-धर्मों द्वारा घिरा रहता है—लाभ, अलाभ, यश, अपयश, निन्दा, प्रशंसा तथा सुख और दुःख। वह ज्ञातिके दुःखसे स्पृष्ट होनेपर, भोग (सामग्रीके नाशके) दुःखसे स्पृष्ट होनेपर सोचता है, क्लेश पाता है, रोता है, छाती पीटता है तथा बेहोश हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी ज्ञाति (के अभावके) दुःखसे स्पृष्ट होनेपर, भोग-सामग्रीके नाशके दुःखसे स्पृष्ट होनेपर, रोग-दुःखसे स्पृष्ट होनेपर यह विचार करता है कि यह संसार ऐसा ही है; और यह जन्म ग्रहण करना भी ऐसा ही है जैसे संसारमें; जैसा जन्म ग्रहण करनेपर आठ लोक-धर्म लोकको घेर लेते हैं अथवा लोक आठ लोक-धर्मों द्वारा घिरा रहता है—लाभ, अलाभ, यश, अपयश, निन्दा, प्रशंसा तथा सुख और दुःख। वह ज्ञातिके दुःखसे स्पृष्ट होनेपर, भोग (सामग्रीके नाशके) दुःखसे स्पृष्ट होनेपर, न सोचता है, न क्लेश पाता है, न रोता है, न छाती पीटता है और न बेहोश हो जाता है। भिक्षुओ, विपत्तियाँ आनेपर ही सहनशीलता जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक आपत्तियाँ सहन करनेसे, थोड़े समय कर सकनेसे नहीं; विचार करनेसे, बिना विचार करनेसे नहीं, प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं—यह जो कहा गया, यह इही आशयसे कहा गया।

भिक्षुओ, चर्चा करतेसे प्रज्ञा जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक चर्चा करनेसे, थोड़े समय तक चर्चा करनेसे नहीं, विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं—यह जो कहा गया, यह किस आशयसे कहा गया ? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेसे चर्चा करके यह जानता है कि इस आयुष्मान्का जैसा (ग़लत) रास्ता है, जैसा व्यवहार है, जैसे यह प्रश्नोंको विसर्जित करता है, उससे पता लगता है कि यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन है, प्रज्ञावान् नहीं है। ऐसा क्यों ? इसलिये कि यह आयुष्मान् कोई गम्भीर बात नहीं कहता, जो शान्त हो, प्रणीत हो, तर्कसे अगोचर हो, निपुण हो, पण्डितों द्वारा ही जानी जा सकने वाली हो। यह आयुष्मान् जिस धर्मको कहता है उसका संक्षेप या विस्तारसे अर्थ कह सकनेमें, देशना कर सकनेमें, प्रज्ञापन कर सकनेमें, स्थापित कर सकनेमें,

खोलकर दिखा सकनेमें, विभाजन कर सकनेमें तथा स्पष्ट कर सकनेमें असमर्थ है। यह आयुष्मान् प्रज्ञा-हीन है, यह आयुष्मान् प्रज्ञावान् नहीं है। भिक्षुओ, जैसे कोई आँख वाला आदमी पानीके तालाबके तटपर खड़ा होकर देखे किसी छोटे मच्छको, ऊपर-नीचे जाते हुए। उसके मनमें हो कि जैसी इस मच्छकी ऊपर-नीचे आने-जानेकी गति है, जैसा लहरोंका घात है, जैसा वेग है, उसे देखनेसे यही मालूम होता है कि यह छोटा मच्छ है, यह बड़ा मच्छ नहीं। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेसे चर्चा करके यह जानता है कि इस आयुष्मान्का जैसा (ग़लत) रास्ता है, जैसा व्यवहार है, जैसे यह प्रश्नोंको विसर्जित करता है, उससे पता लगता है कि यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन है, प्रज्ञावान् नहीं है। ऐसा क्यों? इसलिये कि यह आयुष्मान् कोई गम्भीर बात नहीं कहता, जो शान्त हो, प्रणीत हो, तर्कसे अगोचर हो, निपुण हो, पण्डितों द्वारा ही जानी जा सकने वाली हो। यह आयुष्मान् जिस धर्मको कहता है, उसका संक्षेप या विस्तारसे अर्थ कह सकनेमें, देशना कर सकनेमें, प्रज्ञापन कर सकनेमें, स्थापित कर सकनेमें, खोलकर दिखा सकनेमें, विभाजन कर सकनेमें तथा स्पष्ट कर सकनेमें असमर्थ है। यह आयुष्यमान् प्रज्ञाहीन है, यह आयुष्मान् प्रज्ञावान् नहीं है। भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेसे चर्चा करके यह जानता है कि इस आयुष्मान्का जैसा (ठीक) रास्ता है, जैसा व्यवहार है, जैसे यह प्रश्नोंको विसर्जित करता है, उससे पता लगता है कि यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन नहीं है, प्रज्ञावान् है। ऐसा क्यों? इसलिये कि यह आयुष्मान् ऐसी गम्भीर बात कहता है, जो शान्त होती है, प्रणीत होती है, तर्कसे अगोचर होती है, निपुण होती है, पण्डितों द्वारा ही जानी जा सकने वाली होती है। यह आयुष्मान् जिस धर्मको कहता है, उसका संक्षेप या विस्तारसे अर्थ कह सकनेमें, देशना कर सकनेमें, प्रज्ञापन कर सकनेमें, स्थापित कर सकनेमें, खोलकर दिखा सकनेमें, विभाजन कर सकनेमें तथा स्पष्ट कर सकनेमें समर्थ है। यह आयुष्मान् प्रज्ञावान् है, यह आयुष्मान् प्रज्ञाहीन नहीं है। भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी पानीके तालाबके तटपर खड़ा होकर देखे किसी बड़े मच्छको—ऊपर-नीचे जाते हुए। उसके मनमें हो कि जैसी इस मच्छकी ऊपर-नीचे आने-जानेकी गति है, जैसा लहरोंका घात है, जैसा वेग है, उसे देखनेसे यही मालूम होता है कि यह बड़ा मच्छ है, यह छोटा मच्छ नहीं। इसी प्रकार भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेसे चर्चा करके यह जानता है कि इस आयुष्मान्का जैसा (ठीक) रास्ता है, जैसा व्यवहार है, जैसे यह प्रश्नोंको विसर्जित करता है, उससे पता लगता है कि यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन नहीं है, प्रज्ञावान् है। ऐसा किसलिये? इसलिये कि यह आयुष्मान् ऐसी गम्भीर बात कहता है, जो शान्त होती

है, प्रणीत होती है, तर्कसे अगोचर होती है, निपुण होती है, पण्डितों द्वारा ही जानी जा सकने वाली होती है। यह आयुष्मान् जिस धर्मको कहता है, उसका संक्षेप या विस्तारसे अर्थ कह सकनेमें, देशना कर सकनेमें, प्रज्ञापन कर सकनेमें, स्थापित कर सकनेमें, खोल कर दिखा सकनेमें, विभाजन कर सकनेमें तथा स्पष्ट कर सकनेमें समर्थ है। यह आयुष्मान् प्रज्ञावान् है, यह आयुष्मान् प्रज्ञा-विहीन नहीं है। भिक्षुओ, चर्चा करनेसे प्रज्ञा जानी जा सकती है, वह भी अधिक समय तक चर्चा करनेसे, थोड़े समय तक चर्चा करनेसे नहीं; विचार करनेसे, बिना विचार किये नहीं; प्रज्ञावान् आदमी द्वारा, अप्रज्ञावान् द्वारा नहीं—यह जो कहा गया, यह इसी आशयसे कहा गया। भिक्षुओ, ये चार बातें चार बातोंसे जानी जा सकती हैं।

एक समय भगवान् वैशालीके महावनमें कूटागार शालामें विहार करते थे। तब भद्दिय लिच्छवी जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए भद्दिय लिच्छीने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! मैंने सुना है कि श्रमण गौतम मायावी (=जादूगर) है, वशीकरण-मन्त्र जानता है, जिससे दूसरे तैर्थिकोंके श्रावकोंको अपनी ओर खींच लेता है। भन्ते! जो लोग ऐसा कहते हैं कि श्रमण गौतम मायावी (जादूगर) है, वशीकरण-मन्त्र जानता है, जिससे दूसरे तैर्थिकों (मतावलम्बिमों) के श्रावकोंको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। भन्ते! क्या वे लोग यथार्थ-भाषी हैं, भगवान्पर झूठा आरोप तो नहीं लगाते? धर्मकी बात ही कहते हैं? इससे कोई अपनी बात निग्रह-स्थानपर तो नहीं पहुँच जाती? भन्ते! हम भगवान्पर कोई दोष नहीं लगाना चाहते।"

"भद्दिय! तुम आओ। तुम किसी बातको केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनु-श्रुत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात उसी प्रकार कही गई है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे धर्म-ग्रन्थ (पिटक) के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (-शास्त्र) सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि आकार-प्रकार सुन्दर है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मतके अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वालेका व्यक्तित्व आकर्षक है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा 'पूज्य' है। हे भद्दिय! जब तुम आत्मानुभवसे अपने आप यह जान लो कि ये बातें अकुशल हैं, ये बातें सदोष हैं, ये बातें विज्ञ पुरुषों द्वारा निन्दित हैं, इन बातोंके अनुसार चलनेसे अहित होता है, दुःख होता है—तो हे भद्दिय! तुम इन बातोंको छोड़ दो।

"तो भद्दिय ! क्या मानते हो, पुरुषके अन्दर जो लोभ उत्पन्न होता है, वह उसके हितके लिये होता है वा अहितके लिये ?"

"भन्ते ! अहितके लिये।"

"हे भद्दिय ! जो लोभी है, जो लोभसे अभिभूत है, जो असंयत है, वह प्राणी-हत्या भी करता है, चोरी भी करता है, परस्त्री-गमन भी करता है, झूठ भी बोलता है, दूसरोंको भी वैसी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्घकाल तक उसके अहित तथा दुःखका कारण होती है।"

"भन्ते ! ऐसा ही है।"

"तो हे भद्दिय! क्या मानते हो, पुरुष के अन्दर जो द्वेष उत्पन्न होता है, जो मोह (मूढ़ता) उत्पन्न होता है, जो सारम्भ (क्रोध) उत्पन्न होता है, वह उस के हित के लिये होता है. या अहित के लिये ?"

"भन्ते ! अहित के लिये।"

"हे भद्दिय! जो क्रोधी है, जो क्रोध से अभिभूत है, जो असंयत है, वह प्राणी-हत्या भी करता है, चोरी भी करता हैं, परस्त्री-गमन भी करता हैं, झूठ भी बोलता है दुसरोंको भी वैसी प्रेरणा देता है, जो कि दीर्घकाल तक उसके अहित तथा दुःख का कारण होती हैं।"

"भन्ते! ऐसा ही है।"

"तो भद्दिय! क्या मानते हो, ये धर्म कुशल हैं वा अकुशल?"

"भन्ते ! अकुशल हैं।"

"सदोष हैं वा निर्दोष ?"

"भन्ते! सदोष हैं।"

"विज्ञ पुरुषों द्वारा निन्दित हैं, वा प्रशंसित हैं ?"

"भन्ते! विज्ञ पुरुषों द्वारा निन्दित हैं !"

"परिपूर्ण करने पर, आचरण करने पर, अहित के लिये, दुःख के लिये होते हैं, अथवा नहीं होते? इस विषय में तुम्हें कैसा लगता है ?"

"भन्ते ! परिपूर्ण करनेपर, आचरण करने पर, अहितके लिये, दुःखके लिये होते हैं ।इस विषयमें हमें ऐसा ही लगता है।"

"तो हे भद्दिय! यह जो कहा है—हे भद्दिय! आओ। तुम किसी बातको केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह बात परम्परागत है . . . ये धर्म अकुशल हैं, ये धर्म सदोष हैं, ये धर्म-विज्ञ-पुरुषों द्वारा

निन्दित हैं, ये धर्म परिपूर्ण करनेपर, आचरण करने पर, अहित के लिये, दुःख के लिये होते हैं। तो हे भद्दिय ! तुम इनधर्मों को छोड दो। यह जो कहा गया, यह इसी आशय से कहा गया।

"भद्दिय! तुम किसी बात को केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत हैं, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह बात परम्परागत है, इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात इसी प्रकार कही गई है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे पिटक (धर्म ग्रन्थ) के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (–शास्त्र) सम्मत है, केवल इस लिये मत स्वीकार करो कि आकार-प्रकार सुन्दर है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मतके अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वालेका व्यक्तित्व आकर्षक है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा 'पूज्य' है। हे भद्दिय ! जब तुम आत्मानुभवसे अपने आप यह जान लो कि ये बातें कुशल हैं, ये बातें निर्दोष हैं, ये बातें विज्ञ-पुरुषों द्वारा प्रशंसित हैं, ये बातें परिपूर्ण करनेपर, आचारण करनेपर, हित के लिये, सुखके लिये होती हैं, तो हे भद्दिय ! तुम इन बातोंको ग्रहण कर विचरो।

"तो भद्दिय ! क्या मानते हो, पुरुषके अन्दर जो अलोभ उत्पन्न होता है, वह उसके हितके लिये होता है वा अहितके लिये ?"

"भन्ते ! हितके लिये।"

"हे भद्दिय ! जो अलोभी है, जो लोभसे अभिभूत नहीं है, जो असंयत नहीं है, वह प्राणी-हत्या भी नहीं करता, चोरी भी नहीं करता, पर-स्त्री-गमन भी नहीं करता, झूठ भी नहीं बोलता, दूसरोंको भी वैसी प्रेरणा नहीं करता, जो कि दीर्घकाल तक उसके हित तथा सुखका कारण होती है।"

"भन्ते ! ऐसा ही है।"

"हे भद्दिय ! क्या मानते हो, पुरुषके अन्दर जो अद्वेष उत्पन्न होता है, व....अमोह उत्पन्न होता है.....असारम्भ (=अक्रोध) उत्पन्न होता है, वह उसके हितके लिये होता है वा अहितके लिये ?"

"भन्ते ! हितके लिये।"

"हे भद्दिय ! जो अक्रोधी है, जो क्रोधसे अभिभूत नहीं है, जो असंयत नहीं है,वह प्राणी-हत्या भी नहीं करता, चोरी भी नहीं करता, पर-स्त्री-गमन भी नहीं करता, झूठ भी नहीं बोलता, दूसरोंको भी वैसी प्रेरणा नहीं करता, जो कि दीर्घ कालतक उसके हित तथा सुखका कारण होती है।"

"भन्ते। ऐसा ही है।"

"तो भद्दिय! क्या मानते हो, ये धर्म कुशल हैं वा अकुशल?"

"भन्ते! कुशल हैं।"

"सदोष हैं वा निर्दोष।"

"भन्ते! निर्दोष हैं।"

"विज्ञ पुरुषों द्वारा निन्दित हैं वा प्रशंसित?"

"भन्ते! विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसित हैं।"

"परिपूर्ण करनेपर, आचरण करनेपर सुखके लिये होते हैं, अथवा नहीं होते? इस विषयमें तुम्हें कैसा लगता है?"

"भन्ते! परिपूर्ण करनेपर, आचारण करनेपर, हितके लिये, सुखके लिये होते हैं। इस विषयमें हमें ऐसा लगता है।"

"तो हे भद्दिय! यह जो कहा है—'हे भद्दिय! आओ। तुम किसी बातको केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात परम्परागत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात इसी प्रकार कही गई है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे पिटक (=धर्म-ग्रन्थ) के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क-सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह न्याय (-शास्त्र) सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि आकार-प्रकार सुन्दर है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे मतके अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वालेका व्यक्तित्व आकर्षक है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा 'पूज्य' है। हे भद्दिय! जब तुम आत्मानुभवसे अपने आप यह जान लो कि ये बातें कुशल हैं, ये बातें निर्दोष हैं, ये बातें विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसित हैं, ये बातें परिपूर्ण करनेपर, आचरण करनेपर, हितके लिये, सुखके लिये होती हैं। तो हे भद्दिय! तुम इन बातोंको ग्रहण कर तदनुसार आचरण करो।' यह जो कहा गया, यह इसी उद्देश्यसे कहा गया।

"भद्दिय! दुनियामें जितने भी सत्पुरुष हैं वे अपने शिष्योंको यही शिक्षा देते हैं—हे पुरुष! तू आ, लोभको वशमें रख-रखकर विचर, लोभको वशमें रख-रखकर विहार करनेसे शरीर, वाणी या मनसे कोई भी लोभोत्पन्न कर्म नहीं करेगा, द्वेषको वशमें रख रखकर विचर, द्वेषको वशमें रख रखकर विहार करनेसे शरीर, वाणी या मनसे कोई भी द्वेष-जन्य कर्म नहीं होगा; मोह (=मूढ़ता) को वशमें रखकर विचर, मोहको वशमें रख रखकर विहार करनेसे शरीर, वाणी या मनसे

कोई भी मोह-जन्य कर्म नहीं होगा; समारम्भ (= क्रोध) को वशमें रखरखकर विचर, समारम्भको वशमें रख रखकर विचरनेसे शरीर, वाणी या मनसे कोई भी समारम्भ-जन्य कर्म न होगा।"

ऐसा कहनेपर भद्दिय लिच्छवीने भगवान्‌से कहा—भन्ते! सुन्दर है। .....आजसे प्राण रहने तक भन्ते! आप मुझे अपना शरणागत उपासक समझें।"

"हे भद्दिय! मैंने तुझे यह तो नहीं कहा कि हे भद्दिय! तू आकर मेरा शिष्य बन, मैं तेरा शास्ता बनूंगा?"

"भन्ते! नहीं।"

"भद्दिय! मैं जो ऐसा मत रखने वाला हूँ, मुझे कुछ श्रमण-ब्राह्मण झूठ मूठ कहते है कि श्रमण गौतम मायावी (= जादूगर) है, वह वशीकरण मन्त्र जानता है, जिससे दूसरे तैथिकों (= मतावलम्बी) के श्रवकोंको अपनी ओर आर्कषित कर लेता है।"

"भन्ते! आपकी यह माया अच्छी है, आपकी यह माया कल्याणकारिणी है। भन्ते! यदि मेरे रक्त-सम्बन्धी इस मायाके वशीभूत हो जायें तो यह मेरे लिये कितना प्रियकर हो, यह मेरे रक्त-संबंन्धियोंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भन्ते! यदि सभी क्षत्रिय इस मायाके वशीभूत हो जायें तो यह मेरे लिये कितना प्रियकर हो, और यह सभी क्षत्रियोंके लिये दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भन्ते! यदि सभी ब्राम्हण...वैश्य...शूद्र इस मायाके वशीभूत हो जायें, तो यह सभी शूद्रोंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो।"

"भद्दिय! यह ऐसा ही है। भद्दिय! यह ऐसा ही है। भद्दिय! यदि सभी क्षत्रिय इस मायाके वशीभूत हो जायें—अकुशलका त्याग करनेके लिये तथा कुशलका सम्पादन करनेके लिये—तो यह सभी क्षत्रियोंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भद्दिय! यदि सभी ब्राम्हण...वैश्य...शूद्र इस मायाके वशीभूत ही जायें—अकुशल का त्याग करनेके लिये तथा कुशलका सम्पादन करनेके लिये—तो यह सभी शूद्रोंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भद्दिय! यदि सदेव, समार, सब्रम्ह लोक देव-ब्राम्हण प्रजा सहित सारे देवता-मनुष्य इस मायाके वशीभूत हो जायें—अकुशल का त्याग करनेके लिये तथा कुशलका सम्पादन करनेके लिये—तो यह सदेव, समार सब्रम्ह लोक, देव-ब्राम्हण प्रजा सहित सारे देवता मनुष्योंके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो। भद्दिय! ये महत्वशाली भी यदि इस मायाके वशीभूत हो जायें, तो यह इन सबके दीर्घकालीन हित और सुखके लिये हो—तब (सामान्य) जनोंका तो कहना ही क्या!

एक समय आयुष्मान आनन्द कोळिय जनपदमें सापुगन नामके कोळियोंके निगममें विहार करते थे। तब बहुतसे सापुग-निवासी कोळिय पुत्र जहां आयुष्मान आनन्द थे वहां पहुँचे, पास जाकर आयुष्मान आनन्दको अभिवादन कर एक और बैठ गये। एक औंर बैठे सापुग-निवासी कोळिय-पुत्रोंको आयुष्मान आनन्दने यह कहा—हे व्यग्धपज्झो! उन भगवान जानकार, दर्शी, अर्हत्, सम्यक् सम्बुद्धने प्राणियोंकी विशुद्धि के लिये, शोक-अनुतापके नाशके लिये, दुःख-दौर्मनस्योंको अस्त करनेके लिये, ज्ञान की प्राप्तिके लिये तथा निर्वाणको साक्षात् करनेके लिये चार परिशुद्धि-प्रयत्नके अंग सम्यक् प्रकारसे कहे हैं। कौनसे चार? शील-परिशुद्धि-प्रयत्न-अंग, चित्त परि-शुद्धि प्रयत्न-अंग, दृष्टि-परिशुद्धि-प्रयत्न अंग, विमुक्ति-परिशुद्धि-प्रयत्न-अंग। व्यग्ध-पज्झो! शील-परिशुद्धि-प्रयत्न अंग किसे कहते हैं। हे व्यग्धपज्झो! भिक्षु शीलवान् होता है..... शिक्षापदोंको सम्यक् ग्रहण कर उनका अभ्यास करता है; व्यग्धपज्झो! यह शील-परिशुद्धि कही जाती है। जब कोई इस प्रकारकी शील-परिशुद्धिमें कमी रहनेपर, उसे पूरा करता है अथवा पूर्ति हुई रहनेपर प्रज्ञासे उसीपर अनुग्रह करते रहने-का संकल्प करता है, उसके लिये जो उसका प्रयत्न होता है, व्यायाम होता है, उत्साह होता है, मनोयोग होता है, कोशिश होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य (= चैतन्यता) होती है—व्यग्धपज्झ! इसे कहते हैं शील-परिशुद्धि प्रयत्न अंग।

"व्यग्धपज्झ! चित्त परिशुद्धि-प्रयत्न-अंग किसे कहते हैं? व्यग्धपज्झ! भिक्षु कामभोगोंसे रहित हो.....चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। व्यग्धपज्झ! इसे कहते हैं चित्त-परिशुद्धि। जब कोई इस प्रकारकी चित्त-परिशुद्धिमें कमी रहनेपर उसे पूरा करता है, अथवा पूर्ति हुई रहनेपर प्रज्ञासे उसी पर अनुग्रह करते रहनेका संकल्प करता है, उसके लिये जो उसका प्रयत्न होता है, व्यायाम होता है, उत्साह होता है, मनोयोग होता है, कोशिश होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य (= चैतन्यता) होती है—व्यग्धपज्झ! इस कहते हैं चित्त-परिशुद्ध-प्रयत्न-अंग।

"व्यग्धपज्झ! दृष्टि-परिशुद्धि-प्रयत्न-अंग किसे कहते हैं?"

"व्यग्धपज्झ! भिक्षु यह दुःख है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है...यह दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है। व्यग्धपज्झ! इसे कहते हैं दृष्टि-परिशुद्धि। जब कोई इस प्रकारकी दृष्टि-परिशुद्धिमें कमी रहनेपर उसे पूरा करता है, अथवा पूर्ति हुई रहनेपर प्रज्ञासे उसीपर अनुग्रह करते रहनेका संकल्प करता है, उसके लिये जो उसका प्रयत्न होता है, व्यायाम होता है, उत्साह होता है,

मनोयोग होता है, कोशिश होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य (=चैतन्यता) होती है—व्यग्घपज्ज ! इसे कहते हैं दृष्टि-परिशुद्धि प्रयत्न-अंग।

"व्यग्घपज्ज ! विमुक्ति-परिशुद्धि-प्रयत्न-अंग किसे कहते हैं ?

"व्यग्घपज्ज ! वह आर्य-श्रावक इस शील-परिशुद्धि-प्रयत्न-अंगसे युक्त होता है, इस चित्त-परिशुद्धि-प्रयत्न-अंगसे युक्त होता है, तथा इस दृष्टि-परिशुद्धि-प्रयत्न-अंगसे युक्त होता है और वह जिन विषयोंमें अनुरक्त होता है, उनसे विरक्त होता है, जिन विषयोंसे विमुक्ति लाभ करना उचित है, उनसे विमुक्ति लाभ करता है। वह जिन विषयोंमें अनुरक्त होता है उनसे विरक्त हो, जिन विषयोंसे विमुक्ति लाभ करना उचित है, उनसे विमुक्ति लाभकर विमुक्तिका सम्यक् प्रकारसे स्पर्श (=अनुभव) करता है। व्यग्घपज्ज ! इसे कहते हैं विमुक्ति-परिशुद्धि। जब कोई इस प्रकारकी विमुक्ति-परिशुद्धिमें कमी रहनेपर उसे पूरा करता है, अथवा पूर्ति हुई रहनेपर प्रज्ञासे उसीपर अनुग्रह करते रहनेका संकल्प करता है, उसके लिये जो उसका प्रयत्न होता है, व्यायाम होता है, उत्साह होता है, मनोयोग होता है, कोशिश होती है, स्मृति होती है, संप्रजन्य (=चैतन्यता) होती है—व्यग्घपज्ज ! इसे कहते हैं विमुक्ति-परिशुद्धि-प्रयत्न-अंग। हे व्यग्घपज्ज ! उन भगवान्, जानकार, दर्शी, अर्हत, सम्यक्, सम्बुद्धने प्रोणियोंकी विशुद्धिके लिये; शोक अनुतापके नाशके लिये, दुःख-दौर्मनस्योंको अस्त करनेके लिये, ज्ञानकी प्राप्तिके लिये तथा निर्वाणको साक्षात् करनेके लिये चार परिशुद्धि-प्रयत्नके अंग सम्यक्-प्रकारसे कहे हैं।

एक समय भगवान् शाक्य जनपदमें कपिलवस्तुके न्यग्रोधाराममें विहार करते थे। उस समय निगण्ठनाथ पुत्रका श्रावक वप्प जहाँ आयुष्मान् महामौद्गल्यायन थे, वहाँ गया। पास पहुँच, आयुष्मान् महामौद्गल्यायनको अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए निगण्ठनाथ श्रावक वप्पको महामौद्गल्यायनने यह कहा—वप्प ! एक आदमी शरीर, वाणी तथा मनसे संयत हो; वह अविद्यासे विरक्त हो और विद्यालाभी हो। वप्प ! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्व-जन्मके दुःखद आस्रवोंकी प्राप्ति हो ?

"भन्ते ! मैं इसकी सम्भावना देखता हूँ कि आदमीने पूर्व जन्ममें पाप-कर्म किया हो, किन्तु उस पाप-कर्मका फल न भुगता हो, तो ऐसी हालतमें उस पुरुषको पूर्व-जन्मके दुःखद आस्रवोंकी प्राप्ति हो।"

आयुष्मान मौद्गल्यायनके साथ निगण्ठनाथ श्रावक वप्प शाक्यकी यह बात-चीत हुई। तब भगवान् शामके समय ध्यानसे उठ, जहाँ उपस्थान-शाला थी, वहाँ

पहुँचे। पहुँचकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्ने आयुष्मान् मौद्गल्यायनसे पूछा—"मौद्गल्यायन! इस समय बैठे क्या बातचीत कर रहे थे? इस समय क्या बात-चीत चालू थी?" "भन्ते! मैंने निगण्ठानाथ श्रावक वप्प शाक्यको यह कहा—वप्प! एक आदमी शरीर, वाणी तथा मनसे संयत हो; वह अविद्यासे विरक्त हो और विद्यालाभी हो। वप्प! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्व जन्मके दुःखद आस्रवोंकी प्राप्ति हो? भन्ते! ऐसा कहनेपर निगण्ठ श्रावक वप्प शाक्यने मुझे ऐसा कहा, 'भन्ते! मैं इसकी सम्भावना देखता हूँ कि आदमीने पूर्वजन्ममें पाप-कर्म किया हो, किन्तु उस पाप-कर्मका फल न भुगता हो, तो ऐसी हालतमें उस पुरुषको पूर्व-जन्मके दुःखद आस्रवोंकी प्राप्ति हो।' भन्ते! निगण्ठनाथ श्रावक वप्प शाक्यके साथ मेरी यह बातचीत चल रही थी कि भगवान् आ पहुँचे।

तब भगवान्ने निगण्ठ-श्रावक वप्प शाक्यसे कहा—वप्प! जो बात तुझे मान्य हो, उसे मानना; जो बात स्वीकार करने योग्य न जंचे, उसे स्वीकार मत करना। यदि मेरी कोई बात समझमें न आये तो मुझसे ही उसका अर्थ पूछ लेना कि भन्ते! इसका क्या मतलब है? अब हम दोनोंकी बातचीत हो।

"भन्ते! भगवानकी जो बात मुझे मान्य होगी, उसे मानूँगा, जो बात स्वीकार करने योग्य न जँचेगी उसे स्वीकार नहीं करूँगा। यदि कोई बात मेरी समझमें न आयेगी तो मैं भगवानसे ही उसका अर्थ पूछ लूँगा कि भन्ते! इसका क्या मतलब है? हम दोनोंकी बात-चीत हो।"

"वप्प! तो क्या मानते हो शारीरिक-क्रियाओंके परिणामस्वरूप जो दुःखद आस्रव उत्पन्न होते हैं; शारीरिक-क्रियाओंसे विरत रहनेसे दुःखद आस्रव उत्पन्न नहीं होते? वह नया-कर्म नहीं करता। पुराने कर्मको भुगत-भुगतकर क्षीण कर देता है—यह क्षीणकरने वाली क्रिया सांदृष्टिक है, निर्जरा (=क्षयी) है, अकालिक है, इसके बारेमें कहा जा सकता है, आओ और स्वयं देख लो, लेजाने वाली है, प्रत्येक विज्ञ पुरुष द्वारा जानी जा सकती है। वप्प! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्वजन्मके दुःखद आस्रवोंकी प्राप्ति हो?

"भन्ते! नहीं।"

"वप्प! तो क्या मानते हो वाणीकी क्रियाओंके परिणाम स्वरूप जोदुःखद आस्रव उत्पन्न होते हैं, वाणीकी क्रियाओंसे विरत रहनेसे वे दुःखद आस्रव उत्पन्न नहीं होते? वह नया-कर्म नहीं करता। पुराने कर्मको भुगत भुगत कर क्षीण कर देता है,—यह क्षीण करनेवाली क्रिया सांदृष्टिक है, निर्जरा (=क्षमी) है, अकालिक

है, इसके बारेमें कहा जा सकता है आओ और स्वयं देख लो, ले जाने वाली है, प्रत्येक विज्ञ पुरुष द्वारा जानी जा सकती है। वप्प! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्व-जन्मके दुःखद आस्रवोंकी प्राप्ति हो?"

"भन्ते! नहीं।"

"वप्प! तो क्या मानते हो मनकी क्रियाओंके परिणाम-स्वरूप जो दुःखद आस्रव उत्पन्न होते हैं, मनकी क्रियाओंसे विरत रहनेसे वे दुःखद आस्रव उत्पन्न नहीं होते? वह नया कर्म नहीं करता। पुराने कर्मको भुगत भुगत कर क्षीण कर देता है—यह क्षीण करनेवाली क्रिया सांदृष्टिक है, निर्जरा (=क्षयी) है, अकालिक है, इसके बारेमें कहा जा सकता है 'आओ और स्वयं देख लो', ले जाने वाली है, प्रत्येक विज्ञ पुरुष द्वारा जानी जा सकती है। वप्प! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है कि उस पुरुषको पूर्व जन्मके दुःखद आस्रवोंकी प्राप्ति हो?"

"भन्ते! नहीं।"

"वप्प! तो क्या मानते हो अविद्याके परिणाम-स्वरूप जो दुःखद आस्रव उत्पन्न होते हैं, अविद्याके विनष्ट हो जानेसे, विद्या के उत्पन्न हो जानेसे वे दुःखद आस्रव उत्पन्न नहीं होते? वह नया-कर्म नहीं करता। पुराने कर्मको भुगत-भुगतकर क्षीण कर देता है—यह क्षीण करनेवाली क्रिया सांदृष्टिक है, निर्जरा (=क्षयी) है, अकालिक है, इसके बारेमें कहा जा सकता है, 'आओ और स्वयं देख लो', (निर्वाणकी ओर) ले जाने वाली है, प्रत्येक विज्ञ पुरुष द्वारा जानी जा सकती है। वप्प! क्या तुझे इसकी सम्भावना दिखाई देती है, कि उस पुरुषको पूर्व जन्मके दुःखद आस्रवों की प्राप्ति हो?"

"भन्ते! नहीं।"

"वप्प! इस प्रकार जो भिक्षु सम्यक् रीतिसे विमुक्त चित्त हो गया है, उसे छह शान्त-विहरण सिद्ध होते हैं। वह आँखसे रूप देखनेपर न प्रसन्न होता है, न अप्रसन्न होता है, वह उपेक्षा-युक्त रहता है, स्मृतिमान् तथा ज्ञानी। कानसे शब्द सुनकर नाकसे गन्ध सूँघकर.... जिह्वासे रस चखकर .... कायसे स्पृष्टव्यका स्पर्श करके.... तथा मनसे धर्म (=मनके विषयों) को जानकर न प्रसन्न होता है, न अप्रसन्न होता है, वह उपेक्षायुक्त रहता है, स्मृतिमान् तथा ज्ञानी। वह जब तक पंचे-न्द्रियोंसे अनुभवकी जानेवाली सुख-दुःखमय वेदनाओंका अनुभव करता है, तब तक यह जानता है कि मैं पंचेन्द्रियोंसे अनुभवकी जाने वाली सुख-दुःखमय वेदनाओंका अनुभव कर रहा हूँ। वह जब तक जीवन पर्यंत मनेन्द्रियसे अनुभवकी जाने वाली वेदनाओंका अनुभव करता है, तब तक यह जानता है कि मैं मनेन्द्रियसे अनुभवकी

जाने वाली वेदनाओंका अनुभव करता हूँ। वह यह भी जानता है कि शरीरके न रहनेपर, जीवनकी समाप्ति हो जानेपर सभी वेदनायें, सभी अच्छी-बुरी लगने वाली अनुभूतियाँ यहीं ठण्डी पड़ जायेंगी। वप्प! जैसे खम्भे के होनेसे उसकी प्रतिच्छाया दिखाई देती है। अब एक आदमी कुदाल और टोकरी लेकर आये। वह उस खम्भेको जड़से काट दे, जड़से काटकर उसे खने, उसे खनकर जड़ें उखाड़ दे, यहाँ तककी खसकी जड़ जैसी पह पतली पतली जड़ें भी। फिर वह आदमी उस खम्भेके टुकड़े टुकड़े करके उन्हें फाड़ डाले, फाड़ डालकर उसके छिलटे छिलटे कर दे, उसके छिलटे छिलटे करके उसे हवा-धूपमें सुखा डाले, हवा-धूपमें सुखाकर आगसे जला डाले, आगसे जलाकर राख कर दे, राख करके या तो हवामें उड़ादे अथवा नदीके शीघ्र -गामी स्रोतमें बहा दे। इस प्रकार वप्प! जो उस खम्भेके होनेसे प्रतिच्छाया थी उसकी जड़ जाती रहेगी, वह कटे वृक्षकी सी हो जायगी, वह लुप्त हो जायगी, वह फिर भविष्यमें प्रकट न होगी। इसी प्रकार वप्प! जो भिक्षु सम्यक् रीतिसे विमुक्त-चित्त हो गया है, उसे छः शान्त-विहरण सिद्ध होते हैं। वह आँखसे रूप देखनेपर न प्रसन्न होता है, न अप्रसन्न होता है, वह उपेक्षा-युक्त रहता है, स्मृतिमान् तथा ज्ञानी। कानसे शब्द सुनकर...नाकसे गन्ध सूँघकर...जिह्वासे रस चखकर...कायसे स्पृष्टव्यका स्पर्श करके...तथा मनसे धर्म (= मनके विषयों) को जानकर न प्रसन्न होता है, न अप्रसन्न होता है, वह उपेक्षायुक्त रहता है, स्मृतिमय तथा ज्ञानी। वह जब तक पंचेन्द्रियोंसे अनुभवकी जाने वाली सुख-दुःखमय वेदनाओंका अनुभव करता है तब तक यह जानता है कि मैं पंचेन्द्रियसे अनुभव की जाने वाली सुख-दुःखमय वेदनाओंका अनुभव कर रहा हूँ। वह जब तक जीवन पर्यंत मनेन्द्रियसे अनुभवकी जाने वाली वेदनाओंका अनुभव करता है, तब तक यह जानता है कि मैं मनेन्द्रियसे अनुभव की जानवाली वेदनाओंका अनुभव कर रहा हूँ। वह यह भी जानता है कि शरीरके न रहनेपर, जीवनकी समाप्ति हो जानेपर, सभी वेदनायें, सभी अच्छी बुरी लगने वाली अनुभूतियाँ यहीं ठण्डी पड़ जायेंगी।"

ऐसा कहने पर निगण्ठ-श्रावक वप्प शाक्यने भगवान्‌से यह कहा—"भन्ते! जैसे कोई आदमी हो, वह अपने धनकी वृद्धि चाहता हो, वह बछेरोंका पालन-पोषण करे। उसके धनकी वृद्धि तो न हो, बल्कि वह क्लेश तथा हैरानी को ही प्राप्त हो। इसी प्रकार भन्ते! मैंने अभिवृद्धि की कामनासे मूर्ख निगण्ठोंकी संगतिकी। मेरी अभिवृद्धि तो नहीं ही हुई, प्रत्युत मैं क्लेश और हैरानी का भागीदार हो गया। इसलिये भन्ते! अब आजके बादसे निगण्ठोंके प्रति जो भी मेरी श्रद्धा रही उसे मैं या तो

हवामें उड़ा देता हूँ अथवा तीव्रगामी नदीके स्रोतमें बहा देता हूँ। भन्ते ! बहुत सुन्दर है....भन्ते ! भगवान् मेरे प्राण रहने तक मुझे अपना उपासक स्वीकार करें।"

एक समय भगवान् वैशालीकी कुटागार शालामें विहार करते थे। तब साळह लिच्छवी तथा अभय लिच्छवी जहाँ भगवान् थे वहाँ गये। पास जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठे गये। एक ओर बैठे हुए साळह लिच्छवियोंने भगवान् से यह कहा—"भन्ते ! कुछ श्रमण-ब्राह्मण ऐसे हैं जिनका कहना है कि दो बातें होनेसे (संसार रूपी) बाढ़से निस्तार होता है—एक तो शील-विशुद्धि होनी चाहिये। दूसरे तप-जुगुप्सा होनी चाहिये। भगवान् इस विषयमें क्या कहते हैं ?"

"हे साळहो ! शील विशुद्धिको तो मैं श्रमणत्वका एक अंग कहता हूँ। किन्तु हे साळहो ! जो श्रमण-ब्राह्मण 'तप' के नामपर काय-क्लेश तथा 'पाप-जुगुप्सा' की बात करते हैं, उसीमें सार समझते हैं उसीमें अनुरक्त रहकर विहार करते हैं वे (संसार-रूपी) बाढ़से निस्तार पानेके अयोग्य हैं। और जिन श्रमण-ब्राह्मणोंके शारीरिक-कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म अशुद्ध होते हैं, मनके कर्म अशुद्ध होते हैं, जीविका अशुद्ध होती है वे ज्ञान-दर्शनके लिये, अनुपम सम्बोधि-प्राप्तिके लिये अयोग्य ठहरते हैं। हे साळहो ! जैसे कोई आदमी नदीके उस पार जाना चाहता हो, वह तेज कुल्हाड़ी लेकर वनमें प्रवेश करे। वहाँ उसे शालका बड़ा वृक्ष दिखाई दे, नवीन, अकौक्टत्य-युक्त। वह आदमी उसे जड़से काटे। जड़से काटकर अगले हिस्सेको काटे। अगले हिस्सेको काटकर शाखा-पत्तोंको अच्छी तरह छाँटे। शाखा-पत्तोंको छाँटकर कुल्हाड़ीसे छीले, कुल्हाड़ीसे छीलकर बसूलेसे छीले, बसूलेसे छीलकर लेखनी (?) से लिखे, लेखनीसे लिखकर पत्थरके बट्टेसे रगड़े और पत्थरके बट्टेसे रगड़कर नदीमें उतार दे। तो हे साळहो ! क्या मानते हो, क्या वह आदमी नदी पारकर सकेगा ?"

"भन्ते ! नहीं !"

"यह किस लिये !"

"भन्ते ! यद्यपि शालकी लकड़ी बाहरसे छील-छालकर साफ कर दी गई है, किन्तु अन्दरसे साफ नहीं की गई है। इसलिये इसीकी आशा की जानी चाहिये कि शालकी लकड़ी डूब जायेगी और वह आदमी विपत्तिमें पड़ जायेगा।"

"इसी प्रकार हे साळहो ! जो श्रमण-ब्राह्मण 'तप' के नामपर काय-क्लेश तथा पाप-जुगुप्साकी बात करते हैं, उसीमें सार समझते हैं, उसीमें अनुरक्त रह-रहकर विहार करते हैं, वे (संसार रूपी) बाढ़से निस्तार पानेके अयोग्य हैं। और

जिन श्रमण ब्राह्मणोंके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म अशुद्ध होते हैं, मनके कर्म अशुद्ध होते हैं, जीविका अशुद्ध होती है, वे ज्ञान-दर्शनके लिये, अनुपम सम्बोधि प्राप्तिके लिये अयोग्य ठहरते हैं। हे साळ्हो ! जो श्रमण-ब्राह्मण 'तप' के नामपर 'कायक्लेश' तथा (पाप-) जुगुप्सा' की बात नहीं करते हैं, उसीमें सार नहीं समझते हैं, उसीमें अनुरक्त रहकर विहार नहीं करते हैं, वे (संसार रूपी) बाढ़से निस्तार पानेके योग्य हैं। जिन श्रमण-ब्राह्मणोंके शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म शुद्ध होते हैं, मनके कर्म शुद्ध होते हैं, जीविका शुद्ध होती है, वे ज्ञान-दर्शनके लिये, अनुपम सम्बोधि-प्राप्तिके लिये योग्य ठहरते हैं। हे साळ्हो ! जैसे कोई आदमी नदीके उस पार जाना चाहता हो, वह तेज कुल्हाड़ी लेकर वनमें प्रवेश करे। वहाँ उसे शालका बड़ा वृक्ष दिखाई दे, नवीन, अकौकृत्य-युक्त। वह आदमी उसे जड़से काटे। जड़से काटकर अगले हिस्सेको काटे। अगले हिस्सेको काटकर, शाखा-पत्तोंको अच्छी तरह छाँटे। शाखा-पत्तोंको अच्छी तरह छाँटकर, कुल्हाड़ीसे छीले, कुल्हाड़ीसे छीलकर बसूलेसे छीले, बसूलेसे छीलकर, अन्दरसे कुरेदनेका औजार ले, अन्दरसे उसे अच्छी तरह साफ करे, अन्दरसे अच्छी तरह साफ करके लेखनीसे लकीरें खींचे, लेखनी से लकीरें खींचकर पत्थरके बट्टेसे रगड़े, पत्थरके बट्टेसे रगड़कर नौका बनाये। यह सब हो चुकनेपर डाण्डा और पाल बाँधे। डाण्डा और पाल बाँधकर नौकाको नदीमें उतार दे। तो हे साळ्हो ! क्या मानते हो, क्या वह आदमी नदी पार कर सकेगा ?"

"भन्ते ! हाँ।"

"यह किस लिये ?"

"भन्ते ! शालकी लकड़ी बाहरसे छील-छालकर साफ कर दी गई है और अन्दरसे भी एक दम साफ है, उसमें डाण्डा और पाल बाँध दी गई है। इस लिये आशा करनी चाहिये कि नौका नहीं डूबेगी और आदमी सकुशल उस पार चला जायगा।"

इसी प्रकार हे साळ्हो ! जो श्रमण-ब्राह्मण 'तप' के नामपर काय-क्लेश तथा (पाप-) जुगुप्साकी बात नहीं करते हैं, उसीमें सार नहीं समझते हैं, उसीमें अनुरक्त रहकर विहार नहीं करते हैं, वे (संसार रूपी) बाढ़से निस्तार पानेके योग्य हैं। जिन श्रमण-ब्राह्मणोंके शारीरिक-कर्म शुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म शुद्ध होते हैं, मनके कर्म शुद्ध होते हैं, जीविका शुद्ध होती है, वे ज्ञान-दर्शनके लिये, अनुपम सम्बोधि प्राप्ति के लिये योग्य ठहरते हैं।

"हे साळहो! जैसे कोई योद्धा हो और वह तीर के बहुतसे कमाल (= विचित्र विचित्र बातें) जानता हो, वह तीन बातें होनेसे राजाके योग्य होता है, राजा का भोग्य होता है तथा राजाका अंग ही माना जाता है। कौन सी तीन बातोंके होनेसे? वह दूर तक तीर गिराने वाला होता है, तुरन्त निशाना लगाने वाला होता है तथा बड़ी बड़ी चीजोंको छेद डालने वाला होता है। हे साळहो! जैसे योद्धा दूरतक तीर गिराने वाला होता है, उसी तरह आर्य-श्रावक सम्यक्-समाधि युक्त होता है। हे साळहो! जो आर्य-श्रावक सम्यक्-समाधिसे युक्त होता है, वह यह अच्छी प्रकार समझकर यथार्थ रूपसे ग्रहण किये रहता है कि यह जितना भी 'रूप' है, जितनी भी 'वेदना' है, जितनी भी 'संज्ञा' है, जितने भी 'संस्कार' हैं, जितना भी 'विज्ञान' है—चाहे भूत-कालका हो, चाहे वर्तमानका, चाहे भविष्यत्का; चाहे अपने अन्दरका हो, अथवा बाहरका, चाहे स्थूल हो, अथवा सूक्ष्म, चाहे बुरा हो अथवा भला, चाहे दूर हो अथवा समीप—वह न मेरा है, न वह मैं हूँ और न वह मेरी आत्मा है।

जैसे हे साळहो! योद्धा तुरन्त निशाना लगाने वाला होता है, वैसे ही आर्य श्रावक (सम्यक्) दृष्टि प्राप्त होता है। हे साळहो! जो आर्य-श्रावक सम्यक्-दृष्टि होता है, वह यह दुःख है, यह यथार्थ रूपसे जानता है . . . . . यह दुःख निरोधगामी मार्ग है, यह यथार्थ रूपसे जानता है।

"हे साळहो! जैसे योद्धा बड़ी-बड़ी चीजोंको बींध डालता है, उसी प्रकार हे साळहो! आर्यश्रावक सम्यक्-विमुक्त होता है। हे साळहो! जो आर्य श्रावक सम्यक्-विमुक्त होता है, वह बड़े भारी अविद्या-स्कन्धको छेद डालता है।

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार कर रहे थे। तब मल्लिका देवी जहाँ भगवान् थे, वहाँ गई। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठ गई। एक ओर बैठी हुई मल्लिका देवी भगवान् से यह बोली—"भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि कोई-कोई स्त्री दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, बदशक्ल होती है, दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुयें उसके पास नहीं होतीं, अल्प भोग्य सामग्री वाली होती है, सगे सम्बन्धी भी अधिक नहीं होते? भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि कोई-कोई स्त्री दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, बदशक्ल होती है, किन्तु धनी होती है, महान् सम्पत्ति शालिनी होती है, बहुत भोग्य-सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे सम्बन्धी भी अधिक होते हैं? भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि कोई-कोई स्त्री सुन्दर

होती है, दर्शनीय होती है, बड़े ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, किन्तु दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुयें उसके पास नहीं होतीं, अल्प भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्बन्धी भी अधिक नहीं होते? भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि कोई-कोई स्त्री सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है, बड़े ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, साथ ही धनी होती है, महान् सम्पत्ति शालिनी होती है, बहुत भोग्य-सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे-सम्बन्धी भी अधिक होते ह।?"

"मल्लिके! कोई कोई स्त्री क्रोधी-स्वभावकी होती है, अशान्त-स्वभावकी होती है, थोड़ी बात भी लग जाती है, कुपित हो जाती है, बिगड़ खड़ी होती है, कठोर हो जाती है, वह कोप, द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करती है। वह किसी श्रमण वा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शयन, आवास तथा प्रदीपके देने वाली नहीं होती। वह ईर्षालु होती है, दूसरोंको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमें। वह जलती है, डाह करती है, बद्ध-वैरिणी हो जाती है। यदि वह वहाँसे च्युत होकर स्त्रीका जन्म ग्रहण करती है तो, वह जहाँ जहाँ भी जन्म ग्रहण करती है, दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, बदशक्ल होती है, दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकनें लायक वस्तुयें उसके पास नहीं होतीं, अल्प-भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्बन्धी भी अधिक नहीं होते।

"मल्लिके! कोई कोई स्त्री क्रोधी-स्वभावकी होती है, अशान्त स्वभावकी होती है, थोड़ी बात भी लग जाती है, कुपित हो जाती है, बिगड़ खड़ी होती है, कठोर हो जाती है, वह कोप-क्रोध-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करती है। किन्तु वह किसी श्रमण वा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शयन, आवास (निवासस्थान) तथा प्रदीपके देनेवाली होती है। वह ईर्षालु नहीं होती, दूसरोंको मिलने वाले लाभ-सत्कार गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमें। वह न जलती है, न डाह करती है, न बद्ध-वैरिणी होती है। यदि वह यहाँसे च्युत होकर स्त्रीका जन्म ग्रहण करती है, तो वह जहाँ जहाँ भी जन्म ग्रहण करती है, दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, बदशक्ल होती है, किन्तु धनी होती है, महान् सम्पत्तिशालिनी होती है, बहुत भोग्य-सामग्रीवाली होती है तथा उसके सगे-सम्बन्धी भी अधिक होते हैं।

"मल्लिके! कोई-कोई स्त्री क्रोधी-स्वभावकी नहीं होती है, शान्त स्वभावकी होती है, बहुत बात कहनेपर भी उसे नहीं लगती, कुपित नहीं होती, बिगड़ खड़ी नहीं होती, कठोर नहीं होती, वह कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट नहीं करती। किन्तु वह

किसी श्रवण वा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शयन, आवास (=निवासस्थान) तथा प्रदीप (सामग्री) के देनेवाली नहीं होती। वह ईर्षालु होती है, दूसरोंको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमें। वह जलती है, डाह करती है, बद्ध-वैरिणी होती है,। यदि वह यहाँसे च्युत होकर स्त्रीका भी जन्म ग्रहण करती है तो वह जहाँ जहाँ भी जन्म ग्रहण करती है, सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है, बड़े ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, किन्तु दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुयें उसके पास नहीं होतीं, अल्प-भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्बन्धी भी अधिक नहीं होते।

"मल्लिके! कोई-कोई स्त्री क्रोधी स्वभावकी नहीं होती है, शान्त स्वभावकी होती है, बहुत बात कहने पर भी उसे नहीं लगती, कुपित नहीं होती, बिगड़ खड़ी नहीं होती, कठोर नहीं होती; वह कोप द्वेष तथा असन्तोष प्रकट नहीं करती। साथ ही वह किसी श्रमण वा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शयन, आवास (=निवासस्थान) तथा प्रदीप (–सामग्री) के देनेवाली होती है। वह ईर्षालु नहीं होती, दूसरोंको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदि के विषयमें। वह न जलती है, न डाह करती है, न बद्ध-वैरिणी होती है। यदि वह यहाँ से च्युत होकर स्त्रीका जन्म ग्रहण करती है तो वह जहाँ जहाँ भी जन्म ग्रहण करती है, सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है, बड़े ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, साथ ही वह धनी होती है, महान् सम्पत्ति-शालिनी होती है, बहुत भोग्य-सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे-सम्बन्धी भी अधिक होते हैं।

"मल्लिके! इसका यही कारण है, यही हेतु है कि कोई कोई स्त्री दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, व बदशक्ल होती है, दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुयें उसके पास नहीं होतीं, अल्प-भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्बन्धी भी अधिक नहीं होते। मल्लिके! इसका यही कारण है, यही हेतु है कि कोई कोई स्त्री दुर्वर्ण होती है, कुरूप होती है, बदशक्ल होती है, किन्तु धनी होती है, महान् सम्पत्तिशालिनी होती है, बहुत भोग्य सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे-सम्बन्धी भी अधिक होते हैं। मल्लिके! इसका यही कारण है, यही हेतु है कि कोई कोई स्त्री सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है, बड़े ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, किन्तु दरिद्र होती है, उसकी अपनी कही जा सकने लायक वस्तुयें उसके पास नहीं होतीं, अल्प-भोग्य-सामग्री वाली होती है, सगे-सम्बन्धी भी अधिक नहीं होते। मल्लिके! इसका यही कारण है, यही हेतु है कि कोई कोई स्त्री सुन्दर होती है, दर्शनीय होती है,

बड़े ही आकर्षक वर्णसे युक्त होती है, साथ ही धनी होती है, महान् सम्पत्तिशालिनी होती हैं, बहुत भोग्य-सामग्री वाली होती है तथा उसके सगे सम्बन्धी भी अधिक होते हैं।"

भगवान्के ऐसा कहनेपर मल्लिका देवीने भगवान्को यह कहा—"भन्ते! क्योंकि मैं पूर्व जन्ममें क्रोधी-स्वभावकी थी, अशान्त-स्वभावकी थी, थोड़ी बात भी लग जाती थी, कुपित हो जाती थी, बिगड़ खड़ी होती थी, कठोर हो जाती थी; मैं कोप, द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करती थी, इसीलिये मैं अब दुर्वर्ण हूँ, कुरूप हूँ, बदशक्ल हूँ। भन्ते! क्योंकि मैंने पूर्व जन्ममें श्रमण अथवा ब्राह्मणको अन्न, पान, वस्त्र, यान, मालागन्ध-विलेपन, शयन, आवास (=निवासस्थान) तथा प्रदीप (—सामग्री) दी, इसीलिये मैं अब धनी हूँ, महान् सम्पत्तिशालिनी हूँ, बहुत भोग्य-सामग्री वाली हूँ। भन्ते! क्योंकि मैं ईर्षालु नहीं थी, दूसरोंको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमें न मैं जलती थी, न डाह करती थी, न बद्धवैरिणी होती थी। इसीलिये अब बहुतसे सगे-सम्बन्धी हैं। भन्ते इस राज-कुलमें क्षत्रिय-कन्यायें भी हैं, ब्राह्मण-कन्यायें भी हैं, गृहपति-कन्यायें (वैश्य-कन्यायें) भी हैं। मैं उन पर ऐश्वर्य-अधिपत्य करती हूँ। भन्ते! मैं अब आजके बाद क्रोध-रहित होकर रहूँगी, शान्त होकर रहूँगी, बहुत बात कही जानेपर भी मुझे न लगेगी, कुपित नहीं होऊँगी, बिगड़ नहीं खड़ी होऊँगी, न कठोर होऊंगी, मैं कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट नहीं करूँगी। मैं श्रमण-ब्राह्मणको अन्न-पान, वस्त्र, यान, माला-गन्ध-विलेपन, शैय्या, आवास (=निवासस्थान) तथा प्रदीप (सामग्री) दूंगी। मैं ईर्षालु नहीं होऊँगी, दूसरोंको मिलने वाले लाभ-सत्कार-गौरव-मान्यता-वन्दना तथा पूजा आदिके विषयमें। न जलूंगी, न डाह करूँगी और न बद्ध-वैरिणी बनूँगी। भन्ते बहुत सुन्दर, भन्ते! बहुत सुन्दर.... भन्ते! आजसे प्राण रहने तक आप मुझे अपनी शरणागत उपासिका मानें।"

भिक्षुओ! दुनियामें चार तरहके लोग विद्यमान् हैं। कौनसे चार तरहके? भिक्षुओ, एक आदमी अपने को तपाने वाला होता है, अपनेको कष्ट देनेमें ही लगा हुआ; भिक्षुओ, एक आदमी दूसरोंको तपाने वाला होता है, दूसरोंको कष्ट देनेमें ही लगा हुआ; भिक्षुओ, एक आदमी अपने को तपाने वाला, अपनेको कष्ट देनेमें ही लगा हुआ है तथा दूसरोंको भी तपाने वाला, दूसरोंको कष्ट देनेमें ही लगा हुआ होता है; भिक्षुओ एक आदमी न अपनेको तपाने वाला, न अपनेको कष्ट देनेमें ही लगा होता है और न दूसरोंको तपाने वाला, दूसरोंको कष्ट देनेमें ही लगा होता है। जो न अपनेको

अनुतप्त करने वाला होता है, न दूसरेको अनुतप्त करने वाला होता है, वह इसी शरीरमें तृष्णा-विहीन होकर, निर्वृत होकर, शान्तभावको प्राप्त होकर, सुखका अनुभव करता हुआ, श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत करता है।

"भिक्षुओ, एक आदमी अपनेको तपाने वाला, अपनेको कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी नग्न होता है, शिष्टाचार-शून्य, हाथ चाटने वाला, 'भदन्त आयें' कहनेपर न आनेवाला, 'भदन्त खड़े रहें' कहनेपर खड़ा न रहने वाला, लाया हुआ न खाने वाला, उद्देश्यसे बनाया हुआ न खाने वाला और निमंत्रण भी न स्वीकार करने वाला होता है। वह न घड़ेमेंसे दिया हुआ लेता है, न ऊखलमेंसे दिया हुआ लेता है, न किवाड़की ओटसे दिया हुआ लेता है, न मोढ़ेके बीचमें आ जानेसे दिया हुआ, न डण्डेके बीचमें पड़ जानेसे लेता है, न मूसलके बीचमें आ जानेसे लेता है। वह दो जने खाते हों, उनमेंसे एक उठकर देनेपर नहीं लेता है, न गर्भिणीका दिया लेता है, न बच्चेको दूध पिलाती हुई का दिया लेता है, न पुरुषके पास गई हुई का दिया लेता है, न संग्रह किये हुए अन्नमेंसे पकाया हुआ लेता है, न जहाँ कुत्ता खड़ा हो वहाँसे लेता है, न जहाँ मक्खियां उड़ती हों वहाँसे लेता है, वह न मछली खाता है, न माँस खाता है, न सुरा पीता है, न मेरय पीता है, न चावलका पानी पीता है। वह या तो एक ही घरमें लेकर खाने वाला होता है, या एक ही कौर खाने वाला, दो घरसे लेकर खाने वाला होता है वा दो ही कौर खाने वाला, ...सात घरोंसे लेकर खाने वाला होता है या सात कौर खाने वाला।

वह एक ही छोटी-तश्तरीसे भी गुजारा करनेवाला होता है। वह दिनमें एक बार भी खानेवाला होता है, दो दिनमें एक बार भी खाने वाला होता है . . . सात दिनमें एक बार भी खाने वाला होता है; इस प्रकार वह पन्द्रह दिनमें एक बार खाकर भी रहता है। वह शाक खाने वाला भी होता है, स्यामाक (?) खाने वाला भी होता है, नीवार (धान) खाने वाला भी होता है, ददल (धान) खाने वाला भी होता है, हट (शाक) खानेवाला भी होता है, कणाज-भात खाने वाला भी होता है। वह आचाम खाने वाला भी होता है, खली खाने वाला भी होता है, तिनके (घास) खाने वाला भी होता है, गोबर खानेवाला भी होता है, जंगलके पेड़ोंसे गिरे फल-मूलको खाने वाला भी होता है।

वह सनके कपड़े भी धारण करता है, सन-मिश्रित कपड़े भी धारण करता है, शव-वस्त्र (कफन) भी पहनता है, फेंके हुए वस्त्र भी पहनता है, वृक्ष-विशेषकी छालके कपड़े भी पहनता है, अजिन (—मृग) की खाल भी पहनता है, अजिन (-मृग)

की चमड़ीसे बनी पट्टियोंसे बुना वस्त्र भी पहनता है, कुशका बना वस्त्र भी पहनता है, छाल (वाक) का वस्त्र भी पहनता है, कलक (छाल) का वस्त्र भी पहनता है, केशोंसे बना कम्बल भी पहनता है, पूँछके बालोंका बना कम्बल भी पहनता है, उल्लुके परोंका बना वस्त्र भी पहनता है।

वह केश-दाढ़ीका लुँचन करने वाला भी होता है। वह बैठनेका त्याग कर, निरन्तर खड़ा ही रहने वाला भी होता है। वह उकडू बैठकर प्रयत्न करने वाला भी होता है, वह काँटोंकी शैय्या पर सोने वाला भी होता है। प्रातः, मध्याह्न, सायं–दिनमें तीन बार पानीमें जाने वाला होता है। इस तरह वह नाना प्रकारसे शरीरको कष्ट-पीड़ा पहुँचाता हुआ विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार एक आदमी अपनेको तपाने वाला, अपनेको कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, आदमी दूसरेको तपाने वाला, दूसरेको कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी भेड़ोंको मारने वाला होता है, सूअरोंको मारने वाला होता है, पक्षियोंको मारने वाला होता है, मृगोंको मारने वाला होता है, क्रूर होता है, मछलियोंको मारने वाला होता है, चोर होता है, जल्लाद होता है, जेलर होता है तथा और भी जो जो क्रूर कर्म करने वाले हैं। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी दूसरेको तपाने वाला, दूसरे को कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, आदमी कैसे अपनेको तपानेवाला, अपनेको कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला तथा दूसरेको तपाने वाला, दूसरेको कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी या तो मुकुटधारी क्षत्रिय राजा होता है या सम्पत्ति-शाली ब्राह्मण होता है। वह नगरके पूर्वकी ओर तथा नया सभा-भवन (= सन्थागार) बनवाता है। वह शिर दाढ़ी मुड़वाकर, मृग-छाल पहन, मक्खन-तेल शरीरपर मल, हिरणके सींगसे पीठको खुजलाते हुए, रानी और ब्राह्मण-पुरोहितके साथ सभा भवनमें प्रवेश करता है। वहाँ दूब बिखेरी हुई वा गोबर लिपि हुई नंगी धरतीपर लेट जाता है। तब अपने रंग जैसे बछड़े वाली गौके एक स्तनमें जितना दूध होता है, वह राजा पीता है, जो दूसरे स्तनका दूध होता है, वह रानी पीती है, जो तीसरे स्तनका दूध होता है उसे ब्राह्मण-पुरोहित पीता है और जो चौथे स्तनका दूध होता है, उससे अग्नि-होम किया जाता है। शेष दूधको बछड़ा पीता है। वह (राजा) कहता है कि यज्ञके लिये इतने वृषभ मारे जायें, यज्ञके लिये इतने बछड़े मारे जायें, यज्ञके लिये इतनी बछड़ियाँ मारी जायें, यज्ञ (–स्तूप) के लिये इतने पेड़ काटे जायें, यज्ञकी घासके लिये इतनी दूब (–घास) छीली जाय। उसके लिये जितने भी दास होते हैं,

जितने भी सन्देश-वाहक होते हैं, जितने भी कर्मकार होते हैं, वे सभी दण्डसे तर्जित होनेके कारण, भयसे भयभीत होनेके कारण आँसू बहाते हुए, रोते-पीटते उन उन कामोंको करते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी अपनेको तपाने वाला, अपनेको कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला तथा दूसरेको तपाने वाला, दूसरेको कष्ट देनेमें ही लगा रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, आदमी न अपने को तपाने वाला, न अपनेको कष्ट देनेमें लगा रहने वाला, न दूसरोंको तपाने वाला, न दूसरोंको कष्ट देनेमें लगा रहने वाला कैसे होता है? जो न अपनेको अनुतप्त करने वाला होता है, वह इसी शरीरमें तृष्णा-विहीन होकर निर्वृत्त होकर, शान्त भावको प्राप्त होकर, सुखका अनुभव करता हुआ, श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत करता है।

भिक्षुओ, तथागत लोकमें उत्पन्न होते हैं, अर्हत, सम्यक्-सम्बुद्ध, विद्या तथा आचरणसे युक्त, सुगति प्राप्त, लोकके जानकार, अनुपम, (अविनीत) पुरुषोंका दमन करने वाले सारथी, देवताओं तथा मनुष्योंके शास्ता बुद्ध भगवान। वह देव-मार-ब्रह्म-सहित लोकको, श्रमण-ब्राह्मणोंसे युक्त जनता को, देवताओं तथा मनुष्योंको स्वयं जानकर साक्षात् कर (धर्मकी) घोषणा करते हैं। वह ऐसे धर्मका उपदेश करते हैं जो आदिमें कल्याणकारक है, मध्यमें कल्याणकारक है, अन्तमें कल्याणकारक है। वह शब्दों और उनके अर्थ सहित सम्पूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्मचर्यका प्रकाश करते हैं। उस धर्मको कोई गृहपति अथवा गृहपति-पुत्र सुनता है, अथवा अन्य किसी कुलमें उत्पन्न हुआ कोई सुनता है। उस अर्थको सुनकर वह तथागतके प्रति श्रद्धावान् हो जाता है। उस श्रद्धा से युक्त होनेपर वह सोचता है—गृहस्थीमें बड़ी बाधायें हैं, यह धूल-पथ है; प्रव्रज्या खुला आकाश है। घरमें रहते हुए सम्पूर्ण रूपसे शंखके समान परिशुद्ध श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करना आसान नहीं। मैं क्यों न केश-मूँछ मुड़ाकर, काषाय वस्त्र पहनकर, घरसे बेघर हो प्रव्रजित हो जाऊं? वह आगे चलकर थोड़ी धन-सम्पत्ति को छोड़ अथवा बहुत धन-सम्पत्तिको छोड़, थोड़ सगे-सम्बोन्धियोंको छोड़ अथवा बहुतसे सगे-सम्बन्धियोंको छोड़ केश-मुँछ मुड़ा, काषाय वस्त्र पहन घरसे बेघर हो प्रव्रजित हो जाता है। इस प्रकार प्रव्रजित हो वह भिक्षुओंकी शिक्षा और जीवनका अभ्यासी बन प्राणी-हिंसाको छोड़ जीव-हिंसासे विरत होता है—दण्ड त्यागी, शस्त्र-त्यागी, लज्जाशील, दयावान्, सभी प्राणियोंका हित चाहने वाला, उनपर अनुकम्पा करने वाला। वह चोरी करना छोड़, चोरी करनेसे विरत हो विहार करता है, वह कोई चीज दी जानेपर ही लेने वाला, दी जाने वाली चीज की ही आकांक्षा करने

वाला, चौर्य-रहित पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला। वह अब्रह्मचर्यको छोड़ ब्रह्मचारी हो विहार करता है, (दुश्शीलतासे) दूर रहने वाला, ग्राम्य मैथुन-धर्मसे विरत। मृषावादको छोड़ मृषावादसे रहित हो विहार करता है, सत्यवादी, विश्वसनीय, यथार्थवादी, यकीन करने योग्य, लोकमें झूठा व्यवहार न करने वाला। वह चुगली खाना छोड़, चुगली खानेसे विरत हो विहार करता है, वह यहाँ सुनकर वहाँ नहीं कहता कि यहाँ वालों में भेद पैदा हो जाय, वहाँ सुनकर यहाँ नहीं कहता कि वहाँ वालोंमें भेद पैदा हो जाय। वह बिछुड़े हुओंको मिलाने वाला होता है, मिले हुओंका मेल बढ़ाने वाला होता है। वह एकताको प्यार करने वाला, एकतामें रत रहने वाला, एकतामें आनन्द मनाने वाला, एकतामें वृद्धि लाने वाली बातका ही बोलने वाला होता है। वह कठोर बोलना छोड़कर कठोर-बोलनेसे विरत होता है। जो वाणी मधुर होती है, कर्ण-सुख होती है, प्रेम भरी होती है, हृदयको अच्छी लगने वाली होती है, विनम्र होती है, बहुत जनोंको सुन्दर लगने वाली होती है, बहुत जनोंको अच्छी लगने वाली होती है—वैसी वाणी बोलने वाला होता है। वह बेकार बोलना छोड़, बेकार बातचीतसे विरत हो विहार करता है—समयोचित बोलने वाला, सत्य बोलने वाला, हितकर बात बोलने वाला, धर्मकी बात बोलने वाला, विनयकी बात बोलने वाला, निधि सदृश वचन मुँहसे निकालने वाला होता है। वह समय पर बोलता है, तर्कानुकूल बोलता है, सीमित बोलता है तथा प्रयोजनकी बात बोलता है। वह बीजों और वनस्पतियोंको नष्ट करनेसे विरत होता है। वह एक बार भोजन करने वाला होता है, रात्रिके भोजनको त्यागे हुए, विकाल भोजनसे विरत रहने वाला। वह नाच-गान-बाजा-तमाशा देखने आदिसे विरत रहने वाला होता है। वह माला, सुगन्धियों-लेपों तथा अन्य शारीरिक सजावटोंसे विरत रहने वाला होता है। वह ऊँची शैय्याओंसे ऊँचे ऊँचे पलंगोंसे विरत रहने वाला होता है। वह सोने-चांदीको स्वीकार नहीं करने वाला होता है। वह कच्चे अनाजोंको अस्वीकार करने वाला होता है। वह कच्चे मांसको अस्वीकार करने वाला होता है। वह स्त्रियों तथा कुमारियोंको अस्वीकार करने वाला होता है। वह दास-दासियोंको अस्वीकार करने वाला होता है। वह बकरी-भेड़ोंको अस्वीकार करने वाला होता है। वह मुर्गी सूअरोंको अस्वीकार करने वाला होता है। वह हाथी-बैल-घोड़े घोडियोंको अस्वीकार करने वाला होता है। वह खेत-पुष्करिणी आदिको अस्वीकार करने वाला होता है। वह संदेशवाहक दूत आदिका काम न करने वाला होता है। वह क्रय-विक्रयसे विरत रहने वाला होता है। वह तराजू सम्बन्धी वंचना, सोनेकी थालीको लेकर वंचना,

तथा घी-तेल आदि मापोंको लेकर वंचना करनेसे विरत होता है। उक्कोटन आदि नाना प्रकार की ठगियोंसे विरत रहता है। वह काटना, मारना, बाँधना, लूटना तथा डाका डालना आदि दुस्साहसिक क्रियाओंसे विरत होता है।

वह शरीरके आधार चीवर तथा पेटके आधार भिक्षापात्रसे संतुष्ट होता है। वह जहाँ जहाँ भी जाता है अपने चीवर तथा भिक्षापात्रको साथ लेकर ही जाता है। जैसे एक पक्षी जहाँ जहाँ भी उड़कर जाता है अपने पंखों के बलपर ही उड़कर जाता है, इसी प्रकार वह भिक्षु शरीरके आधार चीवर तथा पेटके आधार भिक्षा-पात्रसे संतुष्ट होता है। वह जहाँ जहाँ भी जाता है अपने चीवर तथा भिक्षापात्रको साथ लेकर ही जाता है। वह इस आर्य-शीलसे युक्त होनेके कारण अपने भीतर निर्दोषता सुखका अनुभव करता है।

वह चक्षुसे 'रूप' को देखकर न उसके आकर-प्रकारको संपूर्ण रूपसे ग्रहण करता है और न उसके ब्योरेमें जाता है। क्योंकि कहीं चक्षुके असंयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल पाप-मय ख्याल घर न कर लें। उन पापमय विचारोंको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपनी आँखोंको काबूमें रखता है, अपनी आँखपर संयम रखता है। वह अपने कानसे सुन्दर शब्द सुनता है. . . . नासिकासे सुगन्धि सूँघता है. . . जिह्वासे रस चखता है. . . शरीरसे स्पर्श करता है. . . मनसे सोचता है. . . अपने मनको काबूमें रखता है, अपने मन पर संयम रखता है। वह इस आर्य इन्द्रिय-संयमसे युक्त होनेके कारण अपने भीतर निर्मलता-सुखका अनुभव करता है। वह भिक्षु जानते हुए आता-जाता है, ; जानते हुए देखता-भालता है, जानते हुए सिकोड़ता-फैलाता है, जानते हुए संघाटी-पात्र-चीवरको धारण करता है; जानते हुए असन, पान, स्वादन, आस्वादन करता है; जानते हुए पाखाना-पेशाब करता है; जानते हुए चलता, खड़ा रहता, बैठता, सोता, जागता, बोलता, चुप रहता है।

वह इस आर्य शील-स्कन्धसे युक्त होकर, इस आर्य इन्द्रिय-संयमसे युक्त होकर तथा इस आर्य स्मृति-सम्प्रजन्मसे युक्त होकर एकान्त शयनासन ग्रहण करता है, जैसे आरण्य, वृक्षकी छाया, पर्वत, कंदरा, गुफा, श्मशान, जंगल, खुला आकाश तथा पुवालका ढेर। वह पिण्ड-पातसे लौट, भोजन कर चुकनेपर पालथी मार, शरीरको सीधा रख स्मृतिको सामने कर बैठता है।

वह सांसारिक लोभोंको छोड़ लोभ-रहित चित्त वाला हो विचरता है। चित्तसे लोभको दूर करता है। वह क्रोधको छोड़, क्रोध-रहित चित्त वाला हो, सभी प्राणियोंपर दया करता हुआ विचरता है। चित्तसे क्रोध को दूर करता

है। वह आलस्यको छोड़, आलस्यसे रहित हो, रोशन-दिमाग (=आलोक संज्ञी)-स्मृति तथा ज्ञानसे युक्त हो विचरता है। वह चित्तसे आलस्यको दूर करता है। वह उद्धतपने तथा पछतावेको छोड़ उद्धतता रहित शान्त-चित्त हो विचरता है। चित्तसे उद्धतताको दूर करता है। वह संशय को छोड़ संशय-रहित हो विचरता है। वह अच्छी बातों (=कुशल-धर्मों) के विषयमें संदेह-रहित होता है। चित्तसे सन्देहको दूर करता है।

वह भिक्षु चित्तके उपक्लेश, प्रज्ञाको दुर्बल करने वाले, पाँच बंधनोंको छोड़ काम-वितर्कसे रहित हो. . . . चतुर्थ-ध्यानको प्राप्तकर विहार करता है।

जब भिक्षुका चित्त इस प्रकार एकाग्र हो जाता है, परिशुद्ध हो जाता है, निर्मल हो जाता है, निर्दोष हो जाता है, उपक्लेशोंसे रहित हो जाता है, कोमल हो जाता हैं, कमनीय हो जाता है तथा स्थिर हो जाता है तो वह अपने चित्तको पूर्व जन्मानुस्मृति ज्ञानकी ओर. . . प्राणियोंके जन्म-मरण सम्बन्धी ज्ञानके लिये. . .आस्रवोंके क्षय ज्ञानकी ओर मोड़ता है। 'यह दुःख है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'यह दुःख समुदय है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'यह दुःख निरोध है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'यह दुःख निरोध-गामिनी-प्रतिपदा हैं' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'ये आस्रव हैं' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'ये आस्रव समुदय हैं' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'ये आस्रव निरोध हैं', इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। 'ये आस्रव-निरोध-गामिनी-प्रतिपदा है' इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है। उसको ऐसी दृष्टि प्राप्त हो जानेपर वह कामास्रवोंसे मुक्त हो जाता है, भवास्रवोंसे मुक्त हो जाता है, अविद्यास्रवोंसे मुक्त हो जाता है। मुक्त होनेपर मुक्त होनेका ज्ञान हो जाता है। वह यह जान जाता है कि अब जन्मोंका ग्रहण करना क्षीण हो गया, श्रेष्ठ-जीवन-वास पूरा हो गया, जो करणीय था वह कृत हो गया अब फिर इस जन्म-मरणके चक्करमें पड़नेकी गुँजायश नहीं रही। भिक्षुओ, इस प्रकार आदमी न अपनेको तपाने वाला, न अपनेको कष्ट देनेमें लगा रहने वाला, न दूसरोंको तपाने वाला, न दूसरोंको कष्ट देनेमें लगा रहने वाला होता है। जो न अपनेको अनुतप्त करने वाला होता है, वह इसी शरीरमें तृष्णा-विहीन होकर, निर्वृत्त होकर, शान्त भावको प्राप्त होकर, सुखका अनुभव करता हुआ श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत करता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये चार तरहके लोग विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, मैं तृष्णाके बारेमें कहता हूं, जो जाल-रूप है, जो स्रोत-रूप है, जो फैली हुई है, जो आसक्ति-रूप है। यह लोक इस तृष्णा के कारण ध्वस्त है, चारों ओरसे

जकड़ा हुआ है, तांत की तरह उलझा हुआ है, धागेके गोले की तरह उलझा हुआ है, मूँज या बब्बड़ के तिनकों की तरह उलझा हुआ है और इसी लिये यह अपाय, दुर्गति, पतन तथा जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त नहीं होता। यह सुनो। . . .भगवान ने (आगे) यह कहा, भिक्षुओ, कौनसी है वह तृष्णा जो जाल-रूप है, जो स्रोत-रूप है, जो फैली हुई है, जो आसक्ति-रूप है और जिसके कारण यह लोक ध्वस्त है, चारों ओरसे जकड़ा हुआ है, तांतकी तरह उलझा हुआ है, धागेके गोलेकी तरह उलझा हुआ है, मूँज या बब्बड़के तिनकोंकी तरह उलझा हुआ है और इसीलिये यह अपाय, दुर्गति, पतन तथा जन्म-मरणके चक्करसे मुक्त नहीं होता ?

भिक्षुओ, तृष्णाके अठारह विचरण अपने भीतरी जीवन पर आश्रित हैं और तृष्णा के अठराह विचरण अपने से बाहरी बातों पर आश्रित हैं। भिक्षुओ अपने भीतरी जीवन पर आश्रित रहने वाले तृष्णा के अठारह विचरण कौन से हैं ? मैं हूँ– यह तृष्णा का एकरूप है। मैं ऐसा हूँ– यह तृष्णा का दुसरा रूप है। मैं वैसा हूँ– यह तृष्णा का तीसरा रूप है। मैं दूसरी प्रकार का हूँ–यह तृष्णा का चौथा रूप है। मैं बना रहने वाला हूँ–यह तृष्णा का पांचवाँ रूप है। मैं समाप्त हो जाने वाला हूँ–यह तृष्णा का छठा रूप है। क्या मैं हूँ ?–यह तृष्णाका सातवाँ रूप है। क्या मैं ऐसा हूँ ?–यह तृष्णाका आठवाँ रूप है। क्या मैं वैसा हूँ ?–यह तृष्णाका नौवाँ रूप है। क्या मैं दूसरी प्रकारका हूँ ?–यह तृष्णाका दसवाँ रूप है। कहीं मैं होता–यह तृष्णाका ग्यारहवाँ रूप है। कहीं मैं होता ! कहीं मैं ऐसा होता !–यह तृष्णाका बारहवाँ रूप हैं। क्या मैं वैसा ऐसा होता–यह तृष्णाका तेरहवाँ रूप है। कहीं मैं दूसरी तरहसे होता—यह तृष्णाका चौदहवाँ रूप है। मैं होऊँगा—यह तृष्णाका पन्द्रहवाँ रूप हैं—सैं ऐसा होऊँगा—यह तृष्णाका सोलहवाँ रूप है। मैं वैसा होऊँगा—यह तृष्णाका सत्रहवाँ रूप है। मैं दूसरी प्रकारका होऊँगा—यह तृष्णाका अठारहवाँ रूप है। भिक्षुओ, ये तृष्णाके अठारह विचरण हैं, जो अपने भीतरी जीवनपर आश्रित हैं। भिक्षुओ, तृष्णाके अठारह विचरण कौनसे हैं जो अपनेसे बाहरीं बातोंपर आश्रित हैं ? इससे मैं हूँ—यह तृष्णाका एक रूप है। इससे ऐसा होता है—यह तृष्णाका दूसरा रूप है। इससे वैसा होता है—यह तृष्णाका तीसरा रूप है। इससे दूसरी प्रकारका होता है—यह तृष्णाका चौथा रूप है। यह बना रहने वाला है–यह तृष्णाका पाँचवाँ रूप है। यह समाप्त हो जाने वाला है–यह तृष्णाका छठा रूप है। क्या यह है ?—यह तृष्णाका सातवाँ रूप है। क्या यह ऐसा है ?–यह तृष्णाका आठवाँ रूप है। क्या यह वैसा है ?–यह तृष्णाका नौवाँ रूप है।

क्या यह दूसरी प्रकारका है?—यह तृष्णाका दसवाँ रूप है। कहीं यह होता—यह तृष्णाका ग्यारहवाँ रूप है। कहीं यह ऐसा होता—यह तृष्णाका बारहवाँ रूप है। कहीं यह वैसा होता—यह तृष्णाका तेरहवाँ रूप है। कहीं यह दूसरी प्रकारका होता —यह तृष्णाका चौदहवाँ रूप है। यह होता—यह तृष्णाका पन्द्रहवाँ रूप है। यह ऐसा होगा—यह तृष्णाका सोलहवाँ रूप है। यह वैसा होगा—यह तृष्णाका सत्रहवाँ रूप है। यह दूसरी प्रकारका होगा—यह तृष्णाका अट्ठारहवाँ रूप है। भिक्षुओ, ये तृष्णाके अट्ठारह विचरण हैं जो अपनेसे बाहरी बातोंपर आश्रित हैं। इस प्रकार ये अट्ठारह विचरण तो ऐसे हैं जो अपने भीतरी बातोंपर आश्रित हैं और दूसरे अट्ठारह विचरण ऐसे हैं जो अपनेसे बाहरी बातोंपर आश्रित हैं। भिक्षुओ, ये तृष्णाके छत्तीस विचरण कहलाते हैं। इस प्रकार ये अतीत, अनागत तथा वर्तमान भेदसे ३६×३=१०८ एक सौ आठ तृष्णा-विचरण होते हैं। भिक्षुओ, यही है वह तृष्णा जो जालरूप है, जो स्रोतरूप है, जो फैली हुई है, जो आसक्ति-रूप है और जिसके कारण ये लोक ध्वस्त है, चारों ओरसे जकड़ा हुआ है, ताँतकी तरह उलझा हुआ है, धागेके गोलेकी तरह उलझा हुआ है, मूँज या बब्बड़के तिनकोंकी तरह उलझा हुआ है, और इसीलिये यह अपाय, दुर्गति, पतन तथा जन्म-मरणके चक्करसे मुक्त नहीं होता।

भिक्षुओ, ये चार उत्पन्न होते हैं। कौनसे चार? प्रेमसे प्रेम होता है, प्रेमसे द्वेष उत्पन्न होता है, द्वेषसे प्रेम होता है तथा द्वेष-से-द्वेष उत्पन्न होता है। भिक्षुओ प्रेमसे प्रेम कैसे पैदा होता है? भिक्षुओ, एक आदमीको दूसरा आदमी इष्ट होता है, प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला होता है। दूसरे आदमी भी उसे चाहते हैं, उससे, प्रेम करते हैं, उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। उस आदमीको होता है कि जो आदमी मुझे इष्ट है, प्रिय है, अच्छा लगता है, दूसरे भी उसे चाहते हैं, उससे प्रेम करते हैं, तथा उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। वह उन आदमियोंको प्रेम करने लग जाता है। भिक्षुओ. इस प्रकार प्रेमसे प्रेम उत्पन्न होता है।

भिक्षुओ, प्रेमसे द्वेष कैसे पैदा होता है? भिक्षुओ, एक आदमीको दूसरा आदमी इष्ट होता है, प्रिय होता है, अच्छा लगनेवाला होता है। दूसरे आदमी न उसे चाहते हैं, न उससे प्रेम करते हैं और न उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। उस आदमीको होता है कि जो आदमी मुझे इष्ट है, प्रिय है, अच्छा लगता है, दूसरे न उसे चाहते हैं, न उससे प्रेम करते हैं और न उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। वह उन आदमियोंसे द्वेष करने लग जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार प्रेमसे द्वेष उत्पन्न होता है।

भिक्षुओ, द्वेषसे प्रेम कैसे पैदा होता है ? एक आदमी दूसरेको न चाहता है, न उससे प्रेम करता है, न उससे अच्छा व्यवहार करता है। दूसरे भी उस आदमीको न चाहते हैं, न उससे प्रेम करते हैं और न उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। उस आदमीको होता है कि जिस आदमीको न मैं चाहता हूँ, न उससे प्रेम करता हूँ और न उससे अच्छा व्यवहार करता हूँ; दूसरे भी उस आदमीको न चाहते हैं, न उससे प्रेम करते हैं और न उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। वह उन आदमियोंसे प्रेम करने लग जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार द्वेषसे प्रेम होता है।

भिक्षुओ, द्वेषसे द्वेष कैसे पैदा होता है ? एक आदमी दूसरेको न चाहता है, न उससे प्रेम करता है, न उससे अच्छा व्यवहार करता है। किन्तु दूसरे उस आदमीको चाहते हैं, उससे प्रेम करते हैं और उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। उस आदमीको होता है कि जिस आदमीको न मैं चाहता हूँ, न उससे प्रेम करता हूँ और न उससे अच्छा व्यवहार करता हूँ; दूसरे उस आदमीको चाहते हैं, उससे प्रेम करते हैं और उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। वह उन आदमियोंसे द्वेष करने लग जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार द्वेषसे द्वेष उत्पन्न हो जाता है। भिक्षुओ, ये चार उत्पन्न होते हैं।

भिक्षुओ, जिस समय भिक्षु काम-भोगोंसे रहित हो ..... प्रथम-ध्यानको प्राप्त करता है, तो जो प्रेमसे प्रेम पैदा होता है, वह भी उस समय नहीं होता, जो प्रेमसे द्वेष पैदा होता है वह भी उस समय नहीं होता, जो द्वेषसे प्रेम पैदा होता है वह भी उस समय नहीं होता, जो द्वेषसे द्वेष पैदा होता है, वह भी उस समय नहीं होता। भिक्षुओ, जिस समय भिक्षु वितर्क-विचारोंका उपशमन होनेपर ..... द्वितीय-ध्यान ..... तृतीय-ध्यान ..... चतुर्थ-ध्यान प्राप्त कर विहार करता है तो जो प्रेमसे प्रेम पैदा होता है वह भी उस समय नहीं होता, जो प्रेमसे द्वेष पैदा होता है वह भी उस समय नहीं होता, जो द्वेषसे प्रेम पैदा होता है वह भी उस समय नहीं होता, जो द्वेषसे द्वेष पैदा होता है वह भी उस समय नहीं होता। भिक्षुओ, जिस समय भिक्षु आस्रवोंका क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमुक्ति प्रज्ञा-विमुक्ति इसी जन्ममें स्वयं जानकर साक्षात् कर विहार करता है तो जो प्रेमसे प्रेम पैदा होता है वह उस समय प्रहीण हुआ रहता है, जड़से खुदा रहता है, कटे ताड़ वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव प्राप्त हुआ रहता है, भविष्यमें इसकी उत्पत्तिकी कोई सम्भावना नहीं रहती; जो प्रेमसे द्वेष पैदा होता है वह भी प्रहीण हुआ रहता है, जड़से खुदा रहता है, कटे ताड़ वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव-प्राप्त हुआ रहता है, भविष्यमें इसकी उत्पत्तिकी कोई सम्भावना नहीं रहती; जो द्वेषसे प्रेम पैदा होता है वह भी प्रहीण हुआ रहता है,

जड़से खुदा रहता है, कटे ताड़ वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव-प्राप्त हुआ रहता है, भविष्यमें इसकी उत्पत्तिकी कोई सम्भावना नहीं रहती; जो द्वेषसे द्वेष पैदा होता है, वह भी प्रहीण हुआ रहता है, जड़से खुदा रहता है, कटे ताड़-वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव-प्राप्त हुआ रहता है।

भिक्षुओ, ऐसे ही भिक्षुके बारेमें कहा जाता है कि वह न प्रेम करता है, न घृणा करता है, न धुँआ छोड़ता है, न प्रज्वलित होता है और न चिन्ता करता रहता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे प्रेम करता है? भिक्षुओ, भिक्षु 'रूप' को अपना आप करके देखता है अथवा अपने आपको रूप-वाला समझता है, अपने आपमें 'रूप' समझता है, अथवा अपने आपको रूपमें समझता है; वेदनाको अपना-आप करके देखता है, अथवा अपने-आपको वेदना-वाला करके समझता है, अपने आपमें वेदना समझता है, अथवा अपने आपको वेदनामें समझता हैं; संज्ञाको अपना-आप करके देखता है, अथवा अपने-आपको संज्ञा-वाला करके देखता है, अपने-आपमें संज्ञा समझता है, अथवा अपने-आपको संज्ञामें समझता है; संस्कारोंको अपना-आप करके देखता है, अथवा अपने-आपको संस्कारों वाला करके, देखता है, अपने-आपमें संस्कारोंको समझता है, अथवा अपने आपको संस्कारोंमें समझता है; विज्ञानको अपना-आप करके देखता है अथवा अपने-आपको विज्ञान-वाला करके देखता है, अपने-आपमें विज्ञानको देखता है अथवा अपने आपको विज्ञानमें देखता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु प्रेम करता है।

भिक्षुओ, भिक्षु प्रेम नहीं कैसे करता है? भिक्षुओ, भिक्षु 'रूप' को अपना-आप करके नहीं देखता है अथवा अपने आपको रूप-वाला नहीं समझता है, अपने आपमें रूप नहीं समझता है, अथवा अपने-आपको रूपमें नहीं समझता है; वेदनाको अपना-आप करके नहीं देखता है, अथवा अपने आपको वेदना-वाला नहीं समझता है, अपने-आपमें वेदना नहीं समझता है, अथवा अपने आपको वेदनामें नहीं समझता है; संज्ञाको अपना-आप करके नहीं देखता है, अथवा अपने आपको संज्ञा वाला नहीं समझता है, अपने-आपमें संज्ञा नहीं समझता है, अथवा अपने-आपको संज्ञामें नहीं समझता है, संस्कारोंको अपना आप करके नहीं देखता है, अथवा अपने-आपको संस्कार वाला करके नहीं देखता है, अपने आपमें संस्कारोंको नहीं समझता है अथवा अपने आपको संस्कारोंमें नहीं समझता है; विज्ञानको अपना-आप करके नहीं देखता है, अथवा अपने-आपको विज्ञान-वाला करके नहीं देखता है, अपने आपमें विज्ञान नहीं

समझता है अथवा अपने आपको विज्ञानमें नहीं समझता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु प्रेम नहीं करता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे घृणा करता है? भिक्षुओ, भिक्षु गाली देने वालेको गाली देता है, गुस्से होने वालेसे गुस्सा होता है, झगड़ा करने वालेसे झगड़ा करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु घृणा करता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे घृणा नहीं करता है? भिक्षुओ, भिक्षु गाली देने वालेको गाली नहीं देता है, गुस्से होने वालेसे गुस्से नहीं होता है, झगड़ा करने वालेसे झगड़ा नहीं करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु, घृणा नहीं करता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे धुआँ छोड़ता है? भिक्षुओ, उसे होता है 'मैं हूँ', उसे होता है मैं ऐसा हूँ........ उसे होता है, दूसरी प्रकारके होंगे। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु धुआँ छोड़ता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे धुआँ नहीं छोड़ता है? भिक्षुओ, उसे नहीं होता है, 'मैं हूँ'; उसे नहीं होता है, मैं ऐसा हूँ..... उसे नहीं होता है दूसरी प्रकारके होंगे। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु धुआँ नहीं छोड़ता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे प्रज्वलित होता है? भिक्षुओ, उसे होता है 'इससे मैं हूँ', उसे होता है 'इससे ऐसा होता है...... उसे होता है, इससे दूसरी प्रकारके होंगे। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु प्रज्वलित होता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे प्रज्वलित नहीं होता है? भिक्षुओ, उसे नहीं होता है, 'इससे मैं हूँ', उसे नहीं होता है, 'इससे ऐसा होता है'...... उसे नहीं होता है 'इससे दूसरी प्रकारके होंगे।' भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु प्रज्वलित नहीं होता।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे चिन्ता करता रहता है? भिक्षुओ, भिक्षुका अहंकार प्रहीण हुआ नहीं रहता,...... इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु चिन्ता करता रहता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे चिन्ता नहीं करता रहता है? भिक्षुओ, भिक्षुका अहंकार प्रहीण हुआ करता है, जड़से खुदा रहता है, कटे ताड़के वृक्षके समान हुआ रहता है, अभाव-प्राप्त हुआ रहता है, भविष्यमें पुनरुत्पत्तिकी कोई सम्भावना नहीं रहती, भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु चिन्ता नहीं करता।

भिक्षुओ, असत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर के बारेमें। सत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरुषसे सत्पुरुषतरके बारेमें।

भिक्षुओ, सुनो। ध्यान दो। मैं कहता हूँ। भिक्षुओंने 'बहुत अच्छा' कहकर भगवान् बुद्धको प्रतिवचन दिया। भगवान्ने इस प्रकार कहा—'भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते हैं?' भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, व्यभिचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसा करने वाला होता है तथा दूसरोंको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा करता है, अपने चोरी करने वाला होता है तथा दूसरोंको चोरी करनेकी प्रेरणा करने-वाला होता है,अपने व्यभिचारी होती है तथा दूसरोंको व्यभिचारकी प्रेरणा करने वाला होता है,अपने झूठ बोलने वाला होता है तथा दूसरोंको झूठ बोलनेकी प्रेरणा करने वाला होता है, अपने सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करने वाला होता है तथा दूसरोंको सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करनेकी प्रेरणा करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर होता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, चोरीसे विरत रहता है, व्यभिचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करनेसे विरत रहता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, तथा दूसरोंको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं चोरी करनेसे विरत रहता है तथा दूसरोंको चोरी करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं व्यभिचार करनेसे विरत रहता है तथा दूसरोंको व्यभिचार करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा देता है, स्वयं झूठ बोलनेसे विरत रहता है तथा दूसरोंको झूठ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा देता है, स्वयं सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंको ग्रहण करनेसे विरत रहता है तथा दूसरोंको सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंको ग्रहण करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर कहलाता है?

भिक्षुओ, असत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर के बारेमें। सत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरुषसे सत्पुरुषतरके बारेमें।

भिक्षुओ, सुनो......भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी अश्रद्धावान् होता है, निर्लज्ज होता है, (पाप–) भीरू नहीं होता, अनुत्साही होता है, आलसी होता है, मूढ़-स्मृति होता है, दुष्प्रज्ञ होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर किसे कहते हैं?

भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं अश्रद्धावान् होता है तथा दूसरोंको अश्रद्धाकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं निर्लज्ज होता है तथा दूसरोंको निर्लज्जपनकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं (पाप –) भीरु नहीं होता तथा दूसरोंको (पाप–) भीरु न होनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं अनुत्साही होता है तथा दूसरोंको अनुत्साहकी ओर प्रेरणा करता है, स्वयं आलसी होता है तथा दूसरोंको आलसी बने रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं मूढ़-स्मृति होता है तथा दूसरोंको मूढ़-स्मृति बने रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं दुष्प्रज्ञ होता है तथा दूसरोंको दुष्प्रज्ञ बने रहनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी श्रद्धावान् होता है, लज्जाशील होता है, (पाप–) भीरु होता है, बहुश्रुत होता है, अप्रमादी होता है, स्मृतिमान होता है, तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुष होता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं श्रद्धावान् होता है तथा दूसरोंको श्रद्धाकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं लज्जा-शील होता है तथा दूसरोंको लज्जाकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं (पाप–) भीरु होता है तथा दूसरोंको (पाप–) भीरुताकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं बहुश्रुत होता है तथा दूसरोंको बहुश्रुत बननेकी ओर प्रेरित करता है। स्वयं अप्रमादी होता है तथा दूसरोंको अप्रमादकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं स्मृतिमान् होता है तथा दूसरोंको स्मृतिमान होनेकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं प्रज्ञावान् होता है तथा दूसरोंको प्रज्ञावान् होनेकी ओर प्रेरित करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ,असत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुषतरके बारेमें। सत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरुषसे सत्पुरुषतरके बारेमें। भिक्षुओ, सुनो......भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणीहिंसा करने वाला होता ह, चोरी करने वाला होता है, व्यभिचारी होता है,

झूठ बोलने वाला होता है, चुगली खाने वाला होता है, कठोर बोलने वाला होता है तथा व्यर्थ बोलने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, तथा दूसरोंको प्राणीहिंसा की प्रेरणा करताहै, स्वयं चोरी करने वाला होता है तथा दूसरोंको चोरी करनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं व्यभिचारी होता है तथा दूसरोंको व्यभिचारकी प्रेरणा करने वाला होता है, स्वयं झूठ बोलता है तथा दूसरोंको झूठ बोलनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं चुगली खाने वाला होता है तथा दूसरोंको चुगली खानेकी प्रेरणा करने वाला होता है, स्वयं कठोर बोलने वाला होता है तथा दूसरोंको कठोर बोलनेकी प्रेरणा करने वाला होता है, स्वयं व्यर्थ बोलने वाला होता है तथा दूसरोंको व्यर्थ बोलनेकी प्रेरणा करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत होता है, चोरीसे विरत होता है, व्यभिचारसे विरत होता है, झूठ बोलनेसे विरत होता है, चुगली खानेसे विरत होता है, कठोर बोलनेसे विरत होता है तथा व्यर्थ बोलनेसे विरत होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसासे विरत रहता है तथा दूसरोंको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं चोरीसे विरत रहता है तथा दूसरोंको चोरीसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है.... स्वयं चुगली खानेसे विरत होता है तथा दूसरोंको चुगली खानेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं कठोर बोलनेसे विरत होता है तथा दूसरोंको कठोर बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं व्यर्थ बोलनेसे विरत रहता है तथा दूसरोंको व्यर्थ बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुषतरके बारेमें। सत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ, वैस ही सत्पुरुषसे सत्पुरुषतरके बारेमें। भिक्षुओ, सुनो.......भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करता है.....लोभी होता है, क्रोधी होता है तथा मिथ्या-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं हिंसा करने वाला होता है तथा दूसरोंको हिंसा की प्रेरणा करने वाला होता है...

स्वयं लोभी होता है तथा दूसरोंको लोभकी प्रेरणा करने वाला होता है, स्वयं क्रोधी होता है तथा दूसरोंको क्रोधकी प्रेरणा करने वाला होता है। स्वयं मिथ्या-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-दृष्टिकी प्रेरणा करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत होता है..... निर्लोभी होता है, अक्रोधी होता है तथा सम्यक्-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसासे विरत होता है तथा दूसरोंको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है........स्वयं निर्लोभी होती है तथा दूसरोंको निर्लोभी बने रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं क्रोध-रहित होता है तथा दूसरोंको क्रोध-रहित बने रहनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-दृष्टिकी ओर अग्रसर होनेकी प्रेरणा देता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरुषसे असत्पुरुषतरके बारेमें। सत्पुरुषके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरुषसे सत्पुरुषतरके बारेमें। भिक्षुओ, सुनो.........भिक्षुओ, असत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी मिथ्या-दृष्टि वाला होता है, मिथ्या-संकल्प वाला होता है, मिथ्या-वाणी वाला होता है, मिथ्या-कर्मान्त वाला होता है, मिथ्या-आजीविका वाला होता है, मिथ्या-व्यायाम (=प्रयत्न) वाला होता है, मिथ्या-स्मृति वाला होता है तथा मिथ्या-समाधि वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं मिथ्या-दृष्टि युक्त होता है तथा वह दूसरोंको मिथ्या-दृष्टिकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं मिथ्या-संकल्प युक्त होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-संकल्पकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं मिथ्या-भाषी होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-वाचाकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं मिथ्या-कर्मान्त-युक्त होता है, तथा दूसरोंको मिथ्या-कर्मान्तकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं मिथ्या-आजीविका-युक्त होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-आजीविकाकी ओर अग्रसर करने वाला होता है, स्वयं मिथ्या-व्यायाम (=प्रयत्न) करने वाला होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-व्यायामकी ओर प्रेरित करने वाला होता है, स्वयं मिथ्या-स्मृति-युक्त होता है तथा, दूसरोंको मिथ्या-स्मृतिकी प्रेरणा देने वाला होता है, स्वयं

मिथ्या-समाधि युक्त होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-समाधिकी प्रेरणा देने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरुषसे असत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टी वाला होता है, सम्यक्-संकल्प वाला होता है, सम्यक-वाणीवाला होता है, सम्यक्-आजीवीका वाला होता है, सम्यक्-व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होता है, सम्यक्-स्मृति वाला होता है तथा सम्यक्-समाधी वाला होता है। भिक्षुओ ऐसा आदमी सत्पुरूष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरूषसे सत्पुरूषतर किसे कस्हते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टि वाला होता है तथा दूसरोंको सम्यक-दृष्टिकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं सम्यक-संकल्प वाला होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-संकल्पकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं सम्यक्-वाणी वाला होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-वाणीकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं सम्यक्-कर्मांत वाला होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-कर्मांतकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं सम्यक्-आजीवीका वाला होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-आजीविकाकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं सम्यक्-व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-व्यायामकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं सम्यक्-स्मृति वाला होता है तथा दूसरों को सम्यक्-स्मृतिकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं सम्यक्-समाधि-युक्त होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-समाधिकी ओर प्रेरित करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरूषसे सत्पुरूषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरूषके बारेमें देशना करता हूँ तथा असत्पुरूषसे असत्पुरुषके बारेमें। सत्पुरूषके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही सत्पुरूषसे सत्पुरूषतरके बारेमें। भिक्षुओ, सुनो.........भिक्षुओ, असत्पुरूष किसे कहते हैं? भिक्षुओ एक आदमी मिथ्या-दृष्टि होता है....मिथ्या-ज्ञानी होता है तथा मिथ्या-विमुक्ति वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पुरूष कहलाता है।

भिक्षुओ, असत्पुरूषसे असत्पुरूषतर किसे कहते है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं मिथ्या-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-दृष्टिकी प्रेरणा करता है, स्वयं मिथ्या-ज्ञानी होता है दूसरोंको मिथ्या-ज्ञानी होनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं मिथ्या-विमुक्ति वाला होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-विमुक्ति वाला होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी असत्पूरूषसे असत्पूरूषतर कहलाता है?

भिक्षुओ, सत्पुरुष किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टि होता है.....सम्यक्-ज्ञानी होता है तथा सम्यक् विमुक्ति होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुष कहलाता है।

भिक्षुओ, सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-दृष्टिकी प्रेरणा करता है, स्वयं सम्यक्-ज्ञानी होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-ज्ञानी होनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं सम्यक्-विमुक्त होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-विमुक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी सत्पुरुषसे सत्पुरुषतर कहलाता है।

भिक्षुओ, पापीके बारेमें देशना करता हूँ, तथा पापीसे भी अधिकतर पापीके बारेमें। पुण्यात्मा (= कल्याण मार्गी) के बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही पुण्यात्मासे भी अधिक तर पुण्यात्माके बारेमें। भिक्षुओ, सुनो . . . भगवान्ने यह कहा। भिक्षुओ, पापी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करने वाला होता है . . . मिथ्या-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पापी कहलाता है। भिक्षुओ, पापीसे भी अधिकतर पापी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसा करने वाला होता है तथा दूसरोंको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा करता है, स्वयं मिथ्या-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-दृष्टि की प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पापीसे भी अधिक तर पापी कहलाता है।

भिक्षुओ, पुण्यात्मा किसे कहते हैं? एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत रहता है. . . . मिथ्या-दृष्टिसे विरत रहता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी 'पुण्यात्मा' कहलाता है। भिक्षुओ, पुण्यात्मासे भी अधिकतर पुण्यात्मा किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसासे विरत होता है तथा दूसरोंको प्राणी-हिंसासे विरत रहने की प्रेरणा करता है, स्वयं सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको सम्यक् दृष्टि होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्यात्मासे अधिक पुण्यात्मा कहलाता है।

भिक्षुओ, पापीके बारेमें देशना करता हूँ तथा पापीसे भी अधिकतर पापीके बारेमें। पुण्यात्मा (= कल्याणमार्गी) के बारेमें देशना करता हूँ वैसे ही पुण्यात्मासे भी अधिकतर पुण्यात्माके बारेमें। भिक्षुओ, सुनो . . . . . भगवान्ने यह कहा। भिक्षुओ, पापी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु मिथ्या-दृष्टि होता है . . . मिथ्या-ज्ञानी होता है, मिथ्या-विमुक्त होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी 'पापी' कहलाता है।

भिक्षुओ, पापीसे भी अधिकतर पापी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं मिथ्या-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको मिथ्या-दृष्टिकी प्रेरणा करता है . . . . . स्वयं मिथ्या-ज्ञानी होता है, दूसरोंको मिथ्या-ज्ञानकी ओर प्रेरित करता है, स्वयं मिथ्या-विमुक्त होता है, दूसरोंको मिथ्या-विमुक्तिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पापीसे भी अधिकतर पापी कहलाता है।

भिक्षुओ, पुण्यात्मा किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टि होता है. . . . सम्यक्-ज्ञानी होता है सम्यक्-विमुक्ति वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्यात्मा कहलाता है।

भिक्षुओ, पुण्यात्मासे अधिकतर पुण्यात्मा किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-दृष्टि होनेकी प्रेरणा करता है, स्वयं सम्यक् ज्ञानी होता है तथा दूसरोंको सम्यक् ज्ञानकी प्रेरणा करता है, स्वयं सम्यक् विमुक्त होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-विमुक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्यात्मासे अधिकतर पुण्यात्मा कहलाता है।

भिक्षुओ पाप-धर्मीके बारेमें देशना करता हूँ तथा पाप-कर्मीसे भी अधिकतर पाप-धर्मीके बारेमें। पुण्य-धर्मीके बारेमें देशना करता हूँ वैसे ही पुण्य-धर्मीसे भी अधिकतरके बारेमें। भिक्षुओ सुनो . . . . . भिक्षुओ पाप-धर्मी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करने वाला होता है. . . मिथ्या-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पाप-धर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, पाप-धर्मीसे भी अधिकतर पाप-धर्मी किसे कहते हैं? भिक्षुओ एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसा करता है तथा दूसरोंको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा देता है . . . स्वयं मिथ्या-दृष्टि होता है, दूसरोंको भी मिथ्या-दृष्टिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पाप-धर्मीसे भी अधिकतर पाप-धर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, पुण्य-धर्मी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत होता है. . . सम्यक्-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्य-धर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, आदमी कैसे पुण्य-धर्मीसे भी अधिक पुण्यधर्मी होता है? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं प्राणी-हिंसासे विरत होता है तथा दूसरोंको प्राणी-हिंसासे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है। . . . स्वयं सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-दृष्टिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्य-धर्मीसे भी अधिकतर पुण्यधर्मी कहलाता है।

भिक्षुओ, पाप-धर्मीके बारेमें देशना करता हूँ तथा पाप-धर्मीसे भी अधिकतर पाप-धर्मीके बारेमें। पुण्य-धर्मीके बारेमें देशना करता हूँ, वैसे ही पुण्य-धर्मीसे भी अधिकतर पुण्य-धर्मीके बारेमें। भिक्षुओ, सुनो. . . । भिक्षुओ, पाप-धर्मी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी मिथ्या-दृष्टि होता है. . . मिथ्या-ज्ञानी होता है, मिथ्या-विमुक्ति होता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पाप-धर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, पाप-धर्मीसे अधिकतर पाप-धर्मी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं मिथ्या-दृष्टि होता है, दूसरोंको भी मिथ्या-दृष्टिकी ओर प्रेरित करता है. . . . स्वयं मिथ्या-

ज्ञानी होता है, दूसरोंको भी मिथ्या-ज्ञानकी ओर अग्रसर करता है, स्वयं मिथ्या-विमुक्त होता है तथा दूसरोंको भी मिथ्या-विमुक्तिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पाप-धर्मी से भी अधिकतर पाप-धर्मी कहलाता है।

भिक्षुओ, पुण्य-धर्मी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी सम्यक्-दृष्टि होता है. . .सम्यक्-ज्ञानी होता है, सम्यक्-विमुक्ति वालाहोता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्यधर्मी कहलाता है। भिक्षुओ, पुण्यधर्मीसे भी अधिकतर पुण्य-धर्मी किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं सम्यक्-दृष्टि होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-दृष्टिकी ओर अग्रसर करता है. . . . स्वयं सम्यक्ज्ञानी होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-ज्ञानी बनाता है, स्वयं सम्यक्-विमुक्त होता है तथा दूसरोंको सम्यक्-विमुक्तिकी ओर अग्रसर करता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुण्य-धर्मी से भी अधिकतर पुण्य-धर्मी कहलाता है।

(२) भूषण-वर्ग

भिक्षुओ, ये चार परिषदके दूषण हैं! कौनसे चार? भिक्षुओ, जो पापी दुराचारी भिक्षु होता है वह परिषदका दूषण होता है, जो पापी दुराचारिणी भिक्षुणी होती है वह भी परिषदका दूषण होती है, जो उपासक पापी दुराचारी होता है वह भी परिषद का दूषण होता है, जो उपासिका पापी दुराचारिणी होती है, वह भी परिषदका दूषण होती है। भिक्षुओ, ये चार परिषदके दूषण हैं।

भिक्षुओ, ये चार परिषदके भूषण हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, जो भिक्षु शुभ कर्म करने वाला है, सदाचारी है, ऐसा भिक्षु परिषदका भूषण है; जो भिक्षुणी शुभ-कर्म करने वाली है, सदाचारिणी है, ऐसी भिक्षुणी परिषदका भूषण है; जो उपासक शुभ कर्म करने वाला है, सदाचारी है, ऐसा उपासक परिषदका भूषण है, जो उपासिका शुभ कर्म करने वाली है, सदाचारिणी है, ऐसी उपासिका परिषदका भूषण है। भिक्षुओ, ये चार परिषदके भूषण हैं।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है वह नरकमें ही लाकर डाल दिये गये के समान होता है। कौनसी चार बातें? कायदुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता, मनकी दुश्चरित्रता तथा मिथ्या-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह नरकमें लाकर डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह स्वर्गमें ही लाकर डाल दिये गये के समान होता है। कौन सी चार बातें? शारीरिक सच्चरित्रता, वाणीकी सच्चरित्रता, मनकी सच्चरित्रता तथा सम्यक्-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह स्वर्गमें ही लाकर डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह नरकमें ही लाकर डाल दिये गयेके समान होता है। कौनसी चार बातें? काय-दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता, मनकी दुश्चरित्रता तथा अकृतज्ञता, कृतोपकारको न जानना। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह, नरकमें ही लाकर डाल दिये गयेके समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह स्वर्गमें ही लाकर डाल दिये गये के समान होता है। कौन सी चार बातें? शारीरिक सच्चरित्रता, वाणीकी सच्चरित्रता, मनकी सच्चरित्रता तथा कृतज्ञता, कृतोपकारको जानना। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह स्वर्गमें ही लाकर डाल दिये गयेके समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें. . . प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, व्यभिचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है. . . भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है. . . . प्राणी-हिंसासे विरत रहने वाला होता है, चोरीसे विरत रहनेवाला होता है, व्यभिचारसे विरत रहने वाला होता है, झूठ बोलनेसे विरत रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें. . . . मिथ्या-दृष्टि होती है, मिथ्या-संकल्पी होता है, मिथ्या-वाणी वाला होता है तथा मिथ्या-कर्मान्त वाला होता ह . . . भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें . . . सम्यक्-दृष्टि होता है, सम्यक्-संकल्पी होता है, सम्यक् वाणी वाला होता है तथा सम्यक्-कर्मान्त करनेवाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें. . . . . मिथ्याजीवी होता है, मिथ्या-व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होता है, मिथ्या-स्मृति होता है तथा मिथ्या-समाधि होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें. . . सम्यक् आजीविका वाला होता है, सम्यक्-व्यायाम (= प्रयत्न) करने वाला होता है, सम्यक्-स्मृति वाला होता है तथा सम्यक् समाधि वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें. . . . अनदेखेको देखा कहने वाला होता है, अनसुनेको सुना कहने वाला होता है, बिना सूँघें-चखे-स्पर्श किये आदिको सूँघा-चखा, स्पर्श किया कहने वाला होता है, अनजानेको जाना कहनेवाला होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें. . . .बिना देखेको बिना देखा कहने वाला होता है, बिना सुनेको बिना सुना कहने वाला होता है, बिना सूँघे, चखे, स्पर्श किये आदिको बिना चखा, सूँघा, स्पर्श किया कहने वाला होता है, बिना जानेको बिना जाना कहने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें . . . . . देखेको अनदेखा कहने वाला होता है, सुनेको अनसुना कहने वाला होता है, चखे, सूँघे, स्पर्श कियेको नहीं चखा, सूँघ, स्पर्श किया कहने वाला होता है, जानेको अजाना कहने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें. . . . देखेको देखा कहने वाला होता है, सुनेको सुना कहने वाला होता है, सूँघे, चखे, स्पर्श कियेको सूँघा, चखा, स्पर्श किया कहने वाला होता है, जानेको जाना कहने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें. . . अश्रद्धावान् होता है, दुराचारी होता है, लज्जा-रहित होता है (पाप-) भय रहित होता है. . . . भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें . . . . श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, लज्जा युक्त होता है, (पाप-) भीरू होता है. . . भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें हैं. . . . अश्रद्धावान् होता है, दुराचारी होता है, आलसी होता है तथा दुष्प्रज्ञ होता है। भिक्षुओ जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह लाकर नरकमें डाल दिये गये के ही समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह लाकर स्वर्गमें ही डाल दिये गये के समान होता है। कौनसी चार बातें? श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, प्रयत्न-वान् होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गयेके समान होता है।

(३) सुचरित्र वर्ग

भिक्षुओ, ये चार वाणीके दुश्चरित्र है। कौनसे चार? झूठ बोलना, चुगली खाना, कठोर बोलना तथा बेकार बोलना—भिक्षुओ, ये चार वाणीके दुश्चरित्र हैं।

भिक्षुओ, ये चार वाणीके सुचरित्र हैं। कौनसे चार? सत्य बोलना, चुगली न खाना, मृदु-भाषण तथा नपा-तुला बोलना।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वैसा मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी क़बर आप खोदता है, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला होता है तथा बहुत अपुण्य-लाभ करता हैं। कौन सी चार बातें? शरीर सम्बन्धी दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता, मनकी दुश्चरित्रता तथा मिथ्या-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वैसा मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष, अपनी क़बर आप खोदता है, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला होता है तथा बहुत अपुण्य-लाभ करता है। कौनसी चार बातें?

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वैसा बुद्धिमान्, पण्डित, सत्पुरुष अपनी क़बर आप नहीं खोदता, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला नहीं होता

तथा पुण्य लाभ करता है। कौनसी चार बातें? शरीर सम्बन्धी सच्चरित्रता, वाणीकी सच्चरित्रता, मनकी सच्चरित्रता तथा सम्यक्-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वैसा बुद्धिमान्, पंडित, सत्पुरुष अपनी क़बर आप नहीं खोदता, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला नहीं होता तथा बहुत पुण्य लाभ करता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वैसा मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष अपनी क़बर आप खोदता है, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला होता है तथा बहुत अपुण्य लाभ करता है, । कौनसी चार? शरीरकी दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता, मनकी दुश्चरित्रता तथा अकृतज्ञ होना, कृतोपकारको न जानना. . . शरीरकी सुचरित्रता, वाणीकी सुचरित्रता, मनकी सुचरित्रता तथा कृतज्ञ होना, कृतोपकारको जानना. . . . प्राणी-हिंसक होना, चोरी करने वाला होना, व्यभिचारी होना, झुठ बोलने वाला होना . . . . प्राणी-हिंसासे विरत होना, चोरी करने वाला न होना, व्यभिचारी न होना, झूठ बोलने वाला न होना. . .मिथ्या-दृष्टि वाला होना, मिथ्या-संकल्प वाला होना, मिथ्या-वाचा वाला होना, मिथ्या-कर्मान्त वाला होना. . . सम्यक्-दृष्टि होना, सम्यक्-संकल्प वाला होना, सम्यक्-वाचा वाला होना तथा सम्यक्-कर्मान्त वाला होना. . . मिथ्या-जीविका वाला होना, मिथ्या-व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होना, मिथ्या-स्मृति वाला होना तथा मिथ्या-समाधि होना. . . सम्यक् जीविका वाला होना, सम्यक् व्यायाम (= प्रयत्न) वाला होना, सम्यक्-स्मृति वाला होना तथा सम्यक् समाधि वाला होना. . .अनदेखेको देखा कहने वाला होता है, अनसुनेको सुना कहने वाला होता है, बिना सूंघे, चखे, स्पर्श किये आदिको सूंघा, चखा, स्पर्श किया आदि कहने वाला होता है, अनजानेको जाना कहने वाला होता है. . .बिना देखेको बिना देखा कहने वाला होता है, बिना सुनेको बिना सुना कहने वाला होता है, बिना सूंघे चखे, स्पर्श कियेको बिना सूंघा-चखा-स्पर्श किया कहने वाला होता है, बिना जानेको बिना जाना कहने वाला होता है. . . . . देखेको अनदेखा कहने वाला होता है, सुनेको अनसुना कहने वाला होता है, सूंघे-चखे-स्पर्श कियेको नहीं सूंघा-चखा-स्पर्श किया कहने वाला होता है, जानेको अनजाना कहने वाला होता है. . . . .देखेको देखा कहने वाला होता है, सुनेको सुना कहने वाला होता है, सूंघे-चखे-स्पर्श कियेको सूंघा-चखा-स्पर्श किया कहने वाला होता है, जानेको जाना कहने वाला होता है. . . . . . अश्रद्धावान् होता है, दुराचारी होता है, लज्जा-रहित होता है। (पाप–) भय रहित होता है, ... श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, लज्जायुक्त होता है, (पाप–) भय-युक्त होता है. . . . अश्रद्धावान् होता है, दुराचारी होता है, आलसी होता है, दुष्प्रज्ञ

होता है. . . . श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, प्रयत्नवान् होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वैसा बुद्धिमान्-पंडित, सत्पुरुष अपनी कब्र आप नहीं खोदता, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला नहीं होता तथा बहुत पुण्य लाभ करता है।

भिक्षुओ, कवि चार प्रकारके होते हैं। कौनसे चार प्रकारके ? चिन्तन-कवि, (विचारकर काव्य रचना करने वाला), श्रुत-कवि (सुनकर काव्य रचना करने वाला), अर्थ-कवि (एक ही अर्थको लेकर काव्य रचना करने वाला) तथा प्रतिभावान् कवि (तुरन्त काव्यकी रचना करने वाला)। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके कवि होते हैं।

(४) कर्म वर्ग

भिक्षुओ, कर्मोंके चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार प्रकार? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल कर्म होता है, कुशल विपाक देने वाला कुशल कर्म होता है, अकुशल-कुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कुशल कर्म होता है तथा भिक्षुओ नअकुशल-नकुशल विपाक देने वाला न अकुशल-न कुशल कर्म होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ ये चार प्रकारके कर्म हैं जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोंके चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने, स्वयं जानकर, अनुभवकर प्रकट किया है। कौनसे चार प्रकार ? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल कर्म होता है, कुशल विपाक देने वाला कुशल कर्म होता है, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म होता है तथा भिक्षुओ, न अकुशल-न कुशल विपाक देने वाला न अकुशल-न कुशल कर्म होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त-कारण होता है। भिक्षुओ, अकुशल-विपाक अकुशल-कर्म कैसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी सक्रोध शारीरिक-कर्म प्रकट करता है, सक्रोध वाणीका कर्म प्रकट करता है, सक्रोध मनो-कर्म प्रकट करता है; वह सक्रोध शारीरिक-कर्म प्रकट करके,सक्रोध वाणीका कर्म प्रकट करके, सक्रोध मनोकर्म प्रकट करके, सक्रोध लोकमें जन्म ग्रहण करता है, सक्रोध लोकमें जन्म ग्रहण कर लेनेपर उसे सक्रोध-स्पर्शोंका स्पर्श होता है, सक्रोध स्पर्शोंका स्पर्श होने पर सक्रोध वेदनाओंकी अनुभूति होती है—अत्यन्त दुःखद मानो नरकगामी प्राणियोंका दुःख हो। भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-विपाक अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल-विपाक कुशल कर्म कैसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-रहित शारीरिक कर्म प्रकट करता है, क्रोध-रहित वाणीका कर्म प्रकट करता है, क्रोध-रहित मनोकर्म प्रकट करता है, वह क्रोध-रहित शारीरिक कर्म प्रकट करके, क्रोध रहित वाणीका

कर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित मनोकर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित लोकमें जन्म ग्रहण करता है, क्रोध-रहित लोकमें जन्म ग्रहण कर लेने पर उसे क्रोध-रहित स्पर्शोंका स्पर्श होता है, क्रोध-रहित स्पर्शोंका स्पर्श होनेपर क्रोध-रहित वेदनाओंकी अनुभूति होती है—अत्यन्त सुखद, मानो वह शुभचिन्ह देवलोकमें हो। भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल-विपाक कुशल-कर्म कहलाता है।

भिक्षुओ, अकुशल-कुशल विपाक अकुशल-कुशल कर्म कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित शारीरिक कर्मको प्रकट करता है, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वाणीके कर्मको प्रकट करता है, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित मनो-कर्मको प्रकट करता है। वह क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित शारीरिक कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वाणीके कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित मनोकर्मोको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित लोकमें उत्पन्न होता है। क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित लोकमें जन्म ग्रहण कर लेनेपर उसे क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित स्पर्शोंका स्पर्श होता है। क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित स्पर्शोंका स्पर्श होनेपर क्रोध-रहित तथा-क्रोध सहित वेदनाओंकी अनुभूति होती है—मिले जुले सुख-दुख वाली—जैसे मनुष्योंकी; कुछ देवताओंकी तथा कुछ नरकगामी प्राणियोंकी; भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है।

भिक्षुओ, न अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल-कर्म जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है कैसा होता है? भिक्षुओ, यह जो अकुशल विपाक अकुशल-कर्म होता है उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (=नीयत), यह जो कुशल विपाक कुशल-कर्म होता है उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (=नीयत) तथा यह जो अकुशल कुशल विपाक अकुशल कुशल-कर्म होता है उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (=नीयत)—भिक्षुओ यह चेतना ही न अकुशल न कुशल विपाक न अकुशल न कुशल-कर्म कहलाती है और यह कर्म ही कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ, कर्मोके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने जानकर, अनुभव कर, प्रकट किया है।

उस समय सिखा नामका मौद्गल्यायन ब्राह्मण जहाँ भगवान थे वहाँ पहुँचा। पहुँचकर भगवानके साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेमकी बात समाप्त हो चुकनेपर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए सिखा मौद्गल्यायन ब्राह्मणने भगवान्से यह कहा—"हे गौतम! कुछ दिन बीते सोणकायन ब्रह्मचारी मेरे पास आया, आकर

मुझसे बोला—' श्रमण गौतम सभी कर्मोंके अक्रिया-पनका उपदेश देता है, सभी कर्मोंका अकर्तृत्व प्रकट करते हुए लोकके मूलोच्छेदकी घोषणा करता है—यह लोक कर्म-सत्यपर आश्रित है, यह लोक कर्म-प्रयासपर निर्भर करता है।"

"हे ब्राह्मण ! मुझे याद नहीं आता कि मैंने सोणकायन ब्राह्मणको कहीं देखा भी हो, ऐसी बातचीत तो कहाँ ! ब्राह्मण ! कर्मोंके चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर, प्रकट किया है। कौनसे चार प्रकार ? ब्राह्मण ! अकुशल-विपाक देने वाला अकुशल-कर्म होता है, कुशल विपाक देनेवाला कुशल-कर्म होता है, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म होता है तथा ब्राह्मण ! न अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न अकुशल न कुशल कर्म-होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। ब्राह्मण ! अकुशल विपाक अकुशल-कर्म कैसा होता है ? ब्राह्मण ! एक आदमी सक्रोध शरीरिक कर्म प्रकट करता है, सक्रोध वाणीका कर्म प्रकट करता है, सक्रोध मनो-कर्म प्रकट करता है, वह सक्रोध शारीरिक कर्म प्रकट करके, सक्रोध वाणीका कर्म प्रकट करके, सक्रोध मनोकर्म प्रकट करके, सक्रोध लोकमें जन्म ग्रहण करता है, सक्रोध लोकमें जन्म ग्रहण कर लेने पर उसे सक्रोध स्पर्शोंका स्पर्श होता है, सक्रोध स्पर्शोंका स्पर्श होनेपर सक्रोध वेदनाओंकी अनुभूति होती है—अत्यन्त दुःखद, मानो नरकगामी प्राणियोंका दुःख हो। ब्राह्मण ! ऐसाकर्म अकुशल विपाक अकुशल-कर्म कहलाता है।

ब्राह्मण ! कुशल विपाक कुशल-कर्म कैसा होता है ? ब्राह्मण ! एक आदमी क्रोध रहित शारीरिक-कर्म प्रकट करता है, क्रोध रहित वाणीका कर्म प्रकट करता है, क्रोध रहित मनोकर्म प्रकट करता है, वह क्रोध-रहित शारीरिक कर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित वाणीका कर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित मनो-कर्म प्रकट करके, क्रोध-रहित लोकमें जन्म ग्रहण करता है, क्रोध-रहित लोकमें जन्म ग्रहण कर लेनेपर उसे क्रोध-रहित स्पर्शोंका स्पर्श होता है, क्रोध-रहित स्पर्शोंका स्पर्श होनेपर क्रोध-रहित वेदनाओं की अनुभूति होती है—अत्यन्त सुखद, माना वह शुभ-चिन्ह देव लोकमें हो। ब्राह्मण ! ऐसा कर्म कुशल-विपाक कुशल-कर्म कहलाता है।

ब्राह्मण, अकुशल-कुशल विपाक अकुशल-कुशल कर्म कैसा होता है ? ब्राह्मण ! एक आदमी क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित शारीरिक कर्मको प्रकट करता है, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वाणीके कर्मको प्रकट करता है, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित मनोकर्मको प्रकट करता है। वह क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित शारीरिक कर्म को प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वाणीके कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित मनो-कर्मको प्रकट कर, क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित लोकमें उत्पन्न

होता है। क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित लोकमें जन्म ग्रहण कर लेनेपर उसे क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित स्पर्शोंका स्पर्श होता है। क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित स्पर्शोंका स्पर्श होने पर क्रोध-रहित तथा क्रोध-सहित वेदनाओंकी अनुभूति होती है—मिले जुले सुख-दुःख वाली—जैसे मनुष्योंकी; कुछ देवताओंकी तथा कुछ नरक-गामी प्राणियों की। ब्राह्मण! ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक अकुशल कुशल-कर्म कहलाता है।

ब्राह्मण! न अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न अकुशल न कुशल-कर्म, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है, कैसा होता है? ब्राह्मण! यह जो अकुशल विपाक अकुशल-कर्म होता है उसको प्रहाण करनेकी जो चेतना (—नीयत) है, यह जो कुशल विपाक कुशल कर्म होता है, उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (—नीयत) है तथा यह जो अकुशल कुशल विपाक अकुशल कुशल-कर्म होता है, उसका प्रहाण करनेकी जो चेतना (नीयत) है—ब्राह्मण! यह चेतना ही न-अकुशल न-कुशल विपाक न-अकुशल न-कुशल कर्म कहलाती है और यह कर्म ही कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। ब्राह्मण! कर्मोंके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने जानकर अनुभव कर, प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोंके चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार प्रकार? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म, कुशल विपाक देने वाला कुशल-कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल कुशल-कर्म तथा न अकुशल न कुशल विपाक देनेवला न अकुशल न कुशल-कर्म। भिक्षुओ, यह चौथा कर्म कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है।

भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल कर्म कौनसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, व्यभिचारी होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करने वाला होता है। भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-विपाक अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल विपाक देनेवाला कुशल कर्म कौनसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, चोरीसे विरत रहता है, व्यभिचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करनेसे विरत रहता है। भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल-विपाक देने वाला कुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, अकुशल कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कैसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-सहित तथा क्रोध-रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है. . .भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ,

न-अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न अकुशल न कुशल-कर्म कैसा होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है? भिक्षुओ, यह जो अकुशल विपाक अकुशल-कर्म है...... भिक्षुओ, यह न अकुशल न कुशल-विपाक देने वाला न अकुशल न कुशल-कर्म कहलाता है, जो कर्म-क्षय का निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ, कर्मोंके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोंके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कर्म, कुशल विपाक देनेवाला कुशल-कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कुशल कर्म तथा न-अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला, न-अकुशल न-कुशल कर्म। भिक्षुओ, यह चौथा कर्म कर्म-क्षयका निमित्त-कारण होता है। भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म कौनसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमीने मातृ-हत्याकी होती है, पितृ-हत्या की होती है, अर्हत्की हत्याकी होती है, द्वेषपूर्ण चित्तसे तथागतके शरीरसे रक्त बहाया होता है तथा संघमें भेद (=कलह) पैदा किया होता है। भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-विपाक अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल-विपाक कुशल-कर्म कौनसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी प्राणी-हिंसासे विरत होता है, चोरीसे विरत होता है, व्यभिचारसे विरत होता है, झूठ बोलनेसे विरत होता है, चुगल-खोरीसे विरत होता है, कठोर बोलनेसे विरत होता है, व्यर्थ बोलनेसे विरत होता है, निर्लोभ होता है, क्रोध-रहित होता है तथा सम्यक्-दृष्टि होता है। भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल विपाक देने वाला कुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कौनसा होता है? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-सहित तथा क्रोध-रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है... भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, न-अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म कैसा होता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है? भिक्षुओ, यह जो अकुशल विपाक अकुशल कर्म है...
..... भिक्षुओ, यह न अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न कुशल-कर्म कहलाता है, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ, कर्मोंके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोंके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म, कुशल विपाक देने वाला कुशल-कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देनेवाला अकुशल कुशल

कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म तथा न-अकुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म ; जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है। भिक्षुओ, अकुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कर्म कौन सा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध सहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है.... भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल विपाक देने वाला कुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है. . . . . भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल-विपाक देनेवाला कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, अकुशल-कुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध-सहित तथा क्रोध-रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है. . . . भिक्षुओ ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, न अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म, जो कर्म-क्षयका निमित्त कारण होता है, कौन सा होता है ? सम्यक् दृष्टि. . . . सम्यक् समाधि। भिक्षुओ, ऐसा कर्म न-अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला अकुशल न कुशल कर्म कहलाता है, जो कर्म क्षयका निमित्त कारण होता है, कहलाता है। भिक्षुओ, कर्मोंके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, कर्मोंके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर, अनुभव कर प्रकट किया है। कौनसे चार ? भिक्षुओ, अकुशल विपाक देने वाला अकुशल कर्म, कुशल विपाक देनेवाला कुशल कर्म, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म तथा न-अकुशल न कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म, जो कर्म-क्षयका निमित्त-कारण होता है। भिक्षुओ, अकुशल विपाक देनेवाला अकुशल-कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध सहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है. . . . . भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल विपाक देने वाला अकुशल-कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, कुशल विपाक देने वाला कुशल-कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध सहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है. . . . . भिक्षुओ, ऐसा कर्म कुशल विपाक देने वाला कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कौनसा होता है ? भिक्षुओ, एक आदमी क्रोध सहित तथा क्रोध रहित शारीरिक क्रिया प्रकट करता है. . . . भिक्षुओ, ऐसा कर्म अकुशल-कुशल विपाक देने वाला अकुशल-कुशल कर्म कहलाता है। भिक्षुओ, न-अकुशल न-

कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म, जो कर्म-क्षयका निमित्त-कारण होता है, कौनसा होता है ? स्मृति सम्बोधि-अंग, धर्म-विचय सम्बोधि अंग, वीर्य सम्बोधि-अंग, प्रीति सम्बोधि-अंग, प्रश्रब्धि सम्बोधि-अंग, समाधि सम्बोधि-अंग, उपेक्षा सम्बोधि-अंग। भिक्षुओ, ऐसा कर्म न-अकुशल न-कुशल विपाक देने वाला न-अकुशल न-कुशल कर्म, जो कर्म-क्षयका कारण होता है, कहलाता है। भिक्षुओ, कर्मोंके ये चार प्रकार हैं, जिन्हें मैंने स्वयं जानकर अनुभव कर प्रकट किया है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बातें ? सदोष शारीरिक कर्म, सदोष वाणी के कर्म, सदोष मनोकर्म तथा सदोष दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है, वह ऐसा ही होता है, जैसे लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बातें ? निर्दोष शारीरिक कर्म, निर्दोष वाणीके कर्म, निर्दोष मानसिक कर्म तथा निर्दोष दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बातें ? क्रोध-युक्त शारीरिक कर्म, क्रोध-युक्त वाणीके कर्म, क्रोध-युक्त मनो-कर्म तथा क्रोधयुक्त-दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी चार बातें ? क्रोध-रहित शारीरिक-कर्म, क्रोधरहित वाणीके कर्म, क्रोध-रहित मनोकर्म तथा क्रोध-रहित दृष्टि। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है, जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, (प्रथम) श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासन में ही उपलब्ध हैं, द्वितीय श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमें ही उपलब्ध हैं, तृतीय श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमें ही उपलब्ध हैं और चतुर्थ श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमें ही उपलब्ध हैं। दूसरी मत-परम्परायें ऐसे श्रमणोंसे शून्य हैं। भिक्षुओ, इस सिंह-गर्जनाकी अच्छी तरह घोषणा करो। भिक्षुओ, (प्रथम) श्रमण किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, एक भिक्षु प्रथम तीन संयोजनोंका क्षय कर स्रोतापन्न हो जाता है, उसके पतनकी सम्भावना नहीं रहती, उसका सम्बोधि-लाभ निश्चित हो जाता है। भिक्षुओ, यह (प्रथम) श्रमण कहलाता है। भिक्षुओ, द्वितीय श्रमण किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, भिक्षु तीनों संयोजनोंका

क्षय कर, रागद्वेष तथा मोहको भी दुर्बल बना सकृदागामी होता है। वह केवल एक ही बार और इस लोकमें जन्म ग्रहण कर दुःखका अन्त करता है। भिक्षुओ, यह द्वितीय श्रमण कहलाता है। भिक्षुओ, तृतीय श्रमण किसे कहते हैं? भिक्षुओ, भिक्षु निम्नमुख पांचों संयोजनोंका क्षय कर अनागामी (=ओपपातिक) होता है, वहीं (ब्रह्म-लोक) से परिनिर्वृत्त हो जाने वाला, वहाँसे फिर इस लोकमें नहीं आने वाला। भिक्षुओ, यह तृतीय श्रमण कहलाता है। भिक्षुओ, चतुर्थ श्रमण किसे कहते हैं? भिक्षुओ, एक भिक्षु आस्रवोंका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें स्वयं साक्षात् कर, प्राप्त कर विचरता है। भिक्षुओ, यह चतुर्थ श्रमण कहलाता है। भिक्षुओ, (प्रथम) श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमें ही उपलब्ध हैं, द्वितीय श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमें ही उपलब्ध हैं, तृतीय श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमें ही उपलब्ध हैं और चतुर्थ श्रमण भी इसी (बुद्ध) शासनमें ही उपलब्ध हैं। दूसरी मत-परम्परायें ऐसे श्रमणोंसे शून्य हैं। भिक्षुओ, इस सिंह-गर्जनाकी अच्छी तरह घोषणा करो।

भिक्षुओ, सत्पुरुषकी संगतिसे चार बातोंकी आशा करनी चाहिये। कौनसी चार? आर्य-शीलमें बृद्धि होती है, आर्य-समाधिमें बृद्धि होती है, आर्य प्रज्ञामें वृद्धि होती है तथा आर्य-विमुक्ति में बृद्धि होती है। भिक्षुओ, सत्पुरुषकी संगतिसे इन चार बातोंकी आशा करनी चाहिये।

(५) आपत्ति-भय वर्ग

एक समय भगवान् कोसम्बी (कौशाम्बी) के घोषितारामभें विहार कर रहे थे। उस समय आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे और पहुँचकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान् आनन्दसे भगवान्ने यह पूछा—

"आनन्द! क्या वह झगड़ा शान्त हो गया?"

"भन्ते! वह झगड़ा कैसे शान्त होगा? भन्ते आयुष्मान् अनुरुद्धका बाहिय नामका साथी सारे के सारे संघमें मतभेद पैदा कर देनेपर तुला हुआ है। उसे आयुष्मान अनुरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहना चाहते हैं।"

"आनन्द! अनुरुद्ध कबसे संघके झगड़ोंमें दिलचस्पी लेने लगे। क्या आनन्द ऐसा नहीं है कि जितने भी विवाद खड़े हों उनको तुम लोग तथा सारिपुत्र और मौद्गल्यायन ही समाप्त करो? आनन्द, चार कारणोंसे पापी-भिक्षु संघमें मतभेद पैदा होने पर प्रसन्न होते हैं। कौनसे चार कारणोंसे? आनन्द! एक पापी भिक्षु दुश्शील होता है, दुराचारी होता है, बदचलन होता है, छिपकर पाप कर्म करने

वाला होता है, कहनेके लिये श्रमण किन्तु अश्रमण होता है, कहनेके लिये ब्रह्मचारी किन्तु अब्रह्मचारी होता है, अन्दरसे सड़ा होता है, अनेक छिद्रोंसे युक्त होता है तथा गन्दगी-पूर्ण होता है। उसके मनमें होता है कि यदि भिक्षु यह जान जायेंगे कि मैं पापी हूँ, दुश्शील हूँ, दुराचारी हूँ, बदचलन हूँ, छिपकर पाप कर्म करने वाला हूँ, कहने के लिये श्रमण किन्तु अश्रमण हूँ, कहनेके लिये ब्रह्मचारी किन्तु अब्रह्मचारी हूँ, अन्दर से सड़ा हुआ हूँ, अनेक छिद्रोंसे युक्त हूँ तथा गन्दगीपूर्ण हूँ और उनमें एकता रहेगी तो वह मिलकर मुझे संघसे निकाल बाहर करेंगे, मुझे भिक्षु नहीं रहने देंगे, किन्तु यदि उनमें दलबन्दी रहेगी तो वह मुझे भिक्षु बना रहने देंगे। आनन्द ! यह पहला कारण है, जिससे पापी भिक्षु संघमें मतभेद पैदा होने पर प्रसन्न होते हैं।

फिर आनन्द ! पापी भिक्षु मिथ्या-दृष्टि होता है, सिरेकी बातों (—काम-भोग अथवा कायक्लेश) को मानने वाला। उसके मनमें होता है यदि भिक्षु जान लेंगे कि यह मिथ्या-दृष्टि है, सिरेकी बातोंको मानने वाला है और उनमें एकता होगी तो वह मुझे भिक्षु नहीं रहने देंगे, यदि उनमें दलबन्दी होगी तो वह मुझे भिक्षु बना रहने देंगे। आनन्द ! यह दूसरा कारण है कि जिससे पापी भिक्षु संघमें मतभेद पैदा होनेपर प्रसन्न होते हैं। फिर आनन्द ! पापी भिक्षु मिथ्या-आजीविका वाला होता है। उसके मनमें होता है, यदि भिक्षु जान लेंगे कि यह मिथ्या-आजीविका वाला है और उनमें एकता होगी तो वह मुझे भिक्षु नहीं रहने देंगे, यदि उनमें दलबन्दी होगी तो वह मुझे भिक्षु बना रहने देंगे। आनन्द ! यह तीसरा कारण है जिससे पापी भिक्षु संघमें मतभेद पैदा होनेपर प्रसन्न होते हैं।

फिर आनन्द ! पापी भिक्षु लाभकी इच्छा वाला होता है, सत्कारकी इच्छा वाला होता है, तथा प्रसिद्धिकी इच्छा वाला। उसके मनमें होता है, यदि भिक्षु जान लेंगे कि यह लाभ की इच्छा वाला है, सत्कारकी इच्छा वाला है तथा प्रसिद्धिकी इच्छा वाला है और उनमें एकता होगी तो वह मुझे भिक्षु नहीं रहने देंगे, यदि उनमें दलबन्दी होगी तो वह मुझे भिक्षु बना रहने देंगे। आनन्द ! यह चौथा कारण है जिससे पापी भिक्षु संघमें मतभेद पैदा होनेपर प्रसन्न होते हैं। आनन्द ! ये चार कारण हैं जिनसे पापी भिक्षु संघमें मतभेद पैदा होने पर प्रसन्न होते हैं।

भिक्षुओ, ये चार विपत्ति-भय वा दोष-भय हैं। कौनसे चार ? भिक्षुओ, जैसे कोई चोर हो, अपराधी हो। लोग उसे पकड़ कर राजाके पास ले जायें—देव ! यह चोर है। अपराधी है। इसे दण्ड दें। उन लोगोंको राजा कहे— "आप लोग इसे ले जाओ और इसकी बाहोंको पीछे करके उन्हें कसकर बांध दो। फिर इसका

सिर उस्तरेसे मूण्डकर, कर्णकटु, भेरी-वादन करते हुए, इसे एक सड़कसे दूसरी सड़क, एक चौरस्तेसे दूसरे चौरस्ते ले जाकर, (नगरके) दक्षिण-द्वारसे निकाल, नगरके दक्षिणकी ओर ही इसका सिर काट डालो।" तब उस राजाके आदमी उसे ले जायें, उसकी बांहोंको पीछे करके उन्हें कसकर बांध दें, उसका सिर उस्तरेसे मूँड़ दें, कर्ण-कटु भेरी-वादन करते हुए, उसे एक सड़कसे दूसरी सड़क, एक चौरस्तेसे दूसरे चौरस्ते ले जायें, (नगरके) दक्षिण-द्वारसे निकाल, नगरके दक्षिणकी ओर ही उसका सिरकाट दें। तब एक ओर खड़े हुए किसी आदमीके मनमें यह हो—इस आदमीने बुरा काम किया, निन्दनीय, सिर काट डालने योग्य। इसीसे राजाके आदमियोंने इसे ले जाकर, उसकी बांहोंको पीछे करके उन्हें कसकर बांधा, उसका सिर उस्तरेसे मूँड़ा, कर्णकटु, भेरी-वादन करते हुए उसे एक सड़क से दूसरी सड़क, एक चौरस्तेसे दूसरे चौरस्ते ले जाकर, (नगरके) दक्षिण द्वारसे निकाल, नगरके दक्षिणकी ओर ही उसका सिर काट दिया। इससे डर कर वह आदमी ऐसा बुरा काम, निन्दनीय काम, सिर काट डालने लायक काम न करे। इसी प्रकार भिक्षुओ किसी भिक्षु या भिक्षुणीके मनमें तीव्र भयकी भावना हो सकती है (चार) पाराजिकाओंके बारेमें। उससे यह आशा की जा सकती है कि यदि उनसे पाराजिका-अपराधका दोष नहीं हुआ है तो वे उस दोष को न होने देंगे, यदि हो गया है तो धर्मानुसार योग्य प्रतिकार करेंगे।

भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी काले वस्त्र पहन, बालोंको बिखेरे हुए, कन्धेपर मूसल रखकर लोगोंके समूहके बीच जाय और कहे—"स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, मूसलसे मार डालने योग्य! अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, मैं वही कर्म करूँ।" तब एक ओर खड़े हुए किसी आदमीके मनमें हो—इस आदमीने बुरा काम किया, निन्दनीय, मूलससे मार डालने योग्य। इसी लिये यह आदमी काले वस्त्र पहन, बालोंको बिखेरे हुए, कन्धे पर मूसल रखे हुए, लोगोंके समूहके बीच जाता है और कहता है—'स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, मूसलसे मार डालने योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, मैं वही कर्म करूँ।' इससे डरकर वह आदमी ऐसा बुरा काम, निन्दनीय काम, मूसलसे मार डालने योग्य काम न करे। इसी प्रकार भिक्षुओ किसी भिक्षु या भिक्षुणीके मनमें तीव्र भयकी भावना हो सकती है (तेरह) संघादिसेस-अपराधोंके बारेमें। उनसे यह आशा की जा सकती है कि यदि उनसे संघादिसेस-अपराधोंका दोष नहीं हुआ है, तो वे उस दोषको न होने देंगे, यदि हो गया है तो धर्मानुसार योग्य प्रतिकार करेंगे।

भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी काले वस्त्र पहन, बालोंको बिखेर कर, कन्धेपर राखका बोरा रख कर लोगोंके समूहके बीच जाय और कहे—" स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, राखके बोरेके योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, मैं वही करूँ।" तब एक ओर खड़े हुए किसी आदमीके मनमें हो—इस आदमीने बुरा काम किया, निन्दनीय, राखके बोरेके योग्य। इसीलिये यह आदमी काले वस्त्र पहने, बालोंको बिखेरे हुए, कन्धेपर राखका बोरा रखे हुए, लोगोंके समूहके बीच जाता है और कहता है—" स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, राखके बोरेके योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, मैं वही कर्म करूँ।' इससे डरकर वह आदमी ऐसा बुरा कर्म, निन्दनीय कर्म, राखके बोरेके योग्य काम न करे। इसी प्रकार भिक्षुओ, किसी भिक्षु या भिक्षुणीके मनमें तीव्र भयकी भावना हो सकती है, पाचित्तिय-अपराधोंके बारेमें। उनसे यह आशा की जा सकती है कि यदि उनसे पाचित्तिय-अपराधोंका दोष नहीं हुआ है, तो वे उस दोषको न होने देंगे, यदि हो गया है तो धर्मानुसार योग्य प्रतिकार करेंगे।

भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी काले वस्त्र पहन, बालोंको बिखेर कर, लोगोंके समूहके बीच जाय और कहे—'स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दीय, दोष देने योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, मैं वहीं कर्म करूँ।" तब एक ओर खड़े हुए किसी आदमीके मनमें हो—इस आदमीने बुरा काम किया, निन्दनीय, दोष देने योग्य। इसीलिये यह आदमी काले वस्त्र पहने, बालोंको बिखेरे हुए, लोगोंके समूहके बीच जाता है और कहता है—'स्वामियो! मैंने बुरा काम किया है, निन्दनीय, दोष देने योग्य। अब मेरे जो कुछ करनेसे आप लोग सन्तुष्ट हों, वही मैं कर्म करूँ।' उससे डरकर वह आदमी ऐसा बुरा कर्म, निन्दनीय कर्म, दोष देने योग्य कर्म न करे। इसी प्रकार भिक्षुओ, किसी भिक्षु या भिक्षुणीके मनमें तीव्र भयकी भावना हो सकती है, प्रति-देशना करने योग्य अपराधोंके बारेमें। उनसे यह आशा की जा सकती है कि यदि उनसे प्रति-देशना करने योग्य अपराधोंका दोष नहीं हुआ है तो वे उस दोषको न होने देंगे, यदि हो गया है तो धर्मानुसार योग्य प्रतिकार करेंगे।

भिक्षुओ, यह जो श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत किया जाता है इसका फल है शिक्षाओंके अनुसार जीवन व्यतीत करना, प्रज्ञाकी प्राप्ति, विमुक्ति रूपी सार तथा स्मृतिकी प्रधानता। भिक्षुओ, शिक्षाओंके अनुसार जीवन व्यतीत करना कैसे होता है? भिक्षुओ, मैंने श्रावकोंको सुन्दर आचार सम्बन्धी शिक्षा दी है, जो अश्रद्धालुओंको श्रद्धालु बनाने वाली है, श्रद्धालुओंको अधिक श्रद्धालु बनाने वाली है। भिक्षु उस

शिक्षाके अनुसार सम्पूर्ण रूपसे आचरण करने वाला होता है, अन्यून रूपसे आचरण करने वाला होता है, बिना धब्बा लगने दिये आचरण करने वाला होता है, निर्दोष रूपसे आचरण करने वाला होता है, सम्यक्-रूपसे शिक्षाओंको ग्रहण कर तदनुसार आचरण करने वाला होता है। फिर भिक्षुओ, मैंने श्रावकोंको आरम्भिक श्रेष्ठ जीवन सम्बन्धी शिक्षायें दी हैं, मूलरूपसे दुःखका क्षय करनेके लिये। भिक्षुओ, जैसे-जैसे मैंने श्रावकोंको आरम्भिक श्रेष्ठ जीवन सम्बन्धी शिक्षायें दी हैं, मूलभूरूपसे दुःख का क्षय करनेके लिये, वैसे वैसे वह उन शिक्षाओंके अनुसार सम्पूर्ण रूपसे आचरण करने वाला होता है, अन्यून रूपसे आचरण करने वाला होता है, बिना धब्बा लगने दिये आचरण करने वाला होता है, सम्यक्-रूपसे शिक्षाओंको ग्रहण कर तदनुसार आचरण करने वाला होता है, भिक्षुओ, इस प्रकार शिक्षाओंके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाता है।

भिक्षुओ, प्रज्ञाकी प्राप्ति कैसे होती है? भिक्षुओ, मैंने श्रावकोंको धर्मोपदेश दिया है सम्पूर्ण रूपसे, सम्यक् प्रकारसे दुःखक्षयके लिये। भिक्षुओ, जैसे-जैसे मैंने श्रावकोंको धर्मोपदेश दिया है सम्पूर्ण रूपसे, सम्यक् प्रकारसे दुःखक्षयके लिये, वैसे वैसे उसके द्वारा वे धर्म प्रज्ञासे हृदयङ्गम किये रहते हैं। इस प्रकार भिक्षुओ, प्रज्ञाकी प्राप्ति होती है।

भिक्षुओ, विमुक्ति-रूप-सारकी प्राप्ति कैसे होती है? भिक्षुओ, मैंन श्रावकोंको धर्मोपदेश दिया है सम्पूर्ण रूपसे, सम्यक् प्रकारसे दुःखक्षयके लिये। भिक्षुओ जैसे-जैसे मैंने श्रावकोंको धर्मोपदेश दिया है सम्पूर्ण रूपसे, सम्यक् प्रकारसे दुःख क्षयके लिये, वैसे-वैसे उसके द्वारा वे विमुक्ति (= रूपी) धर्म (प्रज्ञासे) स्पर्श किये जाते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकार विमुक्ति-सारकी प्राप्ति होती है।

भिक्षुओ, स्मृतिकी प्रधानता कैसे होती है? वह सोचता है असम्पूर्ण सुन्दर आचार सम्बन्धी शिक्षाको सम्पूर्ण करूँगा, परिपूर्ण सुन्दर आचार सम्बन्धी शिक्षाको प्रज्ञासे अनुग्रहीत करूँगा, इस प्रकार उसकी स्मृति उपस्थित होती है। वह सोचता है असम्पूर्ण आरम्भिक श्रेष्ठ जीवन सम्बन्धी शिक्षाओंको सम्पूर्ण करूँगा, परिपूर्ण आरम्भिक श्रेष्ठ जीवन सम्बन्धी शिक्षाओं को प्रज्ञासे अनुग्रहीत करूँगा—इस प्रकार उसकी स्मृति उपस्थित होती है। वह सोचता है अविचारित धर्मोपर प्रज्ञासे विचार करूँगा, विचारित धर्मोको प्रज्ञासे अनुग्रहीत करूँगा—इस प्रकार उसकी स्मृति उपस्थित होती है। वह सोचता है अस्पर्श किये गये धर्मोको स्पर्श करूँगा, स्पर्श किये गये धर्मोको प्रज्ञासे अनुग्रहीत करूंगा—इस प्रकार उसकी स्मृति उपस्थित होती है।

भिक्षुओ, इस प्रकार स्मृतिकी प्रधानता होती है। भिक्षुओ, यह जो कहा गया कि जो यह श्रेष्ठ-जीवन व्यतीत किया जाता है इसका फल है शिक्षाओंके अनुसार जीवन व्यतीत करना, प्रज्ञाकी प्राप्ति, विमुक्ति रूपी सार तथा स्मृतिकी प्रधानता, यह इसी आशयसे कहा गया।

भिक्षुओ शैय्याओं (= सोनेके ढंग) के ये चार प्रकार हैं। कौनसे चार? प्रेत-शैय्या, कामभोगी-शैय्या, सिंह-शैय्या तथा तथागत-शैय्या। भिक्षुओ, प्रेत-शैय्या कैसी होती है। भिक्षुओ, बहुत करके प्रेत आकाशकी ओर मुँह करके सोते हैं। भिक्षुओ, यह प्रेत-शैय्या कहलाती है। भिक्षुओ, काम-भोगी शैय्या कैसी होती है? भिक्षुओ, बहुत करके काम-भोगी बायीं करवट सोते हैं। भिक्षुओ, यह काम-भोगी शय्या कहलाती है। भिक्षुओ, सिंह-शैय्या कैसी होती है? भिक्षुओ, मृगराज सिंह दक्षिण करवट लेटता है, पाँवके ऊपर पाँव रखकर, जाँघोंके बीचमें बिना उंगली डाले। वह जागकर, बदनके अगले हिस्सेको सीधा कर, पिछले हिस्सेको देखता है कि उसके शरीरका कोई हिस्सा बिखरा हुआ है या ढीला है तो वह उससे असन्तुष्ट होता है। भिक्षुओ, यदि मृगराज सिंह देखता है कि उसके शरीरका कोई हिस्सा बिखरा हुआ या ढीला नहीं है तो वह उससे सन्तुष्ट होता है। भिक्षुओ, यह सिंह-शैय्या कहलाती है। भिक्षुओ, तथागत-शैय्या कैसी होती है? भिक्षुओ, तथागत काम-वितर्कोंसे पृथक .... चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त कर विहार करते हैं। भिक्षुओ, यह तथागत-शैय्या कहलाती है। भिक्षुओ, शैय्याओंके ये चार प्रकार हैं।

भिक्षुओ, ये चार इस योग्य होते हैं कि इनका शरीरान्त होनेपर उनके स्तूप बनाये जायें। कौन चार? तथागत अर्हत् सम्यक्सम्बुद्ध, स्तूप बनानेके योग्य होते हैं, प्रत्येक-बुद्ध स्तूप बनानेके योग्य होते हैं, तथागत-श्रावक स्तूप बनानेके योग्य होते हैं तथा चक्रवर्ती राजा स्तूप बनानेके योग्य होता है। भिक्षुओ, ये चार इस योग्य होते हैं कि इनका शरीरान्त होनेपर इनके स्तूप बनाये जायें।

भिक्षुओ, ये चार बातें प्रज्ञाकी वृद्धिका कारण बनती हैं। कौन-सी चार? सत्पुरुषोंकी सेवा, सद्धर्मका सुनना, उचित ढंगसे विचार करना तथा धर्मानुसार प्रतिपत्ति (= आचरण)। भिक्षुओ, ये चार बातें प्रज्ञाकी वृद्धिका कारण बनती हैं।

भिक्षुओ, ये चार बातें मनुष्यके लिये बहुत उपकारी होती हैं। कौन-सी चार बातें? सत्पुरुषोंकी सेवा करना, सद्धर्मका श्रवण, ठीक ढँगसे विचार करना, धर्मानुसार आचरण। भिक्षुओ, ये चार बातें मनुष्यके लिये बहुत उपकारी होती हैं।

भिक्षुओ, ये चार अनार्य-व्यवहार हैं। कौनसे चार? अदृष्टको दृष्ट कहना; अश्रुतको श्रुत कहना; जो न सूँघा हो, न चखा हो, जो न स्पर्श किया गया हो उसे सूँघा हुआ, चखा हुआ, स्पर्श किया हुआ कहना; जो न जाना गया हो, उसे जाना गया कहना—भिक्षुओ, ये चार अनार्य-व्यवहार हैं।

भिक्षुओ, ये चार आर्य-व्यवहार हैं। कौनसे चार? अदृष्ट को अदृष्ट कहना; अश्रुतको अश्रुत कहना; जो न सूँघा हो, न चखा हो, न स्पर्श किया गया हो उसे न सूँघा हुआ, न चखा हुआ, न स्पर्श किया गया कहना; जो न जाना गया हो, उसे न जाना गया कहना—भिक्षुओ, ये चार आर्य-व्यवहार हैं।

भिक्षुओ, ये चार अनार्य-व्यवहार हैं। कौनसे चार? दृष्टको अदृष्ट कहना; श्रुतको अश्रुत कहना; जो सूँघा हो, जो चखा हो, जो स्पर्श किया गया हो, उसे न सूँघा हुआ, न चखा हुआ, न स्पर्श किया गया कहना; जो ज्ञात हो, उसे अज्ञात कहना—भिक्षुओ, ये चार अनार्य-व्यवहार हैं।

भिक्षुओ, ये चार आर्य-व्यवहार हैं। कौनसे चार? दृष्टको दृष्ट कहना; श्रुतको श्रुत कहना; जो सूँघा हो, जो चखा हो, जो स्पर्श किया गया हो, उसे सूँघा हुआ, चखा हुआ, स्पर्श किया हुआ कहना; जो ज्ञात हो, उसे ज्ञात कहना—भिक्षुओ ये, चार आर्य-व्यवहार हैं।

(६) अभिज्ञा वर्ग

भिक्षुओ चार प्रकारके धर्म (=अस्तित्व) हैं। कौनसे चार प्रकारके? भिक्षुओ, ऐसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना होता है; भिक्षुओ, ऐसे धर्म हैं जिनका अभिज्ञा द्वारा प्रहाण करना होता है; भिक्षुओ, ऐसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा अभ्यास करना होता है तथा भिक्षुओ, ऐसे धर्म हैं जिनका अभिज्ञा द्वारा साक्षात् करना होता है।

भिक्षुओ, ऐसे कौनसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा ज्ञान प्राप्त करना होता है? पाँच उपादान स्कन्ध—भिक्षुओ, ये धर्म अभिज्ञा द्वारा ज्ञान प्राप्त किये जाने योग्य कहलाते हैं। भिक्षुओ, ऐसे कौनसे धर्म हैं जिनका अभिज्ञा द्वारा प्रहाण करना होता है? अविद्या तथा भव-तृष्णा—भिक्षुओ, ये धर्म अभिज्ञा द्वारा प्रहाण किये जाने योग्य कहलाते हैं। भिक्षुओ, ऐसे कौनसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा अभ्यास करना होता है? शमथ-भावना तथा विदर्शना-भावना—भिक्षुओ, ये धर्म अभिज्ञा द्वारा अभ्यास किये जाने योग्य हैं। भिक्षुओ, ऐसे कौनसे धर्म हैं, जिनका अभिज्ञा द्वारा साक्षात् करना होता है? विद्या तथा विमुक्ति—भिक्षुओ, ये धर्म अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जाने योग्य कहलाते हैं। भिक्षुओ, ये चार प्रकारके धर्म हैं।

भिक्षुओ, ये चार अनार्य-पर्येषण हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं जरा-धर्मी होनेके बावजूद जराको प्राप्त होनेवाले पदार्थोंकी ही खोजमें लगा रहता हैं; स्वयं व्याधी-धर्मी होनेके बावजूद व्याधिके वशीभूतोंकी ही खोजमें लगा रहता है; स्वयं मरण-धर्मी होकर मरण-स्वभाव पदार्थोंकी ही खोजमें लगा रहता हैं; स्वयं संक्लेश (= चित्त-मुलों) से संयुक्त होनेके बावजूद संक्लिष्ट-धर्मोंकी ही खोजमें लगा रहाता है। भिक्षुओ, ये चार अनार्य-पर्येषण हैं।

भिक्षुओ, ये चार आर्य-पर्येषण हैं। कौनसे चार? भिक्षुओ, एक आदमी स्वयं जरा-धर्मी होता हुआ, जराके दुष्परिणामोंसे परिचित हो, अजर अनुपम, योगक्षेम (= कल्याण) निर्वाणको खोजता है; स्वयं व्याधि धर्मी होकर, व्याधिके दुष्परिणामोंसे परिचित हो व्याधि-रहित, अनुपम, योगक्षेम निर्वाणको खोजता है; स्वयं मरण-धर्मी होकर मरणके दुष्परिणामोंसे परिचित हो अमर, अनुपम, योगक्षेम निर्वाणको खोजता है। स्वयं संक्लिष्ट (—चित्त मलोंसे युक्त होकर) संक्लेशोंके दुष्परिणामसे परिचित हो निर्मल, अनुपम, योगक्षेम निर्वाणको खोजता है। भिक्षुओ, ये चार आर्य-पर्येषण हैं।

भिक्षुओ, ये चार (लोक-) संग्रह वस्तुयें हैं। कौन-सी चार? दान, प्रिय-वचन, उपकार, समताका व्यवहार। भिक्षुओ, ये चार (लोक-) संग्रह वस्तुयें हैं।

तब आयुष्मान् मालुङक्यपुत्र जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठकर आयुष्मान् मालुङक्य पुत्रने भगवान्से निवेदन किया—"अच्छा हो भगवान्! यदि आप मुझे संक्षेपमें धर्मोपदेश दें, भगवान्के जिस धर्मको सुनकर मैं एकनिष्ठासे, प्रयत्न कर, प्रमाद-रहित हो, प्रयत्न-शील हो विचरण करूं।" "हे मालुण्डक्य पुत्र! मैं बच्चोंको क्या कहूँगा, जब कि तू आयु-प्राप्त होनेपर भी, वृद्ध होने पर भी, तथागतसे संक्षित ही धर्म-देशना सुनना चाहता है।"

"भगवान्! मुझे संक्षेपमें ही धर्मका उपदेश करें। सुगत! मुझे संक्षेपमें ही धर्मका उपदेश करें। अच्छा होगा कि मैं भगवान्के भाषणका अर्थ जान लूँ। अच्छा होगा यदि मैं भगवान्के भाषणका उत्तराधिकारी हो जाऊँ।"

"मालुँक्यपुत्र! ये चार तृष्णाकी उत्पत्तिके निमित्त-कारण हैं, जिनमें भिक्षुकी उत्पन्न होने वाली तृष्णा उत्पन्न होती है। कौनसे चार? मालुँक्यपुत्र! भिक्षुकी उत्पन्न होने वाली तृष्णा या तो चीवरके प्रति उत्पन्न होती है, या मालुँक्यपुत्र! भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णा पिण्डपात (= भोजन)के प्रति उत्पन्न होती है, या

मालुँक्यपुत्र ! भिक्षु, की उत्पन्न होने वाली तृष्णा शयनासनके प्रति उत्पन्न होती है, और या मालुँक्यपुत्र ! भिक्षुकी उत्पन्न होने वाली तृष्णा जहा-कहीं पैदा होनेके प्रति उत्पन्न होती है। मालुँक्य पुत्र ! ये चार तृष्णाकी उत्पत्तिके निमित्त-कारण हैं, जिनमें भिक्षुकी उत्पन्न होनेवाली तृष्णा उत्पन्न होती है।

"हे मालुँक्य पुत्र ! जब भिक्षुकी तृष्णा प्रहीण हो जाती है, जड़से जाती रहती है, कटे ताड़ वृक्षके समान होती है, अभाव-प्राप्त हो जाती है, पुनरुत्पत्तिकी संभावना नहीं रहती है, तो यह कहा जाता है कि भिक्षुने तृष्णाको छिन्न-भिन्न कर दिया, संयोजनोंकी सीमाको लांघ गया। अहंकारका पूर्ण रूपसे शमन कर दुःखका अन्त कर दिया।" भगवान् द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जानेपर आयुष्मान् मालुंक्य पुत्रने भगवान्को अभिवादन किया, प्रदक्षिणा की ओर चले गये। तब आयुष्मान् मालुंक्य पुत्रने एकान्तवास ग्रहण कर, अप्रमादी हो, प्रयत्नवान् हो, कोशिश करते हुए विहार करके जिस उद्देश्यकी सिद्धिके लिये कल-पुत्र घरसे बे-घर होते हैं उस ब्रह्मचर्य-शिखर अनुत्तर पदको थोड़े ही समयमें, इसी शरीरमें साक्षात् कर लिया। उसकी पुनर्जन्मकी सम्भावना क्षीण हो गई, जो करणीय था कर लिया, अब इससे आगे कुछ नहीं करना है—इसका ज्ञान प्राप्त कर लिया। आयुष्मान् मालुंक्य एक अर्हत् हुए।

भिक्षुओ, जितने भी कुल ऐश्वर्यके शिखरपर चढ़कर चिरस्थायी नहीं रहते, वे या तो इन चारों कारणोंसे, अथवा इनमेंसे किसी एक कारण से। कौनसे चार कारणोंसे ? वे जो नष्ट हो गया, उसकी खोज नहीं करते; जो टूट फूट गया हो, उसकी मरम्मत नहीं करते, वे बेहिसाब खाने-पीने वाले होते हैं तथा किसी दुश्शील स्त्री या पुरुषको अधिपति बना देते हैं। भिक्षुओ, जितने भी कुल ऐश्वर्यके शिखरपर चढ़कर चिरस्थायी नहीं रहते, वे या तो इन चार कारणोंसे अथवा इनमेंसे किसी एक कारणसे।

भिक्षुओ, जितने भी कुल ऐश्वर्यके शिखरपर चढ़कर चिर स्थायी रहते हैं, वे या तो इन चार कारणोंसे अथवा इनमेंसे किसी एक कारणसे। कौनसे चार कारणोंसे ? वे जो नष्ट हो गया, उसकी खोज करते हैं, जो टूट-फूट गया उसकी मरम्मत करते हैं, हिसाबसे खाने-पीने वाले होते हैं तथा सुशील स्त्री वा पुरुषको अधिपति बनाते हैं। भिक्षुओ, जितने भी कुल ऐश्वर्यके शिखरपर चढ़कर, चिरस्थायी रहते हैं, वे या तो इन चार कारणोंसे अथवा इनमेंसे किसी एक कारणसे।

भिक्षुओ, जिस श्रेष्ठ घोड़ेमें ये चारों बातें होती हैं वह राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है, तथा राजाका अंग ही समझा जाता है। कौन-सी चार

बातें ? भिक्षुओ, श्रेष्ठ घोड़ा वर्ण-युक्त होता है, बलयुक्त होता है, गति-युक्त होता है, चढ़नेके लिये लम्बे-चौड़े शरीरवाला होता है। भिक्षुओ, जिस श्रेष्ठ घोड़ेमें ये चारों बातें होती हैं, वह राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है तथा राजाका अंग ही समझा जाता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार बातें होती हैं वह सत्कार करने योग्य होता है......लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौन-सी चार बातें ? भिक्षुओ, वह भिक्षु वर्ण-युक्त होता है, बल-युक्त होता है गति-युक्त होता है तथा चढ़नेके लिये लम्बे चौड़े शरीर वाला होता है। भिक्षुओ भिक्षु वर्ण-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, वह भिक्षु शीलवान् होता है.....शिक्षाओं को सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। भिक्षुओ, भिक्षु बल-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु अकुशल-धर्मोंका प्रहाण करनेके लिये और कुशल-धर्मोंको प्राप्त करनेके लिये प्रयत्नवान् होता है। वह शक्तिशाली होता है, दृढ़-पराक्रमी होता है, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके प्रति दृढ़-निश्चयी होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु बल-युक्त होता है। भिक्षुओ, भिक्षु गति-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु यह दुःख है, इसे यथार्थ रूप से जानता है, यह दुःख-समुदय है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है, यह दुःख-निरोध है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है, यह निरोधकी ओरसे ले जाने वाला मार्ग है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु, गति-युक्त होता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे चढ़नेके लिये लम्बे चौड़े शरीर वाला होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु चीवर-भोजन-शयनासन-रोगीके प्रयत्नोंको प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु चढ़नेके लिये लम्बे-चौड़े शरीर वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार बातें होती हैं, वह सत्कार करने योग्य होता है।......लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, जिस श्रेष्ठ घोड़ेमें ये चारों बातें होती हैं वह राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है, तथा राजाका अंग ही समझा जाता है। कौन-सी चार बातें ? भिक्षुओ, श्रेष्ठ घोड़ा वर्ण-युक्त होता है, बल-युक्त होता है, गति-युक्त होता है, चढ़नेके लिये लम्बे-चौड़े शरीर वाला होता है। भिक्षुओ, जिस श्रेष्ठ घोड़ेमें ये चारों बातें होती हैं, वह राजाके योग्य होता है, राजाका भोग्य होता है तथा राजाका अंग ही समझा जाता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार बातें होती हैं, वह सत्कार करने योग्य होता है.......लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौन-सी चार बातें ? भिक्षुओ, वह भिक्षु, वर्ण-युक्त होता है, बल-युक्त होता है, गति-युक्त होता है तथा चढ़नेके लिये लम्बे-चौड़े शरीर वाला होता है। भिक्षुओ,

भिक्षु वर्ण-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, वह भिक्षु, शीलवान् होता है...... शिक्षाओंको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। भिक्षुओ, भिक्षु बल-युक्त कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु अकुशल-धर्मोंका प्रहाण करनेके लिये और कुशल-धर्मोंको प्राप्त करनेके लिये प्रयत्नवान् होता है। वह शक्ति-शाली होता है, दृढ़-पराक्रमी होता है, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके प्रति दृढ़-निश्चयी होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु बल-युक्त होता है। भिक्षुओ, भिक्षु गति-युक्त कैसे होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु आस्रवोंका क्षय कर..... साक्षात् कर विहार करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु गति-युक्त होता है। भिक्षुओ, भिक्षु कैसे चढ़नेके लिये लम्बे-चौड़े शरीर वाला होता है ? भिक्षुओ, भिक्षु चीवर-पिण्डपात-शयनासन तथा रोगीके प्रत्ययोंका प्राप्त करने-वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु चढ़नेके लिये लम्बे-चौड़े शरीर वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार बातें होती हैं, वह सत्कार करने योग्य होता है.........लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, ये चार बल हैं। कौनसे चार ? वीर्य-बल, स्मृति-बल, श्रद्धा-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये चार बल हैं।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार बातें होती हैं, वह जंगलमें अकेला रहनेके योग्य नहीं है। कौन-सी चार बातें ? काम-वितर्क, क्रोध-वितर्क, विहिंसा-वितर्क तथा जड़ता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार बातें होती हैं, वह जंगलमें अकेला रहनेके योग्य नहीं।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार बातें होती है वह जंगलमें अकेला रहनेके योग्य होता है। कौन-सी चार बातें ? नैष्कर्म्य-वितर्क, अक्रोध-वितर्क, अविहिंसा-वितर्क तथा जड़ताका न होना। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये चार बातें होती हैं, वह जंगलमें अकेला रहनेके योग्य है।

भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष, आप अपनी हानि करता है, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला होता है और बहुत अपुण्य प्राप्त करता है। कौन-सी चार बातोंसे ? सदोष शारीरिक कर्म, सदोष वाणीके कर्म, सदोष मनके कर्म तथा सदोष दृष्टि। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त मूर्ख, अपण्डित, असत्पुरुष, आप अपनी हानि करता है, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करनेवाला होता है और बहुत अपुण्य लाभ करता है।

भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त बुद्धिमान, पण्डित, सत्पुरुष आप अपनी हानि नहीं करता है, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला नहीं होता है, और

बहुत पुण्य लाभ करता है। कौन-सी चार बातोंसे? निर्दोष शारिरीक कर्म, निर्दोष वाणीके कर्म, निर्दोष मनके कर्म तथा निर्दोष दृष्टि। भिक्षुओ, इन चार बातोंसे युक्त, बुद्धिमान, पण्डित, सत्पुरुष, आप अपनी हानि नहीं करता है, विज्ञोंकी दृष्टिमें छोटे-बड़े दोष करने वाला नहीं होता है और बहुत पुण्य लाभ करता है।

(७) कर्मपथ-वर्ग

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह लाकर नरकमें डाल दिये गयेके समान होता है। कौन-सी चार बातें? स्वयं प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, दूसरेको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा करता है, प्राणी-हिंसाका समर्थन करता है तथा प्राणी-हिंसाकी प्रशंसा करता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह लाकर नरकमें डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गये के समान होता है। कौन-सी चार बातें? स्वयं प्राणी-हिंसासे विरत रहने वाला होता है, दूसरेको प्राणी-हिंसाकी प्रेरणा नहीं करता, प्राणी-हिंसाका समर्थन नहीं करता तथा प्राणी-हिंसाकी प्रशंसा नहीं करता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गयेके समान होता है।

भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती हैं वह लाकर नरकमें डाल दिये गयेके समान होता है। कौन-सी चार बातें? स्वयं चोरी करने वाला होता है, दूसरेको चोरी करनेकी प्रेरणा करता है, चोरीका समर्थन करने वाला होता है, तथा चोरीकी प्रशंसा करता है.......जिसमें ये.......स्वयं चोरी करनेसे विरत होता है, दूसरेको चोरी करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, चोरी करनेसे विरत रहनेका समर्थन करता है, तथा चोरी करनेसे विरत रहनेकी प्रशंसा करता है, ... जिसमें ये .....स्वयं व्यभिचार करने वाला होता है, दूसरेको व्यभिचारकी प्रेरणा करता है, व्यभिचारका समर्थन करता है तथा व्यभिचार करनेकी प्रशंसा करता है.......जिसमें ये.......व्यभिचार करनेसे विरत होता है, दूसरेको व्यभिचार करनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, व्यभिचार करनेसे विरत रहनेका समर्थन करता है तथा व्यभिचार करनेसे विरत रहनेकी प्रशंसा करता है.........जिसमें ये.......स्वयं झूठ बोलने वाला होता है, दूसरेको झूठ बोलनेकी प्रेरणा करता है, झूठ बोलनेका समर्थन करता है तथा झूठ बोलनेकी प्रशंसा करता है,.....जिसमें ये......झूठ बोलनेसे विरत रहता है, दूसरोंको झूठ बोलनेकी प्रेरणा करता है, झूठ बोलनेका समर्थन करता है तथा झूठ बोलनेकी प्रशंसा करता है.....जिसमें ये....स्वयं चुगली खाने वाला होता है,

दूसरोंको चुगली खानेकी प्रेरणा करता है, चुगली खानेका समर्थन करता है तथा चुगली खानेकी प्रशंसा करता है...... जिसमें ये..... स्वयं चुगली खानेसे विरत रहता है, दूसरोंको चुगली खानेसे विरत रहनेका समर्थन करता है तथा चुगली खानेसे विरत रहनेकी प्रशंसा करता है..... जिसमें ये.... स्वयं कठोर बोलने वाला होता है, दूसरोंको कठोर बोलनेकी प्रेरणा करता है, कठोर बोलनेका समर्थन करता है तथा कठोर बोलनेकी प्रशंसा करता है...... जिसमें ये.... स्वयं कठोर बोलनेसे विरत रहता है, दूसरोंको कठोर बोलनेसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, कठोर बोलनेसे विरत रहनेका समर्थन करता है तथा कठोर बोलनेसे विरत रहनेकी प्रशंसा करता है......जिसमें ये.....स्वयं बेकार बातचीत करने वाला होता है, दूसरोंको व्यर्थ बातचीत करनेकी प्रेरणा करता है, व्यर्थ बातचीत करनेका समर्थन करता है, व्यर्थ बातचीत करनेकी प्रशंसा करता है...... जिसमें ये.....स्वयं बेकार बातचीतसे विरत रहता है, दूसरोंको व्यर्थ बातचीतसे विरत रहनेकी प्रेरणा करता है, व्यर्थ बात चीतसे विरत रहनेका समर्थन करता है, व्यर्थ बातचीतसे विरत रहनेकी प्रशंसा करता है.......जिसमें ये......स्वयं लोभी होता है, दूसरेको लोभकी प्रेरणा देता है, लोभ करनेका समर्थन करता है तथा लोभ करनेकी प्रशंसा करता है.....जिसमें ये ....स्वयं लोभसे विरत रहता है.......दूसरेको लोभसे विरत रहनेकी प्रेरणा देता है, लोभसे विरता रहनेका समर्थन करता है, तथा लोभसे विरत रहनेकी प्रशंसा करता है.......जिसमें ये.......स्वयं क्रोध-चित्त वाला होता है, दूसरोंको क्रोधकी प्रेरणा करता है, क्रोधका समर्थन करता है तथा क्रोधकी प्रशंसा करता है ......जिसमें ये.....स्वयं क्रोधसे विरत रहता है, दूसरोंको क्रोधसे विरत रहने के लिये प्रेरित करता है, क्रोधसे विरत रहनेका समर्थन करता है तथा क्रोधसे विरत रहनेकी प्रशंसा करता है.......जिसमें ये.......स्वयं मिथ्या-दृष्टि होता है, दूसरोंको मिथ्या-दृष्टिकी प्रेरणा करता है, मिथ्या-दृष्टिका समर्थन करता है तथा मिथ्या-दृष्टिकी प्रशंसा करता है......जिसमें ये.....सम्यक्-दृष्टि होता है, दूसरोंको सम्यक् दृष्टिकी प्रेरणा करता है, सम्यक्-दृष्टिका समर्थन करता है तथा सम्यक्-दृष्टिकी प्रशंसा करता है। भिक्षुओ, जिसमें ये चार बातें होती है वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, रागके नष्ट करनेके लिये चारों स्मृतियों (=धर्मों) की भावना (=अभ्यास) करनी चाहिये। कौन-सी चार? भिक्षुओ, एक भिक्षु शरीरके प्रति जागरूक रहकर विहार करता है, प्रयत्न-शील, जानकार, स्मृतिमान् तथा संसारके

राग-द्वेषको जीतकर, वेदनाओंके प्रति....चित्तके प्रति......धर्मों (=चित्तके विषयों) के प्रति जागरूक रहकर विहार करता है, प्रयत्न-शील, जानकार, स्मृति-मान् तथा संसारके राग-द्वेषको जीतकर। भिक्षुओ, रागको नष्ट करनेके लिये इन चारों धर्मोंकी भावना करनी चाहिये।

भिक्षुओ, रागके नष्ट करनेके लिये, चारों धर्मोंकी भावना करनी चाहिये, कौनसे चारों धर्मोंकी? भिक्षुओ, भिक्षु जो दोष, जो अकुशल-धर्म, अभी उत्पन्न नहीं हुए हैं उनकी अनुत्पत्तिके लिये संकल्प करता है, प्रयास करता है, प्रयत्न करता है, चित्तको उस ओर झुकाता है, विशेष प्रयत्न करता है; जो दोष, जो अकुशल-धर्म उत्पन्न हो गये हैं, उनको दूर करनेके लिये...जो कुशल धर्म अभी उत्पन्न नहीं हुए हैं उनकी उत्पत्तिके लिये.....जो कुशल-धर्म उत्पन्न हो गये हैं उनको स्थिर बनाये रखनेके लिये, उन्हें लुप्त न होने देनेके लिये, उनकी वृद्धिके लिये, उनकी विपुलताके लिये, उन्हें सम्पूर्णता तक पहुँचा देनेके लिये संकल्प करता है, प्रयास करता है, प्रयत्न करता है, चित्तको उधर झुकाता है, विशेष प्रयत्न करता है। भिक्षुओ, रागका नाश करनेके लिये इन चारों धर्मोंका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ रागका नाश करनेके लिये इन चारों धर्मोंकी भावना करनी चाहिये। कौनसे चार धर्मोंकी? भिक्षुओ, भिक्षु, छन्द-समाधि-प्रयत्न युक्त ऋद्धिका अभ्यास करता है, वीर्य-समाधि........चित्त-समाधि......विमर्षण समाधि प्रयत्न-युक्त ऋद्धिका अभ्यास करता है। भिक्षुओ, रागका नाश करनेके लिये इन चारों धर्मोंकी भावना करनी चाहिये।

भिक्षुओ, रागके नाशके लिये, क्षयके लिये, प्रहाणके लिये, नष्ट करनेके लिये विरागके लिये, निरोधके लिये, त्यागके लिये, परित्यागके लिये इन चारों धर्मोंकी भावना करनी चाहिये......द्वेषके......मोहके.....क्रोधके.....वैर....(=उपनाह) के.......ढोंग (भ्रुक्ष) के लिये.....निर्दयता (=प्लास) के ....ईर्षाके......मात्सर्यके.......मायाके........शठताके........ कठोरताके.....कलह (=सारंभ) के.....मानके.....मदके...प्रमादके नाश-के लिये, क्षयके लिये, प्रहाणके लिये, नष्ट करनेके लिये, विरागके लिये, निरोधके लिये, त्यागके लिये, परि-त्यागके लिये इन चारों धर्मोंकी भावना करनी चाहिये।

पाँचवाँ निपात

(१) शैक्ष-बल वर्ग

ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेत-वनाराममें विहार करते थे। वहाँ भगवान्ने 'भिक्षुओ' कहकर भिक्षुओंको सम्बोधित किया। उन भिक्षुओंने भगवान्को प्रति-वचन दिया—'भदन्त।' तब भगवान्ने इस प्रकार कहा—भिक्षुओ, ये पाँच शैक्ष-बल हैं। कौनसे पाँच? श्रद्धा-बल, लज्जा-बल, (पाप–) भीरुता-बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पाँच शैक्ष-बल हैं।

इसलिये भिक्षुओ, ऐसा सीखना चाहिये कि कि हम शैक्ष-बल श्रद्धा-बलसे युक्त होंगे, हम शैक्ष-बल लज्जा-बलसे युक्त होंगे, हम शैक्ष-बल (पाप–) भीरूता-बलसे युक्त होंगे, हम शैक्ष-बल वीर्य-बलसे युक्त होंगे तथा हम शैक्ष-बल प्रज्ञा-बलसे युक्त होंगे। भिक्षुओ, इसी प्रकार सीखना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच शैक्ष-बल हैं। कौनसे पाँच? श्रद्धाबल, लज्जा-बल, (पाप–) भीरुता-बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, श्रद्धा-बल किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक श्रद्धावान् होता है, वह तथागत की 'बोधि' के प्रति श्रद्धा रखता है, 'वह भगवान अर्हत् हैं, सम्यक् सम्बुद्ध हैं, विद्या तथा आचरणसे युक्त हैं, सुगत हैं, लोकके जानकार हैं, अनुपम हैं, दुर्दमनीय पुरुषोंको दमन करनेवाले सारथी हैं, देवताओं तथा मनुष्योंके शास्ता हैं, बुद्ध भगवान् हैं।' भिक्षुओ, इसे श्रद्धा-बल कहते हैं। भिक्षुओ, लज्जा-बल किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक लज्जा-शील होता है; वह शारीरिक दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता तथा मनकी दुश्चरि-त्रताके प्रति लज्जा-युक्त होता है और लज्जा युक्त होता है पापी अकुशल-कर्म करनेसे।

भिक्षुओ, इसे लज्जा-बल कहते है। भिक्षुओ, (पाप–) भीरुता-बल किसे कहते है ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक भय-युक्त होता है, वह शारीरिक-दुश्चरित्रता, वाणीकी दुश्चरित्रता तथा मनकी दुश्चरित्रताके प्रति भय-युक्त होता है और भय-युक्त होता है पापी अकुशल-कर्म करनेसे। भिक्षुओ, इसे (पाप–) भीरुता बल कहते हैं। भिक्षुओ, वीर्य-बल किसे कहते हैं। भिक्षुओ, आर्य श्रावक दृढ़ संकल्प होता है अकुशल-धर्मोंका प्रहाण करनेके लिये, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके लिये; सामर्थ्यवान् होता है, दृढ़-पराक्रमी होता है; कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके विषयमें उसकी हिम्मत बंधी रहती है। भिक्षुओ, वीर्य-बल इसे कहते हैं। भिक्षुओ, प्रज्ञा-बल किसे कहते हैं ? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक प्रज्ञावान् होता है, उत्पत्ति-विनाश संम्बन्धी प्रज्ञासे समन्वित, आर्य-प्रज्ञासे युक्त, बींधने वाली प्रज्ञासे युक्त, सम्यक् रूपसे दु:ख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त। भिक्षुओ इसे प्रज्ञा-बल कहते हैं। भिक्षुओ, ये पाँच शैक्ष-बल हैं। इसलिये भिक्षुओ, ऐसा सीखना चाहिये कि हम शैक्ष-बल श्रद्धा-बलसे युक्त होंगे, हम शैक्ष-बल लज्जा-बलसे युक्त होंगे, हम शैक्ष-बल (पाप–) भीरुता बलसे युक्त होंगे, हम शैक्ष-बल वीर्य-बलसे युक्त होंगे तथा हम शैक्ष-बल प्रज्ञा-बलसे युक्त होंगे। भिक्षुओ, ऐसा ही सीखना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह इसी लोकमें दुखी होता है, परेशान होता है, पश्चातापको प्राप्त होता है, जलनको प्राप्त होता है और यह मान लेना चाहिये कि शरीर छूटनेपर, मृत्युको प्राप्त होनेपर उसकी दुर्गति होती है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु अश्रद्धालु होता है, निर्लज्ज होता है, (पाप–) भीरुता रहित होता है, आलसी होता है तथा प्रज्ञाविहीन होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह इसी लोकमें दुखी होता है, परेशान होता है, पश्चातापको प्राप्त होता है, जलनको प्राप्त होता है और यह मान लेना चाहिये कि शरीर छूटनेपर, मृत्यूको प्राप्त होनेपर उसकी दुर्गति होती है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह इसी लोकमें सुखी होता है, परेशान नहीं होता है, पश्चातापको प्राप्त नहीं होता है, जलनको प्राप्त नहीं होता है और यह मान लेना चाहिये कि शरीर छूटनेपर, मृत्युको प्राप्त होनेपर उसकी सद्गति होती है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, लज्जा-शील होता है, (पाप–) भीरू होता है, प्रयत्नवान् होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह इसी लोकमें सुखी होता है, परेशान नहीं होता है, पश्चातापको प्राप्त नहीं होता है, जलनको प्राप्त नहीं होता है, और यह मान लेना चाहिये कि शरीर छूटनेपर, मृत्यूको प्राप्त होनेपर उसकी सद्गति होती है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं वह लाकर नरकमें डाल दिये गये के समान होता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, लज्जा-रहित होता है, (पाप–) भीरूता-रहित होता है, आलसी होता है तथा प्रज्ञा-रहित होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं वह लाकर नरकमें डाल दिये गयेके समान होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गये के समान होता है। कौनसी पांच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, लज्जा-युक्त होता है, (पाप–) भीरु होता है, अप्रमादी होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दिये गये के समान होता है।

भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु अथवा भिक्षुणी शिक्षाका त्यागकर अभिक्षुपन वा अभिक्षुणीपनके हीन-मार्गकी अनुगामिनी हो जाती है, तो उसकी इसी जन्ममें पाँच प्रकारसे धर्मानुसार निन्दा होने लगती है। कौनसे पाँच प्रकारसे? कुशल-धर्मोंमें तुम्हारी श्रद्धा नहीं थी, कुशल-धर्मोंके प्रति तुम संलग्न भी नहीं थे, कुशल-धर्मोंके प्रति तुम पाप-भीरू भी नहीं थे, कुशल धर्मोंके प्रति तुम वीर्यवान् भी नहीं थे तथा तुम कुशल धर्मोंके प्रति प्रज्ञावान् भी नहीं थे। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु अथवा भिक्षुणी शिक्षाका त्याग कर अभिक्षुपन वा अभिक्षुणीपनके हीन-मार्गकी अनुगामिनी हो जाती है, तो उसकी इसी जन्ममें इन पांच प्रकारसे धर्मानुसार निन्दा होती है। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु वा भिक्षुणी दुःखके साथ भी, दौर्मनस्यके साथ भी, अश्रुमुख रो-रो कर भी परिशुद्ध श्रेष्ठ जीवनका पालन करती है तो उसकी इसी जन्ममें पांच प्रकारसे धर्मानुसार प्रशंसा होती है। कौनसे पाँच प्रकारसे? कुशल-धर्मोंमें तुम्हारी श्रद्धा थी, कुशल धर्मोंके प्रति तुममें लज्जा थी, कुशल-धर्मोंके प्रति (पाप–) भीरू थे, कुशल-धर्मोंके प्रति वीर्यवान् थे, तथा कुशल-धर्मोंके प्रति प्रज्ञावान् थे। भिक्षुओ, यदि कोई भिक्षु वा भिक्षुणी शिक्षाका त्यागकर अभिक्षुपन वा अभिक्षुणीपनके हीन-मार्गकी अनुगामिनी होती है तो उसकी इसी जन्ममें पाँच प्रकारसे प्रशंसा होती है। भिक्षुओ, जबतक कुशल-धर्मोंके प्रति श्रद्धा बनी रहती है तबतक अकुशल-धर्मोंका आगमन नहीं होता; किन्तु भिक्षुओ जब श्रद्धाका अन्तर्धान हो जाता है, अश्रद्धाका प्रादुर्भाव हो जाता है तब अकुशल-धर्मोंका आगमन होता है। भिक्षुओ, जब तक अकुशल-धर्मोंके सम्बन्धमें लज्जा बनी रहती है तब तक अकुशल-धर्मोंका आगमन नहीं होता। जब भिक्षुओ, लज्जाका अन्तर्धान हो जाता है, निर्लज्जपनका प्रादुर्भाव हो जाता है, तब अकुशल-धर्मोंका आगमन होता है। भिक्षुओ, जबतक अकुशल-धर्मोंके प्रति (पाप–) भीरुताका

भाव बना रहता है, तब तक अकुशल-धर्मोंका आगमन नहीं होता, किन्तु भिक्षुओ, जब (पाप–) भीरूताके भावका अन्तर्धान हो जाता है, (पाप–) भीरुताका अभाव प्रकट होता है, तब अकुशल-धर्मोंका आगमन होता है। भिक्षुओ, जब तक कुशल-धर्मोंके प्रति वीर्य-भाव बना रहता है, तब तक अकुशल-धर्मोंका आगमन नहीं होता। भिक्षुओ, जब वीर्य-भावका अन्तर्धान हो जाता है तथा आलस्यका प्रादुर्भाव हो जाता है, तब अकुशल-धर्मोंका आगमन होता है। भिक्षुओ, जब तक कुशल-धर्मोंका, प्रज्ञाका भाव बना रहता है, तबतक अकुशल-धर्मोंका आगमन नहीं होता। जब भिक्षुओ, प्रज्ञाका अन्तर्धान हो जाता है, दुष्टप्रज्ञाका प्रादुर्भाव होता है, तब अकुशल-धर्मोंका आगमन होता है।

भिक्षुओ, अधिकांश प्राणी काम-भोगोंमें आसक्त होते हैं। भिक्षुओ, एक कुल-पुत्र काल-वर्ण बँहगीको छोड़कर घरसे बे-घर हो प्रव्रजित होता है। श्रद्धासे प्रव्रजित होनेके कारण उसे कुछ कहने-सुननेकी आवश्यकता नहीं होती। ऐसा क्यों? भिक्षुओ यौवनावस्थामें कामभोग प्राप्त होते हैं। वे ऐसे-वैसे सभी तरहके होते हैं। भिक्षुओ, जो हीन, मध्यम, प्रणीत काम-भोग होते हैं, सभी काम-भोग ही कहे जाते हैं। भिक्षुओ, जैसे कोई चित लेटा हुआ छोटा बच्चा हो। वह दाईकी असावधानीसे काठ या ढेलेका कोई टुकड़ा मुँहमें डाल ले। वह दाई जल्दी ही उसकी ओर ध्यान दे। जल्दी ही ध्यान दे, उसे जल्दी ही मुँहसे निकाल दे। यदि जल्दी ही उसे मुँहसे न निकाल सके तो बायें हाथसे सिर पकड़कर, दाहिने हाथसे टेढ़ी अँगुली करके, रक्त-सहित भी बाहर निकाल डाले। ऐसा क्यों? इससे कुमारको कष्ट तो होगा ही, नहीं होगा, ऐसा नहीं है। उस, दाईका, जो उस कुमारकी हित-चिन्तक है, हितैषी है, दयालु है तथा अनुकम्पा करने वाली है, यह कर्तव्य है। किन्तु जब वह कुमार बड़ा हो जाता है, समझदार हो जाता है, तब वह दायी उस कुमारकी ओरसे उपेक्षावान् हो जाती है। वह सोचती है कि अब कुमार अपनी संभाल आप रखने लायक हो गया है। अब वह प्रमाद नहीं कर सकता। इसी प्रकार भिक्षुओ, जब तक भिक्षु कुशल-धर्मोंमें श्रद्धावान् नहीं होता, कुशल-धर्मोंमें संलग्न नहीं होता, कुशल-धर्मोंमें (पाप-) भीरू नहीं होता, कुशल-धर्मोंमें वीर्यवान् नहीं होता तथा कुशल-धर्मोंमें प्रज्ञावान् नहीं होता तब तक भिक्षुओ, उस भिक्षुकी संभाल रखनी होती है। किन्तु जब भिक्षुओ भिक्षु कुशल-धर्मोंमें श्रद्धावान् होता है, कुशल-धर्मोंमें संलग्न होता है, कुशल-धर्मोंमें (पाप–) भीरू होता है, कुशल-धर्मोंमें वीर्यवान् होता है, कुशल-धर्मोंमें प्रज्ञावान् होता है, तो हे भिक्षुओ, ऐसे भिक्षुके प्रति मैं उपेक्षावान् हो जाता हूँ। वह भिक्षु आप अपनेको संभाल सकता है। अब वह प्रमाद नहीं कर सकता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता। कौनसी पांच बातें? भिक्षुओ, जो भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता। भिक्षुओ, जो निर्लज्ज होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता। भिक्षुओ, जो भिक्षु (पाप-) भीरू नहीं होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता। भिक्षुओ, जो भिक्षु आलसी होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता। भिक्षुओ, जो भिक्षु दुष्ट-प्रज्ञ होता है, उसका पतन होता है, वह सद्धर्म में प्रतिष्ठित नहीं होता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, उसका पतन नहीं होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। कौनसी पांच बातें? भिक्षुओ, जो भिक्षु श्रद्धावान् होता है, उसका पतन नहीं होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु संलग्न होता है, उसका पतन नहीं होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु (पाप–) भीरू होता है, उसका पतन नहीं होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु प्रयत्नवान् होता है, उसका पतन नहीं होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु प्रज्ञावान् होता है, उसका पतन नहीं होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, उसका पतन नहीं होता, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह सगौरव नहीं होता, वह सप्रतिष्ठा नहीं होता, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता। कौनसी पांच बातें? भिक्षुओ, जो भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, वह सगौरव नहीं होता, वह सप्रतिष्ठा नहीं होता, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता। भिक्षुओ, जो भिक्षु निर्लज्ज होता है. . . .जो भिक्षु (पाप-) भीरू नहीं होता है. . . .जो भिक्षु आलसी होता है . . . . . जो भिक्षु प्रज्ञा-विहीन होता है, वह सगौरव नहीं होता, वह सप्रतिष्ठा नहीं होता, उसका पतन होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित नहीं होता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, उसका पतन नहीं होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। कौनसी पांच बातें? भिक्षुओ, जो भिक्षु श्रद्धावान् होता है, वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, उसका पतन नहीं होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, जो

भिक्षु लज्जा-शील होता है. . . . . जो भिक्षु (पाप–) भीरू होता है. . . . . जो भिक्षु अप्रमादी होता है. . . . जो भिक्षु प्रज्ञावान् होता है, वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, उसका पतन नहीं होता है, वह सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, जो सगौरव नहीं होता है, जो सप्रतिष्ठा नहीं होता है, वह इस धर्ममें उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके अयोग्य होता है। कौनसी पांच बातें ? भिक्षुओ, जो भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, जो सगौरव नहीं होता है, सप्रतिष्ठा नहीं होता है, वह इस धर्म-विनयमें उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके अयोग्य होता है। भिक्षुओ जो भिक्षु निर्लज्ज होता है. . . . जो भिक्षु (पाप–) भीरू नहीं होता है. . . . जो भिक्षु आलसी होता है. . . जो भिक्षु प्रज्ञाविहीन होता है, वह सगौरव नहीं होता है, वह सप्रतिष्ठा नहीं होता है, वह इस धर्म-विनयमें उन्नति, वृद्धि, विपुलता, प्राप्त करनेके अयोग्य होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, वह इस धर्म-विनयमें उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके योग्य होता है। कौनसी पांच बातें ? भिक्षुओ, जो भिक्षु श्रद्धावान् होता है, जो सगौरव होता है, जो सप्रतिष्ठा होता है, वह इस धर्म-विनयमें उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके योग्य होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु लज्जाशील होता है. . . . जो भिक्षु (पाप–) भीरू होता है. . . . . जो भिक्षु अप्रमादी होता है. . . . जो भिक्षु प्रज्ञावान् होता है, वह सगौरव होता है, वह सप्रतिष्ठा होता है, वह इस धर्म-विनयमें उन्नति, वृद्धि, विपुलता प्राप्त करनेके योग्य होता है।

(२) बल-वर्ग

भिक्षुओ, मेरी घोषणा है कि मैंने अश्रुत-पूर्व धर्मोंमें प्रज्ञाकी पराकाष्ठा प्राप्त की है। भिक्षुओ, तथागतके ये पांच तथागत-बल हैं, जिनके होनेसे तथागत प्रथम (–वृषभ)स्थानके अधिकारी हैं, परिषदमें सिंह-गर्जना करते हैं और ब्रह्म (= धर्म) चक्र प्रवर्तित करते हैं। कौनसे पांच ? श्रद्धा-बल, लज्जाबल, (पाप–) भीरूता-बल, वीर्य-बल, तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पांच तथागतके तथागत-बल हैं, जिन बलोंसे युक्त होनेके कारण तथागत प्रथम स्थानके अधिकारी हैं, परिषदमें सिंह-गर्जन करते हैं और ब्रह्म (= धर्म) चक्र प्रवर्तित करते हैं।

भिक्षुओ, ये पांच शैक्ष-बल हैं। कौनसे पांच ? श्रद्धा-बल, लज्जा-बल, (पाप–) भीरूता-बल, वीर्य-बल, तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पांच शैक्ष-बल हैं। भिक्षुओ, इन पांचों शैक्ष-बलोंमें यह जो प्रज्ञा-बल है, यही श्रेष्ठ है, यही संग्रह करने

वाला है, यही एकत्र करने वाला है। भिक्षुओ, जैसे शिखर-वाले भवनमें शिखर ही प्रधान होता है, संग्रह करने वाला होता है, एकत्र करने वाला होता है, इसी प्रकार भिक्षुओ इन पांचों शैक्ष-वलोंमें यह जो प्रज्ञा-बल है, यही श्रेष्ठ है, यही संग्रह करने वाला है, यही एकत्र करने वाला है। इसलिये भिक्षुओ, यही सीखना चाहिये कि हम शैक्ष-बल श्रद्धाबलसे युक्त होंगे, ... लज्जा बल . . . . (पाप—) भीरुता-बल . . . . वीर्य-बल . . . . शैक्ष-वल प्रज्ञा-बलसे युक्त होंगे। भिक्षुओ, इसी प्रकार सीखना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच बल हैं। कौनसे पाँच? श्रद्धा-वल-वीर्य-बल, स्मृति-वल समाधि-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पाँच बल हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच-वल हैं। कौनसे पाँच? श्रद्धा-बल, वीर्य-बल, स्मृति-वल, समाधि-बल तथा प्रज्ञा-वल। भिक्षुओ, श्रद्धा-बल किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक श्रद्धावान् होता है, वह तथागतकी बोधिके प्रति श्रद्धा रखता है, 'वे भगवान् . . . .देवताओं तथा मनुष्योंके शास्ता हैं।' भिक्षुओ, यह श्रद्धा-बल कहलाता है। भिक्षुओ, वीर्य-बल किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक दृढ़-संकल्प होता है, अकुशल धर्मोंका प्रहाण करनेके लिये, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके लिये; सामर्थ्यवान् होता है, दृढ़-पराक्रमी होता है, कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके विषयमें। उसकी हिम्मत बंधी रहती है। भिक्षुओ, यह वीर्य-बल कहलाता है। भिक्षुओ, स्मृति-बल किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक स्मृतिमान् होता है, परं स्मृति-प्रज्ञासे युक्त होता है, चिरकाल पूर्वक की गई, कही गई, बातको याद रखने वाला, अनुस्मरण करने वाला होता है। भिक्षुओ, यह स्मृति-बल कहलाता है। भिक्षुओ, समाधि-बल किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक् काम-वितर्कोंसे पृथक हो. . . .चौथे-ध्यानको प्राप्त हो विहार करता है। भिक्षुओ, इसे समाधि-बल कहते हैं। भिक्षुओ, प्रज्ञा-बल किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक् प्रज्ञावान् होता है, उत्पत्ति-विनाश सम्बन्धी प्रज्ञासे समन्वित, आर्य-प्रज्ञासे युक्त, बींधने वाली प्रज्ञासे युक्त, सम्यक्रूपसे दुःख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त। भिक्षुओ, इसे प्रज्ञा-बल कहते हैं। भिक्षुओ, ये पाँच बल हैं।

भिक्षुओ, ये पांच बल हैं। कौनसे पांच? श्रद्धा-बल, वीर्य-बल, स्मृति-बल, समाधि-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, श्रद्धाबलको कहाँ देखना चाहिये? चार स्रोतापत्ति अंगोंमें श्रद्धा-बलको देखना चाहिये। भिक्षुओ, वीर्य-बल कहाँ देखना चाहिये? चारों सम्यक् प्रधानों (=प्रयत्नों)में वीर्य-बलको देखना चाहिये। भिक्षुओ स्मति-बल कहाँ देखना चाहिये? चारों स्मृति-उपस्थानोंमें स्मृति-वलको देखना

चाहिये। भिक्षुओ, समाधि-बल कहाँ देखना चाहिये ? चारों ध्यानोंमें समाधि-बल देखना चाहिये। भिक्षुओ, प्रज्ञा-बल कहाँ देखना चाहिये ? चारों आर्य-सत्योंमें प्रज्ञा-बल देखना चाहिये। भिक्षुओ, ये पांच बल हैं।

भिक्षुओ, ये पांच बल हैं। कौनसे पांच ? श्रद्धा-बल, वीर्य-बल, स्मृति-बल, समाधि-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पांच बल हैं। भिक्षुओ, इन पांचों बलोंमें यह जो प्रज्ञा-बल है यही श्रेष्ठ है, यही संग्रह करने वाला है, यही एकत्र करने वाला है। भिक्षुओ, जैसे शिखर वाले भवनमें शिखर ही प्रधान होता है, संग्रह करने वाला होता है, एकत्र करने वाला होता है, उसी प्रकार भिक्षुओ, इन पांचों बलोंमें यह प्रज्ञा-बल है, यही श्रेष्ठ है, यही संग्रह करने वाला है, यही एकत्र करने वाला है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह आत्म-हित करनेमें लगा होता है, किन्तु पर-हित करनेमें नहीं। कौनसी पांच बातें ? भिक्षुओ, एक भिक्षु स्वयं शीलवान् होता है, किन्तु दूसरोंको शील-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा नहीं करता; स्वयं समाधिसे युक्त होता है, किन्तु दूसरोंको समाधिसे युक्त होनेकी प्ररणा नहीं करता; स्वयं प्रज्ञावान् होता है, किन्तु दूसरोंको प्रज्ञासे युक्त होनकी प्रेरणा नहीं करता; स्वयं विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त होता है, किन्तु दूसरोंको विमुक्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा नहीं करता; स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होता है, किन्तु दूसरोंको विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होनेकी प्रेरणा नहीं करता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह आत्म-हित करनेमें लगा होता है, किन्तु पर-हित करनेमें नहीं।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह पर-हित करनेमें लगा होता है, किन्तु आत्म-हित करनेमें नहीं। कौनसी पांच बातें ? भिक्षुओ, एक भिक्षु स्वयं शीलवान् नहीं होता है, किन्तु दूसरोंको शील-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं समाधिसे युक्त नहीं होता है, किन्तु दूसरोंको समाधिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं प्रज्ञावान् नहीं होता है, किन्तु दूसरोंको प्रज्ञासे युक्त होनेकी प्रेरण करता है, ; स्वयं विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त नहीं होता है, किन्तु दूसरोंको विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है ; स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त नहीं होता है, किन्तु दूसरोंको विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह परहित करनेमें लगा होता है, किन्तु आत्म-हित करनेमें नहीं।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती है, वह न आत्म-हित करनेम लगा होता है, न परहित करनेमें। कौन सी पांच बातें ? एक भिक्षु न स्वयं शीलवान्

होता है, न दूसरोंको शील-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; न स्वयं समाधिसे युक्त होता है, न दूसरोंको समाधिसे युक्त होने की प्रेरणा करता है; न स्वयं प्रज्ञा-युक्त होता है, न दूसरों को प्रज्ञासे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; न स्वयं विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त होता है, न दूसरोंको विमुक्ति-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है, न स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है, न दूसरोंको विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती है, वह न आत्म-हित करनेमें लगा होता है, न पर-हित करनेमें लगा होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह आत्म-हित करनेमें लगा होता है, तथा परहित करनेमें लगा होता है। कौनसी पांच बातें? एक भिक्षु स्वयं शीलवान् होता है तथा दूसरोंको शील-सम्पत्तिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं समाधिसे युक्त होता है तथा दूसरोंको समाधिसे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं प्रज्ञासे युक्त होता है तथा दूसरोंको प्रज्ञासे युक्त होनेकी प्रेरणा करता है; स्वयं विमुक्ति-युक्त होता है तथा दूसरोंको विमुक्ति-युक्त होनेकी प्रेरणा करता हूँ, स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है तथा दूसरोंको विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-युक्त होनेकी प्रेरणा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह आत्म-हित करनेमें लगा होता है तथा परहित करनेमें लगा होता है।

(३) पंचङ्गिक वर्ग

भिक्षुओ, इसकी सम्भावना नहीं है कि जो भिक्षु गौरवके भावसे रिक्त है, प्रतिष्ठाके भावसे रिक्त है, जिसकी विसदृश चर्या है, वह अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति योग्य-व्यवहार (= आभिसमाचारिक शील) करेगा। इसकी सम्भावना नहीं है कि जो अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति योग्य-व्यवहार नहीं करता, वह शैक्ष-धर्मका पालन करेगा। इसकी सम्भावना नहीं है कि जो शैक्ष-धर्मका पालन नहीं करता, वह शीलोंका पालन करेगा। इसकी सम्भावना नहीं है कि जो शीलोंका पालन नहीं करता वह सम्यक् दृष्टिका लाभ करेगा। इसकी सम्भावना नहीं है कि जो सम्यक्-दृष्टि-प्राप्त नहीं है वह सम्यक्-समाधि लाभ करेगा। भिक्षुओ, इसकी सम्भावना है कि जो भिक्षु गौरवके भावसे युक्त है, प्रतिष्ठाके भावसे युक्त है, जिसकी सदृश चर्या है, वह अपने सब्रह्मचारियों के प्रति योग्य-व्यवहार करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति योग्य व्यवहार करता है, वह शैक्ष-धर्मका पालन करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो शैक्ष-धर्मका पालन करता है, वह शीलोंका पालन करेगा। इसकी सम्भावना

है कि जो शीलोंका पालन करता है, वह सम्यक्-दृष्टिका लाभ करेगा। इसकी सम्भावना है कि जिसे सम्यक्-दृष्टि प्राप्त है, वह सम्यक्-समाधिका लाभ करेगा।

भिक्षुओ, इसकी सम्भावना नहीं है कि जो भिक्षु गौरवके भावसे रिक्त है, प्रतिष्ठाके भावसे रिक्त है, जिसकी विसदृश चर्या है, वह अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति योग्य-व्यवहार (= अभिसमाचारिक शील) करेगा। इसकी सम्भावना नहीं है कि जो अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति योग्य-व्यवहार (= अभिसमाचारिक सील) नहीं करता वह शैक्ष-धर्म की पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना नहीं है कि जो शैक्ष-धर्मकी पूर्ति नहीं करता, वह शील-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना नहीं है कि जो शील-स्कन्धकी पूर्ति नहीं करता, वह समाधि-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना नहीं है कि जो समाधि-स्कन्धकी पूर्ति नहीं करता, वह प्रज्ञा-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। भिक्षुओ, इसकी सम्भावना है कि जो भिक्षु गौरवके भावसे युक्त है, प्रतिष्ठाके भावसे युक्त है, जिसकी सदृश (= अनुकूल) चर्या है वह अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति योग्य व्यवहार (= आभिसमाचारिक शील) करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति योग्य-व्यवहार करता है, वह शैक्ष-धर्मकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो शैक्ष धर्मकी पूर्ति करता है, वह शील-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो शील-स्कन्धकी पूर्ति करता है, वह समाधि-स्कन्धकी पूर्ति करेगा। इसकी सम्भावना है कि जो समाधि-स्कन्धकी पूर्ति करता है, वह प्रज्ञा-स्कन्धकी पूर्ति करेगा।

भिक्षुओ, ये पाँच सोनेकी मिलावटें (= उपक्लेश) हैं, जिन मिलावटोंके कारण सोना न कोमल होता है, न कमाया जा सकने वाला होता है, न प्रभास्वर होता है, टूटने वाला होता है, और न ठीकसे काममें आने लायक होता है। कौनसी पांच ? अयस् (ताम्बा), लोहा, जस्त, रांगा तथा चांदी। भिक्षुओ, ये पांच सोनेकी मिलावटें हैं, जिन मिलावटोंके कारण सोना न कोमल होता है, न कमाया जा सकने वाला होता है, न प्रभास्वर होता है, टूटने वाला होता है और न ठीकसे काममें आने लायक होता है। किन्तु भिक्षुओ, जब सोना इन मिलावटोंसे रहित होता है, तो वह सोना कोमल होता है, कमाया जा सकने वाला होता है, प्रभास्वर होता है, न टूटने वाला होता है और ठीकसे काममें लाया जा सकने वाला होता है। जिस-जिस गहनेके निर्माण की आकांक्षा होती है चाहे अंगूठी हो, चाहे कुंडल हों, चाहे कंठी हो, चाहे सोनेकी माला हो, वह सोना इनके निर्माणमें समर्थ होता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, ये पांच चित्तके मैल हैं, जिन मैलोंसे मलिन होनेके कारण चित्त न कोमल होता है, न कमाया जा सकने वाला

होता है, न प्रभास्वर होता है, टूटने वाला होता है और न आस्रवोंके क्षयके लिये सम्यक् प्रकारसे समाहित होता है। कौनसे पांच ? काम-छन्द, व्यापाद (—क्रोध), आलस्य, उद्धतपन-कौकृत्य तथा विचिकत्सा। भिक्षुओ, ये पांच चित्तके मैल हैं, जिन मैलोंसे मलिन होनेके कारण चित्त न कोमल होता है, न कमाया जा सकने वाला होता है, न प्रभास्वर होता है, टूटने वाला होता है और न आस्रवोंके क्षयके लिये सम्यक्-प्रकारसे समाहित होता है। भिक्षुओ, जब चित्त इन चित्त मलोंसे युक्त होता है, तो चित्त कोमल होता है, कमाया जा सकने वाला होता हैं, प्रभास्वर होता है, न टूटने वाला होता है और आस्रवोंके क्षयके लिये सम्यक् प्रकारसे समाहित होता है। वह अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस-जिस धर्मको साक्षात् (=प्रत्यक्ष) करनेके लियै चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह वहीं उस उस आयतन में सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकांक्षा करता है कि अनेक प्रकारकी ऋद्धियां प्राप्त करे जैसे एकसे अनेक हो सके. . . . ब्रह्मलोक तक उसके शरीरकी गति हो, वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह आकांक्षा करता है कि दिव्य, अमानुषी श्रोत्र-धातुसे दिव्य तथा मानुष दोनों प्रकारके शब्दोंको सुने—दूरके भी तथा समीपके भी—वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह आकांक्षा करता है कि दूसरे प्राणियोंके दूसरे व्यक्तियोंके चित्तको अपने चित्तसे जान ले-सराग चित्त हो तो यह जान ले कि सराग चित्त है, विमुक्त चित्त हो तो यह जान ले कि विमुक्त चित्त है—तो वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह आकांक्षा करता है कि अनेक पूर्वजन्मोंकी बातोंको याद कर लूँ—एक जन्मकी बात, दो जन्मोंकी बात.. . . . इस प्रकार आकार-सहित, उद्देश्य-सहित पूर्व जन्मोंका स्मरण कर लूँ, तो वह वहीं वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह आकांक्षा करता है कि दिव्य, अमानुषी चक्षु धातुसे कर्मानुसार उत्पन्न प्राणियोंको जान लूँ, तो वह वहीं उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता हैं। यदि आकांक्षा करता है आस्रवोंका क्षय कर. . . . साक्षात्कर, प्राप्तकर विहार करे, तो वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, जो दुःशील होता है, जो शीलवान् नहीं होता है, उसका सम्यक् समाधि का आधार जाता रहता है; सम्यक् समाधिके न रहनेपर, सम्यक् समाधिसे रहित होनेपर यथार्थ-ज्ञान-दर्शनका आधार जाता रहता है; यथार्थ-ज्ञान-दर्शनके न रहनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शन से रहित होनेपर निर्वेद-वैराग्य का आधार जाता रहता है; निर्वेद-वैराग्य के न रहने पर, निर्वेद वैराग्यसे रहित हो जानेपर विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनका

आधार जाता रहता है। जैसे भिक्षुओ, यदि वृक्षकी शाखायें और पत्ते न हों तो उसकी पपड़ी भी पूर्णताको प्राप्त नहीं होती, उसकी छाल भी पूर्णताको प्राप्त नहीं होती, फेग्गु (?) भी पूर्णताको प्राप्त नहीं होती, सार भी पूर्णताको प्राप्त नहीं होता, इसी प्रकार भिक्षुओ, जो दुःशील होता है, जो शीलवान् नहीं होता है उसका. . . विमुक्ति ज्ञान-दर्शनका आधार जाता रहता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो शीलवान् होता है, उसका सम्यक् समाधिका आधार बना रहता है; सम्यक् समाधिके रहनेपर, सम्यक् समाधिसे युक्त होनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहता है, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनके रहनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होनेपर, निर्वेद-वैराग्यका आधार बना रहता है।

निर्देव-वैराग्यके रहनेपर, निर्वेद-वैराग्यसे युक्त होनेपर, विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहता है। जैसे भिक्षुओ, यदि वृक्षकी शाखायें और पत्ते हों तो उसकी पपड़ी भी पूर्णताको प्राप्त होती है, उसकी छाल भी पूर्णताको प्राप्त होती है, फेग्गु भी पूर्णताको होती है, सार भी पूर्णताको प्राप्त होता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो शीलवान् होता है...... विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहता है।

भिक्षुओ, जो सम्यक्-दृष्टि इन पाँच बातोंसे अनुगृहीत (=युक्त) होती है, उसका फल चित्तकी विमुक्ति होता है, उसका शुभ-परिणाम चित्तकी विमुक्ति होता है, उसका फल प्रज्ञाकी विमुक्ति होता है, उसका शुभ-परिणाम प्रज्ञाकी विमुक्ति होता है। कौन-सी पाँच बातोंसे? भिक्षुओ, सम्यक्-दृष्टि शीलसे अनुगृहीत होती है, श्रुत (=ज्ञान) से अनुगृहीत होती है, साकच्छा (=धर्म-चर्चा) से अनुगृहीत होती है, शमथ (=चित्तकी भावना) से अनुगृहीत होती है तथा विदर्शना (=प्रज्ञाकी भावना) से अनुगृहीत होती है। भिक्षुओ, इन पाँच बातोंसे अनुगृहीत सम्यक्-दृष्टिका फल होता है चित्तकी विमुक्ति; शुभ-परिणाम होता है चित्तकी विमुक्ति; फल होता है प्रज्ञाकी विमुक्ति; शुभ-परिणाम होता है प्रज्ञाकी विमुक्ति।

भिक्षुओ, ये पाँच विमुक्ति-क्षेत्र (=आयतन) हैं, यदि भिक्षु इन पाँच विमुक्ति-क्षेत्रोंमें अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अ-विमुक्त होता है तो विमक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हों तो क्षयको प्राप्त हो जाते हैं, यदि अनुपम योग-क्षेम (=निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षुको या तो स्वयं शास्ता अथवा अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी उपदेश देते हैं। जैसे-जैसे उसे वह उपदेश दिया-जाता है वैसे-वैसे वह उसके अर्थोंका तथा उसके अन्तर्निहित

धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोदको प्राप्त होता है। प्रमुदित हो आनन्दको प्राप्त होता है। आनन्दित होनेसे (नाम–) कायको शान्ति प्राप्त होती है। शान्ति होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह पहला विमुक्ति-क्षेत्र है, जिसमें यदि भिक्षु अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, कोशिश करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अ-विमुक्त होता है, तो वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हों, तो क्षयको प्राप्त हो जाते हैं, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षुको न तो स्वयं शास्ता, न अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी ही उपदेश देते हैं, बल्कि वह यथा-श्रुत, यथा-स्मृत विधिसे दूसरोंको धर्मो-पदेश देता है। जैसे-जैसे वह उपदेश देता है वैसे-वैसे वह उसके अर्थों तथा उसके अन्तर्निहित धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोद को प्राप्त होता है। प्रमुदित हो आनन्दको प्राप्त होता है। आननदित होनेसे (नाम–) कायको शान्ति प्राप्त होती है। शान्ति होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह दूसरा विमुक्ति-क्षेत्र है जिसमें यदि भिक्षु, अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है तो वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हों तो क्षयको प्राप्त हो जाते हैं, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षुको न तो स्वयं शास्ता, न अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी ही उपदेश देते हैं, न वह यथा-श्रुत यथा-स्मृत विधिसे दूसरोंको विस्तार-पूर्वक उपदेश ही देता है, बल्कि वह यथा-श्रुत यथा-स्मृत विधिसे दूसरोंके साथ मिलकर धर्मका पाठ (= सज्झायन) ही करता है। भिक्षुओ, जैसे-जैसे वह भिक्षु यथा-श्रुत तथा यथा-स्मृत विधिसे दूसरोंके साथ मिलकर धर्मका पाठ करता है, वैसे-वैसे वह उसके अर्थों तथा उसके अन्तर्निहित धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोदको प्राप्त होता है। प्रमुदित हो, आनन्दको प्राप्त होता है। आनन्दित होनेसे (नाम–) कायको शान्ति प्राप्ति होती है। शान्ति-लाभ होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह तीसरा विमुक्ति-क्षेत्र है, जिसमें यदि भिक्षु अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है तो वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हों तो क्षयको प्राप्त हो जाते हैं, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षुको न तो स्वयं शास्ता, न अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी ही उपदेश देते हैं, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' विधिसे दूसरोंको उपदेश ही देता है, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' विधिसे दूसरोंके साथ मिलकर धर्मका पाठही करता है, बल्कि 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' धर्मके बारेमें चित्तसे विचार करता है, मनन करता है, परीक्षण करता है। भिक्षुओ, जैसे-जैसे वह भिक्षु 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' धर्मके बारेमें चित्तसे विचार करता है, मनन करता है, परीक्षण करता है, वैसे-वैसे वह उसके अर्थों तथा उसके अन्तर्निहित धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोदको प्राप्त होता है। प्रमुदित हो आनन्दको प्राप्त होता है। आनन्दित होनेसे (नाम–) कायको शान्ति प्राप्त होती है। शान्ति-लाभ होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह चौथा विमुक्ति-क्षेत्र है जिसमें यदि भिक्षु अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है तो वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हों तो क्षयको प्राप्त हो जाते हैं, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षुको न तो स्वयं शास्ता, न अन्य कोई गौरव-भाजन सब्रह्मचारी ही उपदेश देते हैं, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' विधिसे दूसरोंको उपदेश ही देता है, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' विधिसे दूसरोंके साथ मिलकर धर्मका पाठ ही करता है, न वह 'यथा-श्रुत यथा-स्मृत' धर्मके बारेमें चित्तसे विचार ही करता है, मनन ही करता है, परीक्षण ही करता है, बल्कि उसने किसी न किसी समाधि-निमित्तको सम्यक् प्रकार ग्रहण किया होता है, सम्यक् प्रकार मनमें किया होता है, सम्यक् प्रकार धारण किया होता है, सम्यक् प्रकार प्रज्ञासे बींधा हुआ होता है। भिक्षुओ, जैसे जैसे वह भिक्षु किसी न किसी समाधि-निमित्तको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है, सम्यक् प्रकार मनमें करता है, सम्यक् प्रकार धारण करता है तथा सम्यक् प्रकार प्रज्ञासे बींधता है, वैसे वैसे वह उसके अर्थों तथा उसके अन्तर्निहित धर्मका ज्ञान प्राप्त करता है। उससे वह मोदको प्राप्त होता है। प्रमुदित हो आनन्दको प्राप्त होता है। आनन्दित होनेसे (नाम–) कायको शान्तिकी प्राप्ति होती है। शान्तिकी प्राप्ति होनेसे सुखकी प्राप्ति होती है। सुखी होनेसे चित्त समाहित होता है। भिक्षुओ, यह पाँचवाँ विमुक्ति-क्षेत्र है, जिसमें यदि भिक्षु अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो साधना करता हुआ विहार करता है तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है वह विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हों तो क्षयको प्राप्त हो जाते हैं, यदि अनुपम योग-क्षेम

(= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है। भिक्षुओ, ये पाँच विमुक्ति क्षेत्र हैं, यदि भिक्षु इन पाँच विमुक्ति-क्षेत्रोंमें अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, साधना करता हुआ विहार करता है, तो यदि उसका चित्त अविमुक्त होता है तो विमुक्त हो जाता है, यदि आस्रव क्षीण न हुए हों तो क्षयको प्राप्त हो जाते हैं, यदि अनुपम योग-क्षेम (= निर्वाण) अनुत्पन्न हो तो उसकी प्राप्ति हो जाती है।

भिक्षुओ, असीम, सम्पूर्ण, स्मृतियुक्त, समाधिकी भावना (= अभ्यास) करो। भिक्षुओ, असीम, सम्पूर्ण, स्मृतियुक्त, समाधिकी भावना करनेसे व्यक्तिगत रूपसे पाँच ज्ञानोंकी प्राप्ति होती है। कौनसे पाँच ? यह समाधि वर्तमानमें भी सुखद है और भविष्यमें भी सुख देनेवाली है, व्यक्तिगत रूपसे इस ज्ञानकी प्राप्ति होती है। यह समाधि आर्य-समाधि है, अ-भौतिक है, व्यक्तिगत रूपसे उस ज्ञानकी प्राप्ति होती है। यह समाधि श्रेष्ठ-पुरुष-सेवित है, व्यक्तिगत रूपसे इस ज्ञानकी प्राप्ति होती है। यह समाधि शान्त है, प्रणीत है, शमन-प्राप्त है, एकाग्रता-प्राप्त है तथा सास्रव-समाधिकी तरहसे संस्कारोंका निग्रह करने मात्रसे अप्राप्त है, व्यक्तिगत रूपसे इस ज्ञानकी प्राप्ति होती है। मैं स्मृतिमान होकर इस समाधि-अवस्थाको प्राप्त होता हूँ, स्मृतिमान् होकर इस समाधि-अवस्थासे उठता हूँ, व्यक्तिगत रूपसे इस ज्ञानकी प्राप्ति होती है।

भिक्षुओ, असीम, सम्पूर्ण, स्मृतिमुक्त समाधिकी भावना (= अभ्यास) करो। भिक्षुओ, असीम, सम्पूर्ण, स्मृतियुक्त समाधिकी भावना करनेसे व्यक्तिगत रूपसे पाँच ज्ञानोंकी प्राप्ति होती है।

भिक्षुओ, मैं पाँच अंगोंवाली आर्य सम्यक् समाधिकी देशना करता हूँ। इसे सुनो। अच्छी प्रकार मनमें धारण करो। कहता हूँ। इन भिक्षुओंने भगवान्-को प्रत्युत्तर दिया—"भन्ते! बहुत अच्छा।" भगवान्ने इस प्रकार कहा—भिक्षुओ, पाँच अंगों वाली आर्य सम्यक् समाधिकी भावना (= अभ्यास) कौन-सी है ? भिक्षुओ, भिक्षु काम-भोगोंसे पृथक हो, अकुशल-धर्मोंसे पृथक हो, प्रथम-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह इस कायको एकान्त-वाससे उत्पन्न प्रीति-सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है; उसके सारे शरीरका कोई भी हिस्सा एकान्त-जन्य प्रीति-सुखसे अस्पृष्ट नहीं रहता।

भिक्षुओ, जैसे कोई होशियार नाई (= नहलाने वाला) हो वा उसका शिष्य हो और वह काँसेके थालमें स्नान-चूर्ण डालकर, पानी मिला मिलाकर उसे साने। वह स्नान-पिण्डी जलसे सानी जानेके कारण, जलसे सिक्त होनेके कारण, भीतर-बाहर

पानीसे स्निग्ध होनेके कारण इधर-उधर चूती नहीं है। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु इस कायको एकान्त-वाससे उत्पन्न प्रीति-सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके सारे शरीरका कोई भी हिस्सा एकान्त-जन्य प्रीति-सुखसे अस्पृष्ट नहीं होता। भिक्षुओ, पाँच-अंग वाली आर्य-सम्यक् समाधिकी यह प्रथम भावना है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु वितर्क-विचारोंका उपशमन कर ..... दूसरे ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह इस कायको समाधिसे उत्पन्न प्रीति-सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके सारे शरीरका कोई भी हिस्सा समाधि-जन्य प्रीति-सुखसे अस्पृष्ट नहीं रहता।

भिक्षुओ, जैसे पानीका तालाब हो, जिसके अन्दर ही पानीका सोता हो, उसमें न पूर्व दिशासे पानीके आनेका रास्ता हो, न पश्चिम दिशासे पानीके आनेका रास्ता हो, न उत्तर दिशासे पानीके आनेका रास्ता हो तथा न दक्षिण दिशासे पानीके आनेका रास्ता हो; और देव अच्छी तरहसे समय समयपर बरसे। उस तालाबमेंसे पैदा होने वाली शीतल-जल धारा उसी तालाबको शीतल जलसे सिक्त कर दे, भर दे, भरपूर कर दे, उस तालाबका कोई भी हिस्सा शीतल-जलसे अस्पृष्ट न रहे। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु इस कायको समाधिसे उत्पन्न प्रीति-सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके सारे शरीरका कोई भी हिस्सा समाधि-जन्य प्रीति-सुखसे अस्पृष्ट नहीं रहता। भिक्षुओ, पाँच अंग वाली आर्य सम्यक् समाधिकी यह दूसरी भावना है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु प्रीतिसे भी वैराग्य प्राप्त कर .... तीसरे ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह इस कायको प्रीति-रहित सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके शरीरका कोई भी हिस्सा प्रीति-रहित सुखसे अस्पृष्ट नहीं होता।

भिक्षुओ, जैसे उत्पल हो, पद्म हो वा पुण्डरीक हो और वह पानीमें उत्पन्न हुआ हो, पानीमें बढ़ा हो, पानीसे बाहर न निकला हो, अन्दर ही अन्दर पोषित हुआ हो, वह सिरसे पाँव तक, शीतल जलसे सिक्त हो,परिसिक्त हो,भरपूर हो,परिपूर्ण हो; उस उत्पल,पद्म वा पुण्डरीकका कोई हिस्सा ऐसा न हो जो शीतल जलसे अस्पृष्ट हो; इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु इस कायको प्रीति-रहित सुखसे सिक्त कर लेता है, अच्छी तरह सिक्त कर लेता है, भर लेता है, भरपूर कर लेता है, उसके शरीरका कोई भी

हिस्सा प्रीति-रहित सुखसे अस्पृष्ट नहीं होता। भिक्षुओ, पाँच अंग वाली आर्य सम्यक् समाधिकी यह तीसरी भावना है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु सुखका प्रहाण कर...... चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। वह इस कायको स्वच्छ, परिशुद्ध चित्तसे युक्त कर बैठा हुआ होता है। उसके शरीरका कोई भी हिस्सा स्वच्छ, परिशुद्ध चित्तसे अस्पृष्ट नहीं होता।

भिक्षुओ, जैसे कोई आदमी स्वच्छ वस्त्रसे सिर ढके बैठा हो। उसके शरीरका कोई हिस्सा ऐसा न हो जो स्वच्छ, परिशुद्ध वस्त्रसे ढका न हो। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु इस कायको स्वच्छ, परिशुद्ध चित्तसे युक्त कर बैठा हुआ होता है। उसके शरीरका कोई भी हिस्सा स्वच्छ, परिशुद्ध चित्तसे अस्पृष्ट नहीं होता है। भिक्षुओ, पाँच अंग वाली आर्य-सम्यक् समाधिकी यह चौथी भावना है।

फिर भिक्षुओ, भिक्षु द्वारा प्रत्येवक्षण-निमित्त सुगृहीत होता है, भली प्रकार मनमें स्थिर किया होता है, भली प्रकार धारणा किया हुआ होता है—प्रज्ञा द्वारा बींधा हुआ। जैसे कोई एक किसी दूसरेकी प्रत्यवेक्षणा करे, खड़ा हुआ आदमी बैठे हुए आदमीकी प्रत्यवेक्षणा (= देख-भाल) करे, अथवा बैठा हुआ आदमी लेटे हुए आदमीकी प्रत्यवेक्षणा करे। इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु द्वारा प्रत्यवेक्षण-निमित्त सुगृहीत होता है, भली प्रकार मनमें स्थिर किया होता है, भली प्रकार धारण किया हुआ होता है, प्रज्ञा द्वारा बींधा हुआ। भिक्षुओ, पाँच अंग वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी यह पाँचवीं भावना है।

भिक्षुओ, इस प्रकार पाँच अंगों वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी भावना (= अभ्यास) करनेसे, इस प्रकार अभ्यास बढ़ानेसे, वह अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस जिस धर्मको साक्षात् (= प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जैसे कोई पानीकी चाटी किसी आधारपर रखी हो; पानीसे भरी हुई, किनारे तक भरी हुई, लबालब भरी हुई। उस चाटीको एक बलवान आदमी किसी भी ओरसे झुकाये, उसमेंसे पानी आ जाय। "भन्ते! ऐसा ही है।" इसी प्रकार भिक्षुओ, इस तरह पाँचों अंगों वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी भावना (= अभ्यास) करनेसे, इस प्रकार अभ्यास बढ़ानेसे, वह अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस जिस धर्मको साक्षात् (= प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह

वहीं उस उस आयतनमें सफलता को प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जैसे समतलपर कोई चतुष्कोण पुष्कारिणी हो, उसके चारों ओर बांध बंधा हो। वह पानीसे भरी हो, किनारे तक भरी हो, लबालब भरी हो। तब कोई बलवान् आदमी, जहाँ जहाँसे भी बाँधको तोड़े, वहीं वहींसे पानी आ जाय। "भन्ते! ऐसा ही है।" इसी प्रकार भिक्षुओ, इस तरह पाँचों अंगों वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी भावना (=अभ्यास) करनेसे, इस प्रकार अभ्यास बढ़ानेसे, अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस जिस धर्मको साक्षात् (=प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, जैसे अच्छी भूमिपर, चौरस्तेपर श्रेष्ठ रथ खड़ा हो, जुता हुआ हो, घोड़ोंसे युक्त हो, चाबुक सहित हो। उस रथपर दक्ष रथवान्, अश्वोंका दमन करने वाला सारथी सवार हो। वह बायें हाथमें घोड़ोंकी लगाम ले और दाहिने हाथमें चाबुक ले, घोड़ोंको जिधर चाहे, जैसी गतिसे ले जाये और रोके। इसी प्रकार भिक्षुओ, इस तरह पाँचों अंगों वाली आर्य सम्यक्-समाधिकी भावना (=अभ्यास) करनेसे, इस प्रकार अभ्यास बढ़ानेसे अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस-जिस धर्मको साक्षात् (=प्रत्यक्ष) करनेके लिये चित्तको उस ओर नियुक्त करता है, वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकांक्षा करता है कि अनेक प्रकारकी ऋद्धियाँ प्राप्त करे जैसे एक से अनेक हो सके....ब्रह्म-लोक तक उसके शरीरकी गति हो, वह वहीं उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकांक्षा करता है कि दिव्य, अमानुषी श्रोत-धातुसे दिव्य तथा मानुष दोनों प्रकारके शब्दोंको सुने—दूरके भी तथा समीपके भी—वह वहीं उस उस आयतनमें, सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकांक्षा करता है कि दूसरे प्राणियोंके, दूसरे व्यक्तियोंके चित्तको अपने चित्तसे जान ले—सराग चित्त हो तो यह जान ले कि सराग चित्त है, विमुक्त-चित्त हो, तो यह जान ले कि विमुक्त-चित्त है—तो वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि वह यह आकांक्षा करता है कि अनेक पूर्व जन्मोंकी बातको याद कर लूँ—एक जन्मकी बात, दो जन्मोंकी बात, इस प्रकार आकार-सहित, उद्देश्य-सहित पूर्व जन्मोंका स्मरण कर लूँ, तो वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त करता है। यदि वह यह आकांक्षा करता है कि दिव्य, अमानुषी चक्षु धातुसे कर्मानुसार उत्पन्न प्राणियोंको जान लूँ, तो वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है। यदि आकांक्षा करता है, आस्रवोंका क्षय कर....साक्षात् कर, प्राप्त कर, विहार करे, तो वह वहीं उस उस आयतनमें सफलताको प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, चंक्रमण (= घूमते हुए भावना) करनेके पाँच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? रास्ता चलनेमें समर्थ होता है; प्रधान (= प्रयत्न) करनेमें समर्थ होता है; निरोगी शरीर वाला होता है, चखा, खाया, पिया, स्वाद लया—सब भली प्रकार हजम हो जाता है; चंक्रमण करते हुए प्राप्त चित्तकी एकाग्रता चिरस्थायी होती है। भिक्षुओ, चंक्रमण करनेके पाँच शुभ-परिणाम होते हैं।

एक समय महान् भिक्षु संघके साथ भगवान् कोशल जनपदमें चारिका करते समय, जहाँ इच्छानंगल नामका कोशल जनपद वासियोंका ब्राह्मण-ग्राम था, वहाँ पहुँचे। वहाँ भगवान् इच्छानंगलमें, इच्छानंगलके वन-खण्डमें विहार करते थे। इच्छानंगलके ब्राह्मण-गृहपतियोंने सुना—शाक्यकुल-प्रव्रजित शाक्यपुत्र श्रमण गौतम इच्छानंगल पधारे हैं, इच्छानंगलके वन-खण्डमें। उन भगवान् गौतमका यश, कीर्ति सुनी जाती है कि वह भगवान् अर्हत् हैं, सम्यक् सम्बुद्ध हैं, विद्या तथा आचरणसे युक्त हैं, सुगत हैं, लोकके जानकार हैं, अनुपम हैं, (दुष्ट-) पुरुषोंका दमन करने वाले सारथी हैं, देवताओं तथा मनुष्योंके शास्ता हैं। वह बुद्ध भगवान् हैं। वे देव-सहित मार-सहित ब्रह्मा-सहित इस लोकको, श्रमणों—ब्राह्मणों सहित तथा देवताओं और (अन्य) मनुष्यों सहित इस जनताको स्वयं जानकर, साक्षात परिचय प्राप्त कर, उपदेश देते हैं। वे आदिमें कल्याणकारक, मध्यमें कल्याणकारक, अन्तमें कल्याणकारक, अर्थ-सहित व्यंजन-सहित (-शब्दों सहित) सम्पूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्मचर्य (= श्रेष्ठ जीवन) का उपदेश करते हैं। इस प्रकारके अर्हतोंका दर्शन करना बड़ा अच्छा होता है।

तब इच्छानंगलके वे ब्राह्मण-गृहपति उस रात्रिका अन्त होनेपर खाने-पीनेकी बहुत-सी सामग्री ले जहाँ इच्छानंगल वन-खण्ड था, वहाँ पहुँचे। वहाँ पहुँच कर वे द्वारकोष्ठ (?) से बाहर ठहरे। वे बहुत जोर-शोरसे हल्ला मचा रहे थे।

उस समय आयुष्मान् नागित भगवान् बुद्धके उपस्थापक थे। भगवान्ने आयुष्मान् नागितको सम्बोधित किया—"नागित! ये कौन हैं जो इतना हल्ला मचा रहे हैं, मानों मछुवै मच्छी बेच रहे हों?" "भन्ते! ये इच्छानंगलके ब्राह्मण गृहपति हैं। ये भिक्षु-संघ तथा आपके लिये ही बहुत सी खाद्य-भोज्य सामग्रीके लेकर द्वारा-कोष्ठसे बाहर खड़े हैं।"

"नागित! मुझे यश (= ऐश्वर्य) की अपेक्षा नहीं। नागित! मुझे ऐश्वर्य नहीं चाहिये। नागित! इस अशुद्धि-पूर्ण सुख, इस आलस्य पूर्ण सुख, इस लाभ-सत्कार-प्रशंसा सुखकी उसीको इच्छा हो जिसे यह नैष्कम्य-सुख, एकान्त-वास-सुख, उपशमन-सुख तथा सम्बोधि-सुखका बिना कष्टके लाभ न हो, बिना दुःखके लाभ

न हो, जिस नैष्क्रम्य-सुख, एकान्त-वास सुख, उपशमन-सुख तथा सम्बोधि-सुखका मुझे बिना कष्टके, बिना कठिनाईके, बिना दुःखके लाभ है।"

"भन्ते! भगवान्! इसे स्वीकार करें। सुगत! इसे स्वीकार करें। यह स्वीकार करनेका समय है। जहाँ जहाँ अब भन्ते भगवान् जायेंगे, उधर उधर ही अब ब्राह्मण-गृहपति, निगमके लोग तथा जनपदके लोग झुक जायेंगे। भन्ते! जैसे जोरकी वर्षा होनेपर जिधर जिधर ढलवान होता है, उधर उधर ही पानी जाता है, उसी प्रकार भन्ते! जहाँ जहाँ भी अब भगवान् जायेंगे, उधर-उधर ही अब ब्राह्मण-गृहपति, निगमके लोग तथा जनपदके लोग झुक जायेंगे। ऐसा क्यों? भगवान्के शील तथा प्रज्ञाकी ऐसी ही ख्याति है।"

"नागित! मुझे यश (= ऐश्वर्य) की अपेक्षा नहीं। नागित! मुझे ऐश्वर्य नहीं चाहिये। नागित! इस अशुचि-पूर्ण सुख, इस आलस्य-पूर्ण सुख, इस लाभ-सत्कार-प्रशंसा सुखकी उसीको इच्छा हो जिसे यह नैष्क्रम्य-सुख, एकान्त-वास सुख, उपशमन-सुख तथा सम्बोधि-सुखका बिना कष्टके लाभ न हो, बिना कठिनाईके लाभ न हो, बिना दुःखके लाभ न हो, जिस नैष्क्रम्य-सुख, एकान्त-वास-सुख, उपशमन-सुख तथा सम्बोधि-सुखका मुझे बिना कष्टके, बिना कठिनाईके, बिना दुःखके लाभ है। नागित! जो चखा जाता है, जो खाया जाता है, जो पिया जाता है, जिसका स्वाद लिया जाता है उसका मल-मूत्र ही बन जाता है; यही उसकी निष्पत्ति है। नागित! प्रियोंका अन्यथात्व हो जाता है और उससे शोक, रोने-पीटने, दुःख, दौर्मनस्यकी उत्पत्ति होती है, यही उसकी निष्पत्ति है। नागित! जो अशुभ-निमित्तकी भावना में लगा होता है, उसकी राग उत्पन्न करने वाले वांछित विषयोंके प्रति अरुचि हो जाती है—यही उसकी निष्पत्ति है। नागित! छह आयतनोंके विषयोंके प्रति अनित्य भावना करनेसे, उनके प्रति प्रतिकूल भावना पैदा हो जाती है—यही उसकी निष्पत्ति है। नागित! पाँचों उपादान स्कन्धोंकी उत्पत्ति और विनाश पर विचार करते रहनेसे उपादान-स्कन्धोंके प्रति प्रतिकूल भावकी उत्पत्ति हो जाती है—यही उसकी निष्पत्ति है।

(४) सुमना-वर्ग

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिन्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। उस समय पाँच सौ रथों और पाँच सौ राजकुमारियोंसे घिरी हुई सुमना राजकुमारी जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहूंची। पहुंचकर, भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठी। एक ओर बैठी हुई सुमना राजकुमारीने भगवान्से यह प्रश्न

पूछा–"भगवान्‌के दो श्रावक हों, जिनकी श्रद्धा बराबर हो, शील बराबर हो, प्रज्ञा बराबर हो, किन्तु दोनोंमेंसे एक दाता हो और दूसरा दाता न हो; शरीर छूटनेपर, मरने पर वे दोनों स्वर्ग-लोकमें देवता होकर उत्पन्न हों। भन्ते! उन दोनोंमें एक दूसरेकी अपेक्षासे कुछ विशेषता, कुछ भेद होगा वा नहीं?"

"विशेषता होगी," भगवान् ने कहा, "सुमने! जो दाता होता है, देवता होनेपर वह अदाताकी अपेक्षा पाँच बातोंमें विशिष्ट होता है––दिव्य-आयुकी दृष्टिसे, दिव्य-वर्णकी दृष्टिसे, दिव्य-सुखकी दृष्टिसे, दिव्य-यशकी दृष्टिसे तथा दिव्य-आधिपत्यकी दृष्टिसे। सुमने! जो दाता होता है, देवता होनेपर वह अदाताकी अपेक्षा इन पाँचों बातोंमें विशिष्ट होता है।"

"भन्ते! यदि वे देव-योनिसे च्युत होकर इस मर्त्य-लोकमें जन्म ग्रहण करें तो मनुष्य होनेपर भी उन दोनोंमें एक दूसरेकी अपेक्षासे कुछ विशेषता होगी, कुछ भेद होगा या नहीं?"

"विशेषता होगी," भगवान्‌ने कहा," सुमने! जो दाता होता है, मनुष्य होनेपर वह अदाताकी अपेक्षा पाँच बातोंमें विशिष्ट होता है—मानुषी-आयुकी दृष्टिसे, मानुषी-वर्णकी दृष्टिसे, मानुषी-सुखकी दृष्टिसे, मानुषी-यशकी दृष्टिसे तथा मानुषी-आधिपत्यकी दृष्टिसे। सुमने! जो दाता होता है, मनुष्य होनेपर वह अदाताकी अपेक्षा इन पाँच बातोंमें विशिष्ट होता है।

"भन्ते! यदि वे दोनों घरसे बे-घर हो, प्रब्रजित हो जायें, तो प्रब्रजित होनेपर भी उन दोनोंमें एक दूसरेकी अपेक्षासे कुछ विशेषता होगी, कुछ भेद होगा, या नहीं?"

"विशेषता होगी" भगवानने कहा, "सुमने! जो दाता होगा, प्रब्रजित होनेपर, वह अदाताकी अपेक्षा पाँच बातोंमें विशिष्ट होगा––अधिक करके वह प्रार्थना किये जानेपर ही चीवरका उपभोग करेगा, बिना प्रार्थनाके कम ही; अधिक करके वह प्रार्थना किये जानेपर ही पिण्डपात (= भिक्षा) का उपभोग करेगा, बिना प्रार्थनाके कम ही; अधिक करके वह प्रार्थना किये जानेपर ही शयनासनका उपभोग करेगा, बिना प्रार्थनाके कम ही; अधिक करके वह प्रार्थना किये जानेपर ही रोगीकी आवश्य-कताओं-भैषज्य-पीरष्कारका उपभोग करेगा, बिना प्रार्थनाके कम ही; जिन सहब्रह्म-चारियोंके साथ वह रहता है वह अधिकतया उसके अनुकूल ही शारीरिक-व्यवहार करते हैं, प्रतिकूल कम ही; अधिकतया उसके अनुकूल ही वाणीका व्यवहार करते हैं,

प्रतिकूल कम ही; अधिकतया उसके अनुकूल मानसिक व्यवहार करते हैं, प्रतिकूल कम ही; अधिकतया अच्छे ही उपहार लाते हैं, बुरे कम ही। सुमने! जो दाता होता है, प्रव्रजित होनेपर, वह अदाताकी अपेक्षा पाँच बातोंमें विशिष्ट होता है।"

"भन्ते! यदि वे दोनों अर्हत्व लाभकर लें, तो अर्हत् होनेपर भी उन दोनोंमें एक दूसरेकी अपेक्षासे कुछ विशेषता होगी, कुछ भेद होगा या नहीं?"

"सुमने! इस स्थितिमें उन दोनोंमें कोई भेद रहता है, मैं नहीं कहता, एक की विमुक्ति तथा दूसरेकी विमुक्तिकी स्थितिमें।"

"भन्ते! यह आश्चर्यकर है। भन्ते! यह अद्भुत है। दान देना योग्य ही है, पुण्य करना योग्य ही है, क्योंकि देवयोनि प्राप्त होनेपर भी पुण्य उपकारक होते हैं तथा प्रव्रजित होनेपर भी पुण्य उपकारक होते हैं।"

"सुमने! ऐसा ही है। सुमने! ऐसा ही है। दान देना योग्य ही है पुण्य करना योग्य ही है, क्योंकि देव-योनि प्राप्त होनेपर भी पुण्य उपकारक होते हैं, मनुष्य-योनि प्राप्त होनेपर भी पुण्य उपकारक होते हैं तथा प्रव्रजित होनेपर भी पुण्य उपकारक होते हैं।"

शास्ताने यह कहकर, आगे यह कहा—

यथापि चन्दो विमलो गच्छं आकासधातुया,
सब्बे तारागणे लोके आभाय अतिरोचति॥
तथेव सीलसम्पन्नो सद्धो पुरिसपुग्गलो,
सब्बे मच्छरिनो लोके चागेन अतिरोचति॥
यथापि मेघो थनयं विज्जुमाली सतक्ककु,
थलं निन्नं च पूरेति अभिवस्सं वसुन्धरं॥
एवं दस्सनसम्पन्नो सम्मासम्बुद्धसावको,
मच्छरिं अधिगण्हाति पञ्चठानेहि पण्डितो॥
आयुना, यससा चेव वण्णेन च सुखेन च,
सचे भोगपरिब्बुळहो पेच्च सग्गे च मोदति॥

[जिस प्रकार आकाश-धातुमें जाता हुआ चन्द्रमा अपनी आभासे सभी तारा-गणोंको आभा-हीन कर देता है, उसी प्रकार शीलवान् तथा श्रद्धावान् आदमी अपने त्यागसे सभी कंजूस लोगोंको आभा-हीन कर देता है।

जिस प्रकार बिजली-सहित चारों दिशाओंमें फैला हुआ, गरजना करने वाला बादल पृथ्वीपर बरसता हुआ तमाम नीची जगहोंको भर देता है, उसी प्रकार सम्यक्-

दृष्टि वाला सम्यक्सम्बुद्ध-श्रावक पाँच बातोंको लेकर कंजूस आदमीसे बढ़ जाता है—आयुको लेकर, यशको लेकर, वर्णको लेकर, सुखको लेकर तथा आधिपत्यको लेकर। वह स्वर्गमें आनन्दित होता है ।]

एक समय भगवान राजगृहमेंके वेळुवनके कलन्दक निवाप (= गिलहरियोंके निवास स्थान) में विहार करते थे। तब पाँच सौ रथों तथा पाँच सौ कुमारियोंसे घिरी हुई चुन्दी राजकुमारी जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँच, भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठी। एक ओर बैठी हुई चुन्दी राजकुमारीने भगवान्से पूछा—

"भन्ते ! हमारे चुन्द राजकुमारका यह कहना है जो कोई स्त्री हो अथवा पुरुष यदि बुद्धकी शरण ग्रहण करता है, धर्मकी शरण ग्रहण करता है, संघकी शरण ग्रहण करता है, प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, चोरी करनेसे विरत रहता है, व्यभिचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंको ग्रहण करनेसे विरत रहता है, उसे शरीर छूटनेपर सुगति ही प्राप्त होती है, दुर्गति नहीं। सो भन्ते ! मैं भगवान्से पूछती हूँ कि वह कैसे शास्तामें श्रद्धावान् होनेसे सुगतिको ही प्राप्त होता है, दुर्गतिको नहीं, कैसे धर्मके प्रति श्रद्धावान् होनेसे . . . . कैसे संघके प्रति श्रद्धावान् होनेसे . . . . कैसे कुशल-धर्मोंका सम्पूर्ण रूपसे आचरण करनेसे शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको ही प्राप्त होता है, दुर्गतिको नहीं ?"

"चुन्दी ! जितने भी प्राणी हैं—चाहे वे बिना पाँवके हों, चाहे दो पाँव वाले हों, चाहे चतुष्पाद हों, चाहे बहुतसे पाँव वाले हों, चाहे रूपी हों, चाहे अरूपी हों चाहे संज्ञी हों, चाहे असंज्ञी हों, चाहे नसंज्ञी-न-असंज्ञी हों—अर्हत सम्यक्सम्बुद्ध तथागत उनमें श्रेष्ठतम माने जाते हैं। चुन्दी ! जो बुद्धके प्रति प्रसन्न (= श्रद्धावान्) होते हैं, वह श्रेष्ठतम (= अग्र) के प्रति श्रद्धावान् होते हैं, जो श्रेष्ठतम (= अग्र) के प्रति श्रद्धावान् होते हैं, उन्हें श्रेष्ठतम (= अग्र) फलकी प्राप्ति होती है।

"चुन्दी ! जितने भी संस्कृत वा असंस्कृत धर्म हैं, वैराग्य उन सभीमें अग्र कहा जाता है, यह जो मदका मर्दन करना है, यह जो प्यासको नष्ट करना है, यह जो आसक्तिका मूलोच्छेद करना है, वस्तुओंकी कामना का मूलोच्छेद, तृष्णाका क्षय, वैराग्य, निरोध तथा निर्वाण। चुन्दी ! जो विराग (= निर्वाण) धर्मके प्रति श्रद्धावान् होते हैं, वे अग्रके प्रति श्रद्धावान् होते हैं; जो अग्रके प्रति श्रद्धावान् होते हैं उन्हें अग्र-फलकी प्राप्ति होती है।

"चुन्दी ! जितने भी संघ या गण हैं, तथागतका श्रावक-संघ उनमें श्रेष्ठ कहलाता है, जो कि यह चार पुरुषोंके जोड़े हैं, जो कि यह आठ पुरुष-पुद्गल हैं, यही

भगवान्‌का श्रावक-संघ है, आदर करने योग्य, आतिथ्य करने योग्य, दक्षिणा देने योग्य, हाथ जोड़कर नमस्कार करने योग्य, लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र। चुन्दी! जो कोई संघके प्रति प्रसन्न होता है वह अग्रके प्रति श्रद्धावान् होता है; जो अग्रके प्रति श्रद्धावान् होता है उसे अग्रफलकी प्राप्ति होती है।

"चुन्दी! जितने भी शील हैं, उनमें आर्य (= श्रेष्ठ) शील ही अग्र कहलाता है, जो कि यह अखण्डित-शील, छिद्र-रहित शील, बिना धब्बेका शील, निर्मल-शील, स्वाधीन-शील, विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसित शील, अकलुषित शील तथा समाधि लाभमें सहायक-शील। चुन्दी! जो लोग आर्य (= श्रेष्ठ) शीलको सम्पूर्ण रूपसे पालन करने वाले हैं, वे अग्र (= श्रेष्ठतम) की पूर्ति करने वाले हैं और उन्हें अग्र-फलकी ही प्राप्ति होती है।

अग्गतो वे पसन्नानं अग्गं धम्मं विजानतं
अग्गे बुद्धे पसन्नानं दक्खिणेय्ये अनुत्तरे।
अग्गे धम्मे पसन्नानं विरागुपसमे सुखे,
अग्गे संघे पसन्नानं पुञ्ञक्खेत्ते अनुत्तरे॥
अग्गस्मिं दानं ददतं अग्गपुञ्ञं पवड्ढति,
अग्गं आयुञ्च वण्णोच यसो कित्ति सुखं बलं॥
अग्गस्स दाता मेधावी अग्गधम्मसमाहितो,
देवभूतो मनुस्सो वा अग्गपत्तो पमोदति॥

[जो अग्रके प्रति श्रद्धावान् हैं, जो अग्र (= श्रेष्ठ) धर्मके जानकार हैं, जो अनुपम दक्षिणा-पात्र हैं, जो वैराग्य-स्वरूप, उपशमन-स्वरूप, सुख-स्वरूप निर्वाणके प्रति श्रद्धावान् हैं, जो अनुपम पुण्य-क्षेत्र श्रेष्ठ संघके प्रति श्रद्धावान् हैं, ऐसे लोग जब अग्र (= श्रेष्ठतम) को दान देते हैं, तो अग्र (= श्रेष्ठ) पुण्यकी वृद्धि होती है। उन्हें श्रेष्ठ आयु, वर्ण, यश, कीर्ति, सुख तथा बलकी प्राप्ति होती है। जो मेधावी अग्र (= श्रेष्ठ) बुद्ध तथा संघको दान देता है, जो अग्र (= श्रेष्ठ) धर्मसे युक्त होता है, वह चाहे देव-योनिमें जन्म ग्रहण करे और चाहे मनुष्य-योनिमें जन्म ग्रहण करे, अग्र (= श्रेष्ठ) फलको प्राप्त कर आनन्दित होता है।]

एक समय भगवान् भद्दियमें जातिय-वनमें विहार करते थे। तब मेण्डक-नाती उग्गह जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्‌को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए मेण्डक-नाती उग्गहने भगवान्‌को यह कहा—"भन्ते! अन्य तीन जनोंके साथ आप कलके लिये मेरा निमन्त्रण स्वीकार करें।"

भगवान्ने मौन रहकर स्वीकार किया। तब मेण्डक-नाती उग्गह भगवान्की स्वीकृति जान, आसनसे उठ, भगवान्को नमस्कार कर, प्रदक्षिणाकर, उठकर चला गया।

तब भगवान् उस रात्रिके बीतनेपर, पूर्वाह्ण समय, पहन कर, पात्र-चीवर ले, जहाँ मेण्डक-नाती उग्गहका घर था, वहाँ पधारे। वहाँ बिछे आसनपर बैठे। तब मेण्डक-नाती उग्गहने भगवान्को अपने हाथसे बढ़िया भोजन कराया। जब भगवान् भोजनकर चुके और उन्होंने अपना हाथ खींच लिया तो मेण्डक-नाती उग्गह एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए मेण्डक-नाती उग्गहने भगवान्से यह निवेदन किया— "भन्ते! मेरी यह लड़कियाँ पतिके कुल जायेंगी। भगवान् इन्हें उपदेश दें। भगवान् इनका अनुशासन करें, जो दीर्घ कालतक इनके हित तथा सुखका कारण हो।" तब भगवान्ने कुमारियोंको इस प्रकार उपदेश दिया—

"इसलिये कुमारियो! इस प्रकार सीखना चाहिये कि तुम्हारा कल्याण चाहने वाले, तुम्हारा हित चाहने वाले, तुमपर अनुकम्पा करने वाले माता-पिता तुमपर अनुकम्पा करके तुम्हें जिस किसी भी पतिको सौंपें, हम उससे पहले (सोकर) उठने वाली होंगी, उससे पीछे सोने वाली होंगी, आज्ञामें रहने वाली होंगी, अनुकूल बरताव करने वाली होंगी तथा प्रिय-वादिनी होंगी। इसी प्रकार कुमारियो सीखना चाहिये।

"इसलिये कुमारियो! इस प्रकार सीखना चाहिये कि तुम्हारे पतिके जो भी गौरव-भाजन होंगे, चाहे माता हो, चाहे पिता हो, चाहे श्रमण-ब्राह्मण हों, हम उनका सत्कार करेंगी, उनका गौरव करेंगी, उनको मानेंगी, उन्हें पूजेंगी तथा अतिथि आनेपर उन्हें आसन तथा जल देंगी। इसी प्रकार कुमारियो! सीखना चाहिये।

"इसलिये कुमारियो! इस प्रकार सीखना चाहिये कि जो स्वामीके शिल्प (=कर्मान्त) होंगें, चाहे ऊनका काम हो, चाहे कपासका काम हो, उसमें दक्ष होंगी, आलस्य-रहति होंगी, उसमें यथोचित उपाय तथा विचार करने वाली, उसे करनेमें, उसकी व्यवस्था करनेमें समर्थ। इसी प्रकार कुमारियो सीखना चाहिये।

"इसलिये! कुमारियो इस प्रकार सीखना चाहिये कि स्वामीके घरके भीतरके जो जन होंगे—चाहे दास हों, चाहे दूत हों, चाहे नौकर-चाकर हों—उनके द्वारा किये गये तथा न किये गये कामकी जानकारी रखेंगी, रोगियोंके बलाबलकी जानकारी रखेंगी, और उनको खाना-पीना उसी हिसाबसे बाँट कर देंगी। इसी प्रकार कुमारियो! सीखना चाहिये।

"इसलिये कुमारियो ! इस प्रकार सीखना चाहिये कि स्वामी जो भी धन-धान्य, चाँदी अथवा सोना लायेगा उसकी सुरक्षा, हिफाजत करेंगी। उसके प्रति धूर्त नहीं होंगी, उसे चुराने वाली नहीं होंगी, उससे सुरा आदि पीने वाली नहीं होंगी तथा उसे नष्ट करने वाली नहीं होंगी। इसी प्रकार कुमारियो सीखना चाहिये।

"हे कुमारियो ! जिस स्त्रीमें ये पांच गुण होते हैं वह शरीर छूटने पर, मरनेके अनन्तर मनाप-कायिक देवताओंके साथ जन्म ग्रहण करती है।

योनं भरति सब्बदा निच्चं आतापि उस्सुको,
सब्बकामहरं पोसं भत्तारं नातिमञ्ञति।
न चापि सोत्थि भत्तारं इच्छाचारेन रोसये,
भत्तु च गरुनो सब्बे पटिपूजेति पण्डिता॥
उट्ठाहिका अनलसा संगहीतपरिज्जना,
भत्तुमनापा चरति सम्भतं अनुरक्खति॥
या एवं वत्तती नारी भत्तुछन्दवसानूगा,
मनापानाम ते देवा यत्थ सा उप्पज्जति॥"

[जो प्रयत्नवान्, उत्साहपूर्ण स्त्री अपनी सब कामनायें पूरी करने वाले पुरुषका, पतिका नित्य पोषण करती है और उसकी अवहेलना नहीं करती; जो अपने स्वैरी भावसे पतिको रुष्ट नहीं करती; जो विदुषी अपने पतिके सभी गौरव-भाजन व्यक्तियोंकी पूजा करती है; जो अप्रमाद-युक्त होती है, जो आलस्य-रहित होती है, जो परिजनोंका प्रिय वचन आदिसे संग्रह करने वाली होती है; जो पतिके अनुकूल आचरण करती है, जो पतिके कमाये धनकी रक्षा करती है, जो इस प्रकार स्वामीकी इच्छाके अनुकूल बरताव करती है; वह मनाप-देवताओंके साथ उत्पत्ति ग्रहण करती है।]

एक समय भगवान् वैशालीके महावनमें कूटागार शालामें विहार करते थे। तब सिंह सेनापति जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्का अभिवादनकर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए सिंह सेनापतिने भगवान्से यह कहा—"भन्ते ! क्या दानका इह-लौकिक (= सांदृष्टिक) फल बताया जा सकता है?" 'सिंह ! बताया जा सकता है", भगवान् ने कहा।

"सिंह जो दायक होता है, दानपति होता है वह बहुत लोगोंका प्यारा होता है, बहुत लोगोंको अच्छा लगने वाला। सिंह ! यह जो दायक, दानपति, बहुत जनोंका प्रिय होता है, बहुत जनोंको अच्छा लगने वाला होता है, यह भी दानका इह-लौकिक (= सांदृष्टिक) फल है।

"फिर सिंह ! जो दायक होता है, दानपति होता है, सन्त-पुरुष सज्जन गण उसकी संगति करते हैं। सिंह ! यह जो दायक होता है, दानपति होता है, सन्त-पुरुष सज्जन-गण उसकी संगति करते हैं, यह भी दानका इह-लौकिक (= सांदृष्टिक) फल है।

"फिर सिंह ! जो दायक होता है, दानपति होता है, उसका यश, उसकी कीर्ति फैलती है। सिंह ! यह जो दायक होता है, दानपति होता है, उसका यश, उसकी कीर्ति फैलती है, यह भी दानका इह-लौकिक (सांदृष्टिक) फल है। फिर सिंह ! जो दायक होता है, दान-पति होता है, वह जिस किसी परिषदमें भी जाता है, चाहे क्षत्रियोंकी परिषद हो, चाहे ब्राह्मणोंकी परिषद हो, चाहे गृहपतियों (= वैश्यों) की परिषद् हो, चाहे श्रमण-परिषद हो; उसकी नजर ऊँची ही रहती है, उसे सिर नीचा नहीं करना होता। सिंह ! यह जो दायक होता है, दानपति होता है, वह जिस किसी परिषद्में भी जाता है, चाहे क्षत्रियोंकी परिषद् हो, चाहे ब्राह्मणोंकी परिषद् हो, चाहे गृहपतियोंकी परिषद् हो, चाहे श्रमण-परिषद् हो; उसकी नजर ऊँची ही रहती है, उसे सिर नीचा नहीं करना होता, यह भी दानका इह-लौकिक (= सांदृष्टिक फल) है।

"फिर सिंह ! जो दायक होता है, जो दानपति होता है, वह शरीरके छूटने पर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गलोकमें उत्पन्न होता है। सिंह ! जो दायक होता है, जो दानपति होता है, वह शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग लोकमें उत्पन्न होता है, यह दानका पार-लौकिक (सम्परायिक) फल है।"

ऐसा कहनेपर सिंह सेनापतिने भगवान्से कहा—"भन्ते ! आपने जो चार सांदृष्टिक-फल कहे, उन्हें मैं भगवान् के प्रति श्रद्धा होनेके कारण स्वीकार नहीं करता, मैं स्वयं उन्हें जानता हूँ। भन्ते ! मैं दायक हूँ, मैं दानपति हूँ, मैं बहुतसे लोगोंका प्रिय हूँ, बहुतसे लोगोंको अच्छा लगने वाला हूँ। भन्ते ! मैं दायक हूँ, मैं दान-पति हूँ, सत्पुरुष सज्जन-गण मेरी संगति करते हैं। भन्ते ! मैं दायक हूँ, मैं दानपति हूँ, इस लिये मेरा यश, मेरी कीर्ति फैलती है कि सिंह-सेनापति दायक है, (कुशल) करने वाला है तथा संघकी सेवा करने वाला है। भन्ते ! चाहे कोई भी परिषद् हो, चाहे क्षत्रिय-परिषद् हो, चाहे ब्राह्मण-परिषद् हो, चाहे गृहपति-परिषद् हो, चाहे श्रमण परिषद् हो, मैं जिस किसी भी परिषद्में जाता हूँ, मेरी नजर ऊँची ही रहती है, सिर नीचा नहीं रहता। भन्ते ! भगवान्ने यह जो चार सांदृष्टिक फल कहे, मैं इन्हें भगवान्के प्रति श्रद्धा होनेके कारण ही स्वीकार नहीं करता हूँ; मैं भी

इन्हें जानता हूँ। लेकिन भन्ते ! भगवान् ने मुझे जो यह कहा कि सिंह ! जो दायक होता है, जो दानपति होता है वह शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर, सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग-लोकमें जन्म ग्रहण करता है—इसे मैं नहीं जानता, इसे मैं भगवान्‌के प्रति श्रद्धा होनेके कारण ही स्वीकार करता हूँ। " सिंह ! ऐसा ही है, सिंह ! ऐसा ही है, जो दायक होता है, जो दानपति होता है, वह शरीर छूटनेपर मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग-लोकमें जन्म ग्रहण करता है। "

ददं पियो होति भजन्ति नं बहु
किंत्तिञ्च पप्पोति, यसो च वड्ढति।
अमंकुभूतो परिसं विगाहति,
विसारदो होति नरो अमच्छरि॥
तस्मा हि दानानि ददन्ति पण्डिता
विनेय्य मच्छेरमलं सुखेसिनो,
ते दीघरत्तं तिदिवे पतिट्ठिता,
देवानं सहव्यतं गता रमन्ति
कतावकासा कुसला ततो चुता
सयंपभा अनुविचरन्ति नन्दनं,
ते तत्थ नन्दन्ति रमन्ति मोदरे
समप्पिता कामगुणेहि पञ्चहि
कत्वान वाक्यं असितस्स तादिनो
रमन्ति सग्गं सुगतस्स सावका॥

[जो दाता होता है, वह जन-प्रिय होता है, बहुत लोग उसकी संगति करते हैं, वह कीर्तिको प्राप्त होता है, उसका यश बढ़ता है। वह बिना संकोच किसी भी परिषद्‌में सम्मिलित होता है। वह निर्लोभी आदमी विषारद होता है। इसीलिये सुखकी कामना करने वाले पण्डित जन लोभ-लालचका दमन कर दान देते हैं। वैसे जन दीर्घकाल तक स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित हो देवताओंके साथ सानन्द रहते हैं। वे कुशल-कर्मी जन वहाँसे च्युत होनेपर स्वयं-प्रभ स्वरूपसे नन्दन-वनमें रमण करते हैं। वे वहाँ पाँचों इन्द्रियोंके भोगोंको भोगते हुए, प्रमुदित मनसे प्रीतियुक्त रहते हैं। स्थिरमति असित (= तथागत) के उपदेशानुसार आचरणकर सुगतके श्रावक स्वर्गमें निवास करते हैं।]

भिक्षुओ, दानके ये पांच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पांच? (दाता) बहुत जनोंका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला होता है, सन्तपुरूष सज्जनों की संगति रहती है, यश-कीर्तिकी वृद्धि होती है, गृहस्थ-धर्म (= पंच शीलों) के पालन करने वाला होता है तथा शरीर छुटने पर, मरने पर सुगतिको प्राप्त होता है तथा स्वर्ग में उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, दान के ये पाँच शुभ-परिणाम हैं।

ददमानो पियो होति सतं धम्मं अनुक्कमं,
सन्तो भजन्ति सप्पुरिसा सञ्ञता ब्रह्मचारयो॥
ते तस्स धम्मं देसेन्ति सब्बदुक्खा पनूदनं
यं सो धम्मं इधञ्ञाय परिनिब्बाति अनासवो॥

[दानी जन-प्रिय होता है, वह सत्पुरूषोंके धर्मका अनुगमन करने वाला होता है, सज्जन सत्पुरूष,संयत ब्रह्मचारी-जन उसकी संगति करते हैं। वे सत्पुरूष उसे सभी दुःखोंका नाश करने वाले धर्मका उपदेश देते हैं। उस धर्मको जानकर, वह आसवोंका क्षयकर, परिनिर्वाण (= रागादि अग्निकी शान्ति) को प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, ये पाँच समयोचित दान हैं। कौनसे पाँच? आनेवाले अतिथिको दान देना, जाने वाले पथिक को दान देना, रोगीको दान देना, दरिद्रको दान देना तथा जो नई उपज हो वा नये फल हों वे पहले शीलवानोंकी सेवामें उपस्थित करना। भिक्षुओ, ये पाँच समयोचित दान हैं।

काले ददन्ति सप्पञ्ञा वदञ्ञू वीतमच्छरा,
कालेन दिन्नं अरियेसु उजुभूतेसु तादिसु॥
विप्पसन्नमना तस्स विपुला होति दक्खिणा,
ये तत्थ अनुमोदन्ति वेय्यावच्चं करोन्ति वा॥
न तेन दक्खिणा ऊना तेपि पुञ्ञस्स भागिनो,
तस्मा ददेव अप्पटिवानचित्तो यत्थदिन्नं महप्फलं॥
पुञ्ञानि परलोकस्मिं पतिट्ठा होन्ति पाणिनं॥

[प्रज्ञावान, पन्डित-जन, निर्लोभी भावसे समयोचित दान देते हैं। जो आर्यजन हैं, जो ऋजु-चरित हैं, जो स्थिरमति हैं, ऐसे श्रेष्ठजनों को प्रसन्न मनसे जो दान दिया जाता है, वह महादान होता है। जो उस दानका अनुमोदन करते हैं, अथवा काम-काज करके सहायक होते हैं, उससे वह 'महादान' किसी भी प्रकार छोटा दान नहीं होता; वे भी 'पुण्य'के भागी होते हैं। इसलिये अनुत्कण्ठित चित्तसे वहाँ दान दे,

जहाँ दान देनेका महान् फल होता है। 'पुण्य' ही परलोकमें प्राणियोंके सहायक सिद्ध होते हैं।]

भिक्षुओ, जो दाता भिक्षुओंको भोजन कराता है, वह भोजन स्वीकार करने वाले भिक्षुओंको पाँच चीजोंका दान देता है। कौन सी पाँच? आयु देता है, वर्ण देता है, सुख देता, बल देता है तथा प्रतिभा देता है। आयुका दाता होनेसे वह मानुषी वा दिव्य आयुका भागी होता है, वर्णका दाता होनेसे वह मानुष वा दिव्य वर्णका भागी होता है, सुखका दाता होनेसे वह मानुष वा दिव्य सुखका भागी होता है, बलका दाता होनेसे वह मानुष वा दिव्य बलका भागी होता है तथा प्रतिभाका दाता होनेसे वह मानुषी वा दिव्य प्रतिभाका भागी होता है। भिक्षुओ, जो दाता भिक्षुओंको भोजन कराता है, वह भोजन स्वीकार करने वाले भिक्षुओंको इन पाँच चीजोंका दान देता है।

आयुदो बलदो धीरो वण्णदो पटिभाणदो,
सुखस्स दाता मेधावी सुखं सो अधिगच्छति॥
आयुं दत्वा बलं वण्णं सुखं च पटिभाणकं,
दीघायु यसवा होति यत्थ यत्थुपपज्जति॥

[जो धैर्यवान् आयु, बल, वर्ण, प्रतिभा तथा सुखका दाता होता है, वह मेधावी पुरुष 'सुख' प्राप्त करता है। जो आयु, बल, वर्ण, सुख तथा प्रतिभाका दाता होता है, वह जहाँ जहाँ उत्पन्न होता है, वहाँ वहाँ दीर्घायुको प्राप्त करता है और यशस्वी होता है।]

भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुलपुत्रको पांच लाभ रहते हैं। कौनसे पांच? भिक्षुओ, दुनियामें जो सन्तपुरुष, सत्पुरुष होते हैं, वे जब दयावान् होते हैं तो पहले श्रद्धावान् पर ही दया दिखाते हैं अश्रद्धावान् पर नहीं; जब समीप आते हैं तो पहले श्रद्धावान्के ही समीप आते हैं अश्रद्धावान्के नहीं; जब स्वागत करते हैं तो पहले श्रद्धावान्का ही स्वागत करते हैं, अश्रद्धावान्का नहीं; अब धर्मोपदेश देते हैं तो पहले श्रद्धावान्को ही उपदेश देते हैं, अश्रद्धावान्को नहीं तथा जो श्रद्धावान् होता है वह शरीर छोड़नेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग लोकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, श्रद्धावान् कुलपुत्रको ये पांच लाभ रहते हैं। भिक्षुओ, जैसे किसी चौरस्तेपर सुभूमिमें न्यग्रोधका महान् वृक्ष हो और वह चारों ओरसे आने वाले पक्षियोंका शरण-स्थान हो; इसी प्रकार भिक्षुओ जो श्रद्धावान् कुलपुत्र होता है वह बहुत जनोंका शरण-स्थान होता है, भिक्षुओंका, भिक्षुणियोंका, उपासकोंका, उपासिकाओंका।

साखापत्तफलुपेतो खन्धिया च महादुमो,
मूलवा फलसम्पन्नो पतिट्ठा होति पक्खिनं ॥
मनोरमे आयतने सेवन्ति नं विहंगमा,
छायं छायत्थिनो यन्ति फलत्था फलभोजिनो ॥
तथेव सीलसम्पन्नं सद्धं पुरिसपुग्गलं,
निवातवुत्ति अत्थद्धं सोरतं सखिलं मुदुं
बीतरागा वीतदोसा वीतमोहा अनासवा,
पुञ्ञक्खेत्तानि लोकस्मि सेवन्ति तादिसं नरं
ते तस्स धम्मं देसेन्ति सब्बदुक्खा पनूदनं,
यं सो धम्मं इधञ्ञाय परिनिब्बाति अनासवो ॥

[जिस महान् वृक्षमें शाखायें होती हैं, पत्ते होते हैं, फल होते हैं ऐसा स्कन्धयुक्त समूल सफल वृक्ष पक्षियोंके लिये शरण-स्थान होता है। सुन्दर स्थलपर स्थित उस वृक्षका पक्षी-गण आश्रय ग्रहण करते हैं—छायार्थी छायाकी अपेक्षासे पास जाते हैं, फलार्थी फलकी अपेक्षासे। इसी प्रकार जो वीतराग, वीत-द्वेष वीतमोह अनास्रवजन हैं, जो लोकमें पुण्य-क्षेत्र हैं, वे वैसे शान्त, अकठोर, संयत, प्रीतियुक्त, मृदु पुरुषका आश्रय ग्रहण करते हैं। वे सत्पुरुष उसे सभी दु:खोंका नाश करने वाले धर्मका उपदेश देते हैं। उस धर्मको जानकर, वह आस्रवोंका क्षय कर पीरनिर्वाण (= रागादि अग्निकी शान्ति) को प्राप्त होता है।]

भिक्षुओ, पाँच बातोंका ख्यालकर माता पिता इस बातकी इच्छा करते हैं कि उनके कुलमें पुत्र उत्पन्न हो। कौनसी पांच बातोंका? पोषित होकर हमारा पोषण करेगा, हमारा काम-काज करेगा, कुल-परम्परा चिर-स्थायी होगी, उत्तराधिकारी होगा और प्रेतावस्थाको प्राप्त होनेपर, मर जानेपर दक्षिणा (= दान) देगा। भिक्षुओ, इन पांच बातोंका ख्याल कर माता-पिता इस बातकी इच्छा करते हैं कि उनके कुलमें पुत्र उत्पन्न हो।

पंच ठानानि सम्पस्सं पुत्तं इच्छन्ति पण्डिता,
भतो वा नो भरिस्सति किच्चं वा नो करिस्सति ॥
कुलवंसो चिरं ठस्सति दायज्जं पटिपज्जति
अथवा पनपेतानं दक्खिणं अनुपदस्सति ॥
ठानानेतानि सम्पस्सं पुत्तं इच्छन्ति पण्डिता,
तस्मा सन्तो सप्पुरिसा कतञ्ञू कतवेदिनो ॥

भरन्ति मातापितरो पुब्बे कतमनुस्सरं,
करोन्ति नेसं किच्चानि यथा तं पुब्बकारिनं ॥
ओवादकारी मतपोसी कुलवंसं अहापयं,
सद्धो सीलेनसम्पन्नो पुत्तो होति पसंसितो ॥

[पण्डित-जन पाँच बातोंका ख्यालकर पुत्रोत्पत्तिकी इच्छा करते हैं— पोषित होकर हमारा पोषण करेगा, हमारा काम-काज करेगा, कुल-परम्परा चिर-स्थायी होगी, उत्तराधिकारी होगा तथा हमारे मरनेपर दक्षिणा (= दान) देगा। इन्हीं बातोंका विचार कर पण्डित माता-पिता पुत्रोंकी इच्छा करते हैं। इसलिये जो सज्जन होते हैं, जो सत्पुरुष होते हैं, जो कृतज्ञ होते हैं, जो कृतवेदी होते हैं, वे अपने माता-पिता द्वारा किये गये पूर्व उपकारोंका अनुस्मरण कर, माता-पिताका पोषण करते हैं और उन पूर्व-उपकारियोंके काम आते हैं। जो आज्ञाकारी होता है, जो पोषित होकर पोषण करने वाला होता है, जो अपने-कुल वंशकी परम्पराको बनाये रखता है, ऐसा श्रद्धावान् शीलसम्पन्न पुत्र ही प्रशंसित होता है।]

भिक्षुओ, पर्वतराज हिमालयके कारण शाल (वृक्ष) पाँच प्रकारसे वृद्धिको प्राप्त होते हैं। कौनसे पाँच प्रकारसे? शाखाओं तथा पत्तोंमें वृद्धि होती है, छालमें वृद्धि होती है, पपड़ीमें वृद्धि होती है, सारके ऊपरकी लकड़ीमें वृद्धि होती है, तथा सारमें वृद्धि होती है,। भिक्षुओ, पर्वतराज हिमालयके होनेसे शाल–वृक्ष इन पाँच प्रकारसे वृद्धिको प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ, यदि कुल-पति श्रद्धावान् हो, तो उसके कारण उसके आश्रित जनोंमें पाँच बातोंकी वृद्धि होती है। कौनसी पाँच बातोंकी? श्रद्धाकी वृद्धि होती है, शीलकी वृद्धि होती है, श्रुत (= विद्या) की वृद्धि होती है, त्यागकी वृद्धि होती है तथा प्रज्ञाकी वृद्धि होती है। भिक्षुओ, यदि कुल-पति श्रद्धावान् हो तो उसके कारण, उसके आश्रित-जनोंमें पांच बातोंकी वृद्धि होती है।

यथा च पब्बतो सेलो अरञ्जस्मिं ब्रहावने,
तं रुक्खा उपनिस्साय वड्ढन्ते ते वनप्पति ॥
तथेव सीलसम्पन्नं सद्धं कुलपतिं इध,
उपनिस्साय वड्ढन्ति पुत्तदारा च बन्धवा ॥
अमच्चा जातिसंघा च ये चस्स अनुजीविनो,
त्यस्स सीलवतो सीलं चागं सुचरितानिच ॥
पस्समानुकुब्बन्ति ये भवन्ति विचक्खणा,

इध धम्मं चरित्वान मग्गं सुगतिगामिनं
नन्दिनो देवलोकास्मि मोदन्ति कामकामिनो ।।

[जैसे किसी बड़े वनमें, आरण्यमें, कोई पर्वत-राज शैल हो और उस शैलके कारण उस वनके वृक्ष वृद्धिको प्राप्त होते हों, उसी प्रकार यदि कुलपति सदाचारी तथा श्रद्धासम्पन्न होता है, तो उसके कारण उसके स्त्री-पुत्र तथा अन्य बन्धु-बान्धव उन्नतिको प्राप्त होते हैं। उसके मित्र, रिश्तेदार और जितने भी उसके आश्रित होते हैं, वे सभी पण्डित-जन सदाचारी के शील, त्याग तथा सदाचरणको देखते हुए उसका अनुकरण करते हैं। वे सुगति-गामियोंके मार्गपर चलकर, धर्मका अनुसरणकर, देवलोकमें उत्पन्न होते हैं और वहाँ सभी कामनाओंकी पूर्तिका आनन्द उठाते हुए प्रीतिपूर्वक रहते हैं।]

(५) मुण्डराज-वर्ग

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। तब अनाथपिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवानको नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथपिण्डिक गृहपतिको भगवान्ने यह कहा—गृहपति ! ऐश्वर्यकी प्राप्तिके ये पांच उद्देश्य हैं। कौनसे पांच ? हे गृहपति ! आर्यश्रावक ऐसी भोग-सामग्रीसे, जिसे उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बलसे प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक-विधिसे प्राप्त किया है, अपने-आपको सुख पहुँचाता है, प्रमुदित करता है, अच्छी तरहसे सुखी होता है ; माता-पिताको सुख पहुँचाता है, प्रमुदित करता है, अच्छी तरहसे सुखी करता है ; पुत्र-स्त्री, दास, कर्मकर लोगोंको सुख पहुँचाता है, प्रमुदित करता है, अच्छी तरहसे सुखी करता है। यह ऐश्वर्यकी प्राप्तिका पहला उद्देश्य है। फिर गृहपति ! आर्य-श्रावक ऐसी भोग-सामग्रीसे जिसे, उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बलसे प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक-विधिसे प्राप्त किया है अपने यार-दोस्तोंको सुख पहुँचाता है, प्रमुदित करता है, अच्छी तरहसे सुखी करता है। यह ऐश्वर्यकी प्राप्तिका दूसरा उद्देश्य है। फिर गृहपति ! आर्य-श्रावक ऐसी भोगसामग्रीसे, जिसे उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बल से प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक विधिसे प्राप्त किया है, यदि उसपर कोई आपत्ति आती है, चाहे वह आगसे हो, चाहे वह राज्यसे हो, चाहे वह चोरसे हो, चाहे किसी अप्रिय-व्यक्तिसे हो, चाहे उत्तराधिकारीसे हो, तो वैसी आपत्ति

आनेपर वह भोग-सामग्रीसे आत्म-रक्षा करता है, अपने आपको सकुशल बनाये रखता है। यह ऐश्वर्यकी प्राप्तिका तीसरा उद्देश्य है। फिर गृहपति ! आर्य-श्रावक ऐसी भोग्य-सामग्रीसे, जिसे उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बलसे प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक-विधिसे प्राप्त किया है पांच बलि-कर्म करने वाला होता है——ज्ञाति-बलि, अतिथि-बलि, पूर्व-प्रेत-बलि, राज-बलि तथा देवता-बलि। यह ऐश्वर्यकी प्राप्ति का चौथा उद्देश्य है। फिर गृहपति ! ऐसी भोग-सामग्रीसे, जिसे उसने उत्थान-वीर्यसे प्राप्त किया है, बाहु-बलसे प्राप्त किया है, पसीना बहाकर प्राप्त किया है तथा धार्मिक विधिसे प्राप्त किया है, ऐसे श्रमण-ब्राह्मणों को जो मद-प्रमादसे विरत हों, जो क्षमा तथा विनम्रतासे युक्त हों, जो अकेले ही अपना दमन करने वाले हों, अकेले ही अपना शमन करने वाले हों, अकेले ही अपने आपको परिनिर्वृत्त करने वाले हों, वैसे श्रमण-ब्राह्मणोंको ऊंचे उठाने वाला दान (= दक्षिणा) देता है, जो स्वर्गकी ओर ले जाने वाला होता है, जो सुख-फल-दायी होता है, जो स्वर्गलाभ कराने वाला होता है। यह ऐश्वर्यकी प्राप्तिका पाँचवाँ उद्देश्य है। गृहपति ! ऐश्वर्यके की प्राप्तिके ये पाँच उद्देश्य हैं। गृहपति ! यदि आर्य-श्रावक द्वारा इन पाँचों उद्देश्योंकी पूर्तिके प्रयासमें उसके ऐश्वर्यकी हानि हो जाती है, तो वह सोचता है, ऐश्वर्यकी प्राप्तिके जो उद्देश्य हैं, मैं उन की पूर्ति करता हूँ, ऐसा करते समय मेरा ऐश्वर्य क्षीण होता जाता है। उसे किसी प्रकारका अफसोस नहीं होता। गृहपति ! यदि-आर्य-श्रावक द्वारा इन पांचों उद्देश्योंकी पूर्तिके प्रयासमें लगे रहते समय उसके ऐश्वर्यकी वृद्धि हो जाती है, तो वह सोचता है, ऐश्वर्यकी प्राप्तिके जो उद्देश्य हैं, मैं उनकी पूर्ति करता हूँ, ऐसा करते समय मेरे ऐश्वर्य की वृद्धि होती जाती है। दोनों स्थितियोंमें उसे अफसोस नहीं होता।

मुत्ता भोगा भता भच्चा वितिण्णा आपदासु मे,
उद्धग्गा दक्खिणा दिन्ना अथो पंचबलीकता।।
उपट्ठिता सीलवन्तो सञ्ञता ब्रह्मचारयो,
यदत्थं भोगं इच्छेय्य पण्डितो घरमावसं।।
सो मे अत्थो अननुपत्तो कतं अननुतापियं,
एतं अनुस्सरं मच्चो अरियधम्मे ठितो नरो,
इधेव नं पसंसन्ति पेच्च सग्गे च मोदति।।

[मैंने ऐश्वर्यको भोगा, (माता पिता आदिका) पोषण किया, आपत्तियोंसे रक्षा की, ऊँचे उठानेवाली दक्षिणा दी, पाँच बलि-कर्म किये, शीलवान्, संयत,

ब्रह्मचारियोंकी सेवामें रहा। इस प्रकार कोई भी गृहस्थ जिस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये ऐश्वर्यकी कामना कर सकता है, मैंने उस उद्देश्यकी पूर्तिकी। मुझे किसी तरहका अफसोस नहीं है। जो आदमी इस प्रकार सोचता हुआ आर्य-धर्ममें स्थिर रहता है, यहाँ इस लोकमें भी उसकी प्रशंसा होती है, तथा मरनेपर स्वर्ग-लाभकर आनन्दित होता है।]

भिक्षुओ, सत्पुरुष यदि किसी कुलमें जन्म ग्रहण करता है, तो वह जनोंके अर्थके लिये, हितके लिये, सुखके लिये होता है; माता पिताके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है ; स्त्री-पुत्रके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है ; दास-कर्मकर लोगोंके अर्थ, हित , सुख के लिये होता है ; यार-दोस्तोंके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है ; श्रमण ब्राह्मणोंके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है। भिक्षुओ, जैसे महामेघ सभी प्रकारकी खेतीको उत्पन्न करता हुआ बहुत जनोंके अर्थ, सुख, हितके लिये होता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, सत्पुरुष यदि किसी कुलमें जन्म ग्रहण करता है, तो वह बहुत जनोंके अर्थके लिये, हितके लिये, सुखके लिये होता है; माता पिताके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है; स्त्री-पुत्रके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है; दास-कर्मकर लोगोंके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है ; यार-दोस्तोंके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है ; श्रमण-ब्राह्मणोंके अर्थ, हित, सुखके लिये होता है।

हितो बहुन्नं पटिपज्ज भोगे तं देवता रक्खति धम्मगुत्तं
बहुस्सुतं सीलवतुपपन्नं धम्मे ठितं न विजहाति कित्ति ॥
धम्मट्ठं सीलसम्पन्नं सच्चवादी हिरीमतं,
नेक्खंजम्बोनदस्सेव को तं निन्दितुमरहित,
देवापि नं पसंसंति ब्रह्मुनापि पसंसितो ॥

[जो बहुतोंका हित करनेमें लगा रहता है, उस धर्म-रक्षितकी देवता रक्षा करता है। जो बहुश्रुत होता है, सदाचारी होता है, धर्मस्थित होता है, कीर्ति उस आदमीका त्याग नहीं करती है। जो धर्म-स्थित होता है, जो सदाचारी होता है, जो सत्यवादी होता है, जो लज्जायुक्त होता है, उस खरे सोनेके समान सत्पुरुषकी कौन निन्दाकर सकता है? देवता भी उसकी प्रशंसा करते हैं तथा ब्रह्मा द्वारा भी वह प्रशंसित होता है।]

तब अनाथपिण्डिका गृहपति जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान्को अभिवादनकर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथपिण्डिक गृहपतिको भगवान् ने यह कहा 'गृहपति! पांच बातें ऐसी हैं जो अच्छी लगने वाली हैं, सुन्दर हैं, श्रेष्ठ हैं, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ हैं। कौनसी पाँच बातें ? गृहपति!

आयु अच्छी लगने वाली है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है; वर्ण अच्छा लगने वाला है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है; सुख अच्छा लगने वाला है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है; यश अच्छा लगने वाला है, सुन्दर है, श्रेष्ठ है, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ है तथा स्वर्ग अच्छे लगने वाले हैं, सुन्दर हैं, श्रेष्ठ हैं, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ हैं। गृहपति ! ये पाँच बातें ऐसी हैं जो अच्छी लगने वाली हैं, सुन्दर हैं, श्रेष्ठ हैं, किन्तु इस लोकमें दुर्लभ हैं। गृहपति ! ये जो पाँच बातें अच्छी लगने वाली हैं, सुन्दर हैं, श्रेष्ठ हैं, इनकी प्राप्ति याचना करनेसे, या प्रार्थना करनेसे होती है, ऐसा मैं नहीं कहता हूँ। गृहपति ! यदि इन पाँच चीजों (= धर्मों) की जो अच्छी लगने वाली हैं, सुन्दर हैं, श्रेष्ठ हैं, प्राप्ति याचना करनेसे या प्रार्थना करनेसे हो सकती तो कौन किससे वंचित रहता ? गृहपति ! जो आर्य-श्रावक आयुकी कामना करता है, उसके लिये यह योग्य नहीं है कि वह आयुके लिये याचना करे, आयुका अभिनन्दन करता रहे, आयुके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति ! जो आर्य-श्रावक आयुकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका अनुसरण करना चाहिये, जिससे आयुकी प्राप्ति हो, जब वह आयु-प्राप्तिके मार्गका अनुसरण करता है तो उसे आयुकी प्राप्ति होती है। वह दिव्य अथवा मानुषी आयुका प्राप्त करने वाला होता है।

"गृहपति ! जो आर्य-श्रावक वर्णकी कामना करता है, उसके लिये यह योग्य नहीं है कि वह वर्णके लिये याचना करे, वर्णका अभिनन्दन करता रहे, वर्णके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति ! जो आर्य-श्रावक वर्णकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका अनुसरण करना चाहिये, जिससे वर्णकी प्राप्ति हो; जब वह वर्ण-प्राप्तिके मार्गका अनुसरण करता है, तो उसे वर्णकी प्राप्ति होती है। वह दिव्य अथवा मानषी वर्णका प्राप्त करने वाला होता है।

"गृहपति ! जो आर्य-श्रावक सुखकी कामना करता है, उसके लिये योग्य नहीं है कि वह सुखके लिये याचना करे, सुखका अभिनन्दन करता रहे, सुखके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति ! जो आर्य-श्रावक सुखकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्ग-का अनुसरण करना चाहिये जिससे सुखकी प्राप्ति हो; जब वह सुख प्राप्तिके मार्गका अनुसरण करता है, तो उसे सुखकी प्राप्ति होती है। वह दिव्य अथवा मानुषी सुखका प्राप्त करने वाला होता है।

"गृहपति ! जो आर्य-श्रावक यशकी कामना करता है, उसके लिये यह योग्य नहीं है कि वह यश के लिये याचना करे, यशका अभिनन्दन करता रहे, यशके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति ! जो आर्य-श्रावक यशकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका

अनुसरण करना चाहिये जिससे यशकी प्राप्ति हो ; जब वह यश-प्राप्ति के मार्गका अनुसरण करता है, तो उसे यशकी प्राप्ति होती है। वह दिव्य अथवा मानषी सुखका प्राप्त करने वाला होता है।

"गृहपति! जो आर्य-श्रावक स्वर्गकी कामना करता है, उसके लिये यह योग्य नहीं है कि वह स्वर्गके लिये याचना करे, स्वर्गका अभिनन्दन करता रहे, स्वर्गके लिये ईर्षा करता रहे। गृहपति! जो आर्य-श्रावक स्वर्गकी कामना करता है, उसे ऐसे मार्गका अनुसरण रकरना चाहिये जिससे स्वर्गकी प्राप्ति हो; जब वह स्वर्ग-प्राप्तिके मार्गका अनुसरण करता है, तो उसे स्वर्गकी प्राप्ति होती है; वह स्वर्गोंका प्राप्त करने वाला होता है।

आयुं वण्णयसं कित्ति सग्गं उच्चाकुलीनतं
रतियो पत्थयानेन उळारा अपरापरं॥
अप्पमादं पसंसन्ति पुञ्ञकिरियासु पण्डिता,
अप्पमत्तो उभो अत्थे अधिगण्हाति पण्डितो,
दिट्ठेव धम्मे यो अत्थो यो च अत्थो सम्परायिको,
अत्थाभिसमया धीरो पण्डितोति पवुच्चति॥

[जो आयु, वर्ण, यश, कीर्ति, स्वर्ग तथा ऊँचे कुलमें जन्म ग्रहण करने सदृश इह-लोक तथा पर-लोक सम्बन्धी इच्छा करता हो, ऐसे आदमीके लिये, पण्डित-जन पुण्य-क्रियाओंमें अप्रमादी होनेकी प्रशंसा करते हैं। अप्रमादी पण्डित इस-लोक तथा पर-लोक सम्बन्धी दोनों अर्थोंको ग्रहण करता है। वह सांदृष्टिक तथा सम्परायिक दोनों अर्थोंकी प्राप्ति करनेसे 'पण्डित' कहलाता है।]

एक समय भगवान् वैशालीके महावनकी कूटागार शालामें विहार करते थे। तब भगवान् पूर्वाह्न समय पहन कर, पात्र चीवर लेकर, जहाँ वैशालीके उग्र गृहपतिका घर था, वहाँ गये। जाकर बिछे आसनपर बैठ गये। तब वैशालीका उग्र गृहपति जहाँ भगवान थे, वहाँ आया। पास आकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए वैशालीके उग्र गृहपतिने भगवान्को यह कहा—"भन्ते! मैंने भगवान्के मुँहसे सुना है, भगवान्के मुँहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान करने वाले को, अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! यह शाल-पुष्पक बहुत बढ़िया भोजन है। भगवान् मुझपर कृपा कर इसे ग्रहण करें।" भगवान् ने कृपा कर स्वीकार किया। "भन्ते! मैंने भगवान्के मुँहसे सुना है, भगवान्के मुँहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान करने वालेको अच्छी प्राप्ति

होती है। भन्ते! यह तैयार किया हुआ कोलक (?) और यह तैयार किया हुआ सूअरका मांस बढ़िया है। भगवान् मुझ पर कृपाकर इसे ग्रहण करें।" भगवान्ने कृपाकर स्वीकार किया।" "भन्ते! मैंने भगवान्के मुँहसे सुना है, भगवान्के मुँहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान करने वालेको अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! यह तेल-युक्त नाली-शाक बढ़िया है। भगवान् मुझपर कृपाकर इसे ग्रहण करें।" भगवान्ने कृपाकर स्वीकार किया। "भन्ते! मैंने भगवान्के मुँहसे सुना है, भगवान्के मुँह से ग्रहण किया है कि अच्छा दान देने वालेको अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! काले धानसे विहित शालीका यह भात, जिसके साथ अनेक प्रकारके सूप तथा अनेक प्रकारके व्यंजन हैं, बढ़िया है। भगवान्! मुझपर कृपाकर इसे ग्रहण करें।" भगवान्ने कृपाकर स्वीकार किया। "भन्ते! मैंने भगवान्के मुँहसे सुना है, भगवान् के मुँहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान देने वालेको अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! यह काशीके वस्त्र बढ़िया हैं।" भगवान्ने कृपाकर स्वीकार किया।" भन्ते! मैंने भगवान्के मुँहसे सुना है, भगवान्के मुँहसे ग्रहण किया है कि अच्छा दान देने वालेको अच्छी प्राप्ति होती है। भन्ते! यह पलंग बढ़िया है। इस पर बड़े बड़े बालों वाला ऊनी बिछौना है। बेल-बूटों वाला ऊनी बिछौना है। कदली-मृगका श्रेष्ठ प्रत्यास्तरण है। साथ ऊपरका कपड़ा है। दोनों ओर लाल लाल तकिये हैं। भन्ते! हम यह भी जानते हैं कि यह भगवान्के लिये अयोग्य हैं। भन्ते! यह चन्दनका फलक है। इसका मूल्य हजारसे अधिक है। भगवान्! मुझपर कृपाकर, इसे स्वीकार करें।" भगवान् ने कृपाकर स्वीकार किया। तब भगवान्ने वैशालीके उग्र गृहपतिके दानका इस अनुमोदन-गाथासे अनुमोदन किया—

मनापदायी लभते मनापं यो उज्जुभूतेसु ददाति छन्दसा,
अच्छादनं सयनमथन्नपानं नानप्पकारानि च पच्चयानि,
चत्तञ्च मुत्तञ्च अनग्गहीतं खेत्तूपमे अरहन्ते विदित्वा,
सो दुच्चजं सप्पुरिसो चजित्वा मनापदायी लभते मनापं॥

[जो इच्छा करके सीधा-सच्चा जीवन व्यतीत करने वालोंको अच्छा दान देता है, उसे अच्छी प्राप्ति होती है। जो वस्त्रका दान करता है, शयनासनका दान करता है, तथा नाना प्रकारके प्रत्ययोंका दान करता है, जिसके द्वारा जो त्यक्त होता है, परित्यक्त होता है, अनुग्रहीत होता है, जो अरहन्तोंको पुण्य-क्षेत्र जानता है, जो सत्पुरुष बड़ी कठिनाईसे त्याग की जा सकने वाली वस्तुओंका त्याग करके अच्छा दान देता है, उसे अच्छी प्राप्ति होती है।]

तब भगवान् वैशालीके उग्र ग्रहपतिके दानका इस प्रकार अनुमोदन कर चुकनेके अनन्तर आसनसे उठकर चले गये।

तब समय बीतनेपर वैशालीके उग्र गृहपतिका शरीरान्त हो गया। मरनेपर वैशालीके उग्र गृहपतिने एक मनोमय शरीर धारण किया। उस समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार कर रहे थे। तब उग्र गृहपति देव-पुत्र प्रभा-पूर्ण रात्रिमें प्रभापूर्ण वर्ण-युक्त हो, सारेके सारे जेतवनको प्रकाशित करता हुआ, जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान् को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए उग्र देव पुत्रको भगवानने यह कहा—" उग्र! जैसे तू चाहता था, वैसा है न ?" " भन्ते भगवान्! हाँ मैं जैसा चाहता था वैसा हूँ।" तब भगवान्ने उग्र देवपुत्रको गाथाओंसे सम्बोधित किया—

मनापदायी लभते मनापं अग्गस्स दाता लभते पुनग्गं,
वरस्स दाता वरलाभी होति सेट्ठं ददो सेट्ठमुपेति ठानं,
यो अग्गदायी वरदायी सेटठदायी च यो नरो,
दीघायु यसवा होति यत्थ यत्थुपपज्जति॥

[जो अच्छा दान करता है, उसे अच्छी प्राप्ति होती है। जो उग्रका दान करता है, उसे उग्रकी प्राप्ति होती है। जो वर (उत्तम) का दान करता है, उसे उत्तम प्राप्ति होती है। जो श्रेष्ठका दाता होता है, श्रेष्ठकी प्राप्ति होती है। जो नर अग्र, वर तथा श्रेष्ठ वस्तुओंका दान करने वाला होता है, वह जहाँ भी उत्पन्न होता है, दीर्घायु तथा यशस्वी होता है।]

भिक्षुओ, ये पाँच बातें पुण्य-प्रसविनी हैं, कुशल-प्रसविनी हैं, सुख-दायिका हैं, स्वर्गीय हैं, सुखद हैं, स्वर्गकी ओर ले जाने वाली हैं, इष्टकर हैं, अच्छी हैं, हितकर हैं, सुखके लिये हैं। कौनसी पाँच बातें ?

भिक्षुओ, भिक्षु जिस किसी दायकके दिये गये चीवरका उपभोग करते हुए असीम चित्त-समाधीको प्राप्त कर विहार करता है, उस दायकके लिये यह (बात) पुण्य-प्रसविनी है, कुशल-प्रसविनी है, सुख -दायिका है, स्वर्गीय है, सुखद है, स्वर्गाकी ओर ले जाने वाली है, इष्टकर है, अच्छी है, हितकर है, सुखके लिये है। भिक्षुओ, भिक्षु जिस किसी दायकका दिया हुआ पिण्डपात (= भोजन) उपभोग करते हुए. . . . . दिया गया विहार उपभोग करते हुए. . . . . मंच-पीठ उपभोग करते हुए. . . गिलान-प्रत्यय भैषज्य परिष्कार उपभोग करते हुए, असीम चित्त-समाधीको प्राप्त कर विहार करता है, उस दायकके लिये यह (बात) पुण्य-प्रसविनी है, कुशल-

प्रसविनी है, सुखदायिका है, स्वर्गीय है, सुखद है, स्वर्गकी ओर ले जाने वाली है, इष्टकर है, अच्छी है, हितकर है, सुखके लिये है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें पुण्य-प्रसविनी हैं, कुशल-प्रसविनी हैं, सुख-दायिका हैं, स्वर्गीय हैं, सुखद हैं, स्वर्गकी ओर ले जाने वाली हैं, इष्टकर हैं, अच्छी हैं, हितकर हैं, सुखके लिये हैं। भिक्षुओ, जो आर्य-श्रावक, इन पाँच पुण्य-प्रसवनिी कुशल-प्रसविनी बातोंसे युक्त होता है, उसके पुण्यकी मात्राका अंदाजा लगाना आसान नहीं कि वह इतनी सुख-दायिका है, इतनी स्वर्गीय है, इतनी सुखद है, इतनी स्वर्गकी ओर ले जाने वाली है, इतनी इष्टकर है, इतनी अच्छी है, इतनी हितकर है, इतनी सुखके लिये है। यही कहा जायगा कि वह असंख्य अप्रमेय महापुण्यको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जैसे महासमुद्रके पानीकी मात्राका अन्दाजा लगाना आसान नहीं कि उसमें इतने आढ़क जल है, अथवा इतने सौ आढ़क जल है, अथवा इतने हजार आढ़क जल है, अथवा इतने लाख आढ़क जल है, यही कहा जायगा कि महासमुद्रका जल असंख्य अप्रमेय है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जो आर्य-श्रावक इन पाँच पुण्य-प्रसविनी कुशल-प्रसविनी बातोंसे युक्त होता है, उसके पुण्यकी मात्राका अंदाजा लगाना आसान नहीं कि वह इतनी सुख-दायिका है, इतनी स्वर्गीय है, इतनी सुखद है, इतनी स्वर्गकी ओर ले जाने वाली है, इतनी इष्टकर है, इतनी अच्छी है, इतनी हितकर है, इतनी सुखके लिये है। यही कहा जायगा कि वह असंख्य अप्रमेय महापुण्यको प्राप्त होता है।

महोदधिं अपरिमितं महासरं
बहुभेरवं रतनगणानमालयं
नज्जो यथा नरगणसंघसेविता
पुथू सवन्ति उपयन्ति सागरं,

एवं नरं अन्नदपान वत्थदं
सेय्यानिसज्जरत्थरणस्स दायकं,
पुञ्ञस्स धारा उपयन्ति पण्डितं
नज्जो यथा वारिवहाव सागरं॥

[जिस प्रकार मनुष्य-गणोंके समूहोंसे सेवित बहुत सी नदियाँ असीम महासर महोदधिको प्राप्त होती हैं, जो बहु भय-भैरव युक्त तथा रतनोंके समूहका आलय होता है, उसी प्रकार जो आदमी अन्न, पेय्य-पदार्थ, वस्त्र, शयन, आसन तथा आस्तरणका दायक होता है, उस पण्डितके प्रति पुण्य-धारायें बहकर आती हैं। कैसे ? जैसे पानी बहाकर ले जाने वाली नदियाँ सागरको प्राप्त होती हैं।]

भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं? कौनसी पाँच? श्रद्धा-सम्पदा, शील-सम्पदा, श्रुत-सम्पदा, त्याग-सम्पदा तथा प्रज्ञा-सम्पदा। भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच धन हैं। कौनसे पाँच? श्रद्धा-धन, शील-धन, श्रुत-धन, त्याग-धन तथा प्रज्ञा-धन। भिक्षुओ, श्रद्धाधन किहेसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक श्रद्धावान् होता है, तथागतकी बोधिमें श्रद्धा रखता है,—वह भगवान् हैं . . . . . देव-मनुष्योंके शास्ता बुद्ध भगवान् हैं। भिक्षुओ, यह श्रद्धा-धन कहलाता है।

भिक्षुओ, शील-धन किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक प्राणी-हिंसासे विरत होता है . . . . . सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजोंके ग्रहणसे विरत होता है। भिक्षुओ, यह शील-धन कहलाता है।

भिक्षुओ, श्रुत-धन किसे कहते हैं? भिक्षुओ-आर्य-श्रावक बहुश्रुत होता है ......(सम्यक्-) दृष्टिसे बींधने वाला। भिक्षुओ, यह श्रुत-धन कहलाता है।

भिक्षुओ, त्याग-धन किसे कहते है? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक मात्सर्य रूपी मैलसे मुक्त हो कर घरपर रहता है, त्याग-शील, खुले-हाथ, दान-शील, परित्याग-शील तथा बांटने वाला। भिक्षुओ, यह त्याग-धन कहलाता है।

भिक्षुओ, प्रज्ञा-धन किसे कहते हैं? भिक्षुओ, आर्य-श्रावक प्रज्ञावान होता है, (वस्तुओंके) उदय और अस्तको जानने वाली प्रज्ञासे युक्त होता है, आर्य-प्रज्ञासे युक्त होता है, बींधने वाली प्रज्ञा से युक्त होता है, तथा सम्यक् प्रकारसे दुःख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त होता है। भिक्षुओ, यह प्रज्ञा-धन कहलाता है। भिक्षुओ, ये पाँच धन हैं।

यस्स सद्धा तथागते अचला सुप्पतिट्ठिता,
सीलंच यस्स कल्याणं अरियकंतं पसंसितं॥
संघे पसादो यस्सत्थि उजुभूतञ्च दस्सनं,
अदलिद्दोति तं आहु अमोघं तस्स जीवितं॥
तस्मा सद्धञ्च सीलंच पसादं धम्मदस्सनं,
अनुयुञ्जेथ मेघावी सरं बुद्धानसासनं॥

[जिसकी तथागतके प्रति अचल श्रद्धा सुप्रतिष्ठित होती है, जिसका आर्य-सौन्दर्य युक्त शील प्रशंसित होता है, जो संघके प्रति प्रसाद-युक्त होता है, जिसे सम्यक्-दृष्टि प्राप्त होती है, ऐसे आदमीके बारेमें कहा जाता है कि उसका जीवन "दरिद्र' नहीं है, उसका जीवन सुफल है। इसलिये मेधावी आदमीको चाहिये कि बुद्धोंके अनुशासनका स्मरण कर श्रद्धा, शील, प्रसाद तथा धर्म-दर्शन की प्राप्तिमें लगे।]

भिक्षुओ, ये पाँच बातें ऐसी हैं, जो न किसी श्रमण को प्राप्य हैं, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य हैं, न किसी देवताको प्राप्य हैं, न किसी मारको प्राप्य हैं, न किसी ब्रह्माको प्राप्य हैं और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य हैं। कौनसी पाँच बातें ? जरा-धर्मी जराको प्राप्य न हों——यह एक ऐसी बात है जो न किसी श्रमण को प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्मा को प्राप्य है, और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य है। रोग-धर्मी रोगको प्राप्त न हों.....मरण-धर्मी मृत्युको प्राप्त न हो. . . .क्षय-धर्मी क्षयको प्राप्त न हों. . . . नष्ट-धर्मी नाशको प्राप्त न हों——यह एक ऐसी बात है, जो न किसी श्रमणको प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य है।

भिक्षुओ, जो अज्ञानी है, जो पृथकजन, है वह जरा (=बुढ़ापे) को प्राप्त होता है। जराको प्राप्त होनेपर वह यह नहीं विचार करता कि यह बुढ़ापा अकेले मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोंको प्राप्त होता है। यदि मैं जराको प्राप्त होनेपर सोच करूं, दु:खी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूँ, मूर्छित होऊँ तो भात भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नताका कारण बनूंगा, तथा मित्रोंकी चिन्ता का कारण बनूंगा। वह बुढ़ापेके प्राप्त हानेपर सोच करता है, दु:खी होता है, रोता है, छाती पीटता है तथा मूर्छित हो जाता है। भिक्षुओ, इसे ही कहते हैं कि अज्ञानी, पृथक-जन विषसे बुझे शोक-शल्यसे दग्ध हुआ है ; वह अपने आपको ही तपाता है।

फिर भिक्षुओ, जो अज्ञानी है, जो पृथक-जन है, जो रोग-धर्मी है उसे रोग प्राप्त होता है...जो मरण-धर्मी है उसे मरण-धर्म प्राप्त होता है.....जो क्षय-धर्मी है वह क्षयको प्राप्त होता है. . . .जो नष्ट होने वाला है, नाशको प्राप्त होता है। नाशको प्राप्त होनेपर वह यह नहीं विचार करता कि यह नाश-धर्म अकेला मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी नष्ट होनेके स्वभाव वाले प्राणियोंको नाश-धर्म प्राप्त होता है। यदि मैं नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दु:खी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूँ, मूर्छित होऊँ, तो भात भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायगा, कामकाज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नताका कारण बनूंगा तथा मित्रोंकी चिन्ताका

कारण बनूंगा। वह नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करता है, दुःखी होता है, रोता है, छाती पीटता है तथा मूर्छित हो जाता है। भिक्षुओ, इसे ही कहते हैं कि अज्ञानी, पृथक-जन, विषसे बुझे शोक-शल्यसे दग्ध हुआ है, वह अपने आपको ही तपाता है।

भिक्षुओ, जो ज्ञानी है, जो आर्य-श्रावक है, वह जरा (=बुढ़ापे) को प्राप्त होता है। जराको प्राप्त होने पर वह यह विचार करता है कि यह बुढ़ापा अकेले मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोंको प्राप्त होता है। यदि मैं जराको प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुःखी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूं, मूर्छित होऊँ तो भात भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नता का कारण बनूंगा तथा मित्रोंकी चिन्ताका कारण बनूंगा। वह बुढ़ापेके प्राप्त होनेपर न सोच करता है, न दुःखी होता है, न रोता है, न छाती पीटता है, और न मूर्छित होता है। भिक्षुओ, इसे ही कहते हैं कि ज्ञानी आर्य-श्रावकने विष-बुझे उस शोक-शल्यको निकाल बाहर किया, जिससे बिंधकर अज्ञानी पृथक-जन अपने आपको ही तपाता है। आर्य-श्रावक शोक-रहित हो, शल्य-रहित हो अपने आपको (दुखसे) परिनिर्वृत्त करता है।

फिर भिक्षुओ, जो ज्ञानी है, जो आर्य-श्रावक है, जो रोग-धर्मी है, उसे रोग प्राप्त होता है...... जो मरण-धर्मी है, उसे मरण-धर्म प्राप्त होता है.... जो क्षय-धर्मी है, वह क्षयको प्राप्त होता है....जो नष्ट होने वाला है, वह नाशको प्राप्त होता है। नष्ट होने वाली वस्तुओंके नाशको प्राप्त होनेपर वह यह विचार करता है कि यह नाश-धर्म अकेले मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी नाश होनेके स्वभाव वाले प्राणियोंको प्राप्त होता है। यदि मैं नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुःखी होऊँ, छाती पीटूं, मूर्छित होऊँ, तो भात भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नताका कारण बनूँगा तथा मित्रोंकी चिन्ता का कारण बनूंगा। वह नाश-धर्मके प्राप्त होने पर न सोच करता है, न दुःखी होता है, न रोता है, न छाती पीटता है और न मूर्छित होता है। भिक्षुओ, इसे ही कहते हैं कि ज्ञानी आर्य-श्रावकने विष-बुझे शोक-शल्यको निकाल बाहर किया, जिससे बिंधकर अज्ञानी, पृथक-जन अपने आपको तपाता है। आर्य-श्रावक शोक-रहित हो, शल्य-रहित हो, अपने आपको दुःखसे परिनिर्वृत्त करता है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें ऐसी हैं जो न किसी श्रमणको प्राप्य हैं, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य हैं, न किसी देवताको

प्राप्य हैं, न किसी मारको प्राप्य हैं, न किसी ब्रह्माको प्राप्य हैं और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य हैं।

न सोचनाय परिदेवनाय अत्थो अलब्भो अपि अप्पकोपि,
सोचन्तमेनं दुखितं विदित्वा पच्चत्थिका अत्तमना भवन्ति ॥
यतो च खो पण्डितो आपदासु न वेधति अत्थविनिच्छयञ्ञू
पच्चत्थिकास्स दुखिता भवन्ति दिस्वा मुखं अविकारं पुराणं ॥
जप्पेन मन्तेन सुभासितेन अनुप्पदानेन पवेणिया वा,
यथा यथा यत्थ लभेथ तथा तथा तत्थ परक्कमेय्य ॥
सचे पजानेय्य अलब्भनेय्यो मयाच अञ्ञेन वा एस अत्थो,
असोचमानो अधिवासयेय्य कम्मं दळहं किन्ति करोमीदानि ॥

[चिन्ता करनेसे, रोने-पीटनेसे अल्पमात्रभी अर्थकी सिद्धि नहीं होती। शत्रुओंको जब पता लगता है कि अमुक आदमी दुःखी होता है, तो वे प्रसन्न होते हैं। अर्थ-अनर्थका जानकार पण्डित जब विपत्ति पड़नेपर काँपता नहीं है तो उसकी पूर्ववत् ही अविकृत मुखाकृतिको देखकर उसके शत्रु दुखी होते हैं। जाप करनेसे, मन्त्र-बलसे, सुभाषाका उपयोग करनेसे, कुछ लेने-देनेसे, वंश-परम्पराकी बात करनेसे जैसे भी अर्थ की सिद्धि होती हो, वैसेही अर्थकी सिद्धिका प्रयास करे[1]। यदि यह मालूम हो जाय कि मैं या कोई दूसरा भी इस अर्थको किसी भी तरह प्राप्त नहीं कर सकता तो यह सोचकर कि यह कठिन कार्य है, अब मैं क्या करूँ, बिना चिन्तित हुये उसे सहन करे।]

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। तब कोशल-नरेश प्रसेनजित जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुंचा। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। तब एक आदमी जहाँ कोशल-नरेश प्रसेनजित बैठा था वहाँ आया। पास आकर उसने कोशल नरेश प्रसेनजितके कानमें कहा–" देव ! मल्लिका देवीका शरीरांत हो गया। " ऐसा कहे जानेपर कोशल-नरेश प्रसेनजित दुःखी हो गया, उसका मन खराब हो गया, उसका शरीर ढीला पड़ गया, उसका मुँह लटक गया, वह कुछ सोचता हुआ निस्तेज हो गया। तब भगवान्ने कोशल-नरेश प्रसेनजितको दुखी, मन-खराब, ढीला-शरीर, लटका-मुँह, सोचता हुआ, निस्तेज जान यह कहा–" महाराज ! ये पाँच बातें ऐसी हैं. . .बिना चिन्तित हुए उसे सहन करे। "

---

१. यह उन गाथाओंमें से एक है जिनका बुद्ध-वचन होना एकदम चिन्त्य है।

एक समय आयुष्मान् नारद पाटलिपुत्रके कुक्कुटाराममें विहार करते थे। उस समय राजा मुण्ड की भद्रा नामकी देवी मर गई थी। वह राजाकी बड़ी प्रिया थी, उसे अच्छी लगने वाली। उस प्रिया, अच्छी लगने वाली भद्रा देवीके मरनेके बादसे राजा न स्नान करता था, न (चन्दन आदिका) लेप करता था, न भोजन करता था, न कामकाज देखता था, रातदिन भद्रादेवीके शरीरको ही लेकर मूर्छित रहता था। तब मुण्डक राजाने पियक नामके कोषाध्यक्ष[२] को बुलवाया—"सभ्य! भद्रादेवीके शरीरको तेल भरी लोहेकी द्रोणीमें रख, दूसरी लोहेकी द्रोणीसे उसे ढक दे, जिससे हम भद्रादेवीके शरीरको बहुत समय तक देखते रह सकें।" 'देव! बहुत अच्छा' कह पियक कोषाध्यक्षने राजा मुण्ड की बात मान, भद्रा देवीका शरीर तेलभरी लोहेकी द्रोणीमें रख, दूसरी लोहे-की द्रोणीसे ढक दिया। तब पियक कोषाध्यक्षके मनमें यह हुआ कि इस राजा मुण्ड की भद्रा नामकी देवी मर गई है। वह राजाकी बड़ी प्रिया थी, अच्छी लगने वाली थी। उस प्रिया, अच्छी लगने वाली भद्रादेवीके मरनेके बादसे राजा न स्नान करता है, न लेप करता है, न भोजन करता है, न काम-काज करता है, रात-दिन भद्रा देवीके शरीरको लेकर ही मूर्छित रहता है। यह राजा मुण्ड किस श्रमण या ब्राह्मणकी संगति करे जिसका धर्मोपदेश सुनकर यह शोकरूपी शल्यसे मुक्त हो?

तब पियक कोषाध्यक्षके मनमें यह विचार पैदा हुआ कि पाटलिपुत्रके कुक्कुटाराममें आयुष्मान् नारद विहार करते हैं। उन आयुष्मान् नारद की ऐसी अच्छी कीर्ति है कि वे पण्डित हैं, व्यक्त हैं, मेधावी हैं, बहुश्रुत हैं, सुवक्ता हैं, कल्याणकर प्रतिभासे युक्त हैं, महास्थविर (=वृद्ध) हैं तथा अर्हत् हैं। यदि राजा मुण्ड आयुष्मान् नारदकी संगति करे, तो यह हो सकता है कि राजा मुण्ड आयुष्मान् नारदका धर्मोपदेश सुन शोक रूपी शल्यसे मुक्त हो जाय।

तब पियक कोषाध्यक्ष राजा मुण्डके पास गया। पास जाकर उसने राजा मुण्डसे कहा—"देव! पाटलिपुत्रके कुक्कुटाराममें आयुष्मान् नारद विहार करते हैं। उन आयुष्मान् नारदकी ऐसी अच्छी कीर्ति है कि वे पण्डित हैं, व्यक्त हैं, मेधावी हैं, बहुश्रुत हैं, सुवक्ता हैं, कल्याणकर-प्रतिभासे युक्त हैं, महास्थविर (=वृद्ध) हैं तथा अर्हत् हैं। देव! सम्भव है यदि आप आयुष्मान् नारदकी संगति करें तो आयुष्मान् नारदका धर्मोपदेश सुन आप शोक-सल्यसे मुक्त हो जायें।"

---

२. कोषाध्यक्ष (=कोषारक्षक)

"तो सौम्य पियक! आयुष्मान् नारदको पूर्व-सूचना भिजवाओ। यह कैसे सम्भव है कि मेरे जैसा आदमी अपने राज्यमें रहने वाले श्रमण या ब्राह्मणके पास बिना पूर्व-सूचनाके जाय।"

"देव! बहुत अच्छा।"

इतना कह, राजा मुण्ड को प्रतिवचन दे, पियक कोषाध्यक्ष जहाँ आयुष्मान् नारद थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर आयुष्मान् नारदको प्रणामकर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए पियक कोषाध्यक्षने आयुष्मान् नारदसे कहा—"भन्ते! इस राजा मुण्ड की भद्रा नामकी देवी मर गई है। वह राजाकी बड़ी प्रिया थी, अच्छी लगने वाली थी। उस प्रिया, अच्छी लगने वाली भद्रा देवीके मरनेके बादसे राजा न स्नान करता है, न लेप करता है, न भोजन करता है, न काम-काज देखता है, रात-दिन भद्रा देवीके शरीरको लेकर ही मूर्छित रहता है। भन्ते! अच्छा होगा कि आयुष्मान् नारद राजा मुण्डको वैसा उपदेश करें कि राजा मुण्ड आयुष्मान् नारदका धर्मोपदेश सुनकर शोक-शाल्यसे मुक्त हो।" (आयुष्मान् नारद बोले)—"पियक! राजा जिस काम का योग्य समय समझें।"

तब पियक कोषाध्यक्षने आसनसे उठ आयुष्मान् नारदको नमस्कार किया, प्रदक्षिणाकी और वह जहाँ राजा मुण्ड था वहाँ आया। पास जाकर मुण्ड राजासे यह कहा—"देव! आयुष्मान् नारदने अनुज्ञा दे दी है। अब देव जिस कामका योग्य समय समझें।"

तब राजा मुण्ड अच्छे रथोंपर सवार हो, जहाँ कुक्कुटाराम था वहाँ गया, बड़े राजसी ठाट-बाटके साथ आयुष्मान् नारदके दर्शनार्थ। जहाँ तक रथ से जाना था, वहाँ तक रथसे जाकर, आगे रथ से उतरकर पैदल ही कुक्कुटाराममें प्रविष्ट हुआ। तब राजा मुण्ड जहाँ आयुष्मान् नारद थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर आयुष्मान् नारदका अभिवादन कर, एक ओर बैठा। एक ओर बैठे राजा मुण्डको आयुष्मान् नारदने यह कहा—

"महाराज! ये पाँच बातें ऐसी हैं जो न किसी श्रमणको प्राप्य हैं, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य हैं, न किसी देवताको प्राप्य हैं, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्मा को प्राप्य है। कौनसी पाँच बातें? जरा-धर्मी जराको प्राप्त न हों—यह एक ऐसी बात है जो न किसी श्रमणको प्राप्य है, न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य है। रोग-धर्मी रोगको प्राप्त न हों.....मरण-धर्मी

मृत्युको प्राप्त न हों . . . . . क्षय-धर्मी क्षयको प्राप्त न हों . . . . नष्ट-धर्मी नाशको प्राप्त न हों——यह एक ऐसी बात है, जो न किसी श्रमणको प्राप्य है., न किसी ब्राह्मणको प्राप्य है, न किसी देवताको प्राप्य है, न किसी मारको प्राप्य है, न किसी ब्रह्माको प्राप्य है और न इस लोकमें अन्य किसीको प्राप्य है ।

महाराज ! जो अज्ञानी है, जो पृथकजन है वह जरा (= बुढ़ापे)को प्राप्त होता है, पर वह यह नहीं विचार करता कि यह बुढ़ापा अकेले मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले है, मरने वाले हैं, उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोंको बुढ़ापा प्राप्त होता है । यदि मैं जराको प्राप्त होनेपर सोच करूं, दुःखी होऊं, रोऊं, छाती पीटूँ, मूर्छित होऊं तो भात भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नताका कारण बनूँगा तथा मित्रोंकी चिन्ताका कारण बनूँगा। वह बुढ़ापेके प्राप्त होनेपर सोच करता है, दुःखी होता है, रोता है, छाती पीटता है तथा मूर्छित हो जाता है । महराज ! इसे ही कहते हैं कि अज्ञानी, पृथक-जन विषसे मुझे शोक-शल्यसे दग्ध हुआ है, वह अपने आपको ही तपाता है ।

फिर महाराज ! जो अज्ञानी है, जो पृथक-जन है, जो रोग-धर्मी है, उसे रोग प्राप्त होता है . . . . जो मरण-धर्मी है, उसे मरण-धर्म प्राप्त होता है . . . . . जो क्षय-धर्मी है, वह क्षयको प्राप्त होता है . . . . .जो नष्ट होनेवाला है वह नाशको प्राप्त होता है। नाशको प्राप्त होनेपर वह यह नहीं विचार करता कि यह नाश-धर्म अकेला मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, . मरने वाले हैं, उन सभी नष्ट होनेके स्वभाव वाले प्राणियोंको प्राप्त होता है। यदि मैं नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुःखी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूँ, मूर्छित होऊं तो भोजन भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसनन्ताका कारण बनूँगा तथा मित्रोंकी चिन्ताका कारण बनूँगा। वह नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर, सोच करता है, दुःखी होता है, रोता है, छाती पीटता है तथा मूर्छीत हो जाता है। महाराज् इसे ही कहते हैं कि अज्ञानी, पृथक-जन विषसे बुझे शोक-शल्यसे दग्ध हुआ है, वह अपने आपको ही तपता है।

महाराज ! जो ज्ञानी है, जो आर्य-श्रावक है, वह जरा (= बुढ़ापे) को प्राप्त होता है। जराको प्राप्त होनेपर वह यह विचार करता है कि यह बुढ़ापा अकेले मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं

उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोंको बुढ़ापा प्राप्त होता है, यदि मैं जराको प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुखी होऊँ, रोऊँ, छाती पीटूँ, मूर्छित होऊँ, तो भोजन भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नताका कारण बनूँगा, तथा मित्रोंकी चिन्ताका कारण बनूँगा। वह बुढ़ापेके प्राप्त होनेपर न सोच करता है, न दुःखी होता है, न रोता है, न छाती पीटता है, और न मूर्छित होता है। महाराज! इसे ही कहते हैं कि ज्ञानी आर्य-श्रावकने विष-बुझे शोक-शल्यको निकाल बाहर किया, जिससे बिंधकर अज्ञानी पृथक-जन अपने आपको तपाता है। आर्य-श्रावक शोक-रहित हो,शल्य-रहित हो अपने आपको (दुःखसे) परिनिर्वृत्त करता है।

फिर महाराज! जो ज्ञानी है, जो आर्य-श्रावक है, जो रोग-धर्मी है उसे रोग प्राप्त होता है. . . . जो मरण-धर्मी है उसे मरण-धर्म प्राप्त होता है. . . जो क्षय-धर्मी है वह क्षयको प्राप्त होता है . . . . जो नष्ट होने वाला है, नाशको प्राप्त होता है। नष्ट होने वाली वस्तुओंके नाशको प्राप्त होने पर वह यह विचार करता है कि यह नाश-धर्म अकेले मुझे ही प्राप्त नहीं हुआ है, यह तो जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी नाश होनेके स्वभाव वाले प्राणियोंको नाश-धर्म प्राप्त होता है। यदि मैं नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर सोच करूँ, दुःखी होऊँ, छाती पीटूँ, मूर्छित होऊँ, तो भोजन भी अच्छा नहीं लगेगा, शरीर दुर्वर्ण हो जायेगा, काम-काज भी नहीं किया जा सकेगा, शत्रुओंकी प्रसन्नताका कारण बनूँगा तथा मित्रोंकी चिन्ता का कारण बनूँगा। वह नाश-धर्मके प्राप्त होनेपर, न सोच करता है, न दुःखी होता है, न रोता है, न छाती पीटता है और न मूर्छित होता है। महाराज! इसे ही कहते हैं कि ज्ञानी आर्य-श्रावकने विष-बुझे शोक-शल्यको निकाल बाहर किया, जिससे बिंधकर अज्ञानी, पृथक-जन अपने आपको ही तपाता है। आर्य-श्रावक शोक-रहित हो, शल्य-रहित हो अपने आपको (दुःखसे) परिनिर्वृत्त करता है। महाराज! ये पांच बातें ऐसी हैं, जो न किसी श्रमण को प्राप्य हैं, न किसी ब्राह्मण को प्राप्य हैं, न किसी देवताको प्राप्य हैं, न किसी मारको प्राप्य हैं, न किसी ब्रह्माको प्राप्य हैं और न इस लोकमें अन्य किसी को प्राप्य हैं।

न सोचनाय परिदेवनाय अत्थो अलब्भो अपि अप्पकोपि,
सोचन्तमेनं दुखितं विदित्वा पच्चत्थिका अत्तमना भवन्ति ॥
यतो च खो पण्डितो आपदासु न वेधति अत्थविनिच्छयञ्ञू
पच्चत्थिका दुखिता भवन्ति दिस्वा मुखं अविकारं पुराणं ॥

जप्पेन मन्तेन सुभासितेन अनुप्पदानेन पवेणिया वा,
यथा यथा यत्थ लभेथ अत्थं तथा तथा तत्थ परक्कमेय्य ॥
सचे पजानेय्य अलब्भनेय्यो मया च अञ्ञेन वा एस अत्थो,
असोचमानो अधिवासयेय्य कम्मं दळहं किन्ति करोमीदानि ॥

[अर्थ ऊपर आ गया है—अनु.]

ऐसा कहनेपर राजा मुण्डने आयुष्मान् नारदको यह कहा—" भन्ते ! यह कौनसा धर्म-परियाय है ?" " महाराज ! इस धर्म-परियायका नाम शोक-शल्य-हरण धर्म-परियाय है।" " भन्ते ! यह निश्चयसे शोक-शल्य-हरण है। भन्ते ! यह निश्चय से शोक-शल्य-हरण है। भन्ते ! इस धर्म-परियायको सुनकर मेरा शोक-शल्य जाता रहा। "

तब राजा मुण्डने पियक कोषाध्यक्षको सम्बोधित किया—" सौम्य ! तो अब भद्रादेवीके शरीरकी दाह-क्रिया करो। इस पर स्तूप बनवाओ। आजसे हम स्नान करेंगे, लेप करेंगे, भोजन करेंगे तथा काम-काज देखेंगे। "

(१) नीवरण वर्ग

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। भगवानने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—" भिक्षुओ। " उन भिक्षुओंने भगवान् को प्रतिवचन दिया—" भदन्त "। भगवान् ने यह कहा—" भिक्षुओ ! ये पांच आवरण हैं, नीवरण हैं, जो चित्तमें ही उत्पन्न होते हैं,किन्तु प्रज्ञाको दुर्बल करते हैं। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ काम-चेतना (= कामच्छन्दो) आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमें ही उत्पन्न होती है, और प्रज्ञाकी दुर्बलताका कारण है। भिक्षुओ क्रोध (= व्यापाद) आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमें ही उत्पन्न होता है और जो प्रज्ञाकी दुर्बलताका कारण है। भिक्षुओ, आलस्य (= थीनमिद्ध) आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमें ही उत्पन्न होता है और जो प्रज्ञाकी दुर्बलताका कारण है। भिक्षुओ, उद्धत्य-कौकृत्य आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमें ही उत्पन्न होता है और जो प्रज्ञाकी दुर्बलता का कारण है, भिक्षुओ, संशयालुपन (= विचिकित्सा) आवरण है, नीवरण है, जो चित्तमें ही उत्पन्न होता है और जो प्रज्ञा की दुर्बलताका कारण है। भिक्षुओ, ये पांच-आवरण हैं, नीवरण हैं, जो चित्तमें ही उत्पन्न होते हैं, किन्तु जो प्रज्ञाको दुर्बल करते हैं।

" भिक्षुओ, इसकी संभावना नहीं है कि कोई भिक्षु बिना इन आवरणों, इन नीवरणोंका त्याग किये, जो प्रज्ञाको दुर्बल बनाने वाले हैं, अपनी अबल-प्रज्ञासे,

अपनी दुर्बल प्रज्ञासे आत्म-हितकी बात जान सकेगा, पर-हितकी बात जान सकेगा, दोनोंके हितकी बात जान सकेगा अथवा सामान्य मनुष्योंके ज्ञानसे बढ़ कर आर्य-ज्ञान-दर्शन-विशेषका साक्षात् कर सकेगा। भिक्षुओ, जैसे पर्वतसे बहकर आने वाली कोई नदी हो, शीघ्रगामी हो, सब कुछ बहाकर ले जाने वाली हो। एक आदमी उस नदीमेंसे दोनों ओर पानी जानेके रास्ते खोल दे। इस प्रकार भिक्षुओ, मध्यमें ही उस नदीके स्रोतमें विक्षेप पड़ जाय, वह विस्तृत हो जाय, वह गड़बड़ा जाय तो वह नदी न दूर दूर तक जा सकने वाली रहेगी, न शीघ्रगामी रहेगी और न सब कुछ बहाकर ले जा सकने वाली रहेगी। इसी प्रकार भिक्षुओ, इसकी संभावना नहीं है कि कोई भिक्षु बिना इन आवरणों, इन नीवरणोंका त्याग किये, जो प्रज्ञाको दुर्बल बनाने वाले हैं, अपनी अबल-प्रज्ञासे, अपनी दुर्बल-प्रज्ञासे आत्म-हितकी बात जान सकेगा, परहितकी बात जान सकेगा, दोनोंके हितकी बात जान सकेगा अथवा सामान्य मनुष्योंके ज्ञानसे बढ़कर आर्य-ज्ञान-दर्शन विशेषका साक्षातकार सकेगा। भिक्षुओ, इसकी संभावना है कि वह भिक्षु इन आवरणों, इन नीवरणोंका त्याग करके, जो प्रज्ञाको दुर्बल बनाने वाले हैं, अपनी बलवती प्रज्ञासे आत्महितकी बात जान सकेगा, परहितकी बात जान सकेगा, दोनोंके हितकी बात जान सकेगा अथवा सामान्य मनुष्योंके ज्ञानसे बढ़कर आर्य-ज्ञान-दर्शन-विशेषका साक्षातकार कर सकेगा। भिक्षुओ, जैसे पर्वतसे बहकर आने वाली कोई नदी है, शीघ्रगामी हो, सब कुछ बहाकर ले जाने वाली हो। एक आदमी उस नदीके दोनों ओर पानी जानेके रास्ते बंद कर दे। इस प्रकार भिक्षुओ, मध्यमें उस नदीका स्रोत अविक्षिप्त हो जाय, अविस्तृत हो जाय, अविच्छिन्न हो जाय, तो वह नदी दूर तक जा सकने वाली रहेगी, शीघ्रगामी रहेगी, सब कुछ बहाकर ले जा सकने वाली रहेगी। इसी प्रकार भिक्षुओ, इसकी संभावना है कि वह भिक्षु इन आवरणों, इन नीवरणोंका त्याग करके, जो प्रज्ञाको दुर्बल बनाने वाले हैं, अपनी बलवती प्रज्ञासे आत्म-हितकी बात जान सकेगा, परहितकी बात जान सकेगा, दोनोंके हितकी बात जान सकेगा अथवा सामान्य मनुष्योंके ज्ञानसे बढ़कर आर्य-ज्ञान-दर्शन-विशेषका साक्षातकार कर सकेगा।

भिक्षुओ, यदि किसीको अकुशल -राशीका सम्यक्-प्रकारसे परिचय देना हो तो वह इन पाँच नीवरणोंकी ही बात करेगा। भिक्षुओ, ये पाँच नीवरण अकुशल-राशी के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। कौनसे पाँच ? काम-छन्द नीवरण, व्यापाद-नीवरण, थीन-मिद्ध नीवरण, उद्धच्चकुक्कुच्च-नीवरण तथा विचिकिच्छा-नीवरण। भिक्षुओ, यदि किसीको अकुशल-राशीका सम्यक् प्रकारसे परिचय देना हो तो वह

इन पाँच नीवरणोंकी ही बात करेगा। भिक्षुओ, ये पाँच नीवरण अकुशल-राशीके अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।

भिक्षुओ, योगाभ्यास (= प्रधान) के ये पाँच अंग हैं। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, वह तथागतके बुद्धत्वमें श्रद्धा रखता है कि वह भगवान् अर्हत हैं, सम्यक् सम्बुद्ध हैं, विद्या तथा आचरणसे युक्त हैं, सुगत हैं, लोकके जानकार हैं, अनुपम हैं, (दुर्दमनीय) पुरुषोंके सारथी हैं, देव-मनुष्योंके शास्ता हैं, बुद्ध भगवान् हैं।

वह निरोग होता है, दुःख-विहीन होता है, समान शीतोष्ण प्रकृतिसे युक्त होता है—न अति ऊष्ण और न अति शीत। वह योगाभ्यासके अनुकूल मध्यम-प्रकृतिसे युक्त होता है।

वह न शठ होता है, न मायावी होता है। वह शास्ता अथवा अपने विज्ञ सब्रह्मचारियोंके सम्मुख अपनी यथार्थ स्थितिको प्रकट कर सकने वाला होता है।

वह अकुशल-धर्मोंका नाश करनेके लिये तथा कुशल-धर्मोंकी प्राप्तिके लिये प्रयत्नशील रहता है, शक्तिसम्पन्न होता है, दृढ़-पराक्रमी है, कुशल-धर्मोंको लेकर कन्धा गिराने वाला नहीं होता।

वह (वस्तुओंकी) उत्पत्ति और विनाश सम्बन्धी प्रज्ञासे युक्त होता है, आर्य-प्रज्ञासे, बींधनेवाली प्रज्ञासे, दुःखका सम्यक् प्रकार क्षय कर सकने वाली प्रज्ञासे। भिक्षुओ, योगाभ्यास (= प्रधान) के ये पाँच अंग हैं।

भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पाँच अनुपयुक्त समय हैं। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, एक भिक्षु बूढ़ा हो गया रहता है, बूढ़ा अवस्थाको प्राप्त। भिक्षुओ, योगाभ्यास के लिये यह पहला अनुपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु रोगी होता है, रोगसे ग्रस्त। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह दूसरा अनुपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, दुर्भिक्षका समय होता है, दुष्काल होता है, पिण्डपात दुर्लभ होता है, भिक्षाटन द्वारा जीविका चलाना सुकर नहीं होता। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह तीसरा असमय है। फिर भिक्षुओ, जंगली-मनुष्योंके क्षोभसे उत्पन्न हुए भयका समय होता है, जब जनपदके लोग (रथोंके) चक्कोंपर घूमते हैं। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह चौथा असमय होता है। फिर भिक्षुओ, संघ-भेद-हुआ रहता है, जब परस्पर गाली दी जाती है, जब परस्पर अपमान किया जाता है, जब परस्पर झगड़े होते हैं तथा जब परस्पर एकदूसरेको त्यागा जाता है। ऐसे समय अश्रद्धालु श्रद्धावान् नहीं होते तथा श्रद्धालुओं-के मन बदले रहते हैं। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह पाँचवाँ असमय है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पाँच असमय हैं।

भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पाँच उपयुक्त समय हैं। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु तरूण होता है, युवा होता है, अच्छे काले केशों वाला, भद्र यौवनसे युक्त होता है, अपनी चढ़ती जवानीमें होता है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पहला उपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु निरोग होता है, दुःख-विहीन होता है। समान शीतोष्ण प्रकृतिसे युक्त होता है—न अतिऊष्ण न अतिशीत। वह योगाभ्यासके अनुकूल मध्यम प्रकृतिसे युक्त होता है। भिक्षुओ, योगाभ्यास के लिये यह दूसरा उपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, सुभिक्षाका समय होता है, सुकाल होता है, पिण्डपात दुर्लभ नहीं होता है, भिक्षाटन द्वारा जीविका चलाना सुकर होता है। भिक्षुओ, योगाभ्यास के लिये यह तीसरा उपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, समय होता है जब लोग मिलकर रहते हैं, मुदित मनसे रहते हैं, बिना विवादके रहते हैं, दूध-पानीकी तरह मिले रहते हैं तथा परस्पर एक दूसरेको प्रेम-भरी दृष्टिसे देखते हुए रहते हैं। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह चौथा उपयुक्त समय है। फिर भिक्षुओ, समय होता है जब संघमें मेल होता है, मिलाप होता है, विवाद नहीं होता है, उद्देश्यकी समानता रहती है, असुविधा-रहित जीवन रहता है। भिक्षुओ, जब संघमें मेल रहता है तो परस्पर गाली नहीं दी जाती, परस्पर अपमान नहीं किया जाता, परस्पर झगड़े नहीं होते हैं, तथा परस्पर एक दूसरेको त्यागा नहीं जाता है। ऐसे समय अश्रद्धालु श्रद्धावान् होते हैं तथा श्रद्धालुओंकी श्रद्धा बलवती होती है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये यह पाँचवाँ उपयुक्त समय है। भिक्षुओ, योगाभ्यासके लिये ये पाँच उपयुक्त समय हैं।

एक समय भगवान् श्रावस्तीमें अनाथपिण्डिकके जेतवनाराममें विहार करते थे। उस समय श्रावस्तीमें माता तथा पुत्र दोनों वर्षावास कर रहे थे। एक भिक्षुणी दूसरा भिक्षु। वे यही चाहते थे कि निरन्तर एक दूसरेको देखते रहें। माता भी यही चाहती थी कि पुत्रको निरन्तर देखती रहे, पुत्र भी यही चाहता था कि माताको निरंतर देखता रहे। उनके निरन्तर एक दूसरेको देखते रहनेसे उनका मेल-जोल बढ़ गया। मेल-जोल बढ़ जानेसे विश्वास बढ़ गया। विश्वास बढ़ जानेसे फिसल गये। उन दोनों पतित-चित्तोंने बिना धर्म-विनय (= शिक्षा) का त्याग किये, बिना अपने दौर्बल्य को प्रकट किये मैथुन-धर्मका सेवन किया।

तब बहुतसे भिक्षु जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए उन भिक्षुओंने भगवान्से निवेदन किया—भन्ते! श्रावस्तीमें एक माता तथा उसका पुत्र दोनों वर्षावास कर रहे थे, एक भिक्षुणी थी, दूसरा भिक्षु। वे यही चाहते थे कि निरन्तर एक दूसरेको देखते रहें।

माता भी यही चाहती थी कि पुत्रको निरन्तर देखती रहे, पुत्र भी यही चाहता था कि माताको निरन्तर देखता रहे। उनके निरन्तर एक दूसरेको देखते रहनेसे उनका मेल-जोल बढ़ गया। मेल-जोल बढ़ जानेसे विश्वास बढ़ गया। विश्वास बढ़ जानेसे फिसल गये। उन दोनों पतित-चित्तोंने बिना धर्म-विनय (= शिक्षा) का त्याग किये, बिना अपने दौर्बल्यको प्रकट किये मैथुन-धर्मका सेवन किया।"

"भिक्षुओ, क्या वह मूर्ख यह मानता रहा है कि माता पुत्रके प्रति अनुरक्त नहीं होती है और पुत्र माताके प्रति अनुरक्त नहीं होता है? भिक्षुओ, मैं किसी भी दूसरे ऐसे एक रूपको नहीं देखता जो स्त्रीके रूपके समान रंजन-करने वाला हो, कमनीय हो, मदमस्त कर देने वाला हो, बांधने वाला हो, मूर्छित कर देने वाला हो तथा अनुपम योग-क्षेमकी प्राप्तिमें बाधक हो। भिक्षुओ, जो प्राणी स्त्री-रूपके प्रति अनुरक्त हो जाते हैं, उसमें ग्रथित हो जाते हैं, उसमें आसक्त हो जाते हैं, उससे मूर्छित हो जाते हैं, उसमें फंस जाते हैं वे स्त्री-रूपके वशीभूत हो जानेके कारण दीर्घ-काल तक सोचमें पड़े रहते हैं। भिक्षुओ, मैं किसी भी दूसरे ऐसे एक शब्दको नहीं देखता. . .एक गन्धको नहीं देखना. . . . एक रसको नहीं देखता एक स्पर्शको नहीं देखता, जो स्त्रीके स्पर्शके समान रंजन करने वाला हो, कमनीय हो, मदमस्त कर देने वाला हो, बांधने वाला हो, मूर्छित कर देने वाला हो तथा अनुपम योगक्षेमकी प्राप्तिमें बाधक हो। भिक्षुओ, जो प्राणी स्त्री-स्पर्शके प्रति अनुरक्त हो जाते हैं, उसमें ग्रथित हो जाते हैं, उसमें आसक्त हो जाते हैं, उससे मूर्छित हो जाते हैं, उसमें फँस जाते हैं, वे स्त्री-स्पर्शके वशीभूत हो जानेके कारण, दीर्घ-काल तक सोचमें पड़े रहते हैं। भिक्षुओ, स्त्री चलती है तब भी पुरुषका चित्त उसके प्रति खिचा रहता है, खड़ी होती है तब भी, बैठती है तब भी, लेटती है तब भी, हँसती है तब भी, बोलती है तब भी, गाती है तब भी, रोती रहती है तब भी, और फूली रहती है तब भी, मरी रहती हैं तब भी, पुरुषके चित्तको अपने काबूमें लिये रहती है। भिक्षुओ, यदि कोई ठीकसे यह कहना चाहे कि यह मारका सर्वतोमुखी-बंधन है तो वह स्त्रीके बारेमें ही यह ठीक-ठीक कहेगा कि यह मारका सर्वतोमुखी बंधन है।

सल्लपे असिहत्थेन पिसाचेनपि सल्लपे,
आसीविसम्पि आसीदे येन दटठो न जीवति॥
नत्वेव एको एकाय मातुगामेन सल्लपे,
मुट्ठस्सतिं ता बन्धन्ति पेक्खितेन सितेन च॥

अथोपि दुन्निवत्थेन मञ्जुना भणितेन च,
ने सो जनो यवासीदो अपि उग्घानितो मतो ॥
पंचकामगुणा एते इत्थि रूपस्मिं दिस्सरे,
रूपा सद्दा रसा गन्धा फोटठब्बा च मनोरमा ॥
तेसं कामोघवूळ्हानं कामे अपरिजानतं,
कालं गतिं भवाभवं संसारस्मि पुरक्खता ॥
ये च कामपरिञ्ञाय चरन्ति अकुतोभया,
ते वे पारगता लोके ये पत्ता आसवक्खयंति ॥

[जिसके हाथमें तलवार हो, भले ही उससे बात-चीत करे ; पिशाचसे भी भले ही बात-चीत करे ; आशीविष (सर्प) के पास भी भले ही बैठे, जिसका डसा जीता नहीं बचता. किन्तु भिक्षुको चाहिये कि किसी अकेली स्त्रीसे अकेलेमें कभी बात-चीत न करे। जो मूढ़-स्मृति होता है, ऐसे आदमी को वे अपनी नजरसे, अपनी मुस्कराहटसे, अपनी अर्ध-नग्नतासे वा अपनी बात-चीतसे बांध लेती हैं। चाहे फूली हुई मृतावस्थामें ही क्यों न हो, तब भी यह जान ले कि स्त्री अकेलेमें पास बैठने योग्य नहीं है। रूप, शब्द, रस, गन्ध, स्पर्श—ये जितने मनोरम पाँच काम-गुण हैं सभी स्त्री-रूपमें दिखाई देते हैं। जो काम की बाढ़में बहने वाले हैं, जो कामके दुष्परिणाम को नहीं जानते हैं, ऐसे लोगोंका संसारमें संसरण, गति, पुनरुत्पत्ति पूर्व-निश्चित ही है। जो कामके दुष्परिणामको जानकर निर्भय हो, इस लोकमें विचरते हैं, वे ही पार-प्राप्त हैं और उन्होंने ही आस्रवोंका क्षय किया है।]

एक भिक्षु, जहाँ उसके अपने उपाध्याय थे, वहाँ गया। पास जाकर अपने उपाध्यायसे कहा—"भन्ते! इस समय मुझे शरीर भारी भारी सा लगता है, मुझे दिशायें भी दिखाई नहीं देतीं, मुझे धर्म भी नहीं सूझता, मेरा चित्त आलस्य-युक्त हो गया है। मैं बे-मनसे श्रेष्ठ-जीवन (= ब्रह्मचर्य) व्यतीत कर रहा हूँ। मेरे मनमें धर्मके प्रति संशय ही संशय भरे पड़े हैं।" तब वह (उपाध्याय-) भिक्षु अपने उस शिष्य को ले जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए (उपाध्याय) भिक्षुने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! यह भिक्षु ऐसा कहता है, 'इस समय मुझे शरीर भारी भारी सा लगता है, मुझे दिशायें भी दिखाई नहीं देती, मुझे धर्म भी नहीं सूझता, मेरा चित्त आलस्य-युक्त हो गया है। मैं बे-मनसे श्रेष्ठ जीवन (= ब्रह्मचर्य) व्यतीत कर रहा हूँ। मेरे मनमें धर्मके प्रति संशय ही संशय भरे पड़े हैं।"

"भिक्षु ! जो अपनी इन्द्रियोंको संयत नहीं रखता, जो भोजनमें मात्रज्ञ नहीं होता, जो जागरूक नहीं रहता, जो कुशल-धर्मोंको, बोधिपक्षीय धर्मोंको सदैव देखता नहीं रहता, जो भावना (= चित्तअभ्यास) करनेमें लगा नहीं रहता, ऐसे भिक्षुको ऐसा होता ही है कि उसे उसका शरीर भारी भारी सा लगता है, उसे दिशायें भी दिखाई नहीं देतीं, उसे धर्म भी नहीं सूझता, उसका चित्त आलस्य-युक्त हो गया रहता है, वह बे-मनसे श्रेष्ठ-जीवन (= ब्रह्मचर्य) व्यतीत करता है, उसके मनमें धर्मके प्रति संशय ही संशय भरे रहते हैं। इसलिये हे भिक्षु, तुझे ऐसा सीखना चाहिये कि मैं इन्द्रियोंको संयत रखूँगा, भोजनके विषयमें मात्रज्ञ होऊँगा, जागरूक रहूँगा, कुशल-धर्मोंको, बोधिय-पक्षिय धर्मोंको सदैव देखता रहूँगा तथा भावना (= चित्त-अभ्यास) करनेमें लगा रहूँगा। ऐसा ही तुझे हे भिक्षु ! सीखना चाहिये।"

तब भगवान् द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जाने पर वह भिक्षु आसनसे उठ, भगवानको नमस्कार कर, प्रदक्षिणा कर चला गया। उस भिक्षुने अकेले संयत अप्रमादी प्रयास-पूर्वक प्रयत्न करते हुए अचिरकालमें ही जिस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये कुल-पुत्र घरसे बे-घर हो प्रव्रजित हो जाते हैं, उस अनुपम ब्रह्मचर्य-परायण उद्देश्यको इसी शरीरमें स्वयं जानकर, साक्षात् कर प्राप्तकर लिया। उसको ज्ञान हो गया कि अब जन्म-मरणका बंधन क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वास पूरा हो गया, कृत-कार्य हो गया, इससे आगे कुछ भी करणीय शेष नहीं रहा। वह भिक्षु अर्हतोंमेंसे एक हुआ।

तब अर्हत्वकी प्राप्ति होने पर वह भिक्षु अपने उपाध्यायके पास गया। पास जाकर अपने उपाध्यायसे कहा—" भन्ते ! अब इस समय मुझे शरीर भारी-भारी सा नहीं लगता है। मुझे दिशायें दिखाई देती हैं। मुझे धर्म सूझता है। मेरा चित्त-आलस्य-युक्त नहीं रहा है। मैं मनसे श्रेष्ठ-जीवन (= ब्रह्मचर्य) व्यतीत कर रहा हूँ। मेरे मनमें धर्मके प्रति संशय नहीं रहे हैं।"

तब वह उपाध्याय-भिक्षु उस शिष्य भिक्षुको लेकर भगवान्के पास गया। भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए उस भिक्षुने भगवान्से यह कहा—"भन्ते ! यह भिक्षु ऐसा कहता है, 'भन्ते ! अब इस समय मुझे शरीर भी भारी भारी सा नहीं लगता है। मुझे दिशायें दिखाई देती हैं। मुझे धर्म सूझता है। मेरा चित्त आलस्य-युक्त नहीं रहा है। मैं मनसे श्रेष्ठ-जीवन (= ब्रह्मचर्य) व्यतीत कर रहा हूँ। मेरे मनमें धर्मके प्रति संशय नहीं रहे हैं।"

"भिक्षु ! जो अपनी इन्द्रियोंको संयत रखता है, जो भोजनमें मात्रज्ञ होता है, जो जागरूक रहता है, जो कुशल-धर्मोंको, बोधिपक्षीय-धर्मोंको सदैव देखता

रहता है, जो भावना (= चित्त-अभ्यास) करनेमें लगा रहता है, ऐसे भिक्षुको ऐसा होता ही है, कि उसे उसका शरीर भारी भारी सा नहीं लगता है, उसे दिशायें दिखाइ देती हैं, उसे धर्म सूझता है, उसका चित्त आलस्य-युक्त नहीं रहता है, वह मनसे श्रेष्ठ जीवन (= ब्रह्मचर्य) व्यतीत करता है, उसके मनमें धर्मके प्रति संशय नहीं रहते हैं। इसलिये भिक्षुओ, ऐसा सीखना चाहिये कि हम इन्द्रियोंको संयत रखेंगे, भोजनके विषयमें मात्रज्ञ होंगे, जागरूक रहेंगे, कुशल-धर्मोंको बोधिपक्षीय-धर्मोंको—सदैव देखते रहेंगे तथा भावना (= चित्त-अभ्यास) करनेमें लगे रहेंगे। ऐसा ही तुम्हें हे भिक्षुओ, सीखना चाहिये।"

भिक्षुओ, चाहे कोई स्त्री हो, वा पुरुष हो, चाहे कोई गृहस्थ हो, वा प्रव्रजित है, उसे चाहिये कि इन पाँच बातों पर निरन्तर विचार करता रहे। कौन सी पाँच बातों पर? चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं जरा-धर्मी हूँ, जराके वशीभूत हूँ। चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये मैं रोग-धर्मी हूँ, रोगके वशीभूत हूँ। चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो , उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं मरण-धर्मी हूँ, मरणके वशी-भूत हूँ। चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि जितनी भी मेरी प्रिय-वस्तुयें हैं, अच्छी लगने वाली वस्तुयें हैं, उनका सबका नाश, विनाश निश्चित है। चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि कर्म मेरा है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुआ हूँ, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है, इसलिये जो भी भला-बुरा कर्म करूँगा वह मेरे उत्तराधिकारमें आयेगा।

चाहे स्त्री हो, चाहे पुरुष, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित उसे किस कारणसे हे भिक्षुओ, इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं जरा-धर्मी हूँ, जराके वशीभूत हूँ? भिक्षुओ, यौवनावस्थामें प्राणियोंमें यौवन-मद होता है, उस मदसे मस्त होकर वे शरीरसे दुष्कर्म करते हैं, वाणीसे दुष्कर्म करते हैं, तथा मनसे दुष्कर्म करते हैं। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे यौवनावस्थाका जो यौवन-मद् होता है, वह या तो सर्वथा नष्ट हो जाता है या बहुत दुर्बल पड़ जाता है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस

बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं जरा-धर्मी हूँ, जराके वशीभूत हूँ।

चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो,चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे किस कारणसे हे भिक्षुओ, इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं रोग-धर्मी हूँ, रोगके वशीभूत हूँ ? भिक्षुओ, आरोग्यावस्थामें प्राणियोंमें आरोग्य-मद होता है, उस मदसे मस्त होकर वे शरीरसे दुष्कर्म करते हैं, वाणीसे दुष्कर्म करते हैं, तथा मनसे दुष्कर्म करते हैं। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे, आरोग्यावस्थाका जो आरोग्य-मद होता है, वह या तो सर्वथा नष्ट हो जाता है, या बहुत दुर्बल पड़ जाता है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो. चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो, चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं रोग-धर्मी हूँ, रोगके वशीभूत हूँ।

चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे किस कारणसे हे भिक्षुओ, इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं मरण-धर्मी हूँ, मरणके वशी-भूत हूँ ? भिक्षुओ, जीवित अवस्थामें प्राणियोंमें जीवन-मद होता है, उस मदसे मस्त होकर वे शरीरसे दुष्कर्म करते हैं, वाणीसे दुष्कर्म करते हैं, तथा मनसे दुष्कर्म करते हैं। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे जीवित-अवस्थाका जो जीवन-मद होता है, वह या तो सर्वथा नष्ट हो जाता है या बहुत दुर्बल पड़ जाता है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि मैं मरण-धर्मी हूँ, मरणके वशी-भूत हूँ।

चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे किस कारणसे हे भिक्षुओ, इस बात पर विचार करते रहना चाहिये कि जितनी भी मेरी प्रिय-वस्तुयें हैं, अच्छी लगने वाली वस्तुयें हैं, उन सबका नाश विनाश निश्चित है ? भिक्षुओ, प्राणियोंका अपनी प्रिय वस्तुओंमें राग होता है, जिस रागसे अनुरक्त होनेके कारण वे शरीरसे दुष्कर्म करते हैं, वाणीसे दुष्कर्म करते हैं तथा मनसे दुष्कर्म करते हैं। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे प्रिय-वस्तुओंके प्रति जो राग होता है वह या तो सर्वथा नष्ट हो जाता है या बहुत दुर्बल पड़ जाता है। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि जितनी भी मेरी प्रिय-वस्तुयें हैं, अच्छी लगने वाली वस्तुयें हैं, उन सबका नाश विनाश निश्चित है।

चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो चाहे प्रव्रजित हो, उसे किस कारणसे हे भिक्षुओ, इस बातपर विचार करते रहना चाहिये कि कर्म मेरा है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुआ हूँ, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है, इसलिये जो भी भला-बुरा कर्म करूंगा वह मेरे उत्तराधिकारमें आयेगा ? भिक्षुओ, प्राणी शरीर से दुष्कर्म करते हैं, वाणीसे दुष्कर्म करते हैं, मनसे दुष्कर्म करते हैं। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उनके वे दुष्कर्म या तो सर्वथा छूट जाते हैं या बहुत दुर्बल पड़ जाते हैं। भिक्षुओ, इसी कारणसे चाहे स्त्री हो, चाहे पुरुष हो, चाहे गृहस्थ हो, चाहे प्रव्रजित हो, उसे इस बातपर निरन्तर विचार करते रहना चाहिये कि कर्म मेरा है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुआ हूँ, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है, इसलिये जो भी भला-बुरा कर्म करूंगा वह मेरे उत्तराधिकारमें आयेगा।

भिक्षुओ, वह आर्य-श्रावक यह सोचता है कि केवल मैं ही ऐसा नहीं हूँ जो जरा-धर्मी होऊँ, जराके वशी-भूत होऊँ; जितने भी प्राणी पैदा होनेवाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी जरा-धर्मी प्राणियोंकीको बुढ़ापा व्याप्त होता है। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्ग पर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है। जब वह उस मार्गपर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है तो उसके संयोजनोंका क्षय होता है तथा अनुशय नष्ट होते हैं। (वह सोचता है) केवल मैं ही ऐसा नहीं हूँ जो रोग-धर्मी होऊँ, रोगके वशी-भूत होऊँ; जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी रोग-धर्मी प्राणियोंको रोग-व्याप्त है। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्गपर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है तो उसके संयोजनोंका क्षय होता है तथा अनुशय नष्ट होते हैं। (वह सोचता है) केवल मैं ही ऐसा नहीं हूँ, जो मरण-धर्मी होऊँ, मरणके वशी-भूत होऊँ, जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी मरण-धर्मी प्राणियोंको मरण व्यापता है। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्ग पर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है, तो उसके संयोजनोंका क्षय होता है, उसके अनुशय नष्ट होते हैं। (वह सोचता है) केवल मैं ही ऐसा नही हूँ कि जिसकी सभी प्रिय-वस्तुयें नष्ट होने-वाली हों, विनष्ट होने वाली हों, जितने भी प्राणी पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं, उन सभी प्राणियोंकी प्रिय-वस्तुयें नष्ट होने वाली हैं, विनष्ट होने वाली हैं। इस

बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्गपर चलता है, उसका अभ्यास करता है, अधिकाधिक अभ्यास करता है तो उसके संयोजनोंका क्षय होता है, उसके अनुशय नष्ट होते हैं। (वह सोचता है) केवल मैं ही ऐसा नहीं हूँ कि कर्म मेरा है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुआ हूँ, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है, जितने भी प्राणि पैदा होने वाले हैं, मरने वाले हैं वे सभी प्राणी ऐसे हैं कि कर्म ही उनका है, कर्म ही उत्तराधिकार है, कर्मसे ही उत्पन्न हुए हैं, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण-स्थान है। इस बातपर निरन्तर विचार करते रहनेसे उसे (आर्य-) मार्गकी प्राप्ति हो जाती है। वह उस मार्गपर चलता है, उसका अभ्यास करता है, तो उसके संयोजनोंका क्षय होता है, उसके अनुशय नष्ट होते हैं।

व्याधिधम्मा जराधम्मा अथो मरणधम्मिनो,
यथाधम्मा तथा सन्ता जिगुच्छन्ति पुथुज्जना ॥
अहंचेवं जिगुच्छेय्यं एवं धम्मेसु पाणीसु,
न मेतं पतिरूपस्स मम एवं विहारिनो ॥
सोहं एवं विहरन्तो ञत्वा धम्मनिरूपधिं,
आरोग्ये योब्बनस्मि च जीवितस्मि च ये मदा ॥
सब्बे मदे अभिभोस्मि नेक्खम्मं दट्ठुखेमतो
तस्स मे अहु उस्साहो निब्बाणं अभिपस्सतो ॥
नाहं भब्बो एतरहि कामानि पतिसेवितुं,
अनिवत्ती भविस्सामि ब्रह्मचरियपरायणो ॥

[पृथक-जन (= सामान्य जन) स्वयं रोग-धर्मी, जरा-धर्मी तथा मरण-धर्मी होते हुए भी अपने ही समान रोग-धर्मी, जरा-धर्मी, मरण-धर्मी प्राणियोंको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। यदि इसी प्रकार विहार करने वाला मैं भी इस प्रकारके रोग-धर्मी, जरा-धर्मी, मरण-धर्मी प्राणियोंको घृणाकी दृष्टिसे देखूँ तो यह मेरे अनुरूप नहीं होगा। इसलिये मैं इस प्रकार विचार रकते हुए जो उपाधि-रहित धर्म हैं, उनकी जानकारी प्राप्त कर आरोग्य, यौवन तथा जीवनमें जो मद हैं उन सभी मदोंको मर्दित करके रहूँगा, क्योंकि आदमीका कल्याण (= क्षेम) निष्क्रमणमें ही है। निर्वाणको देखते हुए मेरे मनमें निर्वाणके प्रति उत्साह पैदा हुआ। मैं अब इस स्थितिमें नहीं हूँ कि मैं काम-भोगोंका सेवन करूं। मैं ब्रह्मचर्य्य-परायण रहकर 'न पीछे लौटने वाला' होऊँगा।]

एक समय भगवान् वैशालीके महावनकी कूटागार शालामें विहार करते थे। तब भगवान् पूर्वान्ह समय पहनकर, पात्र चीवर ले, वैशालीमें भिक्षाटनके लिये प्रविष्ट हुए। वैशालीमें भिक्षाटनकर, भिक्षाटनसे लौट, भोजनानन्तर, महावान्में प्रविष्ट हो, एक वृक्षकी छायामें, दिन भर विहार करनेके लिये बैठे।

उस समय धनुष खींचे हुए बहुतसे लिच्छवी कुमारोंने, बहुतसे कुत्तोंकी मण्डली साथ लिये, महावनमें घूमते-घामते देखा कि भगवान् बुद्ध एक वृक्षकी छायाके नीचे दिनमें विहार करनेके लिये विराजमान हैं। यह देख उन्होंने अपने चढ़ाये धनुष फेंक दिये और कुत्तोंको एक ओर कर दिया। तब वे जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर, चुपचाप हाथ जोड़कर भगवान्की सेवामें खड़े हो गये।

उस समय महावनमें टहलनेके लिये आये महानाम लिच्छवीने देखा कि वे कुमार चुप-चाप हाथ जोड़कर भगवान्की सेवामें खड़े हैं। यह देख वह जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया और भगवान्को प्रणाम कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बठे हुए महानाम लिच्छवीने उल्लास-वाक्य कहा—"वज्जी (=विजयी) होंगे, वज्जी होंगे।" भगवान्ने पूछा—"महानाम! ऐसा तू क्यों कह रहा है कि वज्जी होंगे, वज्जी होंगे!"

"भन्ते! ये लिच्छवी कुमार बड़े प्रचण्ड हैं, बड़े कठोर हैं। जो चीज़ें भी एक कुलसे दूसरे कुलको भेजी जाती हैं—चाहे ऊख हों, चाहे बेर हों, चाहे पूए हों, चाहे लड्डू हों, चाहे सकखलिका (?) हों—उन्हें लूटकर खा-जाते है; कुल-स्त्रियोंको और कुल-कुमारियोंको भी पीछेसे ठोकर मार कर गिरा देते हैं; वे इस समय चुप-चाप हाथ जोड़कर भगवान्की सेवामें खड़े हैं।"

"महानाम! जिस किसी कुल-पुत्रमें भी—चाहे वह अभिषिक्त राजा क्षत्रिय हो, चाहे वह राष्ट्रिक हो, चाहे वह पैतृक-सम्पत्तिवाला हो, चाहे वह सेनाका सेनापति हो, चाहे वह ग्रामका ग्रामणी हो, चाहे वह पूगका ग्रामणी (=मुखिया) हो अथवा जो भी कुलोंमें अधिपति होते हैं—ये पाँच बातें होती हैं, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिए, अवनतिकी नहीं। कौन सी पाँच? महानाम! एक कुलपुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कमाये हुए, धर्मसे कमाये हुए, भोग्य-पदार्थोंसे माता-पिताका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हें) मानता है, पूजता है। उसके द्वारा सत्कृत, गौरव-प्राप्त, सन्मान-प्राप्त, पूजित माता-पिता कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते हैं—चिरकाल तक जीवित

रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम ! जिस कुल-पुत्रको माता पिताका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नहीं।

फिर महानाम ! एक कुलपुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कमाये हुए, धर्मसे कमाये हुए भोग्य पदार्थोंसे स्त्री-पुत्र-दास कमकर आदमियोंका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हें) मानता है, पूजता है। उसके द्वारा सत्कृत गौरव-सम्मान-प्राप्त, पूजित स्त्री-पुत्र, दास कर्मकर आदमी कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते हैं—चिर कालतक जीवित रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम् ! जिस कुल-पुत्रको स्त्री-पुत्र-दास-कर्मकर आदमियोंका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नहीं।

फिर महानाम् ! एक कुल-पुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कमाये हुए, धर्मसे कमाये हुए भोग्य-पदार्थोंसे अपनी जमीन जोतने वाले, रस्सी आदिसे नापने-जोखने वाले आदमियोंका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हें) मानता है, पूजता है। उसके द्वारा सत्कृत, गौरव-प्राप्त, सम्मान-प्राप्त, पूजित, जमीन जोतने वाले, रस्सी आदिसे जमीनकी नाप-जोख करने वाले आदमी कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते हैं—चिरकाल तक जीवित रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम! जिस कुल-पुत्रको अपनी जमीन जोतने वाले, रस्सी आदिसे नापने-जोखने वाले आदिमियोंका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नहीं।

फिर महानाम ! एक कुल-पुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहुबलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कमाये हुए, धर्मसे कमाये हुए, भोग्य-पदार्थोंसे जो बलि-ग्राहक देवता होते हैं, उनका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हें) मानता है, पूजता है। उसके द्वारा सत्कृत, गौरव-प्राप्त, सम्मान-प्राप्त, पूजित बलि-ग्राहक देवता कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते हैं—चिरकाल तक जीवित रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम ! जिस कुलपुत्रको बलि-ग्राहक देवताओंका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नहीं।

फिर महानाम ! एक कुल-पुत्र परिश्रमसे कमाये हुए, बाहु-बलसे कमाये हुए, पसीना बहाकर कामाये हुए, धर्मसे कमाये हुए, भोग्य पदार्थोंसे श्रमण-ब्राह्मणोंका सत्कार करता है, गौरव करता है, (उन्हें) मानता है, पूजता है,। उसके द्वारा सत्कृत, गौरव-प्राप्त, सम्मान-प्राप्त , पूजित श्रमण-ब्राह्मण कल्याण-भावनासे आशीर्वाद देते हैं—चिरकाल तक जीवित रहो, दीर्घायु प्राप्त हो। महानाम ! जिस कुल-पुत्रको श्रमण-

ब्राह्मणोंका आशीर्वाद प्राप्त हो, उसकी उन्नति की ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नहीं। महानाम ! जिस किसी कुलपुत्रमें भी—चाहे वह अभिषिक्त क्षत्रिय राजा हो, चाहे वह राष्ट्रिक हो, चाहे वह पैतृक्-सम्पत्ति वाला हो, चाहे वह सेनाका सेनापति हो, चाहे वह ग्रामका ग्रामणी हो, चाहे वह पूगका ग्रामणी (=मुखिया) हो अथवा जो भी कुलोंमें अधिपति होते हैं—ये पांच बातें होती हैं, उसकी उन्नतिकी ही आशा करनी चाहिये, अवनतिकी नहीं।

मातापितु किच्चकरो पुत्तदारहितो सदा
अन्तोजनस्स अत्थाय ये चस्स अनुजीविनो ॥
उभिन्नं येव अत्थाय वदञ्ञू होति सीलवा,
ञातीनं पुब्बपेतानं दिटठधम्मे च जीविनं ॥
समणानं ब्राह्मणानं देवतानं च पण्डितो,
वित्तिसजननो होति धम्मेन घरमावसं ॥
सो करित्वान कल्याणं पुज्जो होति पसंसियो,
इध चेव नं पसंसन्ति पेच्च सग्गे च मोदति ॥

[जो पण्डित होता है, वह मात-पिताकी सेवा करने वाला होता है, स्त्री-पुत्रका नित्य हित करने वाला होता है, जो घरके अन्य लोग होते हैं तथा जो उसके उपजीवी होते हैं उनका भी हितैषी होता है। जो ज्ञानी होता है, जो सदाचारी होता है, वह दोनोंके लिये होता है—परलोक गत सम्बन्धियोंके लिये तथा वर्तमान जीवित सम्बन्धियोंके लिये। जो विज्ञ होता है, वह धर्मसे अर्जित सामग्रीसे श्रमण-ब्राह्मणोंको तथा देवताओंको सन्तुष्ट करने वाला होता है, वह कल्याण-कारक होनेसे पूजित तथा प्रसशंसित होता है। इस लोकमें भी उसकी प्रशंसा होती है और परलोकमें भी वह आनन्दित होता है।]

भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है उसमें ये पाँच गुण दुर्लभ होते हैं कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है, वह प्रायः निपुण (=दक्ष) नहीं होता, उसकी चर्या प्रायः ठीक नहीं होती, वह प्रायः बहुश्रुत नहीं होता, वह प्रायः धर्म-कथिक नहीं होता, वह प्रायः विनय-धर नहीं होता। भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है उसमें ये पाँच गुण दुर्लभ होते हैं।

भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है, उसमें ये पाँच गुण दुर्लभ होते हैं। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, जो वृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है, वह प्रायः सुवच नहीं होता, यह प्रायः सुगृहीत को ग्रहण करने वाला नहीं होता ; वह प्रायः दक्ष

नहीं होता, वह प्रायः धर्म-कथिक नहीं होता ; वह प्रायः विनय-धर नहीं होता है। भिक्षुओ, जो बृद्ध होकर प्रव्रजित हुआ रहता है, उसमें ये पाँच गुण दुर्लभ होते हैं।

भिक्षुओ, यदि इन पाँच संज्ञाओंकी भावनाकी जाय, अभ्यास किया जाय, तो इसका महान् फल होता है, महान् प्रतिफल होता है, अमृत-फल होता है, अमृत-परिणाम होता है। कौनसी पांच संज्ञाओं की ? अशुभ-संज्ञा की, मरण-संज्ञा की, (दुष्कर्मोंका) दुष्परिणाम-संज्ञाकी, आहारके विषयमें प्रतिकूल-संज्ञा की, समस्त लोक के प्रति अनासक्तिकी संज्ञा की। भिक्षुओ, यदि इन पाँच संज्ञाओंकी भावनाकी जाय, अभ्यास किया जाय तो उसका महान् फल होता है, महान् प्रतिफल होता है, अमृत-फल होता है, अमृत परिणाम होता है।

भिक्षुओ, यदि इन पाँच संज्ञाओंकी भावना की जाय, अभ्यास किया जाय तो इसका महान् फल होता है, महान् प्रतिफल होता है, अमृत-फल होता है, अमृत परिणाम होता है। कौनसी पाँच संज्ञाओंकी ? अनित्य-संज्ञा की, अनात्म संज्ञा की, मरण संज्ञाकी, आहारके प्रति प्रतिकूलसंज्ञाकी तथा समस्त लोकके प्रति अनासक्तिकी संज्ञाकी। भिक्षुओ यदि इन पाँच संज्ञाओंकी भावना की जाय, अभ्यास किया जाय, तो इसका महान् फल होता है, महान् प्रतिफल होता है, अमृत-फल होता है, अमृत-परिणाम होता है।

भिक्षुओ, जिस आर्य-श्रावककी इन पांच विषयों में बुद्धि होती है, उसकी आर्य-वृद्धि होती हैं ; वह शरीर (= धारण करने) का सार ग्रहण कर लेने वाला होता है, श्रेष्ठफल प्राप्त कर लेने वाला होता है। किन पाँच विषयों में श्रद्धाकी वृद्धि, शीलकी वृद्धि, श्रुतकी वृद्धि, त्यागकी वृद्धि तथा प्रज्ञाकी वृद्धि। भिक्षुओ, जिस आर्य-श्रावककी इन पांच विषयों में वृद्धि होती है, उसकी आर्य-वृद्धि होती है; वह शरीर (= धारण करने) का सार ग्रहण कर लेने वाला होता है, श्रेष्ठ-फल प्राप्त कर लेने वाला होता है।

सद्धाय सीलेन च योध वड्ढति,
पञ्ञाय चागेन सुतेन चूभयं,
सो तादिसो सप्पुरिसो विचक्खणो
आदीयती सारमिधेव अत्तनो॥

[जो श्रद्धा, शील, प्रज्ञा, त्याग तथा श्रुतमें वृद्धि प्राप्त करता है, वह विलक्षण सत्पुरुष अपने (जीवन) का सार प्राप्त करता है।]

भिक्षुओ, जिस आर्य-श्राविका की इन पांच विषयों म वृद्धि होती है उसकी आर्य-वृद्धि होती है ; वह शरीर (= धारण करने) का सार ग्रहण कर लेने वाली होती

है, श्रेष्ठ फल प्राप्त कर लेने वाली होती है। किन पाँच विषयों में ? श्रद्धाकी वृद्धि, शीलकी वृद्धि, श्रुतकी वृद्धि, त्यागकी वृद्धि तथा प्रज्ञाकी वृद्धि। भिक्षुओ, जिस आर्य-श्राविकाकी इन पाँच विषयों में वृद्धि होती है, वह शरीर (= धारण करने) का सार ग्रहण कर लेने वाली होती है, श्रेष्ठ-फल प्राप्त कर लेने वाली होती है।

सद्धाय सीलेन च योध वड्ढती
पञ्ञाय चागेन सुतेन चूभयं,
सा तादिसी सीलवती उपासिका
आदीयति सारमिधेव अत्तनो॥

[जो श्रद्धा, शील, प्रज्ञा, त्याग तथा श्रुतमें वृद्धि प्राप्त करती है, वह शीलवान् उपासिका अपने (जीवन) का सार प्राप्त करती है।]

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, वह इस योग्य होता है कि उसके सब्रह्मचारी भिक्षु उससे धर्म-चर्चा कर सकें। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु स्वयं शीलवान् होता है और शीलके प्रकरणमें उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वयं समाधि-युक्त होता है और समाधिके प्रकरणमें उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वयं प्रज्ञावान् होता है और प्रज्ञाके प्रकरणमें उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वयं विमुक्ति-युक्त होता है और विमुक्तिके प्रकरणमें आये प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है और विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनके प्रकरणमें आये प्रश्नका उत्तर दे सकता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें हों, वह इस योग्य होता है कि उसके सब्रह्मचारी भिक्षु उस भिक्षुसे धर्म-चर्चा कर सकें।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, वह इस योग्य होता है कि दूसरे सब्रह्मचारी भिक्षुओंके साथ रह सके। कौनसी पांच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु स्वयं शीलवान् होता है और शीलके प्रकरणमें उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वयं समाधि-युक्त होता है और समाधिके प्रकरणमें उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वयं प्रज्ञावान् होता है और प्रज्ञाके प्रकरणमें उत्पन्न हुए प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वयं विमुक्ति-युक्त होता है और विमुक्तिके प्रकरणमें आये प्रश्नका उत्तर दे सकता है, स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है और विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनके प्रकरणमें आये प्रश्नका उत्तर दे सकता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह इस योग्य होता है कि दूसरे सब्रह्मचारी भिक्षुओंके साथ रह सके।

भिक्षुओ, चाहे भिक्षु हो और चाहे भिक्षुणी हो, जो कोई भी इन पांच बातोंका अभ्यास करेगा, अधिकाधिक अभ्यास करेगा, उसे इन दो फलोंमेंसे एक फलकी आशा

करनी चाहिये—इसी जन्ममें अर्हत्व (= अञ्ञा) और यदि उपाधि शेष रह जाय तो अनागामी-भाव। कौनसी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु छन्द-समाधि-प्रधान-संस्कार युक्त ऋद्धिका अभ्यास करता है, वीर्य-समाधि . . . चित्त-समाधि . . . . . वीमंसा-समाधि तथा उत्साह-समाधि-प्रधान-संस्कार युक्त ऋद्धिकी भावना करता है। भिक्षुओ, चाहे भिक्षु हो और चाहे भिक्षुणी हो, जो कोई भी इन पांच बातोंका अभ्यास करेगा, अधिकाधिक अभ्यास करेगा, उसे इन दो फलोंमें से एक फलकी आशा करनी चाहिये इसी जन्मर्मे अर्हत्व (= अञ्ञा) और, यदि उपाधि शेष रह जाय तो अनागामी-भाव।

भिक्षुओ, बोधि-लाभसे पूर्व, जब मुझे बुद्धत्व प्राप्त नहीं था, जब मैं अभी बोधिसत्व ही था, तो मैंने पाँच बातोंका अभ्यास किया, बहुत बहुत अभ्यास किया। कौनसी पाँच बातोंका ? छन्द-समाधि-प्रधान-संस्कार-युक्त ऋद्धिका अभ्यास किया, वीर्य-समाधि. . . . . . .चित्त-समाधि. . . . . .वीमंसा-समाधि तथा पाँचवीं बात उत्साह-समाधि-प्रधान संस्कार युक्त ऋद्धिका। भिक्षुओ, इन उत्साह-पंचम धर्मोका अभ्यास करनेसे, बहुत बहुत अभ्यास करनेसे, अभिज्ञा द्वारा साक्षात् किये जा सकने वाले जिस किसी धर्मको भी अभिज्ञा द्वारा साक्षात् करनेके लिये भी मैंने अपने चित्तको उधर झुकाया, तो उस उस विषयमें, उस उस आयतनमें ही मैंने सफलता प्राप्तकी। यदि मैंने अकांक्षाकी कि अनेक प्रकारकी ऋद्धियोंका अनुभव करूं. . . . ब्रह्मलोक तक भी अपने वशमें कर लूं तो उस उस विषयमें, उस उस आयतनमें ही मैंने सफलता प्राप्त की। यदि आकांक्षा की. . . .आस्रवोंका क्षय कर. . . .साक्षात् कर, प्राप्तकर विहार करूं तो उस उस विषयमें, उस उस आयतनेमें ही मैंने सफलता प्राप्त की।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका अभ्यास करनेसे, बहुत-बहुत अभ्यास करनेसे, सम्पूर्ण निर्वेद प्राप्त होता है, वैराग्य प्राप्त होता है, निरोध तथा उपशमन प्राप्त होता है, अभिज्ञा प्राप्त होती है, सम्बोधि प्राप्त होती है तथा निर्वाण प्राप्त होता है। कौनसी पाँच बातोंका ? भिक्षुओ, भिक्षु अशुभानुपश्यी हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल-संज्ञा लिये हुए, सभी लोकोंके प्रति अनासक्ति-भाव युक्त, सभी संस्कारोंको अनित्य समझते हुए तथा उसके मनमें मरण-संज्ञा अच्छी तरह सुप्रतिष्ठित होती है। भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका अभ्यास करनेसे, बहुत-बहुत अभ्यास करनेसे, सम्पूर्ण निर्वेद प्राप्त होता है, वैराग्य प्राप्त होता है, निरोध तथा उपशमन प्राप्त होता है, अभिज्ञा प्राप्त होती है, सम्बोधि प्राप्त होती है तथा निर्वाण प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका अभ्यास करनेवेसे, बहुत बहुत अभ्यास करनेसे, आस्रवोंका क्षय प्राप्त होता है। कौनसी पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु कायके प्रति अशुभ-दर्शी हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल-संज्ञी, समस्त लोकके प्रति अनासक्ति-भाव युक्त, सभी संस्कारोंको अनित्य मानता हुआ; उसके मनमें मरण-संज्ञा भली प्रकार सुप्रतिष्ठित होती है। भिक्षुओ इन पाँच बातोंका अभ्यास करनेसे, बहुत बहुत अभ्यास करनेसे, आस्रवोंका क्षय होता है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका अभ्यास करनेसे, बहुत बहुत अभ्यास करनेसे, चित्त-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, चित्त-विमुक्ति-परिणाम होता है, प्रज्ञा-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, प्रज्ञा-विमुक्ति परिणाम होता है। कौनसी पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु कायके प्रति अशुभ-दर्शी हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल-संज्ञी,समस्त लोकके प्रति अनासक्ति-भाव युक्त, सभी संस्कारोंको अनित्य मानता हुआ। उसके मनमें मरण संज्ञा भली प्रकार सुप्रतिष्ठित होती है। भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका, अभ्यास करनेसे, बहुत बहुत अभ्यास करनेसे, चित्त-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, चित्त-विमुक्ति परिणाम होता है, प्रज्ञा विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, प्रज्ञा-विमुक्ति परिणाम होता है।

भिक्षुओ, जब भिक्षु चित्त विमुक्ति-फल तथा प्रज्ञा-विमुक्ति-फलको प्राप्त होता है तब वह कहलाता है, उत्क्षिप्त-परिघ, संकीर्ण-परिख, अब्बूळहेसिक, निरर्गल तथा आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसंयुक्त।

भिक्षुओ, भिक्षु उत्क्षिप्त-परिघ कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुकी अविद्या प्रहीण होती है, जड़से उखड़ गई होती है, कटे ताड़-वृक्षके समान हो गई होती है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाली। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु उत्क्षिप्त-परिघ कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु संकीर्ण-परिख कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुका पुनरुत्पत्ति वाला जन्म-हेतु संस्कार प्रहीण होता है. . . . भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु संकीर्ण-परिख कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु अब्बूळहेसिक कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुकी तृष्णा प्रहीण होती है, जड़से उखड़ गई होती है, कटे ताड़ वृक्षके समान हो गई होती है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाली। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु अब्बूळहेसिक कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु, निरर्गल कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुको पतनकी ओर अग्रसर करने वाले पाँच संयोजन प्रहीण होते हैं, जड़से उखड़ गये होते हैं, कटे ताड

वृक्षके समान हो गये होते हैं, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाले। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु निरर्गल कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसंयुक्त होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुका अहंकार प्रहीण होता है, जड़से उखड़ गया होता है, कटे ताड़ वृक्ष के समान हो गया होता है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाला। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसंयुक्त कहलाता है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका अभ्यास करनेसे, बहुत-बहुत अभ्यास करनेसे, चित्त-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, चित्त-विमुक्ति परिणाम होता है, प्रज्ञा-विमुक्ति फलकी प्राप्ति होती है, प्रज्ञा-विमुक्ति परिणाम होता है। कौनसी पाँच? अनित्य संज्ञा, जो अनित्य है उसके प्रति दु:खसंज्ञा, जो दु:ख है उसके प्रति अनात्म-संज्ञा, प्रहाण-संज्ञा, वैराग्य-संज्ञा (= निरोध संज्ञा)। भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका अभ्यास करनेसे, बहुत बहुत अभ्यास करनेसे, चित्त-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, चित्त-विमुक्ति-परिणाम होता है, प्रज्ञा-विमुक्ति-फलकी प्राप्ति होती है, प्रज्ञा-विमुक्ति-परिणाम होता है।

भिक्षुओ, जब भिक्षु चित्त-विमुक्ति-फल तथा प्रज्ञा-विमुक्ति-फलको प्राप्त होता है, तब वह कहलाता है उत्क्षिप्त-परिघ, संकीर्ण-परिख, अब्बुळहेसिक, निरर्गल तथा आर्य पतित-ध्वज पतित-भार-संयुक्त।

भिक्षुओ, भिक्षु उत्क्षिप्र-परिघ कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुकी अविद्या प्रहीण होती है, जड़से उखड़ गई होती है, कटे ताड़ वृक्षके समान होती है, अभाव प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाली। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु उत्क्षिप्त-परिघ कहलाता है। भिक्षुओ, भिक्षु संकीर्ण-परिख कैसे होता है? भिक्षुओ, एकभिक्षुका पुनरूत्पत्ति वाला जन्म-संस्कार प्रहीण होता है......भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु संकीर्ण-परिख कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु अब्बुळहेसिक कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुकी तृष्णा प्रहीण होती है, जड़से उखड़ गई होती है, कटे ताड़ वृक्षके समान हो गई होती है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाली। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु अब्बुळहेसिक कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु निरर्गल कैसे होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुको पतनकी ओर अग्रसर करने वाले पाँच संयोजन प्रहीण होते हैं, जड़से उखड़ गये होते हैं, ताड़ वृक्षके समान हो गये होते हैं, कटे ताड़ वृक्षके समान हो गये होते हैं, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाले। भिक्षुओ, ऐसा भिक्षु निरर्गल कहलाता है।

भिक्षुओ, भिक्षु कैसे आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसंयुक्त होता है? भिक्षुओ, एक भिक्षुका अहंकार प्रहीण होता है, जड़से उखड़ गया होता है, कटे ताड़ वृक्षके समान हो गया होता है, अभाव-प्राप्त, फिर उत्पन्न न हो सकने वाला। भिक्षुओ ऐसा भिक्षु आर्य पतित-ध्वज पतित-भार विसंयुक्त कहलाता है।

तब एक भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को अभिवादनकर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए उस भिक्षुने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! 'धर्म-विहारी', 'धर्म-विहारी' कहा जाता है। क्या होनेसे भिक्षु 'धर्म-विहारी' होता है?"

"हे भिक्षु! एक भिक्षु धर्मको कण्ठस्थ रखनेके लिये उसका पाठ करता है—सुत्तका, गेय्यका, वेय्याकरण, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह धर्म-पाठ करते रहकर ही दिन बिता देता है, एकान्तकी उपेक्षा करता है, अपने चित्तको शान्त करने के अभ्यासमें नियुक्त नहीं होता है। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'पाठ-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नहीं कहलाता।

फिर हे भिक्षु, एक भिक्षु यथा-श्रुत, यथा-कण्ठस्थ धर्मका विस्तार पूर्वक दूसरोंको उपदेश देता है, वह वैसे धर्म-ज्ञापनमें ही दिन बिता देता है, एकान्तकी उपेक्षा करता है, अपने चित्तको शान्त करनेके अभ्यासमें नियुक्त नहीं होता है। भिक्षु ऐसा भिक्षु 'ज्ञापन-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नहीं कहलाता

फिर हे भिक्षु, एक भिक्षु यथा-श्रुत, यथा-कण्ठस्थ धर्मको विस्तारपूर्वक दुहराता रहता है। वह उस प्रकार धर्मको दुहराते रहकर ही दिन बिता देता है, एकान्तकी उपेक्षा करता है, अपने चित्तको शान्त करनेके अभ्यासमें नियुक्त नहीं होता है। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'सज्झाय-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी" नहीं कहलाता।

फिर हे भिक्षु! एक भिक्षु यथा-श्रुत, यथा-कण्ठस्थ धर्मपर चित्तसे तर्क-वितर्क करता है, विचार करता है, मनसे मनन करता है, वह उन धर्म-वितर्कोंमें ही दिन बिता देता है, एकान्तकी उपेक्षा करता है, अपने चित्तको शान्त करनेके अभ्यासमें नियुक्त नहीं होता है। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'वितर्क-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नहीं कहलाता।

हे भिक्षु! एक भिक्षुधर्मको कण्ठस्थ रखनेके लिये उसका पाठ करता है, सुत्तका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तकका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। वह उस धर्म-पाठमें ही दिन नहीं बिता देता है, वह एकान्त

की उपेक्षा नहीं करता है, वह अपने चित्तको शान्त करनेके अभ्यासमें नियुक्त होता है। भिक्षु! ऐसा भिक्षु ही 'धर्म-विहारी कहलाता है।

हे भिक्षु मैंने 'पाठ-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'ज्ञापन-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'सज्झाय-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'वितर्क-बहुल' भिक्षु बता दिया तथा 'धर्म-विहारी' भिक्षु भी बता दिया। श्रावकोंके हितैषी, अनुकम्पक शास्ता द्वारा अनुकम्पा पूर्वक जो कुछ करनेका था, वह मैंने कर दिया। भिक्षु! ये वृक्षोंकी छाया है, ये शून्य-स्थल हैं! भिक्षु! ध्यान लगा। प्रमाद मत कर। बादमें पश्चाताप न करना। यही हमारा अनुशासन है।

तब एक भिक्षु जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर बैठा। एक ओर बैठे हुए उस भिक्षुने भगवान्से यह कहा —"भन्ते! 'धर्म-विहारी', 'धर्म-विहारी' कहा जाता है। क्या होनेसे भिक्षु 'धर्म-विहारी' होता है?"

"हे भिक्षु! एक भिक्षु धर्मको कण्ठस्थ रखनेके लिये उसका पाठ करता है—सुत्तका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तका, जातकका, अद्भुत धर्मका तथा वेदल्लका। किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे, इसका अर्थ नहीं जानता। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'पाठ-बहुल' भिक्षु कहलाता हैं, 'धर्म-विहारी' नहीं कहलाता।

फिर हे भिक्षु! एक भिक्षु यथा-श्रुत यथा-कण्ठस्थ धर्मका दूसरोंको विस्तार पूर्वक उपदेश देता है। किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे इसका अर्थ नहीं जानता। भिक्षु, ऐसा भिक्षु 'ज्ञापन-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नहीं कहलाता। फिर हे भिक्षु! एक भिक्षु यथा-श्रुत यथा-कण्ठस्थ धर्मको विस्तारपूर्वक दुहराता रहता है, किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे इसका अर्थ नहीं जानता। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'सज्झाय-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नहीं कहलाता।

फिर हे भिक्षु! एक भिक्षु यथा-श्रुत यथा-कण्ठस्थ धर्मपर चित्तसे तर्क-वितर्क करता है, विचार करता है, मनसे मनन करता है। किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे इसका अर्थ नहीं जानता। भिक्षु! ऐसा भिक्षु 'वितर्क-बहुल' भिक्षु कहलाता है, 'धर्म-विहारी' नहीं कहलाता।

हे भिक्षु! एक भिक्षु धर्मको कण्ठस्थ रखनेके लिये उसका पाठ करता है—सुत्तका, गेय्यका, वेय्याकरणका, गाथाका, उदानका, इतिवुत्तका, जातकका, अद्भुत-धर्मका तथा वेदल्लका। किन्तु वह इससे आगे प्रज्ञासे इसका अर्थ भी जानता है। भिक्षु! ऐसा भिक्षु ही 'धर्म-विहारी' कहलाता है।

हे भिक्षु मैंने 'पाठ-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैं ने 'ज्ञापन-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'सज्झाय-बहुल' भिक्षु बता दिया, मैंने 'वितर्क-बहुल' भिक्षु बता दिया तथा 'धर्म-विहारी' भिक्षु भी बता दिया। श्रावकोंके हितैषी अनुकम्पक शास्ता व्दारा अनुकम्पा पूर्वक जो कुछ करनेका था, वह मैंने कर दिया। भिक्षु! ये वृक्षों की छाया है, ये शून्य-स्थल हैं। भिक्षु! ध्यान लगा। प्रमाद मत कर।बाद में पश्चाताप न करना। यही हमारा अनुशासन है।

भिक्षुओ, संसार में पाँच तरहके योधा है। कौनसे पाँच तरहके? भिक्षुओ, एक योधा तो ऐसा होता है, जो धूली देखकर ही हिम्मत हार देता है,पीछे हट जाता है, खड़ा नहीं रह सकता, संग्राम में नहीं उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई कोई योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह पहली तरहका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक योधा धूलीसे तो नहीं घबराता किन्तु (रथों पर लगी) पताकायें देखकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खड़ा नहीं रह सकता,संग्राममें नहीं उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई कोई योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह दूसरी तरहका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक योधा धूलीसे तो नहीं घबराता, पताकाओंसे भी नहीं घबराता, किन्तु (घोड़ों, रथोंआदिकी) ध्वनि सुनकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खड़ा नहीं रह सकता, संग्राममें नहीं उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई कोई योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह तीसरी तरहका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक योधा धूलीसे नहीं घबराता,पताकाओंसे भी नहीं घबराता, ध्वनि सुनकर भी नहीं घबराता, किन्तु प्रहार मिलने पर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खड़ा नहीं रह सकता, संग्राममें नहीं उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह चौथी तरहका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक न धूलीसे घबराता है,न पताकाओंसे घबराता है,न ध्वनि सुनकर घबराता है, न प्रहार मिलने पर घबराता है; वह उस संग्राममें उतर कर संग्राम-विजयी हो, उसी संग्राम-भूमिके शिखर-स्थान पर रहता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी कोई कोई योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह पाँचवीं तरहका योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें पाँच तरहकाके योधा होते हैं।

इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षुओंमें भी पाँच तरहके लोग होते हैं, जिनकी उपमा पाँच तरहके योधाओंसे दी जा सकती है। कौनसे पाँच तरहके? भिक्षुओ, कोई कोई

भिक्षु धूली देखकर ही हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नहीं है, ब्रह्मचर्य धारण किये नहीं रह सकता, वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी दुर्बलताको प्रकटकर, शिक्षाका त्यागकर पतित हो जाता है। यहाँ धूलीका क्या अर्थ है? भिक्षुओ, एक भिक्षु सुनता है कि अमुक गाँव या निगममें कोई स्त्री है या कुमारी है, जो सुन्दर है,दर्शनीय है, प्रासादिक है, वर्ण और शारीरिक गठनकी दृष्टिसे श्रेष्ठतर है। यह सुनकर वह हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नहीं, ब्रह्मचर्य धारण किये नहीं रह सकता। वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी दुर्बलताको प्रकटकर,शिक्षाका त्यागकर,पतित हो जाता है। यह यहाँ धूलिका अर्थ है। भिक्षुओ, जैसे वह योधा धूली देखकर ही हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खड़ा नहीं रह सकता, संग्राममें नहीं उतर सकता, वैसा ही भिक्षुओ मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमें यह पहली तरहका आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, कोई कोई भिक्षु धूली देखकर नहीं घबराता है, किन्तु ध्वजा, देखकर ही हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नहीं है, ब्रह्मचर्य धारण किये नहीं रह सकता, वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी दुर्बलताको प्रकट कर,शिक्षाका त्यागकर, पतित हो जाता है। यहाँ 'ध्वजा' का क्या अर्थ है? भिक्षुओ, एक भिक्षु यह सुनता ही नहीं है कि अमुक गाँव या निगममें कोई स्त्री है या कुमारी है, जो सुन्दर है, दर्शनीय है, प्रासादिक है, वर्ण और शरीरकी गठनकी दृष्टिसे श्रेष्ठतर है, बल्कि वह यह स्वयं देखता भी है कि अमुक गाँव या निगममें कोई स्त्री है, या कुमारी है,जो सुन्दर है, दर्शनीय है, प्रासादिक है, वर्ण और शरीरकी गठनकी दृष्टिसे श्रेष्ठतर है। वह उसे देखकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नहीं, ब्रह्मचर्य धारण किये नहीं रह सकता। वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी दुर्बलताको प्रकटकर, शिक्षाका त्यागकर, पतित हो जाता है। यह यहाँ ध्वजाका अर्थ है। भिक्षुओ, जैसे वह योधा धूली देखकर तो नहीं घबराता, किन्तु ध्वजा देखकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खड़ा नहीं रह सकता, संग्राममें नहीं उतर सकता, वैसा ही भिक्षुओ! मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओमें यह दूसरी तरहका आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, कोई कोई भिक्षु न धूलि देखकर घबराता है, न ध्वजा देखकर घबराता है, किन्तु ध्वनि सुनकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नहीं है, ब्रह्मचर्य धारण किये नहीं रह सकता, वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी दुर्बलताको प्रकट कर,

शिक्षाका त्याग कर, पतित हो जाता है। यहाँ 'ध्वनि' का क्या अर्थ है? भिक्षुओ एक भिक्षु आरण्य-वासी होता है,वृक्षकी छायाके नीचे रहने वाला होता है, शून्य-स्थानमें रहने वाला होता है, वहाँ उसके पास कोई स्त्री पहुँचती है,वह उसके साथ हँसी करती है, बातचीत करती है, छेड़ती है, नपुंसक कहकर चिढ़ाती है। वह स्त्रीके साथ हँसी करता हुआ, बातचीत करता हुआ, छेड़खानी करता हुआ, नपुंसक कहकर चिढ़ाया जाता हुआ, हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, रुकता नहीं, ब्रह्मचर्य धारण किये नहीं रह सकता। वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी दुर्बलताको प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर, पतित हो जाता है। यह यहाँ 'ध्वनि' का अर्थ है। भिक्षुओ, जैसे वह योधा न धूलि देखकर घबराता है,न ध्वजा देखकर घबराता है, किन्तु ध्वनि सुनकर हिम्मत हार देता है, पीछे हट जाता है, खड़ा नहीं रह सकता, संग्राम में नहीं उतर सकता ; वैसा ही भिक्षुओ, मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें यह तीसरी तरहका आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, कोई कोई भिक्षु न धूलि देखकर घबराता है, न ध्वजा देखकर घबराता है, न ध्वनि सुनकर घबराता है, किन्तु प्रहार मिलने पर हिम्मत हार देता है। यहाँ 'प्रहार' का क्या अर्थ है? भिक्षुओ, एक भिक्षु आरण्यवासी होता है, वृक्षकी छायाके नीचे रहने वाला होता है, शून्य स्थानमें रहने वाला होता है, वहाँ उसके पास कोई स्त्री पहुँचती है, जो साथ बैठती है, साथ लेटती है, ऊपर लेट जाती है। वह स्त्रीके साथ बैठा हुआ, साथ लेटा हुआ, नीचे लेटा हुआ, बिना शिक्षाका त्याग किये, बिना अपनी दुर्बलताको प्रकट किये, मैथुन-धर्मका सेवन करता है। यह यहाँ 'प्रहार' का अर्थ है। भिक्षुओ, जैसे वह योधा न धूलि देखकर घबराता है, न ध्वजा देखकर घबराता है,न ध्वनि सुनकर घबराता है, किन्तु प्रहार मिलने पर हिम्मत हार देता है। वैसा ही भिक्षुओ, मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें यह चौथी तरहका आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, कोई कोई भिक्षु न धूलि देखकर घबराता है, न ध्वजा देखकर घबराता हूँ, न ध्वनि सुनकर घबराता है, न प्रहार मिलने पर घबराता है, वह उस संग्राममें उतरकर संग्राम-विजयी हो, उसी संग्राम-भूमिके शिखर-स्थान पर रहता है। यहाँ संग्राम-विजयका क्या अर्थ है? भिक्षुओ, एक भिक्षु आरण्यवासी होता है, वृक्षकी छायाके नीचे रहने वाला होता है, शून्य स्थानमें रहने वाला होता हैं ; वहाँ उसके पास

कोई स्त्री पहुँचती है, जो साथ बैठती है, साथ लेटती है, ऊपर लेट जाती है। वह स्त्रीके साथ बैठा हुआ, साथ लेटा हुआ, नीचे लेटा हुआ अपने आपको उससे छुड़ा, अपने आपको उससे मुक्त कर जहाँ इच्छा होती है, उधर चल देता है।

वह एकान्त-स्थानमें जाकर रहता है—आरण्यमें, वृक्षकी छाया-तले,पर्वतपर, कंदरामें, गुफामें, श्मशानमें, जंगलमें, खुले आकाशके नीचे तथा प्रवालके ढेरपर। वह आरण्यमें, वृक्षकी छाया तले एकान्त-स्थानमें, पालथीमार, शरीरको सीधा रख, स्मृतिको सामने कर बैठता है।

वह सांसारिक लोभोंको छोड़ लोभ-रहित चित्तवाला हो विचरता है। चित्तसे लोभको दूर करता है। वह क्रोधको छोड़ क्रोध-रहित चित्तवाला हो, सभी प्राणियोंपर दया करता हुआ विचरता है। चित्तसे क्रोधको दूर करता है। वह आलस्यको छोड़ आलस्य-रहित हो, आलोक-संज्ञी, स्मृति तथा ज्ञानसे युक्त हो विचरता है। वह चित्तसे आलस्यको दूर करता है। वह उद्धतपने तथा पछतावेको छोड़ उद्धतपन-रहित शान्त-चित्त हो विचरता है। चित्तसे उद्धतपनको दूर करता है। वह संशयको छोड़ संशय-रहित हो विचरता है। वह कुशल-धर्मोंके विषयमें संदेह-रहित होता है। चित्तसे सन्देह दूर करता है।

वह चित्तके उपक्लेश, प्रज्ञाको दुर्बल करने वाले पाँच बंधनों (नीवरणों) को छोड़, काम-वितर्कसे रहित . . . . . चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है। जब उसका चित्त इस प्रकार एकाग्र हो जाता है, परिशुद्ध हो जाता है,स्वच्छ हो जाता है, अंगण (= मैल) रहित हो जाता है, क्लेश-रहित हो जाता है, मृदु हो जाता है, कमनीय हो जाता है, स्थिर हो जाता है. . . . तब वह उस चित्तको आस्रव-क्षय-ज्ञानकी ओर झुका देता है।

वह 'यह दुःख है' इसे यथार्थ रूपसे जानता है, 'यह दुःख-समुदय है' इसे यथार्थ रूपसे जानता है, 'यह दुःख-निरोध है', इसे यथार्थ-रूपसे जानता है, 'यह दुःख निरोधकी ओर ले जाने वाला मार्ग है', इसे यथार्थ-रूप से जानता है।

वह 'ये आस्रव हैं,' इसे यथार्थ-रूपसे जानता है, यह 'आस्रवों' का समुदय है, इसे यथार्थ-रूपसे जानता है, यह 'आस्रवों' का निरोध है, इसे यथार्थ रूपसे जानता है, यह 'आस्रव-निरोध'की ओर ले जाने वाला मार्ग है,इसे यथार्थ रूपसे जानता है। उसके इस प्रकार जानने, इस प्रकार देखनेके कारण कामास्रव भी चित्तसे दूर हो जाते हैं, भवास्रव भी चित्तसे दूर हो जाते हैं,अविद्यास्रव भी चित्तसे दूर हो जाते हैं। आस्रवोंसे विमुक्त होनेपर विमुक्त होनेका ज्ञान होता है। वह जान लेता है कि जन्म

(= मरण) का बंधन कट गया, ब्रह्मचर्य-वास (का उद्देश्य) पूरा हो गया, जो करना था कर लिया, अब शेष कुछ करणीय नहीं रहा। यह यहाँ 'संग्राम-विजयी' का अर्थ है।

भिक्षुओ, जैसे वह योधा न धूलीसे घबराता है, न पताकाओंसे घबराता है, न ध्वनि सुनकर घबराता है, न प्रहार मिलनेपर घबराता है, वह उस संग्राममें उतरकर संग्राम-विजयी हो, उसी संग्राम-भूमिके शिखर-स्थानपर पर रहता है। वैसा ही भिक्षुओ मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, ऐसा भी कोई कोई आदमी होता है, जिसकी उपमा किसी योधासे दी जा सकती है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें ये योधाओं के समान पाँच तरहके आदमी विद्यमान हैं।

भिक्षुओ, संसारमें पाँच प्रकारके योधा विद्यमान हैं। कौनसे पाँच प्रकारके? भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बांध, घोर संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे संग्राममें हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग मार डालते हैं, नष्ट कर डालते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह पहली प्रकारका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बांध, घोर-संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर डालते हैं। तब लोग ले जाते हैं। ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाते हैं। वह सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाये जाते समय, सगे-सम्बन्धियों तक पहुंचनेसे पहले ही मर जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी ढाल तलवार ले, तरकश बांध, घोर संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे संग्राममें हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले, उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर देते हैं। तब लोग उसे ले जाते हैं, ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाते हैं। सगे-सम्बन्धी उसकी सेवामें रहते हैं। उसकी परिचर्या करते हैं। वह सगे सम्बन्धियों द्वारा सेवा किये जाते समय, परिचर्या किये जाते समय, उसी जख्मके कारण मर जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकार का भी एक योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह तीसरी प्रकारका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाँध, घोर संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस

प्रकार उत्साहसे संग्राममें हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर देते हैं। तब लोग उसे ले जाते हैं, ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाते हैं। सगे-सम्बन्धी उसकी सेवामें रहते हैं, उसकी परिचर्या करते हैं। वह सगे-सम्बन्धियोंकी सेवा पाकर, परिचर्या लाभकर, उस कष्टसे मुक्त हो जाता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है। भिक्षुओ संसारमें यह चौथी प्रकारका योधा होता है।

फिर भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाँध, घोर संग्राममें उतरता है। वह उस संग्रामको जीतकर संग्राम-विजयी हो, संग्राम-भूमिके शिखर-स्थान पर ही रहता है। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है। भिक्षुओ, संसारमें यह पांचवी प्रकारका योधा होता है। भिक्षुओ, इस संसारमें ये पाँच प्रकारके योधा होते हैं।

इसी प्रकार भिक्षुओंमें भी ऐसे आदमी होते हैं जिनकी उपमा पाँच प्रकारके योधाओंसे दी जा सकती है। कौनसे पाँच प्रकारके? भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गाँव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्न समय (पहनकर) पात्र चीवर लेकर उसी गाँव या निगममें भिक्षाटनके लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर अरक्षित (असंयत) होता है, वाणी अरक्षित होती है तथा मन अरक्षित होता है, स्मृति अनुपस्थित होती है, इन्द्रियोंपर अधिकार नहीं होता है। वह वहाँ किसी स्त्रीको देखता है जिसने ढंगसे कपड़ा नहीं पहना होता या जो अच्छी तरह ढकी नहीं होती। जिसने ढंगसे कपड़ा नहीं पहना होता या जो अच्छी तरह ढकी नहीं होती, उस स्त्रीको देखकर उस भिक्षुके चित्तमें राग प्रविष्ट हो जाता है। चित्त रागके वशीभूत हो जानेके कारण वह बिना शिक्षा (= भिक्षु-नियमों) का त्याग किये, बिना दौर्बल्य प्रकट किये, मैथुन-धर्मका सेवन करता है। ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बांध, घोर संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे संग्राममें हिस्सा लेने वाले, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग मार डालते हैं, नष्ट कर डालते हैं। भिक्षुओ, मैं ऐसा ही इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस तरहका भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें यह पहला आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गाँव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्न समय (पहनकर) पात्र चीवर लेकर उसी गाँव या निगममें भिक्षाटनके

लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर अरक्षित (= असंयत) होता है, वाणी अरक्षित होती है तथा मन अरक्षित होता है, स्मृति अनुपस्थित होती है, इन्द्रियोंपर अधिकार नहीं होता है। वह वहाँ किसी स्त्रीको देखता है, जिसने ढंगसे कपड़ा नहीं पहना होता, या जो अच्छी तरह ढकी नहीं होती। जिसने ढंगसे कपड़ा नहीं पहना होता या जो अच्छी तरह ढकी नहीं होती, उस स्त्रीको देखकर उस भिक्षूके चित्तमें राग प्रविष्ट हो जाता है। रागके वशीभूत होनेके कारण उसका शरीर भी जलता है, उसका चित्त भी जलता है। उसके मनमें होता है कि मैं विहार जाकर भिक्षुओंसे कह दूँ कि आयुष्मानो! मैं रागके आधीन हूँ, मैं रागके वशीभूत हूँ, मैं ब्रह्मचर्यको धारण किये नहीं रह सकता। मैं शिक्षाका त्यागकर, अपने दौर्बल्यको प्रकट कर, हीन-मार्गपर चलूँगा। वह विहारको जाते समय, बिना विहार पहुँचे ही, रास्तेमें ही, शिक्षा-सम्बन्धी अपनी दुर्बलताओंको प्रकट कर, शिक्षा (= भिक्षु-नियमों) का त्यागकर, हीन-मार्गी हो जाता है। ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तरलवार ले, तरकश बांध, घोर संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे संग्राममें हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर डालते हैं। तब लोग उसे ले जाते हैं। ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियों के पास ले जाते हैं। वह सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाये जाते समय, सगे-सम्बन्धियोंतक पहुंचनेसे पहले ही मर-जाता है। भिक्षुओ, मैं ऐसा ही उस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस तरहका भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें यह दूसरा आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गाँव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्ण समय (पहनकर) पात्र-चीवर लेकर, उसी गाँव या निगममें भिक्षाटनके लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर अरक्षित (= असंयत) होता है, वाणी अरक्षित होती है तथा मन अरक्षित होता है, स्मृति अनुपस्थित होती है, इन्द्रियोंपर अधिकार नहीं होता है। वह वहाँ किसी स्त्रीको देखता है, जिसने ढंगसे कपड़ा पहना नहीं होता, या जो अच्छी तरह ढकी नहीं होती, जिसने ढंगसे कपड़ा नहीं पहना होता या जो अच्छी तरह ढकी नहीं होती, उस स्त्रीको देखकर उस भिक्षुके चित्तमें राग प्रविष्ट हो जाता है। रागके वशीभूत होनेके कारण, उसका शरीर भी जलता है, उसका चित्त भी जलता है। उसके मनमें होता है कि मैं विहार जाकर भिक्षुओंसे कह दूँ कि आयुष्मानो, मैं रागके आधीन हूँ, मैं रागके वशीभूत हूँ, मैं ब्रह्मचर्यको धारण किये नहीं रह सकता। मैं शिक्षाका त्यागकर, अपने दौर्बल्यको प्रकट कर, हीन-मार्गपर चलूँगा। वह विहार

पहुंचकर भिक्षुओंसे कहता है—आयुष्मानो ! मैं रागके आधीन हूँ, मैं रागके वशीभूत हूँ, मैं ब्रह्मचर्यको धारण किये नहीं रह सकता। मैं शिक्षाका त्याग कर, अपने दौर्बल्यको प्रकट कर, हीन-मार्गपर चलूँगा। उसे ब्रह्मचारी उपदेश देते है, उसका अनुशासन करते हैं—'आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोंको अल्प-स्वाद वाले कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं ; आयुष्मान् भगवान्ने काम-भोगोंको अस्थि-कंकालके सदृश कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं ; आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोंको मांस-पेशियोंके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं ; आयुष्मान् ! भगवानने काम-भोगोंको तिनकोंकी मशालके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं ; आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोंको अँगारोंके गढ़ेके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोंको स्वप्नके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान् भगवान्ने काम-भोगोंको मांगी हुई भीखके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोंको वृक्षके फलोंके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोंको बधिक-गृहके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान् ! भगवान्ने काम-भोगोंको शक्तिके काँटके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान् भगवान्ने काम-भोगोंको साँपके सिरके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं। आयुष्मान् ! ब्रह्मचर्यमें ही रमण करें। आयुष्मान् ! अपने शिक्षा-दौर्बल्यको प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर, हीन-मार्गी न बनें।' साथियों द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जाने पर, अनुशासित किये जाने पर उसने कहा—"आयुष्मानो ! भगवानने कितना भी कहा हो कि काम-भोग अल्प-स्वाद वाले होते हैं, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; मैं ब्रह्मचर्यको धारण किये नहीं रह सकता। मैं अपने शिक्षा-दौर्बल्यको प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर, हीन-मार्गी बनूँगा।" वह शिक्षा-दौर्बल्यको प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर, हीन-मार्गी बन जाता

है। ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बाँध, घोर-संग्राममें उतरता है। वह उस संग्राममें, उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे, संग्राममें हिस्सा लेने वाले, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर डालते हैं। तब लोग उसे ले जाते हैं। ले जाते हुए सगे-सम्बन्धियोंके पास ले जाते हैं। उसके सगे-सम्बन्धी उसकी सेवा शुश्रूषा करते हैं, परिचर्या करते हैं। सगे-सम्बन्धियों द्वारा सेवा-शुश्रूषा किया जाता हुआ, परिचर्या किया जाता हुआ वह उसी जखमके कारण मर जाता है। भिक्षुओ, मैं ऐसा ही उस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस तरहका भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें यह तीसरा आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गाँव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्ण समय (पहनकर) पात्र चीवर लेकर,उसी गाँव या निगममें भिक्षाटनके लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर अरक्षित (= असंयत) होता है, वाणी अरक्षित होती है तथा मन अरक्षित होता है, स्मृति अनुपस्थित होती है, इन्द्रियों पर अधिकार नहीं होता है। वह वहाँ किसी स्त्री को देखता है, जिसने ढंगसे कपड़ा पहना नहीं होता, या जो अच्छी तरह ढकी नहीं होती। जिसने ढंगसे कपड़ा पहना नहीं होता, या जो अच्छी तरह ढकी नहीं होती, उस स्त्रीको देखकर उस भिक्षुके चित्तमें राग प्रविष्ट हो जाता है। रागके वशीभूत होनेके कारण उसका शरीर भी जलता है, उसका चित्त भी जलता है। उसके मनमें होता है कि मैं विहार जाकर भिक्षुओंसे कह दूँ कि आयुष्मानो! मैं रागके आधीन हूँ, मैं रागके वशीभूत हूँ, मैं ब्रह्मचर्यको धारण किये नहीं रह सकता। मैं शिक्षा-का त्यागकर, अपने दौर्बल्यको प्रकट कर, हीन-मार्गपर चलूँगा। वह विहार जाकर भिक्षुओंसे कह देता है—"आयुष्मानो! मैं रागके आधीन हूँ, मैं रागके वशीभूत हूँ, मैं ब्रह्मचर्यको धारण किये नहीं रह सकता। मैं शिक्षा-दौर्बल्यको प्रकट कर, शिक्षाका त्याग कर, हीन-मार्गी बनूँगा।" उसे उसके साथी उपदेश देते हैं, उसका अनुशासन करते हैं—'आयुष्मान्! भगवान्ने काम-भोगोंको अल्प-स्वाद वाले कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान्! भगवान्ने काम-भोगोंको अस्थि-कंकालके सदृश कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान्! भगवान्ने काम-भोगोंको मांसकी पेशियोंके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं; आयुष्मान्! भगवान्ने काम-भोगोंको तिनकोंकी मशालके समान कहा. . . . भगवान्ने काम-भोगोंको अंगारोंके गढ़ेके

समान कहा है. . . . .भगवान्ने काम-भोगोंको स्वप्नके समान कहा है. . . . .भग-वान्ने काम भोगोंको मांगी हुई भीखके समान कहा है. . . .भगवान्ने काम भोगोंको वृक्षके फलोंके समान कहा है. . . . . .भगवान्ने काम भोगोंको वधिक-गृहके समान कहा है. . . . . . .भगवान्ने काम-भोगोंको शक्तिके काँटेके समान कहा है. . . . भगवान्ने काम-भोगोंको साँपके सिरके समान कहा है, बहुत दुःख देने वाले, बहुत हैरान करने वाले, इनके दुष्परिणाम बहुत अधिक हैं। आयुष्मान्! ब्रह्मचर्यमें ही रमण करें। आयुष्मान्! अपने शिक्षा-दौर्बल्यको प्रकटकर, शिक्षाका त्यागकर, हीन-मार्गी न बनें।" साथियों द्वारा इस प्रकार उपदेश दिये जाने पर, अनुशासित किये जानेपर उसने कहा—"आयुष्मानो! मैं प्रयत्न करूँगा। आयुष्मानो! मैं धारण करूँगा। आयुष्मानो! मैं रमण करूँगा। आयुष्मानो! मैं अब शिक्षा दौर्बल्य प्रकट कर, शिक्षाका त्यागकर हीन-मार्गी नहीं बनूँगा।" ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल-तलवार ले, तरकश बांध, घोर संग्राममें उतरता है। वह इस संग्राममें उत्साहसे हिस्सा लेता है, परिश्रम करता है। इस प्रकार उत्साहसे संग्राममें हिस्सा लेने, परिश्रम करने वाले उस आदमीको दूसरे लोग जख्मी कर देते हैं। तब लोग उसे ले जाते हैं; ले जाते हुए सगे सम्बन्धियोंके पास ले जाते हैं। सगे-सम्बन्धी उसकी सेवामें रहते हैं, उसकी परिचर्या करते हैं। वह सगे-सम्बन्धियोंकी सेवा पाकर, परिचर्या लाभ कर, उस कष्टसे मुक्त हो जाता है। भिक्षुओ, ऐसा ही इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस तरहका भी कोई कोई आदमी होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें यह चौथा आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु किसी गाँव या निगमके आश्रयसे विहार करता है। वह पूर्वाह्ण समय (पहनकर) पात्र चीवर लेकर उसी गाँव या निगममें भिक्षाटनके, लिये प्रवेश करता है—उसका शरीर रक्षित (=संयत) होता है, वाणी रक्षित होती है, मन रक्षित होता है, स्मृति उपस्थित होती है, इन्द्रियोंपर अधिकार होता है। वह अपनी आँखसे किसी सुन्दर रूपको देखता है, (लेकिन) उसमें न आँख गड़ाता है, न मजा लेता है। क्योंकि कहीं चक्षुके असंयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल पाप-मय ख्याल घर न कर लें। उन पाप-मय विचारोंको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपनी आँखको काबूमें रखता है, अपनी आँखपर संयम रखता है।

वह अपने कानसे सुन्दर शब्द सुनता है. . . . .नासिकासे सुगन्धि सूँघता है, जिह्वासे रस चखता है. . . . . .शरीरसे स्पर्श करता है. . . . .मनसे सोचता है

(लेकिन) उसमें न मन गड़ाता है, न मजा लेता है। क्योंकि कहीं मनके असंयमसे लोभ-द्वेष आदि अकुशल, पापमय विचार घर न कर लें। इन पाप-मय विचारोंको दूर रखनेके लिये प्रयत्न करता है, अपने मनको काबूमें रखता है, अपने मनपर संयम रखता है। वह भात ग्रहण कर चुकनेके बाद, पिण्डपातसे वापिस लौट आनेके बाद, एकान्त-स्थानमें रहता है—आरण्य, वृक्षके नीचे, पर्वत पर, कन्दरामें, गिरि-गुफामें, श्मशानमें, वनमें, खुले आकाशके नीचे तथा पुवालके ढेरपर। वह आरण्य-गत होकर, वृक्षकी छायाके नीचे बैठकर, अथवा एकान्त-स्थानमें आसन मारकर, शरीरको सीधा कर, स्मृतिको सामने कर बैठता है। वह सांसारिक लोभको छोड़, लोभ-रहित चित्त वाला हो, विचरता है।.....वह चित्तके उपक्लेश, प्रज्ञाको दर्बल करनेवाले पाँच बन्धनोंको छोड़, काम-वितर्कसे रहित हो.....चतुर्थ-ध्यानको प्राप्त करता है।

जब उसका चित्त इस प्रकार समाहित होता है, परिशुद्ध होता है, स्वच्छ होता है, निर्दोष होता है, निर्मल होता है, मृदु हो जाता है, कमनीय हो जाता है, स्थिर हो जाता है, तब वह उसे आस्रवोंके क्षय-ज्ञानकी ओर झुकाता है। यह दुःख है, इसे वह यथार्थ रूपसे जानता है.....उससे आगे पुनरुत्पत्ति नहीं है, यह जानता है। ठीक वैसे ही जैसे भिक्षुओ, एक आदमी ढाल तलवार ले, तरकश बाँध, घोर संग्राममें उतरता है। वह इस संग्रामको जीतकर, संग्राम विजयी हो, संग्राम-भूमिके शिखर-स्थानपर ही रहता है। भिक्षुओ, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, इस प्रकारका भी एक योधा होता है। भिक्षुओ, भिक्षुओंमें यह पाँचवाँ आदमी होता है, जिसकी उपमा योधासे दी जा सकती है।

भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय हैं, जिनको देखते हुए आरण्यक-भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करने के लिये। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जंगलमें विचर रहा हूँ। अकेले ही जंगलमें विचरते समय मुझे साँप भी डँस ले सकता है, बिच्छु भी डँस ले सकता है, कनखजूरा भी डँस ले सकता है और इनसे मैं मर भी जा सकता हूँ। मुझपर यह विपत्ति आ सकती है। अच्छा हो कि मैं प्रयत्न करूं, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह पहला भावी-भय है, जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये, यह उचित है कि वह अप्रमादी

हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे, अप्राप्त को प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जंगलमें विचर रहा हूँ। अकेले ही जंगलमें विचरते समय मैं फिसल कर गिर भी सकता हूँ, खाया-पिया भी प्रतिकूल पड़ सकता है, मेरा पित्त भी प्रकुप्त हो सकता है, मेरा कफ भी प्रकुप्त हो सकता है, अथवा स्वाँस ली हुई मेरी वायु भी प्रकुप्त हो सकती है और इनसे मैं मर भी जा सकता हूँ। मुझपर यह विपत्ति आ सकती है। अच्छा हो कि मैं प्रयत्न करूं, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये,अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जंगलमें विचर रहा हूँ। अकेले ही जंगलमें विचरते समय मैं किसी शिकारी जानवरके सामने भी आ सकता हूँ, सिंहके सामने भी आ सकता हूँ, व्याघ्रके सामने भी आ सकता हूँ, चीतेके सामने भी आ सकता हूँ, भालूके सामने भी आ सकता हूँ तथा लकड़-बग्घेके सामने भी आ सकता हूँ। वे मुझे मार भी डाल सकते हैं। मुझपर यह विपत्ति आ सकती है। अच्छा हो कि मैं प्रयत्न करूं, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह तीसरा भावी-भय है, जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात करनेके लिय।

फिर भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जंगलमें विचर रहा हूँ, अकेले ही जंगलमें विचरते समय मेरी किसी चोर या अचोरसे भेंट हो जा सकती है। वह मेरी जान भी ले सकता है। उससे

मेरा मरण भी हो सकता है। मुझपर यह विपत्ति आ सकती है। अच्छा हो कि मैं प्रयत्न करूं, अप्राप्त को प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात करनेके लिये। भिक्षुओ, यह चौथा भावी-भय है जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये, यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे, अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षातकृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक आरण्यवासी भिक्षु, इस प्रकार विचार करता है—मैं अब अकेला ही जंगलमें विचर रहा हूँ। जंगलमें बहुतसे कष्ट देने वाले अमनुष्य (—प्रेत आदि) रहते हैं। वे मेरी जान भी ले सकते हैं। इससे मेरा मरण भी हो सकता है। मुझपर यह विपत्ति आ सकती है। अच्छा हो कि मैं प्रयत्न करूँ अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृत को साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह पाँचवाँ भावी-भय है, जिसको देखते हुए आरण्यक भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्त को प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनेके लिये।

भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय हैं, जिनको देखते हुए भिक्षुओंके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये अनधिकृत्पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षत्कृतको साक्षात् करनेके लिये। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—अभी तो मैं कुमार हूँ, तरूण हूँ, एकदम काले बाल हैं, पूर्वावस्था है, भद्र-यौवनसे युक्त हूँ। लेकिन समय आता है जब इस शरीरको बुढ़ापा व्याप जाता है। बूढ़े हो जानेपर, जरासे अभिभूत हो जानेपर, बुद्धोंके शासनको मनमें धारण करना आसान नहीं और एकान्त जंगलमें रहना भी आसान नहीं। आगे मेरी वह अवस्था होनेवाली है, जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगनेवाली नहीं है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करूं अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनेके लिये। उस धर्म (=चित्तावस्था)को प्राप्तकर लेनेपर मैं बूढ़ा होनेपर भी सुख पूर्वक रहूँगा। भिक्षुओ, यह पहला भावी-भय है, जिसे देखते हुए भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्कृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—अभी तो मैं निरोग (=अल्पाबाधा वाला) हूँ, स्वस्थ हूँ, जठराग्नि-स्थली अच्छी है, न अति-शीत, न अति उष्ण, मध्यम सामर्थ्यसे युक्त। लेकिन समय आता है, जब इस शरीरको रोग लग जाता है। रोगी हो जानेपर, रोग-ग्रस्त हो जानेपर, बुद्धोंके शासनको धारण करना आसान नहीं है और एकान्त जंगलमें रहना भी आसान नहीं है। आगे मेरी वह अवस्था होने वाली है, जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगने वाली नहीं है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करूँ अप्राप्त की प्राप्ति के लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनेके लिये। उस धर्म (= चित्तावस्था) को प्राप्त कर लेनेपर,मैं रोगी होनेपर भी सुख पूर्वक रहूँगा। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है जिसे देखदेते हुए भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्न-शील हो, कोशिश करे अप्राप्त को प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनके लिये, असाक्षातकृतको साक्षात् करनके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—अभी तो सुकाल है, अच्छी उपजका समय है, आसानीसे भिक्षा मिल जानेका काल है, आहार एकत्र करके जीना आसान है। लेकिन ऐसा समय होता है जब दुष्काल पड़ जाता है। अच्छी उपज नहीं होती, आसानीसे भिक्षा नहीं मिलती, आहार एकत्र करके जीना आसान नहीं रहता। जब दुर्भिक्ष पड़ता है, तो मनुष्य जहाँ दुर्भिक्ष नहीं होता, वहाँ चले जाते हैं। वहाँ भीड़में रहना होता है, बहुत लोगोंके साथ रहना होता है। लोगोंसे घिरे रहनेपर,बुद्धोंके शासनको धारण करना आसान नहीं है,और एकान्त जंगलमें रहना भी आसान नहीं है। आगे मेरी वह अवस्था होने वाली है, जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगने वाली नहीं है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करूं, अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये,असाक्षात् कृतको साक्षात् करनेके लिये। इस धर्म (= चित्तावस्था) को प्राप्त कर लेनेपर मैं दुर्भिक्ष होनेपर भी सुख-पूर्वक रहूँगा। भिक्षुओ, यह तीसरा भावी-भय है, जिसे देखते हुए भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनके लिये, अनधिकृतपर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—इस समय तो मनुष्य इकट्ठे, मिलजुलकर, बिना झगड़े, दूध-पानी की तरह मिले हुये, एक दूसरेको प्रेम भरी नजरसे देखते हुये रह रहे हैं। लेकिन ऐसा समय आता है जब भय उत्पन्न होता है, जब

जंगली मनुष्य प्रकुप्त हो जाते हैं, जब जनपदके मनुष्योंको रथोंके पहियों पर इधर उधर भटकना पड़ता है। भय उत्पन्न होनेपर मनुष्य जहाँ निर्भय-स्थल होता है, वहाँ चले जाते हैं। वहाँ भीड़में रहना होता है, बहुत लोगोंके साथ रहना होता है। लोगोंसे घिरे रहने पर बुद्धोंके शासनको धारण करना आसान नहीं है, और एकान्त जंगलमें रहना भी आसान नहीं है। आगे मेरी वह अवस्था होने वाली है जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगने वाली नहीं है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं तुरन्त प्रयत्न आरंभ करूँ अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृत को साक्षात् करनेके लिये। इस धर्म (= चित्तावस्था) को प्राप्त कर लेने पर मैं भयके उत्पन्न होने पर भी सुख पूर्वक रहुंगा। भिक्षुओ, यह चौथा भावी-भय है जिसे देखते हुये भिक्षुके लिये यह उचित है......असाक्षात्-कृतको साक्षात् करनेके लिये।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु इस प्रकार विचार करता है—इस समय तो संघ इकट्ठा, मिलजुलकर, बिना झगड़े, समान उद्देश्यको लेकर सुखपूर्वक विहार कर रहा है। लेकिन ऐसा समय आता है जब संघ-भेद हो जाता है। संघ-भेद हो जाने पर बुद्धोंके शासनको धारण करना आसान नहीं है और एकान्त जंगलमें रहना भी आसान नहीं है। आगे मेरी वह अवस्था होने वाली है जो अनिष्टकर है, असुन्दर है तथा अच्छी लगने वाली नहीं है। मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं तुरन्त प्रयत्न आरम्भ करूं अप्राप्त की प्राप्तिके लिये लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात् कृत को साक्षात् करनेके लिये। इस धर्म (= चित्तावस्था) को प्राप्त कर लेने पर मैं संघ-भेद हो जाने पर भी सुख पूर्वक रहुँगा। भिक्षुओ, यह पाँचवा भावी-भय है, जिसे देखते हुये भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये,असाक्षात्-कृत को साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय हैं, जिनको देखते हुये भिक्षुके लिये यह उचित है कि वह अप्रमादी हो, प्रयत्नशील हो, कोशिश करे अप्राप्तको प्राप्त करनेके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतको साक्षात् करने केलिये।

भिक्षुओ, पाँच भावी-भय हैं जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुए हैं किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होंगे। उनको जानना चाहिये। उन्हें जानकर उन्हें रोकनेका प्रयास करना चाहिय। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होंगें जिन्होंने न शरीरको संमत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा,

न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे दूसरोंको उपसम्पन्न करेंगे, किन्तु वे उन्हें शील, चित्त और प्रज्ञाके विषयमें शिक्षित न कर सकेंगे। इस लिये वे भी ऐसे ही होंगे जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। फिर वे स्वयं ऐसे होकर, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा, दूसरोंको उपसम्पन्न करेंगे। किन्तु वे उन्हें शील, चित्त और प्रज्ञाके विषयमें शिक्षित न कर सकेंगे। इस लिये वे भी ऐसे ही होंगे, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनय (=आचरण) की मलीनता हुई, आचरणकी मलीनतासे धर्मकी मलीनता। भिक्षुओ, यह पहला भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होंगे जिन्होंन न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वयं ऐसे होते हुए, जिन्होंने न शरीर को संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका का अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा, दूसरोंको अपने आश्रयमें रखेंगे। किन्तु, वे उन्हें शील, चित्त और प्रज्ञाके विषयमें शिक्षित न कर सकेंगे। इसलिये वे भी ऐसे ही होंगे, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वयं ऐसे होते हुए, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचार को पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा, दूसरोंको अपने आश्रयमें रखेंगे। किन्तु, वे उन्हें शील, चित्त और प्रज्ञाके विषयमें शिक्षित न कर सकेंगे। इस लिये वे भी ऐसे ही होंगे, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनय (=आचरण) की मलीनता हुई, विनयकी मलीनतासे धर्मकी

मलीनता। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर, उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होंग,जिन्होंने न शरीरको संयत रखनका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वयं ऐसे होते हुए, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा, अभिधर्म-कथा तथा वेदल्ल-कथा (=वैथुल्य कथा) कहते हुए, पाप-मार्गपर आरूढ़ होते हुए भी वे सावधान नहीं होंगे। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनय (=आचरण) की मलीनता हुई, विनयकी मलीनतासे धर्मकी मलीनता। भिक्षुओ, यह तीसरा भावी-भय है जो अभी तो तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होंगे, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वयं ऐसे होते हुए, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञा का भ्यास किया होगा, जो तथागत द्वारा भाषित, गम्भीर, गम्भीर अर्थ वाले, लोकुत्तर तथा शुन्यता-प्रतिसंयुक्त सूक्त होंगे उनका उपदेश दिये जानेपर सुनेंगे नहीं, ध्यान देंगे नहीं, जाननेके लिये चित्त समाहित नहीं करेंगे, न उन धर्मोंको सीखने योग्य मानेंगे और न उनको पाठ करने योग्य मानेंगे। लेकिन जो ऐसे सूक्त होंगे जो कविकृत होंगे, जो काव्य-रस युक्त होंगे, जो सुन्दर अक्षरों तथा सुन्दर व्यंजनों वाले (=अनु-प्रासयुक्त) होंगे, जो बाह्य होंगे, जो श्रावक-भाषित होंगे, ऐसे सूक्तोंका उपदेश दिये जानेपर सुनेंगे, ध्यान देंगे, जाननेके लिये चित्त समाहित करेंगे, उन धर्मोंको सीखने योग्य मानेंगे और उनको पाठ करने योग्य मानेंगे। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनयकी मलीनता हुई, विनयकी मलीनतावेसे धर्मकी मलीनता। भिक्षुओ, यह चौथा भावी-भय है जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, आगे चलकर ऐसे भिक्षु होंगे, जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाका अभ्यास किया होगा। वे स्वयं ऐसे होते हुए जिन्होंने न शरीरको संयत रखनेका अभ्यास किया होगा, न सदाचारको पालन करनेका अभ्यास किया होगा, न चित्ताभ्यास किया होगा और न प्रज्ञाभ्यास किया होगा, स्थविर भिक्षु बहुत चीजोंके जोड़ने बटोरने वाले हो जायेंगे, शिथिल-प्रयत्न हो जायेंगे, पतनकी ओर अग्रसर होने वाले हो जायेंगे, एकान्त जीवनकी ओरसे उदासीन हो जायेंगे, वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतका साक्षात् करनेके लिये प्रयत्नशील न होंगे। उनका अनुकरण करने वाले लोग भी वैसे ही होंगे। वे भी बहुत चीजोंके जोड़ने बटोरने वाले हो जायेंगे। शिथिल-प्रयत्न हो जायेंग, पतनकी ओर अग्रसर होने वाले हो जायेंगे, एकान्त-जीवनकी ओरसे उदासीन हो जायेंगे, वे अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये, असाक्षात्-कृतका साक्षात् करनेके लिये प्रयत्न-शील न होंगे। भिक्षुओ, यह धर्मकी मलीनतासे विनयकी मलीनता हुई, विनयकी मलीनतासे धर्मकी मलीनता। भिक्षुओ, यह पाँचवां भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसे जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये। भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय हैं, जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होंगे। उनको जानना चाहिये। उन्हें जानकर उन्हें रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच भावी-भय हैं,जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होंगे। उनको जानना चाहिये। उन्हें जानकर उन्हें रोकनेका प्रयास करना चाहिये। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, भविष्यमें भिक्षु अच्छे चीवरकी इच्छा करने वाले होंगे। वे अच्छे चीवरकी इच्छा करने वाले होनेके कारण पंसु-कूल-चीवरोंको त्याग देंगे, वे वनोंके एकान्त शयनासनोंको त्याग देंगे, वे ग्राम-निगम राजधानियोंमें जाकर निवास करेंगे, वे चीवरके लिये नाना प्रकारके अकरणीय-परियेषण करेंगे। भिक्षुओ, यह पहला भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिय। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, भविष्यमें भिक्षु अच्छे भोजनकी इच्छा करने वाले होंगे। वे अच्छे भोजनकी इच्छा करने वाले होने के कारण, भिक्षाटनसे विमुख हो जायेंगे, वे वनोंके एकान्त शयनासनको त्याग देंगे। वे ग्राम-निगम-राजधानियोंमें जाकर

निवास करेंगे। वे जिह्वाग्रसे बढ़िया बढ़िया रसोंकी खोज करते रहेंगे। वे अच्छे भोजनके लिये नाना प्रकारके अकरणीय-पर्येषण करेंगे। भिक्षुओ, यह दूसरा भावी-भय है जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, भविष्यमें भिक्षु अच्छे शयनासनकी कामना करने वाले होंगे। वे अच्छे शयनासनकी इच्छा करने वाले होनेके कारण, वृक्षोंकी छाया-तले रहनेसे विमुख हो जायेंगे। वे वनोंके एकान्त शयनासनको त्याग देंगे। वे ग्राम-निगम-राजधानियोंमें जाकर निवास करेंगे। वे (= बढ़िया) शयनासनके लिये नाना प्रकारके अकरणीय-पर्येषण करेंगे। भिक्षुओ, यह तीसरा भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, भविष्यमें भिक्षु भिक्षुणियोंके साथ, शैक्ष्यमानोंके साथ, श्रमणुद्देश्योंके साथ बहुत हिल-मिलकर रहेंगे। भिक्षुओ, जब भिक्षुओंका भिक्षुणियोंके साथ, शैक्षमानोंके साथ, श्रमणुद्देश्योंके साथ बहुत हेल-मेल बढ़ जायगा तो फिर यही आशा करनी चाहिये कि वे बेमनसे ब्रह्मचर्य-वास करेंगे, अथवा चित्त-मैल सम्बन्धी किसी दोषके भागी बनेंगे। अथवा भिक्षु-जीवन (= शिक्षा) का त्याग कर हीन-मार्गी बन जायेंगे। भिक्षुओ, यह चौथा भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

फिर भिक्षुओ, भविष्यमें भिक्षु आरामिक (= विहार-कर्मी) और श्रमणुद्देश्योंके साथ बहुत हिल-मिलकर रहेंगे। भिक्षुओ, आरामिकों तथा श्रमणुद्देश्योंका संसर्ग हो जाने पर यह आशा करनी चाहिये कि वे नाना प्रकारके संग्रह-परिभोगोंसे युक्त हो विहार करेंगे। वे पृथ्वीपर और हरियावलमें भी बड़े-बड़े काम-काज करेंगे। भिक्षुओ, यह पाँचवाँ भावी-भय है, जो अभी तो उत्पन्न नहीं हुआ है, किन्तु भविष्यमें उत्पन्न होगा। उसको जानना चाहिये। उसे जानकर उसे रोकनेका प्रयास करना चाहिये।

(९) स्थविर वर्ग

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता, उनके गौरवका भाजन नहीं रहता तथा उनके आदरका पात्र नहीं रहता। कौनसी पाँच बातें? वह अनुराग के विषयोंमें अनुरक्त होता है, द्वेष करनेके विषयोंमें द्वेष करता है, मोहके विषयोंमें

मूढ़ताको प्राप्त होता है,कोप करनेके विषयोंमें कुपित होता है तथा अहंकार (= मद) के विषयोंमें अहंकारको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जिस स्थाविरमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता,उनके गौरवका भाजन नहीं रहता तथा उनके आदरका पात्र नहीं रहता।

भिक्षओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन रहता है तथा उनके आदरका पात्र रहता है। कौन सी पांच बातें? वह अनुरागके विषयोंमें अनुरक्त नहीं होता है, द्वेष करनेके विषयोंमें द्वेष नहीं करता है, मोहके विषयोंमें मूढ़ताको नहीं प्राप्त होता है, कोप करनेके विषयोंमें कुपित नहीं होता है तथा अहंकार (= मद) के विषयोंमें अहंकारको नहीं प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविरमें ये पांच बातें होती है, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन रहता है तथा उनके आदरका पात्र रहता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्म-चारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता, उनके गौरवका भाजन नहीं रहता, तथा उनके आदरका पात्र नहीं रहता। कौनसी पाँच बातें? वह वीतराग नहीं होता, वह वीत-द्वेष नहीं होता, वह वीत-मोह नहीं होता, वह ढोंगी होता है, वह ईर्षालु होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता, उनके गौरवका भाजन नहीं रहता तथा उनके आदरका पात्र नहीं रहता।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुसें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पाँच बातें? वह वीत-राग होता है। वह वीत-द्वेष होता है, वह वीत-मोह होता है, वह ढोंगी नहीं होता है तथा वह ईर्षालु नहीं होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता ह तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्म-चारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता है, उनके गौरवका भाजन नहीं होता है तथा उनके आदरका पात्र नहीं होता है। कौनसी पाँच बातें? वह ढोंगी होता है, बकवासी होता है, बाह्य-लक्षणोंमें उलझ जाने वाला होता है, जादू-टोना

करने वाला होता है, लाभ और अधिक-लाभ खोजने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता है, उनके गौरवका भाजन नहीं होता है तथा उनके आदरका पात्र नहीं होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है, तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पाँच बातें? वह ढोंगी नहीं होता है, वह बकवासी नहीं होता है, वह बाह्य-लक्षणोंमें उलझ जाने वाला नहीं होता है, वह जादू-टोना करने वाला नहीं होता है, वह लाभ और अधिक लाभ खोजने वाला नहीं होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता हैं।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता है, उनके गौरवका भाजन नहीं होता है तथा उनके आदरका पात्र नहीं होता है। कौनसी पाँच बातें? वह अश्रद्धावान् होता है, निर्लज्ज होता है, पाप-भीरू नहीं होता है, आलसी होता है, मूर्ख होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता है, उनके गौरवका भाजन नहीं होता है तथा उनके आदरका पात्र नहीं होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पांच बातें? वह श्रद्धावान् होता है, लज्जाशील होता है, पाप-भीरु होता है, अप्रमादी होता है, तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदर का पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता है, उनके गौरवका भाजन नहीं होता है तथा उनके आदरका पात्र नहीं होता है। कौनसी पांच बातें? वह रूपोंको सहनेमें समर्थ नहीं होता, शब्दोंको सहनेमें समर्थ नहीं होता, रसोंको सहनेमें समर्थ नहीं होता, गन्धोंको सहनेमें समर्थ नहीं होता तथा स्पर्शोंको सहनेमें समर्थ नहीं होता। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता है, उनके गौरव का भाजन नहीं होता है तथा उनके आदरका पात्र नहीं होता हैं।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्म-चारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पांच बातें? वह रूपोंके सहनेमें समर्थ होता है, शब्दोंके सहनेमें समर्थ होता है, रसोंके सहनेमें समर्थ होता है, गन्धोके सहनेमें समर्थ होता है तथा स्पर्शोंके सहनेमें समर्थ होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है,उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है, तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्म-चारियोंका प्रिय हो जाता हैं, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। वह अर्थ-अभिज्ञा (=प्रतिसम्भिदा) प्राप्त होता है, धर्म-अभिज्ञा-प्राप्त होता है, निरुक्ति-अभिज्ञा प्राप्त होता है, प्रतिभान-अभिज्ञा प्राप्त होता है। अपने सब्रह्मचारियोंके जो छोटे-बड़े काम होते हैं, उनमें आलस्य-रहित होता है, उनको सम्पन्न करनेमें, उनका संविधान करनेमें, उनके करनेका उपाय सोचनेमें समर्थ होता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्म-चारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरवका भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है। कौनसी पाँच बातें? वह शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमोंका पालन करने वाला, नैतिक जीवन व्यतीत करने वाला, छोटेसे छोटे दोषके करनेमें भी भयके मानने वाला, शिक्षापदोंको अच्छी प्रकार सीखने वाला। वह बहु-श्रुत होता है, श्रुतके धारण करने वाला, श्रुतके साथ रहने वाला। जो ऐसे धर्म (=देशना) होते हैं जिनका आदि भी कल्याणकारी होता है, मध्य भी कल्याणकारी होता है, अन्त भी कल्याणकारी होता है, जो अर्थ-युक्त और व्यंजन-युक्त होते हैं, जो परिपूर्ण रूप से परिशुद्ध ब्रह्मचर्यकी प्रशंसा करते हैं, उसके द्वारा वैसे धर्म बहुश्रुत होते हैं, धारण किये गये होते हैं, वाणी द्वारा परिचित किये गये होते हैं, मन द्वारा अनु-प्रेक्षित होते हैं तथा (प्रज्ञा-) दृष्टि द्वारा भली प्रकार हृदयंगम किये होते हैं। उसकी वाणी कल्याणी होती है,वह प्रियकर वाणी बोलन वाला होता है,विश्वस्त-वाणी, निर्दोष तथा अर्थको प्रकट करने वाली। चारों चैतसिक ध्यानोंको जो यहीं इसी शरीरमें सुख देन वाले हैं, वह अनायास प्रभूत मात्रामें प्राप्त करने वाला होता है। वह आस्रवों का क्षय कर, अनास्रव चित्तकी विमुक्ति, प्रज्ञाकी विमुक्ति को, इसी जन्ममें स्वयं जानकर, साक्षात् कर, प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह अपने साथी ब्रह्मचारियोंका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनके गौरव का भाजन होता है तथा उनके आदरका पात्र होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें (एक साथ) होती हैं वह बहुत जनोंके अहितका कारण होता है, बहुत जनोंके असुखका कारण होता है, बहुत जनोंके अनर्थका कारण होता है, वह देवमनुष्योंके अहित और दु:खके लिये होता है। कौनसी पाँच बातें? एक स्थविर भिक्षु होता है, दीर्घकालका जानकार,चिरप्रव्रजित,ज्ञात होता है,प्रसिद्ध होता है, गृहस्थ-प्रव्रजितोंसे घिरा हुआ ; चीवर पिण्डपात-गिलान-प्रत्यय, भैषज्य आदि भिक्षुओंकी आवश्यकताओंको प्राप्त करने वाला होता है ; बहु-श्रुत होता है,श्रुतके धारण करने वाला, श्रुतके साथ रहने वाला, जो ऐसे धर्म होते हैं, जिनका आदि भी कल्याकारी होता है, मध्य भी कल्याणकारी होता है, अन्त भी कल्याणकारी होता है, जो अर्थ-युक्त और व्यंजन-युक्त होते हैं, जो परिपूर्णरूपसे परिशुद्ध ब्रह्म चर्यकी प्रशंसा करते हैं, उसके द्वारा वैसे धर्म बहुश्रुत होते हैं, धारण किये गये होते हैं, वाणी द्वारा परिचित किये गये होते हैं, मन द्वारा अनु-प्रेक्षित होते हैं तथा (प्रज्ञा-) दृष्टि द्वारा भली प्रकार हृदयंगम किये गये होते हैं, तथा मिथ्या-दृष्टि होता है, उलटी-दृष्टि वाला। वह बहुत लोगोंको सद्धर्मके मार्गसे विमुखकर असद्धर्ममें लगा देता है। यह स्थविर भिक्षु दीर्घ-कालका जानकार है, चिर-प्रव्रजित है (सोच) बहुत से लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते हैं। यह ज्ञात है, प्रसिद्ध है, बहुतसे गृहस्थों तथा प्रव्रजितों द्वारा घिरा रहता है, (सोच) बहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते हैं। वह चीवर-पिण्डपात-गिलानप्रत्यय-भैषज्य आदि भिक्षुओंकी आवश्यकताओंका प्राप्त करने वाला है (सोच) बहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते हैं। वह बहु-श्रुत है, श्रुतके धारण करने वाला है, श्रुतके साथ रहने वाला है (सोच) भी बहुत से लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते हैं। भिक्षुओ, जिस स्थविर, भिक्षुमें ये पांच बातें (एक साथ) होती हैं, वह बहुत जनोंके अहितका कारण होता है, बहुत जनोंके असुखका कारण होता है, बहुत जनोंके अनर्थका कारण होता है, वह देव-मनुष्योंके अहित और दु:खके लिये होता है।

भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें (एकसाथ) होती हैं वह बहुत जनोंके हितका कारण होता है, बहुत जनोंके सुखका कारण होता है, बहुत जनोंके अर्थ का कारण होता है; वह देवमनुष्योंके हित और सुखके लिये होता है। कौनसी पाँच बातें? एक स्थविर भिक्षु होता है दीर्घकालका जानकार, चिर-प्रव्रजित; ज्ञात होता है, प्रसिद्ध होता है, गृहस्थ-प्रव्रजितोंसे घिरा हुआ; चीवर-पिण्डपात-गिलान प्रत्यय, भैषज्य आदि भिक्षुओंकी आवश्यकताओंको प्राप्त करने वाला होता है; बहुश्रुत होता है, श्रुतके धारण करने वाला, श्रुतके साथ रहने वाला, जो ऐसे धर्म होते

हैं, जिनका आदि भी कल्याणकारी होता है, मध्य भी कल्याणकारी होता है, अन्त भी कल्याणकारी होता है, जो अर्थ-युक्त और व्यंजन-युक्त होते हैं, जो परिपूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्म चर्यकी प्रशंसा करते हैं,उसके द्वारा वैसे धर्म बहु-श्रुत होते हैं, धारण किये गये होते हैं, वाणी द्वारा परिचित किये गये होते हैं, मन द्वारा अनुप्रेक्षित होते हैं तथा (प्रज्ञा-) दृष्टि द्वारा भली प्रकार हृदयंगम किये गये होते हैं ; तथा सम्यक्-दृष्टि होता है, सीधी-दृष्टि वाला, वह बहुत लोगोंको असद्धर्मके मार्गसे विमुख कर सद्धर्ममें लगा देता है। यह स्थविर भिक्षु दीर्घ-कालका जानकार है चिर-प्रव्रजित है (सोच) भी बहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते हैं। यह ज्ञात है, प्रसिद्ध है, बहुतसे गृहस्थों तथा प्रव्रजितों द्वारा घिरा रहता है, (सोच) भी बहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते हैं। वह चीवर-पिण्डपात....प्राप्त करने वाला है (सोच) भी बहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते हैं। वह बहुश्रुत हैं, श्रुतके धारण करने वाला है, श्रुतके साथ रहने वाला है (सोच) भी बहुतसे लोग उसका अनुकरण करने वाले हो जाते हैं। भिक्षुओ, जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच बातें (एक साथ) होती हैं, वह बहुत जनोंके हितका कारण, होता है, बहुत जनोंके सुखका कारण होता है, बहुत जनोंके अर्थका कारण होता है; वह देव-मनुष्योंके हित और सुखके लिये होता है।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें शैक्ष भिक्षुके पतनका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच? नये निर्माण-कार्योंमें लगे रहना, व्यर्थकी बातचीतमें लगे रहना, निद्रालु होना समूहमें ही रहना तथा अपने चित्तकी विमुक्तिकी मात्रापर विचार नहीं करना। भिक्षुओ, ये पाँच बातें शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें शैक्ष भिक्षुकी हानि न होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच? नये (निर्माण) कार्योंमें न लगे रहना, व्यर्थकी बातचीतमें न लगे रहना, निद्रालु न होना, समूहमें ही न रहना तथा अपने चित्तकी विमुक्तिकी मात्रा पर विचार करना है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें शैक्ष भिक्षुकी हानि न होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें शैक्षु भिक्षुकी हानिका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु बहुत काम-काजी होता है, बहुत कार्य करने वाला, नाना प्रकारके काम करनेमें दक्ष। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें नहीं लगा रहता। भिक्षुओ, यह पहली बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु थोड़ा-भी काम होनेपर

सारा दिन बिता देता है। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें नहीं लगा रहता। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु गृहस्थ-प्रव्रजितोंके साथ अनुचित संसर्ग रखता है। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें नहीं लगा रहता। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है, जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु बहुत सुबह ही (भिक्षाटनके लिये) गाँवमें प्रवेश करता है, मध्यान्होत्तर बहुत देर हो चुकनेपर लौटता है। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें नहीं लगा रहता है। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु ऐसी बातचीत—जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूल हो, जो चित्त-वृत्तियोंके लिये पथ्य-सदृश हो—जैसे अल्पेच्छ-कथा, सन्तोष-कथा, एकान्तवास-कथा, असंसर्ग-कथा, वीर्यारम्भ कथा, शील-कथा, समाधि-कथा, प्रज्ञा-कथा, विमुक्ति-कथा, विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-कथाका अनायास करने वाला नहीं होता, प्रभूत मात्रामें करने वाला नहीं होता। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है, और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें नहीं लगा रहता है। भिक्षुओ, यह पाँचवीं बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें हैं जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें शैक्ष भिक्षुकी हानि न होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच ? भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु न बहुत काम-काजी होता है, न बहुत कार्य करने वाला, न नाना प्रकारके काम करनेमें दक्ष। वह ध्यानकी उपेक्षा नहीं करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें लगा रहता है। भिक्षुओ, यह पहली बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु थोड़ेसे ही कामके करनेमें सारा दिन नहीं बिता देता है। वह ध्यानकी उपेक्षा नहीं करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें लगा रहता है। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु गृहस्थ-प्रव्रजितोंके साथ अनुचित संसर्ग नहीं रखता है। वह ध्यानकी उपेक्षा नहीं करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें लगा रहता है। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु बहुत सुबह ही (भिक्षाटनके लिये) गाँवमें प्रवेश नहीं करता है। मध्यान्होत्तर बहुत देर हो जानेपर नहीं लौटता है। वह ध्यानकी उपेक्षा नहीं करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें लगा रहता है। भिक्षुओ, यह चौथी बात

है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती है। फिर भिक्षुओ, एक शैक्ष भिक्षु ऐसी बातचीत—जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूल हो, जो चित्त-वृत्तियोंके लिये पथ्य-सदृश हो—जैसे, अल्पेच्छ-कथा, सन्तोष-कथा, एकान्तवास-कथा, असंसर्ग-कथा, वीर्यारम्भ-कथा, शील-कथा, समाधि-कथा, प्रज्ञा-कथा, विमुक्ति-कथा, विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-कथा का अनायास करने वाला होता है, प्रभूत मात्रामें करने वाला होता है। वह ध्यानकी उपेक्षा करता है और अपने चित्तके लिये शमथ-प्राप्तिमें लगा रहता है। भिक्षुओ, यह पाँचवी बात है जो शैक्ष भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें शैक्ष भिक्षुकी हानिके लिये नहीं होतीं।

(१०) **ककुध वर्ग**

भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं। कौन-सी पाँच? श्रद्धा-सम्पत्ति, शील-सम्पत्ति, श्रुत-सम्पत्ति, त्याग-सम्पत्ति तथा प्रज्ञा-सम्पत्ति। भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं। कौन-सी पाँच? शील-सम्पत्ति, समाधि-सम्पत्ति, प्रज्ञा-सम्पत्ति, विमुक्ति-सम्पत्ति तथा विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन-सम्पत्ति। भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच अर्हत्वकी घोषणायें हैं। कौन-सी पाँच? बुद्धिमन्दता तथा मूढ़ताके कारण भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है, बुरी-भावना तथा इच्छाके वशीभूत होकर भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है, उन्माद तथा चित्त-विक्षेपके कारण भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है, अभिमानके कारण भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है, तथा यथार्थ रूपसे भी अर्हत्वकी घोषणा की जाती है। भिक्षुओ, ये पाँच अर्हत्वकी घोषणायें हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच सुख-विहार हैं। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षु काम-भोगोंसे पृथक, अकुशल-धर्म (=बुराइयों) से पृथक वितर्क-युक्त, विचार-युक्त, एकान्तवाससे उत्पन्न, प्रीति-सुख सहित प्रथम-ध्यानको प्राप्त कर विहार करता है, वितर्क विचारोंका उपशमन हो जानेपर द्वितीय-ध्यान......तृतीय-ध्यान...... चतुर्थ-ध्यान प्राप्त कर विहार करता है तथा आस्रवोंका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी शरीरमें जानकर, साक्षात् कर, प्राप्त कर, विहार करता है। भिक्षुओ, ये पाँच सुख-विहार हैं।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है। भिक्षुओ कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु अर्थ-प्रति-

सम्भिदा प्राप्त होता है, धर्म-प्रतिसम्भिदा-प्राप्त होता है, निरुक्ति-प्रतिसम्भिदा प्राप्त होता है तथा प्रतिभा-प्रतिसम्भिदा-प्राप्त होता है। वह जैसे जैसे उसका चित्त विमुक्त होता है, वैसे वैसे उसकी प्रत्यवेक्षा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आनापान-स्मृतिका अभ्यास करते हुए अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु अल्पार्थी होता है, अल्प काम-काजी, सुभर (= सुविधासे पोषित किया जा सकने वाला), जीवनकी आवश्यकताओंके विषयमें बहुत संतोषी। वह अल्पाहारी होता है, पेटू नहीं होता है। वह तन्द्रालु नहीं होता, जागरूक रहने वाला होता है। वह बहु-श्रुत होता है, श्रुतके धारण करने वाला, श्रुतके साथ रहने वाला। जो ऐसे धर्म होते हैं जिनका आदि भी कल्याणकारी होता है, मध्य भी कल्याणकारी होता है, अन्त भी कल्याणकारी होता है, जो अर्थ-युक्त और व्यंजन-युक्त होते हैं, जो परिपूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्मचर्यकी प्रशंसा करते हैं, उसके द्वारा वैसे धर्म बहु-श्रुत होते हैं, धारण किये गये होते हैं, वाणी द्वारा परिचित किये गये होते हैं, मन द्वारा अनुप्रेक्षित होते हैं तथा (प्रज्ञा—) दृष्टि द्वारा भली प्रकार हृदयंगम किये गये होते हैं तथा वह जैसे-जैसे उसका चित्त विमुक्त होता है वैसे-वैसे उसकी प्रत्यवेक्षा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आनापान-स्मृतिका अभ्यास करते हुए अचिर-कालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आनापान स्मृतिका अभ्यास करते हुए अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु अल्पार्थी होता हैं, अल्प काम-काजी, सुभर (= सुविधासे पोषित किया जा सकने वाला) जीवनकी आवश्यकताओंके विषयमें बहुत संतोषी। वह अल्पाहारी होता है, पेटू नहीं होता है। वह तन्द्रालु नहीं होता, जागरूक रहने वाला होता है। वह ऐसी बातचीत—जो श्रेष्ठ जीवनके अनुकूल हो, जो चित्त-वृत्तियोंके लिये पथ्य सदृश हो, जैसे अल्पेच्छ-कथा ....का अनायास करने वाला होता है, प्रभूत मात्रामें करने वाला होता है। वह जैसे-जैसे उसका चित्त विमुक्त होता है, वैसे-वैसे उसकी प्रत्यवेक्षा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आनापान स्मृतिका अभ्यास करते हुए अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आनापान स्मृतिके अभ्यासको बढ़ाते हुए अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है। कौन-सी पाँच बातें?

भिक्षुओ, वह भिक्षु अल्पार्थी होता है, अल्प काम-काजी, सुभर (= सुविधासे पोषित किया जा सकने वाला) जीवनकी आवश्यकताओंके विषयमें बहुत सन्तोषी। वह अल्पाहारी होता है, पेटू नहीं होता। वह तन्द्रालु नहीं होता, जागरूक रहने वाला होता है। वह आरण्यक होता है, एकान्तमें रहने वाला। वह जैसे-जैसे उसका चित्त विमुक्त होता है, वैसे-वैसे उसकी प्रत्यवेक्षा करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आनापान-स्मृतिके अभ्यासको बढ़ाते हुए, अचिरकालमें ही अर्हत्वको प्राप्त कर लेता है।

भिक्षुओ, मृगराज सिंह शामके समय अपनी माँदसे निकलता है, माँदसे निकलकर जम्हाई लेता है, जम्हाई लेकर चारों ओर देखता है, चारों ओर देखकर तीन बार सिंह-गर्जन करता है, तीन बार सिंह-नाद करके शिकारके लिये जाता है। वह यदि हाथीपर चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नहीं; भैंसेपर भी चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नहीं; बैलपर भी चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नहीं, चीतेपर भी चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नहीं; छोटे प्राणियों, यहाँ तक कि खरगोशों और बिल्लोंपर भी चोट करता है, तो अच्छी तरहसे ही चोट करता है, यूँ ही नहीं। ऐसा क्यों? कहीं मेरा निशाना न चूके।

भिक्षुओ, यहाँ 'सिंह' तथागत अर्हत सम्यक्सम्बुद्धका पर्याय है। भिक्षुओ तथागत (परिषदको) जो धर्मोपदेश देते हैं, यह उनका 'सिंह-नाद' ही होता है, तथागत भिक्षुओंको भी जब धर्मोपदेश देते हैं, तो अच्छी तरहसे ही धर्मोपदेश देते हैं, यूँ ही नहीं; तथागत भिक्षुणियोंको भी जब धर्मोपदेश देते हैं, तो अच्छी तरहसे ही धर्मोपदेश देते हैं, यूँ ही नहीं; तथागत उपासकोंको भी जब धर्मोपदेश देते हैं, तो अच्छी तरहसे ही धर्मोपदेश देते हैं, यूँ ही नहीं, तथागत उपसिकाओंको भी जब धर्मोपदेश देते हैं, तो अच्छी तरहसे ही धर्मोपदेश देते हैं, यूँ ही नहीं; तथागत पृथक-जनों (= सामान्य जनों) यहाँ तक कि अन्न-भार चिड़िमारोंको भी जब धर्मोपदेश देते हैं, तो अच्छी तरह ही धर्मोपदेश देते हैं, यूँ ही नहीं। यह किसलिये? भिक्षुओ, तथागत धर्म-गुरु हैं, धर्मका गौरव करने वाले।

एक समय भगवान् कौशाम्बीके घोषितारामर्में विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् महामौद्ल्यायनके ककुध कोलिय-पुत्र नामक सेवकको मरे थोड़ा ही समय हुआ था। उसने एक मनोमय शरीर धारण किया था। उसका जन्म ऐसा

था, जैसे मगधके लोगोंके दो या तीन ग्राम-क्षेत्र हों। वह अपनी उस योनिमें न अपनेको ही और न अन्य किसीको ही किसी प्रकारका कष्ट देता था।

तब ककुध देवपुत्र जहाँ आयुष्मान् महामौद्गल्यायन थे, वहाँ पहुँचा। पहुँचकर आयुष्मान् महामौद्गल्यायनको नमस्कार कर एक ओर खड़ा हो गया। एक ओर खड़े होकर ककुध देव-पुत्रने आयुष्मान् महामौद्गल्यायनको यह कहा—"भन्ते! देवदत्तके मनमें यह इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं भिक्षु-संघका नेतृत्व करूं। उसके मनमें इस प्रकारका संकल्प पैदा होते ही उसके ऋद्धि-बलका ह्रास हो गया।" इतना कह आयुष्मान् महामौद्गल्यायनको अभिवादन कर, प्रदक्षिणा कर, अन्तर्धान हो गया।

तब आयुष्मान् महामौद्गल्यायन जहाँ भगवान थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवानको अभिवादन कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आष्युान् महामौद्गल्यायनने भगवान्को यह कहा—"भन्ते! ककुध कोलिय-पुत्र नामके मेरे सेवकको मरे बहुत समय नहीं हुआ। उसने एक मनोमय शरीर धारण किया है। उसका जन्म ऐसा है, जैसे मगधके लोगोंके दो या तीन ग्राम-क्षेत्र हों। वह अपनी उस योनिमें न अपनेको ही और न किसी अन्यको ही किसी प्रकारका कष्ट देता है। तब भन्ते! ककुध देवपुत्र जहाँ मैं था, वहाँ आया। पास कर मुझे प्रणाम कर एक ओर बैठ गया। एक ओर खड़े हुए ककुध देवपुत्रने मुझे यह कहा—'भन्ते! देवदत्तके मनमें यह इच्छा उत्पन्न हुई कि मैं भिक्षु-संघका नेतृत्व करूँ। उसके मनमें इस प्रकारका संकल्प पैदा होते ही, उसके ऋद्धि-बलका ह्रास हो गया।' भन्ते! ककुध देवपुत्रने ऐसा कहा। यह कहकर, मुझे प्रणाम कर, प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तर्धान हो गया।"

"मौद्गल्यायन! क्या तूने अपने चित्तसे ककुध देवपुत्रके चित्तको जान लिया कि जैसा वह कहता है, वैसा ही होता है, अन्यथा नहीं होता?"

"भन्ते! मैंने अपने चित्तसे ककुध देवपुत्रके चित्तको जान लिया है। जैसा ककुध देवपुत्र कहता है, वह वैसा ही होता है, अन्यथा नहीं होता।"

"मौद्गल्यायन! इस कथनको अपने पास सुरक्षित रखा। वह बेकार आदमी (=मोघ पुरुष) स्वयं अपने आपको प्रकट करेगा।

"मोद्गल्यायन! इस दुनियामें पाँच प्रकारके शास्ता (=नायक) हैं। कौनसे पाँच? मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है, जिसका शील शुद्ध नहीं होता, किन्तु तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध-शील है, स्वच्छ-शील है तथा निर्मल-शील है। उसके श्रावक यह जानते हैं कि यह जो शास्ता है, उसका शील-शुद्ध नहीं है, किन्तु तो भी यह घोषणा करता है कि यह शुद्ध-शील है, स्वच्छ शील है तथा निर्मल-शील है।

यदि हम गृहस्थोंको यह बात कहें तो यह इसके लिये अच्छा नहीं होगा। जो इसके लिये अच्छा नहीं होगा—वैसा हम कैसे करेंगे? यह चीवर-पिण्डपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वयं प्रकट हो जायेगा। इस तरहके शास्ताके 'शील' की रक्षा उसके श्रावक करते हैं। इसतरहका शास्ता अपने शिष्योंसे ही यही आशा करता है कि वे उसके 'शील' की रक्षा करेंगे।

फिर मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है जिसकी 'जीविका' शुद्ध नहीं होती, किन्तु तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध-जीविका वाला है, स्वच्छ-जीविका वाला है तथा निर्मल-जीविका वाला है। उसके श्रावक यह जानते हैं कि यह जो शास्ता है, इसकी जीविका शुद्ध नहीं है, किन्तु तो भी यह घोषणा करता है कि यह शुद्ध-जीविका वाला है, स्वच्छ-जीविका वाला है तथा निर्मल-जीविका वाला है। यदि हम गृहस्थोंको यह बात कहें तो यह इसके लिये अच्छा नहीं होगा। जो इसके लिये अच्छा नहीं होगा, वैसा हम कैसे करेंगे? यह चीवर-पिण्डपाल-शयवासन-ग्लान-प्रत्यय-भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वयं प्रकट हो जायेगा। उस तरहके शास्ताकी 'जीविका' की रक्षा उसके श्रावक करते हैं। इस तरहका शास्ता अपने शिष्योंसे यही आशा करता है कि वे उसकी 'जीविका' की रक्षा करेंगे।

फिर मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है जिसकी 'धर्म-देशना' शुद्ध नहीं होती, किन्तु तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध धर्म-देशना वाला है, स्वच्छ-धर्म-देशना वाला है, निर्मल धर्म-देशना वाला है। उसके श्रावक यह जानते हैं कि यह जो शास्ता है, इसकी धर्म-देशना शुद्ध नहीं है, किन्तु तो भी यह घोषणा करता है कि यह शुद्ध-धर्म-देशना वाला है, स्वच्छ धर्म-देशना वाला है तथा निर्मल धर्म-देशना वाला है। यदि हम गृहस्थोंको यह बात कहें तो यह उसके लिये अच्छा नहीं होगा। जो इसके लिये अच्छा नहीं होगा, वैसा हम कैसे करेंगे? यह चीवर-पिण्डपात-शयनासन ग्लान-प्रत्यय-भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वयं प्रकट हो जायेगा। इस तरहके शास्ताकी धर्म-देशनाकी रक्षा उसके श्रावक करते हैं। इस तरहका शास्ता अपने शिष्योंसे यही आशा करता है कि वे उसकी 'धर्म-देशना' की रक्षा करेंगे।

फिर मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है कि जिसकी व्याख्या (=वेय्याकरण) शुद्ध नहीं होती। किन्तु तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध-व्याख्याता है, स्वच्छ-व्याख्याता है, निर्मल-व्याख्याता है। उसके श्रावक यह जानते हैं कि यह जो शास्ता है, इसकी धर्म-देशना शुद्ध नहीं है, किन्तु तो भी यह घोषणा

करता है कि यह शुद्ध व्याख्याता है, स्वच्छ-व्याख्याता है, तथा निर्मल-व्याख्याता है। यदि हम गृहस्थोंको यह बात कहें तो यह उसके लिये अच्छा नहीं होगा। जो उसके लिये अच्छा नहीं होगा, वैसा हम कैसे करेंगे? यह चीवर-पिण्डपात-शयनासन ग्लान-प्रत्यय-भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वयं प्रकट हो जायेगा। इस तरहके शास्ताकी 'व्याख्या' की रक्षा उसके श्रावक करते हैं। इस तरहका शास्ता अपने शिष्योंसे यही आशा करता है, कि वे उसकी 'व्याख्या' कीरक्षा करेंगे।

फिर मौद्गल्यायन! एक शास्ता ऐसा होता है कि जिसका ज्ञान-दर्शन शुद्ध नहीं होता। किन्तु, तो भी वह घोषणा करता है कि वह शुद्ध-ज्ञान-दर्शन वाला है, स्वच्छ ज्ञान-दर्शन वाला है, निर्मल-ज्ञान-दर्शन लावा है। उसके श्रावक यह जानते हैं कि यह जो शास्ता है, इसका ज्ञान-दर्शन शुद्ध नहीं है, किन्तु तो भी यह घोषणा करता है कि यह शुद्ध-ज्ञानदर्शन वाला है, स्वच्छ-ज्ञानदर्शन वाला है, तथा निर्मल-ज्ञानदर्शन वाला है। यदि हम गृहस्थोंको यह बात कहें तो यह उसके लिये अच्छा नहीं होगा। जो उसके लिये अच्छा नहीं होगा, वैसा हम कैसे करेंगे? यह चीवर-पिण्डपात-शयनासन-ग्लान प्रत्यय-भैषज्यसे सम्मान करता है। जैसा यह करेगा, वैसा स्वयं प्रकट हो जायेगा। इस तरहके शास्ताके ज्ञान-दर्शनकी रक्षा उसके श्रावक करते हैं। इस तरहका शास्ता अपने शिष्योंसे यही आशा करता है कि वे उसके ज्ञान-दर्शनकी रक्षा करेंगे।

मौद्गल्यायन! दुनियामें पाँच प्रकारके शास्ता हैं। मोद्गल्यायन! मैं परिशुद्ध-शील हूँ और अपने परिशुद्धि-शील होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ-शील होनेकी तथा निर्मल-शील होनेकी। मेरे श्रावक मेरे शीलकी रक्षा नहीं करते। मैं अपने शिष्योंसे यह आशा नहीं करता कि ये मेरे शीलकी रक्षा करेंगे। मैं परिशुद्ध-जीविका हूँ और अपने परिशुद्ध-जीविका वाला होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ-जीविका वाला होनेकी तथा निर्मल-जीविका वाला होनेकी। मेरे श्रावक मेरी जीविकाकी रक्षा नहीं करते। मैं अपने शिष्योंसे यह आशा नहीं करता कि वे मेरी जीविकाकी रक्षा करेंगे। मैं परिशुद्ध-धर्म देशना वाला हूँ और अपने परिशुद्ध-धर्म-देशना वाला होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ धर्म-देशना वाला होनेकी तथा निर्मल धर्म-देशना वाला होनेकी। मेरे श्रावक मेरी धर्म-देशनाकी रक्षा नहीं करते। मैं अपने शिष्योंसे यह आशा नहीं करता कि ये मेरी धर्म-देशनाकी रक्षा करेंगे। मैं परिशुद्ध-व्याख्याता हूँ और अपने परिशुद्ध-व्याख्याता होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ-व्याख्याता होनेकी तथा निर्मल व्याख्याता होनेकी। मेरे श्रावक मेरी 'व्याख्या' की रक्षा नहीं करते। मैं अपने शिष्योंसे यह आशा नहीं करता कि वे मेरी 'व्याख्या' की रक्षा करेंगे।

मैं परशुद्ध-ज्ञान-दर्शन वाला हूँ और अपने परिशुद्ध ज्ञान-दर्शन होनेकी घोषणा करता हूँ, स्वच्छ-ज्ञान-दर्शन वाला होनेकी तथा निर्मल-ज्ञान-दर्शन वाला होनेकी। मेरे श्रावक मेरे 'ज्ञान-दर्शन' की रक्षा नहीं करते। मैं अपने शिष्योंसे यह आशा नहीं करता कि वे मेरे 'ज्ञान दर्शन' की रक्षा करेंगे।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें ऐसी हैं जो शैक्ष भिक्षुको विशारद बनाने वाली हैं। कौनसी पाँच ? भिक्षुओ, एक भिक्षु श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, बहुश्रुत होता है, प्रयत्नशील होता है तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, अश्रद्धावान्के मनमें जैसा द्वेष होता है, श्रद्धावान्के मनमें वैसा द्वेष नहीं होता, इसलिये भिक्षुओ, यह बात शैक्ष भिक्षुको विशारद बनानेवाली है। भिक्षुओ, दुराचारीके मनमें जैसा द्वेष होता है, सदाचारीके मनमें वैसा द्वेष नहीं होता, इसलिये भिक्षुओ, यह बात शैक्ष भिक्षुको विशारद बनाने वाली है। भिक्षुओ, अल्प-श्रुतके मनमें जैसा द्वेष होता है, बहुश्रुतके मनमें वैसा द्वेष नहीं होता, इसलिये भिक्षुओ, यह बात शैक्ष भिक्षुको विशारद बनाने वाली है। भिक्षुओ, प्रयत्न न करने वालेके मनमें जैसा द्वेष होता है, प्रयत्नशीलके मनमें वैसा द्वेष नहीं होता। इसलिये भिक्षुओ, यह बात शैक्ष भिक्षुको विशारद बनाने वाली है। भिक्षुओ, मूर्खके मनमें जैसा द्वेष होता है, प्रज्ञावान्के मनमें वैसा द्वेष नहीं होता, इसलिये भिक्षुओ, यह बात शैक्ष भिक्षुको विशारद बनाने वाली है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें शैक्ष भिक्षुको विशारद बनाने वाली हैं।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह चाहे क्षीणास्रव (= अर्हत) भी हो तब भी दूसरे उसे शंकाकी दृष्टिसे देखते हैं और सोचने लगते हैं कि यह पापी भिक्षु है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, वह भिक्षु वैश्याके यहाँ आने जाने वाला होता है, वह विधवाओंके यहाँ आने जाने वाला होता है, बड़ी आयुकी कुमारियोंके पास आने जाने वाला होता है, हिजड़ोंके पास आने जाने वाला होता है, तथा भिक्षुणियोंके पास आने जाने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह चाहे क्षीणास्रव (= अर्हत) भी हो, तब भी दूसरे उसे शंकाकी दृष्टिसे देखते हैं कि यह पापी भिक्षु है।

भिक्षुओ, जिस डाकू (= महाचोर) में यह पाँच बातें होती हैं, वह सेंध भी लगाता है, लूटता भी है, डाका भी डालता है तथा रास्ता भी घेरता है। कौनसी पाँच बातें ? वह ऊबड़-खाबड़ स्थानोंमें रहने वाला होता है, वह घने (जंगल) में रहने वाला होता है, बलवानोंका आश्रित रहने वाला होता है, सम्पत्तिका त्याग करने वाला होता है तथा अकेला विचरने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर ऊबड़-खाबड़ जगहमें रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर नदियोंके पत्तन पर रहता है, वा ऊबड़-खाबड़ पर्वतोंमें रहने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार महाचोर ऊबड़-खाबड़ जगहमें रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर घने (-जंगलमें) रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर घनी-घासमें (छिपकर) रहने वाला होता है, घने पेड़ोंमें रहने वाला होता है, गुफामें रहने वाला होता है, वन-खन्डमें रहने वाला होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार महाचोर घनेमें रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर बलवानोंका आश्रित रहने वाला कैसे होता है?

भिक्षुओ, चोर राजाओं वा राजमहामात्योंका आश्रित होता है। उसके मनमें यह होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो यह राजा वा राज-महामात्य मेरे पक्षमें बोलेंगे। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो राजा वा राजमहामात्य उसके पक्षमें बोलते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकार चोर बलवानोंका आश्रित रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर सम्पत्तिका त्याग करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर धनी होता है, बहुत सम्पत्तिशाली, बहुत ऐश्वर्यवान्। उसके मनमें यह होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो उसका धनसे स्वागत करूँगा, यदि उसे कोई कुछ कहता है तो वह धनसे उसका स्वागत करता है। इस प्रकार भिक्षुओ महाचोर सम्पत्तिका त्याग करने वाला होता है।

भिक्षुओ, महाचोर अकेला विचरने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, महाचोर अकेला ही दूसरोंकी सम्पत्तिको लेने वाला होता है। यह किसलिये? ताकि मेरी रहस्यकी बात बाहर प्रकट न हो जाय। भिक्षुओ, इस प्रकार महाचोर अकेला विचरने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस डाकूमें ये पाँच बातें होतीं हैं, वह सेंध भी लगाता है, लूटता भी है, डाका भी डालता है तथा रास्ता भी घेरता है।

इसी प्रकार जिस पापी भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह स्वयं अपनेको आघात पहुँचाता हुआ विचरता है, छोटे-बड़े दोषोंसे युक्त होता है तथा बहुत अपुण्यार्जन करता है। कौन सी पाँच बातें? भिक्षुओ, जो पापी-भिक्षु होता है, वह ऊबड़-खाबड़ स्थानोंमें रहने वाला होता है, वह घनेमें रहने वाला होता है, बलवानोंका आश्रित रहने वाला होता है, सम्पत्तिका त्याग करने वाला होता है तथा अकेला विचरने वाला होता है। भिक्षुओ, पापी-भिक्षु, ऊबड़-खाबड़ स्थानोंमें रहने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, जो पापी भिक्षु होता है उसके शारीरिक-कर्म ऊबड़-खाबड़ होते हैं, वाणीके कर्म ऊबड़-खाबड़ होते हैं तथा मनके कर्म ऊबड़-खाबड़ होते हैं। भिक्षुओ, पापी

भिक्षु घनेमें रहने वाला कैसे होता है ?" भिक्षुओ, पापी भिक्षु मिथ्या-दृष्टि होता है, दो सिरेकी दृष्टियोंसे युक्त। भिक्षुओ, इस प्रकार पापी भिक्षु, घनेमें रहने वाला होता है।

"भिक्षुओ, पापी -भिक्षु बलवानोंका आश्रित रहने वाला कैसे होता है ?" भिक्षुओ, पापी-भिक्षु राजाओं वा राज-महामात्योंका आश्रित होता है। उसके मनमें यह होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो यह राजा वा राजमहामात्य मेरे पक्षमें बोलेगा। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो राजा वा राजमहामात्य उसके पक्षमें बोलते हैं। भिक्षुओ, इस प्रकार चोर बलवानोंका आश्रित रहने वाला होता है।

भिक्षुओ, पापी-भिक्षु सम्पत्तिका त्याग करने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ पापी-भिक्षुको चीवर-पिण्डपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कार मिलते रहते हैं। उसके मनमें यह होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो उसका चीवर आदिसे स्वागत करूँगा। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो वह चीवर आदिसे उसका स्वागत करता है। इस प्रकार भिक्षुओ,पापी-भिक्षु सम्पत्तिका त्याग करने वाला होता है।

भिक्षुओ, पापी-भिक्षु अकेला विचरने वाला कैसे होता है ? भिक्षुओ,पापी-भिक्षु अकेलाही प्रत्यन्त जनपदमें निवास स्थान ग्रहण करता है। वह वहाँ (गृहस्थ-) कुलोंके पास जा उनसे लाभान्वित होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, पापी-भिक्षु अकेला ही विचरने वाला होता है।

इस प्रकार भिक्षुओ, जिस पापी-भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह स्वयं अपनेको आघात पहुँचाता हुआ विचरता है, छोटे-बड़े दोषोंसे युक्त होता है तथा बहुत अपुण्यार्जन करता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार होता है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, वह किसीके द्वारा प्रार्थना किये जाने पर ही बहुधा चीवरका उपयोग करता है, बिना प्रार्थनाके नहीं; किसीके द्वारा प्रार्थना किये जाने पर ही बहुधा पिण्डपात(=भिक्षा) का उपयोग करता है, बिना प्रार्थनाके नहीं; किसीके द्वारा प्रार्थना किये जाने पर ही बहुधा शयनासनका उपयोग करता है, बिना प्रार्थनाके नहीं; किसीके द्वारा प्रार्थना किये जाने पर ही बहुधा ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कारका उपयोग करता है, बिना प्रार्थनाके नहीं; वह जिन ब्रह्मचारियोंके साथ रहता है,वे प्रसन्नता पूर्वक ही उसके प्रति शारीरिक-कर्मका व्यवहार करते हैं, अप्रसन्नता पूर्वक नहीं; प्रसन्नतापूर्वक ही उसके प्रति वाणीके कर्मका व्यवहार करते हैं, अप्रसन्नता पूर्वक नहीं; प्रसन्नतापूर्वक ही उसके प्रति मनके कर्मका व्यवहार करते हैं,

अप्रसन्नता पूर्वक नहीं। वे उसके लिये बहुधा अच्छा ही उपहार लाते हैं, जो अच्छा नहीं हो, वह कम ही। जो पित्तके प्रकोप होते हैं, कफके प्रकोप होते हैं, तथा वातके प्रकोप होते हैं, जो संनिपात (—ज्वर) होते हैं, जो ऋतुओंके परिवर्तित होनेके कारण होते हैं, जो विषम परिस्थितियोंसे उत्पन्न होते हैं, जो तीव्र होते हैं तथा जो कर्मोंके फल-स्वरूप उत्पन्न होते हैं—वैसे कष्ट उसे बहुत नहीं होते। वह प्रायः निरोग रहता है। वह चारों चैतसिक ध्यानोंको, जो इसी जन्ममें सुख देनेवाले हैं, प्राप्त करने वाला होता है, सुविधासे प्राप्त करने वाला होता है, बिना किसी कष्टके प्राप्त करने वाला होता है, अनायास प्राप्त करने वाला होता है। वह आस्रवोंका क्षय कर, अनास्रव चित्तकी विमुक्तिको, प्रज्ञाकी विमुक्तिको, इसी जन्ममें स्वयं साक्षात् कर, प्राप्तकर, विहार करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार होता है।

भिक्षुओ, यदि कोई किसीके बारेमें यह ठीक-ठीक कहेगा कि यह श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार है तो वह मेरे बारेमें ही यह ठीक-ठीक कहेगा कि यह श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार है। भिक्षुओ, मैं ही किसीके द्वारा प्रार्थना किये जानेपर ही बहुधा चीवरका उपयोग करता हूँ, बिना प्रार्थनाके नहीं; किसीके द्वारा प्रार्थना किये जानेपर ही बहुधा पिण्डपात.....शयनासन.....ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य परिष्कारका उपयोग करता हुँ, बिना प्रार्थनाके नहीं; जिन भिक्षुओंके साथ विहार करता हूँ, वे बहुधा प्रसन्नता-पूर्वकही मेरे प्रति शारीरिक-कर्मका व्यवहार करते हैं, अप्रसन्नता पूर्वक नहीं;....वे बहुधा प्रसन्नतापूर्वक ही मेरे प्रति वाणीके कर्मका व्यवहार करते है, अप्रसन्नतापूर्वक नहीं....वे बहुधा प्रसन्नतापूर्वकही मेरे प्रति मनके कर्मका व्यवहार करते हैं, अप्रसन्नतापूर्वक नहीं; वे प्रायः मेरे लिये अच्छा उपहार ही लाते हैं, जो अच्छा न हो ऐसा कम ही। जो पित्तके प्रकोप होते हैं, कफके प्रकोप होते हैं तथा वातके प्रकोप होते हैं, जो सन्निपात (—ज्वर) होते हैं, जो विषम परिस्थितियोंसे उत्पन्न होते हैं, जो तीव्र होते हैं तथा जो कर्मोंके फलस्वरूप उत्पन्न होते हैं—वैसे कष्ट मुझे बहुत नहीं होते। मैं प्रायः निरोग रहता हूँ। मैं चारों चैतसिक ध्यानोंको, जो इसी जन्ममें सुख देने वाले हैं, प्राप्त करने वाला हूँ, सुविधासे प्राप्त करने वाला हूँ, बिना किसी कष्टके प्राप्त करने वाला हूँ, अनायास प्राप्त करने वाला हूँ। मैं आस्रवों का क्षय कर, अनास्रव चित्तकी विमुक्तिको, प्रज्ञाकी विमुक्तिको, इसी जन्ममें स्वयं साक्षात् कर, प्राप्तकर विहार करता हूँ। भिक्षुओ, यदि कोई किसीके बारेमें यह ठीक ठीक कहेगा कि यह श्रमणोंमें श्रमण-कुमार है तो वह मेरे बारेमें ही यह ठीक-ठीक कहेगा कि वह श्रमणोंमें श्रमण-सुकुमार है।

भिक्षुओ, ये पाँच सुख-विहार हैं। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, भिक्षुका अपने सब्रह्मचारियोंके प्रति प्रकट रूपमें और अप्रकटरूपमें शारीरिक व्यवहार मैत्री-युक्त होता; वाणीका व्यवहार मैत्री-युक्त होता है तथा मनका व्यवहार मैत्री-युक्त होता है; जो शील अखण्ड होते हैं, छिद्र-रहित होते हैं, उबना धब्बोंके होते हैं, जो स्वच्छ होते हैं, जो परिशुद्ध होते हैं, जो विज्ञों द्वारा प्रशंसित होते हैं, जो विकार-युक्त नहीं होते हैं तथा जो समाधिका संवर्धन करने वाले होते हैं, वैसे शीलोंसे युक्त हो सब्रह्मचारियोंके साथ प्रकट अथवा अप्रकट अवस्थामें विहार करता है; यह जो आर्य-दृष्टि है, निर्याणिक-दृष्टि है, तदनुसार आचरण करने वालेको दुःख-क्षयकी ओर ले जाने वाली दृष्टि है, वैसी दृष्टिसे युक्त हो वह सब्रह्मचारियोंके साथ प्रकट अथवा अप्रकट अवस्थामें विहार करता है। भिक्षुओ, ये पाँच सुख-विहार हैं।

एक समय भगवान् कोसम्बीके घोषितारामर्मे विहार करते थे। तब आयुष्मान आनन्द जहाँ भगवान्थे वहाँ पहुंचे। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान आनन्दने भगवान्से यह कहा—"भन्ते! वे कौनसे गुण हैं, जिनके होनेसे भिक्षु-संघमें विहार करता हुआ भिक्षु सुखपूर्वक रहता है?"

"आनन्द! यदि भिक्षु स्वयं शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील-सम्पन्न होनेकी प्रेरणा नहीं भी करता, तो इतना होनेसे भी भिक्षु संघके बीचमें सुख-पूर्वक विहार करता है।"

"भन्ते! क्या कोई दूसरी भी स्थिति है, जिसमें भिक्षु संघके बीचमें सुख-पूर्वक विहार करता है?"

"आनन्द! है। आनन्द! यदि भिक्षु स्वयं शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील-सम्पन्न होनेकी प्रेरणा नहीं भी करता, अपनी ही अपेक्षा रखने वाला होता है, दूसरेकी चिन्ता नहीं भी करने वाला होता है तो इतना होनेसे भी आनन्द! भिक्षु संघके बीचमें सुखपूर्वक विहार करता है।"

"भन्ते! क्या कोई दूसरी भी स्थिति है, जिसमें भिक्षु संघके बीचमें सुख-पूर्वक विहार करता है?"

"आनन्द! है। आनन्द! यदि भिक्षु स्वयं शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील सम्पन्न होनेकी प्रेरणा नहीं भी करता, अपनी ही अपेक्षा रखता है, दूसरेकी चिन्ता नहीं भी करने वाला होता है, अधिक-प्रसिद्ध नहीं होता, किन्तु अधिक-प्रसिद्ध न होनेके कारण त्रासको प्राप्त नहीं होता। इतना होनेसे भी आनन्द! भिक्षु संघके बीचमें सुखपूर्वक विहार करता है।

"भन्ते ! क्या कोई दूसरी भी स्थिति है, जिसमें भिक्षु संघके बीचमें सुख पूर्वक विहार करता है ? "

"आनन्द ! है। आनन्द ! यदि भिक्षु स्वयं शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील-सम्पन्न होने की प्रेरणा नहीं भी करता, अपनी ही अपेक्षा रखता है, किसी दूसरेकी चिन्ता नहीं भी करने वाला होता है, अधिक प्रसिद्ध नहीं होता, किन्तु अधिक प्रसिद्ध न होनेके कारण त्रासको प्राप्त नहीं होता, तथा इसी जन्ममें सुख देने वाले चारों चैतसिक ध्यानोंको सरलतासे, बिना कठिनाई के प्राप्त करने वाला होता है। इतना होनेसे भी आनन्द ! भिक्षु संघके बीचमें सुखपूर्वक विहार करता है।"

"भन्ते ! क्या कोई दूसरी भी स्थिति है, जिसमें भिक्षु संघके बीचमें सुख-पूर्वक विहार करता है ?"

"आनन्द ! है। आनन्द ! यदि भिक्षु स्वयं शील-सम्पन्न होता है और दूसरेको शील-सम्पन्न होनेकी प्रेरणा नहीं भी करता, अपनी ही अपेक्षा रखता है किसी दूसरेकी चिन्ता नहीं भी करने वाला होता है, अधिक प्रसिद्ध नहीं होता किन्तु अधिक प्रसिद्ध न होनेके कारण त्रासको प्राप्त नहीं होता तथा इसी जन्ममें सुख देने वाले चारों चैतसिक ध्यानोंको सरलतासे बिना कठिनाईके प्राप्त करने वाला होता है और आस्रवोंका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी जन्ममें प्राप्तकर, साक्षात् कर, विहार करता है। इतना होनेसे आनन्द ! भिक्षु संघके बीचमें सुखपूर्वक विहार करता है। आनन्द ! मैं किसी दूसरे सुख-विहारको इससे बढ़कर या श्रेष्ठतर नहीं कहता हूँ।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है, सत्कार करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोड़नेके योग्य होता है तथा लोगोंके लिये सर्वश्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र होता है। कौनसी पाँच बातोंसे युक्त होता है, ? भिक्षुओ, भिक्षु शील-युक्त होता है, समाधि-युक्त होता है, प्रज्ञा-युक्त होता है, विमुक्ति-युक्त होता है तथा विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इन पाँच बातोंसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है, सत्कार करने योग्य होता है, दक्षिणा देनेके योग्य होता है, हाथ जोड़नेके योग्य होता है तथा लोगोंके लिये सर्व-श्रेष्ठ पुण्य-क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंसे युक्त भिक्षु आतिथ्य करने योग्य होता है. . . पुण्य क्षेत्र होता है। कौनसी पाँच बातोंसे युक्त होता है ! भिक्षुओ, भिक्षु अशैक्ष शील-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञा-स्कन्धसे

युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-ज्ञान दर्शनसे युक्त होता है। भिक्षुओ, इन पाँच बातोंसे युक्त भिक्षु अतिथ्य करने योग्य होता है . . . . पुण्य-क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह चारों दिशाओंमें प्रसिद्ध होता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमों का पालन करने वाला, आचरण-युक्त तथा योग्य स्थानपर ही जाने वाला, छोटेसे छोटे दोष में भी भय देखने वाला तथा सम्यक् प्रकारसे शिक्षा ग्रहण करने वाला; बहुश्रुत होता है, श्रुत-धारी, श्रुत्वान्,जो आदिमें कल्याणकारक, मध्यमें कल्याणकारक, अन्तमें कल्याणकारक, अर्थयुक्त, व्यंजन-युक्त, सम्पूर्ण रूप से परिशुद्ध ब्रह्मचर्यको स्पष्ट करने वाले, वैसे धर्म उस भिक्षुके द्वारा बहुत करके सुने गये होते हैं, वाणी द्वारा धारण किये गये होते हैं, मन द्वारा परिचित किये गये होते हैं, अनुप्रेक्षित किये गये होते हैं, (सम्यक्-) दृष्टि द्वारा हृदयंगम किये गये होते हैं, वह जैसे-तैसे चीवर-पिण्डपात-शयनासन-ग्लान-प्रत्यय भैषज्य आदि भिक्षुकी आवश्यकताओंसे सन्तुष्ट होता है, वह इसी जन्ममें सुख देने वाले, चारों चैतसिक ध्यानोंको सरलतासे, बिना कठिनाईके प्राप्त करने वाला होता है और आस्रवोंका क्षय कर अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा विमुक्तिको इसी जन्ममें प्राप्त कर, साक्षात् कर विहार करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह भिक्षु चारों दिशाओंमें प्रसिद्ध होता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जंगलमें एकान्त वास करनेमें समर्थ होता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है. . . .सम्यक् प्रकारसे शिक्षा ग्रहण करने वाला; बहुश्रुत होता है . . . . (सम्यक्-) दृष्टि द्वारा हृदयंगम किये गये होते हैं; वह परिश्रमी होता है, शक्तिशाली, दृढ़-पराक्रमी, कुशल-धर्मोंकी धुरीको कन्धेपर उठाये रहने वाला, वह इसी जन्ममें सुख देने वाले, चारों चैतसिक-ध्यानोंको, सरलतासे, बिना कठिनाईके प्राप्त करने वाला होता है और आस्रवोंका क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्तिको इसी जन्ममें प्राप्त कर, साक्षात् कर विहार करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जंगलमें एकान्त-वास करनेके योग्य होता है।

(२) अन्धक विन्द वर्ग

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वैसा गृहस्थोंके संसर्गमें रहने वाला भिक्षु उनका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता, उनका आदर-भाजन नहीं रहता, उनका सत्कार-भाजन नहीं रहता। कौनसी पाँच बातें? वह अमित्रोंका विश्वास करने वाला होता है, वह स्वयं किसी चीजका स्वामी न होते हुए भी

स्वामी की तरह 'यह लो, यह लो' कहने वाला होता है, आपससें झगड़ने वाले परि-वारोंकी संगति करने वाला होता है, कानाफूसी करने वाला होता है तथा अति माँगने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वैसा गृहस्थोंके संसर्गमें रहने वाला भिक्षु, उनका अप्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा नहीं लगता, उनका आदर-भाजन नहीं रहता, उनका सत्कार-भाजन नहीं रहता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वैसा गृहस्थोंके संसर्गमें रहने वाला भिक्षु, उनका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनका आदर-भाजन होता है, उनका सत्कार भाजन होता है। कौनसी पाँच बातें? वह अमित्रोंका विश्वास करने वाला नहीं होता है, वह स्वयं किसी चीजका स्वामी न होते हुए भी स्वामीकी तरह 'यह लो, यह लो' कहने वाला नहीं होता है। आपसमें झगड़ने वाले परिवारों की संगति करने वाला नहीं होता है, कानाफूसी करने वाला नहीं होता है तथा अति-माँगने वाला नहीं होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वैसा गृहस्थोंके संसर्गमें रहने वाला भिक्षु, उनका प्रिय हो जाता है, उन्हें अच्छा लगता है, उनका आदर-भाजन होता है, उनका सत्कार-भाजन होता है।

भिक्षुओ, जिस श्रमणमें ये पाँच बातें हों, उसे अपना अनुयायी-श्रमण नहीं बनाना चाहिये। कौनसी पाँच बातें? वह बहुत दूर दूर रहता है; वह बहुत पास पास रहता है; (उपाध्याय का) भिक्षा-पात्र भर जाने पर उसे ग्रहण नहीं करता; सदोष बात बोलनेके समय टोकता नहीं है; बोलते सामय बीच बीचमें अपने बोलने लगता है, दुष्प्रज्ञ होता है, जड़ होता है, वज्रमूर्ख होता है। भिक्षुओ, जिस श्रमणमें ये पाँच बातें हों उसे अपना अनुयायी-श्रमण नहीं बनाना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस श्रमणमें ये पाँच बातें हों, उसे अपना अनुयायी-श्रमण बनाना चाहिये। कौनसी पाँच बातें? वह बहुत दूर दूर नहीं रहता; वह बहुत पास पास नहीं रहता; (उपाध्याय) का भिक्षापात्र भर जानेपर उसे ग्रहण करता है; सदोष बात बोलनेके समय टोकता है; बोलते समय बीच बीचमें अपने नहीं बोलने लगता है, ज्ञानवान् होता है, जड़ नहीं होता है, वज्रमूर्ख नहीं होता है। भिक्षुओ, जिस श्रमणमें ये पाँच बातें हों उसे अपना अनुयायी-श्रमण बनाना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह इस योग्य नहीं होता कि वह सम्यक्-सम्बोधि को प्राप्त कर विहार कर सके। कौनसी पाँच बातें? वह रूपों (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला नहीं होता, वह शब्दों (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला नहीं होता, वह गन्धों (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला

नहीं होता, वह रसों (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला नहीं होता तथा वह स्पर्शों (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला नहीं होता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह इस योग्य नहीं होता कि वह सम्यक्-सम्बोधिको प्राप्त कर विहार कर सके।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह इस योग्य होता है कि वह सम्यक् सम्बोधिको प्राप्त कर विहार कर सके। कौनसी पाँच बातें ? वह रूपों (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला होता है, वह शब्दों (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला होता है, वह गन्धों के आकर्षणको सहन कर सकने वाला होता है, वह रसोंके (आकर्षण) को सहन कर सकने वाला होता है तथा वह स्पर्शों (के आकर्षण) को सहन कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह इस योग्य होता है कि वह सम्यक्-सम्बोधिको प्राप्तकर विहार कर सके।

एक समय भगवान् मगध (जनपद) के अन्धकविन्द नामक स्थानपर विहार कर रहे थे। तब आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ गये, पास जाकर भगवान्‌को अभिवादनकर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे हुए आनन्दको भगवान्‌ने यह कहा—आनन्द ! जो नये भिक्षु हैं, जिन्हें प्रब्रजित हुए अभी चिरकाल नहीं हुआ है, जो इस बुद्ध-शासन (= धर्म-विनय)में अभी अभी आये है, उन्हें इन पाँच बातोंकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमें प्रतिष्ठित करना चाहिये। कौनसी पाँच बातें ? उन्हें कहना चाहिये—आओ, आयुष्मानो ! तुम लोग शीलवान् बनो, प्राति-मोक्षके नियमोंके पालन करने वाले, आचरण करने वाले, योग्य स्थानोंमें ही विचरने वाले, छोटे से छोटे दोष के करनेमें भी भय मानने वाले तथा शिक्षाओंका अच्छी तरह पालन करने वाले। इस प्रकार उन्हें प्रातिमोक्षके नियमोंकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमें प्रतिष्ठित करना चाहिये। उन्हें कहना चाहिये—आओ आयुष्मानो ! तुम लोग संयतेन्द्रिय होकर विचरो, स्मृतिकी रक्षा करते हुए विचरो, स्मृतिको ज्ञान युक्त बनाते हुए विचरो, सुरक्षित-मन वाले होकर विचरो, सुरक्षित चित्तवाले होकर विचरो। इस प्रकार उन्हें इन्द्रिय संयमके नियमोंकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमें प्रतिष्ठित करना चाहिये। उन्हें कहना चाहिये—आओ आयुष्मानो ! तुम लोग मितभाषी बनो, संयत वाणी बोलने वाले। इस प्रकार उन्हें मित-भाषणके नियमोंकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमें प्रतिष्ठित करना चाहिये। उन्हें कहना चाहिये—आओ आयुष्मानो ! तुम लोग आरण्यक होओ, जंगलोंमें एकान्त स्थानपर रहो।

इस प्रकार उन्हें शरीरके एकान्त-वासकी शिक्षा देनी चाहिये, इसका अभ्यास कराना चाहिये, इसमें प्रतिष्ठित करना चाहिये। उन्हें कहना चाहिये—आओ आयुष्मानो ! तुम सम्यक्-दृष्टिवाले होओ, सम्यक्-दर्शनसे युक्त। इस प्रकार उन्हें सम्यक्-दर्शनकी शिक्षा देनी चाहिये, इसका अभ्यास कराना चाहिये, इसमें प्रतिष्ठित करना चाहिये। आनन्द ! जो नये भिक्षु हैं, जिन्हें प्रव्रजित हुए अभी चिरकाल नहीं हुआ है, जो इस बुद्ध-शासन (= धर्म-विनय) में अभी अभी आये हैं, उन्हें इन पाँच बातोंकी शिक्षा देनी चाहिये, इनका अभ्यास कराना चाहिये, इनमें प्रतिष्ठित करना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर नरकमें ही डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें ? वह निवास-स्थानके विषयमें मात्सर्य-युक्त होती है, वह गृहस्थ-कुलोंके विषयमें मात्सर्य-युक्त होती है, वह वस्तु-लाभके विषयमें मात्सर्य-युक्त होती है, वह गुणानुवादके विषयमें मात्सर्य-युक्त होती है तथा वह धर्मका पाठ सिखानेके विषयमें मात्सर्य-युक्त होती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर नरकमें ही डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर स्वर्गमें ही डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें ? वह निवास-स्थानके विषयमें मात्सर्य-युक्त नहीं होती है, वह गृहस्थ-कुलोंके विषयमें मात्सर्य-युक्त नहीं होती है, वह वस्तु-लाभके विषयमें मात्सर्य-युक्त नहीं होती है, वह गुणानुवादके विषयमें मात्सर्य-युक्त नहीं होती है तथा वह धर्मका पाठ सिखानेके विषयमें मात्सर्य-युक्त नहीं होती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बाते होती हैं, वह जैसे लाकर नरकमें ही डाल दी गई हो। कौनसी पांच बातें ? वह बिना सोचे, बिना विचारे अप्रशंसनीयकी प्रशंसा करती है; बिना सोचे बिना विचारे प्रशंसनीयकी निन्दा करती है; बिना सोचे, बिना विचारे अश्रद्धेय स्थानपर श्रद्धा व्यक्त करती है; बिना सोचे, बिना विचारे श्रद्धेय स्थानपर अश्रद्धा व्यक्त करती है, श्रद्धापूर्वक दी गई चीज नहीं ग्रहण करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर नरकमें ही डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे स्वर्गमें ही डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें ? वह सोच-विचारकर अप्रशंसनीयकी अप्रशंसा करती हैं, सोच-विचारकर, प्रशंसनीयकी प्रशंसा करती है, सोच-विचारकर अश्रद्धेय स्थानपर अश्रद्धा व्यक्त करती हैं; सोच-विचारकर श्रद्धेय स्थान पर श्रद्धा

व्यक्त करती है, श्रद्धापूर्वक दी गई चीज ग्रहण करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर स्वर्गमें ही डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे नरकमें डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें? वह बिना सोचे, बिना विचारे अप्रशंसनीय की प्रशंसा करती है; बिना सोचे, बिना विचारे प्रशंसनीय की निन्दा करती है; ईर्षालु होती है; मात्सर्य-युक्त होती है; श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण नहीं करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे नरकमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पांच बातें होती हैं वह लाकर जैसे स्वर्गमें डाल दी गई हो। कौन सी पाँच बातें? वह सोच-विचारकर निन्दनीय की निन्दा करती है, सोच-विचारकर प्रशंसनीयकी प्रशंसा करती है, ईर्षालु नहीं होती, मात्सर्य-युक्त नहीं होती, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण करती है। भिक्षुओ जिस भिक्षुणी में ये पांच बातें होती है, वह लाकर जैसे स्वर्गमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे नरकमें डाल दी गई हो। कौन सी पाँच बातें? वह बिना सोचे, बिना विचारे अप्रशंसनीयकी प्रशंसा करती है; बिना सोचे बिना विचारे प्रशंसनीयकी निन्दा करती है; मिथ्या-दृष्टि वाली होती है, मिथ्या-संकल्प वाली होती है; श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण नहीं करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे नरकमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर स्वर्गमें डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें? वह सोच-विचारकर निन्दनीय की निन्दा करती है, सोच-विचारकर प्रशंसनीयकी प्रशंसा करती है, सम्यक्-दृष्टि वाली होती है, सम्यक्-संकल्प वाली होती है, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे स्वर्गमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे नरकमें डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें? वह बिना सोचे, बिना विचारे अप्रशंसनीयकी प्रशंसा करती है; बिना सोचे, बिना विचारे प्रशंसनीय की निन्दा करती है, मिथ्या-वाणी वाली होती है, मिथ्या-कर्मान्त वाली होती है, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण नहीं करती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पांच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे नरकमें डालमें दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे स्वर्गमें डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें? वह सोच-विचाकर निन्दनीयकी निन्दा करती है, सोच विचारकर प्रशंसनीयकी प्रशंसा करती है, सम्यक्-वाणी वाली होती है, सम्यक् कर्मान्त वाली होती है, श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण करती है। भिक्षुओ. . . . . स्वर्गमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह लाकर जैसे नरकमें डाल दी गई हो। कौन सी पाँच बातें? वह बिना सोचे, बिना विचारे अप्रशंसनीय की प्रशंसा करती है; बिना सोचे, बिना विचारे, प्रशंसनीय की निन्दा करती है, मिथ्या-व्यायाम वाली होती है, मिथ्या-स्मृति वाली होती है तथा श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण नहीं करती है। भिक्षुओ. . . . नरकमें डाल दी गई हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होतीं हैं, वह लाकर जैसे स्वर्गमें डाल दी गई हो। कौनसी पाँच बातें? वह सोच विचारकर निन्दनीयकी निन्दा करती हैं, सोच विचार कर प्रशंसनीयकी प्रशंसा करती है, सम्यक्-व्यायाम वाली होती है, सम्यक् स्मृति वाली होती है तथा श्रद्धासे दी गई वस्तु ग्रहण करने वाली होती है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुणीमें ये पाँच बातें होती हैं वह लाकर जैसे स्वर्गमें डाल दी गई हो।

(३) गिलान-वर्ग

एक समय भगवान् वैशाली (नगर) के पासके महावनमें कूटागार शालामें निवास करते थे।

तब भगवान् शामके समय ध्यान-भावनासे उठ जहाँ रोगी-शाला थी, वहाँ गये। वहाँ भगवान्ने किसी दुर्बल रोगी भिक्षुको देखा। तब भगवान् वहाँ बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्ने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ! जिस दुर्बल रोगी भिक्षुमें ये पाँच बातें रहती हैं, उसके बारेमें यह आशा की जा सकती है कि वह अचिर कालमें ही आस्रवोंका क्षय कर. . . . प्राप्त कर विहार करेगा। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु शरीरके प्रति अशुभ (= जुगुप्सा) भावनासे युक्त हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल संज्ञा वाला, समस्त लोकके प्रति वैराग्यकी भावनासे युक्त, सब संस्कारोंको अनित्य समझने वाला तथा मरणानुस्मृति उसके मनमें सुप्रतिष्ठित होती है। भिक्षुओ, जिस दुर्बल रोगी भिक्षुमें ये पाँच बातें रहती हैं, उसके बारेमें यह आशा की जा सकती है कि वह अचिर कालमें ही आस्रवोंका क्षय कर. . . . प्राप्त कर विहार करेगा।

भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी इन पाँच बातोंकी भावना करेगी, उसके बारेमें यह आशा की जा सकती है कि उसे दो फलोंमें से एक फलकी प्राप्ति होगी—या तो इसी जन्ममें अर्हत्व अथवा उपाधि-शेष रहने पर अनागामी-भाव। कौनसी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षुकी अपनी स्मृति ही सभी धर्मों (= अस्तित्वों)की उत्पत्ति-विनाश सम्बन्धी प्रज्ञाको लेकर सुप्रतिष्ठित होती है, वह शरीरके प्रति अशुभ (= जुगुप्सा) भावनासे युक्त हो विहार करता है, आहारके प्रति प्रतिकूल-संज्ञावाला, समस्त लोकके प्रति वैराग्यकी भावनासे युक्त तथा सभी संस्कारोंको अनित्य समझने वाला। भिक्षुओ, जो कोई भी भिक्षु या भिक्षुणी इन पाँच बातोंकी भावना करेगी, उसके बारेमें यह आशा की जा सकती है कि उसे दो फलोंमें से एक फलकी प्राप्ति होगी—या तो इसी जन्ममें अर्हत्व अथवा उपाधि-शेष रहने पर अनागामी-भाव।

भिक्षुओ, जिस रोगीमें ये पाँच बातें होती हैं, उसकी शुश्रूषा करना बड़ा कठिन होता है। कौन सी पाँच बातें ? पथ्य ग्रहण करने वाला नहीं होता, पथ्यकी मात्रा नहीं जानता ; दवाईका सेवन करने वाला नहीं होता; अपने हितैषी शुश्रूषा करने वालेको रोगका यथार्थ रूप नहीं बताता कि रोग जा रहा है वा रोग आ रहा है वा रोग स्थिर है, और वह उन शारीरिक वेदनाओंको—जो दुःखद होती हैं, जो तीव्र होती हैं, जो चुभने वाली होती हैं, जो कड़वी होती हैं, जो अप्रिय होती हैं, जो बुरी होती हैं तथा जो प्राणोंका हरण कर लेने वाली जैसी प्रतीत होती हैं, उनको सहन करने वाला नहीं होता। भिक्षुओ, जिस रोगीमें ये पाँच बातें होती हैं, उसकी शुश्रूषा करना बड़ा कठिन होता है।

भिक्षुओ, जिस रोगीमें ये पाँच बातें होती हैं, उसकी शुश्रुषा करना सहज होता है। कौनसी पाँच बातें ? पथ्य ग्रहण करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा जानता है, दवाईका सेवन करने वाला होता है ; अपने हितैषी शुश्रूषा करने वालेको रोगका यथार्थ रूप बताने वाला होता है कि रोग जा रहा है वा रोग आ रहा है वा रोग स्थिर है ; और वह उन शारीरिक वेदनाओंको—जो दुःखद होती हैं, जो तीव्र होती हैं, जो चुभने वाली होती हैं, जो कडुवी होती हैं, जो अप्रिय होती हैं तथा जो प्राणोंका हरण कर लेने वाली जैसी प्रतीत होती हैं—उनको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस रोगीमें ये पाँच बातें होती हैं, उसकी शुश्रूषा करना सहज होता है।

भिक्षुओ, जिस रोगी-शुश्रूषकमें ये पाँच बातें होती हैं वह रोगीकी सेवामें समर्थ नहीं होता। कौनसी पाँच ? वह औषध नहीं तैयार कर सकता; वह पथ्य-अपथ्य

नहीं जानता, अपथ्य ले आता है पथ्य हटा ले जाता है; वस्तु-लोभ से रोगी की सेवामें रहता है, मैत्री-चित्तसे सेवा नहीं करता; उसे मल-मूत्र, उल्टी या थूक हटाकर फेंकनेमें घृणा मालूम होती है तथा वह समय समयपर रोगीको धार्मिक बातचीत करके ढारस बंधानेमें, बढ़ावा देनेमें, प्रमुदित करनेमें, उत्साहित करनेमें, प्रहर्षित करनेमें समर्थ नहीं होता। भिक्षुओ, जिस रोगी शुश्रूषकमें ये पांच बातें होती हैं वह रोगी की सेवामें समर्थ नहीं होता।

भिक्षुओ, जिस रोगी-शुश्रूषकमें ये पांच बातें होती हैं वह रोगीकी सेवामें समर्थ होता है। कौनसी पाँच? वह औषध तैयार कर सकता है; वह पथ्य-अपथ्य जानता है, पथ्य ले आता है, अपथ्य हटा ले जाता है; वह वस्तु-लोभसे रोगीकी सेवामें नहीं रहता है, मैत्री-चित्तसे सेवा करता है; उसे मल-मूत्र, उल्टी या थूक हटाकर फेंकनेमें घृणा नहीं मालूम होती है तथा वह समय समय पर रोगीको धार्मिक बातचीत करके ढारस बँधाने में, बढ़ावा देनेमें, प्रमुदित करनेमें, उत्साहित करनेमें, प्रहर्षित करनेमें समर्थ होता है। भिक्षुओ, जिस रोगी शुश्रूषकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह रोगीकी सेवामें समर्थ होता है।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें आयु घटाने वाली होती है। कौनसी पाँच? अपथ्य सेवन करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा नहीं जानता, कच्चा-पक्का खाने वाला होता है, समय-असमय विचरने वाला होता है तथा अब्रह्मचारी होता है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें आयु घटाने वाली होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें आयु बढ़ाने वाली होती हैं। कौनसी पाँच? पथ्य सेवन करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा जानता है, अच्छी तरह पका हुआ ही खाने वाला होता है, समय देखकर विचरने वाला होता है तथा ब्रह्मचारी होता है। भिक्षुओ, पाँच बातें आयु बढ़ाने वाली होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें आयु घटाने वाली होती हैं। कौनसी पाँच? अपथ्य सेवन करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा नहीं जानता, कच्चा-पका खाने वाला होता है, दुश्शील होता है तथा कुसंगतिमें रहने वाला होता है। भिक्षुओ ये पाँच बातें आयु घटाने वाली होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें आयु बढ़ाने वाली होती हैं। कौन सी पाँच? पथ्य सेवन करने वाला होता है, पथ्यकी मात्रा जानता है, अच्छी तरह पका हुआ ही खाने वाला होता है, सदाचारी होता है तथा सुसंगति में रहने वाला होता है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें आयु बढ़ाने वाली होती हैं।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों वह संघसे पृथक अकेला रहने देनेके योग्य नहीं होता। कौन सी पाँच बातें ? भिक्षुओ, वह भिक्षु जैसे-तैसे चीवर से सन्तुष्ट नहीं होता, जैसी-तैसी भिक्षासे संतुष्ट नहीं होता, जैसे-तैसे शयनासनसे सन्तुष्ट नहीं होता, जैसे-तैसे ग्लान-प्रत्यय भैषज्य-परिष्कारसे संतुष्ट नहीं होता तथा काम-संकल्प-बहुल होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों वह संघसे पृथक अकेला रहने देनेके योग्य नहीं होता।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों वह संघसे पृथक् अकेला रहने देनेके योग्य होता है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, वह भिक्षु जैसे-तैसे चीवरसे सन्तुष्ट होता है, जैसी-तैसी भिक्षासे सन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे शयनासनसे सन्तुष्ट होता है, जैसे तैसे ग्लान-प्रत्यय भैषज्य-परिष्कारसे संतुष्ट होता है, तथा वह नैष्क्रम-संकल्प-बहुल होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों वह संघसे पृथक अकेला रहने देनेके योग्य होता है।

भिक्षुओ, ये पाँच श्रमण-दु:ख हैं। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु जैसे-तैसे चीवरसे असन्तुष्ट होता है, जैसी-तैसी भिक्षासे असन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे शयनासनसे असन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कारसे असन्तुष्ट होता है तथा बेमनसे ब्रह्मचर्य वास करता है। भिक्षुओ, ये पाँच श्रमण-दु:ख हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच श्रमण-सुख हैं। कौनसे पांच ? भिक्षुओ, भिक्षु जैसे-तैसे चीवरसे सन्तुष्ट होता है, जैसी-तैसी भिक्षासे सन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे शयनासनसे सन्तुष्ट होता है, जैसे-तैसे ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कारसे सन्तुष्ट होता है और मनसे ब्रह्मचर्य-वास करता है। भिक्षुओ, ये पाँच श्रमण-सुख हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच अपाय-गामी होते हैं, नरक-गामी होते हैं, सड़ गये होते हैं, इनका उद्धार नहीं हो सकता। कौनसे पाँच ? जो मातृ-हत्या करने वाला होता है, जो पिताकी हत्या करने वाला होता है, जो अर्हतकी हत्या करने वाला होता है, जो दुष्ट चित्तसे तथागतके शरीरमें रक्त बहाने वाला होता है तथा जो संघमें फूट डालने वाला होता है। भिक्षुओ, ये पाँच अपाय-गामी होते हैं, नरक-गामी होते हैं, सड़ गये होते हैं, उनका उद्धार नहीं हो सकता।

भिक्षुओ, ये पाँच हानियाँ हैं। कौनसी पाँच ? सगे सम्बन्धियोंका न रहना, सम्पत्तिका नाश, स्वास्थ्य बिगड़ जाना, शीलकी हानि तथा सम्यक्-दृष्टिसे पतित हो जाना। भिक्षुओ सगे-सम्बन्धियोंके न रहने, सम्पत्तिका नाश हो जाने अथवा स्वास्थ्य बिगड़ जानेके कारण प्राणी मरनेके अनन्तर अपाय, दुर्गति तथा नरकको नहीं प्राप्त

होते हैं, किन्तु शीलकी हानि तथा सम्यक्-दृष्टिसे पतित हो जानेसे प्राणी मरनेके अनन्तर, अपाय, दुर्गति तथा नरकको प्राप्त होते हैं। भिक्षुओ, ये पाँच हानियाँ हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं। कौनसी पाँच? सगे-सम्बन्धियोंका होना, भोग-सम्पत्तिका होना, स्वास्थ्यका होना, शील-युक्त होना, सम्यक् दृष्टि-युक्त होना। भिक्षुओ सगे सम्बन्धियोंके रहनेसे, भोग-सम्पत्तिके रहनेसे, स्वास्थ्यके रहनेसे, प्राणी शरीरके न रहने पर, मरनेके अनन्तर, सुगति, स्वर्ग-लोकमें जन्म ग्रहण नहीं करते, किन्तु शील-सम्पत्तिके रहने पर या सम्यक्-दृष्टि होनेसे ही प्राणी शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति, स्वर्ग-लोकमें जन्म ग्रहण करते हैं। भिक्षुओ, ये पाँच सम्पत्तियाँ हैं।

(४) राज वर्ग

भिक्षुओ, जिस चक्रवर्ती राजामें ये पाँच बातें होती हैं वह धर्मानुसार ही (राज–) चक्र चलाता है, उस धर्मचक्र को उसका कोई भी शत्रु नहीं अप्रवर्तित कर सकता। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह चक्रवर्ती राजा अर्थज्ञ होता है, धर्मज्ञ होता है, मात्रज्ञ होता है, कालज्ञ होता है तथा परिषदका जानकार होता है। भिक्षुओ, जिस चक्रवर्ती राजामें ये पाँच बातें होती हैं वह धर्मानुसार ही (राज-) चक्र चलाता है, उस धर्मचक्रको उसका कोई भी शत्रु अप्रवर्तित नहीं कर सकता। इसी प्रकार भिक्षुओ तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध में भी पाँच बातें हैं और वे धर्मानुसार ही अपने अनुपम धर्म-चक्रका प्रवर्तन करते हैं, उस धर्मचक्रको लोकमें न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न देव, न मार और न कोई ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध अर्थज्ञ होते हैं, धर्मज्ञ होते हैं, मात्रज्ञ होते हैं, कालज्ञ होते हैं तथा परिषदके जानकार होते हैं। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धमें पाँच बातें होती हैं और वे धर्मानुसार ही अपने धर्म-चक्रका प्रवर्तन करते हैं, उस धर्म-चक्रको इस लोकमें न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न देव, न मार और न कोई ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है।

भिक्षुओ, जिस चक्रवर्ती-राजाके ज्येष्ठ पुत्रमें ये पाँच बातें होती हैं, वह पिता द्वारा प्रवर्तित (राज–) चक्रको धर्मानुसार ही अनुप्रवर्तित करता है, उस (राज–) चक्रको उसका कोई भी शत्रु अप्रवर्तित नहीं कर सकता। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, चक्रवर्ती राजाका ज्येष्ठ पुत्र अर्थज्ञ होता है, धर्मज्ञ होता है, मात्रज्ञ होता है, कालज्ञ होता है, तथा परिषदका जानकार होता है। भिक्षुओ, जिस चक्रवर्ती राजाके ज्येष्ठ पुत्रमें ये पाँच बातें होती हैं, वह पिता द्वारा प्रवर्तित (राज–) चक्रको धर्मानुसार ही अनुप्रवर्तित करता है, उस (राज–) चक्रको उसका कोई

भी शत्रु अप्रवर्तित नहीं कर सकता। इसी प्रकार भिक्षुओ सारिपुत्रमें भी ऐसी पाँच बातें हैं, जिनके होनेसे वे तथागतके द्वारा प्रवर्तित अनुपम धर्मचक्रका यथोचित अनुप्रवर्तन करते हैं, उस धर्म-चक्रको इस लोकमें न श्रमण, न ब्राह्मण, न देव, न मार और न ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है। कौन-सी पाँच बातें ? भिक्षुओ, सारिपुत्र अर्थज्ञ हैं, धर्मज्ञ हैं, मात्रज्ञ हैं, कालज्ञ हैं तथा परिषद्के जानकार हैं। भिक्षुओ, सारिपुत्रमें ये ऐसी पाँच बातें हैं, जिनके होनेसे वे तथागतके द्वारा प्रवर्तित अनुपम धर्मचक्रका यथोचित अनुप्रवर्तन करते हैं, उस धर्म-चक्रको इस लोकमें न श्रमण, न ब्राह्मण, न देव, न मार और न ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है।

भिक्षुओ, जो भी धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेश होता है, वह भी अराजकताके चक्रको प्रवर्तित नहीं करता। ऐसा कहनेपर एक भिक्षुने भगवान्से निवेदन किया—"भन्ते ! धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेशका राजा कौन होता है ?"

भगवान्ने उत्तर दिया—"हे भिक्षु ! धर्म। हे भिक्षु ! जो धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेश होता है वह धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर, अन्तःपुरमें धार्मिक आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था करता है।

फिर हे भिक्षु ! जो धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेश होता है, वह धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर नियुक्त क्षत्रिय-सेनाके धार्मिक आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था करता है। वह ब्राह्मणोंके वैश्यों (= गृहपतियों) के, निगम, तथा जनपदके लोगोंके, श्रमण-ब्राह्मणोंके तथा पशु-पक्षियोंके भी धार्मिक आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था करता है।

फिर हे भिक्षु ! वह धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती-नरेश धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी ही पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर,धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकारकर, अन्तःपुरमें धार्मिक आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था करता है। वह नियुक्त क्षत्रिय-सेनाके, ब्राह्मणोंके, वैश्योंके, निगम तथा जनपदके लोगोंके, श्रमण ब्राह्मणोंके तथा पशुपक्षियोंके भी धार्मिक आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था कर धर्मानुसार ही (राज-) चक्र प्रवर्तित करता है। उस (राज-) चक्रको उसका कोई भी शत्रु अप्रवर्तित नहीं कर सकता।

इसी प्रकार भिक्षु ! तथागत अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध, धार्मिक, धर्म-राज धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी ही पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर भिक्षुओंके आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था करते हैं—ऐसा शारीरिक कर्म करना चाहिये, ऐसा शारीरिक कर्म नहीं करना चाहिये; ऐसा वाणीका कर्म करना चाहिये, ऐसा वाणीका कर्म नहीं करना चाहिये; ऐसा मनोकर्म करना चाहिये, ऐसा मनोकर्म करना चाहिये; ऐसी जीविका करनी चाहिये, ऐसी जीविका नहीं करनी चाहिये, तथा इस प्रकारके ग्राम-निगममें रहना चाहिये और इस प्रकारके ग्राम-निगममें न रहना चाहिये।

और फिर भिक्षु ! तथागत अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध, धार्मिक, धर्म-राज धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी ही पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर, भिक्षुओंके आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था करते हैं—ऐसा शारीरिक-कर्म करना चाहिये, ऐसा शारीरिक-कर्म नहीं करना चाहिये; ऐसा वाणीका कर्म करना चाहिये, ऐसा वाणीका कर्म नहीं करना चाहिये; ऐसा मनोकर्म करना चाहिये, ऐसा मनोकर्म नहीं करना चाहिये; ऐसी जीविका करनी चाहिये, ऐसी जीविका नहीं करनी चाहिये तथा इस प्रकारके ग्राम-निगममें रहना चाहिये और इस प्रकारके ग्राम-निगममें न रहना चाहिये। भिक्षु ! वह तथागत अर्हत्-सम्यक्-सम्बुद्ध, धार्मिक, धर्म-राज धर्मको ही लेकर, धर्मका ही सत्कार करते हुए, धर्मका ही गौरव करते हुए, धर्मकी ही पूजा करते हुए, धर्म-ध्वजी होकर, धर्म-केतु होकर, धर्मका ही आधिपत्य स्वीकार कर, भिक्षुओंके आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था करते हैं। वे भिक्षुणियोंके, उपासकोंके, उपासिकाओंके आवरण तथा संरक्षणकी व्यवस्था करते हैं। वे धर्मसे ही अनुपम धर्मचक्र प्रवर्तित करते हैं, इस धर्म-चक्रको इस लोकमें न कोई श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न देव, न मार और न कोई ब्रह्मा ही अप्रवर्तित कर सकता है।

भिक्षुओ, जिस मुकुटधारी क्षत्रिय-राजामें ये पाँच बातें होती हैं, वह जिस जिस दिशामें विहार करता है, वह अपने राज्यकी सीमामें ही विचरता है। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय-राजा माता तथा पिता दोनोंकी ओरसे सुजात होता है, सात पीढ़ी तक शुद्ध वंश वाला, जाति-वादकी दृष्टिसे निर्दोष; ऐश्वर्य-युक्त होता है, महा धनवान्, उसके खजाने तथा धनागार भरे रहते हैं; बलवान होता है, राज-भक्त आज्ञाकारिणी चतुरंगी सेनासे युक्त; उसका महामंत्री (= परिनायक)

भी पण्डित होता है, बुद्धिमान होता है, मेधावी होता है, भूत-भविष्यत-वर्तमानकी बातोंपर विचार करनेमें समर्थ होता है; उसके ये चारों गुण उसे यशस्वी बनाते हैं— इन पाँच गुणोंसे युक्त वह जिस जिस दिशामें जाता है, अपने राज्यकी सीमामें ही जाता है। ऐसा किसलिये ? भिक्षुओ, जो विजयी होता है, उसकी यही रीति होती है।

इस प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जिस जिस दिशामें जाता है 'विमुक्त' चित्त रहकर ही विचरता है। कौन-सी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है, प्रातिमोक्षके नियमोंका पालन करने वाला, योग्य विधिसे और योग्य-स्थानपर ही विचरने वाला, छोटी-से-छोटी गल्ती करनेमें भी भय मानने वाला, शिक्षापदोंको सम्यक् प्रकारसे ग्रहण करने वाला, वैसे ही जैसे मुकुट-धारी क्षत्रिय-राजा (ऊँची) जाति वाला होता है; बहुश्रुत होता है, श्रुतको धारण करने वाला, श्रुतका संग्रह करने वाला, जो आदिमें कल्याणकारक, मध्यमें कल्याण-कारक, अन्तमें कल्याणकारक, सार्थक, सव्यंजन, केवल परिपूर्ण परिशुद्ध ब्रह्मचर्यका गुणानुवाद करने वाले धर्म होते हैं वैसे धर्म इसके बहुश्रुत होते हैं, वाणी द्वारा धारण किये गये होते हैं, मनके द्वारा परिचित किये गये होते हैं, (सम्यक्–) दृष्टि द्वारा भली प्रकार परीक्षित तथा सम्यक् प्रकारसे ग्रहण किये गये होते हैं, जैसे राजा ऐश्वर्य-युक्त होता है, महाधनवान, उसके खजाने तथा धनागार भरे रहते हैं; वह अकुशल-धर्मोंके प्रहाणके लिये तथा कुशल-धर्मोंको धारण करनेके लिये प्रयत्नशील रहता है,सामर्थ्यवान् होता है, दढ़ पराक्रमी होता है, उसने कुशल धर्मोंके प्रति अपने कंधेका जुआ उतारकर रख नहीं दिया होता है जैसे मुकुट धारी क्षत्रिय-राजा बलवान् होता है; वह प्रज्ञावान् होता है, वस्तुओंकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान करानेवाली प्रज्ञासे युक्त, आर्य, बींधने वली, सम्यक् प्रकारसे दुःख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त, जैसे मुकुट धारी क्षत्रिय महामंत्रीसे युक्त होता है; उसके ये चारों गुण विमुक्ति-फल-प्रदायी होते हैं। वह इस पाँचवें विमुक्ति फलसे युक्त होकर जिस जिस दिशामें विहार करता है, विमुक्त-चित्त हो विहार करता है। ऐसा क्यों ? भिक्षुओ, जो विमुक्त-चित्त होता है, उसकी यही रीति होती है।

भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय-राजा का ज्येष्ठ पुत्र पाँच बातोंसे युक्त होनेपर राज्यकी कामना करता है। कौन-सी पाँच बातोंसे युक्त होनेपर ? भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय राजाका ज्येष्ठ पुत्र माता तथा पिता दोनोंकी ओरसे सुजात होता है, सात पीढ़ी तक शुद्ध वंश वाला, जाति-वादकी दृष्टिसे निर्दोष; सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, प्रिय लगने वाला होता है, श्रेष्ठतम वर्णसे युक्त; माता पिताका

प्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला; निगम तथा जनपदके लोगोंका प्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला; जो मुकुटधारी क्षत्रिय राजाओंके शिल्प होते हैं जैसे हस्ती-शिल्प, अश्व-शिल्प, रथ-शिल्प, धनुर्शिल्प, तथा खड्ग-शिल्प, उनके विषयमें सम्पूर्ण रूपसे शिक्षित होता है। उसके मनमें होता है कि मैं माता तथा पिता दोनोंकी ओरसे सुजात हूँ, सात पीढ़ी तक शुद्ध वंश वाला, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष, मैं क्यों राज्यकी कामना न करूँ? मैं सुन्दर हूँ, दर्शनीय हूँ, प्रिय लगने वाला हूँ, श्रेष्ठतम वर्णसे युक्त हूँ, मैं क्यों राज्यकी कामना न करूँ? मैं माता-पिताका प्रिय हूँ, उन्हें अच्छा लगने, वाला हूँ, मैं क्यों राज्यकी कामना न करूँ? मैं निगम तथा जनपदके लोगोंका प्रिय हूँ, उन्हें अच्छा लगने वाला हूँ, मैं क्यों राज्यकी कामना न करूँ? जो मुकुटधारी क्षत्रिय राजाओंके शिल्प होते हैं जैसे हस्ती-शिल्प, अश्व-शिल्प, रथ-शिल्प, धनुर्शिल्प, तथा खड्ग-शिल्प, उनके विषयमें सम्पूर्ण रूपसे शिक्षित हूँ; मैं क्यों राज्यकी कामना न करूँ? भिक्षुओ, जिस मुकुटधारी क्षत्रिय राजाके ज्येष्ठ पुत्रमें ये पाँच बातें होती हैं, वह राज्यकी कामना करता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह आस्रवोंके क्षयकी कामना करता है। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, वह तथागतकी 'बोधि' के प्रति विश्वासी होता है—वह भगवान् अर्हत हैं, सम्यक्-सम्बुद्ध हैं, विद्या तथा आचरणसे युक्त हैं, सुगति-प्राप्त हैं, लोकके जानकार हैं, अनुपम हैं, पुरुषोंका दमन करने वाले सारथी हैं, देव-मनुष्योंके शास्ता हैं, बुद्ध हैं, भगवान् हैं। वह निरोग होता है, स्वस्थ होता है, सम-प्रकृतिसे युक्त, न अतिशील और न अति ऊष्ण, मध्यम-भावसे प्रयत्न करनेमें समर्थ। वह शठ नहीं होता है, मायावी नहीं होता, शास्ता अथवा विज्ञ सब्रह्मचारियोंके सम्मुख यथार्थ बात प्रकट कर देने वाला होता है। वह अकुशल-धर्मोंके प्रहाणके लिये तथा कुशल धर्मोंके धारणके करनेके लिये प्रयत्नशील रहता है, सामर्थ्यवान् होता है, दृढ़ पराक्रमी होता है, उसने कुशल-धर्मोंके प्रति अपने कंधेका जुआ उतार कर रख नहीं दिया होता है। वह प्रज्ञावान् होता है, वस्तुओंकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान कराने वाली प्रज्ञासे युक्त, आर्य, बींधने वाली, सम्यक् प्रकारसे दुःख-क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त। उसके मनमें होता है, मैं श्रद्धावान् हूँ, मैं तथागतकी 'बोधि' के प्रति विश्वासी हूँ—वह भगवान् अर्हत हैं, सम्यक्-सम्बुद्ध हैं....... देव मनुष्योंके शास्ता हैं, बुद्ध हैं, भगवान् हैं; मैं आस्रवोंके क्षयकी कामना क्यों न करूं? मैं निरोग हूँ, स्वस्थ हूँ, सम-प्रकृतिसे युक्त हूँ, न अतिशीत और न अति ऊष्ण, मध्यम-भावसे प्रयत्न

करनेमें समर्थ हूँ, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं ? मैं शठ नहीं हूँ, मायावी नहीं हूँ, शास्ता अथवा विज्ञ सब्रह्मचारियोंके सम्मुख यथार्थ बात प्रगट कर देने वाला, हूँ, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं ? मैं अकुशल धर्मोंके प्रहाणके लिये तथा कुशल धर्मोंके धारण करनेके लिये प्रयत्नशील रहता हूँ, सामर्थ्यवान् रहता हूँ, दृढ़-पराक्रमी रहता हूँ, कुशल-धर्मोंके प्रति अपने कंधेका जुआ उतार कर रख नहीं दिया है, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं ? मैं प्रज्ञावान् हूँ, वस्तुओंकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान कराने वाली प्रज्ञासे युक्त, आर्य बींधने वाली सम्यक् प्रकारसे दुःख-क्षयकी ओर ले जानेवाली प्रज्ञासे युक्त, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं ? भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आस्रवोंके क्षयकी कामना करता है।

भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय-राजाका ज्येष्ठ-पुत्र पाँच बातोंसे युक्त होनेपर उपराजा होनेकी कामना करता है। कौन-सी पाँच बातोंसे युक्त होनेपर ? भिक्षुओ, मुकुटधारी क्षत्रिय-राजाका ज्येष्ठ-पुत्र माता तथा पिता दोनोंकी ओरसे सुजात होता है, सात पीढ़ी तक शुद्ध वंश वाला, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, प्रिय लगने वाला होता है, श्रेष्ठतम वर्णसे युक्त; माता पिताका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला, सेनाका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला, वह पण्डित होता है, मेधावी होता है, भूत-भविष्यत्-वर्तमान की बातोंपर सम्यक् विचार कर सकने वाला। उसके मनमें होता है कि मैं माता तथा पिता दोनोंकी ओरसे सुजात हूँ, सात पीढ़ी तक शुद्ध वंश वाला, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष, मैं उपराजा होनेकी कामना क्यों न करूं ? मैं सुन्दर हूँ, दर्शनीय हूँ, प्रिय लगने वाला हूँ, श्रेष्ठतम वर्णसे युक्त हूँ, मैं उपराजा होनेकी कामना क्यों न करूं ? मैं माता पिताका प्रिय हूँ, अच्छा लगने वाला हूँ, मैं क्यों उपराजा होनेकी कामना न करूँ ? में सेनाका प्रिय हूँ, मैं क्यों उपराजा होनेकी कामना न करूँ ? मैं पण्डित हूँ, मेधावी हूँ, भूत-भविष्यत्, वर्तमानकी बातोंपर विचार कर सकने वाला हूँ, मैं क्यों उपराजा होनेकी कामना न करूँ ? भिक्षुओ, मुकुट धारी क्षत्रिय-राजाका ज्येष्ठ-पुत्र इन पाँच बातोंसे युक्त होनेपर उपराजा होनेकी कामना करता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आस्रवोंके क्षयकी कामना करता है। कौन-सी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु शीलवान् होता है...... शिक्षाओंको सम्यक् प्रकार ग्रहण करता है। वह बहुश्रुत होता है...... सम्यक्-दृष्टिसे युक्त, चारों स्मृति उपस्थानोंमें उसका चित्त सम्यक् प्रकारसे

सुप्रतिष्ठित होता है। वह अकुशल-धर्मोंके प्रहाणके लिये तथा कुशल धर्मोंके धारण करनेके लिये प्रयत्नशील रहता है, सामर्थ्यवान् होता है, दृढ़-पराक्रमी होता है, उसने कुशल-धर्मोंके प्रति अपने कन्धेका जुआ उतार कर रख नहीं दिया होता है। वह प्रज्ञावान् होता है, वस्तुओंकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान कराने वाली प्रज्ञासे युक्त, आर्य, बींधने वाली, सम्यक् प्रकारसे दुःखक्षय की ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त। उसके मनमें होता है मैं शीलवान् हूँ, प्रातिमोक्षके नियमोंका पालन करने वाला, योग्य-विधिसे और योग्य स्थानपर ही विचरने वाला, छोटी-से-छोटी गल्ती करनेमें भी भय मानने वाला तथा शिक्षा-पदोंको सम्यक् प्रकारसे ग्रहण करने वाला, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं? मैं बहु-श्रुत हूँ, श्रुतको धारण करने वाला, श्रुतका संग्रह करने वाला, जो आदिमें कल्याणकारक, मध्यमें कल्याणकारक, अन्तमें कल्याण-कारक, सार्थक, सव्यंजन, केवल परिपूर्ण परिशुद्ध ब्रह्मचर्यका गुणानुवाद करने वाले धर्म होते हैं वैसे धर्म मेरे बहु-श्रुत हैं, वाणी द्वारा धारण किये गये हैं, मनके द्वारा परिचित किये गये हैं, (सम्यक्) दृष्टि द्वारा भली प्रकार परीक्षित तथा सम्यक्-प्रकारसे ग्रहण किये गये हैं, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं? मेरा चित्त चारों स्मृति-उपस्थानोंमें सम्यक् प्रकारसे सुप्रतिष्ठित है, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं? मैं अकुशल-धर्मोंके प्रहाणके लिये तथा कुशल-धर्मोंको धारण करनेके लिये प्रयत्नशील रहता हूँ, सामर्थ्यवान् हूँ, दृढ़-पराक्रमी हूँ, मैंने कुशल-धर्मोंके प्रति अपने कन्धेका जुआ उतार कर रख नहीं दिया है, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं? मैं प्रज्ञावान् हूँ, वस्तुओंकी उत्पत्ति तथा निरोधका यथार्थ ज्ञान कराने वाली प्रज्ञासे युक्त हूँ, आर्य, बींधने वाली, सम्यक् प्रकारसे दुःख क्षयकी ओर ले जाने वाली प्रज्ञासे युक्त हूँ, मैं क्यों आस्रवोंके क्षयकी कामना न करूं? भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आस्रवोंके क्षयकी कामना करता है।

भिक्षुओ, ये पाँच ऐसे हैं जो रातमें सोते कम हैं और जागते अधिक हैं। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, पुरुषकी कामना करने वाली स्त्री रातमें सोती कम है, जागती अधिक है। भिक्षुओ, स्त्री की कामना करने वाला पुरुष रातमें सोता कम है, जागता अधिक है। भिक्षुओ, चोरीकी कामना करने वाला चोर रातमें सोता कम है, जागता अधिक है। भिक्षुओ, राजकीय काम-काजमें लगा हुआ राजा सोता कम है, जागता अधिक है। भिक्षुओ, जो भिक्षु, (आस्रवोंसे) विसंयोगकी कामना करने वाला होता है, रातमें सोता कम है और जागता अधिक है। भिक्षुओ, ये पाँच ऐसे हैं जो रातमें सोते कम हैं, जागते अधिक है।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये पाँच बातें होती हैं वह बहुत खाने वाला होता है, बहुत घूमने वाला होता है, बहुत मल करने वाला होता है, श्लाका ग्रहण करने वाला होता हैं और वह राजकीय हाथी कहलाता है। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, राजाका हाथी रूप, शब्द, गन्ध, रस तथा स्पृष्टव्यको सहन करने वाला नहीं होता। भिक्षुओ, इन पाँच बातोंसे युक्त राजाका हाथी बहुत खाने वाला होता है, बहुत घूमने वाला होता है, बहुत मल करने वाला होता है, श्लाका ग्रहण करने वाला होता है और वह राजकीय हाथी कहलाता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह बहुत भोजन करने वाला होता है, बहुत घूमने वाला होता है, आसन (= पीठ)को मर्दित करने वाला होता है, श्लाका ग्रहण करने वाला होता है, और वह 'भिक्षु' कहलाता है। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु रूप, शब्द, गन्ध रस तथा स्पृष्टव्यको सहन करने वाला नहीं होता। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती है, वह बहुत भोजन करने वाला होता है, बहुत घूमने वाला होता है, आसन (= पीठ) को मर्दित करने वाला होता है, श्लाकाको ग्रहण करने वाला होता है और भिक्षु ' कहलाता है।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह न राजाके योग्य है, न राजाकी सेवामें ही रहनेके योग्य होता है और न वह राजाका अंग ही कहलाता है। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रूपोंको, शब्दोंको, गन्धोंको रसोंको, स्पृष्टव्योंको सहन न करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रूपोंको सहन न करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर, हाथियोंके समूहको देखकर, अश्वोंके समूहको देखकर, रथोंके समूहको देखकर अथवा पैदल-सेनाको देखकर पीछे हट जाता है, मुँह मोड़ लेता है, खड़ा नहीं रहता, युद्ध-भूमिमें नहीं उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी रूपोंको न सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी शब्दोंको न सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर, हाथियोंके शब्दको सुनकर, अश्वोंके शब्दको सुनकर, रथोंके शब्दको सुनकर, पैदल-सेनाके शब्दको सुनकर, अथवा भेरी, ढोल, शंख आदिके शब्दको सुनकर पीछ हट जाता है, मुँह मोड़ लेता है, खड़ा नहीं रहता, युद्ध-भूमिमें उतर नहीं सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी शब्दोंको न सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी गन्धोंको न सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर जब राजाके श्रेष्ठ लडने वाले हाथियोंके मल-मूत्रकी

गन्ध सूँघता है तो वह पीछे हट जाता है, मुँह मोड़ लेता है, खड़ा नहीं रहता, युद्ध-भूमिमें नहीं उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी गन्धोंको न सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रसोंको न सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चार दिन या पाँच दिन घास-पानी न मिलनेपर पीछे हट जाता है, मुँह मोड़ लेता है, खड़ा नहीं रहता, युद्ध-भूमिमें नहीं उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी रसोंको न सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी स्पृष्टव्योंको न सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर एक, दो, तीन चार, या पाँच वाणोंसे बींधे जानेपर पीछे हट जाता है, मुँह मोड़ लेता है, खड़ा नहीं रहता, युद्ध-भूमिमें नहीं उतर सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी स्पृष्टव्योंको न सहन कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह न राजाके योग्य होता है, न राजाकी सेवामें ही रहनेके योग्य होता है, और न वह राजाका अंग ही कहलाता है।

इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह न स्वागत करने योग्य होता है, न आतिथ्य करने योग्य होता है, न दक्षिणाके योग्य होता है, न हाथ जोड़ने योग्य होता है और न लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र ही होता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु रूपों, शब्दों, गन्धों, रसों तथा स्पृष्टव्योंको न सह सकने वाला होता हें। भिक्षुओ, भिक्षु रूपोंको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु आँखसे रूपोंको देखकर आकर्षक रूपमें आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले नहींरख सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु, रूपोंको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु शब्दोंको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु कानसे शब्दोंको सुनकर आकर्षक शब्दोंमें आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले नहीं रख सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु शब्दोंको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु गन्धोंको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु नाकसे गन्धोंको सूँघकर आकर्षक गन्धोंमें आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्त को संभाले नहीं रख सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु गंधोंको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रसोंको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु जिह्वासे रसोंको चखकर आकर्षक रसोंमें आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले नहीं रख सकता।

भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु रसोंको न सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु स्पृष्टव्योंको न सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु कायसे स्पृष्टव्योंका स्पर्श कर आकर्षक स्पृष्टव्योंमें आसक्त हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले नहीं रख सकता। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु स्पृष्टव्योंको स्पर्श न कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह न स्वागत करने योग्य होता है, न आतिथ्य करने योग्य होता है, न दक्षिणाके योग्य होता है, न हाथ जोड़ने योग्य होता है और न लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र ही होता है।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह राजाके योग्य होता है, राजाकी सेवामें ही रहनेके योग्य होता है और वह राजाका अंग ही कहलाता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रूपोंको. . . . . . स्पृष्टव्योंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रूपोंको सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर, हाथियोंके समूहको देखकर, अश्वोंके समूहको देखकर, रथोंके समूहको देखकर अथवा पैदल-सेनाको देखकर पीछे नहीं हट जाता है, मुँह नहीं मोड़ लेता है, खड़ा रहता है, युद्ध-भूमिमें उतर सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी रूपोंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी, शब्दोंको सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जाने पर, हाथियोंके शब्दको सुनकर अश्वोंके शब्दको सुनकर, रथोंके शब्दोंको सुनकर, पैदल-सेनाके शब्दको सुनकर अथवा भेरी, ढोल, शंख आदिके शब्दको सुनकर पीछे नहीं हट जाता है, मुँह नहीं मोड़ लेता है, खड़ा रहता है, युद्ध-भूमिमें उतर सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी शब्दोंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी, युद्धके लिये जानेपर जब राजाके श्रेष्ठ लड़नेवाले हाथियोंके मल-मूत्रकी गन्ध सूँघता है, तो वह पीछे नहीं हट जाता है, मुँह नहीं मोड़ लेता है, खड़ा रहता है, युद्ध-भूमिमें उतर सकता है। भिक्षुओ इस प्रकार राजाका वैसा हाथी गन्धोंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी रसोंको सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर एक दिन, दो दिन, तीन दिन, चार दिन या पाँच दिन घास-पानी न मिलनेपर पीछे नहीं हट जाता है, मुँह नहीं मोड़ लेता है, खड़ा रहता है, युद्ध-भूमिमें उतर सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी रसोंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी स्पृष्टव्योंको सनह कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जानेपर एक, दो,

तीन, चार या पाँच बाणोंसे बींधे जानेपर पीछे नहीं हट जाता है, मुँह नहीं मोड़ लेता है, खड़ा रहता है, युद्ध-भूमिमें उतर सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार राजाका वैसा हाथी स्पृष्टव्योंको सहन कर सकने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह राजाके योग्य होता है, राजाकी सेवामें ही रहनेके योग्य होता है और वह राजाका अंग ही कहलाता है।

इसी प्रकार जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह स्वागत करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोड़ने योग्य होता है और लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु रूपों, शब्दों, गन्धों, रसों तथा स्पृष्टव्योंको सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रूपोंको सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु आँखकेसे रूपको देखकर आकर्षक रूपमें आसक्त नहीं हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु रूपोंको सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु शब्दोंको सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु कानसे शब्दको सुनकर आकर्षक शब्दमें आसक्त नहीं हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु शब्दोंको सह सकने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु गन्धोंको सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु नाकसे गन्धोंको सूँघकर आकर्षक गन्धमें आसक्त नहीं हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु गन्धोंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रसोंको सह सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु जिह्वासे रसोंको चखकर आकर्षक रसमें आसक्त नहीं हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु रसोंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु स्पृष्टव्यों को सहन कर सकने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु काय (= शरीर) से स्पृष्टव्यको स्पर्श कर आकर्षक स्पृष्टव्यमें आसक्त नहीं हो जाता है, वह अपने चित्तको संभाले रख सकता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु स्पृष्टव्योंको सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह स्वागत करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोड़ने योग्य होता है और लोगोंके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, राजाके जिस हाथीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह राजाके योग्य होता है, राजाकी सेवामें ही रहनेके योग्य होता है और वह राजाका अंगही कहलाता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, राजाका हाथी सुनने वाला होता है, नाश करने

वाला होता है, रक्षा करने वाला होता है, सहन करने वाला होता है तथा जाने वाला होता है। भिक्षुओ, राजा का हाथी सुनने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, हाथीका महावत उसे जो कुछ करनेको कहता है, चाहे कोई ऐसी बात हो जो उसने पहलेकी हो, और चाहे कोई ऐसी बात हो जो उसने पहले न की हो, उसे ध्यान देकर, मन लगाकर सारे चित्तसे, कानोंको उधर कर सुनता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजाका हाथी सुनने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका हाथी नाश करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जाने पर हाथीकाभी नाश करता है, हाथी-सवारका भी नाश करता है, अश्वका भी नाश करता है, अश्वारोहीका भी नाश करता है, रथका भी नाश करता है, रथी का भी नाश करता है तथा पैदल (-सेनाका) भी नाश करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजा का हाथी नाश करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजा का हाथी रक्षा करने वाला कसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी युद्धके लिये जाने पर, अपने अगले हिस्से की भी रक्षा करता है, पिछले हिस्सेकी भी रक्षा करता है, अगले पाँवकी भी रक्षा करता है, पिछले पाँवकी भी रक्षा करता है, सिरकी रक्षा करता है, कानोंकी रक्षा करता है, दान्तोंकी रक्षा करता है, सूण्डकी रक्षा करता है, पूँछकी रक्षा करता है, हाथी-सवारकी रक्षा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजाका हाथी रक्षा करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजा का हाथी सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, राजाका वैसा हाथी शक्ति प्रहारोंको सहन करने वाला होता है, तलवारके प्रहारोंको सहन करने वाला होता है, बाणोंके प्रहारोंको सहन करने वाला होता है, कुल्हाडियोंके प्रहारको सहन करने वाला होता है, भेरी-ढोल-शंख आदिके शब्दोंको सहन करने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजा का हाथी सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, राजाका हाथी जाने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, हाथीका महावत उसे जिस किसी भी दिशामें भेजता है, चाहे वह उधर पहले गया हो और चाहे पहले न गया हो, उस दिशामें वह शीघ्र ही जाता है। इस प्रकार भिक्षुओ, राजा का हाथी जाने वाला होता है। भिक्षुओ,राजा के जिस हाथी में ये पाँच बातें होती है, वह राजा के योग्य होता है,राजा की सेवामें ही रहनेके योग्य होता है, और वह राजा का अंग ही कहलाता है।

इसी प्रकार जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह स्वागत करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोड़ने योग्य होता है और लोगोंके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु सुनने वाला होता है, नाश करने वाला होता है, रक्षा करने वाला होता है,

सहन करने वाला होता है तथा जाने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु सुनने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, जिस समय तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयकी देशना होती है उस समय वह ध्यान देकर, मनमें करके, सारे चित्त को उधर लगा, एकाग्र हो, धर्मको सुनता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु सुनने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु नाश करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षुके मनमें जो काम-वितर्क उत्पन्न होते हैं, उन्हें वह सहन नहीं करता, त्याग देता है, हटा देता है, नष्टकर डालता है—अभाव प्राप्त कर डालता है। वह उत्पन्न क्रोध-वितर्कको सहन नहीं करता, त्याग देता है, हटा देता है, नष्ट कर डालता है, अभाव प्राप्त कर डालता है। वह उत्पन्न विहिंसा-वितर्कको सहन नहीं करता, त्याग देता है, हटा देता है, नष्ट कर डालता हैं, अभाव-प्राप्तकर डालता है। वह जो जो पाप-पूर्ण अकुशल-भाव उत्पन्न होते है, उन्हें सहन नहीं करता, त्याग देता है, हटा देता है, नष्ट कर डालता है, अभाव-प्राप्त कर डालता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु नाश करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु रक्षा करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु आँखसे रूपको देखकर उसके निमित्तों (=चिह्नों) या उसके लक्षणों को ग्रहण नहीं करता। उसे डर लगा रहता है कि चक्षुको असंयत विचरने देनेसे कहीं लोभ-द्वेष रूपी अकुशल पाप-पूर्ण भाव मनमें जगह न कर लें। वह उसे संयत रखनेका प्रयास करता है। वह चक्षुकी रक्षा करता है, चक्षु इन्द्रियके सम्बन्धमें संयमी रहता है। वह कानसे शब्द सुनकर . . . नासिका से गन्धको सूँघकर. . . . . जिह्वासे रसको चखकर. . . कायसे स्पृष्टव्यका स्पर्श करके. . . मनसे मनके विषयोंको जानकर उनके निमित्तों (=चिह्नों) या उनके लक्षणोंको ग्रहण नहीं करता। उसे डर लगा रहता है कि मनको असंयत विचरने देनेसे कहीं लोभ-द्वेष रूपी अकुशल पाप-पूर्ण भाव मनमें जगह न कर लें। वह उसे संयत रखनेका प्रयास करता है। वह मनकी रक्षा करता है, मन-इन्द्रियके सम्बन्धमें संयमी रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु रक्षा करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु सहन करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, डंक मारने वाले जीव, मच्छर, हवा, धूप, रेंगने वाले जानवरोंके स्पर्श, दुरुक्त-वचन या दुष्ट-वाणी, उत्पन्न शारीरिक वेदनाओं—दुःखदायक, तीव्र, कठोर, कटु, प्रतिकूल, न अच्छी लगने वाली, प्राण हर लेने वाली—का सहन करने वाला होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, भिक्षु सहन करने वाला होता है। भिक्षुओ, भिक्षु जाने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, भिक्षु उस दिशामें—जिस दिशामें पहले नहीं गया, इस लम्बे मार्गसे उन सभी संस्कारोंके शमन, सभी उपाधियोंके त्याग, तृष्णाके क्षय, वैराग्य,

निरोध, निर्वाण,—शीघ्र ही जाने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह स्वागत करने योग्य होता है, आतिथ्य करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोड़ने योग्य होता है और लोगोंके लिये अनुपम पुण्यक्षेत्र होता है।

(५) तिकण्डकी वर्ग

भिक्षुओ, दुनियामें पाँच तरहके लोग हैं। कौनसे पाँच तरहके लोग? देकर अवज्ञा करने वाला, साथ रखकर अवज्ञा करने वाला, वचनसे चिपकने वाला, लोभी तथा मन्द-बुद्धि मूढ़। भिक्षुओ, आदमी देकर अवज्ञा करने वाला कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेको चीवर, भिक्षा, शयनासन, ग्लान-प्रत्यय-भैषज्य-परिष्कार देता है। उसके मनमें यह अहंकार रहता है—मैं देने वाला, हूँ, यह लेने वाला है। वह उसे देकर अवज्ञा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी देकर अवज्ञा करता है। भिक्षुओ, आदमी साथ रखकर कैसे अवज्ञा करता है? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरे आदमीके साथ दो या तीन वर्ष रहता है। वह साथ रखकर अवज्ञा करता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी साथ रखकर अवज्ञा करता है। भिक्षुओ, आदमी वचनसे चिपकने वाला (=अदियमुख) कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी दूसरेकी प्रशंसा या निन्दा सुनते ही उसे तुरन्त मनमें जगह देता है। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी वचनसे चिपकने वाला होता है। भिक्षुओ, आदमी लोभी कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी अतिरिक्त-श्रद्धा वाला होता है, अतिरिक्त-भक्तिवाला, अतिरिक्त-प्रेम वाला तथा अतिरिक्त प्रासाद वाला। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी लोभी होता है। भिक्षुओ, आदमी मन्द-बुद्धि मूढ़ कैसे होता है? भिक्षुओ, एक आदमी कुशला-कुशल धर्मोंको नहीं पहचानता, सदोष-निर्दोष धर्मोंको नहीं पहचानता, निकृष्ठ-श्रेष्ठ धर्मोंको नहीं जानता तथा कृष्ण-शुक्ल धर्म (=पाप-पुण्य) को नहीं जानता। इस प्रकार भिक्षुओ, आदमी मन्द-बुद्धि मूढ़ होता है। भिक्षुओ, दुनियामें ये पाँच तरहके लोग हैं।

भिक्षुओ, दुनियामें पाँच तरहके लोग हैं। कौनसे पाँच तरहके? भिक्षुओ, एक आदमी दोष भी करता है और पश्चाताप भी करता है, वह चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल-पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी दोष तो करता है किन्तु पश्चाताप नहीं करता। वह भी चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी (अब) दोष नहीं करता है किन्तु तब भी (पूर्वकृत दोषोंके) पश्चातापसे मुक्त नहीं होता। वह भी चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता

है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छद हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी (अब) दोष नहीं करता और पश्चाताप भी नहीं करता; वह भी चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छद हो जाता है। भिक्षुओ, एक आदमी न दोष करता है, न पश्चाताप करता है। वह चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे परिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छद हो जाता है।

भिक्षुओ, जो आदमी दोष भी करता है, पश्चाताप भी करता है, जो चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होने पर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है, उस आदमीको इस प्रकार कहना चाहिये— "आयुष्मान्के मनमें सदोषताके कारण उत्पन्न हुए आस्रव हैं, पश्चातापसे उत्पन्न आस्रव वृद्धि पा रहे हैं। आयुष्मान्के लिये यह अच्छा होगा यदि आयुष्मान् सदोषतासे उत्पन्न आस्रवोंको छोड़ और पश्चातापसे उत्पन्न आस्रवोंको दूर कर चित्त और प्रज्ञा (की मुक्ति) का अभ्यास करें। इस प्रकार आप इस पाँचवीं प्रकारके आदमीके समान हो जायेंगे।"

भिक्षुओ, जो आदमी दोष तो करता है, किन्तु पश्चाताप नहीं करता, जो चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ विमुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है, उस आदमीको इस प्रकार कहना चाहिये—"आयुष्मान् के मनमें सदोषताके कारण उत्पन्न हुए आस्रव हैं, किन्तु पश्चातापसे उत्पन्न आस्रव वृद्धि नहीं पा रहे हैं। आयुष्मान्के लिये यह अच्छा होगा यदि आयुष्मान् सदोषतासे उत्पन्न आस्रवोंको छोड़ चित्त और प्रज्ञा (की मुक्ति) का अभ्यास करें। इस प्रकार आप इस पाँचवीं प्रकारके आदमीके समान हो जायेंगे।

भिक्षुओ, जो आदमी (अब) दोष नहीं करता है, किन्तु (पूर्वकृत दोषोंके) पश्चातापसे युक्त नहीं होता, जो चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ मुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है, उस आदमीको इस प्रकार कहना चाहिये—"आयुष्मान् के मनमें सदोषतासे उत्पन्न आस्रव नहीं है, किन्तु पश्चातापसे उत्पन्न आस्रव वृद्धि पा रहे हैं। आयुष्मान्के लिये यह अच्छा होगा यदि आयुष्मान् पश्चातापसे उत्पन्न आस्रवोंको छोड़ चित्त और प्रज्ञा (की मुक्ति) का अभ्यास करें। इस प्रकार आप इस पाँचवीं प्रकारके आदमीके समान हो जायेंगे।"

भिक्षुओ, जो आदमी न दोष करता है और न पश्चाताप करता है, जो चित्त तथा प्रज्ञाकी उस यथार्थ मुक्तिसे अपरिचित रहता है, जिसके प्राप्त होनेपर सभी अकुशल पाप-धर्मोंका मूलोच्छेद हो जाता है, उस आदमीको इस प्रकार कहना

चाहिये—"आयुष्मान्के मनमें न सदोषतासे उत्पन्न आस्रव हैं और न पश्चातापसे उत्पन्न आस्रव वृद्धि पा रहे हैं। आयुष्मानके लिये यह अच्छा होगा कि आयुष्मान् चित्त् और प्रज्ञा (की मुक्ति) का अभ्यास करें। इस प्रकार आप इस पाँचवीं प्रकारके आदमीके समान हो जायेंगे।"

भिक्षुओ, इस प्रकार ये चारों प्रकारके आदमी इस पाँचवीं प्रकारके आदमी द्वारा इस तरह उपदेश दिये जानेपर, इस तरह अनुशासन किये जानेपर क्रमशः आस्रवोंके क्षयको प्राप्त होते हैं।

एक समय भगवान् वैशालीके महावनकी कूटागार शालामें विहार करते थे। तब भगवान् पूर्वाह्ण समय पहनकर, पात्र चीवर लेकर भिक्षाटन्के लिये निकले। उस समय सारन्दद चैत्यमें इकट्ठे बैठे हुए पाँच सौ लिच्छवियोंमें यह बात चीत चली— दुनियामें इन पाँच रत्नोंकी उत्पत्ति दुर्लभ है। कौनसे पांच रत्नोंकी ? दुनियामें हस्ति-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें अश्व-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनयिामें मणि-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें स्त्री-रत्तनकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें गृहपति (वैश्य) रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें इन पाँच रत्नोंकी उत्पत्ति दुर्लभ है।

तब लिच्छवियोंने एक आदमी को रास्तेपर खड़ा किया—अरे! जब भी तुझे दिखाई दे कि भगवान् चले आ रहे हैं तो हमें कहना। उस आदमीने देखा कि भगवान् दूरसे चले आ रहे हैं। देखकर वह जहाँ लिच्छवी थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर उन लिच्छवियोंसे उसने यह कहा—'महाशयो! यह भगवान् अर्हत सम्यक्-सम्बुद्ध चले आ रहे हैं। अब तुम जिस कार्यका योग्य समय समझो।' तब वे लिच्छवी जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर खड़े हो गये। एक ओर खड़े हुए उन लिच्छवियोंने भगवान्से यह कहा—भन्ते! आपकी बड़ी कृपा होगी, यदि आप जहाँ सारन्दद चैत्य है, वहाँ पधारें। भगवान्ने चुप रहकर स्वीकार किया। तब भगवान् जहाँ सारन्दद चैत्य है, वहाँ पहुँचे। पहुँचकर बिछे आसन पर बैठे। बैठकर भगवान्ने उन लिच्छिवियोंसे यह कहा—लिच्छवियो! इस समय बैठे क्या बातचीत कर रहे हो? इस समय क्या बातचीत चल रही है? भन्ते! हम लोगोंके बीचमें जो यहाँ बैठे हैं, जो यहाँ एकत्र हैं, यह बातचीत चली—दुनियामें इन पाँच रत्नोंकी उत्पत्ति दुर्लभ है। कौनसे पांच रत्नोंकी? दुनियामें हस्ति-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें अश्व-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें मणि-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें स्त्री-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें गृहपति (वैश्य)-रत्नकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें इन पाँच रत्नोंकी उत्पत्ति दुर्लभ है।"

"लिच्छवियो! तुम लोग जो कामनाओंमें ग्रसे रहते हो, तुम्हारे बीच कामनाओंके ही सम्बन्धमें बात-चीत चली। लिच्छवियो! दुनियामें इन पाँच रत्नों

की उत्पत्ति दुर्लभ है। कौनसे पाँच रत्नोंकी। दुनियामें तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध की उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश करने वालेकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश किये जानेपर उसे समझने वाले की उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयके उपदेशको हृदयंगमकर तदानुसार आचरण करने वालेकी उत्पत्ति दुर्लभ है। दुनियामें कृतज्ञ कृतउपकारको जानने वाले व्यक्तिकी उत्पत्ति दुर्लभ है। लिच्छवियो! दुनियामें इन पाँच रत्नोंकी उत्पत्ति दुर्लभ हैं।"

एक समय भगवान् साकेत (जनपद) के तिकन्दकी वनमें विचर रहे थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओंको आमंत्रित किया। —'भिक्षुओ।' भिक्षुओंने भगवान्को प्रतिवचन दिया—'भदन्त।' भगवान्ने यह कहा—

"भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है, यदि वह समय समयपर जो अप्रतिकूल हो उसके प्रति प्रतिकूल-संज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है यदि वह समय समय पर प्रतिकूल हो उसके प्रति अप्रतिकूल-संज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है कि यदि वह समय समय पर जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति प्रतिकूल-संज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है यदि वह समय समयपर जो प्रतिकूल हो तथा जो अप्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति अप्रतिकूल-संज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षुके लिये यह अच्छा है यदि वह समय समय पर जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंकी ओरसे विमुख हो उपेक्षावान् हो स्मृति सम्प्रजन्यसे युक्त हो विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो उसके प्रति प्रतिकूल संज्ञा धारण करके विहार करे? ताकि आकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें राग उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो उसके प्रति प्रतिकूल संज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो प्रतिकूल हो उसके प्रति अप्रतिकूल संज्ञा धारण करके विहार करे? ताकि विकर्षक विषयों के प्रति मेरे मनमें द्वेष उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो प्रतिकूल हो उसके प्रति अप्रतिकूल-संज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति प्रतिकूल-संज्ञा धारण कर विहार करे? ताकि आकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें राग उत्पन्न न हो, ताकि विकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें द्वेष उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति प्रतिकूल-संज्ञा धारण करके विहार करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो प्रतिकूल हो तथा जो अप्रतिकूल हो उन दोनोंके प्रति अप्रतिकूल-संज्ञा धारण कर विहार करे।? ताकि विकर्षक विषयोंके

प्रति मेरे मनमें द्वेष उत्पन्न न हो, ताकि आकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें राग उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो प्रतिकूल हो तथा जो अप्रतिकूल हो उन दोनों के प्रति अप्रतिकूल-संज्ञा धारण करे। भिक्षुओ, भिक्षु किस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंकी ओरसे विमुख हो उपेक्षावान् हो स्मृति-सम्प्रजन्यसे युक्त हो विहार करे? ताकि आकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें कोई, कहीं, कुछ राग उत्पन्न न हो; ताकि विकर्षक विषयोंके प्रति मेरे मनमें कोई, कहीं कुछ द्वेष उत्पन्न न हो, ताकि मूढ़ता उत्पन्न करने वाले विषयोंके प्रति मेरे मनमें कोई, कहीं, कुछ मोह उत्पन्न न हो। भिक्षुओ, भिक्षु इस उद्देश्यसे जो अप्रतिकूल हो तथा जो प्रतिकूल हो उन दोनोंकी ओरसे विमुख हो, उपेक्षावान् हो स्मृति-सम्प्रजन्यसे युक्त हो विहार करे।

भिक्षुओ, जिसमें ये पाँच बातें हों वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर नरकमें डाल दिया हो। कौनसी पाँच बातें? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, काम भोगोंके सम्बन्धमें मिथ्याचारी होता है, झुठ बोलने वाला होता है तथा सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली-चीजोंके ग्रहण करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिसमें ये पाँच बातें हों, वह ऐसा ही होता है, जैसे लाकर नरक में डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिसमें ये पाँच बातें हों वह ऐसा ही होता है, जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? वह प्राणी-हिंसा करनेसे विरत होता है, चोरी करनेसे विरत होता है, काम-भोगोंकें सम्बधमें मिथ्याचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है तथा सुरा-मेरय-मद्य आदि नशीली चीजोंके ग्रहण करनेसे विरत रहता है। भिक्षुओ, जिसमें ये पाँच बातें हों, वह ऐसा ही होता है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों उसे 'मित्र' मानकर उसका आश्रय नहीं करना चाहिये। वह खेती का काम आदि करवाता है झगड़े पैदा करता है, प्रसिद्ध भिक्षुओंके बीच विरोधी पक्ष ग्रहण करता है, लम्बी अव्यवस्थित चारिकायें करता है, तथा समय समय पर धार्मिक बातचीत द्वारा शिक्षा देने, उत्साहित करने, बढ़ावा देने और चित्त प्रसन्न करनेमें समर्थ नहीं होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों उसे मित्र मानकर उसका आश्रय नहीं करना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हो उसे 'मित्र' मानकर उसका आश्रय करना चाहिये। वह खेतीका काम आदि नहीं करवाता है, झगड़े पैदा नहीं करता है, प्रसिद्ध भिक्षुओंके बीच विरोधी पक्ष नहीं ग्रहण करता, लम्बी अव्यवस्थित चारिकायें नहीं करता तथा समय समय पर धार्मिक बातचीत द्वारा शिक्षा देने, उत्साहित करने,

बढ़ावा देने और चित्त प्रसन्न करनेमें समर्थ होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, उसे 'मित्र' मानकर उसका आश्रय करना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच असत्पुरुष-दान हैं। कौनसे पाँच? आदर-बुद्धिसे न देना, असावधानीसे देना, अपने हाथसे न देना, फेंकनेकी तरह देना, फल-प्राप्तिमें अविश्वास पूर्वक देना। भिक्षुओ, ये पाँच असत्पुरुष-दान हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच सत्पुरुष-दान हैं। कौनसे पाँच? आदर-बुद्धिसे देना, सावधानीसे देना, अपने हाथसे देना, गौरव-पूर्वक देना, फल-प्राप्तिमें विश्वास रखकर देना। भिक्षुओ, ये पाँच सत्पुरुष-दान हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच सत्पुरुष-दान हैं। कौनसे पाँच? श्रद्धापूर्वक दान देता है, गौरव सहित दान देता है, उचति समय पर दान देता है, मुक्तहस्त होकर दान देता है, बिना अपने या दूसरेको आघात पहुँचाये दान देता है। भिक्षुओ, जो श्रद्धापूर्वक दान देता है, उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है वहाँ वहाँ वह धनवान पैदा होता है, महा धनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, मनोरम होता है तथा श्रेष्ठतम रूपसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जो गौरव सहित दान देता है, उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है वहाँ वहाँ वह धनवान् पैदा होता है, महाधनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है मनोरम होता है, तथा श्रेष्ठतम रूपसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जो उचित समयपर दान देता है, उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है, वहाँ वहाँ वह धनवान् पैदा होता है, महा धनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, मनोरम होता है तथा श्रेष्ठतम रूपसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जो मुक्त हस्त होकर दान देता है,उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है, वहाँ वहाँ वह धनवान् पैदा होता है, महाधनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है, सुन्दर होता है, दर्शनीय होता है, मनोरम होता है तथा श्रेष्ठतम रूपसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जो बिना अपने या दूसरेको आघात पहुँचाये दान देता है, उसे जहाँ जहाँ उस दानका फल प्राप्त होता है, वहाँ वहाँ वह धनवान् पैदा होता है, महाधनवान् पैदा होता है, ऐश्वर्यशाली होता है और आगसे, पानीसे, राजासे, चोरसे, अथवा अप्रिय उत्तराधिकारीसे—किसीसे भी उसे धन-हानि का खतरा नहीं रहता।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें क्षणिक-मुक्ति प्राप्त[१] भिक्षुकी हानिका कारण होती हैं, कौनसी पाँच? कार्य-बहुलता, वचन-बहुलता, निद्रा-बहुलता, परिचय-बहुलता तथा विमुक्त-चित्तका पर्यवेक्षण न करना। भिक्षुओ, ये पाँच बातें क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण होती हैं।

---

१ किसी कार्यमें लगे रहनेपर चित्तकी राग-द्वेषसे समय-मर्यादित 'मुक्ति'।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती हैं। कौनसी पाँच? कार्य-बहुलताका न होना, वचन-बहुलताका न होना, निद्रा-बहुलताका न होना, परिचय-बहुलता का न होना, विमुक्त चित्तका पर्यवेक्षण करना। भिक्षुओ, ये पाँच बातें क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण होती हैं, कौनसी पाँच? कार्य-बहुलता ,वचन-बहुलता, निद्रा-बहुलता, इन्द्रिय-असंयम, भोजनमें मात्रज्ञ न होना। भिक्षुओ, ये पाँच बातें क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानि का कारण होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती हैं। कौन-सी पांच? कार्य-बहुलताका न होना, वचन-बहुलताका न होना, निद्रा-बहुलताका न होना, इन्द्रिय-संयम, भोजनमें मात्रज्ञ होना। भिक्षुओ, ये पाँच बातें क्षणिक-मुक्ति-प्राप्त भिक्षुकी हानिका कारण नहीं होती हैं।

(१) **सद्धर्म वर्ग**

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती हैं वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नहीं होता कि कुशल-धर्मोंके पथपर चलकर उद्देश्य प्राप्ति कर सके। कौन-सी पाँच बातें? धर्म-कथाका उपहास करता है, धर्म-कथिकका उपहास करता है, अपना उपहास करता है, जड़-मूर्ख दुष्टप्रज्ञ होता है तथा न जानते हुए भी समझता है कि मैं जानता हूँ। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती हैं वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नहीं होता कि कुशल-धर्मोंके पथपर चलकर उद्देश्य -प्राप्ति कर सके।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती है वह धर्म सुनता हुआ इस योग्य होता है कि कुशल धर्मोंके पथपर चलकर उद्देश्य प्राप्ति कर सके। कौन-सी पाँच बातें? धर्म-कथाका उपहास नहीं करता है, धर्म-कथितका उपहास नहीं करता है, अपना उपहास नहीं करता है, जड़-मूर्ख नहीं, प्रज्ञावान् होता है तथा नहीं जाननेपर यह नहीं समझता कि मैं जानता हूँ। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती हैं वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य होता है कि कुशल-धर्मोंके पथपर चलकर उद्देश्य प्राप्त कर सके।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती हैं, वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नहीं होता कि कुशल-धर्मोंके पथपर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर सके। कौन-सी पाँच बातें? ढोंगी ढोंग-युक्त चित्तसे धर्मोपदेश सुनता है, छिद्रानुवेषण करनेकी दृष्टिसे उपालम्भ देनेकी इच्छा वाला धर्मोपदेश सुनता है, धर्मोपदेशके प्रति दुर्भावना यक्त चित्तसे धर्मोपदेश सुनता है, जड़-मूर्ख दुष्प्रज्ञ होता है, तथा न जानते हुए भी

समझता है कि मैं जानता हूँ। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती हैं वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य नहीं होता कि कुशल-धर्मोंके पथपर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर सके।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती हैं वह धर्म सुनता हुआ भी इस योग्य होता है कि कुशल-धर्मोंके पथपर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर सके। कौन-सी पाँच बातें? अम्रक्ष-युक्त चित्तसे अम्रक्षी (= जो ढोंगी नहीं है) धर्मोपदेश सुनता है, छिद्रानवेषण नहीं करनेकी दृष्टिसे उपालम्भ रहित हो धर्मोपदेश सुनता है, धर्मोपदेशक के प्रति दुर्भावना रहित चित्तसे धर्मोपदेश सुनता है, जड़-मूर्ख नहीं, प्रज्ञावान होता है तथा नहीं जाननेपर यह नहीं समझता कि मैं जानता हूँ। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें होती हैं, वह धर्म सुनता हुआ इस योग्य होता है कि कुशल-धर्मोंके पथपर चलकर उद्देश्य-प्राप्ति कर सके।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अंतर्धान होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु ध्यान देकर धर्मका श्रवण नहीं करते, ध्यान देकर धर्मका पाठ नहीं करते, ध्यान देकर धर्मको याद नहीं रखते, ध्यान देकर स्मृति-गत धर्मोंके अर्थपर विचार नहीं करते और न ध्यान देकर उन धर्मों तथा उनके अर्थोंको जानकर तदनुसार जीवन ही व्यतीत करते हैं। भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अंतर्धान न होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु ध्यान देकर धर्मका श्रवण करते हैं, ध्यान देकर धर्मका पाठ करते हैं, ध्यान देकर धर्मको याद रखते हैं, ध्यान देकर स्मृति-गत धर्मोंके अर्थपर विचार करते है तथा ध्यान देकर उन धर्मों तथा उनके अर्थोंको जानकर तदनुसार जीवन व्यतीत करते हैं। भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका—सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म, वैथुल्य (वेदल्ल) का—पाठ नहीं करते हैं। भिक्षुओ, यह पहली बात है, जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठ किया है, उसी तरह विस्तारसे दूसरोंको उस धर्मकी देशना नहीं करते। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है, जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अंतर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठ किया है, उसी तरह विस्तारसे दूसरोंको

वह धर्म बँचवाते नहीं हैं। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है, जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठ किया है, उसी तरहसे वे विस्तारसे उसका सम्मिलित-पाठ (= सज्झायन) नहीं करते हैं। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठ किया है, उसी तरहसे वे उस धर्मका चित्तसे विचार नहीं करते हैं, मनन नहीं करते हैं, मनसे उसका परीक्षण नहीं करते हैं। भिक्षुओ, यह पाँचवी बात है जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अंतर्धान न होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच ? भिक्षुओ, भिक्षु धर्मका—सुत्त, गेय्य, वेय्याकरण, गाथा, उदान, इतिवुत्तक, जातक, अब्भुतधम्म, वैथुल्य (= वेदल्ल) का—पाठ करते हैं। भिक्षुओ, यह पहली बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अंतर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठ किया है, उसी तरहसे दूसरोंको उस धर्मकी देशना करते हैं। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अंतर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठ किया है, उसी तरह विस्तारसे दूसरोंको वह धर्म बँचवाते हैं। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है, जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठ किया है, उसी तरहसे वे विस्तारसे उसका सम्मिलित पाठ (= सज्झायन) करते हैं। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु जैसे उन्होंने धर्म सुना है, जैसे उन्होंने पाठ किया है, उसी तरहसे वे उस धर्मका चित्तसे विचार करते हैं, मनन करते हैं, मनसे उसका परीक्षण करते हैं। भिक्षुओ, यह पाँचवीं बात है, जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने तथा सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अंतर्धान होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु ऐसे दुर्गृहीत सुत्रोंका पाठ करते हैं जिनके पद-व्यंजन यथायोग्य नहीं होते। भिक्षुओ, जिनके पद-व्यंजन यथायोग्य नहीं होते, उन सुत्रोंका अर्थ भी यथायोग्य नहीं होता। भिक्षुओ, यह पहली बात है

जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। भिक्षुओ, भिक्षु, दुर्मुख होते हैं, दुर्वचनोंसे युक्त, असहनशील, अनुशासनको अंगीकार करनेमें अकुशल। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, जो भिक्षु बहु-श्रुत होते हैं, आगम-धर होते हैं, धर्म-धर होते हैं, विनय-धर होते हैं, मातृका-धर[1] होते हैं, वे दूसरोंको अच्छी तरह सूत्र नहीं बँचवाते। उनके मरनेपर सुत्तन्तकी जड़ कट जाती है, उसके लिये कहीं शरण-स्थल नहीं रहता। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धान होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु जोड़ू-बटोरू हो जाते हैं, शिथिल हो जाते हैं, पतनकी ओर पूर्वगामी, एकान्त चिन्तनके विषयमें जुआ उतार कर रख देने वाले, अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये वीर्य नहीं करने वाले, तथा प्रयत्न नहीं करने वाले अनधिकृत-को अधिकृत करनेके लिये, असाक्षातकृतको साक्षात् करनेके लिये। उन के पीछे आने वाली जनता भी उनका अनुकरण करती है। वह भी जोड़ु-बटोरू हो जाती है, शिथिल हो जाती है, पतनकी ओर पूर्व-गामी, एकान्त-चिन्तनके विषयमें जुआ उतार कर रख देनेवाली, अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये वीर्य नहीं करने वाली तथा प्रयत्न नहीं करने वाली अनधिकृतको अधिकृत करनेके लिये, असाक्षातकृतको साक्षात् करनेके लिये। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धानका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, संघमें फूट पड़ जाती है, भिक्षुओ, संघमें फूट पड़ जानेपर परस्पर गाली दी जाती है, परस्पर भला-बुरा कहा जाता है, परस्पर झगड़े होते हैं, परस्पर एक दूसरेको त्यागते हैं। ऐसा होनेपर संघके प्रति जो अश्रद्धावान् होते हैं, वे श्रद्धावान् नहीं बनते; जो श्रद्धावान् होते हैं, उनमें से कुछ अश्रद्धावान् हो जाते हैं। भिक्षुओ, यह पाँचवीं बात है जो सद्धर्मके ऱ्हासका, सद्धर्मके अन्तर्धानका कारण होती है।

भिक्षुओ, ये पाँच बातें सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अंतर्धान न होनेका कारण होती हैं। कौन-सी पाँच बातें? भिक्षुओ, भिक्षु ऐसे सुगृहीत सुत्रोंका पाठ करते हैं जिनके पद-व्यंजन यथायोग्य होते हैं, उन सुत्रोंका अर्थ भी यथायोग्य होता है। भिक्षुओ, जिनके पद-व्यंजन यथायोग्य होते हैं, उन सुत्रोंके अर्थ भी यथायोग्य होते हैं। भिक्षुओ, यह पहली बात है, जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु सुवच होते हैं, सुवचनोंसे युक्त, सहनशील, अनुशासनको अंगीकार करनेमें कुशल। भिक्षुओ, यह दुसरी बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका ऱ्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। भिक्षुओ, जो भिक्षु बहुत-श्रुत होते हैं, आगम-धर

---

१. अभिधर्मके शीर्षकोंको धारण करने वाले।

होते हैं, धर्म-धर होते हैं, विनय-धर होते हैं, मातृका-धर होते हैं, वे दूसरोंको अच्छी तरह सूत्र बँचवाते हैं। उनके मरने पर सु त्तन्तका मूलोच्छेद नहीं होता, उसके लिये प्रतिष्ठा बनी रहती है। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका न्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु, जोड-बटोरु नहीं होते, शिथिल नहीं होते, पतनकी ओर पूर्व-गामी नहीं होते, एकान्त-चिन्तनके विषयमें जुआ उतार कर रख देने वाले नहीं होते। अप्राप्तकी प्राप्तिके लिये, अनधिकृत पर अधिकार करनेके लिये असाक्षातकृतको साक्षात करनेके लिये वीर्य करते हैं। भिक्षुओ, यह चौथी बात है, जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका न्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है। फिर भिक्षुओ, संघमें फूट नहीं पड़ जाती है, वह समग्र-भावसे एक होकर अविवाद-रहित हो, एक ही उद्देश्यको लेकर सुखपूर्वक विहार करता है। भिक्षुओ, संघके एकत्र रहनेपर, परस्पर गाली नहीं दी जाती, परस्पर भला-बुरा नहीं कहा जाता, परस्पर झगड़े नहीं होते, परस्पर एक दूसरेको नहीं त्यागते। ऐसा होनेपर जो अश्रद्धावान् होते हैं, वे श्रद्धावान हो जाते हैं; जो श्रद्धावान होते हैं, वे अधिक श्रद्धावान् हो जाते हैं। भिक्षुओ,यह पाँचवीं बात है, जो सद्धर्मकी स्थिति, सद्धर्मका न्हास न होने, सद्धर्मका अन्तर्धान न होनेका कारण होती है।

भिक्षुओ, आदमी आदमीको लेकर, इन पाँच आदमियोंके प्रति बोली गई वाणी अप्रिय-वाणी होती है। किन पाँच आदमियोंके प्रति? भिक्षुओ, अश्रद्धावान्के लिये श्रद्धा सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। दुश्शीलके लिये सदाचार सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। अल्प-श्रुतके लिये बहुश्रुत-पनकी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। कंजूसके लिये त्याग सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। मूर्खके लिये प्रज्ञा सम्बन्धी बातचीत अप्रिय वाणी होती है। भिक्षुओ, अश्रद्धावान्के लिये श्रद्धा सम्बन्धी बातचीत अप्रिय वाणी क्यों होती हैं? भिक्षुओ, जो अश्रद्धावान् होता है वह श्रद्धाकी बात कही जानेपर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप, द्वेष तथा असंतोष प्रकट करता है। यह किसलिये? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस श्रद्धा-सम्पत्तिको नहीं देखता, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये अश्रद्धावान्के लिये श्रद्धा सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, दुश्शीलके लिये सदाचार सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी क्यों होती है? भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, वह सदाचारकी बातचीत कही जानेपर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस सदाचार-सम्पत्तिको नहीं देखता। उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये दुश्शीलके लिये

सदाचार सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, अल्प-श्रुतके लिये बहु-श्रुत-पन सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी क्यों होती है? भिक्षुओ, जो अल्प-श्रुत होता है वह बहु-श्रुत-पनकी बातचीत कही जानेपर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस बहुश्रुत-पनकी सम्पत्तिको नहीं देखता, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये अल्प-श्रुतके लिये बहु-श्रुत-पत सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, कंजूसके लिये त्याग सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी क्यों होती है? भिक्षुओ, जो कंजूस होता है, वह त्यागकी बातचीत कही जानेपर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस त्याग-सम्पत्तिको नहीं देखता, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये कंजूसके लिये त्याग सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, मूर्खके लिये प्रज्ञा सम्बन्धी बातचीत अप्रिय-वाणी क्यों होती है? भिक्षुओ, जो मूर्ख होता है, वह प्रज्ञाकी बातचीत कही जानेपर क्षुब्ध होता है, कुपित होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है, कोप-द्वेष तथा असन्तोष प्रकट करता है। यह किसलिये? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस प्रज्ञा-सम्पत्तिको नहीं देखता, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा नहीं होता। इसलिये मूर्खके लिये प्रज्ञा सम्बन्धी बात-चीत अप्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, आदमी आदमीको लेकर इन पाँच आदमियोंके प्रति बोली गई वाणी अप्रिय-वाणी होती है।

भिक्षुओ, आदमी आदमीको लेकर इन पाँच आदमियोंके प्रति बोली गई वाणी प्रिय-वाणी होती है। किन पाँच आदमियोंके प्रति? भिक्षुओ, श्रद्धावानके लिये श्रद्धा सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी होती है। शीलवान्के लिये सदाचार सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी होती है। बहुश्रुतके लिये बहुश्रुत-पन सम्बन्धी बातचीत प्रियवाणी होती है। त्यागीके लिये त्याग सम्बन्धी बातचीत प्रियवाणी होती है। प्रज्ञावान्के लिये प्रज्ञा सम्बन्धी बातचीत प्रियवाणी होती है। भिक्षुओ, श्रद्धावानके लिये श्रद्धा सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी क्यों होती है? भिक्षुओ, जो श्रद्धावान् होता है, वह श्रद्धाकी बातचीत कहीं जानेपर क्षुब्ध नहीं होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है, विरोध नहीं करता है, कोप, द्वेष, तथा असंतोष प्रकट नहीं करता है। यह किस लिये? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस श्रद्धा सम्पत्तिको देखता है, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये श्रद्धावान्के लिये श्रद्धा-सम्बन्धी बातचीत प्रियवाणी होती है। भिक्षुओ, शीलवान्के लिये सदाचार सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी क्यों होती है? भिक्षुओ, जो शीलवान् होता है, वह सदाचारकी बातचीत

कही जानेपर क्षुब्ध नहीं होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है, विरोध नहीं करता है, कोप, द्वेष, तथा असंतोष प्रकट नहीं करता है। यह किस लिये ? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस सदाचार सम्पत्तिको देखता है, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये शीलवान्के लिये सदाचार सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, बहुश्रुतके लिये बहुश्रुतपन सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी क्यों होती है? भिक्षुओ, जो बहुश्रुत होता है, वह बहुश्रुत-पनकी बातचीत कहीं जानेपर क्षुब्ध नहीं होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है, विरोध नहीं करता है। यह किस लिये ? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस बहु-श्रुत-सम्पदाको देखता है, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये बहुश्रुतके लिये बहुश्रुत-पन सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, त्यागीके लिये त्याग सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी क्यों होती है ? भिक्षुओ, जो त्यागी होता है, वह त्यागकी बातचीत कही जाने पर क्षुब्ध नहीं हो होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है, विरोध नहीं करता है। यह किस लिये ? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस त्याग-सम्पदाको देखता है, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये त्यागीके लिये त्याग सम्वन्धी बातचीत प्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, प्रज्ञावानके लिये प्रज्ञा सम्वन्धी बातचीत प्रिय-वाणी क्यों होती है ? भिक्षुओ, जो प्रज्ञावान् होता है, वह प्रज्ञाकी बातचीत कही जानेपर क्षुब्ध नहीं होता है, कुपित नहीं होता है, क्रोधित नहीं होता है, विरोध नहीं करता है। यह किस लिये ? भिक्षुओ, वह अपनेमें उस प्रज्ञा सम्पदाको देखता है, उस बातचीतसे उसके मनमें प्रीति-प्रमोद पैदा होता है। इसलिये प्रज्ञावान्के लिये प्रज्ञा सम्बन्धी बातचीत प्रिय-वाणी होती है। भिक्षुओ, आदमी आदमीको लेकर इन पाँच आदमियोंके प्रति बोली गई वाणी प्रियवाणी होती हैं।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह आसक्तिमें आसक्त हो जाता है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु अश्रद्धावान् होता है, दुश्शील होता है, अल्प-श्रुत होता है, आलसी होता है, तथा मूर्ख (दुष्प्रज्ञ) होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह आसक्तिमें आसक्त हो जाता है।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बात होती हैं वह विशारद होता है। कौनसी पाँच बातें ? भिक्षुओ, भिक्षु श्रद्धावान् होता है, सदाचारी होता है, बहुश्रुत होता है, अप्रमादी होता है, तथा प्रज्ञावान् होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पांच बातें होती हैं, वह विशारद होता है।

एक समय भगवान् कोसम्बीके घोषितारामर्मे विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् उदायी बहुतसे गृहस्थोंसे घिरे हुए उन्हें बैठे धर्मोपदेश दे रहे थे। आयुष्मान् आनन्दने देखा कि आयुष्मान् उदायी बहुतसे गृहस्थोंसे घिरे हुए, उन्हें बैठे धर्मोपदेश दे

रहे थे। देखकर आयुष्मान् आनन्द जहाँ भगवान् थे वहाँ पहुँचे। जाकर भगवान्को प्रणामकर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे आयुष्मान् आनन्दने भगवान्से निवेदन किया— भन्ते! आयुष्मान् उदायी बहुतसे गृहस्थोंसे घिरे हुए उन्हें बैठे धर्मोपदेश दे रहे हैं। (भगवान् बोले)—आनन्द! दूसरोंको धर्मोपदेश देना आसान नहीं। आनन्द! जिसे दूसरोंको धर्मोपदेश देना हो उसे स्वयं पाँच बातोंमें प्रतिष्ठित होकर दूसरोंको धर्मोपदेश देना चाहिये। कौनसी पाँच बातें? उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं दान-कथा. . . शील-कथा आदिके क्रमसे ही दूसरोंको धर्मोपदेश दूँगा। उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं प्रत्येक कथनका कारण प्रकट करते हुए दूसरोंको धर्मोपदेश दूँगा। उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं सभी प्राणियोंके प्रति करुणासे प्रेरित होकर ही दूसरोंको धर्मोपदेश दूँगा। उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं बिना चीवर आदि किसी भी वस्तुके लोभके दूसरोंको धर्मोपदेश दूँगा। उसे निश्चय करना चाहिये कि मैं बिना अपने या दूसरोंको आघात पहुँचाये दूसरोंको धर्मोपदेश दूँगा। आनन्द! दूसरोंको धर्मोपदेश देना आसान नहीं। आनन्द! जिसे दूसरोंको धर्मोपदेश देना हो उसे स्वयं पाँच बातोंमें प्रतिष्ठित होना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होनेपर इन्हें रोकना बहुत कठिन हो जाता है। कौनसी पाँच? उत्पन्न हुए रागका रोकना बहुत कठिन होता है। उत्पन्न हुए क्रोधका शमन बहुत कठिन होता है। उत्पन्न हुए मोहका मूलोच्छेद बहुत कठिन होता है। उत्पन्न सूझ (प्रतिभा) को दबाना बहुत कठिन होता है। उत्पन्न गमनचित्त (कहीं जानेका संकल्प) को बदलना बहुत कठिन हो जाता है। भिक्षुओ, ये पाँच (प्रवृत्तियाँ) ऐसी हैं, जिनके उत्पन्न होनेपर उन्हें रोकना कठिन हो जाता है।

(२) आघात वर्ग

भिक्षुओ, ये पाँच विरोधी-भावके उपशमन हैं। भिक्षुको चाहिये कि वह इन पाँचों विरोधी-भावोंके उत्पन्न होनेपर उनका सर्वथा उपशमन करे। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, जिस व्यक्तिके प्रति मनमें विरोधी भाव पैदा हो, उस व्यक्तिके प्रति मैत्री-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी-भावका उपशमन करना चाहिये। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिके प्रति मनमें विरोधी-भाव पैदा हो उस व्यक्तिके प्रति करुणा-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी-भावका उपशमन करना चाहिये। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिके प्रति मनमें विरोधी-भाव पैदा हो उस व्यक्तिके प्रति उपेक्षा-भावना करनी चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी भावका उपशमन करना चाहिये। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिके प्रति मनमें विरोधी-भाव पैदा हो, उस व्यक्तिकी ओरसे मनको हटा देना चाहिये, ध्यानको हटा लेना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी-भावका उपशमन करना चाहिये। भिक्षुओ,

जिस व्यक्तिके प्रति मनमें विरोधी-भाव पैदा हो, उस व्यक्तिके प्रति कर्म-भावको मनमें प्रतिष्ठित करना चाहिये। उसे मनमें कहना चाहिये कि आयुष्मान् आप कर्म-अधिकृत हैं, कर्म-दायाद हैं, या कर्म ही आपका बन्धु है, कर्म ही आपका शरण-स्थल है, आप जो भी भला या बुरा काम करेंगे उसकी जिम्मेदारी आपपर होगी। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति विरोधी-भावका शमन करना चाहिये। भिक्षुओ, ये पाँच विरोधी-भावके उपशमन हैं। भिक्षुको चाहिये कि वह इन पांचों विरोधी-भावोंके उत्पन्न होनेपर उनका सर्वथा उपशमन करे।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"आयुष्मानो भिक्षुओ।" उन भिक्षुओंने आयुष्मान् सारिपुत्रको प्रति-वचन दिया—"आयुष्मान्!" आयुष्मान् सारिपुत्रने यह कहा—आयुष्मानो! ये पाँच विरोधी-भाव के उपशमन हैं। भिक्षुको चाहिये कि वह इन पाँचों विरोधी-भावोंके उत्पन्न होने पर उनका सर्वथा उपशमन करे। कौनसे पाँच? आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं। किन्तु वाणीके कर्म शुद्ध होते हैं। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी भावका शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके वाणीके कर्म अशुद्ध होते हैं, किन्तु शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी भाव का शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं तथा वाणीके कर्म भी अशुद्ध होते हैं, किन्तु बीचबीचमें थोड़े-थोड़े समयके लिये वह शुद्ध (सावकाश) रहता है और प्रीति-युक्त रहता है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म भी अशुद्ध होते हैं, और बीचबीचमें थोड़े समयके लिये भी न वह शुद्ध रहता है और न प्रीतियुक्त रहता है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये। आयुष्मानो! एक आदमी ऐसा होता है जिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म शुद्ध होते हैं, और बीचबीचमें उसे चित्तका अवकाश और प्रीति भी प्राप्त रहती है। आयुष्मानो! ऐसे व्यक्तिके प्रति भी उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक-कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म शुद्ध होते हैं, ऐसे व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन कैसे करना चाहिये? आयुष्मानो! जैसे कोई भिक्षु हो, जो मात्र चीथड़ोंसे बने वस्त्र ही पहनता हो और उसे गलीमें पड़ा हुआ चीथड़ा मिल जाय और वह बायें पाँवसे उसे दबाकर, दाहिने पाँवसे उसे फैलाकर, उस चीथड़ेमेंसे जो सारवान् (= मजबूत) हिस्सा

हो उसे फाड़कर और लेकर चला जाय। इसी प्रकार आयुष्मानो ! जो ऐसा आदमी होता है कि जिसके शारीरिक कर्म-अशुद्ध होते हैं, किन्तु वाणीके कर्म शुद्ध होते हैं, उस समय ऐसे व्यक्तिके अशुद्ध शारीरिक कर्मोंकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। किन्तु उस समय उसकी जो वाणीकी परिशुद्धि रहती है, उसीकी ओर ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये। आयुष्मानो ! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं, किन्तु वाणीके कर्म अशुद्ध होते हैं, ऐसे व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन कैसे करना चाहिये ? आयुष्मान जैसे कोई तालाब हो वह शैवाल तथा पानीकी पपड़ीसे ढका हो। वहाँ एक आदमी आये जो गरमीसे तपा हो, गरमीसे घबरायाहो, थका हो तृषा लगी हो, प्यासा हो। वह उस तालाबमें उतरकर, दोनों हाथोंसे इतिचिति (?) और शैवाल तथा पानीकी पपड़ीको हटाकर, अञ्जलिमें पानीभरकर पिये। इसी प्रकार आयुष्मानो ! जो यह आदमी ऐसा हो कि जिसके वाणीके कर्म अशुद्ध हों, किन्तु शरीरके कर्म शुद्ध हों, उस समय उस व्यक्तिके वाणीके अशुद्ध कर्मोंकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। उस समय उस व्यक्तिके शरीरके शुद्ध कर्मोंकी ओर ही ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुये विरोधी-भावका शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो ! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते है, वाणीके कर्म अशुद्ध होते हैं, किन्तु बीच बीचमें थोड़े थोड़े समयके लिये वह शुद्ध (= सावकाश) रहता है और प्रीतियुक्त रहता है। ऐसे व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन कैसे करना चाहिये ? आयुष्मानो ! जैसे गोपद (?) में सीमित पानी हो। वहाँ एक आदमी आये जो गरमीसे तपा हो, गरमीसे घबराया हो, थका हो, तृषा लगी हो, प्यासा हो। उसके मनमें हो गोपदका यह पानी थोड़ासा है, यदि मैं अञ्जलिसे पानी पीऊँगा अथवा बरतनसे हिला दूँगा तोमैं इस पानीको क्षुब्धकर दूँगा और यह पीनेके योग्य नहीं रहेगा। अच्छा होगा कि मैं दोनों घुटनों तथा दोनों हाथोंके बल झुककर गौ-बैलकी तरह पानी पीकर चल दूँ। वह घुटनों और हाथोंके बल झुककर, गौ-बैलकी तरह पानी पीकर चल दे। इसी प्रकार आयुष्मानो ! जो यह आदमी ऐसा हो कि जिसके शारीरिक-कर्म अशुद्ध हों, वाणीके कर्म अशुद्ध हों, किन्तु बीच बीचमें थोड़ी थोड़े समयके लिये वह शुद्ध (—सावकाश) रहता है और प्रीति-युक्त रहता है। उसके जो अशुद्ध शारीरिक-कर्म हों उनकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये तथा जो अशुद्ध वाणीके कर्म हों उनकी ओर भी ध्यान नहीं देना चाहिये। उस आदमी को बीच बीचमें, थोड़े थोड़े समयके लिये जो अवकाश रहता है, जो प्रीति प्राप्त रहती है, उसीकी ओर ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन करना चाहिये।

आयुष्मानो ! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म अशुद्ध होते हैं और बीच बीचमें थोड़े समयके लिये भी न वह शुद्ध रहता है और न प्रीति-युक्त रहता है। ऐसे व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका शमन कैसे करना चाहिये ? जैसे आयुष्मानो ! कोई आदमी अस्वस्थ हो, दुखी हो, अत्यन्त रोगी हो और रास्तेमें हो। उसके आगेका गाँव भी अभी दूर हो और पीछे का गाँव भी दूर छूट गया हो। उसे न खाना ही ठीक मिलता हो, न औषध ही ठीक मिलती हो, न सेवक ही ठीक मिलता हो और न उसे कोई गाँव तक पहुँचा देने वाला मिलता हो। उसे कोई दूसरा आदमी देखे जो स्वयं रास्ता चल रहा हो। वह उस आदमीके प्रति करुणा, दया तथा अनुकम्पासे प्रेरित होकर सोचे कि किसी तरह इस आदमीको योग्य पथ्य मिल जाये, योग्य औषध मिल जाय, योग्य सेवक मिल जाय, और कोई गाँव तक पहुँचा देने वाला मिल जाय। यह किस लिये ? ताकि वह रास्तेमें ही कष्ट पाकर मर न जाये ! इसी प्रकार आयुष्मानो ! जो यह आदमी ऐसा हो कि जिसके शारीरिक कर्म अशुद्ध हों, वाणीके कर्म अशुद्ध हों, और बीच बीचमें थोड़े समयके लिये भी न वह शुद्ध रहता हो और न प्रीति-युक्त रहता हो, ऐसे व्यक्तिके प्रति भी आयुष्मानो करूणा, दया तथा अनुकम्पा ही रखनी चाहिये कि यह आयुष्मान् शारीरिक दुश्चरित्रताको छोड़ शारीरिक सुचरित्रताका जीवन व्यतीत करे, वाणीकी दुश्चरित्रताको छोड़ वाणीकी सुचरित्रताका जीवन व्यतीत करे तथा मनकी दुश्चरित्रताको छोड़ मनकी सुचरित्रताका जीवन व्यतीत करे। यह किस लिये ? ताकि यह आयुष्मान शरीरके छूटने पर, मरनेके अनन्तर, नरकमें न पड़े, दुर्गति प्राप्त न हो। इस प्रकार उस व्यक्तिके प्रति उत्पन्न हुए विरोधी-भावका उपशमन करना चाहिये।

आयुष्मानो ! जो आदमी ऐसा होता है कि जिसके शारीरिक कर्म शुद्ध होते हैं, वाणीके कर्म शुद्ध होते हैं और जो बीचबीचमें शुद्ध होता है और प्रीतियुक्त रहता है। उसके प्रति उत्पन्न विरोधी-भावका कैसे उपशमन करना चाहिये ? जैसे आयुष्मानो ! कोई पुष्करिणी हो, अच्छे जल वाली हो, स्वच्छ जल वाली, शीतल जल वाली, श्वेत जल वाली हो, सु-तीर्थ हो, रमणीय हो तथा नाना प्रकारके वृक्षोंसे आछन्न हो। वहाँ एक आदमी आये, जो गरमीसे तपा हो, गरमीसे घबराया हो, थका हो, तृषा लगी हो, प्यासा हो। वह उस पुष्करिणीमें उतर, स्नान कर, जल पीकर, बाहर आकर वहीं वृक्षकी छायामें बैठ जाये वा लेट जाय। इसी प्रकार आयुष्मानो ! जो

आदमी ऐसा हो कि जिसके शारीरिक कर्म शुद्ध हों, वाणीके कर्म शुद्ध हों और जो बीचबीचमें शुद्ध होता है और प्रीतियुक्त होता है, ऐसे व्यक्तिके जो शुद्ध शारीरिक-कर्म हों उनकी ओर भी ध्यान देना चाहिये, जो शुद्ध वाणीके कर्म हों, उनकी ओर भी ध्यान देना चाहिये, जो वह बीच बीचमें शुद्ध होता है और प्रीति-युक्त होता है, उसकी ओर भी ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति के प्रति उत्पन्न हुई विरोधी-भावना का उपशमन करना चाहिये। आयुष्मानो! जो हर तरहसे प्रसन्न होता है, वह दूसरोंकी प्रसन्नताका कारण होता है। भिक्षुओ, ये पाँच विरोधी-भावके उपशमन हैं। भिक्षुओंको चाहिये कि वह इन पांचों विरोधी-भावोंके उत्पन्न होनेपर उनका सर्वथा उपशमन करे।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"आयुष्मानो, भिक्षुओ!" उन भिक्षुओंने आयुष्मान् सारिपुत्रको प्रत्युत्तर दिया—"आयुष्मान्!" तब आयुष्मान् सारिपुत्रने यह कहा—"भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों वह सब्रह्मचारियों द्वारा धर्म-चर्चाके योग्य है। कौनसी पाँच बातें? स्वयं शीलवान् होता है और शीलसम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका समाधान करता है। स्वयं समाधि-लाभी होता है और समाधि-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका समाधान करता है। स्वयं प्रज्ञा-सम्पन्न होता है और प्रज्ञा-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका समाधान करता है। स्वयं विमुक्ति-युक्त होता है और विमुक्ति-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका उत्तर देता है। स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है और विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका उत्तर देता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, वह सब्रह्मचारियों द्वारा धर्म-चर्चाके योग्य होता है।"

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया . . . . भिक्षुओ! जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, वह सब्रह्मचारियोंके साथ रहने योग्य होता है। कौनसी पाँच बातें? स्वयं शीलवान् होता है और शील-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका समाधान करता है। स्वयं समाधि-लाभी होता है और समाधि-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका समाधान करता है। स्वयं प्रज्ञा-सम्पन्न होता है और प्रज्ञा-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका समाधान करता है। स्वयं विमुक्ति-युक्त होता है और विमुक्ति-सम्पत्तिके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका उत्तर देता है। स्वयं विमुक्ति-ज्ञान-दर्शन युक्त होता है और विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनके अनुसार ही पूछे गये प्रश्नोंका उत्तर देता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, वह सब्रह्मचारियों द्वारा धर्म-चर्चाके योग्य होता है।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया. . . . आयुष्मानो! जो कोई भी दूसरोंसे पूछता है, वह या तो इन पांचों कारणोंसे अथवा इन पांचोंमेंसे किसी एक कारणसे। कौनसे पाँच कारणोंसे? मन्द-बुद्धि होनेके कारण, मूढ़ता होनेके कारण दूसरोंसे प्रश्न पूछता है। इच्छा के वशीभूत होकर दूसरोंसे प्रश्न पूछता है, दूसरोंको परास्त करनेके लिये दूसरोंसे प्रश्न पूछता है, जाननेकी इच्छासे दूसरोंसे प्रश्न पूछता है, अथवा कुपित होकर प्रश्न पूछता है—यदि मेरे प्रश्न पूछनेपर यह यथार्थ रूपसे उसका समाधान कर देता है तो ठीक, यदि मेरे प्रश्न पूछने पर यह यथार्थ रूपसे उसका समाधान नहीं कर देता है तो मैं ही इसका यथार्थ रूपसे समाधान करूँगा।

आयुष्मानो! जो कोई भी दूसरोंसे प्रश्न पूछता है, वह या तो इन पाँचों कारणोंसे अथवा इन पाँचोंमेंसे किसी एक कारणसे। आयुष्मानो! मैं जो दूसरोंसे प्रश्न पूछता हूँ, वह इसी भावनासे पूछता हूँ—यदि मेरे प्रश्न पूछनेपर यथार्थ रूपसे उसका समाधान कर देता है तो ठीक, यदि मेरे प्रश्न पूछनेपर यह यथार्थ रूपसे उसका समाधान नहीं कर देता है तो मैं ही इस प्रश्नका यथार्थ रूपसे समाधान करूँगा।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—आयुष्मानो! इसकी सम्भावना है कि शील-समाधि तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु संज्ञावेदयितनिरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममें अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर देवताओंकी संगतिमें उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। ऐसा कहने पर—आयुष्मान् उदायीने आयुष्मान् सारिपुत्रको यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र! इसकी कोई सम्भावना नहीं है, इसकी कोई गुंजायश नहीं है कि वह भिक्षु इसके अनन्तर कामावचर देवताओंकी संगति में उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसके लिये जगह नहीं है। दूसरी बार भी. . . . . . . तीसरी बार भी आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—आयुष्मानो! इसकी सम्भावना है कि शील-समाधि तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु संज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममें अर्हत्वको प्राप्त न करे तो वह उसके अनन्तर कामावचर देवताओंकी संगतिमें उत्पन्न हो,कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञा-

वेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उत्तर भी आये। तीसरी बार भी आयुष्मान् उदायीने आयुष्मान् सारिपुत्रको यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र ! इसकी कोई संभावना नहीं है, इसकी कोई गुँजायश नहीं है, कि वह भिक्षु इसके अनन्तर कामावचर देवताओंकी संगतिमें उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर, संज्ञावेदयित निरोध ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसके लिये जगह नहीं है।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रके मनमें यह हुआ कि तीन बार आयुष्मान् उदायीने मेरा विरोध किया, किन्तु एक भी भिक्षुने मेरा समर्थन नहीं किया। क्यों न मैं जहाँ भगवान् हैं वहाँ चलूँ? तब आयुष्मान् सारिपुत्र जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये। जाकर भगवान् को नमस्कार कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठकर आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—आयुष्मानो। इस की सम्भावना है कि शील, समाधि तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु संज्ञावेदयित-निरोध नामक ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममें अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर-देवताओंकी संगतिमें उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। ऐसा कहने पर आयुष्मान् उदायी ने आयुष्मान् सारिपुत्र को यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र! इसकी कोई सम्भावना नहीं है, इसकी कोई गुँजायश नहीं है कि वह भिक्षु, इसके अनन्तर (कामावचर-देवताओं) की संगतिमें उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयित-निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उत्तर भी आये। इसके लिये जगह नहीं है। दूसरी बार भी. . . . तीसरी बार भी आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—आयुष्मानो ! इसकी सम्भावना है कि शील, समाधिसे तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु संज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममें अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर देवताओंकी संगतिमें उत्पन्न हो कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। तीसरी बार भी आयुष्मान् उदायीने आयुष्मान् सारिपुत्रको यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र ! इसकी कोई संभावना नहीं है, इसकी कोई गुँजायश नहीं है कि वह भिक्षु इसके अनन्तर कामावचर-देवताओंकी संगतिमें

उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारणकर संज्ञावेदयित निरोध ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसके लिये जगह नहीं है।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रके मनमें आया कि भगवान् की उपस्थितिमें ही आयुष्मान् उदायीने तीन बार मेरा विरोध किया। किसी एक भिक्षुने भी मेरा समर्थन नहीं किया। मैं चुप क्यों न रहूँ? तब आयुष्मान् सारिपुत्र चुप हो गये। तब भगवान्ने आयुष्मान् आनन्दको सम्बोधित किया—उदायी! मनोमय-कायसे तू क्या समझता है?

"भन्ते! अरूपी संज्ञामय देवगण?"

"उदायी! तुझ मूर्ख अपण्डितके बोलनेसे क्या प्रयोजन? तुझे भी बोलना योग्य जंचता है?"

तब भगवान्ने आयुष्मान् आनन्दको सम्बोधित किया—"आनन्द! जब स्थविर भिक्षु (सारिपुत्र) को कष्ट दिया जाता है, तब तुम उपेक्षा करते हो? स्थविर भिक्षुको कष्ट पाता देखकर तुम्हारे मनमें करूणा भी नहीं पैदा होती?"

तब भगवान्ने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—भिक्षुओ, इसकी सम्भावना है कि शील, समाधि तथा प्रज्ञासे युक्त भिक्षु संज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। इसकी भी सम्भावना है कि यदि वह इसी जन्ममें अर्हत्व प्राप्त न करे तो वह इसके अनन्तर कामावचर-देवताओंकी संगतिमें उत्पन्न हो, कोई न कोई मनोमय शरीर धारण कर संज्ञावेदयित निरोध नामक ध्यानावस्थाको प्राप्त हो जाय और फिर उससे नीचे उतर भी आये। भगवान्ने यह कहा और यह कह कर सुगत आसनसे उठकर चले गये।

तब भगवान्के चले जानेके थोड़ी ही देर बाद आयुष्मान् आनन्द जहाँ आयुष्मान् उपवान थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर आयुष्मान् उपवानको यह कहा—"उपवान दूसरे भिक्षु स्थविरको हैरान करते हैं। हम उनसे बात नहीं करते। लेकिन आयुष्मान् उपवान इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं है कि भगवान् आज शामके समय ध्यानावस्थासे इसी सम्बन्धमें कुछ कहें-सुनें। हो सकता है कि भगवान्का वह कथन ठीक ठीक आयुष्मान् उपवानकी समझमें आये। अभी हमारी संकोच-शीलता दूर हुई।

तब भगवान् शामके समय ध्यानावस्थासे उठ जहाँ सेवा-भवन (= उपस्थानशाला) था, वहाँ गये। जाकर बिछे आसनपर बैठे। बैठकर भगवान्ने आयुष्मान् उपवान्को यह कहा—उपवान्! स्थविर भिक्षुमें ऐसे कितने गुण होने चाहिये जिनके

होनेसे स्थविर भिक्षु अपने सब्रह्मचारियों (= साथियों) का प्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है ?

"भन्ते ! स्थविर भिक्षुमें ऐसे पाँच गुण होने चाहिये जिनके होनेसे स्थविर भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंका प्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है, तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है। कौनसे पाँच ? भन्ते ! स्थविर भिक्षु शीलवान् होता है—शिक्षापदोंको सम्यक्-प्रकार ग्रहण करता है ; बहुश्रुत होता है—(सम्यक्) दृष्टि द्वारा भली प्रकार बींधा गया; कल्याणकर वचन बोलने वाला होता है, कल्याणकर वाणीसे युक्त, मधुरवाणीसे युक्त, विश्वस्त, निर्दोष, अर्थको प्रकट करने वाली ; इसी जन्ममें सुख-देने वाले, चारों चैतसिक ध्यानोंको सहज ही में, आसानीसे, अनायास प्राप्त करने वाला होता है ; आस्रवोंका क्षय कर. . . . . साक्षात् कर प्राप्तकर विहार करता है। भन्ते ! जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच गुण होते हैं, वह स्थविर भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंका प्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर भाजन होता है, तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है। बहुत अच्छा, बहुत अच्छा उपवान ! उपवान ! जिस स्थविर भिक्षुमें ये पाँच गुण होते हैं, वह स्थविर भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंका प्रिय होता है, उन्हें अच्छा लगने वाला होता है, उनका आदर-भाजन होता है तथा उनके द्वारा सत्कृत होता है। उपवान् यदि ये पाँच गुण स्थविर भिक्षुमें न हों तो उसके सब्रह्मचारी उसका सत्कार, उसका गौरव क्यों करेंगे, उसे क्यों मानेंगे, उसे क्यों पूजेंगे ? क्या टूटे दांत वाला होनेके कारण ? क्या सफेद बालों वाला होनेके कारण ? क्या चमड़ीमें झुरियाँ पड़ जानेके कारण ? उपमान ! क्योंकि स्थविर भिक्षुमें ये पाँच गुण विद्यमान हैं, इसीलिये सब्रह्मचारी उसका सत्कार, उसका गौरव करते हैं, उसे मानते हैं, उसे पूजते हैं।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया. . . . . आयुष्मानो ! जो भिक्षु किसी दूसरे भिक्षु पर दोषारोपण करना चाहता हो उसे चाहिये कि स्वयं पाँच बातोंपर दृढ़ रहकर दूसरे भिक्षु पर दोषारोपण करे। कौनसी पाँच बातों पर ? उचित समय देखकर दोषारोपण करूँगा, अनुचित समय पर नहीं ; सच्चा दोषारोपण करूँगा, मिथ्या दोषारोपण नहीं ; मधुर शब्दोंमें दोषारोपण करूँगा कठोर शब्दोंमें नहीं ; हितचितासे दोषारोपण करूँगा, अहित चितासे नहीं ; तथा मैत्री चित्तसे दोषारोपण करूँगा, द्वेष चित्तसे नहीं। आयुष्मानो ! जो भिक्षु किसी दूसरे भिक्षुपर दोषारोपण करना चाहता हो उसे चाहिये कि स्वयं पांच बातों पर दृढ़ रहकर दूसरे भिक्षुपर दोषारोपण करे।

आयुष्मानो ! मैं देखता हूँ कि कोई कोई आदमी ऐसा होता है जिसे इस लिये क्रोध आ जाता है, क्योंकि उसपर अनुचित समयपर दोषारोपण किया गया है, उचित समय देखकर नहीं; क्योंकि उसपर मिथ्या दोषारोपण किया गया है, सच्चा दोषारोपण नहीं ; कठोर शब्दोंमें दोषारोपण किया गया है, मधुर शब्दोंमें नहीं; अहित चिंतासे दोषारोपण किया गया है, हित-चिन्तासे नहीं ; तथा द्वेष चित्तसे दोषारोपण किया गया है, मैत्री-चित्तसे नहीं।

आयुष्मानो ! जिस भिक्षु पर यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोपारोपण नहीं किया गया, उसे पाँच प्रकारसे उसकी लज्जा दूर कर देनी चाहिये—आयुष्मान् ! तुमपर अनुचित समय पर दोषारोपण हुआ है, उचित समय पर नहीं ; मिथ्या दोषा-रोपण किया गया है, सच्चा दोषारोपण नहीं ; कठोर शब्दोंमें दोषारोपण किया गया है, मधुर शब्दोंमें नहीं ; अहित चिन्तासे दोषारोपण किया गया है, हित-चितासे नहीं तथा द्वेष-चित्तसे दोषारोपण किया गया है , मैत्री-चित्तसे नहीं। आयुष्मानो ! जिस भिक्षु पर यथोचित विधिसे दोषारोपण नहीं किया गया, पाँच प्रकारसे उसकी लज्जा दूर करनी चाहिये।

आयुष्मानो ! जिस भिक्षुने यथोचित-विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण नहीं किया, पाँच प्रकारसे उसे लज्जित करना चाहिये—आयुष्मान् ! तुमने अनुचित समय पर दोषारोपण किया है, उचित समय पर नहीं ; मिथ्या दोषारोपण किया है, सच्चा दोषारोपण नहीं ; कठोर शब्दोंमें दोषारोपण किया है, मधुर शब्दोंमें नहीं ; अहित चिन्तासे दोषारोपण किया है, हितचिंतासे नहीं। आयुष्मानो ! जिस भिक्षुने यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण नहीं किया, पाँच प्रकारसे उसे लज्जित करना चाहिये। यह किस लिये ? ताकि वह किसी दूसरे भिक्षुपर भी (इसी तरह) दोषारोपण न करे।

आयुष्मानो ! मैं देखता हूँ कि कोई कोई आदमी ऐसा होता है, जिसे क्रोध आता है, यद्यपि उस पर समय देखकर दोषारोपण किया गया है, अनुचित समय पर नहीं ; सच्चा दोषारोपण किया गया है, मिथ्या दोषारोपण नहीं ; मधुर-शब्दोंमें दोषारोपण किया गया है, कठोर शब्दोंमें नहीं ; हित-चिंतासे दोषारोपण किया गया है, अहित चिन्तासे नहीं ; मैत्री चित्तसे दोषारोपण किया गया है, द्वेष-चित्तसे नहीं।

आयुष्मानो ! जिस भिक्षुपर यथोचित-विधिसे (धर्मानुसार) दोषारोपण किया हो, पाँच प्रकारसे उसे लज्जित करना चाहिये—आयुष्मान् ! तुम पर समय देखकर दोषारोपण किया गया है, अनुचित समय पर नहीं ; सच्चा दोषारोपण

किया गया है, मिथ्या दोषारोपण नहीं ; मधुर शब्दोंमें दोषारोपण किया गया है, कठोर शब्दोंमें नहीं, हित-चिन्तासे दोषारोपण किया गया है, अहित-चिन्तासे नहीं ; मैत्री-चित्तसे दोषारोपण किया गया है, द्वेष-चित्तसे नहीं। आयुष्मानो! जिस भिक्षु पर यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण किया हो, पाँच प्रकारसे उसे लज्जित करना चाहिये।

आयुष्मानो! जिस भिक्षुने यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण किया हो, पाँच प्रकारसे उसकी लज्जा दूर करनी चाहिये—आयुष्मान्! तुमने उचित समय देखकर दोषारोपण किया है, अनुचित समय पर नहीं ; सच्चा दोषारोपण किया है, मिथ्या दोषारोपण नहीं ; मधुर शब्दोंमें दोषारोपण किया है, कठोर शब्दोंमें नहीं ; हित चिन्तासे दोषारोपण किया है, अहित चिन्तासे नहीं ; मैत्रीचित्तसे दोषारोपण किया है, द्वेष चित्तसे नहीं। आयुष्मानो! जिस भिक्षुने यथोचित विधि से (धर्मानुसार) दोषारोपण किया हो, पाँच प्रकारसे उसकी लज्जा दूर करनी चाहिये। यह किस लिये? ताकि वह किसी दूसरे भिक्षु पर भी इसी तरह दोषारोपण करे।

आयुष्मानो! जिस व्यक्ति पर दोषारोपण हो उसे चाहिये कि वह दो बातोंको हाथसे न जाने दे, सत्यको तथा स्थिरताको। आयुष्मानो! यदि मुझ पर भी दूसरे दोषारोपण करें—भले ही वह उचित समय पर किया गया हो, भले ही अनुचित समय पर किया गया हो ; भले ही सच्चा दोषारोपण हो वा मिथ्या ; भले ही मधुर शब्दोंमें दोषारोपण करें, भले ही कठोर शब्दोंमें ; भले ही हितचिन्तासे दोषारोपण करें, भले ही अहित-चिन्तासे, भले ही मैत्री-चित्तसे दोषारोपण करें, भले ही द्वेष-चित्तसे—तो मैं भी इन्हीं दो बातोंको हाथसे जाने न दूँगा—सत्यको तथा स्थिरताको। यदि मैं जानूँगा कि कोई दोष या गुण मुझमें है तो मैं कह दूँगा कि यह बात मुझमें है, यह बात मुझमें विद्यमान् है। यदि मैं जानूँगा कि कोई दोष या गुण मुझमें नहीं है तो मैं कह दूँगा कि यह दोष या गुण मुझमें नहीं है।"

"सारिपुत्र! ऐसा कहने पर भी क्या कुछ बेकार-आदमी बात नहीं समझते?"

"भन्ते! जो श्रद्धावान् होते हैं, जीविकार्थी होते हैं, श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर हुए नहीं रहते हैं, शठ होते हैं, मायावी होते हैं, छली होते हैं, उद्धत् होते हैं, अहंकारी होते हैं, चपल होते हैं, बातूनी होते हैं, कहीं कुछ भी बोलने वाले होते हैं, असंयमी होते हैं, भोजनके विषयमें अमात्रज्ञ होते हैं, जागृत नहीं रहने वाले होते हैं, श्रमणत्वकी ओर से लापरवाह होते हैं, शिक्षाओं के प्रति विशेष गौरवका भाव नहीं

रखने वाले होते हैं, जोड़ू-बटोरू होते हैं, शिथिल होते हैं, पतनकी ओर अग्रसर होने वाले होते हैं, एकान्त-जीवनकी ओरसे उदासीन होते हैं, आलसी होते हैं, प्रयत्न रहित होते हैं, मूढ़-स्मृति होते हैं, विचार-रहित होते हैं, एकाग्रता-रहित होते हैं, भ्रान्तचित्त होते हैं, मूर्ख होते हैं तथा जड़ होते हैं ; वे मेरे ऐसा कहने पर भी बात नहीं समझते। किन्तु भन्ते ! जो कुल-पुत्र श्रद्धा-पूर्वक घरसे बेघर हुए रहते हैं, जो शठ नहीं होते हैं, जो मायावी नहीं होते हैं, जो छली नहीं होते हैं, जो उद्धत नहीं होते हैं, जो अहंकारी नहीं होते हैं, जो चपल नहीं होते हैं, जो बातूनी नहीं होते हैं, जो सोच-समझकर बोलने वाले होते हैं, जो संयमी होते हैं, जो भोजनके विषयमें मात्रज्ञ होते हैं, जो जागृत नहीं रहने वाले होते हैं, जो श्रमणत्वकी ओरसे लापरवाह नहीं होते हैं, जो शिक्षाओंके प्रति विशेष गौरवका भाव रखने वाले होते हैं, जो जोड़ू-बटोरू नहीं होते हैं, जो शिथिल नहीं होते हैं, जो पतनकी ओर अग्रसर होने वाले नहीं होते हैं, जो एकान्त-जीवनकी ओरसे उदासीन होते हैं, जो आलसी नहीं होते , जो वीर्य-वान् होते हैं, जो प्रयत्न-वान् होते हैं, जो स्मृतिमान् होते हैं, जो विचारवान् होते हैं, जो स्थिर-चित्त होते हैं, जो एकाग्र-चित्त होते हैं, जो प्रज्ञावान् होते हैं तथा जो जड़ नहीं होते हैं—वे मेरे ऐसा कहने पर बात समझ लेते हैं।"

"सारिपुत्र ! जो अश्रद्धावान् हों, जो जीविकार्थी हों, जो श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर हुए नहीं हों, जो शठ हों, जो मायावी हों, जो छली हों, जो उद्धत हों, जो अहंकारी हों, जो चपल हों, जो बातूनी हों, जो कहीं भी कुछ भी बोलने वाले हों, जो असंयमी हों, जो भोजनके विषयमें अमात्रज्ञ हों, जो जागृत न रहने वाले हों, जो श्रमणत्वकी ओरसे लापरवाह हों, जो शिक्षाओंके प्रति विशेष गौरवका भाव न रखने वाले हों, जो जोड़ू-बटोरू हों, जो शिथिल हों, जो पतनकी ओर अग्रसर होनेवाले हों, जो एकान्त जीवनकी ओरसे उदासीन हों, जो आलसी हों, जो प्रयत्न-रहित हों, जो मूढ़-स्मृति हों, जो विचार-रहित हों, जो एकाग्रता-रहित हों, जो भ्रान्त-चित्त हों, जो मूर्ख हों तथा जो जड़ हों—ऐसे लोगोंको रहने दो। किन्तु हे सारिपुत्र ! जो कुलपुत्र श्रद्धापूर्वक घरसे बेघर हुए हों, जो शठ न हों, जो छली न हों, जो उद्धत न हों, जो अहंकारी न हों, जो चपल न हों, जो बातूनी न हों, जो कहीं भी कुछ भी बोलने वाले न हों, जो असंयमी न हों, जो भोजनके विषयमें मात्रज्ञ हों, जो जाग्रत रहने वाले हों, जो श्रमणत्व की ओरसे लापरवाह न हों, जो शिक्षाओंके प्रति विशेष गौरवका भाव न रखने वाले हों, जो जोड़ू-बटोरू न हों, जो शिथिल न हों, जो पतनकी ओर अग्रसर होने वाले न हों, जो एकान्त-जीवनकी ओरसे उदासीन न हों, जो आलसी न हों, जो वीर्य-वान् हों,

जो प्रयत्न-वान् हों, जो स्मृतिमान हों, जो विचारवान् हों, जो स्थिर-चित्त हों, जो एकाग्रचित्त हों, जो प्रज्ञावान् हों तथा जो जड़ न हों—ऐसे लोगोंको तुम उपदेश देना। हे सारिपुत्र ! अपने सब्रह्मचारियोंको उपदेश दे। हे सारिपुत्र ! अपने सब्रह्मचारियोंका अनुशासन कर। हे सारिपुत्र ! तू संकल्प कर कि मैं अपने सब्रह्मचारियोंको असद्धर्मसे उबारकर सद्धर्ममें प्रतिष्ठित करूँगा। सारिपुत्र ! तुझे ही यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

तब आयुष्मान् सारिपुत्रने भिक्षुओंको सम्बोधित किया . . . : . .भिक्षुओ, जो दुश्शील है, जिसका शील खण्डित है, उसका समाधिका आधार जाता रहता है; सम्यक् समाधिके न रहनेपर, सम्यक समाधि खण्डित होनेपर यथार्थ ज्ञान-दर्शनका आधार जाता रहता है; यथार्थ ज्ञान-दर्शनके न रहनेपर, यथार्थ ज्ञान-दर्शन खण्डित होनेपर निर्वेद-वैराग्यका आधार नहीं रहता; निर्वेद-वैराग्यके न रहनेपर, निर्वेद-वैराग्य खण्डित होनेपर विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनका आधार नहीं रहता—जैसे भिक्षुओ, जिस पेड़की शाखायें तथा पत्ते नहीं रहते, उसकी पपड़ी, उसकी त्वचा, उसका फेग्गु (?) तथा उसका सार भी पूर्णताको प्राप्त नहीं होता। उसी प्रकार आयुष्मानो ! जो दुश्शील है, जिसका शील खण्डित है, उसका समाधिका आधार जाता रहता है; सम्यक् समाधिके न रहनेपर, सम्यक् समाधि खण्डित होनेपर, यथार्थ ज्ञान दर्शनका आधार जाता रहता है; यथार्थ ज्ञान-दर्शनके न रहनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शन खण्डित होनेपर, निर्वेद वैराग्य का आधार नहीं रहता; निर्वेद-वैराग्यके न रहनेपर, निर्वेद-वैराग्य खण्डित होनेपर विमुक्ति ज्ञान-दर्शनका आधार जाता रहता है।

आयुष्मानो ! जो शीलवान होता है, जिसका शील खण्डित नहीं होता, उसका सम्यक् समाधिका आधार बना रहता है; सम्यक् समाधिके रहनेपर, सम्यक् समाधिके खण्डित न होनेपर यथार्थ ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहता है; यथार्थ ज्ञान दर्शनके रहनेपर, यथार्थ ज्ञान-दर्शनके खण्डित न होनेपर निर्वेद-वैराग्यका आधार बना रहता है; निर्वेद-वैराग्यके रहनेपर, निर्वेद-वैराग्य खण्डित न होनेपर, विमुक्ति ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहता है—जैसे आयुष्मानो ! जिस पेड़की शाखायें तथा पत्ते बने रहते हैं, उसकी पपड़ी, उसकी त्वचा, उसका फेग्गु तथा उसका सार भी पूर्णताको प्राप्त होता है। इसी प्रकार आयुष्मानो ! जो शीलवान् होता है, जिसका शील खण्डित नहीं होता, उसका सम्यक् समाधिका आधार बना रहता है; सम्यक् समाधि के रहनेपर, सम्यक् समाधिके खण्डित न होनेपर, यथार्थ-ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहताहै;

यथार्थ ज्ञान-दर्शनके रहनेपर, यथार्थ ज्ञान-दर्शनके खण्डित न होनेपर, निर्वेद-वैराग्यका आधार बना रहता है; निर्वेद-वैराग्यके रहनेपर, निर्वेद-वैराग्य खण्डित न होनेपर, विमुक्ति ज्ञान-दर्शनका आधार बना रहता है।

तब आयुष्मान आनन्द जहाँ आयुष्मान सारिपुत्र थे, वहाँ गये। पास जाकर आयुष्मान सारिपुत्रके साथ कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेमकी बातचीत समाप्त हो जानेपर, आयुष्मान आनन्द एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान् आनन्दने आयुष्मान् सारिपुत्रसे यह कहा—आयुष्मान् सारिपुत्र! कौनसे गुण होनेसे भिक्षु कुशल-धर्मोंके प्रति क्षिप्र-ध्यान देने वाला कहा जाता है, सम्यक प्रकार ग्रहण करने-वाला तथा ग्रहण की हुई बातको धारण किये रखने वाला? सारिपुत्र बोले—'आयुष्मान् आनन्द बहुत-श्रुत हैं। आयुष्मान् आनन्द ही इस विषयमें अपना मत कहें।'

"तो आयुष्मान सारिपुत्र सुनें। भली प्रकार मनमें धारण करें। कहूँगा।"

"बहुत अच्छा" कह आयुष्मान् सारिपुत्रने आयुष्मान आनन्दको प्रति-वचन दिया। आयुष्मान आनन्दने यह कहा—

"आयुष्मान्! सारिपुत्र! भिक्षु अर्थ करनेमें कुशल होता है, धर्मके विषयमें कुशल होता है, शब्दोंकी व्युत्पत्ति (= नियुक्ति) के विषयमें कुशल होता है, शब्दों (= व्यंजन) के विषयमें कुशल होता है। और क्रम (= पूर्वापर) के विषयमें कुशल होता है। आयुष्मान् सारिपुत्र! ये पाँच गुण होनेसे भिक्षु कुशल-धर्मोंके प्रति क्षिप्र-ध्यान देने वाला कहा जाता है, सम्यक् प्रकार ग्रहण करने वाला तथा ग्रहणकी हुई बातको धारण किये रहने वाला।"

"आश्चर्य है, अद्भुत है यह जो आयुष्मान् आनन्दका सुभाषित है। हमारी मान्यता है कि आयुष्मान् आनन्दमें ये पाँचों गुण हैं। आयुष्मान् आनन्द अर्थ-कुशल हैं, धर्म-कुशल हैं, निरुक्ति-कुशल हैं, व्यंजन-कुशल हैं तथा पूर्वापर कुशल हैं।"

एक समय आयुष्मान आनन्द कौशाम्बीके घोषितारामर्में विहार कर रहे थे। तब आयुष्मान् भद्रजित जहाँ आयुष्मान् आनन्द थे वहाँ आये। पास आकर आयुष्मान् आनन्दसे कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशल-क्षेमकी बातचीत हो चुकनेपर आयुष्मान् भद्रजित एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान् भद्रजितसे आयुष्मान् आनन्दने ये प्रश्न पूछा—

"आयुष्मान् भद्रजित! दर्शनीयोंमें श्रेष्ठतम क्या है? श्रवणीयोंमें श्रेष्ठतम क्या है? सुखोंमें श्रेष्ठतम क्या है? संज्ञाओंमें श्रेष्ठतम क्या है? भवोंमें श्रेष्ठतम क्या है?"

"आयुष्मान्! ब्रह्म है जो सर्वोपरि है, जिसके ऊपर कोई नहीं है, जो द्रष्टा है तथा जो वशवर्ती है। जो कोई उस ब्रह्माको देखता है, वह देखने वालोंमें श्रेष्ठतम है।

"आयुष्मान्! आभस्वर नामक देवता हैं, वे सुखसे सम्पूर्ण हैं, सुखसे परिपूर्ण हैं। वे कभी-कभी उल्लास-वाक्य कहते हैं—ओह! सुख है। ओह! सुख है। जो उस शब्दको सुनता है, वह सुननेवालोंमें श्रेष्ठतम है।

"आयुष्मान्! शुभ-कृष्ण नामक देवता हैं। वे शान्तिकी तरह सुखका अनुभव करते हैं। यह सुखोंमें श्रेष्ठतम है।

"आयुष्मान्! आकिञ्चायतन तक पहुँचने वाले देवता हैं। यह संज्ञाओंमें श्रेष्ठतम है।

"आयुष्मान! नेवसञ्ञानासाञ्ञायतन तक पहुँचने वाले देवता हैं। यह भवोंमें अग्र हैं।"

"आयुष्मान भद्रजितकी यह बात-चीत बहुत जनोंके कथनसे मेल खाती है।"

"आयुष्मान आनन्द बहुश्रुत हैं। आयुष्मान आनन्दको जैसा लगे वैसा कहें।"

"तो आयुष्मान भद्रजित! सुनें। अच्छी तरह मनमें धारण करें। मैं कहता हूँ।"

"बहुत अच्छा आयुष्मान्!" कह आयुष्मान भद्रजितने आयुष्मान आनन्द को प्रतिवचन दिया। आयुष्मान आनन्दने यह कहा—

"आयुष्मान! जिस प्रकार देखनेसे देखनेके अनन्तर आस्रवोंका क्षय होता है, ऐसा देखना दर्शनोंमें श्रेष्ठतम है। जिस प्रकार सुननेसे, बादमें आस्रवोंका क्षय होता है, ऐसा सुनना श्रवणोंमें श्रेष्ठतम है। जिस प्रकारके सुखकी अनुभूतिसे बादमें आश्रवोंका क्षय होता है, यह सुखोंमें श्रेष्ठतम है। जिस प्रकारकी संज्ञाओंका अनुभव करनेसे, बादमें आस्रवोंका क्षय होता है, यह संज्ञाओंमें श्रेष्ठतम है। जिस प्रकारके भवके अनन्तर आस्रवोंका क्षय होता है, यह भवोंमें श्रेष्ठम है।

एक समय भगवान् श्रावस्तीके जेतवनाराममें विहार कर रहे थे। वहाँ भगवान्ने भिक्षुओंको सम्बोधित किया—"भिक्षुओ!" "भदन्त" कहकर उन भिक्षुओंने भगवान्को प्रतिवचन दिया। तब भगवान्ने यह कहा—भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह निस्तेजताको प्राप्त होता है। कौन-सी पाँच बातें? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोगोंके सम्बन्धमें

मिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ! जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह निस्तेजताको प्राप्त होता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह पण्डित होता है। कौन सी पाँच बातें? वह प्राणी-हिंसासे विरत रहता है, चोरीसे विरत रहता है, कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत रहता है, झूठ बोलनेसे विरत रहता है तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह विशारद (=पण्डित) होता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अविशारद बना रहकर ही गृहवास करता है। कौन-सी पाँच बातें? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अविशारद बना रह कर ही गृह-वास करता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं वह विशारद (पण्डित) बना रहकर ही गृहवास करता है। कौन-सी पाँच बातें? वह प्राणी-हिंसासे विरत रहता है........सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह विशारद होकर ही गृहवास करता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर नरकमें ही डाल दिया गया हो। कौन-सी पाँच बातें? वह प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, कामभोग-सम्बन्धी मिथ्याचार करने वाला होता है, झूठ बोलने वाला होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, उसे जैसे लाकर नरकमें ही डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह जैसे लाकर स्वर्गमें ही डाल दिया गया हो। कौन-सी पाँच बातें? वह प्राणी-हिंसासे विरत होता है.... सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन करनेसे विरत होता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, उसे जैसे लाकर स्वर्गमें ही डाल दिया गया हो।

उस समय अनाथ-पिण्डिक गृहपति जहाँ भगवान थे, वहाँ गये। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर, एक ओर बैठे। एक ओर बैठे हुए अनाथ-पिण्डिक गृहपतिको

भगवानने यह कहा—हे गृहपति ! ये पाँच भय हैं, अहितकर बातें (=वैर) हैं, जिन्हें बिना छोड़े आदमी दुश्शील कहलाता है, और नरकमें जन्म ग्रहण करता है। कौन-सी पाँच बातें ? प्राणी-हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ बोलना, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन। हे गृहपति ! ये पाँच भय हैं, अहितकर बातें (=वैर) हैं, जिन्हें बिना छोड़े आदमी दुश्शील कहलाता है, और नरकमें जन्म ग्रहण करता है। हे गृहपति ! ये पाँच भय हैं, अहितकर बातें (=वैर) हैं, जिन्हें छोड़ देनेसे आदमी सुशील कहलाता है और स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है। कौन-सी पाँच बातें ? प्राणी-हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ बोलना, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन। हे गृहपति ! ये पाँच भय हैं, अहितकर बातें (=वैर) हैं, जिन्हें छोड़ देनेसे आदमी सुशील कहलाता है और स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है।

हे गृहपति ! प्राणी-हिंसा करनेके फल-स्वरूप आदमीको इसी जन्ममें जो दुःख पैदा होता है, मरनेके अनन्तर भी जो भय-दुःख पैदा होता है तथा जो मानसिक दुःख होता है, प्राणी-हिंसासे विरत रहनेके फल-स्वरूप न इसी जन्ममें होने वाला भय-दुःख होता है, न मरनेके अनन्तर होने वाला भय-दुःख होता है तथा न मानसिक-दुःख होता है। इस प्रकार, प्राणी-हिंसासे विरत रहने वालेका जो भय-दुःख होता है, वह शान्त हो जाता है।

गृहपति ! चोरी करनेके फलस्वरूप......व्यभिचारके फलस्वरूप.... झूठ बोलनेके फलस्वरूप.....सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजें सेवन करनेके फल-स्वरूप आदमीको इसी जन्ममें जो भय-दुःख पैदा होता है, मरनेके अनन्तर, जो भय-दुःख पैदा होता है, तथा जो मानसिक दुःख होता है। इसी प्रकार सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहनेसे न इसी जन्ममें होने वाला भय-दुःख होता है, न मरनेके अनन्तर होने वाला भय-दुःख होता है तथा न मानसिक दुःख होता है। भिक्षुओ, जो सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजोंके सेवनसे पृथक रहता है, उसका भय-दुःख शान्त हो जाता है।

योपाणं अतिपातेति मुसावादंच भासति,
लोके अदिन्नं आदियति परदारं च गच्छति॥
सुरामेरयपानञ्च यो नरो अनुयुञ्जति
अप्पहाय पंच वेरानि दुस्सीलो इति वुच्चति॥
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सोपपज्जति,
यो पाणं नातिपातेति मुसावादं न भासति॥

लोके अदिन्नं नादियति परदारं न गच्छति,
सुरामेरयपानं च यो नरो नानुयुञ्जति
पहाय पंच वेरानि सीलवा इति वुच्चति,
कायस्स भेदा सप्पञ्ञो सुगतिं सोपज्जति ।।

[जो प्राणी-हिंसा करता है, झूठ बोलता है, चोरी करता है, पर-स्त्री गमन करता है,सुरामेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन करता है–जो इन पाँच अहितकर बातोंको नहीं छोड़ता, वह दुश्शील कहलाता है। वह मूर्ख मरनेके अनन्तर, नरकमें जन्म ग्रहण करता है। जो प्राणी-हिंसा नहीं करता, झूठ नहीं बोलता, चोरी नहीं करता, पर-स्त्री गमन नहीं करता, तथा सुरामेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करता है—जो इन पाँच अहितकर बातोंसे विरत रहता है, वह सुशील कहलाता है। वह प्रज्ञावान् मरनेके अनन्तर स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है।]

भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह चाण्डाल-उपासक कहलाता है, मलिन-उपासक कहलाता है, निकृष्ठ-उपासक कहलाता है। कौनसी पाँच बातें? वह अश्रद्धावान् होता है, दुश्शील होता है, भले-बुरे शकुनोंमें विश्वास करने वाला होता है, भले-बुरे शकुनों की ओर देखता रहता है, अपने कर्मोंकी ओर नहीं, इस (=बुद्ध) शासनसे बाहर दक्षिणाके पात्र खोजता है और वहीं दान-मान आदि पूर्व-कृत्य करता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह चाण्डाल-उपासक कहलाता है, मलिन-उपासक कहलाता है, निकृष्ठ-उपासक कहलाता है।

भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह उपासक-रत्न कहलाता है, उपासक-पद्म कहलाता है, उपासक-पुण्डरीक कहलाता है। कौनसी पाँच बातें? वह श्रद्धावान् होता है, सुशील होता है, भले-बुरे शकुनोंमें विश्वास करने वाला नहीं होता है, भले-बुरे शकुनोंकी ओर न देखता रहकर अपने कर्मोंकी ओर देखता है, इस (बुद्ध-) शासनने से बाहर दक्षिणाके पात्र न खोज, यहीं दान-मान आदि पूर्व-कृत्य करता है। भिक्षुओ, जिस उपासकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह उपासक-रत्न कहलाता है, उपासक-पद्म कहलाता है, उपासक-पुण्डरीक कहलाता है।

उस समय पाँच सौ उपासकोंको साथ लिये अनाथपिण्डिक उपासक जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्को नमस्कार कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए अनाथ-पिण्डिक गृहपति को भगवान्ने यह कहा— हे गृहपति! आप लोगोंने चीवर, भिक्षा, शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु-संघकी

सेवा की है। हे गृहपति ! इतने मात्रसे ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये कि हम लोगोंने चीवर-भिक्षा-शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु-संघकी सेवा की है। इसलिये हे गृहपति ! यह सीखना चाहिये कि समय समयपर एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करेंगे।

ऐसा कहनेपर आयुष्मान् सारिपुत्रने भगवान्से कहा——भन्ते ! यह आश्चर्य-कर है। भन्ते ! यह अद्‌भुत है। भन्ते ! यह जो आपका सुभाषित है कि हे गृह-पति ! आप लोगोंने चीवर, भिक्षा, शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु संघकी सेवा की है। हे गृहपति ! इतने मात्रसे ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिये कि हम लोगोंने चीवर-भिक्षा-शयनासन तथा रोगीकी आवश्यकताओंसे भिक्षु-संघकी सेवा की है। इसलिये हे गृहपति ! यह सीखना चाहिये कि हम समय-समयपर एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करेंगे। भन्ते ! जिस समय आर्य-श्रावक एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करता है, उस समय उसे पाँच बातोंकी अनुभूति नहीं होती। यह जो काम-भोगसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो काम-भोगसे उत्पन्न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो अकुशल-कर्मसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो अकुशल-कर्मसे उत्पन्न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो कुशल कर्मसे उत्पन्न दुःख दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती। भन्ते ! जिस समय आर्य-श्रावक एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करता है, उस समय उसे इन पाँच बातोंकी अनुभूति नहीं होती।

"सारिपुत्र ! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। सारिपुत्र ! जिस समय आर्य-श्रावक एकान्त प्रीति-सुखका अनुभव करता है, उस समय उसे पाँच बातोंकी अनुभूति नहीं होती। यह जो काम-भोगोंसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो काम-भोगोंसे उत्पन्न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती ; यह जो अकुशल-कर्मसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो अकुशल-कर्मसे उत्पन्न सुख-सौमनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती; यह जो कुशल-कर्मसे उत्पन्न दुःख-दौर्मनस्य होता है, उस समय उसे उसकी अनुभूति नहीं होती। हे सारिपुत्र ! जिस समय आर्य-श्रावक एकान्त-प्रीति सुखका अनुभव करता है, उस समय उसे इन पाँच बातोंकी अनुभूति नहीं होती।

भिक्षुओ, ये पाँच व्योपार उपासकके लिये अकरणीय हैं। कौनसे पाँच ? अस्त्रों-शस्त्रोंका व्यापार, प्राणियों (= मनुष्यों) का व्यापार, माँसका व्यापार, मद्यका व्यापार तथा विषका व्यापार। भिक्षुओ,ये पाँच व्योपार उपासकके लिये अकरणीय हैं।

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना है कि अमुक आदमीने प्राणी-हिंसाका त्याग कर दिया है, वह प्राणी-हिंसासे विरत है, उसे राज-पुरुष पकड़कर प्राणी-हिंसासे विरत रहनेके कारण, मारते हों या बाँधते हों, देशनिकाला देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों ? "भन्ते ! नहीं।" ठीक है भिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है कि अमुक आदमीने प्राणी-हिंसाका त्याग-कर दिया हो, वह प्राणी-हिंसासे विरत हो और उसे राज-पुरुष पकड़कर प्राणी-हिंसासे विरत रहनेके कारण, मारते हों, बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों। हाँ, वे उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है वैसा ही उसकी घोषणा करते हैं कि इस आदमीने स्त्री या पुरुषकी हत्या की। तब उसे राज-पुरुष पकड़कर प्राणी-हिंसा करनेके कारण मारते हैं, बांधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है ? "भन्ते ! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना है कि अमुक आदमीने चोरीका त्यागकर दिया है, वह चोरीसे विरत है, उसे राज-पुरुष पकड़कर चोरीसे विरत रहनेके कारण, मारते हों या बांधते हों, देश-निकाला देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों ? "भन्ते ! नहीं।" ठीक है भिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है, कि अमुक आदमीने चोरीका त्यागकर दिया हो, वह चोरीसे विरत हो, और उसे राज-पुरुष पकड़कर चोरीसे विरत रहनेके कारण, मारते हों, बांधते हों, देश निकाला दे देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों। हाँ, वे उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते हैं कि इस आदमीने गाँव या जंगलसे चोरीकी है। तब उसे राज-पुरुष पकड़ कर चोरी करनेके कारण, मारते हैं, बांधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है ? "भन्ते ! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना है कि अमुक आदमीने व्यभिचारका त्याग कर दिया है, वह व्यभिचारसे विरत है, उसे राज-

पुरुष पकड़ कर व्यभिचारसे विरत रहनेके कारण, मारते हों, बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों? "भन्ते! नहीं!" ठीक है भिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है कि अमुक आदमीने व्यभिचारका त्याग कर दिया हो, वह व्यभिचारसे विरत हो, और उसे राजपुरुष पकड़कर व्यभिचारसे विरत रहनेके कारण, मारते हों, बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों। हाँ, वे उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते हैं कि इस आदमीने पराई स्त्रियोंके साथ, पराई कुमारियोंके साथ सहवास किया है। तब उसे राजपुरूष पकड़ कर व्यभिचार करनेके कारण, मारते हैं, बांधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है, या सुना है? "भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना है कि अमुक आदमीने झूठका त्याग कर दिया है, वह झूठसे विरत है, उसे राज-पुरुष पकड़कर झूठसे विरत रहनेके कारण, मारते हों या बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों? "भन्ते! नहीं।" ठीक है भिक्षुओ, मैंने भी न कभी देखा है, न सुना है कि अमुक आदमीने झूठ बोलनेका त्याग कर दिया हो, वह झूठ बोलनेसे विरत हो और उसे राज-पुरुष पकड़कर झूठ बोलनेसे विरत रहनेके कारण, मारते हों, बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों। हाँ, वे, उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते हैं कि इस आदमीने गृहपति वा गृहपति-पुत्रसे झूठ बोलकर अपना मतलब सिद्ध करता है। तब उसे राज-पुरुष पकड़कर झूठ बोलनेके कारण, मारते हैं, बांधते हैं, देश निकाला दे देते हैं अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है, या सुना है? "भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

भिक्षुओ, तो तुम क्या मानते हो, क्या तुमने कहीं देखा या सुना है कि अमुक आदमीने सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजोंका त्याग कर दिया है, वह सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंसे विरत है, उसे राज-पुरूष पकड़कर सुरा-मेरय आदि नशीली-चीजोंसे विरत रहनेके कारण, मारते हों या बांधते हों, देश-निकाला दे देते हों अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हों। हाँ, वे, उसने जैसा पाप-कर्म किया रहता है, वैसा ही उसकी घोषणा करते हैं कि इस आदमी ने सुरा-मेरय आदिके नशेमें इस स्त्री या पुरुषकी हत्या कर डाली। इस आदमीने सुरा-मेरय आदिके नशेमें गाँव या जंगलसे चोरीकी; इस आदमीने सुरा-मेरय आदिके नशेमें पराई स्त्रियोंके साथ, पराई

कुमारियोंके साथ सहवास किया है, इस आदमीने सुरा-मेरय आदिके नशेमें गृहपति या गृहपति-पुत्रसे झूठ बोलकर अपना मतलब पूरा किया है। तब उसे राज-पुरुष पकड़कर सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन करनेके कारण, मारते हैं, बांधते हैं, देश-निकाला दे देते हैं अथवा अन्य किसी दण्डसे दण्डित करते हैं। क्या तुमने ऐसा देखा है या सुना है? "भन्ते! देखा है, सुना है और सुनेंगे भी।"

उस समय पाँच सौ उपासकोंसे घिरा हुआ अनाथपिण्डिक जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्‌को अभिवादन कर एक ओर बैठा। तब भगवान् ने आयुष्मान सारिपुत्रको सम्बोधित किया—सारिपुत्र! जो कोई श्वेतवस्त्रधारी गृहस्थ ऐसा हो जो पाँच विषयोंमें संयतेन्द्रिय हो, जो चारों प्रत्यक्ष सुखानुभव स्वरूप चैतसिक ध्यानोंको अनायास, बिना कष्टके प्राप्त कर सकता हो—वह यदि चाहे तो वह स्वयं अपने बारेमें यह घोषणा कर सकता है—मेरी नरकमें जन्म ग्रहण करनेकी संभावना क्षीण हो गई, मेरी पशु-योनिमें जन्म ग्रहण करनेकी संभावना क्षीण हो गई, मेरी अपाय-दुःखमें पड़नेकी संभावना क्षीण हो गई, मैं स्रोतपान्न हो गया हूँ, मैं पतन्मुख नहीं हूँ, मेरी सम्बोधि-प्राप्ति निश्चित है। वह किन पाँच विषयों (=कर्मों)में संयतेन्द्रिय होता है? सारिपुत्र! आर्य-श्रावक प्राणी-हिंसासे विरत होता है, चोरीसे विरत होता है, कामभोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत होता है, झूठ बोलनेसे विरत होता है, तथा सुरा-मेरय आदि नशीले पदार्थोंके सेवनसे विरत होता है। वह इन पाँच विषयों (=कर्मों) में संयतेन्द्रिय होता है। वह किन चार प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानोंको अनायास, बिना कष्टके प्राप्तकर सकने वाला होता है? सारिपुत्र! आर्य-श्रावक बुद्धके प्रति अविचल श्रद्धासे युक्त होता है, वह भगवान् अर्हत हैं, सम्यक् सम्बुद्ध हैं, विद्या तथा आचरणसे युक्त हैं, सुगत हैं, लोक-विदु हैं, अनुपम हैं, (दुष्ट—) पुरूषोका दमन करने वाले सारथी हैं, देवताओं तथा मनुष्योंके शास्ता हैं, भगवान् बुद्ध हैं। यह उसका प्रथम प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्ध चित्तकी शुद्धिका कारण होता है तथा मैले चित्तकी निर्मलताका कारण होता है। फिर सारिपुत्र! आर्य-श्रावक धर्मके प्रति अविचल श्रद्धासे युक्त होता है—भगवान् द्वारा उपदिष्ट धर्म अच्छी प्रकार समझाकर देशना किया गया है, वह सांदृष्टिक (=प्रत्यक्ष)—धर्म है, वह कालके बंधनसे परे है, उसके बारेमें यह कहा जा सकता है कि आओ और स्वयं परीक्षा करके देख लो, (निर्वाणकी ओर) ले जाने वाला है, प्रत्येक विज्ञ आदमी स्वयं जान सकता है। यह उसका दूसरा प्रत्यक्ष-सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान हो सकता है, जो अशुद्ध चित्तकी शुद्धिका कारण

होता है तथा मैले चित्तकी निर्मलताका कारण होता है। फिर सारिपुत्र! आर्य-श्रावक संघके प्रति अविचल श्रद्धासे युक्त होता है——भगवान्का श्रावक-संघ सुप्रतिपन्न है, भगवान्का श्रावक संघ ऋजु (मार्ग पर) प्रतिपन्न है, भगवान्का श्रावक संघ न्याय (मार्गपर) प्रतिपन्न है, भगवानका श्रावक संघ उचित पथपर प्रतिपन्न है—— पुरुषोंके ये जो चार जोड़े हैं, ये जो (स्रोतापन्न-मार्ग स्रोतापन्न-फल प्राप्त आदि) आठ पुद्‌गल हैं——यही भगवान्का श्रावक-संघ हैं। यह आदर करने योग्य है। यह सत्कार करने योग्य है। यह दक्षिणाके योग्य है। यह हाथ जोड़ने योग्य है। यह लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र है। यह उसका तीसरा प्रत्यक्ष सुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्ध चित्तकी शुद्धिका कारण होता है तथा मैले चित्तकी निर्मलताका कारण होता है। फिर सारिपुत्र! आर्य-श्रावक आर्य-श्रेष्ठ शीलोंसे युक्त होता है, जो अखण्डित होते हैं, जो छिद्र रहित होते हैं, जो बिना धब्बेके होते हैं, जो बिना दागके होते हैं, जो स्वतन्त्र होते हैं, जो विज्ञ पुरुषों द्वारा प्रशंसित होते हैं, जो अछूते होते हैं तथा जो समाधि-प्राप्तिमें सहायक होते हैं। यह उसका चौथा प्रत्यक्ष सुखानुभव स्वरूप चैतसिक ध्यान होता है, जो अशुद्ध चित्तकी शुद्धिका कारण होता है तथा मैले चित्तकी निर्मलताका कारण होता है। वह उन चारों प्रत्यक्षसुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानोंको अनायास, बिना कष्टके प्राप्त किये रहने वाला होता है। सारिपुत्र! जो कोई श्वेत वस्त्र धारी गृहस्थ ऐसा हो जो पाँच विषयोंमें संयतेन्द्रिय हो, जो चारों प्रत्यक्षसुखानुभव-स्वरूप चैतसिक ध्यानोंको अनायास, बिना कष्टके प्राप्त कर सकता हो, वह यदि चाहे तो स्वयं अपने बारेमें यह घोषणा कर सकता है—— मेरी नरकमें जन्म ग्रहण करनेकी संभावना क्षीण हो गई, मेरी पशु-योनिमें जन्म ग्रहण करनेकी संभावना क्षीण हो गई, मेरी अपाय- दुःखमें पड़नेकी संभावना क्षीण हो गई, मैं स्रोतापन्न हो गया हूँ, मैं पतनोन्मुख नहीं हूँ, मेरी सम्बोधि-प्राप्ति निश्चित है।

निरयेसु भयं दिस्वा पापानि परिवज्जये,
अरियधम्मं समादाय पण्डितो परिवज्जये॥
न हिंसे पाणभूतानि विज्जमाने परक्कमे,
मुसा च न भणे जानं अदिन्नं न परामसे॥
सेहि दारेहि सन्तुट्ठो परदारंच ना रमे,
मेरयं वारुणिं जन्तु न पिवे चित्तमोहनिं॥
अनुस्सरेय्य सम्बुद्धं धम्मं चानुवितक्कये,
अब्यापज्झं हितं चित्तं देवलोकाय भावये॥

उपट्ठिते देय्यधम्मे पुञ्ञत्थस्स जिगिंसतो,
सन्तेसु पठमं दिन्ना विपुला होति दक्खिणा ।।
सन्तो हवे पवक्खामि सारिपुत्त सुणाहि मे,
इति कण्हासु सेतासु रोहिणीसु हिरीसु वा ।।
कम्मासासु सरूपासु गोसु पारेतासु वा,
यासु कासु च एतासु दिन्नो जायति पुँगवो ।।
धोरय्हो बलसम्पन्नो कल्याणजवनिक्कमो,
तमेव भारे युजन्ति नास्स वण्णं परिक्खरे ।।
एवमेव मनुस्सेसु यस्मि कस्मिंचि जातिये,
खतिये ब्राह्मणवेस्से सुद्दे चण्डालपुक्कसे ।।
यासु कासु च एतासु दन्तो जायति सुब्बतो,
धम्मट्ठो सीलसम्पन्नो सच्चवादी हरीमतो ।।
पहीणजातिमरणो ब्रह्मचरियस्स केवली,
पन्नहारो विसंयुत्तो कतकिच्चो अनासवो ।।
पारगु सब्बधम्मानं अनुपादाय निब्बुतो,
तस्मिंच विरजे खेत्ते विपुला होति दक्खिणा ।।
बालाव अविजानन्ता दुम्मेधा अस्सुताविनो,
बहिद्धा देन्ति दानानि न हि सन्ते उपासरे ।।
ये च सन्ते उपासेन्ति सप्पञ्ञे धीरसम्मते,
सद्धा च नेसं सुगते मूलजाता पतिट्ठिता ।।
देवलोकं च ते यन्ति कुले वा इध जायरे,
अनुपुब्बेन निब्बाणं अधिगच्छन्ति पण्डिता ।।

[नरक भयका ध्यानकर पण्डितको चाहिये कि आर्य-धर्मको सम्यक् प्रकार ग्रहण कर पापोंसे दूर रहे। पराक्रम रहते प्राणि-हिंसा न करे, झूठ न बोले, जानबूझकर दूसरेकी चोरी न करे। अपनी स्त्रीसे सन्तुष्ट रहे, पराई स्त्रीसे रमण न करे। आदमीको चाहिये कि उसे मूढ़ बना देने वाली वारुणीका पान न करे। सम्बुद्धका अनुस्मरण करे, धर्मका चिन्तन करे और देवलोक (= ब्रम्हलोक) की प्राप्तिके लिये क्रोध-रहित मैत्री चित्तकी भावना करे। जब दान करनेके लिये कुछ उपस्थित हो और पुण्यकी कामना हो तो प्रथम शान्तचित्तोंको दे। उनको दिया गया दान महाफलदायी होता है। हे सारिपुत्र! तू मेरी बात सुन। मैं अब शान्त-चित्तोंके बारेमें कहता हूँ। इन

गौवों वा पारेताओं (?) में से जिस किसीसे भी—चाहे उनका रंग काला हो, चाहे श्वेत हों, चाहे लाल हों, चाहे हिरी (?) हों, चाहे चितकबरी हों—ऐसा श्रेष्ठ बैल पैदा होता है जो (भार) ढो सकने वाला होता है, जो बलवान् होता है, जिसकी अच्छी चाल होती है, उसीपर भार लादा जाता है, उसके रंगकी परीक्षा नहीं की जाती। इसी प्रकार आदमियोंमें कोई किसी भी जातिका हो—चाहे क्षत्रिय हो, चाहे ब्राह्मण हो, चाहे वैश्य हो, चाहे शूद्र हो, चाहे चाण्डाल हो, चाहे भंगी हो—यदि वह सुव्रत है, यदि वह धर्म-स्थित है, यदि वह शीलसम्पन्न है, यदि वह सत्यवादी है, यदि वह भय (—लज्जा) युक्त है, यदि वह जरा-मरणके बंधनसे परे है, यदि वह पूर्ण रूपसे ब्रह्मचर्यका पालन करने वाला है, यदि वह भार-मुक्त है, यदि वह आसक्ति-रहित है, यदि वह कृत-कृत्य है, यदि वह अनास्रव है, यदि वह सभी विषयों (= धर्मों) से परे है और उसने पूर्ण निर्वाण प्राप्त कर लिया है तो ऐसे रज-रहित (निर्मल) व्यक्तिको यदि दान दिया जाता है, तो उस दानका महान् फल होता है। जो मूर्ख होते हैं, जो अज्ञ होते हैं, जो दुर्बुद्धि होते हैं, जो अश्रुत (= अज्ञानी) होते हैं, वे बाहर (-अन्यों को) दान देते हैं। वे सत्पुरुषोंकी संगति नहीं करते। जो धीर जन, प्रज्ञावान्, सन्त पुरुषोंकी संगति करते हैं, उनके मनमें सुगतके प्रति दृढ़ श्रद्धा प्रतिष्ठित है। वे या तो देवलोकको प्राप्त होते हैं अथवा यहाँ उत्पन्न होने पर (श्रेष्ठ—) कुलमें उत्पन्न होते हैं। ऐसे पण्डित जन क्रमशः निर्वाणकी प्राप्ति करते हैं।]

एक समय भगवान् कोशल (जनपद) में महान् भिक्षु-संघके साथ चारिका कर रहे थे। रास्ता चलते हुए भगवान्ने एक प्रदेशमें एक बड़ा शालवन देखा। देखकर, रास्ता छोड़, जिधर वह शालवन था, उधर बढ़े। पास जाकर, उस शालवनका अवगाहन कर, एक प्रदेशमें मुस्कराये। तब आयुष्मान आनन्दके मनमें यह हुआ—भगवान्के मुस्करानेका क्या हेतु है, क्या कारण है? तथागत् कभी अकारण नहीं मुस्कराते हैं। तब आयुष्मान् आनन्दने भगवान्से यह कहा—भन्ते! भगवान्के मुस्करानेका क्या हेतु है, क्या कारण है? तथागत कभी अकारण नहीं मुस्कराते हैं।

आनन्द! पुराने समयमें यहाँ एक नगर था—समृद्ध, ऐश्वर्य-युक्त तथा जनाकीर्ण। आनन्द! भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध उसी नगरके आश्रय रहते थे। आनन्द! भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्धका गवेसी नामका एक उपासक था। वह अपूर्ण सदाचारी था। आनन्द! गवेसी उपासक द्वारा शिक्षा-पद ग्रहण कराये गये पांच सौ दूसरे उपासक भी थे। वे भी अपूर्ण सदाचारी थे।

आनन्द ! तब गवेसी उपासक के मनमें यह बात आई—मैं इन पाँच सौ उपासकोंका बहुत उपकार करने वाला हूँ, आगे आगे चलने वाला हूँ, शील ग्रहण कराने वाला हूँ। मैं अपूर्ण सदाचारी हूँ। ये पाँच सौ उपासक भी अपूर्ण सदाचारी हैं। हम दोनों ही समान हैं। मेरी कुछ भी विशेषता नहीं है। मैं अब इनसे कुछ विशिष्ट बननेके लिये प्रयास करूं। तब आनन्द ! वह गवेसी उपासक उन पाँच सौ उपासकोंके पास गया। पास जाकर उन पाँच सौ उपासकोंसे बोला– 'आयुष्मानो ! आजके बादसे तुम यह मान लो कि मैं पूर्ण सदाचारी हूँ।' तब आनन्द ! उन पाँच सौ उपासकोंके मनमें यह बात आई—आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक हैं, आगे आगे चलने वाले हैं, हमें शीलोंमें प्रतिष्ठित कराने वाले हैं। आर्य गवेसी पूर्ण सदाचारी बनने जा रहे हैं। हम भी क्यों न बनें ? तब आनन्द ! वह पाँच सौ उपासक जहाँ गवेसी उपासक था, वहाँ पहुँचे। पास जाकर गवेसी उपासक से बोले—'आर्य गवेसी ! आजके बादसे हम पाँच सौ उपासकोंको भी पूर्ण सदाचारी मानें।' तब आनन्द गवेसी उपासक के मनमें यह बात आई—"मैं इन पाँच सौ उपासकोंका बहुत उपकार करने वाला हूँ, आगे आगे चलने वाला हूँ, शील ग्रहण कराने वाला हूँ। मैं सम्पूर्ण सदाचारी हूँ। ये पाँच सौ उपासक भी सम्पूर्ण सदाचारी हैं। हम दोनों ही समान हैं। मेरी कुछ भी विशेषता नहीं है। मैं अब इनसे कुछ विशिष्ट बननेके लिये प्रयास करूँ।' तब आनन्द ! वह गवेसी उपासक उन पाँच सौ उपासकोंके पास गया। पास जाकर उन पाँच सौ उपासकोंसे बोला—'आयुष्मानो ! आजके बादसे तुम लोग मुझे ब्रह्मचारी मानो—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत।' तब आनन्द ! उन पाँच सौ उपासकोंके मनमें यह बात आई—आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक हैं, आगे आगे चलने वाले हैं, हमें शीलोंमें प्रतिष्ठित करानेवाले हैं। आर्य गवेसी ब्रह्मचारी बनने जा रहे हैं—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। हम भी क्यों न बनें ? तब आनन्द ! वह पाँच सौ उपासक जहाँ गवेसी उपासक था, वहाँ पहुँचे। पास जाकर गवेसी उपासक से बोले—'आर्य गवेसी ! आजके बादसे हम पाँच सौ उपासकोंको भी ब्रह्मचारी मानें—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत।' तब आनन्द ! गवेसी उपासक के मनमें यह बात आई—'मैं इन पाँच सौ उपासकोंका बहुत उपकार करने वाला हूँ, आगे आगे चलने वाला हूँ, शीलग्रहण कराने वाला हूँ। मैं पूर्ण सदाचारी हूँ। ये पाँच सौ उपासक भी पूर्ण सदाचारी हैं। मैं ब्रह्मचारी हूँ—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। ये पाँच सौ उपासक भी ब्रह्मचारी हैं—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। हम दोनों ही समान हैं। मेरी कुछ भी विशेषता नहीं है। मैं अब इनसे विशिष्ट बननेके लिये

प्रयास करूं।' तब आनन्द! वह गवेसी उपासक उन पाँच सौ उपासकोंके पास गया। पास जाकर उन पाँच सौ उपासकोंसे बोला—'आयुष्मानो! आजके बादसे तुम लोग मुझे एकाहारी मानो—रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत।' तब आनन्द! उन पाँच सौ उपासकोंके मनमें यह बात आई—आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक है, आगे आगे चलने वाले हैं, हमें शीलोंमें प्रतिष्ठित कराने वाले हैं। आर्य गवेसी एकाहारी बनने जा रहे हैं—रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत। हम भी क्यों न बनें? तब आनन्द! वह पाँच सौ उपासक जहाँ गवेसी उपासक था, वहाँ पहुँचे। पास जाकर गवेसी उपासकसे बोले—'आर्य गवेसी! आजके वादसे हम पाँच सौ उपासकोंको भी एकाहारी मानें——रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत।' तब आनन्द! गवेसी उपासकके मनमें यह बात आई—'मैं इन पाँच सौ उपासकोंका बहुत उपकार करने वाला हूँ, आगे आगे चलने वाला हूँ, शील ग्रहण कराने वाला हूँ। मैं सम्पूर्ण सदाचारी हूँ। यह पाँच सौ उपासक भी सम्पूर्ण सदाचारी हैं। मैं ब्रह्मचारी हूँ—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। ये पाँच सौ उपासक भी ब्रह्मचारी हैं—ग्राम्य मैथुन धर्मसे सर्वथा विरत। मैं एकाहारी हूँ—रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत। ये पाँच सौ उपासक भी एकाहारी हैं—रात्रि भोजनसे विरत, विकाल-भोजनसे सर्वथा विरत। हम दोनों ही समान हैं। मेरी कुछ भी विशेषता नहीं है। मैं अब इनसे कुछ विशिष्ट बननेके लिये प्रयास करूं!

तब आनन्द! गवेसी उपासक जहाँ भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध थे, वहाँ गया। पास जाकर उन भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्धसे कहा—'भन्ते! भगवान्के पाससे मुझे प्रव्रज्या मिले, मुझे उपसम्पदा मिले।' आनन्द! गवेसी उपासकको भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध के पाससे प्रव्रज्या मिल गई, उपसम्पदा मिल गई। आनन्द! उपसम्पन्न होनेके थोड़े ही समयके भीतर गवेसी भिक्षु अकेले, एकान्तमें रहकर, अप्रमादी हो, प्रयत्नकर, साधना करते रहकर, जिस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये कुल-पुत्र एकदम घरसे बेघर हो प्रव्रजित हो जाते हैं, उस अनुपम ब्रह्मचर्य-परायण उद्देश्यको शीघ्र ही, इसी जन्ममें प्राप्त कर, साक्षात् कर, विचरने लगा। उसे यह निश्चय हो गया कि जन्म (—मरण) का बंधन क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वासका उद्देश्य पूरा हो गया, जो करनेका था, वह कर लिया, अब यहाँके लिये कुछ करणीय नहीं रहा। आनन्द! गवेसी भिक्षु एक अर्हत हो गये।

तब आनन्द! उन पाँच सौ उपासकोंके मनमें यह बात आई—आर्य गवेसी हमारे बहुत उपकारक हैं, आगे आगे चलने वाले हैं, हमें शीलोंमें प्रतिष्ठित कराने वाले हैं। आर्य गवेसी केश-दाढ़ी मुण्डवा, काषाय वस्त्र पहन, घरसे बेघर हो, प्रव्रजित हो गये। हम भी क्यों न हो जायें? आनन्द! तब वे पाँच सौ उपासक जहाँ भगवान् अर्हत सम्यक् सम्बुद्ध थे, वहाँ पहुँचे। जाकर भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्धसे यह निवेदन किया—भन्ते! भगवान्के पाससे हमें प्रव्रज्या मिले, हमें उपसम्पदा मिले। आनन्द! उन पाँच सौ उपासकोंने भगवान् काश्यप अर्हत सम्यक् सम्बुद्धसे प्रव्रज्या प्राप्त की, उपसम्पदा प्राप्त की।

तब आनन्द! गवेसी भिक्षुके मनमें यह बात आई—मैं इस अनुपम विमुक्ति सुखका अनायास लाभी हूँ। क्या अच्छा हो यदि यह पाँच सौ भिक्षु भी इस विमुक्ति-सुखके अनायास लाभी हो सकें! तब आनन्द! वे पाँच सौ भिक्षु अकेले, एकान्तमें रहकर, अप्रमादी हो, प्रयत्न कर, साधन करते रहकर, जिस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये कुलपुत्र एकदम घरसे बेघर हो प्रव्रजित हो जाते हैं, उस अनुपम ब्रह्मचर्य-परायण उद्देश्यको शीघ्र ही, इसी जन्ममें प्राप्तकर, साक्षात् कर, विचरने लगे। उन्हें यह निश्चय हो गया कि जन्म-मरणका बंधन क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य-वासका उद्देश्य पूरा हो गया, जो करनेका था वह कर लिया, अब यहाँ के लिये कुछ करणीय नहीं रहा।

आनन्द! गवेसी प्रमुख उन पाँच सौ भिक्षुओंने उत्तरोत्तर श्रेष्ठ से श्रेष्ठ उद्देश्यकी ओर आगे बढ़ते हुए अनुपम विमुक्ति-सुखको प्राप्त कर लिया। इसलिये आनन्द! यही सीखना चाहिये कि हम उत्तरोत्तर श्रेष्ठसे श्रेष्ठतर उद्देश्यकी ओर आगे बढ़ते हुए अनुपम विमुक्ति-सुखको प्राप्त करेंगे। आनन्द! इसी लिये यही सीखना चाहिये।

(४) आरण्यक वर्ग

भिक्षुओ, ये पाँच आरण्यक होते हैं। कौनसे पाँच? (बुद्धि) मन्दता या मूढ़ताके कारण भी कोई कोई आरण्य-वासी (=आरण्यक) होते हैं। पापेच्छाके कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। उन्मत्त अथवा विक्षिप्त-चित्त होनेके कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। बुद्ध और बुद्ध-श्रावकोंके द्वारा अरण्यवास प्रशंसित होनेके कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। अल्पेच्छताके ही कारण, संतुष्ठ होने के ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी इच्छाके ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेंके ही कारण, इतने से ही सन्तुष्ट रहनेके ही कारण भी कोई कोई आरण्यक होता है। भिक्षुओं, ये पाँच आरण्यक होते हैं,। भिक्षुओ, इन पाँचों आरण्यकोंमें जो अल्पेच्छता

के ही कारण, संतुष्ट होनेके ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बिताने की इच्छाके ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतनेसे ही संतुष्ट रहनेके कारण जो आरण्यक होता है, वही इन पाँचों आरण्यकोंमें अग्र, श्रेष्ठ, प्रमुख,उत्तम और परंश्रेष्ठ कहलाता है। भिक्षुओ, जैसे गौसे दूध होता है, दूधसे ही दही, दहीसे नवनीत (= मक्खन) नवनीतसे घी, घीसे घी-माण्ड (?)——घी-माण्ड ही इन सबमें श्रेष्ठ कहलाता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, इन पाँच प्रकारके आरण्यकोंमें जो अल्पेच्छताके ही कारण, संतुष्ट होनेके ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी इच्छाके ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके कारण, इतनेसे ही सन्तुष्ट रहनेके कारण जो आरण्यक होता है, वही इन पांचों आरण्यकोंमें अग्र, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम और परम श्रेष्ठ कहलाता है।

भिक्षुओ, ये पाँच पांसुकूलिक (-धूलमें पड़े चीथड़ोंका बना चीवर पहनने वाले) हैं. . . . .भिक्षुओ, ये पांच वृक्ष-मूलक (वृक्षकी ही छायामें रहने वाले) हैं. . . . भिक्षुओ, ये पाँच श्मशानिक (श्मशानमें ही रहने वाले) हैं. . . भिक्षुओ, ये पाँच खुले आकाशके नीचे ही रहने वाले हैं. . . . . भिक्षुओ, ये पाँच बैठे ही रहने वाले होते हैं. . . . . भिक्षुओ, ये पाँच जैसा भी आसन मिले वैसा ही ग्रहण करने वाले होते हैं. . . . भिक्षुओ, ये पाँच एक ही आसन पर बैठकर भिक्षा ग्रहण करने वाले होते हैं. . . . . भिक्षुओ, ये पाँच सामान्य समयके बाद भिक्षाको अस्वीकार करने वाले होते हैं. . . . भिक्षुओ, ये पाँच केवल भिक्षा पात्रमें प्राप्त भोजन ग्रहण करने वाले होते हैं। कौनसे पाँच ? (बुद्धि) मन्दता या मूढ़ताके कारण भी कोई कोई पिण्ड-पातिक होता है। उन्मत्त अथवा विक्षिप्त-चित्त होनेके कारण भी कोई-कोई पिण्डपातिक होता है। बुद्ध और बुद्ध-श्रावकों द्वारा प्रशंसित होनेके कारण भी कोई कोई पिण्ड-पातिक होता है। अल्पेच्छताके ही कारण, संतुष्ट होनेके ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी ही इच्छाके कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतने से ही सन्तुष्ट रहनेके कारण भी कोई-कोई पिण्डपातिक होता है। भिक्षुओ, ये पाँच पिण्डपातिक होते हैं।

भिक्षुओ, इन पाँच प्रकारके पिण्ड-पातिकोमें जो अल्पेच्छता के ही कारण, सन्तुष्ट होनेके ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी इच्छाकी ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतनेसे ही सन्तुष्ट रहनेके कारण, जो पिण्ड-पातिक होता है, वही इन पाँचों पिण्ड-पातिकोंमें अग्र, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम और परं श्रेष्ठ कहलाता है। भिक्षुओ, जैसे गौसे दूध होता है, दूधसे दही, दहीसे नवनीत (मक्खन), नवनीतसे घी, घीसे घी-माण्ड (?)–घी-माण्ड ही, इन सबमें श्रेष्ठ कहलाता है। इसी प्रकार

भिक्षुओ, इन पाँच प्रकारके पिण्ड-पातिकोंमें जो अल्पेच्छताके ही कारण, संतुष्ट होने के ही कारण, श्रेष्ठ-जीवन बितानेकी इच्छाके ही कारण, एकान्त-जीवन प्रिय होनेके ही कारण, इतनेसे ही सन्तुष्ट रहनेके ही कारण पिण्डपातिक होता है, वह इन पाँचों पिण्ड-पातिकोंमें अग्र, श्रेष्ठ, प्रमुख, उत्तम और परं श्रेष्ठ कहलाता है।

(५) ब्राह्मण वर्ग

भिक्षुओ, ये पाँच बातें ऐसी हैं जो पहले ब्राह्मणोंमें दिखाई देती थीं, अब ब्राह्मणोंमें नहीं दिखाई देतीं, अब कुत्तोंमें दिखाई देती हैं। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण केवल ब्राह्मणीसे ही सहवास करते थे, अब्राह्मणीसे नहीं। भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण, ब्राह्मणीके पास भी जाते हैं, अब्राह्मणी के पास भी। भिक्षुओ, अब कुत्ते कुतियाके ही पास जाते हैं, अकुतियाके पास नहीं। भिक्षुओ, यह पहली बात है जो पहलेके ब्राह्मणोंमें दिखाई देती थी, अबके ब्राह्मणोंमें नहीं दिखाई देतीं, अब कुत्तोंमें दिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण रजस्वलाके ही पास जाते थे, अरजस्वलाके पास नहीं। भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण रजस्वलाके पास भी जाते हैं, अरजस्वलाके पास भी। भिक्षुओ, अब कुत्ते रजस्वला कुतियाके ही पास जाते हैं, अरजस्वला कुतियाके पास नहीं। भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो पहलेके ब्राह्मणोंमें दिखाई देती थी, अबके ब्राह्मणोंमें नहीं दिखाई देती, अब कुत्तोंमें दिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण ब्राह्मणीका क्रय-विक्रय नहीं करते थे। जो प्रिया होती थी, उसीको सहवास करने के लिये अंगीकार करते थे। भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण ब्राह्मणीका क्रय-विक्रय भी करते हैं, जो प्रिया होती है उसे भी सहवासके लिये अंगीकार करते है। भिक्षुओ, अब कुत्ते कुतियाका क्रय-विक्रय नहीं करते, जो प्रिया होती है उसे ही सहवासके लिये अंगीकार करते है। भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो पहलेके ब्राह्मणोंमें दिखाई देती थी, अबके ब्राह्मणोंमें नहीं दिखाई देती, अब कुत्तोंमें दिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण धन-धान्य अथवा चाँदी-सोनेका संग्रह नहीं करते थे। भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण धन-धान्य तथा चांदी-सोनेका संग्रह करते हैं। भिक्षुओ, अब कुत्ते धन-धान्य अथवा चांदी-सोनेका संग्रह नहीं करते। भिक्षुओ, यह चौथी बात है जो पहलेके ब्राह्मणोंमें दिखाई देती थी, अबके ब्राह्मणोंमें नहीं दिखाई देती, अब कुत्तोंमें दिखाई देती है।

भिक्षुओ, पहलेके ब्राह्मण सन्ध्याके समय सन्ध्याके भोजनके लिये, प्रातःकालके समय प्रातःकालके भोजनके लिये, भिक्षाटन करते थे। भिक्षुओ, अबके ब्राह्मण पेट भर खाकर, बाकी बाँध कर ले जाते हैं। भिक्षुओ, अब कुत्ते शामके समय शामका और प्रातःकालके समय प्रातःकालका भोजन खोजते हैं। भिक्षुओ, यह पाँचवी बात है जो पहलेके ब्राह्मणोंमें दिखाई देती थी, अबके ब्राह्मणोंमें नहीं दिखाई देती, अब कुत्तोंमें दिखाई देती है।

तब द्रोण ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया। पास जाकर भगवान् बुद्धसे कुशल-क्षेमकी बातचीत की। कुशलक्षेम पूछ चुकनेके बाद वह एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए द्राण ब्राह्मणने भगवान्से यह कहा—हे गौतम ! हमने यह सुना है कि आप ऐसे ब्राह्मणोंका, जो बड़े-बूढ़े हों, वृद्ध हों, आयु-प्राप्त हों, न अभिवादन करते हैं, न उनको आसन देकर या बैठनेके लिये कहकर उनका स्वागत ही करते हैं। तो क्या हे गौतम ! यह ऐसा ही है कि आप ऐसे ब्राह्मणोंका, जो बड़े-बूढ़े हों, वृद्ध हों, आयु-प्राप्त हों, न अभिवादन करते हैं, न उनको आसन देकर या बैठनेके लिये कहकर उनका स्वागत ही करते हैं ? हे गौतम ! यह तो आपके लिये उचित नहीं है।

"हे द्रोण ! तू भी अपने आपको ब्राह्मण कहता है ?"

"हे गौतम ! यदि ठीक ठीक कहने वाला कोई किसी के बारेमें कहे कि यह ब्राह्मण है; यह माता तथा पिता दोनों ही की ओरसे सुजात है; इसकी सात पीढ़ी तककी वंश-परम्परा शुद्ध है; यह जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष है, यह अध्यापक है; यह (वेद–) मन्त्र धारी है, यह तीनों-वेदोंमें पारंगत है, निघण्टु, केटुभयुक्त, अक्षर-प्रभेद युक्त, संख्याके हिसाबसे पाँचवें इतिहास-युक्त; यह (वेदका) पद-पाठ करने वाला है; यह व्याकरणका जानकार है, यह लोकायत-महापुरुष लक्षणोंका पूरा जानकार है; तो वह मेरे ही बारेमें ठीक ठीक कहेगा।

"हे गौतम ! मैं ही वह ब्राह्मण हूँ, जो माता पिता दोनोंकी ओरसे सुजात है; जिसकी सात पीढ़ी तककी वंश-परम्परा शुद्ध है; जो जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष है, जो अध्यापक है; जो (वेद–) मन्त्रधारी है; जो तीनों वेदोंमें पारंगत है, निघण्टु-केटुभ-युक्त, अक्षर-प्रभेद-युक्त,संख्याके हिसाबसे पाँचवें इतिहास युक्त; जो (=वेदका) पद-पाठ करने वाला है; जो व्याकरणका जानकार है; जो लोकायत महापुरुष-लक्षणोंका पूरा जानकार है।"

"हे द्रोण! जो तुम्हारे पूर्वज ब्राह्मणोंके ऋषी-गण हुए हैं, जो मन्त्रोंकी रचना करने वाले थे, मन्त्रोंके प्रवक्ता थे, जिनके द्वारा संग्रहीत पुराने मन्त्रोंका आजके ब्राह्मण अनुगायन करते हैं, अनुभाषण करते हैं, परम्परानुसार शिक्षण करते हैं, अनुवाचन करते हैं—जैसे अट्टक, वामक, वामदेव, विश्वामित्र, जम्दग्नि, अंगीरस,भारद्वाज वसिष्ठ, काश्यप, भृगु,—वे पाँच प्रकारके ब्राह्मणोंका वर्णन करते हैं—ब्रह्म-समान, देव-समान, मर्यादायुक्त, मर्यादा-रहित तथा पाँचवा चाण्डाल-ब्राह्मण। हे द्रोण! तू उनमेंसे कौन (=कौन-सा) ब्राह्मण है?"

"हे गौतम! मैं इन पाँच प्रकारके ब्राह्मणोंको नहीं जानता। मैं केवल 'ब्राह्मण' को ही जानता हूँ। अच्छा हो हे गौतम! आप मुझे इस प्रकारका उपदेश दें कि मैं इन पाँच प्रकारके ब्राह्मणोंको जान लूँ।"

"तो ब्राह्मण! सुन। अच्छी तरहसे मनमें धारण कर। मैं कहता हूँ।"

"बहुत अच्छा" कहकर द्रोण ब्राह्मणने भगवान्‌को प्रतिवचन दिया। भगवान्‌ने यह कहा—

"द्रोण! ब्राह्मण ब्रह्म-समान कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनोंकी ओरसे सुजात होता है, उसकी सात पीढ़ी तककी वंश-परम्परा शुद्ध होती है, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद–) मन्त्रोंका अध्ययन करता हुआ, अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रतका पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करते हुए (वेद–) मन्त्रोंका अध्ययन कर अधर्मानुसार नहीं, किन्तु धर्मानुसार आचार्यके लिये गुरु-दक्षिणा (=आचार्य-धन) खोजता है। द्रोण! इस विषयमें धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालनसे, न धनुर्विद्या से, न राजकीय नौकरीसे और न किसी दूसरे शिल्पसे। वह भिक्षाके ठूठेको घृणाकी दृष्टिसे न देख, केवल भिक्षाटन द्वारा आचार्य-धन खोजता है। वह आचार्यको उसकी गुरु-दक्षिणा भेंटकर, बाल-दाढ़ी मुण्डा, काषाय वस्त्र पहन, घरसे बेघर हो प्रव्रजित हो जाता है। वह प्रव्रजित हो जानेपर एक दिशा, दूसरी दिशा, तीसरी दिशा तथा चौथी दिशाको मैत्री-युक्त चित्तसे व्याप्त कर विचरता है। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक् सभी दिशाओंमें सर्वत्र, सबके लिये, समस्त लोकको मैत्री-युक्त, विपुल, अप्रमाण, वैर-रहित, क्रोध-रहित चित्तसे विचरता है। वह करुणा युक्त चित्तसे मुदिता-युक्त चित्तसे, उपेक्षा-युक्त चित्तसे एक दिशा, दूसरी दिशा, तीसरी दिशा तथा चौथी दिशाको व्याप्त कर विचरता है। वह ऊपर, नीचे, तिर्यक सभी दिशाओंमें, सर्वत्र, सबके लिये, समस्त लोकको उपेक्षा-युक्त, विपुल, अप्रमाण, वैर-रहित, क्रोध-

रहित चित्तसे विचरता है। वह इन चारों ब्रह्म-विहारोंका अभ्यास कर शरीरके न रहनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति ब्रह्म-लोकमें उत्पन्न होता है। द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण ब्रह्म-समान होता है।

द्रोण! ब्राह्मण देव-समान कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनोंकी ओरसे सुजात होता है, उसकी सात पीढ़ी तककी वंश-परम्परा शुद्ध होती है, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद–) मन्त्रोंका अध्ययन करता हुआ, अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करते हुए (वेद-) मंत्रोंका अध्ययन कर अधर्मानुसार नहीं, किन्तु धर्मानुसार आचार्यके लिये गुरु-दक्षिणा (=आचार्य-धन) खोजता है। इस विषयमें धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालनसे, न धनुर्विद्यासे, न राजकीय नौकरीसे और न किसी दूसरे शिल्पसे। वह भिक्षाके ठूठेको घृणाकी दृष्टिसे न देख, केवल भिक्षाटन द्वारा आचार्य धन खोजता है। वह आचार्यको उसकी दक्षिणा भेंट कर अधर्मानुसार नहीं, धर्मानुसार ही, भार्याकी खोज करता है। इस विषयमें धर्म-विधि क्या है? वह क्रय-विक्रय द्वारा उसे प्राप्त नहीं करता है। उसकी ब्राह्मणी केवल उसके हाथपर जल डालकर उसके माता-पिता द्वारा उसे दी गई होती है। वह केवल ब्राह्मणीसे ही सहवास करता है, क्षत्राणीसे नहीं, वैश्य-स्त्रीसे नहीं, शूद्र-स्त्रीसे नहीं, चण्डाल-स्त्रीसे नहीं, निषाद-स्त्रीसे नहीं, बांसफोड स्त्रीसे नहीं, भंगिनसे नहीं तथा पुक्कुस-स्त्रीसे नहीं। वह गर्भिणीसे सहवास नहीं करता, दूध पिलाती स्त्रीसे नहीं, अरजस्वलासे नहीं। द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणीसे क्यों सहवास नहीं करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण गर्भिणीसे सहवास करता है तो वह तरुण वा तरुणी गूँहमें बहुत लथ-पथ जैसी हो जाती हैं। इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणीसे सहवास नहीं करता। द्रोण! वह ब्राह्मण दूध पिलाती हुईसे क्यों सहवास नहीं करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण दूध पिलाती हुईसे सहवास करे तो वह तरुण या तरुणी अशुचि पापी-सी होती है। इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण दूध पिलाती हुईसे सहवास नहीं करता! द्रोण! वह ब्राह्मण अरजस्वलासे क्यों सहवास नहीं करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण अरजस्वलासे सहवास करता है, तो वह ब्राह्मणी न उसकी कामेच्छाकी तृप्तिके लिये होती है, न क्रीड़ाके लिये होती है, न रतिके लिये होती है; वह ब्राह्मणी उस ब्राह्मणके लिये केवल जनन करनेवाली होती है। वह बालक या बालिकाको जन्म दे, बाल-दाढ़ी मुण्डा, काषाय-वस्त्र पहन, घरसे बेघर हो, प्रव्रजित हो जाता है। इस प्रकार प्रव्रजित हुआ हुआ वह काम-भोगोंसे पृथक हो.... चतुर्थ

ध्यानको प्राप्त कर विचरता है। वह इन चारों ध्यानोंका अभ्यास कर, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगति, स्वर्ग लोकमें जन्म ग्रहण करता है। द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण देव-समान होता है।

द्रोण! ब्राह्मण मर्यादाका पालन करने वाला कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता-पिता दोनोंकी ओरसे सुजात होता है, उसकी सात पीढ़ी तककी वंश-परम्परा शुद्ध होती है, जातिवादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद–) मन्त्रोंका अध्ययन करता हुआ, अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रतका पालन करते हुए (वेद–) मन्त्रोंका अध्ययन कर अधर्मानुसार नहीं, किन्तु धर्मानुसार आचार्यके लिये गुरु-दक्षिणा (= आचार्य-धन) खोजता है। इस विषयमें धर्म-विधि क्या है? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालनसे, न धनुर्विद्यासे, न राजकीय नौकरीसे और न किसी दूसरे शिल्पसे। वह भिक्षाके ठूठेको घृणाकी दृष्टिसे न देख, केवल भिक्षाटन द्वारा आचार्य धन खोजता है। वह आचार्यको उसकी दक्षिणा भेंट कर अधर्मानुसार नहीं, धर्मानुसार ही भार्याकी खोज करता है। इस विषयमें धर्म-विधि क्या है? वह क्रय-विक्रय द्वारा उसे प्राप्त नहीं करता है। उसकी ब्राह्मणी केवल उसके हाथपर जल डालकर ब्राह्मणीके माता-पिता द्वारा उसे दी गई होती है। वह केवल ब्राह्मणीसे ही सहवास करता है, क्षत्राणीसे नहीं, वैश्य-स्त्रीसे नहीं, शूद्र-स्त्रीसे नहीं, चण्डाल-स्त्रीसे नहीं, निषाद-स्त्रीसे नहीं, बाँस-फोड़-स्त्रीसे नहीं, भंगिनसे नहीं तथा पुक्कुस-स्त्रीसे नहीं। वह गर्भिणीसे सवहास नहीं करता, दूध पिलाती स्त्रीसे नहीं, अरजस्वलासे नहीं। द्रोण! वह ब्राह्मण गर्भिणी स्त्रीसे क्यों सहवास नहीं करता? द्रोण! यदि वह ब्राह्मण गर्भिणी स्त्रीसे सहवास करे......केवल जनन करनेवाली होती है। वह पुत्र या पुत्रीको जन्म दे, उस सन्तान-सुखका ही आनन्द लेते हुए गृहस्थी करता है। वह घर छोड़ बे-घर नहीं होता। वह पुराने ब्राह्मणोंकी मर्यादाका पालन करता है। उसका अतिक्रमण नहीं करता। क्योंकि वह ब्राह्मण जो पुराने ब्राह्मणोंकी मर्यादाका पालन करता है, उसका अतिक्रमण नहीं करता, इसलिये हे द्रोण! वह ब्राह्मण मर्यादा-युक्त रहता है। हे द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण मर्यादा-युक्त होता है।

द्रोण! ब्राह्मण मर्यादाका उल्लंघन करने वाला कैसे होता है? द्रोण! ब्राह्मण माता पिता दोनोंकी ओरसे सुजात होता है......जाति-वादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद–) मन्त्रोंका अध्ययन करता हुआ अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रतका पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य व्रतका

पालन करते हुए (वेद–) मन्त्रोंका अध्ययन कर, अधर्मानुसार नहीं, किन्तु धर्मानुसार आचार्यके लिये गुरु-दक्षिणा (=आचार्य धन) खोजता है। इस विषयमें धर्म-विधि क्या है ? न कृषि करके, न व्योपार करके, न गोपालनसे, न धनुर्विद्यासे, न राजकीय नौकरीसे और न किसी दूसरे शिल्पसे। वह भिक्षाके ठूठेको घृणाकी दृष्टिसे न देख, केवल भिक्षाटन द्वारा आचार्य-धन खोजता है। वह आचार्यको उसकी दक्षिणा सौंपकर धर्मानुसार भी, अधर्मानुसार भी, क्रय-विक्रय द्वारा भी, और हाथपर पानी डालकर भी दी गई ब्राह्मणीको प्राप्त करता है। वह ब्राह्मणीसे भी सहवास करता है, क्षत्राणीसे भी, वैश्य-स्त्रीसे भी, शूद्र-स्त्रीसे भी, चण्डाल-स्त्रीसे भी, निषाद-स्त्रीसे भी, बांस-फोड़ स्त्रीसे भी, भंगिनसे भी तथा पक्कुस-स्त्रीसे भी। वह गर्भिणीसे भी सहवास कराता है, दूध पिलाती हुईसे भी सहवास करता है, रजस्वलासे भी सहवास करता है तथा अरज-स्वलासे भी सहवास करता है। उसकी ब्राह्मणी उसकी कामेच्छाकी तृप्तिके लिये भी होती है, क्रीड़ाके लिये भी होती है, रतिके लिये भी होती है तथा जनन करने वाली भी होती है। वह पुराने ब्राह्मणोंकी मर्यादाका पालन नहीं करता, उसका अतिक्रमण करता है। क्योंकि जो पुराने ब्राह्मणोंकी मर्यादा होती है, वह उसका पालन नहीं करता, वह उसका अतिक्रमण करता है, इसलिये द्रोण! वह ब्राह्मण मर्यादाका उल्लंघन करने वाला होता है।

द्रोण! ब्राह्मण चण्डाल-ब्राह्मण कैसे होता है ? द्रोण! ब्राह्मण माता पिता दोनोंकी ओरसे सुजात होता है, उसकी सात-पीढ़ी तककी वंश-परम्परा शुद्ध होती है, जाति-वादकी दृष्टिसे निर्दोष होता है। वह (वेद-) मन्त्रोंका अध्ययन करता हुआ, अड़तालीस वर्ष तक कुमार-ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करता है। अड़तालीस वर्ष तक कुमार ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन करते हुए (वेद –) मन्त्रोंका अध्ययन कर धर्मा-नुसार वा अधर्मानुसार आचार्य-धन खोजता है। वह कृषि करके, व्योपार करके, गोपालनसे, धनुर्विद्यासे, राजकीय-नौकरीसे तथा किसी दूसरे शिल्पसे भी। वह भिक्षाके ठूठे तकको घृणाकी दृष्टिसे नहीं देखता। वह आचार्यको गुरु-दक्षिणा भेंट कर धर्मानुसार या अधर्मानुसार भार्याकी खोज करता है। वह क्रय-विक्रय द्वारा भी खोजता है। वह ब्राह्मणीके माता पिता द्वारा उसके हाथपर जल डालकर दी गई ब्राह्मणीको भी प्राप्त करता है। वह ब्राह्मणीसे भी सहवास करता है, क्षत्राणीसे भी सहवास करता है, वैश्य-स्त्रीसे भी, शूद्र-स्त्रीसे भी, चण्डाल-स्त्रीसे भी, भंगिन-स्त्रीसे भी तथा पक्कुस-स्त्रीसे भी। वह गर्भिणीसे भी सहवास करता है, दूध पिलाती हुई से भी सहवास करता है, रजस्वलासे भी सहवास करता है तथा अरजस्वलासे

भी। उसकी ब्राह्मणी उसकी कामेच्छा की पूर्तिके लिये भी होती है, क्रीड़ाके लिये भी होती है, रतिके लिये भी होती है तथा जनन करने वाली भी होती है। वह सभी तरहके काम करके जीविका चलाता है। उससे ब्राह्मण पूछते हैं—'आप अपने आपको ब्राह्मण कहते हुए क्यों सभी तरहके काम करके जीविका चलाते हैं?' वह उत्तर देता है—"जैसे आग शुचि अशुचि दोनोंको जला डालती है, वह स्वयं लिप्त नहीं होती। इसी प्रकार यदि ब्राह्मण सभी तरहके काम करके भी जीविका चलाता है, तो भी वह उससे लिप्त नहीं होता। द्रोण! क्योंकि वह सभी तरहके काम करके जीविका चलाता है, इसलिये वह चण्डाल-ब्राह्मण कहलाता है! द्रोण! इस प्रकार ब्राह्मण चण्डाल-ब्राह्मण होता है।

हे द्रोण! जो तुम्हारे पूर्वज ब्राह्मणोंके ऋषीगण हुए हैं, जो मन्त्रोंकी रचना करने वाले थे, मन्त्रोंके प्रवक्ता था, जिनके द्वारा संग्रहीत पुराने मन्त्रोंका आजके ब्राह्मण अनुगायन करते हैं, अनुभाषण करते हैं, परम्परानुसार शिक्षण करते हैं, अनु-वाचन करते हैं—जैसे अट्टक, वामक, वामदेव, विश्वामित्र, जम्दग्नि, अङ्गीरस, भार-द्वाज, वसिष्ठ, काश्यप, भृगु—वे ही इन पाँच प्रकारके ब्राह्मणोंका वर्णन करते हैं—ब्रह्म-समान, देव-समान, मर्यादा-युक्त, मर्यादा-रहित तथा पाँचवाँ चण्डाल-ब्राह्मण। हे द्रोण! तू उनमेंसे कौन-सा ब्राह्मण है?

"हे गौतम! यदि ऐसा है तो हम चण्डाल-ब्राह्मणकी गिनतीमें भी नहीं हैं। हे गौतम! आपका कथन बहुत सुन्दर है......हे गौतम! आजसे प्राण रहने तक आप मुझे अपना शरणागत उपासक समझें।"

उस समय संगारव ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचा। पास जाकर भगवान्से कुशल-क्षेम सम्बन्धी बातचीत की। कुशल-क्षेमकी बातचीत समाप्त होनेपर वह एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठे हुए संगारव ब्राह्मणने भगवान्से यह पूछा—हे गौतम! इसका क्या हेतु है, क्या कारण है कि किसी समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये मन्त्रोंका तो कहना ही क्या? इसका क्या हेतु है, क्या कारण है कि किसी समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद रहते हैं, चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या?"

ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें काम-राग व्याप्त रहता है और उत्पन्न काम-रागके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी यथार्थ

रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है, उस समय पर-हित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न दिखाई देता है, न ज्ञान रहता है। उस समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये मन्त्रोंका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा बर्तन हो, उसमें लाखका रंग, हल्दीका रंग, नीला-रंग वा मञ्जीठका रंग पड़ा हो, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें काम-राग व्याप्त रहता है और उत्पन्न काम-रागके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हितभी यर्थार्थ रूपसे न दिखाई देता है, न ज्ञात रहता है; उस समय पर-हित भी यर्थार्थ रूपसे न दिखाई देता है, न ज्ञात रहता है। उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न दिखाई देता है, न ज्ञात रहता है। उस समय चिर-काल तक पाठ किये गये (वेद) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये मन्त्रोंका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें व्यापदि (=क्रोध) व्याप्त रहता है और उत्पन्न व्यापादके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी......परहित भी.......आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानी भरा बर्तन हो, वह आग पर रखा हो, गर्म हो, उबल रहा हो, उफन रहा हो, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमें व्यापाद (=क्रोध) व्याप्त रहता है और उत्पन्न व्यापादके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी यथार्थ-रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है; उस समय पर-हित भी.....उस समय आत्म-हित तथा पर-हित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये मन्त्रोंका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें थीन-मिद्ध (=आलस्य-तन्द्रा) व्याप्त रहता है, और उत्पन्न आलस्य तथा तन्द्राके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.......परहित भी......आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ

किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये वेद-मन्त्रोंका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानीका वर्तन हो, उसके ऊपर कोई-कीचड़ हो, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमें थीन-मिद्ध व्याप्त रहता है, और उत्पन्न थीन-मिद्धके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी......पर-हित भी......आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद –) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये मन्त्रोंका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें उद्धतपन तथा कौकृत्य (= पश्चाताप) व्याप्त रहता है और उत्पन्न उद्धतपन तथा कौकृत्यके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....पर हित भी.....आत्म हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानीका बर्तन हो, वह हवासे चंचल हो, हिलता-डोलता हो, उसमें लहरें उठ रही हों, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमें उद्धतपन तथा कौकृत्य व्यापा रहता और उत्पन्न उद्धतपन तथा कौकृत्यके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.... न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये मन्त्रोंका तो कहना ही क्या?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें सन्देह (= विचिकित्सा) व्याप्त रहता है और उत्पन्न सन्देहके शमनका यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी....आत्म हित तथा पर हित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर-काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानीका बर्तन हो, अस्थिर हो, हिलता हो, तलपर ही कीचड़ युक्त हो, अन्धेरेमें रखा हो, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट न हो, दिखाई न दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमें सन्देह (= विचिचिकित्सा) व्याप्त रहता है और उत्पन्न सन्देहके शमनका

यथार्थ उपाय अज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी .... परहित भी ... आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे न ज्ञात रहता है, न दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्र भी भूल जाते हैं, न पाठ किये गये मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ?

किन्तु हे ब्राह्मण ! जिस समय चित्तमें काम-राग व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न काम-रागके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है, उस समय परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं, चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण ! जैसे कोई पानी भरा बर्तन हो, उसमें न लाखका रंग हो, न हल्दीका रंग हो, न नीला रंग हो, न मंजीठा रंग हो; उस बर्तनमें कोई आँख-वाला अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण ! जिस समय चित्तमें काम-राग व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न काम-रागके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है, पर-हित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है, उस समय आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं, चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ?

फिर हे ब्राह्मण ! जिस समय चित्तमें क्रोध (=व्यापाद) व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न व्यापादके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी......परहित भी......आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं। चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद –) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ! हे ब्राह्मण ! जैसे कोई पानी भरा बर्तन हो, वह न आगपर रखा हो, न गर्म हो, न उबल रहा हो, न उफान आ रहा हो, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण ! जिस समय चित्तमें क्रोध (=व्यापाद) व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न व्यापादके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.......परहित-भी......आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता

है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं, चिरकाल तक पाठ किये गये वेद-मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें थीन-मिद्ध (=आलस्य तन्द्रा) व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न थीन-मिद्धके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी......परहित भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये वेद (=मन्त्र) भी याद आ जाते हैं। चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानीका बर्तन हो, उसके ऊपर कोई कीचड़ न हो, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमें थीन-मिद्ध व्याप्त नहीं रहता है और उत्पद्धन्न थीन-मिद्धके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.......पर हित भी.....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं। चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें उद्धतपन तथा कौकृत्य (=पश्चाताप) व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न उद्धतपन तथा कौकृत्यके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्म-हित भी.....परहित भी....आत्म-हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते है। चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण! जैसे कोई पानीका बर्तन हो, वह हवासे चंचल न हो, हिलता-डोलता न हो, उसमें लहरें न उठ रही हों, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण! जिस चित्तमें उद्धतपन तथा कौकृत्य (=पश्चात्ताप) व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न उद्धतपन तथा कौकृत्यके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय आत्महित भी......परहित भी.....आत्म हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं। चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ?

फिर हे ब्राह्मण! जिस समय चित्तमें सन्देह (=विचिकित्सा) व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न सन्देहके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस समय

आत्महित भी......परहित भी......आत्महित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं, चिर काल तक पाठ किये गये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण ! जैसे कोई पानीका बर्तन हो, अस्थिर न हो, हिलता न हो, तलपर ही कीचड़ युक्त न हो, अन्धेरेमें रखा न हो, उस बर्तनमें कोई आँख वाला आदमी अपना मुँह देखना चाहे। वह उसे वहाँ प्रकट हो, दिखाई दे। इसी प्रकार हे ब्राह्मण ! जिस चित्तमें सन्देह (= विचिकित्सा) व्याप्त नहीं रहता है और उत्पन्न सन्देहके शमनका यथार्थ उपाय ज्ञात रहता है, उस मसय आत्म हित भी.....परहित भी....आत्म हित तथा परहित भी यथार्थ रूपसे ज्ञात रहता है, दिखाई देता है। उस समय चिरकाल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद आ जाते हैं, चिरकाल तक पाठ किये गये (वेद) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ? हे ब्राह्मण ! यही हेतु है, यही कारण है कि किसी समय चिर काल तक पाठ न किये गये (वेद–) मन्त्र भी याद रहते हैं, चिर काल तक पाठ किये गये (वेद–) मन्त्रोंका तो कहना ही क्या ?

"हे गौतम ! आपका कहना बहुत ही सुन्दर है.......हे गौतम ! आजसे प्राण रहने तक आप मुझे अपना शरणागत उपासक समझें।"

एक समय भगवान् वैशालीके महावनमें कूटागार शालामें विहार करते थे। उस समय कारण पाली नामका ब्राह्मण लिच्छवियोंका काम काज देखता था। कारण पाली ब्राह्मणने देखा कि पिंगियानि ब्राह्मण दूरसे चला आ रहा है। उसे, आता देख, पिंगियानि ब्राह्मणसे वह बोला—पिंगियानि ! आप मध्याह्नके समय कहाँसे आ रहे हैं ?"

"मैं श्रमण गौतमके पाससे चला आ रहा हूँ।"

"पिंगियानि ! तुम श्रमण गौतमकी प्रज्ञा-सामर्थ्यके बारेमें क्या समझते हो ? क्या तुम उसे पण्डित मानते हो।"

"कहाँ मैं और कहाँ श्रमण गौतम ! मैं कौन हूँ जो श्रमण गौतमकी प्रज्ञा-सामर्थ्य जानूँगा। श्रमण गौतमकी प्रज्ञा सामर्थ्यका जानने वाला भी वैसी ही प्रज्ञा-सामर्थ्य वाला होना चाहिये।"

"पिंगियानि ! तुम श्रमण गौतमकी बहुत उदार प्रशंसा कर रहे हो।"

"श्रमण गौतम पहले ही अत्यन्त प्रशंसित है। वह देवताओं तथा मनुष्योंसेमें श्रेष्ठ है।"

"पिंगियानि ! किस बातको लेकर तुम श्रमण गौतमके प्रति इतने श्रद्धावान् हो ?"

"हे पुरुष ! जैसे श्रेष्ठ-रससे तृप्त हुआ आदमी, दूसरे हीन रसोंकी इच्छा नहीं करता। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्भुत धर्मको लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म देशना सुननेको मिलती है, फिर उस उस विषयमें बहुतसे श्रमण-ब्राह्मणोंके मत सुननेकी इच्छा नहीं होती। हे पुरुष ! जैसे कोई भूखसे दुबलाया हुआ आदमी मधु-पिण्ड पा ले। वह उसे जहाँ जहाँसे भी चखे उसे वह स्वादिष्ट ही स्वादिष्ट लगे। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर, चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्भुत-धर्मको लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म-देशना सुननेको मिलती है, वह सन्तोष-प्राप्ति का कारण होती ही है, वह आनन्द-प्राप्तिका कारण होती ही है। हे पुरुष ! जैसे किसीको चन्दनकी लकड़ी मिले—चाहे हरे चन्दनकी हो और चाहे लाल चंदनकी हो—उसे वह चाहे जड़से घिसे, चाहे बीचसे घिसे और चाहे सिरेपरसे घिसे, उसमेंसे सन्तोष-प्रद सुगन्धि ही निकलती है। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर, चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्भुत-धर्मको लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म-देशना सुननेको मिलती है, वह सन्तोष-प्राप्तिका कारण होती ही है, वह आनन्द-प्राप्तिका कारण होती ही है। हे पुरुष ! जैसे कोई आदमी अत्यन्त रोगी हो, दुखी हो, पीड़ित हो। कोई कुशल चिकित्सक उसके रोगको मूलतः नष्ट कर दे। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर, चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्भुत धर्मको लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म-देशना सुननेको मिलती है, उससे शोक, रोना-पीटना, दुःख, दौर्मनस्य, पश्चाताप अन्तर्धान होते ही हैं। हे पुरुष ! जैसे कोई पुष्करिणी हो, अच्छे जल वाली, अनुकूल जल वाली, शीतल जल वाली, स्वच्छ सुतीर्थ वाली तथा रमणीय। तब कोई आदमी आये ग्रीष्मसे अभितप्त, ग्रीष्मसे घिरा हुआ, क्लान्त, थका हुआ, प्यासा, वह उस तालाबमें उतरकर, नहाकर, पानी पीकर सारे दर्द-क्लेश तथा जलनको शान्त कर ले। इसी प्रकार जहाँ जहाँसे भी—चाहे सूत्रको लेकर, चाहे गेय्यको लेकर, चाहे वेय्याकरणको लेकर और चाहे अद्भुत-धर्म को लेकर—उस श्रमण गौतमकी धर्म-देशना सुननेको मिलती है, उससे सभी शोक, रोना-पीटना, दुःख, दौर्मनस्य, पश्चात्ताप शान्त होते ही हैं।

ऐसा कहनेपर कारण पाली ब्राह्मण आसनसे उठा और उत्तरीयको अपने दाहिने कंधेपर रख, अपना दाहिनी घुटना पृथ्वीपर गड़ा, भगवानकी ओर हाथ जोड़, तीन

बार प्रीति-वाक्य कहा—उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धको नमस्कार है, उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धको नमस्कार है, उन भगवान् अर्हत् सम्यक-सम्मुद्धको नमस्कार है। हे पिंगियानि ! यह बहुत सुन्दर है। हे पिंगियानि ! यह बहुत सुन्दर है। पिंगियानि ! जैसे कोई औन्धेको सीधा कर दे, ढकेको उघाड़ दे, अथवा मूढ़को मार्ग बता दे, अथवा आँख वालोंके देखनेके लिये तेल-प्रदीपकी व्यवस्था करे ! हे पिंगियानि ! तुमने अनेक प्रकारसे धर्मका प्रकाशन किया। हे पिंगियानि। मैं उन भगवान् गौतमकी शरण जाता हूँ, धर्मकी तथा भिक्षु संघकी। पिंगियानि ! आजसे प्राण रहने तक आप मुझे शरणागत उपासक समझें।

एक समय भगवान् वैशालीके महावानमें कूटागार शालामें विहार करते थे। उस समय पाँच सौ लिच्छवी भगवान्का सत्संग करते थे। उनमेंसे कुछ लिच्छवी नीले थे, नील-वर्ण, नील-वस्त्र तथा नीले-अलंकारों वाले। उनमेंसे कुछ लिच्छवी पीले थे, पीत-वर्ण, पीत-वस्त्र तथा पीले अलंकारों वाले। उनमेंसे कुछ लिच्छवी लाल थे, रक्त-वर्ण, रक्त वस्त्र तथा लाल अलंकारों वाले। उनमेंसे कुछ लिच्छवी सफेद थे, श्वेत-वर्ण, श्वेत-वस्त्र तथा सफेद अलंकारों वाले। भगवान् वर्ण और यशमें उन लिच्छवियोंसे भी बढ़कर थे। तब पिंगियानी ब्राह्मण अपने उत्तरीयको अपने एक कंधेपर कर, भगवान्को अंजलि-बद्ध नमस्कार कर, भगवान्से बोला—"भगवान् ! मुझे (काव्य) सूझ रहा है, सुगत ! मुझे काव्य सूझ रहा है।"

भगवान्ने कहा—पिंगियानी ! तुझे (काव्य) सूझे। तब पिंगियानि ब्राह्मणने भगवान्के सम्मुख ही योग्य गाथाओंसे उनकी स्तुति की—

पदुमं यथा कोकनदं सुगन्धं
पातो सिया फुल्लमवीतगन्धं
अंगीरसं पस्स विरोचमानं
तपन्तमादिच्चमिवन्तलिक्खे ॥

[जिस प्रकार प्रातःकाल सुगन्धि-युक्त कोकनद कमल पुष्पित होता है, उसीके समान अंगीरस-गोत्र वाले तथागतको देखो—जो आकाशमें चमकते हुए सूर्यके समान प्रकाशमान है।]

तब उन लिच्छवियोंने पिंगियानि ब्राह्मणको पाँच सौ उत्तरीय (दुशाले) ओढ़ा दिये। पिंगियानी ब्राह्मणने वे पाँच सौ दुशाले भगवान्को समर्पित कर दिये। तब भगवान्ने उन लिच्छवियोंसे यह कहा—

लिच्छवियो ! दुनियामें पाँच रत्नोंका प्रादुर्भाव कठिन है। कौनसे पाँच रत्नोंका ? दुनियामें तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धका प्रादुर्भाव कठिन है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश करने वालेका प्रादुर्भाव कठिन है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयका उपदेश होने पर उसके समझने वालेका प्रादुर्भाव कठिन है। दुनियामें तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्मका उपदेश होनेपर उसे समझकर तदनुसार आचरण करने वालेका प्रादुर्भाव कठिन है। दुनियामें कृतज्ञ, कृत-उपकारको जानने वाले आदमीका प्रादुर्भाव कठिन है। लिच्छवियो ! दुनियामें इन पाँच रत्नोंका प्रादुर्भाव कठिन है।

भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी बोधि प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उन्होंने पाँच महान स्वप्न देखे। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय (देखे स्वप्नमें) यह महापृथ्वी उनकी महान् शैया बनी हुई थी, पर्वतराज हिमालय उनका तकिया था, पूर्वीय समुद्र बायें हाथसे ढंका था, पश्चिमीय समुद्र दाहिने हाथसे ढंका था, दक्षिण समुद्र दोनों पाँवोंसे ढंका था। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उन्होंने यह पहला महान स्वप्न देखा था।

फिर भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उनकी नाभीसे तिरिया नामक तिनकोंने उगकर आकाशको जा छुआ था। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्ति नहीं कि थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उन्होंने यह दूसरा महान स्वप्न देखा था।

फिर भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय कुछ काले सिर तथा श्वेत रंगके जीव पाँवसे ऊपरकी ओर बढ़ते-बढ़ते घुटनों तक ढककर खड़े हो गये थे। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय उहोंने यह तीसरा महान स्वप्न देखा था।

फिर भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय नाना वर्णके चार पक्षी चारों दिशाओंसे आये और उनके चरणोंमें गिरकर सभी सफेद वर्णके हो गये। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्ति नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय उन्होंने यह चौथा स्वप्न देखा था।

फिर भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोद्धि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय गूथ-पर्वतपर ऊपर-ऊपर चलते थे, चलते समय उससे सर्वथा अलिप्त रहते थे। भिक्षुओ, जिस समय तथागत सअर्हत सम्यक सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी बोधि-सत्व' ही थे, उस समय उन्होंने यह पाँचवाँ स्वप्न देखा था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोद्धि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय यह महा-पृथ्वी उनकी महान शैया बनी हुई थी, पर्वतराज हिमालय उनका तकिया था, पूर्वीय समुद्र बायें हाथसे ढंका था, पश्चिमीय समुद्र दायें हाथसे ढँका था, दक्षिण समुद्र दोनों पाँवसे ढँका था। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने अनुपम सम्यक् सम्बोधिको प्राप्त किया, उसी को प्रकट करने वाला यह पहला महान स्वप्न दिखाई दिया था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय उनकी नाभीसे तिरिया नामक तिनकोंने उगकर आकाशको जा छुआ था। भिक्षुओ, तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने आर्य अष्टांगिक मार्गका ज्ञान प्राप्त कर, उसे देव-मनुष्यों तक प्रकाशित किया। उसीको प्रकट करने वाला यह दूसरा महान स्वप्न दिखाई दिया था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने 'बुद्धत्व' लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व' ही थे, उस समय कुछ काले सिर तथा श्वेत रंगके जीव पाँवसे ऊपरकी ओर बढ़ते बढ़ते घुटनों तक ढककर खड़े हो गये थे। भिक्षुओ, बहुतसे श्वेत वस्त्र

धारी गृहस्थी प्राणान्त होने तक तथागतके शरणागत हुए। उसीको प्रकट करने वाला यह तीसरा महान स्वप्न दिखाई दिया था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने 'बुद्धत्व' लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधिसत्व ही थे, उस समय नाना वर्णके चार पक्षी चारों दिशाओंसे आये और उनके चरणोंमें गिरकर सभी सफेद वर्णके हो गये। भिक्षुओ, क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य तथा शूद्र—ये चारों वर्ण हैं। वे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनयके अनुसार घरसे बे-घर हो प्रव्रजित हो, अनुपम विमुक्ति को साक्षात् करते हैं। इसीको प्रकट करने वाला यह चौथा महान स्वप्न दिखाई दिया था।

भिक्षुओ, यह जो जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने 'बुद्धत्व' लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय गूथ-पर्वत पर ऊपर ऊपर चलते थे, चलते समय उससे सर्वथा अलिप्त रहते थे। भिक्षुओ, तथागत चीवर, भिक्षा, शयनासन, ग्लान-प्रत्यय, भैषज्य-परिष्कारोंको प्राप्त करने वाले हैं। तथागत इनके प्रति अनासक्त, अमूर्छित, रहते हैं। वे इन में बिना उलझे हुए, इनके दुष्परिणामको देखते हुए, मुक्त-प्रज्ञ हो इनका उपभोग करते हैं। इसीको प्रकट करने वाला यह महान् स्वप्न दिखाई दिया था। भिक्षुओ, जिस समय तथागत अर्हत सम्यक् सम्बुद्धने बुद्धत्व लाभ नहीं किया था, जिस समय अभी 'बोधि' प्राप्त नहीं की थी, जिस समय अभी 'बोधि-सत्व' ही थे, उस समय उन्होंने पाँच महान स्वप्न देखे।

भिक्षुओ, वर्षा होनेमें ये पाँच बाधायें आ उपस्थित होती हैं, जिन्हें ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोंकी आँख नहीं पहुँचती। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, ऊपर आकाशमें अग्नि (=तेज) धातु प्रकुपित हो जाती है, उससे उत्पन्न मेघ लौट जाते हैं। भिक्षुओ, वर्षा होनेमें यह पहली बाधा आ उपस्थित होती है, जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषिओं की आँख नहीं पहुँचती। फिर भिक्षुओ, ऊपर आकाशमें वायु धातु प्रकुपित हो जाती है। उससे उत्पन्न मेघ लौट जाते हैं। भिक्षुओ, वर्षा होनेमें यह दूसरी बाधा आ उपस्थित होती है, जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोंकी आँख नहीं पहुँचती।

फिर भिक्षुओ, असुरेन्द्र राहु हाथसे पानी लेकर महासमुद्रमें छोड़ देता है। भिक्षुओ, वर्षा होनेमें यह तीसरी बाधा आ उपस्थित होती है, जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहाँतक ज्योतिषियोंकी आँख नहीं पहुँचती।

फिर भिक्षुओ, वर्षा-बादल देव प्रमादी हो जाते हैं। भिक्षुओ, वर्षा होनेमें यह चौथी बाधा आ उपस्थित होती है, जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोंकी आँख नहीं पहुँचती।

फिर भिक्षुओ, आदमी अधार्मिक हो जाते हैं। भिक्षुओ, वर्षा होनेमें यह पाँचवीं बाधा आ उपस्थिति होती हैं, जिसे ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोंकी आँख नहीं पहुँचती।

भिक्षुओ, वर्षा होनेमें ये पाँच बाधायें आ उपस्थित होती हैं, जिन्हें ज्योतिषी नहीं जान सकते, जहाँ तक ज्योतिषियोंकी आँख नहीं पहुँचती।

भिक्षुओ, जिस वाणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह वाणी सुभाषित होती है, दुर्भाषित नहीं, विज्ञोंके लिये निर्दोष। कौन-सी पाँच बातें? समय देखकर बोली गई वाणी होती है, सत्य वाणी होती है, कोमल वाणी होती है, हितकर-वाणी होती है, तथा मैत्री-चित्तसे बोली गई वाणी होती है। भिक्षुओ, जिस वाणीमें ये पाँच बातें होती हैं, वह वाणी सुभाषित होती है, दुर्भाषित नहीं, विज्ञोंके लिये निर्दोष।

भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजित किसी भी गृहस्थके यहाँ जाते हैं, तो गृहस्थ पाँच तरहसे बहुत पुण्यार्जन करते हैं। कौन-सी पाँच तरहसे? भिक्षुओ जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोंके यहाँ जानेपर, गृहस्थ-जन उन्हें देखकर मनमें श्रद्धा उत्पन्न करते हैं, उस समय भिक्षुओ! उस कुलके लोग स्वर्गगामी मार्गपर आरूढ़ होते हैं। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोंके यहाँ जानेपर, गृहस्थ-जन स्वागत करते हैं, अभिवादन करते हैं तथा आसन देते हैं, उस समय भिक्षुओ, उस कुलके लोग ऊँचे कुलमें जन्म लेने वाली प्रतिपदाका अनुगमन करते हैं। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोंके यहाँ जानेपर गृहस्थ-जन मात्सर्य-मलको त्याग देते हैं, उस समय भिक्षुओ, उस कुलके लोग महेशाक्य प्रतिपदापर आरुढ़ हो जाते हैं। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोंके यहाँ जानेपर लोग यथा-शक्ति यथा-बल दान देते हैं, उस समय भिक्षुओ, उस कुलके लोग महा-भोग प्राप्त कराने वाली प्रतिपदाका अनुकरण हैं। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजितोंके गृहस्थोंके यहाँ जानेपर मनुष्य प्रश्न पूछते हैं, सवाल करते हैं, धर्म सुनते हैं, उस समय भिक्षुओ, उस कुलके लोग प्रज्ञा प्राप्त कराने वाली प्रतिपदाका अनुगमन करते हैं। भिक्षुओ, जिस समय शीलवान् प्रव्रजित किसी भी गृहस्थके यहाँ जाते हैं, तो गृहस्थ पाँच तरहसे बहुत पुण्यार्जन करते हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच विमोक्ष-धातु हैं। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षु काम-भोगोंका विचार करता है, उसका मन काम-भोगोंमें नहीं उलझता है, काम-भोगोंमें प्रसन्न नहीं होता है, काम-भोगोंपर स्थिर नहीं होता है तथा काम-भोगोंपर नहीं छूटता है। किन्तु जब वह निष्क्रमणका विचार करता है, तो उसका मन निष्क्रमण में उलझता है, निष्क्रमणमें प्रसन्न होता है, निष्क्रमण पर स्थिर होता है तथा निष्क्रमण पर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, काम-भोगोंसे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है। काम-भोगोंके कारण जो आस्रव, जो विघात, जो परिदाह उत्पन्न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नहीं करता। भिक्षुओ, इसे ही काम-भोगोंसे विमुक्ति कहते हैं।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु क्रोध (= व्यापाद) का विचार करता है, उसका मन व्यापाद में नहीं उलझता है, व्यापादमें प्रसन्न नहीं होता है, व्यापाद पर स्थिर नहीं होता है तथा व्यापाद पर नहीं छूटता है। किन्तु जब वह अक्रोध (= अव्यापद) का विचार करता है, तो उसका मन अव्यापादमें उलझता है, अव्यापादमें प्रसन्न होता है, अव्यापाद पर स्थिर होता है तथा अव्यापाद पर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, व्यापादसे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है। व्यापादके कारण जो आश्रव, जो विघात, जो परिदाह उत्पन्न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नहीं करता। भिक्षुओ, इसे ही व्यापादसे मुक्ति कहते हैं।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु विहिंसाका विचार करता है, उसका मन विहिंसामें नहीं उलझता है, विहिंसामें प्रसन्न नहीं होता है, विहिंसापर स्थिर नहीं होता है तथा विहिंसापर नहीं छूटता है। किन्तु जब वह अविहिंसा (= मैत्री) का विचार करता है, तो उसका मन अविहिंसामें उलझता है, अविहिंसामें प्रसन्न होता है, अविहिंसापर स्थिर होता है तथा अविहिंसापर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, विहिंसासे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है। विहिंसाके कारण जो आस्रव, जो विघात, जो परिदाह उत्पन्न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नहीं करता। भिक्षुओ, इसे ही विहिंसासे मुक्ति कहते हैं।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु रूपका विचार करता है, उसका मन रूपमें नहीं उलझता है, रूपमें प्रसन्न नहीं होता है, रूपपर स्थिर नहीं होता है तथा रूपपर नहीं

छूटता है। किन्तु जब वह अरूपका विचार करता है, तो उसका मन अरूपमें उलझता है, अरूपमें प्रसन्न होता है, अरूपपर स्थिर होता है, तथा अरूपपर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, रूपसे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है, रूपके कारण जो आस्रव, जो विघात, जो परिदाह उत्पन्न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नहीं करता। भिक्षुओ, इसे ही रूपसे विमुक्ति कहते हैं।

फिर भिक्षुओ, एक भिक्षु सत्काय (= दृष्टि) का विचार करता है, उसका मन सत्कायमें नहीं उलझता है, सत्कायमें प्रसन्न नहीं होता है, सत्कायपर स्थिर नहीं होता है, तथा सत्काय पर नहीं छूटता है। किन्तु जब वह असत्कायका विचार करता है, तो उसका मन असत्कायमें उलझता है, असत्कायमें प्रसन्न होता है, असत्कायपर स्थिर होता है, तथा असत्काय पर छूटता है। उस भिक्षुका वह चित्त सुगति-प्राप्त होता है, सुभावित होता है, सुप्रतिष्ठित होता है, सुविमुक्त होता है, सत्कायसे सम्यक् रूपसे विमुक्त होता है। सत्कायके कारण जो आस्रव, जो विघात, जो परदाह उत्पन्न होते हैं, वह उनसे मुक्त होता है, वह उस वेदनाका अनुभव नहीं करता। भिक्षुओ, इसे ही सत्काय (= दृष्टि) से विमुक्ति कहते हैं। जो ऐसा विमुक्त-पुरुष होता है, काम-भोग सम्बन्धी मजा भी उसका अनुशय (चित्तका बन्धन) नहीं बनता, व्यापाद सम्बन्धी मजा भी उसका अनुशय नहीं बनता, विहिंसा सम्बन्धी मजा भी उसका अनुशय नहीं बनता, रूप सम्बन्धी मजा भी उसका अनुशय नहीं बनता, सत्काय (= दृष्टि) सम्बन्धी मजा भी उसका अनुशय नहीं बनता। जो कामभोग सम्बन्धी अनुशयसे मुक्त होता है, जो व्यापाद सम्बन्धी अनुशयसे मुक्त होता है, जो विहिंसा सम्बन्धी अनुशयसे मुक्त होता है, जो रूप सम्बन्धी अनुशयसे मुक्त होता है तथा जो सत्काय (= दृष्टि) सम्बन्धी अनुशयसे मुक्त होता है, भिक्षुओ, उसीके बारेमें कहा जा सकता है कि वह अनुशय-रहित है, कि उसने तृष्णाके बन्धनको काट दिया है, संयोजनोंको हटा दिया है, कि उसने अहंकारका सम्यक् प्रकारसे शमन कर दुःखका अन्त कर डाला है। भिक्षुओ, ये पाँच विमोक्ष-धातु हैं।

(६) **किम्बिल वर्ग**

एक समय भगवान किम्बिल प्रदेशके वेलुवनमें विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् किम्बिल जहाँ भगवान् थे, वहाँ पहुँचे। पास जाकर भगवान्को अभिवादन कर एक ओर मैठे। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान् किम्बिलने भगवान्से यह कहा—भन्ते! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि तथागतके परिनिर्वाण

प्राप्त कर लेनेपर सद्धर्म चिर-स्थायी नहीं होता ? हे किम्बिल ! तथागतके परिनिर्वाण प्राप्त कर लेनेपर भिक्षु भिक्षुणियाँ, उपासक उपासिकायें शास्ताके प्रति गौरव-रहित हो जाती हैं, आदर-रहित हो जाती हैं। धर्मके प्रति गौरव-रहित हो जाती हैं, आदर-रहित हो जाती हैं। संघके प्रति गौरव रहित हो जाती हैं, आदर-रहित हो जाती हैं। शिक्षाओंके प्रति गौरव-रहित हो जाती हैं, आदर-रहित हो जाती हैं। परस्पर गौरव-रहित हो जाती हैं, आदर-रहित हो जाती हैं। किम्बिल ! यही इसका कारण है, यही इसका हेतु है कि तथागतके परिनिर्वाण प्राप्त कर लेनेपर सद्धर्म चिरस्थायी नहीं होता।

भन्ते ! इसका क्या कारण है, क्या हेतु है कि तथागतके परिनिर्वाण प्राप्त कर लेनेपर (भी) सद्धर्म चिरस्थायी रहता है। हे किम्बिल ! तथागतके परि-निर्वाण प्राप्त कर लेनेपर भिक्षु, भिक्षुणियाँ, उपासक, उपासिकायें शास्ताके प्रति गौरव-सहित रहती हैं, आदर-सहित रहती हैं। धर्मके प्रति गौरव-सहित रहती हैं, आदर-सहित रहती हैं। संघके प्रति गौरव-सहित रहती हैं, आदर-सहित रहती हैं। शिक्षाओंके प्रति गौरव-सहित रहती हैं, आदर-सहित रहती हैं। परस्पर गौरव-सहित रहती हैं, आदर-सहित रहती हैं। किम्बिल ! यही इसका कारण है, यही इसका हेतु है कि तथागतके परिनिर्वाण प्राप्त कर लेनेपर (भी) सद्धर्म चिरस्थायी रहता है।

भिक्षुओ, धर्म-श्रवणके पाँच शुभ परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच ? पहले नहीं सुनी हुई बात सुननेको मिलती है। सुनी हुई बात स्पष्ट हो जाती है। सन्देह मिट जाता है। मिथ्या-दृष्टि नष्ट हो जाती है। चित्त प्रसन्न होता है। भिक्षुओ, धर्म-श्रवणके ये पाँच शुभ-परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, राजाके जिस श्रेष्ठ घोड़ेमें ये पाँच बातें होती हैं, वह राजाके योग्य होता है, राजाके भोगने योग्य होता है, राजाका अंग ही गिना जाता है। कौनसी पाँच बातें ? ऋजु होता है, तेज चल सकने वाला होता है, मृदु-भाव युक्त होता है, क्षमाशील होता है, सहनशील होता है। भिक्षुओ, राजाके जिस श्रेष्ठ घोड़ेमें ये पाँच बातें होती हैं, वह राजाके योग्य होता है, राजाके भोगने योग्य होता है, राजाका अंग ही गिना जाता है। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह आदर करने योग्य होता है, सत्कार करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोड़नेके योग्य होता है तथा लोगोंके लिये अनुपम पुण्य-क्षेत्र होता है। कौन-सी पाँच बातें ? ऋजु होता है, गतिमान होता है, मृदु होता है, क्षमा-शील होता है तथा

सहन-शील होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह आदर करने योग्य होता है, सत्कार करने योग्य होता है, दक्षिणाके योग्य होता है, हाथ जोड़नेके योग्य होता है तथा लोगोंके लिये, अनुपम पुण्य क्षेत्र होता है।

भिक्षुओ, ये पाँच बल हैं। कौनसे पाँच? श्रद्धाबल, न्ही (= लज्जा बल,) ओतप्प (= पाप-भीरुता)-बल, वीर्य-बल तथा प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, ये पाँच बल हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच चैतसिक बाधायें है। कौन-सी पाँच? भिक्षुओ, एक भिक्षु शास्ताके प्रति सन्देहयुक्त होता है, विचिकित्सा-सहित होता है, उधर झुका हुआ नहीं होता है तथा श्रद्धावान नहीं होता है। भिक्षुओ, जो कोई शास्ताके प्रति सन्देहयुक्त होता है, विचिकित्सा-सहित होता है, उधर झुका हुआ नहीं होता है तथा श्रद्धावान् नहीं होता है उसका चित्त प्रयत्न करनेमें युक्त नहीं होता है, योगाभ्यासमें नहीं लगता है, सतत साधनामें अनुरक्त नहीं होता है। जिसका चित्त प्रयत्न करनेमें युक्त नहीं होता है, योगाभ्यासमें नहीं लगता है, सतत् साधनामें अनुरक्त नहीं होता है, यह पहली चैतसिक-बाधा है। फिर भिक्षुओ, धर्मके प्रति सन्देहयुक्त होता है.... संघके प्रति सन्देहयुक्त होता है...... शिक्षाओंके प्रति सन्देहयुक्त होता है.... अपने सब्रह्मचारियों (= साथियों) के प्रति कुपित होता है, असन्तुष्ट होता है, आहत-चित्त होता है, बाधायुक्त होता है। उसका चित्त प्रयत्न करनेमें युक्त नहीं होता है, योगाभ्यास में नहीं लगता है, सतत् साधनामें अनुरक्त नहीं होता है। यह पाँचवीं चैतसिक-बाधा है। भिक्षुओ, ये पाँच चैतिसक-बाधायें हैं।

भिक्षुओ, ये पाँच चैतसिक-बन्धन हैं। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, भिक्षु काम-भोगोंके प्रति राग-युक्त रहता है, छन्द-युक्त रहता है, प्रेम-युक्त रहता है, पिपासा-युक्त रहता है, परिदाह (= जलन) युक्त रहता है तथा तृष्णा-युक्त रहता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु काम-भोगोंके प्रति राग-युक्त रहता है, छन्द-युक्त रहता है, प्रेम-युक्त रहता है, पिपासा-युक्त रहता है, परिदाह (= जलन) युक्त रहता है तथा तृष्णा युक्त रहता है, उसका चित्त प्रयत्न करनेमें युक्त नहीं होता है, योगाभ्यासमें नहीं लगता है, सतत् साधनामें अनुरक्त नहीं होता है। यह पहला चैतसिक-बन्धन है। फिर भिक्षुओ, भिक्षु काया (= शरीर) के प्रति राग-युक्त रहता है.......रूपके प्रति रागयुक्त होता है......यथेच्छ पेट भरकर खाकर शैयाके सुख, स्पर्श-सुख, तन्द्रा-सुखमें लीन रहता है........ किसी देव-योनिमें जन्म ग्रहण करनेकी इच्छासे ब्रह्मचर्य वास करता है। वह सोचता है कि इस शील, इस व्रत, इस तप या इस ब्रह्मचर्य वाससे मैं

या तो देवता अथवा देवतानुचर होकर जन्म ग्रहण करूँगा। उसका चित्त प्रयत्न करनेमें युक्त नहीं होता है, योगाभ्यासमें नहीं लगता है, सतत साधनामें अनुरक्त नहीं होता हैं। भिक्षुओ, ये पाँच चित्तके बन्धन हैं।

भिक्षुओ, यवागु खानेके ये पाँच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? भूख मिटती है, प्यास मिटती है, वायु यथोचित विधिसे गमन करता है, वस्तीकी शुद्धि होती है, अपच-शेष पच जाता है। भिक्षुओ, यवागु (=पतली खिचड़ी) खानेके ये पाँच शुभ-परिणाम हैं।

भिक्षुओ, दातुन न करनेके ये पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? आँखको हानि पहुँचती है, मुँहसे दुर्गन्ध आती है, रस-हरण करने वाली (नाड़ियाँ) शुद्ध नहीं होती हैं, पित्त और श्लेषम खाये भोजनको ढक लेते हैं तथा उसे खाना अच्छा नहीं लगता है। भिक्षुओ, दातुन न करनेके ये पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, दातुन करनेके ये पाँच शुभ-परिणाम हैं। कौनसे पाँच? आँखको हानि नहीं पहुँचती, मुँहसे दुर्गन्ध नहीं आती, रस-हरण करने वाली (नाड़ियाँ) शुद्ध होती हैं, पित्त और श्लेषम खाये भोजनको ढकता नहीं है तथा उसे खाया भोजन अच्छा लगता है। भिक्षुओ, दातुन करनेके ये पाँच शुभ-परिणाम हैं।

भिक्षुओ, खींचकर, गानेके स्वरमें धर्म-पाठ करनेके ये पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? स्वयं अपने स्वरमें अनुरक्त हो जाता है, दूसरे भी उस स्वरमें अनुरक्त हो जाते हैं, गृहस्थ लोग भी यह सोच क्षुब्ध होते हैं कि जैसे हम गाते हैं, वैसे ही ये शाक्य-पुत्रीय श्रमण गाते हैं, आलाप (=स्वर निकुत्ति) की इच्छा होनेसे समाधिमें व्याघात पहुँचता है। भिक्षुओ, खींच कर, गानेके स्वरमें पाठ करनेके, ये पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, जो कोई मूढ़ स्मृतिमान होकर, बे-खबर होकर सोता है, उसके पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? दुखी रहकर सोता है, दुखी रहकर जागता है, बुरे स्वप्न दिखाई देते हैं, देवता रक्षा नहीं करते हैं तथा स्वप्न-दोष होता है। भिक्षुओ, जो कोई मूढ़ स्मृतिमान् होकर, बेखबर होकर सोता है, उसके पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, जो कोई उपस्थित-स्मृति तथा होशके साथ सोता है, उसके पाँच शुभ-परिणाम हैं। कौनसे पाँच? सुखपूर्वक सोता है, सुख पूर्वक जागता है, बुरे स्वप्न नहीं देखता है, देवता रक्षा करते हैं तथा स्वप्न-दोष नहीं होता है। भिक्षुओ, जो कोई उपस्थित-स्मृति तथा होशके साथ सोता है, उसके पाँच शुभ-परिणाम हैं।

भिक्षुओ, जो भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंको गाली देने वाला, डराने वाला तथा बुरा-भला कहने वाला होता है, उसके विषयमें पाँच आशंकायें करनी चाहिये। कौन-सी पाँच ? वह लोकोत्तर प थसे भ्रष्ट हो जाता है, अन्य किसी दोषका दोषी हो जाता है, भयानक बीमारीका शिकार हो जाता है, होश-हवास रहित हो मृत्युको प्राप्त होता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु अपने सब्रह्मचारियोंको गाली देनेवाला, डरने वाला तथा बुरा-भला कहने वाला होता है, उसके विषयमें पाँच आशंकायें करनी चाहिये।

भिक्षुओ, जो भिक्षु झगड़ालू होता है, कलह करने वाला होता है, विवाद करने वाला होता है, बेकार बातचीत करने वाला होता है, संघमें बखेड़ा खड़ा करने वाला होता है, उसके विषयमें पाँच आशंकायें करनी चाहिये। कौन-सी पाँच ? उसे अप्राप्तकी प्राप्ति नहीं होती; प्राप्तकी हानि हो जाती हैं, बदनामी होती है, होश-हवास गंवाकर मृत्युको प्राप्त होता है, शरीरके छूटनपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जो भिक्षु झगड़ालू होता है, कलह करने वाला होता है, विवाद करने वाला होता है, बेकार बातचीत करन वाला होता है, संघमें बखेड़ा खड़ा करने वाला होता है। उसके विषयमें पाँच आशंकायें करनी चाहिये।

भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इन पाँच दुष्परिणामों-का भागी होता है। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह प्रमादी होनेके कारण अपनी बहुत-सी भौतिक हानि कर बैठता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस पहले दुष्परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, उसकी बदनामी होती है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस दूसरे दुष्परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुरा-चारी होता है, वह जिस जिस परिषद्में जाता है चाहे क्षत्रिय-परिषद हो, चाहे ब्राह्मण-परिषद हो, चाहे गृहपति (=वैश्य) परिषद हो, जहाँ कहीं भी जाता है आत्म-विश्वासके साथ ही जाता है, सिर नीचा किये नहीं जाता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस तीसरे दुष्परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह बेखबरीकी हालतमें ही मृत्युको प्राप्त होता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस चौथे दुष्परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है,

जो दुराचारी होता है, वह शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर, दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इस पाँचवें दुष्परिणामका भागी होता है। भिक्षुओ, जो दुश्शील होता है, जो दुराचारी होता है, वह इन पाँच दुष्परिणामोंका भागी होता है।

भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इन पाँच शुभ-परिणामोंका भागी होता है। कौनसे पाँच? भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह अप्रमादी होनेके कारण बहुत-सी भोग-सामग्री प्राप्त कर लेता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इस पहले शुभ-परिणाम का भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह यशस्वी होता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इस दूसरे शुभ-परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह जिस जिस परिषदमें जाता है, चाहे क्षत्रिय परिषद हो, चाहे ब्राह्मण-परिषद हो, चाहे गृहपति-परिषद हो, जहाँ भी कहीं जाता है, आत्म विश्वासके साथ जाता है, सिर नीचा किये नहीं जाता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इस तीसरे शुभ-परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह बेखबरीकी हालतमें मृत्युको प्राप्त नहीं होता। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इस चौथे शुभ-परिणामका भागी होता है। फिर भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमें उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जो सुशील होता है, जो सदाचारी होता है, वह इन पाँच शुभ परिणामोंका भागी होता है।

भिक्षुओ, अत्यधिक बोलनेके ये पाँच दुष्परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? झूठ बोलना होता है, चुगली खानी होती है, कठोर बोलना होता है, बेकार बोलना होता है, शरीरके छूटनेपर मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होना होता है, नरकमें जन्म होता है।

भिक्षुओ, मितभाषी होनेके ये पाँच शुभ-परिणाम होते हैं। कौन-से पाँच? झूठ नहीं बोलता है, चुगली नहीं खाता है, कठोर नहीं बोलता है, बेकार नहीं बोलता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, मितभाषी होनेके ये पाँच सुशुभ-परिणाम हैं।

भिक्षुओ, असहनशीलताके ये पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? बहुत-जनोंका अप्रिय होता है, अच्छा न लगने वाला, वैर-बहुल होता है, दोष-बहुल होता है, मूढ़-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त होता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमें जन्म होता है।

भिक्षुओ, सहनशीलताके ये पाँच शुभ-परिणाम हैं। कौनसे पाँच? बहुत जनोंका प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला, वैर-बहुल नहीं होता है, दोष-बहुल नहीं होता है, मूढ़ चित्त होकर मृत्युको प्राप्त नहीं होता है, शरीरके छूटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है।

भिक्षुओ, असहन शीलताके ये पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? बहुत जनोंका अप्रिय होता है; अच्छा न लगने वाला, रौद्र होता है; पश्चात्ताप करने वाला होता है; मूढ़-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त होता है; शरीरके छूटनेपर मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमें जन्म होता है।

भिक्षुओ, सहन-शीलताके ये पाँच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? बहुत जनोंका प्रिय होता है; अच्छा लगने वाला, रौद्र नहीं होता है; पश्चात्ताप करने वाला नहीं होता है; मूढ़-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त नहीं होता है; शरीरके छूटनेपर, मृत्युके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है।

भिक्षुओ, अप्रसन्न-चित्त रहनेके पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? आत्म-निन्दाका भाजन होता हैं; जानकार विज्ञजन निन्दा करते हैं, बदनामी होती है, मूढ़-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त होता है; शरीरके छूटनेपर, मृत्युके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमें जन्म होता है।

भिक्षुओ, प्रसन्न-चित्त रहनेके पाँच शुभ-परिणाम हैं। कौनसे पाँच? आत्म-निन्दाका भाजन नहीं होता है, जानकार विज्ञ जन प्रशंसा करते हैं, यशस्वी होता है, मूढ़-चित्त होकर मृत्युको प्राप्त नहीं होता है, शरीरके छूटनेपर, मृत्युके होनेपर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है।

भिक्षुओ, अप्रसन्न-चित्त रहनेके पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? अप्रसन्न प्रसन्न नहीं होते हैं, कुछ प्रसन्न-चित्त भी अन्यथा हो जाते हैं, शास्ताकी आज्ञाका उल्लंघन होता है, बादमें आने वाली पीढ़ी उसका अनुकरण करती है, उसका चित्त प्रसन्न नहीं रहता। भिक्षुओ, अप्रसन्न-चित्त रहनेके ये पाँच दुष्परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, प्रसन्न-चित्त रहनेके ये पाँच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? अप्रसन्न प्रसन्न हो जाते हैं, प्रसन्न-चित्त और भी अधिक प्रसन्न-चित्त हो

जाते हैं, शास्ताकी आज्ञाका पालन होता है, बादमें आनेवाली पीढ़ी उसका अनुकरण करती है, उसका चित्त प्रसन्न रहता है। भिक्षुओ, प्रसन्न चित्त रहनेके ये पाँच शुभ-परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, अग्नि (–पूजा) के पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? आँखके लिये अच्छी नहीं होती, दुर्वर्ण बनाने वाली होती है, दुर्बल बनाने वाली होती है, लोगोंसे सम्बन्ध बढ़ाने वाली होती है, तथा राज-कथा, चोर-कथा, आदि व्यर्थकी बातचीत की ओर ले जानी वाली होती है। भिक्षुओ, अग्नि (–पूजा) के पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, मधुरा (=मथुरा) नगरीमें ये पाँच दोष हैं। कौनसे पाँच? भूमि ऊबड़-खाबड़ है, धूलि बहुत है, भयानक कुत्ते हैं, कष्टदायक यक्ष हैं, तथा भिक्षा सुलभ नहीं है। भिक्षुओ, मधुरा (=मथुरा) नगरी में ये पाँच दोष हैं।

(८) दीर्घ चारिका वर्ग

भिक्षुओ, दीर्घ चारिकाके, अव्यवस्थित चारिकाके, अयोग्य विधिसे विचरनेके पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? अश्रुत (–धर्म) सुनना नहीं मिलता, सुना हुआ (–धर्म) स्पष्ट नहीं होता, अधकचरे ज्ञानके कारण अपण्डित होता है, भयानक रोगका आतंक बना रहता है तथा बिना मित्रोंके रहता है। भिक्षुओ, दीर्घ चारिकाके, अव्यवस्थित चारिकाके, अयोग्य विधिसे विचरनेके पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, व्यवस्थित चारिकाके पाँच शुभ परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? अश्रुत (–धर्म) सुनना मिलता है, सुना हुआ (–धर्म) स्पष्ट होता है, अधकचरा ज्ञान होनेपर भी पण्डित होता है, भयानक रोगका भय नहीं बना रहता तथा मित्रों वाला होता है। भिक्षुओ, व्यवस्थित चारिकाके पाँच शुभ-परिणाम हैं।

भिक्षुओ, दीर्घ चारिकाके, अव्यस्थित चारिकाके, अयोग्य विधिसे विचरनेके पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? अप्राप्त प्राप्त नहीं होता, प्राप्तकी हानि होती है, कुछ (–प्राप्त) ज्ञान होनेसे अपण्डित होता है, भयानक रोगका आतंक बना रहता है तथा बिना मित्रोंके रहता है। भिक्षुओ, दीर्घ चारिकाके, अव्यवस्थित चारिकाके, अयोग्य-विधिसे विचरनेके पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, व्यवस्थित चारिकाके पाँच शुभ-परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? अप्राप्त प्राप्त होता है, प्राप्तकी हानि नहीं होती, कुछ प्राप्त ज्ञात होनेपर भी पण्डित होता है, भयानक रोगका भय बना रहता है तथा मित्रों वाला होता है। भिक्षुओ, व्यवस्थित चारिकाके पाँच शुभ-परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, (—एक जगह) चिरकाल तक रहनेके पाँच दुष्परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? बहुत-सा सामान इकट्ठा हो जाता है, बहुत-सी दवाइयाँ इकट्ठी हो जाती हैं, बहुतसे काम-काजमें उलझ जाता है, गृहस्थ और प्रव्रजितोंके साथ अयोग्य संसर्ग बढ़ जाता है, उस आवासको छोड़ते जाते समय आसक्ति बनी रहती है। भिक्षुओ, (एक जगह) चिर काल तक रहनेके पाँच दुष्परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, (—एक जगह) चिरकाल तक न रहनेके पाँच शुभ परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? बहुत-सा सामान इकठ्ठा नहीं होता, बहुत-सी दवाइयाँ इकट्ठी नहीं होतीं, बहुतसे काम-काजमें नहीं उलझता, गृहस्थ और प्रव्रजितोंके साथ अयोग्य संसर्ग नहीं बढ़ता, उस आवासको अनासक्त भावसे छोड़ जा सकता है। भिक्षुओ, (—एक जगह) चिर काल तक न रहनेके पाँच शुभ परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, (—एक जगह) चिरकाल तक रहनेके पाँच दुष्परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? आवास (= निवास स्थान) के प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है, कुल (= वंश) के प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है, लाभके प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है, वर्णके प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है, धर्मके प्रति मात्सर्य पैदा हो जाता है। भिक्षुओ, एक जगह चिरकाल तक रहनेके पाँच दुष्परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, (एक जगह—) चिरकाल तक न रहनेके पाँच शुभ परिणाम होते होते हैं। कौनसे पाँच? आवास (= निवास) के प्रति मात्सर्य नहीं पैदा होता है, कुल (वंश) के प्रति मात्सर्य नहीं पैदा होता है, लाभ के प्रति मात्सर्य नहीं पैदा होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य नहीं पैदा होता है, तथा धर्मके प्रति मात्सर्य नहीं पैदा होता है। भिक्षुओ, (एक जगह) चिरकाल तक न रहनेके पाँच शुभ-परिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, गृहस्थोंके साथ अति मेल-जोलके पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? बिना निमन्त्रणके आने जाने वाला होता है, एकान्तमें उठने बैठने वाला होता है, छिपे स्थानमें उठने बैठने वाला होता है, स्त्रियोंको चार-पाँच वाक्योंसे अधिक धर्म-देशना करने वाला होता है, काम-भोग सम्बन्धी संकल्प अधिकतासे उत्पन्न होने लग जाते हैं। भिक्षुओ, गृहस्थोंके साथ अति मेल जोलके पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, गृहस्थोंके साथ अति-मेल-जोल वाला भिक्षु यदि अनुचित समय उन्हींके संसर्गमें रहता है, तो उसके पाँच दुष्परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? स्त्रियोंका निरन्तर दर्शन, दर्शन होनेपर संसर्ग, संसर्ग होनेपर विश्वास, विश्वास होनेपर अवनति। अवनत चित्तसे ऐसी आशंका करनी चाहिये—बेमनसे ब्रह्मचर्य-जीवन व्यतीत करेगा, किसी न किसी काम-भोग-सम्बन्धी दोषका दोषी होगा अथवा शिक्षा (= भिक्षु जीवन)

को त्यागकर हीन-मार्गी (= गृहस्थ) हो जायेगा। भिक्षुओ, गृहस्थोंके साथ अति मेल-जोल वाला भिक्षु यदि अनुचित समयतक उन्हींके संसर्गमें रहता है, तो उसके पाँच दुष्पारिणाम होते हैं।

भिक्षुओ, भोग्य पदार्थों (= सम्पत्ति) के पाँच दोष हैं। कौनसे पाँच? सम्पत्तिको आगसे खतरा रहता है, सम्पत्तिको जलसे खतरा रहता है, सम्पत्तिको राज्यसे खतरा रहता है, सम्पत्तिको चोरोंसे खतरा रहता है तथा सम्पत्तिको अप्रिय उत्तराधिकारियोंसे खतरा रहता है।

भिक्षुओ, भोग्य पदार्थों (= सम्पत्ति) के पाँच गुण हैं। कौनसे पाँच? सम्पत्ति होनेसे आदमी अपने आपको सुख पूर्वक, आनन्द पूर्वक रख सकता है, भली प्रकार सुख भोग सकता है। माता पिताको सुख पूर्वक, आनन्द पूर्वक रख सकता है, भली प्रकार सुख पहुँचा सकता है। पुत्र, स्त्री दास, तथा मजदूर आदिको सुखपूर्वक आनन्द पूर्वक रख सकता है, उन्हें भली प्रकार सुख पहुँचा सकता है, यार-दोस्तोंको, सुख पूर्वक, आनन्द पूर्वक रख सकता है, उन्हें भली प्रकार सुख पहुँचा सकता है। श्रमण-ब्राह्मणोंको ऊर्ध्व-गामी दक्षिणा दे सकता है, जो स्वर्गीय होती है, जो सुख-दायक होती है, जो स्वर्ग तक पहुँचा देने वाली होती है। भिक्षुओ, भोग्य पदार्थों (= सम्पत्ति) के ये पाँच गुण हैं।

भिक्षुओ, जिन परिवारों (= कुलों) में समयपर भोजन नहीं होता, वहाँ पाँच दोष होते हैं। कौनसे पाँच? जो अतिथि होते हैं, जो पाहुने होते हैं, उन्हें कोई समयपर नहीं पूछता; जो बलि-ग्राहक देवता होते हैं, उन्हें भी कोई समयपर नहीं पूछता, जो एकाहारी, रातको भोजन न करने वाले, विकाल भोजनसे विरत रहने वाले श्रमण-ब्राह्मण होते हैं, उन्हें भी कोई समय पर नहीं पूछता; दास-कर्मकर लोग बेमनसे काम करते हैं, असमयपर किया गया उतना ही भोजन शरीरमें ओज पहुँचाने वाला नहीं होता। भिक्षुओ, जिन, परिवारों (= कुलों) में समयपर भोजन नहीं होता, वह वहाँ पाँच दोष होते हैं।

भिक्षुओ, जिन परिवारों (= कुलों) में समयपर भोजन होता है, वहाँ पाँच गुण होते हैं। कौनसे पाँच? जो अतिथि होते हैं, जो पाहुने होते हैं, उन्हें समयपर पूछा जाता है। जो बलि-ग्राहक देवता होते हैं, उन्हें समयपर पूछा जाता है। जो एकाहारी, रातको भोजनन न करने वाले, विकाल-भोजनसे विरत रहने वाले श्रमण-ब्राह्मण होते हैं, उन्हें समयपर पूछा जाता है। दास-कर्मकर लोग मनसे काम करते हैं। समयपर किया गया उतना ही भोजन शरीरमें ओज पहुँचाने वाला होता

हैं। भिक्षुओ, जिन परिवारों (=कुलों) में समयपर भोजन होता है, वहाँ पाँच गुण होते हैं।

भिक्षुओ, कालें साँपमें पाँच दोष होते हैं। कौनसे पाँच? अस्वच्छ होता हैं, दुर्गन्ध-पूर्ण होता है, बहुत सोने वाला होता हैं, भयका कारण होता हैं तथा मित्र-द्रोही होता है। भिक्षुओ, काले साँपमें ये पाँच दोष होते हैं। इस प्रकार भिक्षुओ, स्त्रियोंमें भी ये पाँच दुर्गुण होते हैं। कौनसे पाँच? अस्वच्छ होती हैं, दुर्गुन्ध पूर्ण होती हैं, बहुत सोने वाली होती हैं, भयका कारण होती हैं, तथा मित्र-द्रोही होतीहैं। भिक्षुओ, स्त्रियोंमें ये पाँच दुर्गुण होते हैं।

भिक्षुओ, काले साँपमें ये पाँच दुर्गुण होते हैं। कौनसे पाँच? क्रोधी-स्वभावका होता हैं, द्वेषी होता है, घोर-विषैला होता है, दुष्ट जिह्वा वाला होता है तथा मित्र-द्रोही होती है। भिक्षुओ, काले साँपमें ये पाँच दुर्गुण होते हैं। भिक्षुओ, इसी प्रकार स्त्रियोंमें भी ये पाँच दुर्गुण होते हैं। कौनसे पाँच? क्रोधी स्वभावकी होती हैं, द्वेषपूर्ण होती हैं, घोर विषैली होती हैं, दुष्टजिव्हा होती हैं, तथा मित्र-द्रोहिणी होती हैं। भिक्षुओ स्त्रियोंका घोर विषैलापन इस बातमें होता है कि वह बहुत करके अत्यन्त कामुक होती हैं। भिक्षुओ, स्त्रियोंका दुष्ट जिह्वापन इस बातमें होता है कि वह बहुत करके चुगल-खोरनी होती है। भिक्षुओ, स्त्रियोंका द्रोहीपन इस बातमें रहता है कि स्त्रियाँ अतिचारिणी होती हैं। भिक्षुओ, स्त्रियोंके ये पाँच दुर्गुण हैं।

(४) आवासिक वर्ग

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह सत्कार करने योग्य नहीं होता है। कौनसी पाँच बातें? वह ढंगसे नहीं रहता है, वह कर्तव्यों (=ब्रतों) का पालन नहीं करता; वह बहुश्रुत नहीं होता, श्रुतवान् नहीं होता; एकान्तप्रिय नहीं होता, योगाभ्यासी नहीं होता; कल्याण-वचन बोलने वाला नहीं होता, प्रिय-भाषी नहीं होता; दुष्प्रज्ञ होता है, जड़-मूर्ख। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह सत्कार करने योग्य नहीं होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह सत्कार करने योग्य होता है। कौनसी पाँच बातें? वह ढंगसे रहता है, वह कर्तव्यों (=ब्रतों) का पालन करता है; वह बहुश्रुत होता है, श्रुतवान् होता है; एकान्त-प्रिय होता है, योगाभ्यासी होता है, कल्याण-वचन बोलने वाला होता है, प्रिय-भाषी होता है, प्रज्ञावान् होता है, बुद्धिमान्। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह सत्कार करने योग्य होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने सब्रह्मचारियों (=साथियों) का प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला होता है, गौरवार्ह होता है, सत्कार करने योग्य होता है। कौनसी पाँच बातें? वह सदाचारी होता है, प्रातिमोक्षके नियमोंका पालन करने वाला होता है, सदाचारणमें विचरने वाला होता है, छोटेसे दोषमें भी भय मानने वाला होता है, भिक्षाओंको सम्यक् प्रकारसे ग्रहण करने वाला होता है; बहुश्रुत होता है, श्रुतवान् होता है, जो धर्म आदिमें कल्याणकारक, मध्यमें कल्याणकारक, अन्तमें कल्याणकारक, सार्थक होते हैं, व्यंजन (=शब्द) सहित होते हैं, सम्पूर्ण रूपसे परिशुद्ध ब्रह्मचर्यकी महिमाका वर्णन करने वाले होते हैं, उस प्रकारके धर्म उसके द्वारा बहुश्रुत होते हैं, वाणी द्वारा धारण किये गये होते हैं, मनके द्वारा परिचित किये गये होते हैं, अनुपरीक्षण किये गये होते हैं, (सम्यक्-) दृष्टि द्वारा सम्यक् प्रकारसे ग्रहण किये गये होते हैं; प्रिय-भाषी होता है, मधुरवाणी बोलने वाला होता है, विनम्र बोलने वाला होता है, विश्वसनीय वाणी बोलने वाला होता है, निर्दोष बोलने वाला होता है, अर्थ-बोधक वाणी बोलने वाला होता है। वह चैतसिक, प्रत्यक्ष सुख देने वाले चारों ध्यानोंको अनायास प्राप्त करने वाला होता है, वह आस्रवोंका क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमुक्ति-प्रज्ञाविमुक्तिको इसी जन्ममें स्वयं प्राप्त कर, स्वयं साक्षात् कर विचरता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह अपने सब्रह्मचारियों (=साथियों) का प्रिय होता है, अच्छा लगने वाला होता है, और गौरवार्ह होता है, सत्कार करने योग्य होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह भिक्षु आवास (=विहार) की शोभा होता है। कौनसी पाँच बातें? वह सदाचारी होता है... शिक्षाओंको सम्यक् प्रकार ग्रहण करने वाला होता है। वह बहुश्रुत होता है.... (सम्यक्) दृष्टि द्वारा सम्यक प्रकारसे ग्रहण किये गये होते हैं। वह प्रिय-भाषी होता है, मधुरवाणी बोलने वाला, विनम्र बोलने वाला, विश्वसनीय बोलने वाला, निर्दोष बोलने वाला, अर्थ-बोधक वाणी बोलने वाला। वह समर्थ होता है अपने पास आने वाले लोगोंका धार्मिक बातचीतसे मार्ग-दर्शन करनेमें, उन्हें बढ़ावा देनेमें, उनका उत्साह बढ़ानेमें, उन्हें प्रसन्न करनेमें। वह चैतसिक, प्रत्यक्ष सुख देने वाले, चारों ध्यानोंको अनायास प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह भिक्षु आवास (=विहार) की शोभा होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह विहारका बहुत उपकारी होता है। कौनसी पाँच? वह सदाचारी होता है.... शिक्षाओंको सम्यक्

प्रकार ग्रहण करने वाला होता है। वह बहूश्रुत होता है।..... (सम्यक्) दृष्टिसे सम्यक् प्रकार ग्रहण किये गये होते हैं। टूटे-फूटेकी मरम्मत करने वाला होता है, महान भिक्षुसंघका आगमन होता है, नाना प्रदेशोंसे भिक्षु आते हैं—तो वह गृहस्थोंके पास जाकर कहता है, आयुष्मानो ! महान् भिक्षु संघका आगमन हुआ है, नाना प्रदेशों-के भिक्षु आये हैं, पुण्य करो, यह पुण्य करनेका समय है। वह चैतसिक, प्रत्यक्ष सुख देने वाले, चारों-ध्यानोंको अनायास प्राप्त करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह विहारका बहुत उपकारी होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह गृहस्थोंपर अनुकम्पा करने वाला होता है। कौनसी पाँच बातें ? वह उन्हें शीलोंमें प्रतिष्ठित करता है, धर्म-देशनामें स्थिर करता है और उन्हें कहता हैं कि जो सभी प्रकारके सत्कारके योग्य हैं उनका ध्यान करो। महान् भिक्षु संघका आगमन होता है, नाना प्रदेशोंसे भिक्षु आते हैं—तो वह गृहस्थोंके पास जाकर कहता है, आयुष्मानो ! महान् भिक्षु संघका आगमन हुआ है, नाना प्रदेशोंके भिक्षु आयें हैं, पुण्य करो, यह पुण्य करने का समय है। वे उसे जैसा भी रूखा-सूखा या बढ़िया भोजन देते हैं, उसे ग्रहण करता है। श्रद्धापूर्वक दिये गये भोजनका तिरस्कार नहीं करता। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह गृहस्थोंपर अनुकम्पा करने वाला होता है।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये दुर्गुणीके गुण कहता है। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये गुणीके दुर्गुण कहता है। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये अश्रद्धेय स्थानपर श्रद्धा व्यक्त करता है। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये श्रद्धेय स्थानपर अश्रद्धा व्यक्त करता है। वह श्रद्धापूर्वक दी गई वस्तुका तिरस्कार कर देता हैं। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें ? वह सोच-विचारकर, परीक्षा करके दुर्गुणीके दुर्गुण कहता है। वह सोच-विचार कर, परीक्षा करके गुणी के गुण कहता है। वह सोच-विचार कर, परीक्षा करके अश्रद्धेय स्थानपर अश्रद्धा व्यक्त करता है। वह सोच-विचारकर, परीक्षा करके श्रद्धेय स्थानपर श्रद्धा व्यक्त करता है। वह श्रद्धापूर्वक दी गई वस्तुका तिरस्कार नहीं करता। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐमा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिमा गया हो।

भिक्षुओ, जिस नैवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये दुर्गुणीके गुण कहता है। वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये गुणीके दुर्गुण कहता है, आवास (=निवास स्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, आवासके प्रति लोभी, कुल (=परिवारों) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, कुलके प्रति लोभी, श्रद्धासे दी गई वस्तुका तिरस्कार करता है। भिक्षुओ, जिस नैवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? वह सोच-विचार कर, परीक्षा करके दुर्गुण कहता है। वह सोच-विचारकर परीक्षा करके गुणीके गुण कहता है। वह आवास (=निवास स्थान) के प्रति लोभी मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, आवासके प्रति लोभी नहीं; कुल (=परिवारों) के प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, कुलके प्रति लोभी नहीं; श्रद्धासे दी गई वस्तुका तिरस्कार नहीं करता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये दुर्गुणीके गुण कहता है; वह बिना सोचे, बिना परीक्षा किये गुणीके दुर्गुण कहता है, वह आवास (=निवासस्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, कुल (=परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? वह सोच-विचारकर, परीक्षा करके दुर्गुणीके दुर्गुण कहता है। वह सोच-विचारकर परीक्षा करके, गुणीके गुण कहता है। वह आवास (=निवासस्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, कुल (=परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? वह आवास (= निवासस्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, कुल (= परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, श्रद्धासे दी गई वस्तुका तिरस्कार करता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह वैसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? आवास (= निवास स्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, कुल (= परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, श्रद्धासे दी गई वस्तुका तिरस्कार नहीं करता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है, जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? आवास (= निवास-स्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, कुल (= परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है, धर्मके प्रति मात्सर्य-युक्त होता है। भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस नेवासिक भिक्षुमें ये पाँच होती हैं वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? आवास (= निवासस्थान) के प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, कुल (= परिवार) के प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, लाभके प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है, वर्णके प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है। धर्मके प्रति मात्सर्य-युक्त नहीं होता है। भिक्षुओ, जिस नैवासिक भिक्षुमें ये पाँच बातें होती हैं वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर स्वर्गमें डाल दिया गया हो।

(५) दुश्चरित वर्ग

भिक्षुओ, दुश्चरित्रताके पाँच दुष्परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? अपना आप भी अपने आपको दोष देता है। जानकार विज्ञजन निन्दा करते हैं। बदनामी

होती है। बेखबरीकी हालतमें मृत्युको प्राप्त होता है। शरीर छूटनेपर, मरनेके अनन्तर दुर्गतिको प्राप्त होता है, नरकमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, दुश्चरित्रता में ये पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, सच्चरित्रताके ये पाँच शुभ-परिणाम हैं। अपना आप भी अपनी निन्दा नहीं करता है, जानकार विज्ञजन प्रशंसा करते हैं, नेकनामी होती है, जागरूक रहकर मृत्युको प्राप्त होता है। छुटनेपर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्गमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, सुचरित्रताके ये पाँच शुभ परिणाम हैं।

भिक्षुओ, शारीरिक दुश्चरित्रताके पाँच दुष्परिणाम हैं. . . . . शारीरिक सच्चरित्रताके. . . वाणीकी दुश्चरित्रताके. . . वाणीकी सच्चरित्रताके. . . . मानसिक दुश्चरित्रताके. . . . मानसिक सच्चरित्रताके। कौनसे पाँच? अपना आप भी अपनी निन्दा नहीं करता है, जान लेने पर विज्ञजन प्रशंसा करते हैं, नेकनामी होती है, जागरूक रहकर मृत्युको प्राप्त होता है। छूटने पर, मरनेके अनन्तर सुगतिको प्राप्त होता है, स्वर्ग लोकमें जन्म ग्रहण करता है। भिक्षुओ, मानसिक सच्चरित्रताके ये पाँच शुभ परिणाम हैं।

भिक्षुओ, दुश्चरित्रताके पाँच दुष्परिणाम होते हैं। कौनसे पाँच? अपना आप भी अपने आपको दोष देता है, जानकार विज्ञजन निन्दा करते हैं, बदनामी होती है, सद्धर्मसे उखड जाता है, असद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, दुश्चरित्रता के पाँच दुष्परिणाम हैं।

भिक्षुओ, सच्चरित्रताके पाँच शुभ-परिणाम हैं। कौनसे पाँ च? अपना आप अपनेको दोष नहीं देता, जानकार विज्ञ-जन प्रशंसा करते हैं, नेकनामी होती है, असद्धर्मसे उखड़ जाता है, सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है।

भिक्षुओ, शारीरिक दुश्चरित्रताके पाँच दुष्परिणाम होते हैं. . . .शारीरिक सच्चरित्रताके. . . .वाणीकी दुश्चरित्रताके. . . . वाणीकी सच्चरित्रताके. . . . मनकी दुश्चरित्रताके. . . . मनकी सच्चरित्रताके। कौनसे पाँच? अपना आप अपनेको दोष नहीं देता, जानकार विज्ञ-जन प्रशंसा करते हैं, नेकनामी होती है, असद्धर्मसे उखड़ जाता ह, सद्धर्ममें प्रतिष्ठित होता है। भिक्षुओ, मनकी सच्चरित्रताके ये पाँच शुभ-परिणाम हैं।

भिक्षुओ, मरघटके पाँच दुष्परिणाम हैं। कौनसे पाँच? अशुचिता, दुर्गन्ध, भय, प्रेत आदिका निवास तथा बहुतसे लोगोंका रोना-पीटना। भिक्षुओ, मरघटके ये पाँच दुष्परिणाम हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ, मरघट-समान मनुष्यके भी पाँच दुर्गुण

हैं। कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, एक आदमीका शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होता है, वाणीका कर्म अशुचिपूर्ण होता है, मानसिक कर्म अशुचिपूर्ण होता है--यही उसकी अशुचिता कहता हूँ। भिक्षुओ, जैसे वह मरघट अशुचिपूर्ण होता है, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ।

जिस आदमीके शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, वाणीके कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, मानसिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, उस आदमीकी बदनामी होती है--यही उसका दुर्गन्ध-पूर्ण होना है। भिक्षुओ, जैसे वह मरघट दुर्गन्ध-पूर्ण होता है, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ।

जिस आदमीके शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, वाणीके कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, मानसिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, उसे जो सद्गुणी भिक्षु (=साथी) होते हैं वे दूर ही दूर रखते हैं--यही उसका भय-युक्त होना है। भिक्षुओ, जैसे ही वह मरघट भय-पूर्ण होता है, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ।

जिस आदमीके शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, वाणीके कर्म अशुचिपूर्ण होते है, मानसिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते है, वह अपने ही जैसे आदमियोंके साथ रहता है। यही उसकी प्रेत-संगति है। भिक्षुओ, जैसे मरघट प्रेत आदिका घर होता है वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ।

जिस आदमीके शारीरिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, वाणीके कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, मानसिक-कर्म अशुचिपूर्ण होते हैं, उस आदमीको देखकर उसके सद्गुणी साथी क्षुब्ध होते हैं--यही हमारे लिये कितने बड़े दुःखकी बात है कि हम ऐसे आदमीके साथ रहते हैं। यही उसका रोदन-पूर्ण होना है। भिक्षुओ, जैसे मरघट बहुतसे लोगोंके रोने-पीटनेकी जगह है, वैसा ही मैं इस आदमीको कहता हूँ। भिक्षुओ, मरघट समान आदमीके ये पाँच दुर्गुण होते हैं।

भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेके पाँच दुष्परिणाम हैं, कौनसे पाँच ? भिक्षुओ, जिस आदमीसे एक आदमी का प्रेम होता है, वह किसी ऐसे दोषका दोषी होता है जिस दोषके कारण संघ उसका उत्क्षेपणीय कर्म (=दण्ड विशेष) करता है। उसके मनमें होता है कि जो व्यक्ति मेरा प्रिय है, मुझे अच्छा लगने वाला है, संघने उसका उत्क्षेपणीय-कर्म किया है। वह भिक्षुओंसे अप्रसन्न हो जाता है। भिक्षुओंसे अप्रसन्न हो जानेके कारण दूसरे भिक्षुओंकी संगति नहीं करता। दूसरे भिक्षुओकी संगति न करनेके कारण सद्धर्म नहीं सुनता। सद्धर्म न सुननेसे वह सद्धर्म से पतित होता है। भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेका यह पहला दुष्परिणाम है।

फिर भिक्षुओ, जिस आदमीसे एक आदमीका प्रेम होता है, वह किसी ऐसे दोषका दोषी होता है जिस दोषके कारण संघ उसे अन्तमें बिठा देता है। उसके मनमें होता है कि जो व्यक्ति मेरा प्रिय है, मुझे अच्छा लगने वाला है, संघने उसे अन्तमें बिठा दिया है। वह भिक्षुओंसे अप्रसन्न हो जाता है। भिक्षुओंसे अप्रसन्न हो जानेके कारण दूसरे भिक्षुओंकी संगति नहीं करता । दूसरे भिक्षुओंकी संगति न करने के कारण सद्धर्म नहीं सुनता। सद्धर्म न सुननेके से वह सद्धर्मसे पतित हो जाता है। भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेका यह दूसरा दुष्परिणाम है।

फिर भिक्षुओ, जिस आदमीसे एक आदमीका प्रेम हो जाता है, वह किसी ओर चला जाता है. . . . . . . वह भ्रान्त-चित्त हो जाता है. . . . . . वह मर जाता है। उसके मनमें होता है कि जो व्यक्ति मेरा प्रिय है, मुझे अच्छा लगने वाला है, वह मर गया है। वह भिक्षुओंसे अप्रसन्न हो जाता है। भिक्षुओंसे अप्रसन्न हो जानेके कारण दूसरे भिक्षुओंकी संगति नहीं करता। दूसरे भिक्षुओंकी संगति न करनेके कारण सद्धर्म नहीं सुनता। सद्धर्म न सुननेसे वह धर्मसे पतित हो जाता है। भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेका यह पाँचवाँ दुष्परिणाम है। भिक्षुओ, व्यक्तिके प्रिय होनेके ये पाँच दुष्परिणाम हैं।

(६) उपसम्पदा वर्ग

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, उसे ही दूसरोंको उपसम्पदा देनी चाहिये। कौनसी पाँच बातें? भिक्षुओ, वह भिक्षु अशैक्ष शील-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञा-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-ज्ञान-दर्शनसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, उसे ही दूसरोंको उपसम्पदा देनी चाहिये।

भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों, उसे ही दूसरोंको आश्रय देना चाहिये . . . . . श्रामणेर बनाकर रखना चाहिये। कौनसी पाँच बातें। भिक्षुओ, वह भिक्षु अशैक्ष शील-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष समाधि-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष प्रज्ञा-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति-स्कन्धसे युक्त होता है, अशैक्ष विमुक्ति ज्ञान-दर्शन स्कन्धसे युक्त होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षुमें ये पाँच बातें हों उसे ही दूसरोंको श्रामणेर बनाकर रखना चाहिये।

भिक्षुओ, ये पाँच मात्सर्य हैं। कौनसे पाँच? आवास (= निवासस्थान) के बारेमें मात्सर्य, कुल (= परिवारों) के बारेमें मात्सर्य, लाभके बारेमें मात्सर्य, वर्णके

बारेमें मात्सर्य तथा धर्मके बारेमें मात्सर्य। भिक्षुओ, ये पाँच मात्सर्य हैं। भिक्षुओ, इन पाँचों मात्सर्योंमें यही निकृष्ठतम मात्सर्य है, यह जो धर्म-मात्सर्य है।

भिक्षुओ, पाँच मात्सर्योंका प्रहाण करनेके लिये, मूलोच्छेद करनेके लिये ही ब्रह्मचर्य-वास किया जाता है। कौनसे पाँच मात्सर्योंका ? आवास (= निवास-स्थान) के मात्सर्यके प्रहाणके लिये, मूलोच्छेदके लिये ब्रह्मचर्य-वास किया जाता है। कुल-मात्सर्यके. . . . .लाभ-मात्सर्यके. . . . .वर्ण-मात्सर्यके. . . . .धर्म-मात्सर्यके प्रहाण करनेके लिये, मूलोच्छेद करनेके लिये ब्रह्मचर्य-वास किया जाता है।

भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोंका त्याग किये प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति असम्भव है। कौनसी पाँच ? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल (= परि-वार) मात्सर्य, लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य—भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोंका त्याग किये प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति असंभव है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका त्याग कर देनेसे प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति संभव है। कौनसी पाँच ? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार) मात्सर्य, लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, धर्म-मात्सर्य—भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका त्यागकर देनेसे प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति संभव है।

भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोंका त्याग किये दूसरे ध्यानकी. . . . .तीसरे ध्यानकी. . . . . .चौथे ध्यानकी. . . . . .स्रोतापत्ति फलकी. . . . . .सकृदागामी फलकी. . . . . . .अनागामी फलकी. . . . . .अर्हत्व फलकी प्राप्ति असम्भव है। कौनसी पाँच ? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार) मात्सर्य लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, धर्म-मात्सर्य—भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोंका त्याग किये अर्हत्व-फलकी प्राप्ति असंभव है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका त्याग कर देनेसे द्वितीय ध्यानकी. . . . तृतीय ध्यानकी. . . . . .चतुर्थ ध्यानकी. . . . . .स्रोतापत्ति फलकी. . . . . .सकृदागामी फलकी. . . . . .अनागामी फलकी. . . . .अर्हत्व फलकी प्राप्ति सम्भव है।

भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोंका त्याग किये प्रथम ध्यानकी प्राप्ति असम्भव है। कौनसी पाँच बातें ? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार) मात्सर्य, लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, अकृतज्ञता। भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोंका त्याग किये प्रथम ध्यानकी प्राप्ति असम्भव है।

भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका त्याग कर देनेसे प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति सम्भव है। कौनसी पाँच बातें ? आवास (= निवासस्थान) मात्सर्य, कुल (= परिवार)

मात्सर्य, लाभ-मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, अकृतज्ञता। भिक्षुओ, इन पाँच बातोंका त्याग कर देनेसे प्रथम-ध्यानकी प्राप्ति सम्भव है।

भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोंका त्याग किये द्वितीय ध्यानकी. . . . तृतीय ध्यानकी. . . . चतुर्थ ध्यानकी. . . . . स्रोतापत्ति फलकी. . . . . सकृदागामी फलकी. . . . . . अनागामी फलकी. . . . . अर्हत्व फलकी प्राप्ति असम्भव है। कौनसी पाँच बातोंका? आवास (= निवास स्थान) मात्सर्य, कुल-मात्सर्य, लाभ मात्सर्य, वर्ण-मात्सर्य, अकृतज्ञता। भिक्षुओ, बिना इन पाँच बातोंका त्याग किये अर्हत्वकी प्राप्ति असम्भव है।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें हों उसे भोजन-व्यवस्थापक (=भत्तु-देसक) कभी नहीं चुनना चाहिये। कौनसी पाँच? जो इच्छाके वशमें हो जाता हो, जो द्वेषके वशमें हो जाता हो, जो मोहके वशमें हो जाता हो, जो भयके वशमें हो जाता हो जो उद्दिष्ट-अनुद्दिष्ट[1] को नहीं जानता। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें हों उसे भोजन-व्यवस्थापक (= भत्तुद्देसक) नहीं बनाना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें हों उसे भत्तुद्देसक चुनना चाहिये। कौनसी पाँच? जो इच्छाके वशीभूत न होता हो, जो द्वेषके वशीभूत न होता हो, जो मोहके वशीभूत न होता हो, जो भयके वशीभूत न होता हो, जो उद्दिष्ट-अनुद्दिष्ट को जानता हो। भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें हों उसे भोजन-व्यवस्थापक (= भत्तुद्देसक) बनाना चाहिये।

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें हों, उसे न भत्तुद्देसक चुनना चाहिये, चुना जानेपर भेजा जाना नहीं चाहिये. . . . . .

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें न हों, वह चुना जानेपर भेजा जाना चाहिये. . . . . .

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें हों, वह मूर्ख समझा जाना चाहिये. . . .

भिक्षुओ,जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें न हों, वह पण्डित समझा जाना चाहिये....

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें हों, वह स्वयं अपनेको आघात पहुँचाने वाला होता है. . . . . .

भिक्षुओ, जिस व्यक्तिमें ये पाँच बातें न हों, वह स्वयं अपनेको आघात पहुँचाने वाला नहीं होता है. . . .

---

१. व्यक्ति विशेषके लिये बनाया गया भोजन 'उद्दिष्ट' भोजन कहलायेगा।

करने वाली होती है, झूठ बोलने वाली होती है, सुरा-मेरय आदि नशीली वस्तुओंका सेवन करने वाली होती है। भिक्षुओ, जिस उपासिका में ये बातें होती हैं, वह ऐसी ही होती है जैसे लाकर नरकमें डाल दी गयी हो।

भिक्षुओ, जिस उपासिकामें ये पाँच बातें होती हैं वह ऐसी ही होती है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दी हो। कौनसी पाँच बातें? प्राणी-हिंसासे विरत रहने वाली होती है, चोरीसे विरत रहने वाली होती है, काम-भोग सम्बन्धी मिथ्याचारसे विरत रहने वाली होती है, झूठसे विरत रहने वाली होती है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंके सेवनसे विरत रहने वाली होती है। भिक्षुओ, जिस उपासिकामें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसी ही होती है जैसे लाकर स्वर्गमें डाल दी गयी हो।

भिक्षुओ, जिस आजीवकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है, जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें? प्राणी-हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, अब्रह्मचारी होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजोंका सेवन करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस आजीवकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है, जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, जिस निगण्ठ (= निर्ग्रन्थ) . . . .जिस वृद्ध-श्रावकमें. . . .जिस-जटिलकमें. . . . . जिस परिब्राजकमें. . . जिस मागन्दिकमें. . . . जिस दण्डिकमें . . . . जिस आरुद्धकमें . . . . . . जिस गोतमकमें. . . . .जिस देव धम्मिकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो। कौनसी पाँच बातें ? वह प्राणी हिंसा करने वाला होता है, चोरी करने वाला होता है, अब्रह्मचारी होता है, झूठ बोलने वाला होता है, सुरा-मेरय आदि नशीली चीजें ग्रहण करने वाला होता है। भिक्षुओ, जिस देवधम्मिकमें ये पाँच बातें होती हैं, वह ऐसा ही होता है जैसा लाकर नरकमें डाल दिया गया हो।

भिक्षुओ, राग (= कामचेतना) का क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये। कौनसी पाँच? अशुभ-संज्ञा, मरण-संज्ञा, दुष्परिणाम (= आदिनव) संज्ञा, भोजनके सम्बन्धमें प्रतिकूल-संज्ञा तथा सभी लोकोंके प्रति अनासक्तिकी भावना। भिक्षुओ, राग (= कामचेतना) का क्षय करनेके लिये इन पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, राग (= कामचेतना) का क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये। कौनसी पाँच? अनित्य-संज्ञा, अनात्म-संज्ञा, मरण-संज्ञा,

भोजनके प्रति प्रतिकूल-संज्ञा, सभी लोकोंके प्रति अनासक्तिकी भावना। भिक्षुओ, राग (=कामचेतना) का क्षय करनेके लिये इन पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये। कौनसी पाँच? अनित्य-संज्ञा, अनित्यमें दुःख-संज्ञा, दुःखमें अनात्म-संज्ञा, प्रहाण-संज्ञा, वैराग्य-संज्ञा। भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये इन पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये। कौनसी पाँच? श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय तथा प्रज्ञा-इन्द्रिय। भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये, कौनसी पाँच? श्रद्धा-बल, वीर्य-बल, समाधि-बल, स्मृति-बल, प्रज्ञा-बल। भिक्षुओ, रागका क्षय करनेके लिये पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, रागका यथार्थ परिचय प्राप्त करनेके लिये, क्षय करनेके लिये, प्रहाण करनेके लिये, नष्ट करनेके लिये, समाप्त करनेके लिये, विरागके लिये, निरोधके लिये, त्यागके लिये, परित्यागके लिये इन पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये।

भिक्षुओ, द्वेषका. . . . मोहका. . . . क्रोधका . . . . उपनाहका. . . . . . म्रक्षका. . . . .प्लाशका. . . . .ईर्षाका. . . . .मात्सर्यका. . . . . .मायाका. . . . . .शठताका. . . . .स्तब्धताका. . . . . .सारम्भ (=कलह) का. . . .मान का. . . . .अतिमानका. . . . .मदका. . . .. प्रमादका यथार्थ परिचय प्राप्त करनेके लिये, क्षय करनेके लिये, प्रहाण करनेके लिये, नष्ट करनेके लिये, विरागके लिये निरोधके लिये, परित्यागके लिये इन पाँच भावनाओंका अभ्यास करना चाहिये।